बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

तीन टके का उपन्यास

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट लिखित

तीन टके का उपन्यास

यह उपन्यास परिकल्पना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाया जा रहा है। हालांकि अभी ये स्टॉक में नहीं है पर आप जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा अन्य प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविता, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत, हर रविवार पुस्तकों की पीडीएफ
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ व यूनिकोड फॉर्मेट में

बिगुल

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें - 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

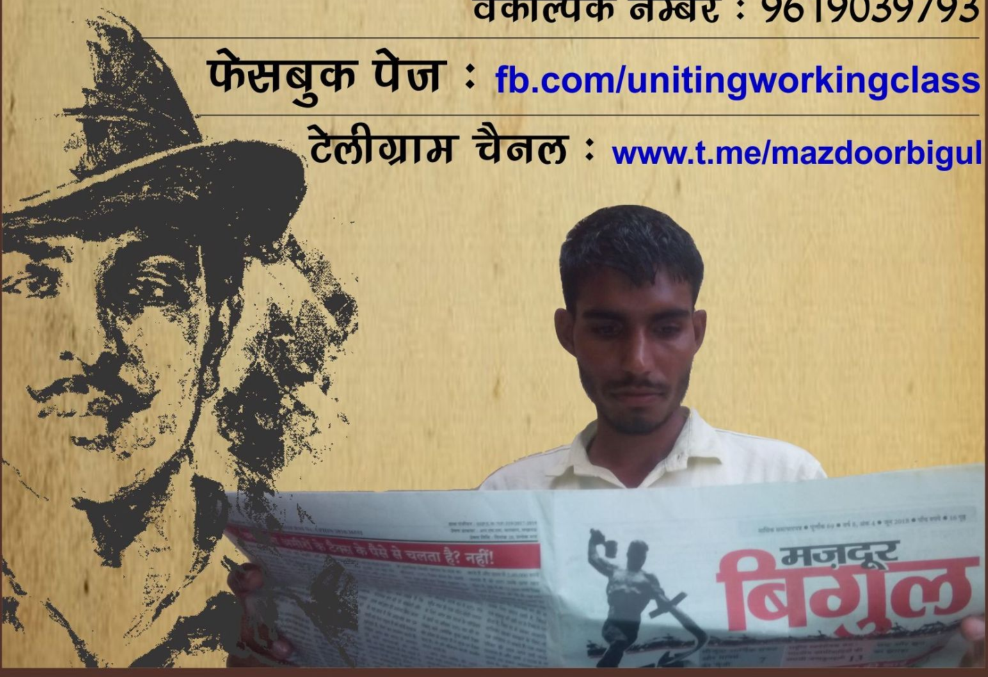

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

तीन टके का उपन्यास

तीन टके का उपन्यास

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

अनुवाद
अभिनव सिन्हा

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

मूल्य : रु. 125.00

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2008

परिकल्पना प्रकाशन
डी–68, निरालानगर, लखनऊ–226 020 द्वारा प्रकाशित

कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा टाइपसेटिंग

क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस–28, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

TEEN TAKE KA UPANYAS
by **Bertolt Brecht**

ISBN 978-81-89760-33-5

इस पुस्तक के बारे में

'तीन टके का उपन्यास' दरअसल ब्रेटोंल्ट ब्रेष्ट के प्रसिद्ध 'थ्री पेनी ऑपेरा' का ही एक विस्तृत और व्यापक संस्करण है। स्वयं 'थ्री पेनी ऑपेरा' ब्रिटिश नाटककार जॉन गे द्वारा लिखित 'बेगर्स ऑपेरा' पर आधारित था। जॉन गे ने 'बेगर्स ऑपेरा' नामक अपनी प्रसिद्ध रचना 1728 में लिखी थी। उस नाटक के सभी केन्द्रीय चरित्र, जैसे मैकहीथ ('मैक दि नाइफ'), पीचम, जेनी, पॉली, आदि, सभी ब्रेष्ट के 'थ्री पेनी ऑपेरा' में थे। 1928 में ब्रेष्ट ने 'थ्री पेनी ऑपेरा' को पूरा किया। 1934 में उन्होंने इन्हीं चरित्रों और उसी कहानी को लेकर 'थ्री पेनी नॉवेल' यानी, 'तीन टके का उपन्यास' लिखा। यह उपन्यास 'थ्री पेनी ऑपेरा' से कहीं ज़्यादा व्यापक स्वरूप ग्रहण कर लेता है। जहाँ नाटक में ब्रेष्ट के पास एक-एक चरित्र को विकसित करने का मौक़ा नहीं था, वहीं उपन्यास रूप में उन्होंने हर चरित्र को पूरी तरह विकसित किया और बोलचाल की भाषा में होने के बावजूद इसे 'एपिकल' बना दिया।

इस उपन्यास को लिखने के लिए ब्रेष्ट तत्कालीन जर्मन वाइमार गणतन्त्र की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों को देखकर प्रेरित हुए थे। यह वही समय था जब वाइमार गणतन्त्र का बुर्जुआ जनवाद अपनी आखिरी सीमाओं तक पहुँच रहा था और नात्सी पार्टी का उदय हो रहा था। पूरी कहानी ब्रेष्ट द्वारा उस समय के जर्मन समाज के प्रेक्षण और विश्लेषण पर आधारित है। लेकिन इसका संलयन ब्रेष्ट ने जॉन गे के 'बेगर्स ऑपेरा' के प्लॉट से किया और इसे 19वीं सदी के आखिरी दशकों के इंग्लैण्ड में अवस्थित किया।

इस उपन्यास में ब्रेष्ट पतनशील पूँजीवादी समाज में व्यापारिक पूँजीपति वर्ग की घोर अनैतिकता, लालच और उसके "राष्ट्रवाद" की असलियत को एकदम नंगे तौर पर उजागर कर देते हैं। ब्रेष्ट बहुत ही दिलचस्प और यथार्थवादी तरीके से पूँजीवादी राष्ट्रवाद, पूँजीवादी नैतिकता, पूँजीवादी प्रेम, पूँजीवादी रिश्तों, पूँजीवादी संवेदनाओं, पूँजीवादी न्याय और पूँजीवादी मीडिया की वास्तविकता को सामने लाते हैं। साथ ही ब्रेष्ट अपराध जगत और उद्योग और

व्यापार जगत के बीच के गुप्त सम्बन्धों को भी बेपर्दा कर देते हैं। वास्तव में, ब्रेष्ट दिखलाते हैं कि दरअसल व्यापार वह अपराध है जो बिना सज़ा पाये चलता रहता है। व्यापार अपराध ही है। ब्रेष्ट अधिक तीखेपन के साथ बाल्ज़ाक के उस कथन को सत्यापित करते दिखते हैं कि हर सम्पत्ति साम्राज्य की बुनियाद अपराध होती है।

इस उपन्यास को पढ़ते समय कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि यह आज के भारत के लिए लिखा गया है। यहाँ के व्यापारिक वर्गों से उस समय के ब्रिटेन के व्यापारिक वर्गों का सादृश्य निरूपण किये बग़ैर नहीं रहा जा सकता। बल्कि यह प्रक्रिया मस्तिष्क में स्वयं ही होती रहती है...आपकी इच्छा से स्वतन्त्र। छोटे व्यापारिक वर्गों में फासीवादी उभार का सम्भावित समर्थक बनने का गुण ब्रेष्ट के इस उपन्यास में साफ़ तौर पर सामने आता है। कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास ब्रेष्ट की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। निस्सन्देह रूप से, ब्रेष्ट यहाँ तीखे व्यंग्य के साथ अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में हैं!

- *परिकल्पना प्रकाशन*

25.1.2008

वह जो जीवित बचा

वह जो जीवित बचा

और उसने वह लिया जो उन्होंने उसे दिया, क्योंकि वेदना ही उसकी आवश्यकता थी,
फिर वह बोला (चूँकि विवेक का अभाव न था उसे)
'क्यों देते हैं आप मुझे आश्रय? क्यों देते हैं आप मुझे रोटी?
हाय! कैसे चुकाऊँगा मैं यह कर्ज़?'

(एक पुराने आइरिश गाथा-गीत
'लॉर्ड एन का पतन' से)

जॉर्ज फ्यूकूम्बी नाम के एक सैनिक को बोअर युद्ध में पैर में गोली लगी, जिसकी वजह से केप टाउन के एक अस्पताल में उसके पैर का निचला हिस्सा काट दिया गया। जब वह लंदन लौटा तो उसे 75 पाउण्ड मिले, जिसके बदले में उसने एक कागज़ पर दस्तख़त किये जो कहता था कि सरकार पर अब उसका और कोई दावा नहीं रहा। इस 75 पाउण्ड को उसने न्यू गेट में एक छोटा-सा शराबख़ाना खोलने में लगाया। जैसा कि उसे बहीखातों (छोटी, बियर के धब्बों से बदरंग बिल-पुस्तिकाएँ जो पेंसिल की लिखावट से भरी थीं) से पता चलता था, यह शराबख़ाना 2 पाउण्ड प्रति सप्ताह का सन्तोषजनक मुनाफ़ा देता था।

जब वह छोटे-से बैक रूम में चला गया था और कुछ हफ्तों तक एक वृद्ध महिला की सहायता से बियर बेच चुका था, तो वह जान गया कि उसका पैर गँवाना कोई ख़ास काम नहीं आया। आमदनी 2 पाउण्ड के नीचे ही बनी हुई थी, हालाँकि वह सैनिक अपने ग्राहकों के सामने हमेशा विनम्रता का पुतला बना रहता था। उसने समझ लिया कि बीते दिनों में आस-पास के इलाकों में कोई निर्माण-कार्य चल रहा था, और बिल्डर शराबख़ाने के अच्छे ग्राहक थे। लेकिन अब निर्माण-कार्य ख़त्म हो चुका था और आमदनी भी चली गयी थी। जैसा कि लोग उससे कहा भी करते थे, उसने बहीखातों से यह आसानी से समझ लिया

होता कि काम के दिनों में धन्धा छुट्टियों के मुकाबले ज़्यादा चंगा चलता रहा था, जो सभी अनुभवी शराबख़ाना मालिकों की आशाओं के बिल्कुल विपरीत है। लेकिन यह जनाब ऐसी जगहों पर हमेशा ग्राहक रहे थे, न कि मालिक। जैसे-तैसे उसने धन्धे को चार महीने तक खींच लिया। अगर उसने पहले वाले मालिक को ढूँढने में ज़्यादा समय बरबाद न किया होता तो यह समय और लम्बा होता। और फिर उसने खुद को कंगाल हालत में सड़कों पर भटकते पाया।

कुछ समय के लिए उसे एक सैनिक की बीवी के यहाँ आश्रय मिल गया, जिसके बच्चों को वह युद्ध की कहानियाँ सुनाया करता था, जबकि वह औरत अपनी छोटी-सी दुकान की देखभाल करती थी। इसके बाद उसके पति ने उसे पत्र में लिखा कि वह छुट्टी पर घर आ रहा है। उसने सैनिक को यह बात बताई, जिसके साथ वह इस बीच सोती रही थी, जैसा कि इन छोटे घरों में हुआ करता है। उसने सैनिक से कहा कि जितनी जल्दी हो सके वह यहाँ से चला जाए। सैनिक ने कुछ दिन और इन्तज़ार किया और फिर उसे जाना पड़ा। उसके पति के घर लौटने के बाद वह उस औरत के पास एक या दो बार गया और उसे कुछ खाने को दे दिया गया। लेकिन वह तब तक और अधिक नीचे गिरता गया जब तक कि वह उन अभागों की अन्तहीन कतारों में शामिल नहीं हो गया, जिन्हें भूख दुनिया के इस महानतम शहर की सड़कों पर दिनों-रात हाँकती रहती है।

एक सुबह वह थेम्स के एक पुल पर खड़ा था। दो दिन से उसे पर्याप्त भोजन नहीं मिला था क्योंकि उसके वर्दी में जाने पर शराबख़ाने के लोग उसे शराब तो दे देते थे लेकिन खाना नहीं। बिना वर्दी के तो उन्होंने उसे शराब भी न दी होती, इसीलिए वह वर्दी जाँथे रहता था।

अब वह फिर से उन सामान्य कपड़ों में था जो वह एक मकानदार की हैसियत से पहना करता था। वह भीख माँगने के बारे में सोच रहा था और शर्मिन्दा था। उसे इस बात पर शर्म नहीं थी कि उसे पैर में गोली लगी थी, न ही एक ऐसा शराबघर खरीदने पर उसे शर्म थी, जो चल नहीं सका। उसे शर्म इस बात पर थी कि उसकी हालत यह हो गयी है कि उसे एकदम अजनबी लोगों से पैसे माँगने पड़ेंगे। उसकी राय में उसका कोई देनदार नहीं था।

भीख माँगना उसके लिए एक टेढ़ी खीर साबित हुआ। यह काम उन लोगों का है जिन्होंने कुछ नहीं सीखा है। लेकिन ऐसा लगता था कि यह काम भी सीखना पड़ेगा। वह एक के बाद एक कई लोगों से भीख माँगी, लेकिन चेहरे पर एक साहसपूर्ण भाव लिए हुए और, इस बात पर ध्यान देते हुए कि वह कहीं लोगों

के रास्ते में तो नहीं खड़ा है, जिससे वे यह न समझें कि उन्हें तंग किया जा रहा है। इसके अलावा, उसने भीख माँगने के लिए लम्बे वाक्य चुने जो तब पूरे होते थे जब वह आदमी काफ़ी आगे निकल जाता था। वह अपना हाथ भी नहीं फैला रहा था। और इस तरह जब उसने पाँचवी बार अपने आपको अपमानित किया, तब तक शायद ही किसी ने गौर किया कि वह भीख माँग रहा है।

लेकिन किसी ने इस बात पर ग़ौर किया था क्योंकि उसने अचानक अपने पीछे से एक फटी आवाज़ को कहते सुनाः 'दफ़ा हो जाओ यहाँ से!' चूँकि उसने बेहद अपराधबोधग्रस्त महसूस किया, इसलिए उसने मुड़कर देखा भी नहीं। वह बस कन्धे लटकाए चल पड़ा। सौ यार्ड आगे जाकर ही मुड़कर देखने की उसकी हिम्मत हुई, और उसने निम्नतम दर्ज़े के दो फटीचर भिखारियों को देखा, जो एक दूसरे के पीछे खड़े थे और उसका पीछा कर रहे थे। उन्होंने उसका पीछा किया और वह लंगड़ाते हुए चलता रहा।

जब तक वह कई सड़कें पार नहीं कर गया तब तक वह उन्हें पीछा करते हुए देखता रहा।

अगले दिन जब गोदी के आस-पड़ोस में बौड़ियाते हुए वह निम्न वर्गों के लोगों को बात करने के अपने प्रयासों से से जब-तब अचम्भित किये दे रहा था, उस पर अचानक किसी ने पीछे से वार किया। ठीक उसी समय हमलावर ने कोई चीज़ उसकी जेब में ठेल दी। जब वह पीछे मुड़ा तो उसने वहाँ किसी को नहीं पाया, लेकिन उसने अपनी जेब से कार्ड का एक बेहद मुड़ा-तुड़ा और अत्यधिक गन्दा टुकड़ा निकाला। उस पर एक कारखाने का नाम छपा थाः *जे.जे.पीचम, 7, ओल्ड ओक स्ट्रीट* और उसके नीचे एक धुँधली पेन्सिल से लिखा थाः 'अगर अपनी हड्डियाँ तुड़वाना नहीं चाहते हो तो ऊपर लिखे ठिकाने पर चले आओ।' इसको दो बार रेखांकित किया गया था।

धीरे-धीरे फ्यूकूम्बी को यह बात समझ में आयी कि वे हमले उसके भीख माँगने से जुड़े हुए हैं। लेकिन उसने ओल्ड ओक स्ट्रीट जाने की कोई विशेष इच्छा नहीं महसूस की।

उस दिन दोपहर में जब वह एक शराबखाने के बाहर खड़ा था तो उससे एक भिखारी ने बात की। उसे फ्यूकूम्बी ने पहचान लिया। वह पिछले दिन वाला वही भिखारी था। वह एक जवान आदमी था और कोई बुरा भी नहीं दिखता था। उसने फ्यूकूम्बी को कमीज की बाँह से पकड़ा और परे धकेल दिया।

'अबे गन्दे सुअर, मुझे अपना नम्बर दिखा!' उसने दोस्ताना आवाज़ में

कहना शुरू किया।

"कैसा नम्बर?" सैनिक ने पूछा।

उसके पीछे बेढंगे ढंग से चलते हुए और एक पल को भी उसका पिण्ड न छोड़ते हुए, हालाँकि अभी भी दोस्ताना अन्दाज़ में नौजवान ने उसे समझाया कि यह नया धन्धा उतना ही सुव्यवस्थित है जितना कोई और धन्धा, शायद उनसे भी ज़्यादा सुव्यवस्थित। उसने समझाया कि वह सैनिक दुनिया के किसी जंगली असभ्य कोने में नहीं बल्कि एक महान शहर में, दुनिया के केन्द्र में है। यह नया धन्धा जारी रखने के लिए उसके पास एक नम्बर होना चाहिए, एक तरह का परमिट जो-एक कीमत अदा करके-वह ओल्ड ओक स्ट्रीट पर यूनियन के मुख्य कार्यालय से प्राप्त कर सकता है, जिससे उसे जुड़ना ही होगा।

फ्यूकूम्बी बिना कोई सवाल किये सुनता रहा। तब उसने उतनी ही खुशमिजाज़ी के साथ-तब वे एक भीड़-भाड़ वाली सड़के के किनारे से गुज़र रहे थे-जवाब दिया कि उसे यह सुनकर खुशी हुई कि उनकी एक यूनियन भी है, ठीक वैसे ही जैसे राजगीरों या नाइयों की होती है, लेकिन जहाँ तक उसका सवाल है वह वही करेगा जो वह चाहेगा। उसने अपनी ज़िन्दगी में तमाम हुक्म सुने थे, जैसा कि उसकी लकड़ी की टाँग साबित करती थी।

इसके साथ ही उसने अपने साथी की ओर हाथ बढ़ा दिया, जो चेहरे पर ऐसे भाव लिए उसे सुन रहा था, मानो किसी चालाक वक्ता से एक ऐसा अपवादस्वरूप दिलचस्प भाषण सुन रहा हो, जिससे वह सहमत भी न हो। वह हँसा और उसने फ्यूकूम्बी की पीठ किसी पुराने दोस्त की तरह ठोंकी और सड़क के पार चला गया। फ्यूकूम्बी को उसके हँसने की आवाज़ पसन्द नहीं आयी।

उसके अगले कुछ दिन और बुरी हालत में गुज़रे।

ऐसा प्रतीत हुआ कि भीख की अच्छी नियमित आपूर्ति के लिए ज़रूरी है एक निश्चित जगह पर बैठे रहना (और अच्छी जगहें और बुरी जगहें थीं), और वह ऐसा नहीं कर सकता था। उसे हमेशा खदेड़ दिया जाता था। वह समझ नहीं पाता था कि आख़िर बाकी भिखारी क्या जुगाड़ करते थे। पता नहीं कैसे वे सभी उससे ज़्यादा दयनीय दिखते थे। उनके कपड़े सचमुच चीथड़े थे, जिसके जरिये कोई उनकी हड्डियाँ देख सकता था। (बाद में वह समझा कि कुछ ख़ास दायरों में ऐसे कपड़े के सूट को जिनमें यह मांस-दिखाऊ झरोखे नहीं होते थे, वहाँ इन्हें कागज़ से ढँकी दुकान की खिड़की माना जाता है।) इसके अलावा अपने बाहरी दिखावे से भी अधिक घिनौने दिखते थे। उनके रोग संख्या में ज़्यादा और भयंकर

थे। उनमें से कई नीचे बिना कुछ रखे ठण्डे खड़ंजे पर बैठते थे, ताकि आस-पास से गुज़रने वालों को यह पक्का यकीन हो जाए कि भिखारी बीमार पड़ जाएगा। फ्यूकूम्बी बहुत खुशी से ठण्डी फर्श पर बैठ जाता अगर उसे बैठने दिया गया होता। बिल्कुल साफ़ था कि किसी भी तरह इस घृणित और दयनीय स्थिति की इजाज़त सभी को नहीं थी। पुलिसवाले और भिखारी बराबर उसे तंग करते रहते थे।

जिन स्थितियों से वह गुज़रा था, उनके कारण उसे ठण्ड लग गयी जो उसकी छाती में उतर गयी। इसके कारण उसे दर्द से खाँसते हुए बुख़ार में भटकना पड़ता था।

एक शाम वह फिर उस जवान भिखारी से मिला, जो फौरन उसका पीछा करने लगा। दो गली आगे एक और भिखारी पहले वाले के साथ आ गया। उसने दौड़ना शुरू कर दिया; वे दोनों भी दौड़ पड़े।

उनसे बच भागने के लिए वह एक पतले गलियारे में मुड़ गया। वह पहले ही यह सोच चुका था कि वह बच निकला है, जब उसने अचानक उन दोनों को एक गली के कोने पर अपने सामने पाया। इससे पहले कि वह मुड़ पाता उन्होंने उसे छड़ी से पीटना शुरू कर दिया। एक ने तो उसे खड़ंजे की तरफ़ धकेल दिया और उसकी लकड़ी वाली टाँग को खींचने लगा जिससे वह पीछे की और उसके सिर पर गिर पड़ा। तभी उन्होंने उसे छोड़ दिया और भाग खड़े हुए क्योंकि दूसरे कोने से एक पुलिसवाला आ रहा था।

फ्यूकूम्बी यह उम्मीद कर ही रहा था कि पुलिसवाला उसकी मदद करेगा, कि उसके पीछे के घरों के बीच के गलियारे से तीसरा भिखारी एक छोटे से ठेले पर आया। उसने उत्तेजित होकर दोनों भागते हुए आदमियों की और इशारा किया और भर्रायी आवाज़ में पुलिसवाले से कुछ कहने की कोशिश की। जब फ्यूकूम्बी को पुलिसवाले ने झटका दिया, लात मारकर धकेला और कुचला, तो वह भिखारी पीछे उसके करीब ही दोनों हाथों से अपने लोहे के ठेले को धकेलते हुए चलता रहा।

ऐसा लगा कि उसके पैर ग़ायब हैं।

अगली गली के अन्त पर लंगड़े ने फ्यूकूम्बी को उसकी पतलून से पकड़ लिया। अब वे झोपड़पट्टियों के सबसे गन्दे कोने में थे। ये गलियाँ एक औसत कद के आदमी की लम्बाई से अधिक चौड़ी न थीं और उनमें से एक, छोटे-से गलियारे से होकर एक अंधकारमय अहाते में खुलती थी। 'उधर जाओ।' लंगड़े ने कर्कश

आवाज़ में हुक्म दिया। ठीक उसी वक्त उसने अपने ठेले को फ्यूकूम्बी की पिण्डली की हड्डी की तरफ धकेल दिया और वह सैनिक जो पहले ही भूख से कमज़ोर था, जबरन उसे छोटे-से अहाते में लाया गया, जो तीन वर्ग यार्ड से थोड़ा ही बड़ा था और इसके पहले कि वह अचम्भित आदमी अपने इर्द-गिर्द नज़र डालता, वह लंगड़ा जो विशालकाय जबड़े वाला एक प्रौढ़ आदमी था, अपने ठेले पर एक बन्दर की तरह चढ़कर बाहर आ गया। अचानक वह दो स्वस्थ पैरों का स्वामी बन गया और वह उस पर टूट पड़ा।

वह फ्यूकूम्बी से आराम से खोपड़ी भर लम्बा था और उसके हाथ औरांग-उटांग के समान थे। *अपना कोट उतार दो'* वह गुर्राया, *'और खुली बराबर लड़ाई में दिखलाओ कि एक अच्छी और फायदेमन्द ज़मीन के लिए तुम मुझसे काबिल आदमी हो। "सबसे काबिल को रास्ता और विजित को नरकदण्ड", यही मेरा आदर्श वाक्य है। इस तरह सम्पूर्ण मानव जाति को फायदा होता है क्योंकि सबसे काबिल सबसे ऊपर जाते हैं और धरती पर अच्छी चीज़ों के मालिक होते हैं। लेकिन कोई घटिया तरकीब मत लगाना, कमर के नीचे वार मत करना और घुटनों का इस्तेमाल मत करना। अगर लड़ाई को निर्णायक होना है तो क्वींसबेरी नियमों के अनुसार ही लड़ी जानी चाहिए!'*

लड़ाई छोटी थी। शारीरिक और आत्मिक रूप से टूटा-फूटा फ्यूकूम्बी समय से पहले ही बूढ़े के सामने गिर पड़ा।

ओल्ड ओक स्ट्रीट का ज़िक्र तक नहीं हुआ।

एक हफ्ते तक सैनिक अपने नए मालिक के हुक्म तले रहा। मालिक ने उसे, एक बार फिर से वर्दी में, एक निश्चित कोने में बैठा दिया। शाम को जब वह अपनी सारी कमाई बूढ़े को सौंप देता, तो वह उसे खाना खिलाता।

उसकी आय अभी भी बेहद निम्न स्तर पर बनी हुई थी। उसे सबकुछ अपने मालिक को देना पड़ता था, इसलिए वह कभी न जान सका कि उसके कुछ टके वह हिलसा मछली और सस्ती जिन शराब खरीदने के काबिल थे या नहीं, जो उसके दिन भर का मुख्य आहार थे। वह बूढ़ा आदमी, जिसके रोग सैनिक के रोगों से कहीं ज़्यादा भयंकर दिखते थे, लेकिन जो असलियत में थे ही नहीं, काफ़ी बेहतर धन्धा कर रहा था।

कुछ समय बाद सैनिक को इस बात का पक्का भरोसा हो गया कि उसका मालिक सिर्फ़ पुल पर उस जगह को अपने फायदे के लिए हथियाना चाहता था। मुनाफ़े का मुख्य स्रोत वे लोग थे जो हर सुबह वहाँ आते थे, या, अगर वे

काम-धन्धे पर जा रहे होते थे, तो हर सुबह और शाम वहाँ से गुज़रते थे। वे केवल एक बार देते थे और आम तौर पर सड़क के एक और ही चलते थे। लेकिन कभी-कभी वे साइड बदल लेते थे। उनके भरोसे नहीं रहा जा सकता था।

फ्यूकूम्बी ने महसूस किया कि यह स्थिति पहले से एक कदम आगे है। लेकिन फिर भी यह कोई अच्छी स्थिति नहीं थी। जब एक हफ्ता बीत चुका था, तो बुड्ढे ने प्रत्यक्षतः अपने लिए ओल्ड ओक स्ट्रीट की गुप्त संस्था का अभिवादन प्राप्त किया। एक दिन बिल्कुल सुबह जब वह एक बोट हाउस में स्थित अपने रैन-बसेरे से निकल रहे थे, उन पर चार या पाँच भिगमंगों ने हमला किया, और उन्हें कई गलियों से होते हुए एक छोटी-सी गन्दी दुकान पर ले आए जिसके बोर्ड पर लिखा था-Instruments।

एक दीमक चटे काउण्टर के पीछे दो आदमी खड़े थे। एक व्यक्ति छोटा था और मुरझाया हुआ था और उसका चेहरा अप्रिय था। वह बाजू वाली कमीज़ में था, एक चीकट-सी टोपी उसके सिर के पिछले हिस्से पर टिकी थी और उसने अपने हाथ जेब में डाल रखे थे। उसकी आँखें दुकान की खिड़की के बाहर उदास-सी सुबह में खोई हुई थी। वह न तो मुड़ा न ही उसने आगन्तुकों मे कोई रुचि दिखायी। दूसरा आदमी मोटा था और उसका चेहरा बेतरह लाल था और अगर यह मुमकिन था तो पहले चेहरे से भी अधिक अप्रीतिकर मालूम पड़ता था।

'गुड मॉर्निंग मिस्टर स्मिथी,' उसने बुड्ढे से ऐसा लगा मानो घृणापूर्वक कहा, और लोहे से ढके एक दरवाज़े से होते हुए पीछे के कमरे में चला गया। बुड्ढे ने उस व्यक्ति के पीछे जाने से पहले, जो उसे वहाँ लाया था, अनिश्चय के साथ चारों और निगाह दौड़ाई। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था।

फ्यूकूम्बी, स्पष्ट रूप से विस्मृत वहीं दुकान में खड़ा रहा। दीवार पर कुछ वाद्य यंत्र टंगे थे, चकनाचूर पुराने भोंपू, बिना तार के वायलिन, कुछ मौसम की मार खाये हर्डी-गर्डी। धन्धा चकाचक नहीं मालूम पड़ता था क्योंकि वाद्य यंत्रों पर धूल की मोटी परत जमी हुई थी।

फ्यूकूम्बी समझ गया कि इन सात-आठ पुरावशेषों का उस धन्धे में कोई स्थान नहीं था जिसकी सेवा में वह अभी-अभी रत हुआ था। घर की संकीर्ण और दो खिड़कियों वाली सामने की दीवार भी इस बात का एक बेहद अधूरा अंदाज़ा देती थी कि घर का अन्दरूनी हिस्सा कितना लम्बा-चौड़ा था। यहाँ तक कि कमज़ोर नकद-दराज़ वाला काउण्टर भी इस बात का कोई बोध नहीं कराता था।

उस घर में, जो दरअसल दो पिछले हातों समेत तीन घर थे, एक वर्कशॉप

था जिसमें एक दर्जन लड़कियाँ सिलाई करती थीं और एक जूता बनाने का बन्दोबस्त था जिसमें उतनी ही संख्या में निपुण कारीगर काम करते थे। और सबसे महत्वपूर्ण था इमारत के अन्दर कहीं पर मौजूद वह रिकॉर्ड्र्स रूम जिसमें वे कम से कम छः हज़ार ऐसे नाम दर्ज़ थे जिन्हें इस फर्म से जुड़े होने का गौरव प्राप्त था। सैनिक को इस बात का कोई अन्दाज़ा नहीं था कि यह अनोखा और बदनाम धन्धा कैसे चलता था। यह सब समझने में उसे पूरा एक हफ्ता लगा। लेकिन वह इतना हताश था कि उसे इस बात का अहसास ही नहीं हुआ कि यह तो उसकी खुशकिस्मती का नतीजा था कि उसे यहाँ आने और ऐसे शक्तिशाली और गुप्त संगठन में शामिल होने की इजाज़त मिली।

फ्यूकूम्बी का पहला मालिक मिस्टर स्मिथी उस सुबह फिर नज़र नहीं आया, और फ्यूकूम्बी ने उसे सिर्फ़ दो या तीन बार और देखा-वह भी दूर से।

कुछ समय बाद मोटे आदमी ने लोहे का दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और दुकान की तरफ़ आवाज़ दीः

'उसका सचमुच लकड़ी का पैर है।'

छोटा आदमी जो फिर भी सरदार मालूम पड़ता था, फ्यूकूम्बी के पास टहलते हुए गया और तेज़ गति से उसके लकड़ी के पैर को देखने के लिए उसकी पतलून उठाई। उसके बाद जेब में हाथ डाले वह वापस खिड़की के पास चला गया, बाहर देखा और नरमी से कहाः

'तुम क्या कर सकते हो?'

'कुछ नहीं, मैं भीख माँगता हूँ।' सैनिक ने ठीक उतनी ही नरमी से जवाब दिया।

'यही तो हर कोई करना चाहेगा,' छोटे आदमी ने एक बार भी इधर-उधर देखे बिना तिरस्कार के साथ कहा। *'तुम्हारे पास लकड़ी का पैर है और चूँकि तुम्हारे पास लकड़ी का पैर है, तुम भीख माँगना चाहते? लेकिन तुमने अपना पैर देश की सेवा में गवाँया? उतना ही बदतर है यह। वह किसी के साथ भी हो सकता है। (बशर्ते वह युद्ध कार्यालय में न हो।) जब कोई अपना पैर गवाँता है तो उसे औरों की दया पर फेंक दिया जाता है? निश्चित रूप से ही ऐसा ही होता है! लेकिन यह भी उतना ही निश्चित है कि लोग पैसे दान देना पसन्द नहीं करते। युद्ध-वे तो अपवाद होते हैं। अगर कोई भूकम्प आता है तो उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता। मानो कोई देशभक्तों की देशभक्ति से बनने वाले मुनाफ़े के बारे में जानता ही न हो। पहले तो वे स्वेच्छा से भर्ती होते हैं और फिर जब उनके*

पैर उड़ा दिये जाते हैं, तो वे स्थिति को स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। उन अनगिनत मामलों से बिल्कुल अलग, जहाँ किसी शराबखाने की छकड़ागाड़ी खींचने वाला अपनी सेवाओं के दौरान अपनी टाँग गवाँ बैठता है और फिर फलाँ-फलाँ युद्ध में टाँग गवाँने के नाम पर पैसा बटौरता है। और एक बात और है, मुख्य बातः क्यों किसी का अपनी देश की ख़ातिर युद्ध पर जाना इतना फ़ायदेमन्द है, क्यों ये वीर पुरुष आत्म-सम्मान से इतना लबालब भरे रहते हैं?-सिर्फ़ इसलिए क्योंकि इसमें टाँग गवाँने का मौक़ा होता है? इसमें अगर यह छोटा-सा ख़तरा-अच्छा ठीक है, बड़ा ख़तरा, अगर तुम चाहते हो-न होता तो उनका राष्ट्र के प्रति ऐसा हार्दिक आभार क्यों होता है? वास्तव में तुम एक युद्ध-विरोधी प्रदर्शनकारी हो। न, इससे इंकार करने का कोई फ़ायदा नहीं। जब तुम अपने काठ के पैर को छिपाने का कोई प्रयास किये बिना खड़े होते हो तो तुम सबसे कह रहे होते होः देखो, युद्ध कितनी भयंकर चीज़ है, यह एक इंसान का पैर हड़प जाता है! तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए। युद्ध उतने ही ज़रूरी होते हैं जितने वे भयंकर होते हैं। क्या तुम चाहते हो कि हमसे हर चीज़ छिन जाए? क्या तुम ग्रेट ब्रिटेन को विदेशियों से भरा देखना चाहते हो? क्या तुम शत्रुओं के बीच रहना चाहोगे? लुब्बेलुबाब यह है कि तुम्हें इधर-उधर अपनी दुर्दशा का खोमचा नहीं लगाना चाहिए। तुम्हारे अन्दर इसके लिए प्रतिभा नहीं है...'

जब उसने बोलना ख़त्म कर लिया तब बिना सैनिक पर निगाह डाले लोहे के दरवाज़े से होकर वह अपने ऑफिस में चला गया। लेकिन मोटा आदमी बाहर आया और फ्यूकूम्बी को एक अहाते से दूसरे अहाते में ले गया, जहाँ, उसने बताया, उसके पैर की वजह से, उसे एक कुत्ता घर की निगरानी का काम सौंप दिया।

नतीजे के तौर पर, सैनिक हर सुबह और शाम अहाते के चारों और कसरत करते और अन्धों के कुत्तों की देखभाल करते हुए टहलता। वहाँ पर कुत्तों की अच्छी-खासी संख्या मौजूद थी। उनका चुनाव अन्धे लोगों को राह दिखाने की क्षमता के आधार पर नहीं किया गया था (ऐसे अभागे तो वहाँ पाँच से भी कम थे), बल्कि दूसरी वजहों से किया गया था। मसलन, वे राहगीरों के दिल में पर्याप्त दया पैदा कर पाते हैं या नहीं, मतलब, पर्याप्त थकेहाल दिखते हैं या नहीं जो कि निस्सन्देह रूप से, अंशतः उनके आहार पर भी निर्भर करता था। वे सभी निहायत ही फटेहाल दिखते थे।

अगर फ्यूकूम्बी से किसी कल्याण कार्यकर्ता ने पूछा होता कि उसका पेशा क्या है, तो उसे जवाब देने में दिक्कत पेश आई होती, पुलिस से पंगे के उसके डर से बिल्कुल अलग, अपने आपको भिखारी वह शायद ही कह पाता। वह एक ऐसी संस्था में कर्मचारी था, जो सड़क पर भीख माँगने में सहायक सामग्री बेचती थी।

उसे कामचलाऊ काबिलियत वाला भिखारी बनाने के भी और प्रयत्न नहीं किये गए। यहां मौजूद विशेषज्ञों ने पहली नज़र में ही पहचान लिया था कि वह कभी सफल नहीं होगा। उसकी किस्मत अच्छी थी। उसके पास उनमें से एक भी काबिलियत नहीं थी जिससे एक भिखारी का निर्माण होता है, लेकिन उसके पास एक चीज़ थी, जिसकी शेख़ी हर कोई नहीं बघार सकता-एक काठ का पैर। और यह चीज़ उसके लिए एक नौकरी का इंतज़ाम कर देने के लिए पर्याप्त थी।

आए दिन उसे दुकान पर बुलाया जाता और उसे पास के पुलिस स्टेशन से आए एक दरोगा को अपना लकड़ी का पैर दिखाना होता था। इस मकसद के लिए पैर का उतना असली दिखना असल में एकदम ज़रूरी नहीं था जितना कि वह वाकई था। वह दरोगा उस पर नज़र भी मुश्किल से डालता था। लगभग हमेशा ही ऐसे दौरों के दौरान पॉली पीचम, संस्था के मुखिया की बेटी वहाँ मौजूद रहती थी, और वह जानती थी कि दरोगा को कैसे निपटाना है।

लेकिन आम तौर पर उस भूतपूर्व सिपाही ने कुत्तों के बीच अपने जीवन के आख़िरी छः महीने बिताए जो अभी उसके पास बाकी थे। उसके बाद उसने अपना क्षुद्र अस्तित्व बड़े असाधारण तरीके से समाप्त कर लिया, अपनी गर्दन के चारों और एक रस्सी के साथ और ढेर सारे लोगों के अनुमोदन के बीच।

वह छोटा आदमी जिसे उसने उस सुबह दुकान की खिड़की पर खड़ा देखा था, जब वह इस दिलचस्प घर पर पहुँचा था, मिस्टर जोनाथन जेरेमिया पीचम था।

खण्ड - एक

पॉली पीचम का प्रेम और उसकी शादी

जब मैं एक सीधी-सी छोटी लड़की थी-
क्योंकि कभी मैं थी सीधी-सी बिल्कुल तुम्हारी तरह-
मैं सोचती थी : शायद एक दिन कोई आएगा
और तब मुझे जानना होगा कि क्या करना है।
और अगर वह पैसे वाला है
और अगर वह एक अच्छा लड़का है
और अगर उसके कार्यदिवस का कॉलर बर्फ सा सफेद है
और अगर वह जानता है कि कैसे एक महिला से व्यवहार करना है
तब मैं उसे कहूँगीः 'नहीं।'
क्योंकि तुम्हें मौसम के बारे में बात ज़रूर करनी चाहिए
और कभी अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं होने देना चाहिए।
चाँद पूरी रात चमकेगा, पहले की तरह;
निश्चित रूप से नाव किनारे से बँधी रहेगी
लेकिन यह इतना ही चल सकता है।
ओह, एक लड़की अपने को बेहद घटिया बनाना बर्दाश्त नहीं कर सकती!
ओह, एक लड़की को अपने आदमी को काबू में रखना ही चाहिए।
नहीं तो कुछ भी हो सकता है!
आह, एकमात्र उत्तर हैः नहीं।

पहला जो आया, वह केण्ट से था
और वह था सबकुछ जो एक आदमी को होना चाहिए।
दूसरे के पास बन्दरगाह में तीन स्टीमर थे
तीसरा था पागल मेरे लिए।

और चूँकि उनके पास पैसा था
और चूँकि वे अच्छे लड़के थे
कार्यदिवस के अपने बर्फ़ से सफेद कॉलरों के साथ
और चूँकि वे जानते थे कैसे एक महिला से व्यवहार करना है
मैंने उन तीनों को कहा : 'नहीं।'
तो मैंने मौसम के बारे में बात की,
अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं होने दिया
और चाँद पूरी रात चमका, पहले की तरह;
निश्चित रूप से नाव किनारे से बँधी थी,
लेकिन यह सब इतना ही चल सकता था।
ओह, एक लड़की अपने को बेहद घटिया बनाना बर्दाश्त नहीं कर सकती!
ओह, मुझे अपने आदमी को काबू में रखना ही था।
नहीं तो कुछ भी हो सकता था!
आह, एकमात्र उत्तर थाः 'नहीं।'
लेकिन फिर एक अच्छी-सी सुबह, जब आसमान नीला था
एक आदमी आया जिसने आह नहीं भरी
बस अपना हैट मेरे शयनकक्ष में खूँटी पर टाँग दिया,
और मैंने उसे आने दिया, न जाने क्यों।
और जबकि उसके पास पैसा न था
और जबकि वह एक अच्छा लड़का नहीं था
और उसका रविवार का कॉलर भी बर्फ़-सा सफेद न था,
और जबकि वह नहीं जानता था कैसे एक महिला से व्यवहार करना है
उससे मैं 'नहीं' न कह पायी।
तब मैंने मौसम के बारे में बात नहीं की
और मैंने अपनी भावनाओं को प्रकट होने की इजाज़त दी।
आह, चाँद सारी रात चमकता रहा, पहले की तरह;
लेकिन नाव को खुला छोड़ दिया गया था और किनारे से रवाना कर दिया गया था,
यह सब बस ऐसा ही होना था!
ओह, कभी-कभी एक लड़की को ज़रूर बेहद घटिया बन जाना चाहिए
ओह, कभी-कभी वह अपने आदमी पर काबू नहीं रख पाती।
लेकिन तब, आह, कुछ भी हो सकता है!
और ऐसा कोई शब्द नहीं होता जैसे 'नहीं।'

(पॉली पीचम का गीत)

1

भिखारी का दोस्त

मानव जाति की बढ़ती कंजूसी का मुकाबला करने के लिए मिस्टर पीचम ने एक दुकान खोली थी जिसमें क्षुद्रतम भिखारी भी ऐसे सहायक औज़ार किराए पर ले सकता था जिनपर निष्ठुरतम हृदय को भी पिघला देने की गारण्टी थी।

पहले तो सेकेण्ड हैण्ड वाद्य यंत्रों की बिक्री में संलग्न रहते हुए, जिन्हें वह भिखारियों और सड़क छाप गायकों को बेचता, या किराए पर देता था, और फिर चूँकि मुनाफ़ा पर्याप्त नहीं था, पैरिश के लिए भारग्राही अधिकारी के रूप में काम करते हुए, उसे ग़रीब लोगों के हालात का अध्ययन करने का पर्याप्त अवसर मिला। भिखारियों द्वारा उसके वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल ही वह पहली चीज़ थी जिसने उसे सोचने का मसाला दिया।

हर कोई जानता था कि ये लोग वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल लोगों के दिलों को पिघलाने के लिए करते हैं, जो कतई आसान नहीं। एक व्यक्ति जितना अधिक सम्पन्न होगा, किसी के लिए सहानुभूति महसूस करना उसके लिए उतना ही मुश्किल होता है, हालाँकि वह एक कंसर्ट में सीट के लिए ऊँची कीमत अदा करने को बिल्कुल तैयार रहता है, जहाँ, उसे उम्मीद होती है कि वह अपना ज़रूरी आत्मिक पोषण प्राप्त करेगा। लेकिन जहाँ तक कम सम्पन्न आदमी का सवाल है, उसके पास हमेशा दान देने के लिए, कुछ पैसा होता है और इसलिए अस्तित्व की लड़ाई में कठोर हुए अपने दिल को इस या उस छोटी-सी मेलोडी पर द्रवित होने की इजाज़त देना उसके बूते के अन्दर होता है।

फिर भी जोनाथन जेरेमिया पीचम बार-बार पाता कि उसके ग्राहक जो बैरल-ऑर्गन या तुरही किराए पर लेते वे भुगतान में हमेशा सुस्त रहते। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है, कि कुछ चीज़ें आम लोगों के दिलों को पिघला सकती हैं, लेकिन दिक्कत यह है कि कुछ बार उपयोग के बाद ये चीज़ें प्रभावी

नहीं रह जातीं, क्योंकि आदमी के पास एक बार नर्मदिली के विनाशकारी परिणाम देख लेने के बाद अपनी इच्छानुसार कठोर हृदय बन जाने के काबिल होने की भयानक क्षमता होती है। मसलन, अक्सर ऐसा होता है कि अगर एक व्यक्ति पहली बार एक बिना हाथ के आदमी को देखता है तो उसे लगने वाला आघात उससे दो पेंस निकलवा लेगा। लेकिन दूसरी बार, वह सिर्फ़ आधा टका देगा और अगर वह तीसरी बार देखता है, तो सबसे ज़्यादा गुंजाइश यह होगी कि वह निष्ठुरता के साथ उसको पुलिस को सौंप देगा।

पीचम ने काफ़ी छोटे तरीके से शुरू किया था।

कुछ समय तक उसने अपनी सलाह से कुछ भिखारियों की मदद की, एक बाँह वाला, अन्धा और अत्यधिक बूढ़ा। उसने उनके लिए परिस्थितियाँ और स्थान ढूँढे, जहाँ लोग दान देते थे; क्योंकि लोग कहीं भी, किसी भी वक्त नहीं दे देते हैं। मिसाल के तौर पर, जून के महीने में संगीत बजाने की जगह, रात में पार्कों के चक्कर मारना और प्रेमी युगलों के प्रेम में विघ्न डालना बेहतर रहता था। वे ज़्यादा इच्छा से देते थे।

वे भिखारी जो पीचम के पास आते थे, जल्दी ही समझ गये कि उनकी आमदनी बढ़ रही है। इसलिए वे उसे उसके परिश्रम के लिए अपनी आमदनी का एक हिस्सा देने को तैयार हो गयै।

अब अपने धन्धे की और से निश्चिन्त होकर उसने अपनी जाँच-पड़ताल आगे बढ़ायी।

बहुत जल्दी ही उसने खोज निकाला कि एक दयनीय बाह्याकृति जो वास्तविक है, एक कृत्रिम रूप से ओढ़ी हुई दयनीयता से कहीं कम प्रभावी होती है। अक्सर ऐसा होता था कि सिर्फ़ एक हाथ वाले लोगों के पास दयनीयता का प्रभाव पैदा करने की भी प्रतिभा नहीं होती थी। दूसरी और, इस मामले में ज़्यादा प्रतिभाशाली लोग अक्सर बिना किसी काठ के अंग के होते थे। यहीं पर पहल लेने का एक मौक़ा था।

पीचम ने कुछ कृत्रिम अंग, कटी बाँहें और पैर बनाए जो बस यह प्रकट करते थे कि उन्हें पाशविकता के साथ काट-फाड़ डाला गया है। इसे आश्चर्यजनक सफलता मिली।

कुछ ही समय बाद वह ऐसे अंगों को तैयार करने के लिए एक कार्यशाला खड़ी करने में कामयाब हो गये।

कुछ ख़ास दुकानदार, विशेषकर बने-बनाए खाद्य पदार्थों के विक्रेता, ब्यूटी

पार्लर के मालिक, और साधारण कसाई भी ऐसी घिनौनी अंग विकृतियों वाले किसी भी भिखारी को आगे बढ़ जाने के प्रोत्साहन के रूप में इच्छा से मामूली रकम दे देते थे। यह तो एक मामूली-सी शुरुआत से और ऊँची आमदनी की ओर एक छोटा-सा कदम मात्र था, जिसके बदले में भिखारी प्रतियोगी बन्दोबस्त में भेजा जाना स्वीकार कर लेता था। धन्धा अपने अस्तित्व के लिए कठिन लड़ाई लड़ता था।

जैसे-जैसे रिकॉर्ड रूम बढ़ा, पीचम, या 'भिखारी के दोस्त' ने, जैसा कि वह अपने आपको कहता था, विशेष जिलों को निश्चित भिखारियों के लिए एकाधिकृत करना शुरू कर दिया। घुसपैठियों को दूर रखा जाता था, कुछ मामलों में बल प्रयोग के द्वारा। इस नये प्रयोग से पीचम के उद्यम का सफलता की राह पर असली श्रीगणेश हुआ।

लेकिन वह इन सफलताओं के बाद ठहर नहीं गया। उसने अपने लोगों को उनके पेशे के लिए चाक-चौबन्द करने के लिए अनथक परिश्रम किया। अब तक खासे बड़े हो चुके उसके कारोबार के परिसर के कुछ निश्चित कमरों में भिखारियों को, जो ज़्यादा से ज़्यादा कर्मचारी का दर्ज़ा ग्रहण करते जा रहे थे, एलिमिनेटिंग टेस्टों के बाद झटके से चलने, अन्धों की तरह चलने आदि की कला में प्रशिक्षित किया जाता था। मिस्टर पीचम को कारोबार में कोई ठहराव मंज़ूर नहीं था।

मानवीय दूर्दशा के विभिन्न रूपों में महारत हासिल की गयी थी; प्रगति के शिकार, युद्ध के शिकार, औद्योगिक समृद्धि के शिकार। उन्होंने दिलों को पिघलाना, ध्यान खींचना, तंग करना सीखा था। स्वाभाविक रूप से लोगों से लाभजनक कारोबार को छोड़ने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी, पर अक्सर वे इतने मज़बूत नहीं हुआ करते कि इसके नतीजों को छिपाने की इच्छा करें।

करीब पच्चीस साल की अनवरत गतिविधि के बाद पीचम तीन मकानों और एक फलते-फूलते कारोबार का स्वामी था।

पीच-ब्लॉसम

जिस मकान में मिस्टर जोनाथन जेरेमिया पीचम अपना असाधारण कारखाना चलाते थे, उसमें कई कमरे थे। उनमें से एक सुश्री पॉली पीचम का छोटा-सा गुलाबी रंग का कमरा था। मिस्टर पीचम के निजी मकान के चार छोटे कमरों में से दो सड़क की ओर खुलते थे; बाकी दो अहाते के सामने पड़ते थे। लेकिन इन

सबके आगे एक लकड़ी की बालकनी निकली हुई थी, इसलिए उनकी खिड़कियों पर लिनेन के पर्दे तो होने ही थे, ताकि लोगों को अन्दर देखने से रोका जा सके और ये खिड़कियाँ सिर्फ़ सबसे गर्म रातों में खोली जाती थीं ताकि जब गर्म कमरा बहुत घुटन भरा हो गया हो, तो एक हवा का झोंका अन्दर आ सके। पॉली का कमरा तीसरी मंज़िल पर था, छत के ठीक नीचे।

पूरे पड़ोस में सुश्री पीचम 'द पीच' के नाम से मशहूर थीं। उनके पास एक बहुत खूबसूरत त्वचा थी। जब वह चौदह साल की थी तब तीसरी मंज़िल पर उन्हें उनका अपना कमरा दे दिया गया था; लोग कहते थे कि ऐसा इसलिए किया गया था ताकि उसका अपनी माँ से बहुत आमना-सामना न हो, जो आत्माओं को लेकर अपनी कमज़ोरियों पर काबू पाने में असमर्थ थी। इसी उम्र से उन्हें 'सुश्री' कहकर बुलाया जाने लगा था, और वे दुकान के सामने कुछ निश्चित मौक़ों पर नज़र आती थीं, ख़ास तौर पर जब दरोगा मिचजिन वहाँ आते थे। पहले-पहले तो वह इसके लिए, शायद, काफ़ी छोटी थी; लेकिन जैसा कि बताया जा चुका है, वह बहुत सुन्दर थी।

दूसरे कमरों, सिलाई कक्ष और लेदर रूम में वह कभी-कभार ही जाती। उसके पिता अपनी कार्यशालाओं में उसका जाना नापसन्द करते थे। फिर भी वह उनके बारे में जानती थी और उसे वहाँ कोई दिलचस्प चीज़ नहीं नज़र आती थी।

इस दौरान वाद्य यंत्रों की दुकान काफ़ी फली-फूली, और हर कोई कहता था कि मोटा मिचजिन उसके बाप के कारोबार में कहीं ज़्यादा दिलचस्पी दिखलाता यदि पॉली न होती। लोगों की एक भारी संख्या सिर्फ़ उन वाद्य यंत्रों की ख़ातिर दुकान के अन्दर-बाहर आती-जाती।

जोनाथन जेरेमिया पीचम निस्सन्देह तीन पैरिशों के लिए भारग्राही अधिकारी थे, लेकिन ग़रीब उनके पास जाना पसन्द नहीं करते थे; वे वास्तव में इस काम के लिए बहुत ग़रीब थे। इसके अलावा, कि भीख माँगने का धन्धा उसके निर्देशन में व उसके नियमों के अनुसार संचालित होता था, उसका इस धन्धे से कोई ताल्लुक न था।

यह दरअसल स्वाभाविक ही था कि मोटे मिचजिन से अच्छे ढंग से पेश आने के लिए पीच कुछ दिक्कत उठाती क्योंकि हर चीज़ आख़िर उसी की ख़ातिर तो की जा रही थी। कई बार उसने अपने पिता को कहते सुना था : 'अगर बच्ची की ज़िन्दगी का सवाल न होता, तो मैं यह कुत्ते की ज़िन्दगी एक दिन और न

बर्दाश्त करना; तुम्हारे लिए तो कत्तई नहीं एम्मा। बहरहाल, इसका यह मतलब नहीं कि तुम पी-पीकर अपनी कब्र खोद लो।'

एम्मा मिसेज़ पीचम थीं, और जब उनके पति उनकी मामूली आदतों को लेकर अपनी नापसन्दगी यों जाहिर करते तो वे हमेशा कहतीं: 'अगर अपनी शादी-शुदा ज़िन्दगी में कुछ दूसरे सुख हासिल हुए होते, तो एक बूँद भी मेरे होठों को पार न करती। इसके अलावा, मैं आज ही पीना छोड़ सकती थी, अगर मैं चाहती होती।'

बच्चे ऐसी बातचीत काफ़ी सुनते हैं और यह उनपर एक निश्चित छाप छोड़ती है।

इस प्रसंग में कोई सोच सकता है कि मिचजिन व अन्य के प्रति पॉली द्वारा प्रदर्शित प्रेम-भाव उसकी परवरिश के ढंग की वजह से था। लेकिन मामला बिल्कुल उल्टा था। पॉली अपनी जवानी का एक मौक़ा भी नहीं याद कर सकती थी, जब वह स्नानघर के टब में अपनी रात्रि-पोशाक पहने बिना नहाई हो (स्नान-घर हमेशा पर्दों से ढंका रहता था)। मिसेज पीचम को यह गँवारा न था कि वह अपनी खूबसूरत त्वचा देख सके।

मिसेज पीचम उसे पैतृक मकान से पाँच मिनट के लिए भी बाहर निकलने की इजाज़त देने के बारे में सपने में भी नहीं सोच सकती थी। जाहिरा तौर पर, पॉली सभी बच्चों की तरह स्कूल जाती थी। लेकिन सैम उसे स्कूल पहुँचाता, और स्कूल से घर ले आता था।

मिस्टर पीचम ने जब पॉली को अपने कमरे की दीवार पर एक अभिनेता का फोटो टाँगते देखा, जो उसने अखबार से काटा था तो अपनी पत्नी से कहा, 'तुम्हारी बेटी बस कामुकता का पिण्ड-भर है, उससे ज़्यादा कुछ नहीं।' और सालों तक पॉली के बारे में मि. पीचम की यही धारणा बनी रही।

मिसेज पीचम के दिमाग़ में कामुकता के कुछ अलग बिम्ब उभरते थे। वे मुख्य रूप से दुखद थे। जब उनकी बिटिया की उम्र अट्ठारह साल से अधिक हो गयी तो वे उसे अपनी रविवार की दोपहर के 'ऑक्टोपस' के भ्रमण पर साथ ले गयीं। 'ऑक्टोपस' एक प्रतिष्ठित शराबखाना था। इसके पीछे एक बगीचा भी था जिसमें चेस्टनट के तीन बौने पेड़ थे। एक ब्रॉसबैण्ड रविवार की दोपहरों और शामों को संगीतमय बनाता था। फिर नाच-गाना भी होता था। कहने की ज़रूरत नहीं कि यह निहायत ही प्रतिष्ठित किस्म का नाच होता था। इस दौरान माताएँ बागीचे-बाड़े के पीछे बैठकर बुनाई किया करती थीं।

ऐसी जगह पर पॉली सरीखी लड़की बहुत देर तक लोगों की नज़रों से छिपी नहीं रह सकती थी। जल्दी ही उसके कई प्रेमी पैदा हो गये जिनमें से दो संजीदगी से ग़ौर किये जाने के अधिकारी थे। इन दोनों में से पहले थे मि. बेकेट और दूसरे थे हँसी-दिल्लगी में दिलचस्पी रखने वाले मि. स्माइल्स। फिर भी, मि. बेकेट के आसार मि. स्माइल्स के आगमन के साथ और उनकी बदौलत बेहतर हुए।

मि. बेकेट ठिगने और गठे बदन के व्यक्ति थे और उनका सिर मूली जैसा था। वे जूतों के ऊपर स्पैट (घुटने से पाँव तक का एक परिधान-अनु.) पहना करते थे और एक असाधारण रूप से मोटी छड़ी लेकर चलते थे जो बिरले ही उनके गोल-मटोल हाथ से बाहर आती थी। उनका रंग-रूप बहुत अच्छा न था। मि. स्माइल्स के साथ तो उनकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती थी, जो उनसे कहीं ज़्यादा जवान थे और उनका रंग उन नौजवान लोगों की तरह ही स्वस्थ-स्वच्छ था जो थेम्स में नाव खेने जाते हैं। लेकिन बेकेट व्यापारी था जबकि स्माइल्स सॉलिसिटर कार्यालय में क्लर्क था, और इसी बूते पर मि. बेकेट मिसेज पीचम को अपने प्रतिद्वन्द्वी से कहीं ज़्यादा आत्मविश्वास से उत्प्रेरित करते थे। स्माइल्स जैसे नौजवान लोगों के पास कोई दायित्वबोध नहीं होता। वे ज्यादातर वर्तमान में जीते हैं, जो उनकी मौज-मस्ती में ही ख़र्च हो जाता है। इस बात पर ज़ोर देने का क्या फ़ायदा कि ऐसा नकारा नौजवान अपने पेशे में अपने पैर जमाने की कोशिश करेगा? उसके लिए एक पेशे की क्या कीमत थी?

वसंत में पीच गृह-व्यवस्था की संध्या-कक्षाओं मे जाती थी। एक रात जब वह घर लौट रही थी तो मि. स्माइल्स अचानक उसके पीछे प्रकट हुए। वह उसे एक दरवाज़े की तरफ़ ठेल ले गये और उन्होंने अपनी बाँहें उसके आजू-बाजू फैलाकर और अपनी हथेलियाँ दीवारों पर लगाकर उससे बातचीत की। ज़्यादा समय तो उन्होंने पीच की खुशबू से तृप्ति प्राप्त की। उन्होंने उससे कुछ अधिक भी किया।

चूँकि मिसेज पीचम ने इस बात का कुछ अन्दाज़ा लगा लिया था, वे नियमित रूप से महीने में एक बार अपनी बेटी के साथ स्नान-घर जातीं और उन्होंने हर तरह से दिखला दिया कि वह मि. बेकेट को अधिक तरजीह देती हैं। मि. बेकेट लकड़ी के व्यापारी थे, साथ ही वह विवेकपूर्ण सिद्धान्तों वाले भद्रजन भी थे। मिसेज पीचम के संरक्षण की बदौलत उनका दावा काफ़ी मज़बूत हो जाता था-और केवल ऊपरी तौर पर नहीं। अगर एक सुदर्शन पुरुष का आकर्षण ज़बर्दस्त था तो एक समृद्ध व्यापारी का आकर्षण भी कहीं उन्नीस नहीं पड़ता

था।

इसके अलावा नाचने के दौरान उनका नितम्बों को पकड़ने का अन्दाज़ एक लकड़ी के व्यापारी के लिए विस्मयकारी था। नज़ाकत के ये मामूली प्रदर्शन जिन्हें मिसेज पीचम की मौन स्वीकृति प्राप्त थी आने वाले समय में और बेहतर और बड़ी सौग़ातों का वायदा करते मालूम पड़ते थे। लेकिन फिर भी मि. बेकेट इन मासूम अंतरंगताओं से ज़्यादा आगे कभी नहीं गये।

मि. स्माइल्स से मुकाबले में एक जगह वह कमज़ोर पड़ते थे, क्योंकि वे एक बहुत व्यस्त व्यक्ति थे और उनके पास मि. स्माइल्स जितना ख़ाली समय नहीं था। वह हमेशा बगैर अड़चन के कामों को अंजाम नहीं दे सकते थे।

फिर भी, उन्होंने जल्दी ही यह समझ लिया कि पीच उन्हें गम्भीरता से लेने में दिलचस्पी रखती है। सौभाग्य से एक निष्कपट विवाह पर आपत्ति करने लायक समझदारी उनके पास अधिकांश लोगों से कम थी। उन्होंने मिसेज पीचम और उनकी बेटी को थेम्स के किनारे पिकनिक का आमन्त्रण दिया। यह पिकनिक एक इतवार की सुबह सम्पन्न हुआ। लेकिन यह पिकनिक की योजना रद्‌द होते-होते बची थी। शनिवार की शाम पाँच बजे मि. पीचम बेहद दुखी हालत में घर आये थे। उन्होंने दयनीय स्वर में कैमोमिल चाय (औषधियों वाली चाय-अनु.) की माँग की। इसके बाद वह बिस्तर पर चले गये और गुनगुने पानी में भिगोये कपड़े में ईंट लपेटकर अपनी पत्नी द्वारा पेट सिंकवाया।

पिछले कुछ समय से वह ऐसे लेन-देन में उलझे रहे थे जो उनकी रोज़मर्रा की आम गतिविधियों के दायरे में नहीं आता था। इसका सरोकार ट्रांसपोर्ट-जहाज़ों वगैरह से था। ऐसा लगता था कि यह धन्धा कुछ मन्दा जा रहा था, और कोई भी चिन्ता उनका पेट ख़राब कर देती थी। लेकिन रविवार की सुबह वह अपनी पत्नी और बेटी के साथ चर्च गये, हालाँकि वह अभी भी बहुत कमज़ोर थे। चर्च से वह सीधे एक सम्मेलन में चले गये। दोनों महिलाएँ किस्मत वाली थीं; मि. पीचम गम्भीर दिक्कतों में फँसे मालूम पड़ते थे।

इस पिकनिक अभियान के लिए मि. बेकेट ने एक घोड़ा-गाड़ी किराए पर ली थी, जबकि वह खुद एक सफ़ेद सूट में सज-धज कर आये थे। इतनी तंग सीट वाली गाड़ी का बन्दोबस्त करने में उन्हें अच्छी-ख़ासी दिक्कत पेश आयी थी।

सैर के दौरान मिसेज पीचम ने अपने आपको बेकेट और पॉली के बीच ठूँस लिया। लेकिन जब वे अपने गन्तव्य पर पहुँचे तो तीन जोड़ी पैरों के बीच घुसाई गयी टोकरी में से जमने तक उबाले गये अण्डों, हैम, सैण्डविचों और एक ठण्डे

चिकन के अलावा जिन की तीन बोतलें भी झाँकने लगीं। नतीजतन, ऐसा हुआ कि घर-वापसी की यात्रा के दौरान मि. बेकेट प्रसन्नतापूर्वक पॉली के बगल में बैठे थे।

हल्की बारिश हो रही थी। जिस मोटे ऊनी कम्बल में लिपटे हुए थे, वह पर्याप्त बड़ा नहीं था; और मिसेज पीचम ने मंद्र स्वर में ड्राइवर पर जल्दी चलने के लिए दबाव डाला, क्योंकि दो बजने वाले थे।

'ऑक्टोपस' के सामने दोनों महिलाओं से विदाई संक्षिप्त थी, और किसी भावी मुलाकात की व्यवस्था नहीं हुई। अपने चौरस सिर पर गिरती बारिश की बूँदों के बावजूद विदाई के दौरान, वह लकड़ी का व्यापारी ठीक उसी मुद्रा में खड़ा था जिसमें वह इस छोटे-से अभियान की शुरुआत में खड़ा था। लेकिन अब वह वही पुराना आदमी नहीं रह गया था। आने वाले सप्ताह में वह, जिसके लिए समय का अर्थ पैसा था, गुरुवार के अपवाद को छोड़कर हर शाम 'ऑक्टोपस' में जाकर बैठता था। एक शाम तो वह दो बार वहाँ आया। अकेले मिसेज पीचम ने ही उसे दिन में तीन बार, अलग-अलग समय पर ओल्ड ओक स्ट्रीट पर अपनी भारी छड़ी के सहारे खड़े देखा, जिसे वह दोनों हाथों से अपने पीछे टिकाता था। दरअसल, ज़्यादातर समय वह उस बोर्ड पर निगाह जमाए रहता जिस पर 'Instruments' लिखा हुआ था।

वह उस मकान का अध्ययन कर रहा था।

जिस समय वह पीच का इन्तज़ार कर रहा था, वह इस असाधारण दुकान की गतिविधियों पर काफ़ी करीब से निगाह रखे हुए था। उसने सामान्य, स्वस्थ आदमियों को दरवाज़े से अन्दर जाते, और लूलों-लंगड़ों की ठेलागाड़ी धकेलते हुए दूसरे लोगों को देखा। जल्दी ही उसका समझ आ गया कि जो बाहर आ रहे हैं, वे अन्दर जाने वालों से बिल्कुल भिन्न नहीं हैं। वे लूले-लंगड़ों में बदल दिये गये हैं। धीरे-धीरे उसे धन्धे की प्रकृति समझ में आ गयी। उसे यह अहसास हुआ कि यह धन्धा तो ज़रूर सोने की खान के समान होगा।

मिसेज पीचम जो दूसरी मंज़िल की एक खिड़की के पीछे से इस दुराग्रही प्रेमी को देख रही थीं, उसके बारे में अलग ख़यालात रखती थीं।

देखने पर ऐसा मालूम पड़ता था कि वह पीच की तरफ़ से किसी पहल की उम्मीद कर रहा था, जो होने वाली नहीं थी। उसकी इस सोच से एक विशेष व्यक्ति इत्तेफ़ाक नहीं रखता था, कि पिकनिक के दौरान कुछ ऐसा हुआ जिसके कुछ ख़ास नतीजे निकलने ही चाहिए। मिस पीचम जब गृह-व्यवस्था की अपनी

संध्या-कक्षाओं से घर वापस आतीं, तो वह एक दूसरे प्रवेश-द्वार का इस्तेमाल करतीं जो एक दूसरी सड़क पर था।

अक्सर ही वह स्माइल्स से मिलने के लिए जल्दी चली आती थी। शाम के वक्त पार्क में उसके साथ मटरगश्ती करना बहुत मज़ेदार होता था, जब सारी बेंचें प्रेमियों से भरी होती थीं। वह पीच के बारे में अच्छी-अच्छी बातें कहता और उसके रूप-रंग मे काफ़ी दिलचस्पी लेता। उसके गले पर एक ख़ास जगह थी जिसे देखने की स्थिति में होना वह पसन्द करता था, और ऐसा न होने पर पोशाक अनुपयुक्त होती थी। वह कहता था कि वह उसे पागल बना देगी।

स्माइल अपने मिलन-स्थल पर आने में वक्त का एकदम पाबन्द था, मगर वह कुछ-कुछ हड़बड़ी में आता था। उसका यूँ हड़बड़ी में आना ऐसा प्रभाव छोड़ता था मानो उसे बहुत-सा काम-काज निपटाना है।

उन दिनों सचमुच पीच पहली बार पुष्पित-प्रस्फुटित हो रही थी। वह वसन्त के दिन थे। पॉली सफेद धब्बों वाली एक हल्की नीली पोशाक पहनकर वर्करूमों में जाया करती और देखती कि किस तरह कपड़ों में मोमबत्ती की चिकनाई को कपड़ों में इस्तरी किया जा रहा है, जिससे कि वे चीकट दिखें। और अगर दो झरोखों वाले उस सँकरे, टूटे-फूटे कमरे में अत्यधिक परिश्रम से थकी लड़कियाँ निरादरपूर्ण फब्ती कसतीं, तो पीच अपना स्कर्ट उठा देती और उसके पीछे का श्वेत-वर्ण दिखला देती।

वह अहाते में कुत्तों के साथ खेलती और लम्पट अन्दाज़ में हँसते हुए उन्हें मज़ाकिया नाम दिया करती थी। उनमें से एक को जो एक फॉक्स-टेरियर था वह स्माइल्स बुलाती थी। अहाते में लगे अभागे आलूबुखारे के पेड़ को अचानक उसने बहुत सुन्दर पाया। जब वह सुबह नहाती तो गीत गाया करती, और वह प्रेम करती थी, मगर किसी एक ख़ास आदमी से नहीं।

हर शाम वह खिड़की के पास की बैठने की जगह पर लेट जाती और अपने पूर्ण चन्द्राकर चेहरे को हाथों में टिकाकर उपन्यास पढ़ा करती।

उसने आह भरी, *'ओह! कितना दर्दनाक है एल्विरा के साथ का यह दृश्य, एक पवित्र, सुन्दर लड़की, जो अपने दुष्ट विचारों के विरुद्ध लड़ रही है। वह अपने प्रेमी से प्रेम करती है जो एक वीर, बलिष्ठ पुरुष है। वह सर्वाधिक शक्तिशाली और गौरवपूर्ण भावनाओं के साथ, अपने दिल की गहराइयों से उसे प्रेम करती है, मगर फिर भी उसके अन्दर आवेग है, अस्पष्ट, कामुक आवेग, जो दुष्ट कामनाओं से बहुत भिन्न नहीं है! वह अक्सर गहरी साँस लेते हुए कहती*

है, "इस सुन्दर आदमी के साथ मेरा क्या होगा?" "और मेरे साथ ऐसा कहाँ होगा?" मेरा मामला भी एल्विरा की तरह ही है, बल्कि उससे कहीं बदतर है। क्योंकि मुझे प्रेम नहीं है और फिर भी मेरे अन्दर ये कामनाएँ हैं। क्या मैं कह सकती हूँ कि मेरे प्रेमी ने मेरे अन्दर ये कामनाएँ जगा दी हैं? मैं ऐसा नहीं कह सकती। मुझे उसकी सुन्दरता का आवेग नहीं बहा ले गया था-मि. बेकेट के सम्बन्ध में कोई सुन्दरता की बात मुश्किल से ही कर सकता है-और न ही मि. स्माइल्स की वीरता पर मैं फिदा हुई थी। मैं सुबह अपने परों के बिछौने से उठती हूँ, और जब मैं नहाती हूँ, तो यह कामनाएँ-जो कि दुष्ट कामनाएँ हैं-मुझपर यों हावी हो जाती हैं कि मि. बेकेट और मि. स्माइल्स तक मुझे सुन्दर लगने लगते हैं! जब अपने गुलाबी रंग के मासूम से कमरे में चादर को अपनी ठोड़ी के नीचे दबाए मैं काफ़ी देर तक ऐसे दृश्यों की कल्पनाओं में खोयी रहती हूँ, ऐसे सपनों में जिनका मैं ज़िक्र तक करने की हिम्मत नहीं कर सकती, तो मुझे डर लगता है कि कहीं मेरी ये इन्द्रीय वासनाएँ मुझे उस गर्त में न घसीट ले जायें जहाँ, मुझे बतलाया गया है, तमाम अभागों का अन्त होता है। बस ऐसी कुछ रातें और, फिर इन सपनों में अहाते वाले लंगड़े जॉर्ज को भी जगह मिल जायेगी! लेकिन, आखिर मि. बेकेट ऐसे बुरे जोड़ीदार भी नहीं हैं। फिर भी, अपने ऊपर मैं उस खालिस प्रेम के दिखावे को कैसे ओढ़ सकती हूँ जैसे प्रेम की उम्मीद वह अपनी भावी पत्नी से करेंगे? किस तरह मैं उनकी आँखों में ऐसी साफ़ नज़र से देख सकती हूँ जो ऐसी किसी भी तुच्छ कामना को ठण्डा कर दे जो उनके दिल में हो, वे कामनाएँ जो कभी भी किसी की शादी के पहले पूरी नहीं हो सकतीं?'

पीच का उस लकड़ी के व्यापारी से शादी का निर्णय किसी गहन सोच-विचार के बाद नहीं आया था। मिस्टर पीचम की बेटी ने अपनी अत्यधिक व्यावहारिक सामान्य बुद्धि की बदौलत अपने दोनों प्रेमियों में से ज़्यादा परिश्रमी और ज़्यादा भरोसेमन्द प्रेमी को चुना।

फिर भी मनमोहक मि. स्माइल्स बार-बार मिस पीचम से मुलाकात का जुगाड़ भिड़ा लेते थे। उन्होंने मिस पीचम को अपने साथ एक सुसज्जित कमरे में रहने के लिए मनाने की कोशिश भी की। इस कमरे को देखकर पीच को स्पष्ट विश्वास हो गया कि आर्थिक रूप से स्माइल्स एक पत्नी का ख़र्च उठाने के काबिल नहीं हैं। जब वह दूसरी बार आयी और मकान से मि. स्माइल्स के साथ निकली तो मि. बेकेट ने उन्हें देख लिया था।

अगले दिन मिसेज़ पीचम ने एक बेहद दिलचस्प ख़त का लिफाफा खोला,

जिसे मि. बेकेट ने भेजा था। इस चिट्‌ठी में उन्होंने पॉली से एक मुलाकात की व्यवस्था करने की दरख़्वास्त की, और खुले तौर पर उसे पिकनिक पर भी एक विशेष घटना की याद दिलाई। चिट्‌ठी का तेवर बेहद अप्रिय था।

मिसेज़ पीचम ने सारी चीज़ों की व्यवस्था कर दी ताकि मि. बेकेट उनकी बेटी से 'ऑक्टोपस' में अगले इतवार फिर मिल सकें। मिसेज़ पीचम स्माइल्स के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानती थीं और उन्होंने सच पर यक ीन नहीं किया होता अगर किसी ने उन्हें बताया होता। वह इसी पर चिन्तन-मनन करने का प्रयास करतीं कि कैसे वह अपनी बेटी को शालीन तरीके से इस बात की चेतावनी दे सकती हैं कि वह बहुत जल्दी ही उस लकड़ी के व्यापारी के समक्ष समर्पण न कर दे जिसे उनकी बेटी ने उनके दामाद के रूप में चुना था। रात के दौरान और ख़ास तौर पर जब सुबह होने वाली होती थी, तो वह अपने ठिगने-से पति के बगल में लेटे हुए अपनी बेटी और बेकेट, बल्कि जिम्मी के, जैसा कि वह अब उस लकड़ी के व्यापारी को बुलाती थीं, वैवाहिक आलिंगनों की चित्रपूर्ण कल्पनाओं का सुख लेतीं।

उनकी चिन्ताएँ अनावश्यक थीं।

चेस्टनट के पेड़ के नीचे लोहे की गोल टेबल के इर्द-गिर्द मेहमान एकदम ठसाठस भरकर बैठे रहते थे, सिवा उस समय के नाच हो रहा होता था। और नाच के वक्त मि. बेकेट और पॉली भी नाचे। इससे बातचीत करना मुश्किल हो गया। फिर मि. बेकेट दोनों महिलाओं को अलग करने में तो सफल हो ही गये।

मि. बेकेट ने अपने लिए तेल और सिरके सहित भेड़ की कलेजी मँगाई। अपनी डिश को सफ़ाई के साथ तैयार करते हुए वह बातचीत को स्टैनफोर्ड सिल्स पर ले आये। स्टैनफोर्ड सिल्स एक हत्यारा था। वेस्टइण्डिया डॉक्स के आस-पड़ोस में हुई कई हालिया हत्याओं का ज़िम्मा अख़बारों ने उसके सिर मढ़ दिया था। दोनों महिलाएँ यह नाम सुन चुकी थीं और उसकी शक्लो-सूरत के बारे में उन्होंने मि. बेकेट से तमाम अटकलों का आदान-प्रदान किया।

मि. बेकेट इन जनाब के बारे में बेहद जानकार व्यक्ति की तरह बात कर रहे थे, जिसके द्वारा की गयी हत्याओं का पुलिस कभी भी कोई सन्तोषजनक कारण नहीं खोज पायी और ऐसा कहा जाता था, अण्डरवर्ल्ड में यह अलौकिक विस्मय का पर्याय था। और मानी हुई बात थी कि कुछ ख़ास अपराधियों ने , जिनके पीछे पुलिस पड़ी थी, स्वेच्छा से स्कॉटलैण्ड यार्ड में समर्पण कर दिया था, क्योंकि उन्हें लगता था कि 'नाइफ़', जैसा कि गोदियों की तलछट में रहने वालों

ने स्टैनफोर्ड सिल्स को उपनाम दिया था, उनका पीछा कर रहा है।

पॉली एकदम अच्छी तरह जानती थी कि वह कैसा दिखता है और उसने लकड़ी व्यापारी के सामने उसका वर्णन किया।

वह एक फट्टी के समान गोरा और छरहरा था और इतना चुस्त-दुरुस्त था कि गोदी मज़दूर के कपड़ों में भी किसी भेस बदले सज्जन व्यक्ति के समान लगता था। वह महिलाओं के प्रति कृपालु था।

पॉली ने कुशलता से बातचीत की। मि. बेकेट ने उस पर गहरा प्रभाव छोड़ा था।

उन दोनों ने बहुत ऊर्जापूर्ण तरीके से नृत्य किया और मिसेज़ पीचम उनकी बातचीत के कुछ ही हिस्से सुन पाईं। उन्हें ताज्जुब हुआ कि उनकी बेटी ने सिर्फ़ मि. स्माइल्स के बारे में और इस बारे में बात की कि वह कितने मोहक हैं। वह साफ़ तौर पर देख सकती थीं कि कैसे मि. बेकेट के कॉलर से पसीना बहा जा रहा था।

ऐसा लगता था कि पॉली ने उन्हें अच्छी तरह फँसा लिया था।

अगली सुबह वह फिर दुकान के सामने वाली सड़क पर खड़े थे। दोपहर में उन्होंने अपने आपको मिसेज़ पीचम से जाकर मिलने की इजाज़त दे ही दी। इसने मिसेज़ पीचम को उलझन में डाल दिया क्योंकि उन्हें मि. पीचम का डर था, जिन्हें इस प्रेम प्रसंग के बारे में कोई ज्ञान न था और जिनके सामने इसका भेद सावधानीपूर्वक खोला जाना था।

मि. बेकेट ड्राइंग रूम में मखमल के लाल सोफ़े के किनारे पर बैठे और मिसेज़ पीचम को मि. स्माइल्स के विषय में चेताया जो एक अच्छा नौजवान नहीं था, बल्कि लम्पट था, और हमेशा औरतों के पीछे भागता रहता था। उन्होंने पूछा कि कहीं स्माइल्स चिट्ठियों के जरिये पॉली को तंग तो नहीं कर रहा है। वह जले हुए प्रणय पत्रों की खोज में आतिशदान तक को कुरेदने-टटोलने के लिए व्यग्र मालूम पड़ रहे थे।

जब वह वापस जा रहे थे, तो सीढ़ियों पर पॉली से मिले और उसकी क्लास तक उसके साथ गये। वह अपने घर अन्दर-बाहर आते कई लोगों और कॉस्ट्यूम्स डिपार्टमेण्ट के उन जवान सज्जनों के बारे में बतियाती रही जिनके बीच वह काफ़ी लोकप्रिय थी क्योंकि वह उनके प्रति कभी उग्र नहीं रहती थी।

लकड़ी व्यापारी को ऐसा लगा जैसे पीच की आँखों के चारों और नीले घेरे पड़ गये हैं। इससे उसे बहुत निराशा हुई।

उसने पीच को अपने मन की आँखों से अनगिनत दरवाज़ों वाले एक दड़बे जैसे विशाल घर में देखा जिसमें से नौजवान पुरुष लगातार बाहर आ रहे थे-दरअसल, एक ऐसा घर जो एक जवान लड़की के लिए कतई उपयुक्त नहीं था। उसके दिल में पिकनिक पर, या कहें कि पिकनिक से लौटते वक्त हुई घटना एक कसक पैदा कर रही थी। यह एक ऐसी घटना थी जिसकी चर्चा उसने कभी नहीं की थी, न अभी-और न ही बाद में, जब किस्मत के असह्य और लगातार होने वाले प्रहारों ने उसे अपनी पत्नी से किसी लम्बे वार्तालाप का मौक़ा नहीं दिया; लेकिन यह उसके ऊपर काफ़ी भारी पड़ा। इस चीज़ ने उसके भीतर पीच की निष्कपटता को लेकर सन्देह और साथ ही एक ख़ास दिलचस्पी पैदा कर दी थी।

उसे शायद ही किसी औरत ने इस कदर दीवाना किया था, जैसे पीच ने किया था। कई परिस्थितियाँ थीं जो इस प्रसन्न अवस्था के लिए ज़िम्मेदार थीं।

अपनी भावनाओं का विश्लेषण करते हुए वह खुद से कहता, *"किसी से यह पूछना कि वह किसी लड़की से उसकी दौलत की ख़ातिर शादी कर रहा है या उसकी ख़ातिर, बिल्कुल ग़लत है। अक्सर ऐसा होता है कि दोनों ही वजहें होती हैं। दहेज़ समान आकर्षक लड़की के बारे में कुछ बातें हैं। उसकी दौलत के बिना भी मैं स्वाभाविक रूप से उसे चाहूँगा, लेकिन शायद उतनी ही शिद्दत के साथ नहीं।"*

लकड़ी व्यापारी दिल के मामलों में निरा नौसीखुया नहीं था। उसकी पहले से ही कई पत्नियाँ थीं-अक्सर एक साथ। लेकिन जोखिम भरे कामों के लिए उसके पास समय नहीं था, क्योंकि वह बेहद ख़तरनाक कम्पनी के साथ जुड़ा हुआ था और उसकी कुछ गम्भीर चिन्ताएं थीं। एक नयी शादी उसके लिए लाज़िमी थी; उसकी दुकानें फल-फूल नहीं रही थीं। इस समय एक पत्रकार द्वारा हत्यारे स्टैनफोर्ड सिल्स जिसे लोग 'नाइफ़' कहते थे, के विषय में पुलिस कमिश्नर से लिये गये साक्षात्कार का वर्णन करती हुई अखबारों की कतरने उसके सीने वाली जेब में थीं। यह कतरनें किसी अन्जान व्यक्ति ने उसके पास भेजी थीं और वह इससे काफ़ी परेशान था। इसी वजह से उसने अपनी जुबान पर आने वाले शब्दों को अनकहा ही छोड़ दिया।

लगभग एक हफ्ते बाद किसी मि. कोक्स नाम के व्यक्ति के षड़यंत्र के कारण मि. जोनाथन जेरेमिया पीचम बेहद ख़राब आर्थिक दिक्कतों में फँस गये और उनका ध्यान खुद-ब-खुद अपनी मोहिनी बेटी की ओर मुड़ गया।

2

और अब वे युद्ध को जा रहे हैं
और उन सबको बुरी तरह ज़रूरत है कारतूसों की
और जाहिरा तौर पर तमाम अच्छे लोग हैं
जो खुशी-खुशी उन्हें कारतूस ला देंगे
'गोला-बारूद नहीं तो युद्ध नहीं!
यह हम पर छोड़ दो मेरे बेटे!
तुम जाओ मोर्चे पर और लड़ो,
हम बनाएँगे तुम्हारे लिए गोला-बारूद और बन्दूकें।'
और अम्बार लगा दिया उन्होंने गोला-बारूद का
लेकिन किसी युद्ध का अता-पता न था
और जाहिरा तौर पर तमाम अच्छे लोग थे
जिन्होंने जादू से एक युद्ध पैदा कर दिया
'प्यारे बच्चे, तुम जाओ मोर्चे पर
क्योंकि तुम्हारी जन्मभूमि को ख़तरा है,
मार्च करो, अपनी माताओं और बहनों के लिए,
अपने राजा के लिए और अपने खुदा के लिए।

(युद्ध गीत)

महारानी की सरकार की ज़रूरत

विलियम कोक्स पेशे से एक दलाल था। उसके विज़िटिंग कार्ड के मुताबिक शहर में कहीं उसका ऑफिस था। लेकिन बिरले ही वहाँ कोई जाता था और वह खुद कभी-कभार ही उसका इस्तेमाल करता था। उसके लिए उस जगह के लिए सचमुच कोई उपयोगिता नहीं थी, क्योंकि वहाँ पर बस एक मन्द, बेकार लड़की टूटी-फूटी कुंजियों वाले एक टाइपराइटर के साथ बैठी रहती थी, और उसके पास कभी कुछ टाइप करने को नहीं रहता था। वह लड़की वहाँ बस डाक के इन्तज़ार में बैठी रहती थी, और वह ऑफ़िस में इसलिए आती थी कि मि. कोक्स को कभी किसी को अपने घर का पता बताने की ज़रूरत न पड़े। वह कभी किसी को घर

पर नहीं बुलाते थे और एक रेस्तराँ से अपना सारा धन्धा चलाते थे।

वह कहा करते थे : "मुझे किसी संगठन की ज़रूरत नहीं। मैं केवल बिग बिज़नेस चलाता हूँ!" वह कभी किसी गन्दी चीज़ को नहीं छूते थे; वह हमेशा दस्ताने पहने रहते थे। इसके अलावा वह हल्के धूसर रंग का प्रभावशाली सूट, बैंगनी मोज़े और चमकीले लाल रंग की टाई पहनते थे। वह मानते थे कि लोग उन्हें असैनिक कपड़ों में एक ऑफिसर समझते हैं। इसलिए वह हमेशा एकदम सीधा होकर चलते थे।

लेकिन कामकाज सम्भालने के लिए कोई ख़र्चीला स्टाफ न होने पर भी, मि. कोक्स को मददगारों की कमी नहीं थी। कुछ ख़ास सरकारी दफ्तरों में ऐसे तमाम लोग बैठते थे जो उसके लिए ठीक उतने ही उपयोगी थे, जितने कि तमाम ढीठ और आलसी बाबू। मिसाल के तौर पर, उसका एक ऐसा ही मददगार नौकाधिकरण (एडमिरैल्टी-अनु.) में था।

उसी से मि. कोक्स को एक रोज़ पता चला कि महारानी की सरकार काफ़ी ज़रूरतमन्द है। यह ज़रूरत थी ट्रांसपोर्ट जहाज़ों की, केपटाउन में फौज भेजने के लिए। कोक्स ने तुरन्त इस ज़रूरत की आपूर्ति के लिए हर सम्भव कोशिश करने का निश्चय कर लिया।

चूँकि यह एक समुद्री लेन-देन था, वह एक शराबखाने गया जहाँ दोयम दर्ज़े के जहाज़ी-रेडीमेड जहाज़ी-मिलते-जुलते थे। उसके बाद उसने चारों और कुछ *प्राचीनतम सम्भव जहाज़ों* के बारे में पूछताछ की। जल्दी ही उसने ऐसे कुछ जहाज़ों की चर्चा सुन ली। वे एक जहाज़ कारखाने ब्रकले एण्ड ब्रुकले के थे, जो एक प्रकार के रेडीमेड शिपिंग का धन्धा करता था।

लंदन में उस समय ऐसे ढेर सारे लोग थे जो सरकार के इस अनुरोध के अनुपालन में बहुत कर्तव्यनिष्ठ नहीं थे, कि व्यापार जगत को बोअरों के ख़िलाफ़ युद्ध को समर्थन देना चाहिए। वे सरकार को जैम बेचने के लिए एकदम तैयार थेः लेकिन वे इसे खुद खाने को तैयार नहीं थे। मि. कोक्स ऐसे लोगों में से नहीं थे। अपने देश की बदकिस्मती के बूते अमीर बनने की उनकी कोई ख़्वाहिश नहीं थी, लिहाज़ा वे अहानिकर, लेकिन थकाऊ जाँच-पड़ताल में जुट गये जिसके कारण दफ्तरों और टाइपराइटरों के प्रदर्शन की आवश्यकता पड़ती। किसी भी व्यक्ति ने जिसका नौकाधिकरण में एक दोस्त होता, सरकार को वे जहाज़ देने की पेशकश कर दी होती जिसके बारे में मि. कोक्स ने शराबखाने में सुना था। वे जहाज़ बड़े थे और जैसा कि ब्रुकले एण्ड ब्रुकले में की गयी कुशल पूछताछ ने पक्का कर दिया,

सस्ते भी थे।

उन जहाज़ों के बारे में जो बिकने के लिए थे, उस ब्रोकर द्वारा ब्रुकले एण्ड ब्रुकले द्वारा लिये गये छोटे से इण्टरव्यू में टनेज (जहाज़-महसूल-अनु.) और कीमत के अतिरिक्त किसी चीज़ पर बातचीत नहीं हुई। न कोक्स ने और सवाल किये न ही, जहाज़ व्यापारियों ने जहाज़ों की हालत में बारे में कुछ पूछा। तीनों सज्जनों ने कभी भी और किसी कोर्ट-कचहरी से पहले ही इस बाबत कसम खा ली होती।

मि. कोक्स का सस्तेपन और विशालता के बावजूद ब्रुकले एण्ड ब्रुकले से जहाज़ खरीदने का कोई सुझाव नहीं था। वह ऐसे तमाम लोगों को जानते थे जो माल-नौकाओं के लिए अच्छी कीमत अदा करने के इच्छुक होते। युद्ध की वजह से माल-भाड़ा काफ़ी ऊँचा चल रहा था। बहुत कम जहाज़ बिकाऊ थे और वे भी काफ़ी महँगे थे। लेकिन जाहिरा तौर पर, जो कोई भी अच्छे जहाज़ चाहता था वह ब्रुकले एण्ड ब्रुकले जैसे जहाज़ व्यापारियों की फर्म के पास न जाता।

मिस्टर कोक्स अच्छे जहाज़ों की खोज में काफ़ी भाग-दौड़ कर रहे थे, लेकिन असल में सरकार के लिए नहीं, बल्कि निजी फर्मों के लिए। सरकार की ट्रांसपोर्ट की ज़रूरत उनके लिए शुद्ध रूप से लगे हाथों होने वाला काम था और इसमें उनकी जो दिलचस्पी थी उसका सरोकार भी उनके अपने कुछ निजी धन्धों से ज़्यादा था। उन्होंने आगे की खोज के लिए पूरा एक सप्ताह खर्च कर दिया।

उन्होंने ट्रांसपोर्ट्र्स के लिए उपयुक्त ऐसे तीन और जहाज़ खोज निकाले जो अपेक्षाकृत नये थे और हर तरह से अन्य जहाज़ों से बेहतर थे। इन्हें ढूँढने के लिए उन्हें कई यात्राएँ करनी पड़ीं, जिनमें से एक साउथैम्प्टन की भी थी। और जब उन्होंने इन जहाज़ों को ढूँढ लिया तो उन्हें पता चला कि वे सभी अलग-अलग मालिकों के हैं और किसी तरह सस्ते नहीं थे; लेकिन वे काफ़ी कुछ जहाज़ की तरह ही दिखते थे।

मि. कोक्स ने इन जहाज़ों का निरीक्षण किया और लन्दन लौट गये।

वहाँ उन्होंने इस सवाल पर फिर विचार किया कि वे सरकार की ज़रूरतों को पूरा कैसे कर सकते हैं। लेकिन, जैसा कि हम देखेंगे, ऐसा करने में उन्होंने कभी अपने हितों की उपेक्षा नहीं की। उनका लाभ कुछ अच्छे कार्गो-बोट्स, जैसे उन्होंने साउथैम्प्टन में देखे थे, न्यूनतम सम्भव मूल्यों पर हासिल करने से जुड़ा था, और जुड़ा रहा।

सरकार वाले मामले के सम्बन्ध में मि. कोक्स ने लन्दन में कई व्यापारियों से बातचीत की, जिन्हें उन्होंने इसी सम्बन्ध में एक जगह बुलाया था। ऐसे लोगों

को खोजना मुश्किल नहीं था। लन्दन पहल लेने वालों से उमड़-घुमड़ रहा था। वह शहर बोअरों के ख़िलाफ़ युद्ध में अपने देश में खड़े होने को धधक रहा था। सरकार एकदम आदर्श ग्राहक थी।

मि.पीचम ने ऐसे चार या पाँच अन्य सज्जनों के साथ महारानी की सरकार की ज़रूरत के बारे में जाना, जो सरकार की हर इच्छा को अपने लिए आदेश समझते थे, उनके जितना ही व्याकुल थे।

वे केनिंग्स्टन के एक ठीक-ठाक मध्यवर्गीय रेस्तराँ में मिले। उन्होंने पाया कि उनके बीच एक असली उपसामन्त, एक पुस्तक संकलनकर्ता, लंकाशायर में एक सूती कारखाने का निदेशक, एक रेस्तराँ-कीपर, एक गृहसम्पत्ति का मालिक, एक भेड़पालक, और सेकेण्ड हैण्ड संगीत वाद्यों का व्यापार करने वाले एक विशाल कारोबार का मालिक था।

उनमें से हरेक ने अपना-अपना ऑर्डर दिया और मि. विलियम कोक्स ने एक छोटा-सा भाषण दिया।

उन्होंने बोलना शुरू किया, *"हमारे देश की हालत गम्भीर है। जैसा कि आप सभी जानते हैं, दक्षिण अफ्रीका में युद्ध इसलिए शुरू हुआ क्योंकि शान्तिपूर्ण ब्रिटिश नागरिकों पर बिना किसी छेड़छाड़ के अचानक हमला कर दिया गया। महारानी की सेनाओं पर, जिन्होंने तत्काल उनके बचाव के लिए प्रस्थान कर दिया, सर्वाधिक धूर्तता से हमला किया गया और ब्रिटिश अधिकृत क्षेत्रों की रक्षा कर रही इस फौज का निर्दयता से अपमान किया गया। आप सबने ये भी पढ़ा होगा किया कि अपनी आवश्यकता से अधिक मण्डित पूर्वज-परम्परा और शान्ति-प्रेम-जो अब एक न समझा जा सकने वाला रवैया है-के चलते किस प्रकार सरकार जवाबी हमलों को टालती रही है। आज युद्ध शुरू होने के कुछ समय बाद, इंग्लैण्ड पागल किसानों की एक उत्तेजित भीड़ से लड़ रहा है, जिसमें जीत का ईनाम और कुछ नहीं बल्कि अपने विदेशी रियासतों की रक्षा है। मैफेकिंग शहर में अंग्रेज़ी सेनाएँ बोअरों की एक विशाल सेना द्वारा घेर ली गयी है और अपने जीवन के लिए लड़ रही है। आपमें से जो कोई भी स्टॉक एक्सचेंज में है वह जानता है कि इसका क्या मतलब है। सज्जनो, इस बैठक का प्रयोजन मैफेकिंग शहर की राहत और उसकी मुक्ति है।* (तालियाँ।) *सज्जनो, वह समय आ गया है जब ब्रिटिश व्यापारियों को धैर्य, साहस और पहल का परिचय देना ही होगा। क्या आप चाहेंगे कि हमारे अन्दर इन गुणों की कमी के कारण हमारे जवानों की वीरता अपुरस्कृत ही चली जाय? युद्ध कौन लड़ता है? सैनिक और व्यापारी!*

अपनी-अपनी जगह पर। सरकार व्यापार के बारे में कुछ नहीं जानती। सरकार कहती है : हमें ट्रांस्पोर्ट्र्स चाहिए। हम कहते हैं : बहुत अच्छा, ये रहे ट्रांस्पोर्ट्र्स। सरकार कहती है : आप लोग ऐसी चीज़ों के बारे मे जानते हैं, इन ट्रांस्पोर्ट्र्स पर कितना ख़र्च आएगा। हम तुरन्त खोज सकते हैं, हम कहते हैं : इनका फलाँ-फलाँ ख़र्च आता है। सरकार मोल-भाव नहीं करती, वह जानती है कि पैसा देश में ही रहेगा। दोस्तों के बीच कोई मोल-भाव नहीं होना चाहिए। *पैसा इसके पास रहे या उसके पास, बात एक ही है। सरकार और उसके व्यापार प्रतिनिधि दोस्त हैं। उनके बीच एक बन्धन है और वे एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं। एक-दूसरे से कहता है, "तुम यह काम नहीं कर सकते," "मुझे यह करने दो। अगर मैं यह नहीं कर पाया, तो तुम कर लेना।" इस तरह से पैदा होता है भरोसा, ऐसे पैदा होते हैं एक समान हित। विदेश मन्त्री मुझसे एक सिगरेट ख़त्म करते हुए फलाँ-फलाँ चीज़ के लिए कहता है, "देखो बिली, मेरी पत्नी अपने बारह कमरों से काम नहीं चला पा रही है, मुझे क्या करना चाहिए?" मैं कहता हूँ, "ऐसी मामूली चीज़ों के बारे में चिन्ता मत करो। अपने काम की देखभाल करो।" और मैं उसकी समस्या का समाधान कर देता हूँ। और फिर आप अखबारों में पढ़ते हैं कि विदेश मन्त्री ने देश के कल्याण के लिए फलाँ भाषण दिया, जिसने हमें दुनिया में थोड़ा आगे बढ़ा दिया है, और अफ्रीका या भारत या कहीं और कोई बड़ी घटना घटती है, जो हमारे देश की प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ा देती है। मैं कहता हूँ "तुम्हें देश के हित में सभी चिन्ताओं से मुक्त रहना चाहिए, चार्ल्स। कोई तुच्छ परेशानी नहीं, कोई पैसे की चिन्ता नहीं। मैं एक गृहस्थ, सीधा-सादा व्यापारी हूँ, मुझे अखबारों में अपना नाम नहीं चाहिए, मुझे कोई सार्वजनिक प्रसिद्धि नहीं चाहिए, मैं केवल देश की प्रगति के तुम्हारे काम में तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ, चुपचाप और अनजान रहते हुए।* मैं अपने हिस्से का काम करना चाहता हूँ।" *और ठीक मेरी ही तरह, सज्जनो, हज़ारों व्यापारी काम कर रहे हैं, चुपचाप और बग़ैर पहचाने गये, लेकिन, मुझे यह कहने की इजाज़त दें, दृढ़ता और साधन-सम्पन्नता के साथ। व्यापारी जहाज़ों की आपूर्ति करता है, सैनिक उस पर सवार होता है। व्यापारी साधन-सम्पन्न है और सैनिक बहादुर। सज्जनो, आइये बगैर किसी शब्दाडम्बरी विचार-विमर्श के एक मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी की स्थापना करें।'*

मि. कोक्स के भाषण को अविलम्ब सफलता प्राप्त हुई। रेस्तराँ-कीपर ने बाकी सबकी तरफ से और इंग्लैण्ड की तरफ से मि. कोक्स के प्रति आभार व्यक्त किया कि उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों को दिखलाया कि उनका कर्तव्य क्या है : और

फिर कुछ व्यावहारिक बारीकियों पर विचार-विमर्श के बाद, एक प्रारम्भिक करारनामा तैयार कर लिया गया। वेटर कलमें और स्याही लेता आया और लिखने का काम बुकमेकर ने किया। ब्रुकले एण्ड ब्रुकले के तीन जहाज़ों को, जिनका मि. कोक्स ने ज़िक्र किया था, जितनी जल्दी हो सके ख़रीदा जाना था और उनकी उचित व्यवस्था की जानी थी। ख़रीद मूल्य को आठ (8) बराबर हिस्सों में बाँटा जाना था, जिसे सौदे के पूरे होने तक नकद में दिया जाना था।

जब उन्होंने इतनी कार्रवाई पूरी कर ली तो टेबल पर गहरा सन्नाटा छा गया। अब सवाल मुनाफ़े की हिस्सेदारी का आ गया, ख़ासकर कोक्स के हिस्से का सवाल, चूँकि यह धन्धा उनके पास वही लाया था। उन्होंने और सिगारों और बियर का ऑर्डर दे दिया।

फिर कपड़ा व्यापारी अपने कोरोना (एक प्रकार की सिगार-अनु.) के नीले धुँए में घूरते हुए बेफिक्री से बोला :

'मुझे लगता है कि हमें शुद्ध लाभ को आठ हिस्सों में बाँटना चाहिए, क्योंकि हम भी आठ हैं, हैं न? और हमारे दोस्त कोक्स को इस हिस्से के अतिरिक्त सरकार द्वारा अदा की गयी कीमत का, कहा जाय कि दस फीसदी कमीशन के रूप में मिलना चाहिए।'

अन्य सज्जनों ने कोक्स की तरफ देखा, हालाँकि सबने नहीं। कोक्स अपनी कुर्सी में झुका और मुस्कराते हुए बोलाः

'अच्छा मज़ाक है यह।'

उसकी माँगें अच्छी-ख़ासी थीं, जैसा कि उसके श्रोताओं के अचम्भे से पुष्ट हो गया। इस पर बातचीत में पूरे दो घण्टे लग गये। उसके बाद भी वे कोई ज़्यादा कम नहीं हुईं, और सबको यह अहसास हो रहा था कि दो साल की बहस के बाद में उनमें कोई ख़ास फ़र्क नहीं पड़ने वाला। कमीशन पच्चीस फीसदी तय हुआ।

जब उन सज्जनों ने तमाम ठण्डी आहों और चेहरे पर ऐसी भाव-भंगिमा के साथ, मानो वे अपने किसी करीबी और अज़ीज़ की मृत्यु-दण्डादेश पर दस्तख़त कर रहे हों, उस दस्तावेज़ पर अपने नाम दर्ज़ कर दिये, तो वे फौरन अलग हुए और अपने घर को रवाना हो गये।

पीचम पर पूरे लेन-देन और ख़ासकर मुनाफ़े का हिस्सा तय करने में मि. कोक्स की चतुराई का काफ़ी अनुकूल प्रभाव पड़ा। ऐसा मोल-भाव हो ही इसलिए पाया था, क्योंकि धन्धा काफ़ी ठोस किस्म का था।

परेशानियाँ, जिनके आम आदमी कभी सपने भी नहीं देखता

एक धुन्ध में डूबी सुबह, और शहर में मौजूद तमाम छोटे, जर्जर, सनसनीखेज ढंग से सजाये गये दफ्तरों में से एक में पाँच सज्जनों की एक बैठक हुई। रुक्षित शीशे के दरवाज़ों पर, जो दफ्तर का प्रवेश द्वार थे, सुनहले अक्षरों में यह संकेत-वाक्य दर्ज़ था : BROOKLEY & BROOKLEY, SHIPPERS।

वहाँ मौजूद सज्जनों में से दो थे ब्रुकले और ब्रुकले, फीके, असमंजस में पड़े प्राणी, जो ऐसा कोई भी फैसला लेने की ज़िम्मेदारी लेने में लगभग अतिशयोक्तिपूर्ण घबराहट दिखाते थे, जो उन दोनों को प्रभावित करता हो। क्योंकि उनके दिलों में एक-दूसरे के भले की चाहत थी, और प्रत्येक इस दृढ़ मान्यता से पीड़ित था, कि दूसरा उसकी भी ज़िम्मेदारी उठाने के लिए बेहद कमज़ोर है।

कोई भी, जो यह जानता था शहर में क्या-क्या है, इन दोनों को यूँ निपटा देता था, मानो वे कच्चे अण्डे हों। और मि. कोक्स जानते थे कि शहर में क्या-क्या है। एक करारनामा तैयार किया जा रहा था जिसके अनुसार तीन मालवाहक जहाज़ *लवली ऐना, यंग सेलरबॉय* और *ऑप्टिमिस्ट* को आठ हज़ार दो सौ पौण्ड (£ 8,200) में नयी कम्पनी के हाथ में सौंप दिये गये। इन जहाज़ों की जाँच-पड़ताल अगले गुरुवार को तय हुई। इसके फौरन बाद करारनामे पर दस्तख़त और कीमत अदायगी होनी थी। एक मि. ब्रुकले ने कहा, “मुझे आप लोगों को वहाँ देखकर खुशी होनी चाहिए, मगर मैं समझता हूँ कि इन जहाज़ों के मामले में शायद ही इस चीज़ की ज़रूरत हो।”

तो सारी चीज़ों की तसल्लीबख्श ढंग से व्यवस्था कर दी गयी थी।

इसीलिए ब्रुकले और ब्रुकले को काफ़ी अचम्भा हुआ जब मि. कोक्स ने अगली सुबह उन्हें फिर ऑफिस बुलाया। उनकी तरफ़ से कठोरतम गुप्तता की शपथ सुरक्षित कर लेने के बाद मि. कोक्स ने सिर्फ अपनी तरफ से उन जहाज़ों के लिए एक अन्य प्रस्ताव दिया जो पिछले दिन हुए सौदे के लाभकारी न होने की हालत में प्रभावी होता। दोनों भाई पर्याप्त उत्तेजना की हालत में थे।

बुधवार की दोपहर दोनों मि. ब्रुकले में से एक ने हाउसिंग एस्टेट के मालिक

ईस्टमैन से बात की क्योंकि वह सिर्फ़ उन्हीं का पता जानते थे, और उम्मीद के साथ जानना चाहा कि वह करार रद्द हो सकता है या नहीं। उनके पास नया प्रस्ताव था और वह अपने भाई के पुराने दाम से चिपके रहने का वचन देने का जोखिम नहीं उठा सकते थे।

ईस्टमैन ने कम्पनी की तरफ से खेद व्यक्त किया और ब्रुकले गुरुवार छः बजे के विषय में कुछ बुदबुदाये, जब वे बातचीत करने के लिए फिर आज़ाद होंगे, अगर हर चीज़ सन्तोषप्रद नहीं साबित होती है। ईस्टमैन ने फौरन सबको ख़बर की और उन्हें वक्त का पाबन्द होने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन गुरुवार की सुबह मि. कोक्स ने ईस्टमैन को कॉफ़ी के लिए एक रेस्तराँ में आमन्त्रित किया और उन्हें बताया कि वे शनिवार की सुबह से पहले अपना पैसा नहीं दे सकते।

नतीजतन, एक अन्य रेस्तराँ में दो बजे जहाज़ों की जाँच से ठीक पहले एक उत्तेजित बैठक हुई, जिसमें कपड़ा व्यापारी ने भड़क कर माँग की कि या तो मि. कोक्स अपना पैसा ले आयें या कोई एकदम नयी व्यवस्था की जाय। साथ ही साथ उसने यह प्रस्ताव भी रखा कि वह कोक्स की ज़िम्मेदारियों को उठाने और उसके लाभ का हिस्सा लेने का तैयार है।

ईस्टमैन ने अपनी आलोचना रखते समय इन सुझावों पर दो हिस्सों में अपने विचार रखे। पहले हिस्से, यानी कोक्स को अल्टीमेटम देने से तो ईस्टमैन ने सहमति जतायी, मगर दूसरे हिस्से-यानी कपड़ा व्यापारी के प्रस्ताव-से वह असहमत था। उसने अपने आपको कोक्स का हिस्सा लेने के लिए तैयार बताया।

उन सातों में से कई औरों ने भी अपने आपको उतना ही तैयार बताया। यह बात कि कोक्स यदि अपना हिस्सा नहीं ले आता तो वह कम्पनी में अपना हिस्सा खो बैठेगा, सबके लिए एकदम साफ़ थी-सिवाय कोक्स के। हल्के ही सही मगर उसने कुछ शंकाएँ रखीं। अन्त में वे सभी इस बात पर सहमत हुए कि धन्धे को सीधे-सीधे आठ की बजाय सात भागों में बाँट दिया जाय, और कोक्स को सिर्फ़ अपना कमीशन मिले।

ऐसा मालूम हुआ कि कोक्स को इस निर्णय से काफ़ी धक्का लगा है क्योंकि वह अचानक बीमार पड़ गया और *आराम के लिए* वह घर चला गया। उसने घोषणा की कि वह जाँच के लिए उनके साथ नहीं जा पायेगा।

जाँच के लिए ईस्टमैन ने एक भूतपूर्व जहाज़ इंजीनियर को फँसाया था, जो बाईल नाम का एक लम्बा जंगली किस्म का आदमी था। उसे जीवन में जितनी नौकरियाँ मिलीं, सभी से वह अधिक पीने की वजह से निकाल दिया गया। वे

सभी गोदी में मिले और ईस्टमैन की सलाह पर बाईल को और शराब दी गयी ताकि वह अच्छे मिजाज़ में रहे और उन पुराने भारी-भरकम ढाँचों को पूरी तरह से दीमक-चटा बताए।

वे ब्रुकले बंधुओं के गणना कक्ष में उनसे मिले, और यह जहाज़ों से ज़्यादा दूर नहीं था।

वे नेल्सन के ज़माने के विशालकाय मनहूस जीर्ण-शीर्ण जलपोत थे। हमेशा से ही कुछ ऐसे लोग होते हैं जो पुरानी चीज़ें जमा करते हैंः हैट, सिगार-बॉक्स, झूले, वगैरा, या तो शुद्ध रूप से भावना के कारण या फिर मूर्खता के चलते। ऐसे ही कुछ लोगों में इन जलपोतों को लेकर ज़रूर आसक्ति पैदा हो गयी होगी। अचम्भे वाली बात तो यह थी कि वे अब भी गन्दले पानी पर, इस सूक्ति के बावजूद कि हर चीज़ ख़त्म हो जाती है, तैर रहे थे।

प्रत्यक्ष रूप से उन्हें सालों से या दशकों से छुआ भी नहीं गया था। लेकिन अब टांस्वाल (साउथ अफ्रीका में एक प्रदेश-अनु.) में हज़ारों अंग्रेज़ सैनिक आराम पर जाने का इन्तज़ार कर रहे थे; सो उन जहाज़ों को अब चलना था। वे शायद इस बात से खुश ही होंगे।

यंग सेलरबॉय तट के सबसे करीब पड़ा था और कमीशन उस पर चढ़ गया।

गलियारा लकड़ी का बना था, इसमें कोई सन्देह नहीं था। डेक बहुत आकर्षक नहीं दिख रहा था, लेकिन वह भी बना लकड़ी का ही था, जैसा कि किसी भी अच्छे जहाज़ में होता है।

निरीक्षकों में से एक भी जहाज़ी नहीं था। अगर उनमें से कोई होता, तो किसी चीज़ ने उसे डेक-सीढ़ी से नीचे जाने को प्रेरित नहीं किया होता। उसे अपनी गर्दन तुड़वा बैठने का डर होता।

जहाज़ के अन्दर चूहे उसी तरह फुदक रहे थे जैसे वेल्श पहाड़ों पर मेमने फुदकते रहते हैं। वे भयंकर रूप से मोटे प्राणी थे, जिन्होंने अपनी पर्याप्त उम्र के बावजूद कभी आदमी नहीं देखा था, इसलिए वे किसी भी ख़तरे से अनजान थे।

इंजीनियर बाईल को एकदम सिनिकल खरेपन के साथ उन विभिन्न तरीकों की पोल खोलने के लिए तैयार किया गया था जिनसे बेईमान जहाज़ मालिक अपने तैरते ताबूतों को एक सुविधा-सुसज्जित नौका-विहार बतलाने में अभ्यस्त हो जाते हैं। वे किसी उपकरण को तोड़ते हुए यह कहना चाह रहा था, 'और ये क्या है, सज्जनो?' लेकिन अब वह इधर-उधर जाकर, बेबस और थका-माँदा सा खड़ा हो जा रहा था, अपना मुँह खोले। कोई बच्चा भी समझ सकता था कि वहाँ

मामला क्या था।

जिस रोग से *यंग सेलरबॉय* पीड़ित था उसका कोई दुनिया की सबसे अच्छी इच्छा-शक्ति वाला भी अस्थायी पीड़ा के रूप में वर्णन नहीं कर सकता था।

दस में से एक भी आदमी लोहे की सीढ़ी से एक कदम भी दूर नहीं हटा क्योंकि उनमें से कोई भी जहाज़ की दीवार का सहारा लेने की हिम्मत नहीं करता, अगर वह चारों और फैली सड़ी हुई चीज़ों पर ठोकर खाकर गिर भी जाता। इस बात का पूरा डर था कि उसका हाथ दीवार के आर-पार चला जाय।

ईस्टमैन अचानक बोल पड़ा, 'हाँ, हाँ।' उसकी आवाज़ मानो किसी इस्तेमाल न की गयी अटारी में गूँज उठी।

और फिर ब्रुकले बन्धुओं में से एक ने काफ़ी शान्ति से कहा :

'मानना पड़ेगा, किसी को बाहरी चीज़ों पर नहीं जाना चाहिए। मुख्य बात यह है कि जहाज़ समुद्र में चलने और समुद्र के किसी हिस्से में कायम भी रहने लायक है या नहीं।'

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें दूसरों की भावनाओं से प्रभावित हुए बिना रह जाने की क्षमता होती है, जो वास्तविकताओं से पूरी तरह बेपरवाह बने रहते हुए अपने विचारों का खुले और मुक्त रूप से, और समय और स्थान का ख़याल किये बिना बयान कर सकते हैं। ऐसे लोग नेता बनने के लिए पैदा होते हैं।

मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी ज़मीन पर ऐसे लौटी मानो किसी दुस्वप्न में आ गयी हो। उन्होंने *लवली ऐना* और *ऑप्टिमिस्ट* पर निगाह भी शायद ही डाली, जिनमें से ऑप्टिमिस्ट तीनों में सर्वाधिक परित्यक्त था।

जब वे सब एक बार फिर से ब्रुकले एण्ड ब्रुकले के दफ्तर में बैठे थे, तो ब्रुकले बन्धुओं में से एक ने एक छोटा-सा भाषण दिया।

'सज्जनो,' खिड़की से बाहर देखते हुए उन्होंने कहा, 'मुझे ऐसा लगता है कि आप थोड़ा बेहतर स्थिति की उम्मीद कर रहे थे। हालाँकि आप कीमत जानते थे, और मुझे यह भी लगता है कि आप पता नहीं क्यों निराश हैं और सौदे से सन्तुष्ट नहीं हैं।'

उसने चारों और एक तेज़ निगाह डाली और चूँकि किसी ने उसको रोका नहीं, उसने बोलना जारी रखाः

'अगर ऐसी ही बात है तो मैं किसी भी हालत में आपको अपने अन्दर से उठती आवाज़ के विरोध में जाने की सलाह नहीं दूँगा जो कहती है : "छोड़ो इसको!" अगर इस मामले में ज़्यादा ज़ोर डाला जाएगा तो ऐसे समय में और

ख़ास तौर पर इस कीमत पर आपको अपने लिए जहाज़ का इंतजाम करना अधिक मुश्किल हो जाएगा। लेकिन अगर आपके पास इर्द-गिर्द जाँचने-परखने का समय है और आप कुछ महीने इंतज़ार कर सकते हैं, तो इस बात की पर्याप्त संभावना है कि आपको अपनी ज़रूरत के ज़्यादा उपयुक्त चीज़ मिल जाएगी। एक खुशगवाँर इत्तेफाक की बदौलत ब्रुकले एण्ड ब्रुकले इन जहाज़ों को फौरन कहीं और खपा सकता है। जैसा कि मैंने कल मि. ईस्टमैन को बताया था, हमारे पास एक और प्रस्ताव आया था और हमें कतई कोई खेद नहीं होगा अगर आप अपना प्रस्ताव वापस ले लें।

ऐसी हालत में तो हम छोटा-मोटा मुआवज़ा देने पर भी विचार कर सकते हैं। अब साढ़े पाँच बज गए हैं; सवा छः बजे मेरे भाई की और मेरी एक दूसरी बैठक है। इसलिए, हम जल्दी फैसला कर सकते हैं और हमें कर ही लेना चाहिए।'

'इन जहाज़ों की कीमत ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ पाउण्ड है और, निश्चित रूप से वे समुद्र में तैरने लायक नहीं हैं,' बाईल ने शान्त तरीके से कहा।

मि. ब्रुकले ने अपनी घड़ी पर निगाह दौड़ाई।

'आपने सुन लिया जो आपके सलाहकार ने कहा। उसका विरोध करने की हमारे पास कोई वजह नहीं है। हम इन जहाज़ों को आप पर थोप देने की नहीं सोचेंगे। हम उनकी कोई ज़िम्मेदारी लेने की स्थिति में नहीं हैं। एक विशेषज्ञ के दृष्टिकोण से तो शायद इनको जलावान लकड़ी के रूप समें बेच देना सबसे अच्छा होता। जिस सूरत में दो सौ पाउण्ड, जिसका आपके सलाहकार ने ज़िक्र किया, लगभग सही ही होता। और इसलिए, सज्जनो, अगर मै आपकी जगह होता तो सोच-विचार करने पर और समय न ज़ाया करता।'

और वह अपने भाई के साथ कमरे से बाहर निकल गया।

जैसे ही वे दोनों बाहर निकले ईस्टमैन ने मन्द स्वर में कहाः

'यही जहाज़ हैं जो हम हासिल कर सकते हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए। मैं पीछे हट गया होता, अगर मुझे इस बात का पूरा भरोसा नहीं होता कि दूसरा प्रस्ताव किसी और का नहीं बल्कि हमारे दोस्त कोक्स का है। हमने उसके साथ बहुत सख़्ती बरती है। और अब वह सौदा पूरा करना चाहता है, दूसरे साझेदारों के साथ। और ज़्यादा बेवकूफ़ साझेदारों के साथ।'

कमरे में मौजूद कई लोगों की आँखें अचानक खुल गयीं। पाँच मिनट बाद वे हाथ में कलम लिए करारनामे के इर्द-गिर्द खड़े थे।

घर लौटते वक़्त ईस्टमैन ने इंजीनियर से कहाः

'एक नौसीखुए के रूप में किसी के लिए मुश्किल होता कि कैसे कोई उस जैसे पुराने पीपे के साथ समुद्र में उतर सकता है। स्वाभाविक तौर पर कोई भी सोचेगा कि वह सड़ी हुई चीज़ पानी में कागज़ के समान ढह जाएगी। ये आधुनिक तरीके चमत्कारी हैं। वे हमेशा रेत में से तेल निकालने का जुगाड़ भिड़ा लेते हैं। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि जब हम इन जहाज़ों को पेण्ट कर देंगे और कुछ चीज़ों को ठीक-ठाक कर देंगे तो वे उतना ही बढ़िया तैरेंगे जितना कि कोई दूसरा जहाज़। सचमुच, एक नौसीखुए को कोई समझ नहीं होती कि आजकल क्या-कुछ किया जा सकता है।'

चुप्पी के साथ कुछ कदम चलने के बाद, उसने फिश्र बोलना शुरू किया, मानो अपने आप से बात करते हुए-

'किसी का हमेशा प्रतियोगिता में उलझे रहना, कितना भयंकर है यह। कोई धन्धा ऐसा नहीं है जिसे एक आदमी छोड़े और दूसरा उसे लपक न ले, चाहे वह कितना ही गन्दा धन्धा क्यों न हो। एक प्रतिष्ठित जीवन की ख़ातिर कुछ भी गले के नीचे उतारने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर कोई एक सेकेण्ड के लिए भी कमज़ोर पड़ता है, तो वह ख़त्म हो गया। केवल लौह-अनुशासन और आत्म-नियंत्रण के बूते ही कोई व्यक्ति जीवित रहता है। किसी को बिना कुछ किए किसी चीज़ की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। अगर कोई वैसा बनना चाहता है, जिसे आम तौर पर "प्रतिष्ठित" कहा जाता है, तो उसे कीचड़ की सफ़ाई, या ईंट की ढुआई करनी ही पड़ेगी। जैसे ही एक व्यक्ति मस्ती से बाहर आता है, उसे वे चिन्ताएँ घेर लेती हैं जिसके सड़क का ग़रीब आदमी कभी सपने भी नहीं देखता।'

बच्चे के वास्ते

जाँच से मि. कोक्स की अनुपस्थिति से मि.पीचम परेशान थे। वह सो नहीं पाए और उन्होंने एक बुरी रात गुज़ारी।

वे तीन सड़ते हुए जहाज़ों की ख़रीद में उलझे थे, जिसमें उनका प्रति जहाज़ लगभग आधा हिस्सा था; और यह सब मि. कोक्स पर था कि पैसे बरबाद जा रहे हैं या नहीं। पीचम जैसे आदमी के लिए 'किसी व्यक्ति के हाथ में होने' का वही मतलब था जैसा किसी खरगोश के लिए 'किसी पाइथन के जाल में' होने

का होता है। सवाल यह था कि : मि. कोक्स इन जहाज़ों को कहीं बिकवा पाएँगे या नहीं? वह जाँच के दौरान, या कम से कम करारनामे पर हस्ताक्षर के दौरान क्यों अनुपस्थित रहे? उन्होंने मि. कोक्स को इस लेन-देन से बाहर कर दिया था; अब वह साझेदार नहीं बल्कि सिर्फ़ एक दलाल रह गए थे।

एक बार मि. पीचम उठे, प्रकट रूप से यह देखने के लिए कि सारी बत्तियाँ बुझाई गई हैं या नहीं, लेकिन दरअसल वह एक अन्दरूनी बेचैनी की वजह से उठे थे। वह छोटे-से-छोटा नुकसान उठाने की भी हालत में नहीं थे। इस मामले में सबसे बुरी बात तो यह थी कि न्यूनतम रकम के नुकसान पर भी वह खुद में विश्वास खो बैठे। वह किसी पर विश्वास नहीं करते थे, तो खुद पर विश्वास क्यों करते?

सारी बत्तियाँ बुझी हुई थीं, लेकिन बरामदे के आगे की ओर वाली पॉली की खिड़की खुली थी। अन्धेरे में वह उसे बिस्तर पर लेटा देख सकते थे। गुस्से से उन्होंने खिड़की बाहर से बन्द कर दी।

'मैं यह सब क्यों कर रहा हूँ?' फिर बिस्तर पर चढ़ते हुए उन्होंने खुद से पूछा। 'सिर्फ़ अपने बच्चे के लिए ही तो। मुझे वर्कशॉप से दो और औरतों की छुट्टी करनी पड़ेगी। उस जगह से काहिली की बू आती है। इन सारे लोगों को रखे रहना मेरे बस की बात नहीं है। वे बस सिलते चले जाते हैं, चाहे भिखारी आएँ या न आएँ। उन्हें तो कोई ख़तरा उठाना नहीं होता। पॉली भी कुछ काम कर सकती है। वह अपने आपको समझती क्या है? इस कोक्स पर एक इंच भरोसा नहीं किया जा सकता। हमें उसकी कभी, कभी भी नहीं सुननी चाहिए थी। किसी को यह धन्धा सुझाना और फिर उसे मुसीबत में छोड़ देना एक बेहद ओछा फरेब है। मैं उसकी गर्दन मरोड़ दूँगा, लेकिन उससे होगा क्या?'

वह पसीने से तर, अचानक उठ बैठे।

'ओह, मैं भी कितना मूर्ख हूँ। मुझे अब तक सुरक्षा का इंतज़ाम पूरा कर लेना चाहिए था। मैंने ऐसे आदमी के साथ धन्धा किया ही क्यों, जिसकी मैं गर्दन नहीं मरोड़ सकता?'

अगली सुबह पीचम ईस्टमैन के पास गया और वे दोनों शहर में कोक्स के दफ्तर गये। उस विवरण टाईपिस्ट के पास यह बताने की निर्लज्जता थी कि कोक्स ग़ायब हो गया है। और उस दफ्तर में, जिसे पीचम ने कभी नहीं देखा था, पीचम पर ऐसा प्रभाव डाला जो उदास करने वाला था। यह एक धोखेबाज़ का दफ्तर था!

बाकी सुबह पीचम के लिए एक यातना थी।

वह इस धन्धे में इसलिए आया था क्योंकि इसमें सरकार से पैसे ऐंठे जाने थे। इसी चीज़ ने उसके अन्दर एक अन्धा विश्वास पैदा कर दिया था। इस किस्म के सौदे आम तौर पर सुरक्षित होते हैं। दूसरे लोगों को ठगना, आखिर एक व्यापारी का सच्चा उद्देश्य होता है। किन्तु जितना आप समझते हैं, दुनिया हमेशा उससे ज़्यादा पापी होती है। लगता है दुष्टता की कोई सीमा नहीं होती। यह पीचम की सबसे गहरी आस्था, उसकी एकमात्र आस्था।

लेकिन लंच के बाद ईस्टमैन इस ख़बर के साथ आया कि सबकुछ ठीक-ठाक है। कोक्स पहले ही वापस आ चुका था, बल्कि वह कभी भागा ही नहीं था, और दोपहर में वह नौकाधिकरण के अपने एक मित्र के साथ जहाज़ों की जाँच करने जा रहा था। दूसरे लोगों को एक निश्चित रेस्तराँ में उसका इंतज़ार करना था।

जहाज़ों की जाँच करने! यह बुरी ख़बरों की एक नयी मिसाल थी। रेस्तराँ में बैठे इंतज़ार कर रहे उन सात व्यक्तियों को देखकर ऐसा लगता था मानो उन्हें ही *ऑप्टिमिस्ट* पर समुद्र-यात्रा करने की सज़ा दे दी गयी है।

साढ़े पाँच बजे कोक्स रेस्तराँ में एक नयी भड़कती हुई लाल टाई पहने पहुँचा। वह जितना अधिक सम्भव था, उतना बेईमान और बहानेबाज़ लग रहा था। उसने अपनी सीने वाली जेब से नौकाधिकरण के साथ का करारनामा, जिस पर हस्ताक्षर और मुहर थी, और पाँच हज़ार पाउण्ड (£ 5,000) का एक चेक निकाला, जिसका मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी को तत्काल भुगतान हो सकता था।

राज्य सचिव के पास उन जहाज़ों की जाँच-पड़ताल के लिए समय नहीं था।

'इज़्ज़तदार लोगों के लिए ऐसी औपचारिकताएँ गैर-ज़रूरी होती हैं।' कोक्स ने लापरवाह अन्दाज़ में कहा। 'ओह! मैं तो आप लोगों को बताना ही भूल गया था। मैंने आप लोगों के दो हज़ार पाउण्ड ख़र्च कर दिये हैं। मैंने ये पैसे हेल को सरकारी कर्मचारियों के विपदाग्रस्त परिवारों के लिए उसके कोष को दे दिये। उसने कहा कि एक हज़ार पर्याप्त हैं, लेकिन मैंने सोचा कि जिस मशीन में अच्छी तरह से तेल डाला गया हो, वह बेहतर ढंग से चलती है।'

वह ज़बर्दस्त मज़ाकिया मूड में था। उस दिन वह फिर साउथैम्प्टन में रहा था और उसने वहाँ के मालवाहकों में एक विकल्प सुरक्षित कर लिया था। सबकुछ मानो स्वचालित घण्टी-यंत्र के समान चल रहा था। मि. कोक्स ने मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सज्जनों को एक नैतिक पाठ पढ़ाने का इरादा कर लिया था। मि. कोक्स पहले ही साउथैम्प्टन के जहाज़ों को पालों में हवा भरे समुद्र में फिसलते

देख रहे थे।

मि. कोक्स ने साझेदारों को जो प्रक्रिया समझाई, वह निम्न प्रकार से थीः जहाज़ों को जितनी जल्दी हो सके सरकार को सौंप देना था; पुनर्निर्माण और मरम्मत सुपुर्दगी के बाद भी शुरू की जा सकती थी। अन्तिम भुगतान सरकार द्वारा तभी किया जाएगा जब सारी चीज़ें एकदम व्यवस्थित हो जाएँगी।

वे सभी स्वेच्छापूर्वक इससे सहमत हो गये।

लवली ऐना, यंग सेलरबॉय और *ऑप्टिमिस्ट* का पुनर्नवीकरण फौरन शुरू करने का फैसला किया गया। मरम्मत, रंगाई वगैरह के लिए एक छोटी रकम से बचा नहीं जा सकता था। 'आखिर उन्हें समुद्र में कई हज़ार मीलों की यात्रा में टिके रहना है,' कोक्स ने संजीदगी से कहा।

धन्धे के इस हिस्से को ईस्टमैन के ज़िम्मे कर दिया गया। इसमें कुछ सौ, या कुछ हज़ार पाउण्ड लगते। जैसे ही यह पता चला, सब के सब कुछ चिन्तित हो गये, और अब एक निश्चित फिजूलखर्ची की इजाज़त देने में रुचि रखते थे, यहाँ तक कि पीचम भी।

अभी तक सब ठीक-ठाक था, इतना ठीक कि पीचम को अचम्भा हुआ जब भेड़-पालक ने कुछ दिन बाद उसके पास आकर बताया कि वह इस धन्धे में और नहीं रह सकता क्योंकि उसे अपनी पूरी उपलब्ध पूँजी सेना में आपूर्ति के लिए चाहिए थी। लम्बे विचार-विमर्श के बाद पीचम उसका हिस्सा लेने को तैयार हो गये, और इस तरह अब वह कम्पनी में दो बटा सातवें हिस्से के मालिक हो गये। यह खुशकिस्मती का अप्रत्याशित स्पर्श था।

लेकिन फिर नौकाधिकरण से परेशान करने वाली ख़बर आई।

ख़बर लाने वाला ईस्टमैन था, जिसने एक रेस्तराँ में कोक्स से बात की थी। प्रत्यक्ष तौर पर करारानामे को लेकर बाद में सरकार से साथ दिक्कतें पैदा हो गयीं थीं। कुछ ख़ास हिस्सों से लोग राज्य सचिव को यह मशविरा दे रहे थे कि इंजीनियरों का एक कमीशन जहाज़ों की जाँच के लिए बैठाया जाना चाहिए। अब तक राज्य सचिव ने इस सुझाव का विरोध किया था, लेकिन अब उन्होंने कम से कम स्वयं इन जलपोतों के निरीक्षण का निर्णय लिया था। हर चीज़ जहाज़ों के मरम्मत-कार्य की पर्याप्त प्रगति से पहले यह निरीक्षण न होने पर निर्भर करती थी।

यही ख़बर पीचम के पिकनिक से पहले शारीरिक रूप से ढह जाने के लक्षणों के साथ लौटने और गर्म पानी की बोतलों और कैमोमिल चाय के साथ आराम

पर जाने का कारण थी।

इसके बाद विस्मयकारी विचार-विमर्शों का एक सप्ताह गुज़रा। कोक्स द्वारा कोई पता देने से इंकार करने के कारण हर चीज़ और मुश्किल हो गयी। जब इस बाबत पूछा गया तो उसने बताया कि वह स्थानांतरण की प्रक्रिया में है।

कम्पनी के सारे साझेदार अपना समय अपने घरों और गोदियों के बीच यात्रा करने में ख़र्च करते। पुनर्नवीकरण का काम बेहद धीमे प्रगति कर रहा था। *लवली ऐना* के उपकक्षों में ऐसी चीज़ें प्रकाश में आईं जिन्होंने बढ़इयों के रोंगटे खड़े कर दिये थे। और *यंग सेलरबॉय* के अन्दरूनी हिस्से सामने आये तो वे सिहर उठे। जबकि *ऑप्टिमिस्ट* की हालत ऐसी थी कि ठेकेदार अब भी यह तय नहीं कर पा रहे थे कि मज़दूरों की जान ख़तरे में डाले बगैर उसकी दीवार पर सीढ़ी टिकाई जा सकती है या नहीं।

इसके अलावा गोदियों के आस-पड़ोस में तरह-तरह की अफ़वाहें और ख़बरें उडाई जा रही थीं। जब वे खाना खाने बैठते थे, तो वे अपनी खोजों को लेकर कोई गुप्तता नहीं बरतते थे; और ईस्टमैन के इशारे कि ऐसी बातचीत बेईमानी के दायरे में आती है, केवल ठहाकों को बुलावा देते थे। ये मज़दूर सिर से पैर तक समाजवाद से तर-बतर थे।

यह पहले ही एकदम साफ़ हो गया था कि मरम्मत का ख़र्च आराम से पाँच या छह हज़ार पाउण्ड तक बैठेगा।

उस हफ्ते पीचम कोक्स से ईस्टमैन के घर पर मिला। पीचम ने उसे अपने घर रात्रि-भोज पर आमन्त्रित किया। अब, हर चीज़ कोक्स पर हमेशा से ज़्यादा निर्भर थी। कोक्स हमेशा चेहरे पर पूर्ण आत्मविश्वास का भाव बनाए रखता। भोज के दौरान, जिसमें ईस्टमैन भी मौजूद था, कोक्स पहली बार पॉली से मिला। वह सबसे घटिया किस्म का, और उस कदर लम्पट व्यक्ति था जो दूसरों में इस गुण की कमी की ज़ोरदार निन्दा करते हैं।

पीचम उसके लफड़ों के बारे में पहले ही तरह-तरह की बातें सुनने लगा था। यह हमेशा निम्नतम कोटि की उन स्त्रियों से सम्बन्धित होते थे, जो हमेशा कानून की नज़र से बाल-बाल बच निकलती थीं। यह बात भी अगर पीचम ने वक्त रहते सुन ली होती, तो वह कोक्स के साथ धन्धा करने से ही विरत हो गया होता। ऐसे व्यापारी जिनका दिल हमेशा उनके काम में नहीं होता, वे अपने पतन की और बढ़ रहे होते हैं। लेकिन अब जैसे हालात थे, उनमें एकमात्र काम जो करना था, वह था कोक्स को प्रसन्न रखना।

पॉली ने सर्वोत्कृष्ट पहलू का प्रदर्शन किया। उसने एक भद्र महिला के समान कोक्स से वार्तालाप किया। यहाँ तक कि कॉफ़ी के बाद वह पियानो पर बैठी और अपनी सुन्दर, और कुछ हद तक, नन्हीं-सी आवाज़ में एक देशभक्ति का गीत सुनाया। बाद में कोक्स घर नहीं जाना चाहता था, और उसने ईस्टमैन, और पीचम तक पर ज़ोर डाला कि वे उसके साथ कुछ रैन-बसेरों के दौरे पर चलें। उसने अपना मखमली हैट कुछ छैलों वाले अन्दाज़ में रखा, और उसके मरियल के गालों पर दो रुग्ण लाल चकत्ते दिखे। वह उल्टे गोदी पर चला गया होता, जहाँ पर्याप्त रूप से बढ़ी कीमत पर वे नाइट-शिफ्टों में भी काम कर रहे थे।

नाइट-क्लबों में कोक्स ने एक व्यापारी के समान नहीं, एक लम्पट व्यक्ति के समान व्यवहार किया। उसने हर चीज़ की कीमत भी अदा की।

अगले दिन वह ख़बर लाया कि नौकाधिकरण के हेल ने बिना जाँच के आधिकारिक तौर पर, और एम.टी.सी. द्वारा 3,000 पाउण्ड के अतिरिक्त भुगतान पर *लवली ऐना, यंग सेलरबॉय* और *ऑप्टिमिस्ट* को स्वीकार कर लिया है।

3

आदमी कैसे जीता है? गला घोंटकर, पीसकर, शोषण करके
अपने साथियों को और निगलकर हर उस चीज़ को जिसे निगल सकता है वह!
जीवित रहने का एकमात्र मौक़ा यही है उसके पास
कि वह सर्वाधिक पक्के तौर पर भूल जाये कि खुद भी एक आदमी है वह।
नहीं, सज्जनो, इस सच से हम जान नहीं छुड़ा सकतेः
आदमी सिर्फ़ ओछे कामों से जीता है।

(ड्राईग्रॉशेन-फिनाले)

बी. शॉप्स

उन दिनों लन्दन अच्छी-खासी संख्या में मिलती-जुलती शक्लो-सूरत ऐसी दुकानें हुआ करती थीं, जहाँ सामान अन्य जगहों से सस्ते में मिल जाया करते थे। ये दुकानें बी. शॉप्स कहलाती थीं। इसका मतलब 'बार्गेन शॉप्स', यानी मोल-भाव वाली दुकानें, माना जाता था; हालाँकि कुछ लोग, ज़्यादातर दूसरे दुकानदार समझते थे कि इसका मतलब 'बिल्ज शॉप्स' था, यानी कबाड़खाना। इन दुकानों में कोई हजामत की ब्लेड से लेकर फर्नीचर तक खरीद सकता था, और ज़्यादातर ये धन्धे ईमानदार होते थे। ग़रीब लोग हँसी-खुशी इन दुकानों में खरीदारी करते थे। लेकिन दूसरी दुकानों के मालिक और छोटे-मोटे कारीगर उनसे काफ़ी नाराज़ रहते थे।

इन दुकानों के मालिक मि. मैकहीथ थे। उनके और कई नाम थे। बी. शॉप्स के मालिक के तौर पर वे अपने आप को मैकहीथ कहते थे।

शुरुआत में गिनी-चुनी ही शाखाएँ थीं; दो या तीन वॉटरलू ब्रिज के पड़ोस में और लगभग आधा दर्जन पूरब में ही और आगे जाकर। वे सबकी सब काफ़ी अच्छा धन्धा करती थीं क्योंकि सस्तेपन में उनका कोई मुकाबला न था। लेकिन इतने सस्ते सामानों को उपलब्ध कराना आसान न था। मि. मैकहीथ को विस्तार करने से पहले एक श्रमसाध्य और ख़तरनाक संगठन खड़ा करना पड़ा।

ऊपर से यह काम सर्वाधिक गुप्तता के साथ पूरा किया जाना था। कोई नहीं जानता था कि मि. मैकहीथ अपने सामान कहाँ से और इतने सस्ते में कैसे लाते हैं।

ऐसे लोगों को जिनकी जिज्ञासा शान्त हुए बिना नहीं मानती, उनको वह आराम से बता सकते थे कि लन्दन और अन्य जगहों पर हमेशा दीवालिया हो रही ऐसी छोटी दुकानें हुआ करती हैं जो आम कीमतों पर अच्छा-खासा माल लेते आती हैं। और जब उन्हें नहीं बेच पातीं तो अपने सामान किसी भी कीमत में खुशी-खुशी खपाने को तैयार होती हैं। *'जीवन कठिन है,'* इसके बाद मि. मैकहीथ कहा करते, *'और हमें कभी कमज़ोर नहीं होना चाहिए।'*

आडम्बरपूर्ण बातचीत उन्हें ज़्यादा भाती थी। लेकिन वह अपने सारे सामानों के लिए ऐसे बारीक नुस्खे नहीं पैदा कर पाते थे। इसके अलावा ये आपूर्ति के अनियमित और अनिश्चित स्रोत उनकी दुकानों को लगातार ऐसे आश्चर्यजनक रूप से सस्ती वस्तुओं से भरे नहीं रख सकते थे।

इन बी.शॉप्स के ही तौर-तरीकों पर चलने वाली अन्य दुकानें शहर भर में बिखरी हुई थीं; उनमें पुरानी चीज़ें, गहने और दुर्लभ किताबें ऊँची दरों पर खरीदी जा सकती थीं, लेकिन उनको खरीदने में पैसा वसूल हो जाता था। और लोग कहा करते थे कि इन दुकानों के मालिक भी मि. मैकहीथ ही थे, और वे इन दुकानों के मुनाफ़े से बी. शॉप्स को चलाते थे। इसकी सम्भावना तो और भी कम थी, और यह सवाल तो फिर भी रहता है कि वह *इन* दुकानों में वस्तुओं की आपूर्ति कैसे करते थे।

19- की गर्मियों में मि. मैकहीथ ने अपने आपको गम्भीर परेशानियों में उलझा पाया, जिससे अन्य दुकानदारों को काफ़ी सन्तोष मिला, और उन्हें *नेशनल क्रेडिट बैंक* नामक एक बैंक से मदद की गुहार करनी पड़ी।

लेकिन बैंक द्वारा की गयी जाँच-पड़ताल से यह साबित हुआ कि मि. मैकहीथ की फर्म अच्छी हालत में है। ख़ास तौर पर वह व्यवस्था काफ़ी तन्दुरुस्त थी जिसमें हरेक दुकान अपने पैरों पर खड़ी थी और यह बात सशर्त तौर पर ही कही जा सकती थी कि मि. मैकहीथ इनके मालिक हैं। मैकहीथ को इस बात का अहसास हो गया था कि तमाम छोटे व्यापारियों के लिए *स्वतन्त्रता* सर्वोपरि महत्व रखती है। उन्हें अपने आपको साधारण कारीगरों या कर्मचारियों के समान थोक भाव से भाड़े पर उठाने से घृणा थी; वे *अपनी क्षमता* के बूते स्वतन्त्र होना चाहते थे। वे *निष्फल समानीकरण* नहीं चाहते थे। वे औरों से ज़्यादा मेहनत करने को

बिल्कुल तैयार थे, लेकिन फिर वे औरों से अधिक कमाने के काबिल भी होना चाहते थे। इसके अलावा, वे चाहते थे कि किसी को भी उन्हें हुक्म देने का और उनसे तमाम फालतू बकवासें करने का हक न हो।

मि. मैकहीथ ने कई अखबारी साक्षात्कारों में वैयक्तिक स्वतन्त्रता की अन्तःप्रेरणा की अपनी महत्वपूर्ण खोज का ज़िक्र किया था।

वह इस प्रेरणा को *मानव प्रकृति की पुर्वजानुरूप प्रेरणा* कहा करते थे, लेकिन उन्होंने यह विचार व्यक्त किये कि विशेष तौर पर यह प्रकृति पर मनुष्य की सार्वभौमिक और बेमिसाल जीत से प्रोत्साहित, आधुनिक मनुष्य है, तकनीकी युग का मनुष्य है, जो अपने और दूसरों के सामने अपनी अद्वितीय श्रेष्ठता को साबित करना चाहता है। मि. मैकहीथ इस महत्वाकांक्षा को निरपेक्ष रूप से और नैतिक रूप से सही मानते थे, क्योंकि यह मूल्य में कटौती करने वाली प्रतियोगिता द्वारा सारे लोगों को फायदा पहुँचाती है। दिग्गजों के इस प्रतियोगात्मक युद्ध में अब आम आदमी भी हिस्सा लेना चाहता था। अब यह व्यापार जगत पर था कि वह इस नये दौर के रुझान को प्रोत्साहित करे और इससे लाभ उठाये। मि. मैकहीथ अपने सनसनीखेज़ लेखों में प्रचारित किया करते कि हमें मानव स्वाभाव के विरुद्ध नहीं बल्कि इसके साथ काम करना चाहिए। जहाँ तक उनके संगठन का सवाल था, बी.शॉप्स इसी खोज की परिणति थीं। कर्मचारियों और महज़ सेल्समैनों की बजाय, मि. मैकहीथ की फर्म के पास अपनी बिक्री व्यवस्था के लिए आत्मनिर्भर दुकानदार थे। ये (सावधानीपूर्वक चुने गये) दुकानदार उनकी फर्म द्वारा बी.शॉप्स खोलने के काबिल बनाये गये थे। फर्म ने उनके लिए दुकानों में भण्डारण और बिक्री के माल के लिए क्रेडिट (उधार-अनु.) की व्यवस्था कर दी थी। हर हफ्ते उन्हें बिक्री के माल का एक जखीरा मिलता था, जो उन्हें खपाना होता था। वे इस माल के साथ जो चाहे वह कर सकते थे। जब तक वे किराया और बिक्री के माल की कीमत अदा करते थे, तब तक उनके बही-खातों की जाँच करने कोई नहीं आता। उनसे सिर्फ कीमतें नीचे रखने का वचन लिया जाता था। यह व्यवस्था शुद्ध रूप से *आम आदमी* के फ़ायदे के लिए बनी थी।

दुकानदार ज़्यादातर बिना महंगे सहायकों के काम चला लेते थे। दुकानों में पूरा परिवार काम करता था। ये लोग न अपने काम के घण्टों के लेकर झींखते, न ही आमदनी को लेकर उदासीन नौकरों की वह ठेठ तटस्थता दिखातेः *ये तो उन्हीं का धन्धा है।*

'इस तरह से,' मि. मैकहीथ ने एक अन्य लेख में लिखा, 'पारिवारिक जीवन

के उस विनाशपूर्ण विघटन पर *जिस पर सभी लोकोपकारकों ने शोक व्यक्त किया है, नियंत्रण रखा जाता है। पूरा परिवार काम में भाग लेता है। और चूँकि इसके एक समान हित हैं, यहाँ एक बार फिर से एक दिल और एक आत्मा है। काम और निजी जीवन के बीच विभाजन, कई मामलों में ख़तरनाक प्रभाव, जो व्यक्तियों के काम के दौरान परिवार, और परिवार के साथ रहने के दौरान काम भूलने का कारण बनता है, समाप्त हो जाता है। इस दिशा में बी.शॉप्स मिसाल हैं इस बात की, कि क्या किया जा सकता है।'*

मि. मैकहीथ के लिए बैंक को इस बात पर मना लेना आसान था कि उनकी परेशानियाँ वास्तव में परेशानियाँ थी ही नहीं। जिस पैसे की उन्हें ज़रूरत थी वह उनके व्यापार के विस्तार के लिए था। लेकिन बैंक उनको पैसा देने में आगा-पीछा कर रहा था क्योंकि वह मि. मैकहीथ के बारे में ही पूरी तरह विश्वस्त नहीं था।

सच कहें तो इस भद्र पुरुष के बारे में शहर भर में कुछ विशेष अप्रीतिकर अफवाहें उड़ रही थीं; इन अफवाहों की परिणति कभी किसी आरोप में नहीं हुई लेकिन फिर भी उन पर विचार करना होगा। उनका सरोकार उनके ख़रीद के तरीकों से ज़्यादा नहीं था, हालाँकि यह भी उनमें आता था।

एक या दो बार वह घपलों में फँसे थे। हर बार वह अपनी बेगुनाही दिखाने में तात्कालिक रूप से सफल रहे थे। इन मामलों में से कोई भी कानूनी कार्रवाई की मंज़िल तक नहीं पहुँचा था। मगर ऐसे लोग हमेशा ही मौजूद थे, जो न दुकानों के मालिक थे न ही दुकानदारों से सम्बन्ध रखते थे, जो, हालाँकि बिल्कुल खुले तौर पर तो नहीं मगर इस बात पर ज़ोर देते थे कि मि. मैकहीथ कोई भद्र पुरुष नहीं हैं। कुछ तो वास्तव में कोर्ट से बाहर निपटारे की बजाय मुकदमा कर देते, जबकि दूसरे सीधे तौर पर मैकहीथ के वकीलों को अपने से ज़्यादा चालाक पाते।

जितना मैकहीथ ने मुमकिन समझा था, नेशनल क्रेडिट बैंक से बातचीत उससे ज़्यादा ही खिंच गयी। उसे पहले ही उस बैंक के पास जाने पर अफ़सोस हो रहा था। क्योंकि इससे उसके बारे में पुरानी अफ़वाहों को अब नया ज़ोर मिलेगा। उसने अपनी अर्ज़ी वापस ले लेना ज़्यादा पसन्द किया होता।

कुछ ख़ास वजहों से उसने टेम्पल में कई वकील लगा रखे थे। इनमें से एक से उसे पता चला कि उस बैंक के सबसे प्रभावी ग्राहकों में से एक कोई जोनाथन जेरेमिया पीचम थे, जिनकी एक अविवाहित लड़की थी। मैकहीथ ने जल्दी ही उस लड़की से जान-पहचान करने में सफलता प्राप्त कर ली। जैसे ही उसके आसार बेहतर हुए उसने अपने आपको पूरी तरह पॉली पीचम को पटाने के लिए समर्पित

कर दिया, चाहे उसमें जितना समय लगे और चाहे जो दिक्कत उसे उठानी पड़े। उसके द्वारा स्त्रियों को जिमी बेकेट के रूप में अपना परिचय देने का कारण था, सावधानी बरतना।

उसने पीचम के व्यापार की स्थिति के बारे में एक बार फिर अपने आपको आश्वस्त कर लिया। यह भिखारियों का एक विशाल संगठन था, और ऐसा लगता था कि धन्धे के तौर-तरीके चतुराई से सोचे-विचारे और आज़माए हुए थे। मसलन, पीचम को जानने वाले एक व्यक्ति ने समझाया क्यों भिखारी बस खड़ंजों पर आने-जाने वाले प्रसिद्ध लोगों की तस्वीर नहीं सामने रख देते थे, बल्कि रंगीन चाकों से उनके भू-चित्र और रूप चित्र बनाया करते थे। कला के नमूनों से, जो वहाँ लाकर रख दिये जाते थे, जनता कभी नहीं जानती थी कि भिखारी ही उन चित्रों का चित्रकार है या नहीं। इसके अलावा ये खड़ंजे के चित्र अस्थायी होते थे, राहगीरों के कदम उन्हें बिगाड़ देते थे, बारिश उन्हें बहा देती थी, और बारिश लगभग हर दिन होती थी! हर दिन चित्रों को नये सिरे से बनाना पड़ता था ताकि *आज* कोई ज़रूर भीख दे! इस तरह के हथकण्डे मानव-स्वभाव के गहरे ज्ञान का सबूत थे।

जून के मध्य में, मैकहीथ ने अपने गौण सन्देहों की परवाह न करते हुए अपने प्रेमालाप को आगे बढ़ाने का निर्णय किया। उसे पूर्ण प्रतिष्ठा के प्रभामण्डल में शादी की और बढ़ना होगा और एक सुस्थिर और अखण्डित वैवाहिक जीवन का सपना दिखाने में सफलता हासिल करनी होगी।

उसने चिट्ठी के जरिये पता किया कि वह कब मिसेज़ पीचम से भेंट कर सकता है। उसने अपनी पहली मुलाकात पर मिसेज़ पीचम की उत्तेजना को सही ही समझा था।

मिसेज़ पीचम ने उससे 'मामला निपटाने के लिए' *ऑक्टोपस* में मिलने की व्यवस्था की। वहाँ पर उन्होंने आधुनिक नौजवानों के झक्कीपन पर जो टिप्पणियाँ कीं उससे मि. मैकहीथ परेशान हो गये।

मिसेज़ पीचम ने अपने होंठों से झाग साफ़ करते हुए कहा, 'आज के नौजवान जानते ही नहीं हैं कि वे क्या चाहते हैं। वे बच्चों की तरह होते हैं। मैं अपनी पॉली की नस-नस से वाकिफ़ हूँ लेकिन उसका दिल कहाँ रहता है, मुझे कुछ नहीं मालूम। शायद, वह बस काफ़ी छोटी है। उसे आदमियों का कोई अनुभव नहीं है। वह शायद कुत्ते और कुतिया में फर्क जानती है क्योंकि वह उनके सम्पर्क में रही है लेकिन मुझे नहीं लगता है कि यह फ़र्क भी वह अच्छी तरह से

जानती होगी। वह ऐसी चीज़ों के बारे में कभी नहीं सोचती। आपको यह अवश्य याद रखना चाहिए कि अपनी रात की पोशाक पहने बिना वह कभी नहायी तक नहीं है। जब ऐसी मासूम लड़की किसी आदमी को देखती है, तो वह शायद वह सोचती होगी कि वह किसलिए होते हैं। वे हरदम इतने रोमाण्टिक होते हैं! जिस तरह से वह लड़की उपन्यास-के-उपन्यास निगल जाती है-आप कभी *यकीन* नहीं करेंगे। अब हमेशा मि. स्माइल्स ऐसे हैं, मि. स्माइल्स वैसे हैं करती रहती है। और इसलिए मैं पक्के तौर पर जानती हूँ कि यह आप हैं जिसे वह चाहती है। एक माँ को मालूम होता है। ओह, मि.बेकेट!'

यह निश्चित कर लेने के बाद कि उनका ग्लास खाली है और बगीचे कोई नहीं है, उन्होंने मि. मैकहीथ की आँखों की गहराई में घूरा।

वह एक सिद्धांतहीन, लम्पट आदमी था। मैकहीथ, जिसका दिमाग व्यापारिक समस्याओं से भरा हुआ था, के इरादे जितने भी दैहिक प्रकृति के रहे हों, कोक्स के नाम के ज़िक्र से उसके दिल में ज़ोर की टीस उठी। वह पीच से उससे भी ज़्यादा प्यार करता था जितना उसने खुद के सामने कबूला था।

उसने फटी आवाज़ में पूछा, 'इस बाबत क्या किया जा सकता है?'

'यही तो मैं जानना चाहूँगी,' मिसेज़ पीचम ने विचारमग्न रहते हुए कहा और उस पर ऐसा ठण्डा दृष्टिपात किया कि उसकी रीढ़ की हड्डी तक कंपकंपी की लहर सी दौड़ गयी। 'आजकल की जवान लड़कियाँ काफ़ी अनिश्चित होती हैं। उनके दिमागों में रोमाण्टिक ठूँस-ठूँसकर भरे होते हैं।'

लेकिन तब उन्होंने अपना छोटा-सा गोल-मटोल उसके हाथ पर रखा और वेटर से बिल मँगाया।

लोहे की टेबलों के बीच से बाहर निकलने के छोटे-से रास्ते में मैकहीथ को फिर बताया गया कि हर काम अत्यधिक सूझ-बूझ और पीचम की नज़र से बचाकर किया जाना है। उसी शाम वह पीच से मिला और उसे उसके रास्ते पर साथ चलने की इजाज़त भी मिल गयी।

ताज्जुब की बात है कि वह ओल्ड ओक स्ट्रीट मीथ गार्डेन्स के बगल के पार्क की तरफ गयी, हालाँकि उस रात उसकी गृह-व्यवस्था की कक्षा थी। उसने बीच-बीच में चारों और निगाह दौड़ाई लेकिन मैकहीथ को छोड़कर जाने की कोशिश नहीं की और अंततः झाड़ियों के बीच एक बेंच पर बैठ गयी।

वह अपने झीने-से परिधान में बहुत सुन्दर लग रही थी और पूरी तरह से इत्मीनान से थी। दरअसल, वह अब कोई गुड़िया नहीं रह गयी थी, बल्कि एक

बड़ी सुगठित लड़की हो गयी थी। वह एक सम्पूर्ण भोजन थी, कोई अधूरी खुराक नहीं।

कोक्स और स्माइल्स के बारे मे बात करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी।

उसने कहा, 'वे बातें इतनी खूबसूरत शाम के लायक नहीं हैं।' ऐसा लगा कि इस बात से उसका मनोरंजन हुआ कि वह कोक्स के बारे में जानता है; वह हँसी।

जब वे वापस जाने लगे तो मैकहीथ की समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन कई चीज़ें घटित हुईं। फिर भी खुश नहीं था क्योंकि पीच सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर झुकी नहीं थी और उसने अपनी पोशाक के नीचे व्यावहारिकतः कुछ भी नहीं पहना था। यह मि. मैकहीथ को काफ़ी ग़लत लगा; उतना ही ग़लत जितना कि यह तथ्य कि उसने अपनी गृह-व्यवस्था की कक्षा इतनी बेपरवाही से छोड़ दी। मतलब वे अपने छात्रों की उपस्थिति पर नज़र नहीं रखते थे!

जैसा कि पिकनिक से वापसी की यात्रा के बाद हुआ था, ठीक वैसे ही मैकहीथ अब भी यह नहीं बता सकते थे कि उन्होंने वास्तव में कोई प्रगति की थी या नहीं-और इससे उन्हें चिन्ता हुई। जो कुछ हुआ था उसका पीच के लिए *ज़रूर* कोई मतलब होगा। अब वह उसकी मासूमियत पर और शक नहीं कर सकते थे।

मि. पीचम ने भी उस शाम अपनी बेटी पर एक खोजी निगाह डाली।

मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सार्वजनिक मामले निराशाजनक संकट में थे। पिछले दिन वह आश्चर्यजनक ख़बर फूट निकली थी।

आश्चर्यजनक ख़बर

पीचम को अहाते में रह रहे फ्यूकूम्बी से दिक्कत हो रही थी। घर मिलने से खुश सैनिक ने पहले-पहल बारीकी से अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया और अन्धों के कुत्तों को उचित स्थिति में बनाए रखा।

उनको भोजन देना कतई कोई सीधा-सादा काम न था; उन्हें अधिकतम सम्भव दयनीय दिखना था और इसलिए उन्हें भुखमरी की कगार पर बनाए रखना था। एक मोटे कुत्ते के साथ एक अन्धे व्यक्ति के दया पैदा कर पाने की बहुत कम सम्भावना थी। जनता स्वाभाविक रूप से सहज ढंग से सोच-विचार

करती है। एक मरियल कुत्ते को मुश्किल से ही कोई देखता है; लेकिन अगर किसी संयोग से जानवर तन्दुरुस्त है, तो देने वाले को कोई अन्दर की आवाज़ चेता देती है कि इससे बेहतर हो कि वह अपना पैसा नाले में फेंक दे। यह एक तथ्य है कि लोग अचेतन रूप से अपना पैसा अपने पास जाँथे रहने के लिए कोई तर्क ढूँढते हैं। एक अच्छे कुत्ते को कमज़ोरी की वजह से मुश्किल से खड़े होने के काबिल होना चाहिए।

इसी वजह से, वजन नापकर कुत्तों की नियमित जाँच की जाती थी। अगर वज़न बढ़ता तो सारा दोष फ्यूकूम्बी का होता।

उस वक्त पीचम यह पता करने के लिए एक जाँच-पड़ताल में लगा हुआथा कि कहीं वह एक पैर वाला आदमी बस अपनी नौकरी बचाने की खातिर अपने बहीखातों में गलत सूचनाएँ भरने की हद तक तो नहीं चला गया है, जब उसे रेस्तराँ कीपर के आने की ख़बर मिली। वह ख़बर लाया था कि कोक्स अचानक *लवली ऐना* के ऊपर दिखाई पड़ा था और प्रचण्ड गुस्से में था।

दोनों भद्रपुरुष फौरन गोदी पर गये। वहाँ सचमुच कोक्स सीढ़ियों और पेंटरों के बीच खड़ा था। उसके पीछे, पीले चेहरे वाला और जहाज़ के विशाल अन्धेरे कोनों की तरफ़ एक ठहरी निगाह से घूर रहा था। प्रत्यक्ष रूप से उसमें नवागन्तुकों के चेहरे की तरफ़ देखने का साहस नहीं था।

जिस रूखी निगाह के साथ कोक्स ने पीचम का स्वागत किया उसने पीचम को ऊपर से नीचे तक सिहरा कर रख दिया।

'किसी तरह से यह उन जहाज़ों में से एक जहाज़ है जो आपने ब्रिटिश सरकार को बेचे हैं?'

पीचम अचानक सालों बुज़ुर्ग दिखा।

झटका पूरी तरह आकस्मिक नहीं था। पता नहीं कैसे हमशा उसे महसूस होता था कि धन्धे के साथ कोई न कोई बात थी जो बिल्कुल ठीक नहीं थी। जहाँ तक कोक्स का सम्बन्धा, उसे कभी कोई भ्रम नहीं था। लेकिन वह इतने अचानक किसी चीज़ की उम्मीद नहीं कर रहा था।

कोक्स ने घोषणा की कि जहाज़ *इस्तेमाल के लिए उपयुक्त नहीं* है। पीचम को लगा कि यहाँ पर यह विवाद करने से कोई फ़ायदा नहीं होगा कि आख़िर यह मि. कोक्स ही तो थे जिन्होंने इन जहाज़ों की सिफ़ारिश उन लोगों से की थी। पीचम बिना और विचार किये, जानते थे कि कोक्स सीधे-सीधे कह देगा कि उसने कभी उन जहाज़ों को देखा ही नहीं है। जबकि बाकी सबने उनकी

जाँच-पड़ताल की थी-और वह भी गवाहों के सामने!

कोक्स की गतिविधियाँ (उन्होंने हमेशा यह अन्दाज़ा लगाया था कि कोक्स स्वतन्त्र रूप से काम कर रहा था) जिस दिशा में जा रही थीं, उस बारे में मि. पीचम के मन में गहरा शक पैदा हुआ। ये सरकार विरुद्ध नहीं जा रही थीं, बल्कि मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के ख़िलाफ़ जा रही थीं, एक भयानक, अप्रतिरोध्य स्टीम-रोलर के समान!

स्वाभाविक रूप से मामले की बारीकियाँ अभी सामने नहीं आयीं थी। मि. कोक्स को नहीं लगता था कि अभी भी अपने पत्ते खोलने का समय आ गया है। कोई बोला नहीं।

मि. कोक्स गहरे तिरस्कार के अन्दाज़ में अपनी एड़ियों पर घूमे, और एक भी शब्द कहे बिना चले गये। पीछे से देखने पर उनका सूट हमेशा से अधिक रेडीमेड लगा। पीचम को अपने शिकार बने बंधुओं से यह विचार-विमर्श करने की भी इच्छा नहीं हुई कि आगे क्या होगा। उन्होंने ईस्टमैन को यह कहते अस्पष्टता से सुना कि उन्हें पत्र लिखकर फौरन लंकाशायर से मैन्यूफैक्चरर को और भेड़-पालक को बुला लेना चाहिए। भेड़-पालक! बिना कोई शब्द कहे पीचम चल पड़े।

उस शाम उन्हें तेज़ बुखार हुआऔर वह आइस-पैक लेकर सोने गये। रात के दौरान वह उठे नहीं। बत्तिया जलने दो! गैस-बिल अब फिर नहीं भरा जाएगा।

अगली सुबह वह एक बीमार आदमी के समान गोदी की तरफ़ चले गये। उन्हें वहाँ कोई मज़दूर नहीं मिला। लवली ऐना पर काम ईस्टमैन के आदेश से स्थगित कर दिया गया था। इस चीज़ ने, स्थिति के बारे में जैसा *वह* सोच रहे थे, उसे पुष्ट कर दिया।

जब वह दोपहर में घर लौटे (खाने के लिए नहीं) और सुना कि दो भद्रपुरुष उनके बारे में पूछताछ कर रहे थे, तो उन्होंने सोचा कि पुलिस पहले से ही उनके पीछे है। आखिर कम्पनी ने सरकार से पहली किश्त स्वीकार कर ली थी।

लेकिन और गहरी पूछताछ से यह जाहिर हुआ कि वे लोग ईस्टमैन और मैन्यूफैक्चरर थे, जो भागा-भागा लन्दन पहुँचा था। पीचम खुश थे कि वह उन्हें नहीं मिले।

कोक्स के दफ्तर जाने का कोई मतलब नहीं था। वह पीली सी लड़की उस दलाल के घर के पते के सम्बन्ध में किसी भी पूछताछ के लिए मछली के समान बहरी थी।

लेकिन ईस्टमैन को पकड़ने के बेकार प्रयास के बाद घर लौटने के बाद कोक्स को अपनी बेटी के साथ पाया।

कोक्स पॉली को रास्ते में मिला थाऔर उसके साथ आया था, हालाँकि पॉली ने उसे कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं दिया था। वह उसे कुछ दिलचस्प तस्वीरों के बारे में बतला रहा था जो वह उसे दिखाना चाहता था। पॉली ने उसे ठीक तरह से नहीं समझा था। वह उसकी परवाह नहीं करती थी।

जब पीचम ने प्रवेश किया तो कोक्स ने ऐसे व्यवहार किया मानो उनके बीच कभी कोई छोटे से छोटी अनबन न हुई हो। उसने अपना दस्ताने वाला एक हाथ उनसे मिलाया और दूसरे से उनका कन्धा थपथपाया और जल्दी से विदा ली।

पूरे रात के खाने के दौरान एक घुमावदार आरी मि. पीचम के दिमाग में खटा-खट चल रही थी।

इसके बाद उन्होंने अपनी पत्नी को बाहर भेजा और पीच से जिरह की।

उन्ळेंने कोई जोर-ज़बरदस्ती नहीं की और उन्हें पता चला कि मि. कोक्स ने पॉली को वह बताया है जो उन्होंने अपने व्यापार सहयोगियों से छिपाया था-अपना पता। उन्होंने वजह न पूछने की सावधानी बरती। वह अपने अन्धेरे-से दफ्तर में गये और थोड़ी देर तक अन्यमनस्क-से खिड़की के बाहर देखते रहे। इसके बाद, जल्दी-जल्दी एक पत्र लिखने के बाद बैठक-कक्ष में वापस आये और पॉली से वह पत्र फौरन मि. कोक्स के पास ले जाने को कहा।

पॉली बहुत अचम्भित थी। साढ़े नौ पहले ही बज चुके थे।

लेकिन उसने अपना हैट पहना और मि. कोक्स के पास गयी।

कोक्स घर पर ही था। जब नौकरानी ने बताया कि पॉली अपने पिता के पत्र के साथ आयी है और उसे पत्र का जवाब चाहिए, तो उन्होने प्रत्यक्ष शर्मिंदगी के साथ अपने बैरे का अंगोछा रखा और जल्दी-से कमरे से बाहर आ गये।

वह अपनी बहन के साथ रहते थे। वह एक बहुत सशक्त महिला थी जिनकी अपनी भाई के बारे में किसी भी तरह से ऐसी ऊँची धारणा नहीं थी, जैसा कि कोक्स चाहते और वह अपने भाई के नैतिक गुणों के बारे में अपने संदेहों को बिल्कुल गुप्त नहीं रखती थीं।

उन्हें बहुत कुछ सहना पड़ा था।

कोक्स के पास ज़बर्दस्त व्यापारिक काबिलियत थी और साफ़-सुथरी निजी ज़िन्दगी के बारे में उसके विचार वही थे जो उसकी मण्डली में सामान्य थे। उसके विचार में जिसके कई साझेदार हैं, व्यापारिक जीवन और निजी जीवन में विशाल

अन्तर है। व्यापारिक जीवन में दूसरों की परवाह किये बगैर मुनाफ़े के हर मौक़े का उपयोग करना किसी कर्तव्य से कम नहीं होता, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार किसी को रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि वह भगवान का उपहार है। लेकिन निजी जीवन में किसी को दूसरे व्यक्ति का लाभ उठाने का कोई अधिकार नहीं है। इस जगह तक उनके विचार एकदम सही हैं।

दुर्भाग्य से उनमें हमेशा इतनी दिमागी ताक त नहीं होती थी कि वह अपने सिद्धान्तों के अनुरूप आचरण कर सकें। एक भद्रपुरुष के नारी-जाति के प्रति कर्तव्यों के बारे में उनके विचारों और अपनी बहन के प्रति उनके विचारों में मामूली फर्क भी न था; जैसा कि उनकी बहन किया करती थी, और अक्सर उन्हीं शब्दों के साथ वह शोचनीय रूप से अपने बार-बार होने वाले पतन की निन्दा करते। वह अक्सर खेदपूर्वक कहा करते : 'मैं अपना ही मालिक नहीं हूँ।' इस तरह, आलंकारिक रूप से कहा जाए तो न वह नही उसकी बहन उसे पल भर के लिए अकेला छोड़ सकते थे।

और सामाजिक रूप से उसका रुझान नीचे की तरफ था। सामान्यतम औरतें उसे सबसे ज़बर्दस्त ढंग से आकर्षित करती थीं। लेकिन वह नौकरानियों से भी आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता था।

यही मामला उसके कपड़ों के साथ भी था। उसकी पसन्द भयानक थी। उसके सूट देखकर उसकी बहन शारीरिक तौर पर बीमार महसूस करती थी। वे सूट उसके लिए उसकी छड़ी से कम अपरिहार्य नहीं थे।

हर सम्भव मौक़े पर उसकी बहन उसे सुरुचिपूर्ण टाइयाँ भेंट करतीं। वह उन्हें पहनता भी। लेकिन गलियारे में, मानो किसी शैतान द्वारा संचालित हो वह एक दूसरी टाई अपनी जेब में डाल लेता। और सीढ़ियों पर वह लाल और आक्रामक टाई अपने गले में लटका लेता।

ये बीमारी के लक्षण थे। वह खुद इन चीज़ों के लिए आंतरिक समस्या को ज़िम्मेदार ठहराता था। ये कब्ज़ की बदौलत होने वाले अनियंत्रणीय कामुकता के दौरे थे। उसकी बहन अपनी पूरी ताक त के साथ खुद के ख़िलाफ़ उसकी त्रासद लड़ाई में उसकी मदद करती। फिर भी कभी-कभी वह भूल जाता है कि एक बार एक 'दौरे' के दौरान उसे अपनी बहन की सहायता हस्तक्षेप जैसी लगी थी और उसने अभद्रता से इसे लेने से इंकार कर दिया था।

इसलिए जब मिस पीचम के आने की ख़बर मिली तो वह ज़्यादा से ज़्यादा अपनी बहन को उस कमरे से बाहर व्यस्त रख सकता था जहाँ मुलाकात हुई और

अधिकतम सम्भव तेज़ आवाज़ में खाँस सकता था।

इस शाम कोक्स को भयंकरतम दौरों में से एक दौरा पड़ा था। उसकी परेशानियाँ उसे सुबह से तंग कर रही थीं। ऐसे हालात में पीच को तस्वीरों का अपना संकलन दिखाने के अलावा उसके पास कुछ और नहीं बचा था, जिसमें हर तरह की नग्नता थी। इस काम को करने के लिए उसने यह बहाना किया कि यह तस्वीरें नया कंसाइनमेंट हैं जो बस अभी-अभी आया है।

पीच ने मुश्किल से उसकी तरफ देखा और उसका चेहरा एकदम लाल हो गया।

इस बीच कोक्स ने वह पत्र पढ़ा जिसमें एक निजी मुलाकात की दरख़्वास्त की गयी थी।

शीशे की ऊपरी सतह वाली लिखने की टेबल पर एक बड़ा-सा सुनहरा जड़ाऊ पिन (ब्रोच) रखा था। यह कोक्स की मृत माँ का था। इसमें ढेर सारा सोना था; लेकिन इसकी विशेषता नहीं के बराबर मूल्य के तीन बड़े पत्थर थे। कुल मिलाकर, कोक्स को अपनी पसन्दगी-नापसन्दगी अपनी माँ से विरासत में मिली थी।

जब उसने पत्र पढ़ लिया, या शायद इसलिए कि उसे लगा कि पीच ने उन तस्वीरों को काफ़ी देख लिया है, उसने वह जड़ाऊ-पिन उठाया और उसकी तरफ़ बढ़ाकर पूछा कि यह उसे कैसा लगता है।

उसने एक प्रकार से अवरुद्ध स्वर में कहा, 'काफ़ी अच्छा।'

'तुम कभी भी आकर यह अपने लिए ले सकती हो,' कोक्स ने कहा और कमरे के कोने में देखा।

स्वाभाविक रूप से उसने उत्तर नहीं दिया। वह फिर चुपचाप बैठी रही और उसे देखकर ऐसे मुस्करायी मानो उसने कोई चुटकुला सुनाया हो। उसे अपने ऊपर काफ़ी दबाव डालना पड़ा था। वह पहले ही यह उम्मीद कर रहा था कि वह पॉली को घर छोड़ने जाएगा लेकिन उसकी बहन यह सोचकर कि कमरे में बड़ी चुप्पी है, आयी और पॉली से बात करने लगी।

कोक्स उन तस्वीरों को लेकर थोड़ा आशंकित था जो ऊपर मुँह किये टेबल पर पड़ी थीं, लेकिन पॉली ने बातचीत के दौरान उन्हें यांत्रिक ढंग से पलट दिया।

वह अच्छी तरह से समझती थी कि भद्र पुरुषों से कैसे व्यवहार करना है, और इस छोटी-सी विशेषता ने कोक्स पर शानदार प्रभाव छोड़ा।

वह लगभग फौरन वहाँ से चली गयी और अपने पिता को यह बता सकी

कि मि. कोक्स अगले दिन उनसे मिलेंगे।

उस दलाल के बारे में पीच को अधिक रुचि न थी। लेकिन वह उस जड़ाऊ-पिन को नहीं भूली जो उसे बहुत पसन्द आया था। अगली सुबह जब वह लंगड़े जॉर्ज के पास एक गिलास दूध लेकर गयी तो उसने उसे बताया कि एक बड़े भद्र पुरुष उसे एक बड़ा-सा जड़ाऊ-पिन देने वाले हैं और वह जल्दी ही उसे दिखाएगी। बाद में भी, ख़ास तौर पर सोने जाने से ठीक पहले भी पीच ने इस बारे में सोचा।

कोक्स सचमुच अगली सुबह आया। लेकिन उसने दुकान से होकर ऑफिस में जाने से इंकार कर दिया। वह एक चटकीला पीला ओवरकोट पहने हुए था और वह गम्भीर और धीमी आवाज़ में बोल रहा था।

उसने माना कि *लवली एना* को देखकर वह आपा खो बैठा था। वह भारी-भरकम जलपोत किसी काम के नहीं थे। यह सच था कि उसने ही ब्रुकले एण्ड ब्रुकले कम्पनी का ज़िक्र किया था लेकिन वह उनके जलपोतों के बारे मे कुछ नहीं जानता था। वह शायद उन तैरते ताबूतों को अपने दोस्त विदेश मन्त्री को नहीं दिखला सकता था। उसे इस धन्धे की सबसे खराब बात यह लगी कि पहली किश्त पहले ही अदा की जा चुकी है और नौकाधिकरण उन्हीं जहाज़ों पर निर्भर था। उस कम्पनी ने, जिससे, भगवान का शुक्र है, अब उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, अपने ऊपर देशद्रोह का आरोप लगने के रास्ते खोल दिये थे, क्योंकि सभी यह जानते थे कि उन्होंने जहाज़ों की जाँच की थी और बाइल नामक एक विशेषज्ञ की राय ख़ारिज कर दी थी।

कोक्स ने सुझाव दिया कि इस मुसीबत से बाहर निकलने का एकमात्र सम्भव तरीका था फौरन दूसरे वाकई भरोसेमन्द जहाज़ ख़रीदना। *लवली एना, यंग सेलरबॉय* और *ऑप्टिमिस्ट* के नाम बदलने की व्यवस्था वह खुद कर सकता था। चाहे जो हो जाय उसका दोस्त *ये* जहाज़ नहीं ख़रीद सकता था।

पीचम पिछले दिन से कम परेशान दिखे। वह जाहिरा तौर पर जानते थे कि वह इस आदमी से बीस नहीं पड़ सकते। जिस और भी भयानक क्षेत्र में वह निपुण थे, वह दूसरा था। वह उन्होंने छोड़ दिया था। पूरे देश में चल रही देशभक्ति की लहर में बहकर उन्होंने कुछ नया काम शुरू कर दिया था। अब वह ट्रैफेलगार स्क्वायर के एक घड़ियाल के समान निरीह थे। लेकिन विचित्र बात यह थी कि यह मौजूदा ज्ञान कि उन्हें सिर्फ़ मानवीय नीचता से निपटना है, उनमें एक हद तक आत्मविश्वास और उम्मीद पैदा करता था। किसी भी तरह वह फिर से

निरे मनुष्यों के बीच ही तो थे।

वह वाचाल कोक्स को शान्ति से, यहाँ तक कि ठण्डे ढंग से देखते थे। तब उन्होंने कहा कि जहाँ तक वह जानते हैं, दूसरे जहाज़ नहीं हैं।

वस्तुतः और जहाज़ हैं, कोक्स ने धीमे से कहा; मसलन एक तो साउथैम्प्टन में ही है।

पीचम ने सिर हिलाया।

उन्होंने शुष्कता से पूछा, 'मुझे इस परेशानी से बाहर निकालने में आपको कितना ख़र्च आएगा?'

ऐसा प्रतीत हुआ कि कोक्स को सवाल समझ न आया हो मगर पीचम ने सवाल दुहराया नहीं। वह जानते थे कि यह अब मि. कोक्स के लिए काफ़ी फायदे वाला उद्यम है।

एक विराम के बाद, जिस दौरान वह दुकान में टहलता रहा और धूल-धूसरित वाद्य यंत्रों को देखता रहा, कोक्स ने कहा कि जहाज़ पर मरम्मत के काम का दुगुनी ऊर्जा के साथ आगे बढ़ना अब निरपेक्ष रूप से अपरिहार्य है। आधिकारिक रूप से जहाज़ों को सरकार के हवाले करते वक्त होने वाली जाँच-पड़ताल निश्चित रूप से सतही तौर पर होनी थी, लेकिन कम-से-कम सतह तो अच्छी हालत में दिखनी ही चाहिए।

जब वह जाते वक्त दरवाज़ा बन्द कर रहा था तो उसने आवाज़ देकर कहा कि अगले हफ्ते बुधवार को इत्तेफाक से साउथैम्प्टन में उसका एक अप्वाइंटमेंट है।

4

रुक्ष की जगह कौन नहीं होना चाहेगा विनम्र
बस अगर सामान्य तौर पर स्थितियाँ न होती इतनी विषम!
(द्राइग्रॉशेन फिनाल : मानवीय मामलों की अनिश्चितता पर)

गम्भीर चर्चाएँ

हर कोई नहीं जानता कि युद्ध राष्ट्र के आध्यात्मिक स्तरोन्नयन के साथ-साथ व्यापार को भी कोई छोटी-मोटी तेज़ी नहीं देते। युद्ध के रास्तों पर बहुत-सी बुराइयाँ आती हैं लेकिन व्यापार जगत के लोगों के पास इसकी शिकायत के लिए आम तौर पर कुछ नहीं होता।

पीचम जब मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी से जुड़ा था तो उसने उम्मीद की थी कि उसे मुनाफ़े का अच्छा-ख़ासा हिस्सा मिलेगा। आंशिक तौर पर वह इस तथ्य से भी प्रभावित था कि उसकी बेटी विवाह-योग्य आयु में पहुँच गयी है और आमदनी में बढ़ोत्तरी अनुकूल मालूम पड़ती थी।

लेकिन धन्धे की इस नयी लाइन में असन्तोषजनक परिवर्तनों के चलते पीचम को अपने मैनेजर बियरी से कई गम्भीर चर्चाएँ करनी पड़ीं।

बार-बार वह ऑफिस में बैठे, जो दुकान के पिछवाड़े लोहे के खोल से ढंके दरवाज़े के पीछे स्थित था; पीचम अपने सिर पर वह अनिवार्य हैट लगाए एक रोल-टॉप डेस्क (एक लिखने वाली डेस्क जिस पर एक सरकने वाला कवर लगा होता है-अनु.) पर बैठता जो एक छोटी-सी खिड़की के नीचे दीवार से लगाकर रखी थी, और विशालकाय बियरी कोने में एक कमज़ोर लोहे की कुर्सी पर बैठता।

वहाँ गन्दे बाजुओं वाली कमीज़ में बैठे हुए, पीचम ने अपनी बाहें डेस्क पर झुका दीं और वह बियरी पर नज़र डालने से बच रहे थे, जो लगातार एक सिगार का टुर्रा चबाए जा रहा था, जो उसने सम्भवतः कई साल पहले एक गटर से निकाला था।

पीचम ऐसे मौक़ों पर कहा करते, 'बियरी, मैं तुमसे सन्तुष्ट नहीं हूँ। तुम इतने कठोर हो फिर भी तुम हमारे लोगों से पर्याप्त फायदा नहीं निकाल पाते। एक तरफ मैं शिकायत सुनता हूँ कि तुम कर्मचारियों से पर्याप्त विनम्रता से पेश नहीं आते; दूसरी और वे पैसे भी नहीं कमा रहे। मसलन, वर्करूम की लड़कियां कहती हैं कि उन्हें सैनिकों की वर्दी की माँग के बराबर आपूर्ति बनाए रखने के लिए ओवरटाइम काम करना पड़ता है; ऐसी चौदह लड़कियाँ हैं-ज्यादा से ज्यादा नौ होने की बजाय। तुम जानते हो कि मैं यहाँ पर ओवरटाइम काम की इजाज़त नहीं देता, न ही मैं बड़ा और खर्चीला स्टाफ रखूँगा। समय विकट है, बहुत विकट। इंग्लैण्ड अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है, व्यापार छोटी-मोटी क्षति भी नहीं सह सकता और तुम उसे अयोग्यता से चला रहे हो। अगर सारा किया-कराया मिट्टी में मिल जाएगा, तो हरेक व्यक्ति जो इस संगठन में और इसकी मदद से अपनी रोटी कमाता है सड़क पर फेंक दिया जाएगा। और यह किसी भी दिन हो सकता है। मैं तुमसे सुझावों की उम्मीद करता हूँ।'

बियरी ने निष्ठुरता से कहा, 'अगर मैं किफायतसारी लागू करना शुरू करूँगा तो आप कहेंगे कि मैं स्टाफ के साथ दुर्व्यवहार करता हूँ।'

'वह तो तुम करते ही हो। वह नया आदमी तीन घरों दूर से चिल्लाते सुना जा सकता है। मैं यह नहीं झेलने वाला।'

'जब हम उसका मुँह तकिया लगाकर बन्द करते हैं तो उसका दम घुटता है, और फिर आप बात का बतंगड़ बनाते हैं! आप खुद जानते हैं कि अगर हम उसकी मक्खन की टिकिया की तरह देखभाल करेंगे तो हम उससे कभी कोई पैसा नहीं निकलवा पाएँगे। और हमने दूसरों की वजह से बस उसकी कुटम्मस कर दी। वह दुष्ट पट्ठा नियमित रूप से भुगतान तक नहीं करता। हमने उसे बताया भी कि यह सिर्फ दूसरों की ख़ातिर किया जा रहा है और आपके बाहर जाने के बाद हमने उससे काफ़ी दयालुता से बर्ताव किया।'

'देखो मैं तुम्हें कई बार चेतावनी नहीं दूँगा। मैं ऐसी चीज़ें बर्दाश्त नहीं करूँगा। और "सैनिकों" से होने वाली आय भी नीचे जा रही है। हम बरबाद हो रहे हैं बियरी; मुझे शटर उठाना पड़ेगा।'

'हाँ, सैनिक कमाई नहीं कर रहे हैं, यह सच है मि. पीचम। मैं सावधानी से मामले की तह तक गया हूँ। जनता उस दिशा में उदासीन हो गयी है, इसमें कुछ नहीं किया जा सकता। मैंने आपको बताया था कि हमें राजनीति से कोई लेना-देना नहीं होना चाहिए।'

पीचम थोड़ी देर तक कुछ सोचते रहे। वह एकदम स्थिर, धूल-धूसरित लिखने वाली टेबल के एक कोने को घूरे जा रहे थे और उनके चेहरे ने अपनी सारी प्रभावहीनता खो दी थी।

उन्होंने कहा, 'समस्या की जड़ यह है कि तुम लोगों के पास कोई आइडिया नहीं है। *ऑलिव ब्रांच* के अगले अंक में सैनिक जीवन और दक्षिण अफ्रीका पर कुछ अच्छी तरह से लिखे हुए लेख छाप दो और तुम्हारे सैनिक अपना आधा काम समझ जाएँगे।'

घर के एक तलकक्ष में *ऑलिव ब्रांच* नाम का एक अखबार छपता था। यह साप्ताहिक था और इसमें निजी सूचनाएँ, मृत्यु, शादियों और बपतिस्मा का लेखा-जोखा रहता था। घर-घर जाकर भीख माँगने के लिए यह सूचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण थीं। अखबार के हर अंक में कई कारुणिक छोटी कथाएँ, बाइबिल से कुछ उद्धरण और सप्ताह का विचार भी मौजूद रहते थे।

पीचम ने बोलना जारी रखा, 'इसके अलावा हम मूर्खतापूर्ण गलतियाँ कर रहे हैं। हमें तब अपने आदमी बाहर नहीं भेजने चाहिए जब कुछ समय से मोर्चे से कोई ख़बर न आयी हो। वह एकदम ग़लत है। मौजूदा हालत में मैफेकिंग नाम की यह जगह घेर ली गयी है और युद्ध में ठहराव बना हुआ है। यह हमारे सैनिकों के लिए बहुत-कुछ नहीं कहता। लोग ठीक ही पूछते हैं : "वे किस लिए अपने हाथ और पैर गवाँते हैं अगर यह उन्हें कहीं नहीं ले जाता?" अक्षमता को कभी समर्थन नहीं मिलता। और सबसे अहम बात यह है कि कोई युद्ध को याद करना पसन्द नहीं करता अगर वह सफल न हो। इस तथ्य से बिल्कुल अलग कि लोग अपने आपसे कहते हैं: "इन भिखारियों को शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि वे घर पर ही हैं-दूसरे तो और बुरी हालत में हैं।" हमारे अपेक्षाकृत जवान आदमियों को छद्म वेश धारण कराना अच्छी युक्ति थी, लेकिन उन्हें किसी भी पुराने वक्त पर सड़क पर भेज देना अच्छा नहीं है, ख़ास तौर पर तब जब कहीं कोई जीत नहीं हासिल की जा रही। उन आदमियों को यहाँ लाओ!'

बियरी उन्हें ढूँढकर लाया; कम-से-कम उन्हें जो वहाँ मौजूद थे। वे जीर्ण-शीर्ण कपड़ों में थे और मनहूस दिख रहे थे। वे कुछ कमा नहीं रहे थे।

पीचम ने चुप्पी भरे माहौल में उनका निरीक्षण किया। मगर उसकी निगाह सरसरी थी और बारीकियों में नहीं जा रही थी। अभ्यास के कई वर्षों ने उसे ऐसी निगाह डालना सिखलाया था।

उन्होंने अचानक कठोरता से कहा, 'यह कोई अच्छा नहीं है!' जबकि बियरी

एक वफादार कुत्ते के समान अपने होंठ चिपकाए हुए था जो अपने मालिक की अमोघता से परिचित है। 'यहाँ तुमने क्या जमा कर रखा है? ये आदमी इंग्लैण्ड के सिपाही नहीं हैं। ये तो आवारागर्द हैं! देख अपने आपको, हाँ तू!' और उन्होंने चिड़चिड़े दिखने वाले एक लम्बे, पतले उम्रदराज़ आदमी की ओर इशारा किया। 'यह एक असन्तुष्ट है, एक कम्युनिस्ट! ऐसा प्राणी जो कभी इंग्लैण्ड के लिए नहीं मरेगा! और मरेगा भी तो हाय-तौबा और रोना-पीटना करके और कीमत को लेकर हुज्जत करके। सैनिक आकर्षक नौजवान पुरुष होते हैं, दुर्दशा में भी तेज़-तर्रार और हँसमुख। और यह घृणास्पद लूले-लंगड़े! क्या *तुम* इन्हें सड़क पर देखना पसन्द करोगे? गलपट्टी में एक बाँह काफ़ी है। और वर्दी ज़रूर साफ़ होनी चाहिए। लोगों को ज़रूर लगना चाहिए : "उसके पास वर्दी को छोड़कर कुछ नहीं बचा है, लेकिन वह उसकी कद्र करता है।" ये लोगों को खींचता है, उन्हें पिघलाता है! मुझे भद्रजनों की ज़रूरत है! आवाज़ का विवेकपूर्ण लहज़ा, विनम्र लेकिन जी-हुजूरिया नहीं। इसके अलावा, घाव एक गर्व करने वाली चीज़ होती है।-ऐसा आदमी यहाँ बना रहेगा। बाकी अपनी वर्दियाँ हवाले करके जा सकते हैं।'

'सैनिक' बाहर चले गये। न ही उस लम्बे आदमी ने, न ही किसी और ने पलक भी झपकायी; यह धन्धे का मामला था।

'अच्छा तो बियरी सबसे पहले उन्हें आकर्षक, बड़े हो चुके नौजवान दिखना चाहिए;' जब वे जा चुके थे तब मि. पीचम ने कहा, 'ऐसे आदमी जो अगर मैदाने-जंग में भेजे जाएँ तो किसी काम आएँ और अगर उन्हें कुछ हो जाए तो लोग उनपर दया करें। दूसरी बात, कोई घृणास्पद अंग विकृति नहीं। तीसरी बात, वर्दी एकदम बेदाग साफ़ हों। और चौथी बात, ये सिपाही तभी बाहर जाएँ जब आधिकारिक बुलेटिन युद्ध में किसी प्रगति की ख़बर दें, हार या जीत, कोई फर्क नहीं पड़ता-बस प्रगति हो! जाहिरा तौर पर इसका मतलब है कि तुम्हें अखबार पढ़ना पड़ेगा। मैं अपने स्टाफ से चौकन्ना रहने और दुनिया में क्या हो रहा है, इसके प्रति जागरूक रहने की अपेक्षा करता हूँ। जब काम का समय ख़त्म भी हो जाए तब भी धन्धा चालू रहना चाहिए। तुम सुस्त पड़ रहे हो बियरी। मैं तुम्हें बार-बार आगाह कर रहा हूँ।'

बियरी बेहद लाल मुँह लिए बाहर गया और अगले कुछ दिनों तक उसने ज़बर्दस्त ऊर्जा का प्रदर्शन किया। वर्करूम से बर्खास्तगियाँ और ऑफिस में पिटाइयाँ हुईं। लेकिन मि. पीचम जानते थे कि इस धन्धे को और तर्कसंगत नहीं बनाया जा सकता था। इसे पहले तर्कसंगत बनाया जा चुका था। मैरीन ट्रांसपोर्ट

कम्पनी को जिन नुकसानों का ख़तरा था उनकी भरपाई यहाँ नहीं की जा सकती थी।

पीचम ने उस निगाह को याद करने की कोशिश की जो कोक्स ने उनकी बेटी पर लगा रखी थी।

15 पाउण्ड

मिस पॉली पीचम के साथ सबकुछ ठीक-ठाक नहीं था। उसे अपने धोने वाले कपड़े वॉश-किचन में खुद ले जाने पड़ते थे और वह शुक्रगुज़ार थी कि मि. पीचम की बढ़ती अस्वस्थता की वजह से उसकी माँ के पास धुलाई को लेकर चिन्ता करने का समय नहीं था।

वह सलाह लेने के लिए कई बार मि. स्माइल्स के पास गई। लेकिन वह नौजवान कभी-कभार ही घर पर मिलता।

एक बार जब वह उसे मिले तो उन्होंने कहाः

'हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे। लेकिन उसके बाद हमें सावधान रहना होगा। निरोधक उपायों का क्या फ़ायदा अगर कोई उनका इस्तेमाल ही न करे।'

इसके बाद वह मि. बेकेट के बारे में बेहद तिरस्कारपूर्ण ढंग से बात करने लग गया। और इस मामले का मि. बेकेट से कोई लेना-देना नहीं था!

उसके घर में एक बूढ़ा नौकर रहता था। ज़रूरत पड़ने पर पॉली उसकी मदद लेती थी।

वे अपने बीच में दो तांबे के हिप-बाथ उठाकर छोटे कमरे में ले जाते, और पॉली उनमें बैठकर कराहते हुए और उबलते पानी के बड़े मग अपने ऊपर डालते हुए घण्टों गर्म पानी से नहाती।

वह बूढ़ा नौकर उसके लिए प्यालों में हरी और भूरी चाय भी लाता जिसको पूरा ख़त्म करना होता था। वह जब-तब दरवाज़ें में अपना सिर घुसाकर, जो मुर्गी जैसा था, पूछता कि क्या पहले से इससे काम बन रहा है। लेकिन इससे काम नहीं बना।

लंगड़ा जॉर्ज कुत्तों के बीच अपनी ज़िन्दगी का बिल्कुल आदी हो गया था। फुर्सत के समय में वह अपनी छोटी-सी टिन की कुटिया में एक सफ़री खाट पर लेट जाता, जो उसने वहाँ फैले बढ़ईगिरी के औज़ारों और राखदानों के बीच खड़ी

कर रखी थी। मनोरंजन के लिए वह *एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका* का एक फटा-पुराना खण्ड पढ़ा करता जो उसे हाथ-मुँह धोने के कमरे में मिला था। उसमें केवल आधा खण्ड मौजूद था और वह भी पहला खण्ड नहीं था। फिर भी कोई उसमें से अच्छी-खासी बातें जान सकता था, अगर यह पूर्ण शिक्षा के लिए पर्याप्त नहीं भी था, तो क्या हुआ। वैसे भी पूर्ण शिक्षा आजकल किसके पास होती है?

एक दिन पीच ने उसे पढ़ते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया, लेकिन उसने वादा किया कि वह मि. पीचम को इस विषय में कुछ नहीं बताएगी। उस सैनिक को यह आभास हो गया था कि मि. पीचम उस किस्म के आदमी नहीं हैं जो अपने कर्मचारियों का भरण-पोषण इसलिए करते हैं ताकि वे शिक्षित हो जाएं।

एक बार जब जॉर्ज अपनी कुटिया में नहीं था तो पॉली वह किताब अपने कमरे में यह देखने के लिए लेते गयी कि उसे उसमें कुछ मिल सकता है या नहीं। लेकिन वह उन शब्दों को ठीक-ठाक नहीं जानती थी जिनके अन्तर्गत शर्तिया वह जानकारी थी जिसे वह ढूँढ रही थी; और इस बात की सम्भावना थी कि मानव ज्ञान की वह शाखा एक दूसरे खण्ड में उपलब्ध हो। बहरहाल, उसे कुछ नहीं मिला।

जॉर्ज यह पाकर डर गया कि वह किताब अब वहाँ नहीं है। वह कई दिनों तक अवसादग्रस्त अपने बिस्तर पर पड़ा रहा और कुत्तों के प्रति भी कठोर हो गया। यह पीच की एक नुकसानदायक ग़लती थी कि उसने वह किताब पढ़ने के बाद भी उसे वापस नहीं की। जब लोगों को मामूली से मामूली चिन्ताएँ भी होती हैं तो वे लोगों के प्रति आम तौर पर जितने बेलिहाज़ होते हैं, उससे भी बेलिहाज़ हो जाते हैं।

कुछ दिनों बाद उसने जॉर्ज से कुत्तों के बारे में बात की। वह एक घायल पामेरियन के सूजे हुए पंजे की पट्टी करने में उसकी मदद कर रही थी। अचानक उसने बिना ऊपर देखे जॉर्ज से पूछा कि लड़कियाँ क्या करती हैं जब उन्हें लगता है कि उनके साथ कुछ गड़बड़ है। वह यह सवाल इसलिए पूछ रही थी क्योंकि उसकी एक सहेली ने गृह-व्यवस्था की क्लास में उसे इस बारे में बताया था।

थोड़ी देर तक जॉर्ज चुपचाप उस रिरियाते कुत्ते के पंजे पर चिथड़ा बाँधते रहा। फिर उसने पॉली को एक विवेकपूर्ण सलाह की मिसाल दी, लेकिन वह बहुत उपयोगी नहीं थी।

लेकिन शाम को उसने टहलने जाने के लिए असैनिक कपड़े पहने और अगली सुबह पॉली को कुकुरशाला पर बुलाया।

उसने उसे बताया कि अगर वह चाहे तो दोपहर में उसके साथ केनिंग्स्टन में एक डॉक्टर के पास चल सकती है, जिसकी स्त्री-सम्बन्धी रोगों की अच्छी प्रैक्टिस चलती है और उसे समझदार भी कहा जाता है।

उसे जानकारी देने वाली वह महिला थी जिसके साथ वह तब रहा था जब उसका पति मोर्चे पर गया हुआ था, और जिसके घर वह पिछली शाम गया भी हुआ था। उसी ने उसे वह पता दिया था। दरअसल, उसने जॉर्ज को दो पते दिये थे, एक उस डॉक्टर का और दूसरा दाई का। दूसरे का महत्व ग़रीब लड़कियों के लिए ज़्यादा था। फ्यूकूम्बी ने सोचा कि पॉली के लिए ज़्यादा उपयुक्त डॉक्टर है, क्योंकि वह दाई के मुकाबले कम गन्दे वातावरण में काम करता है।

पीच अकेले नहीं जाना चाहती थी, लिहाज़ा सैनिक भी उसके साथ गया।

डॉक्टर का फ्लैट एक बड़ी-सी चाल में था जिससे कचरे और ग़रीबी की बदबू आती थी। उन्हें एक सँकरी-सी सीढ़ी से और ऐसे घरों के सामने से होकर दूसरी मंज़िल पर जाना था, जिसके दरवाज़े खुले हुए थे, मानो अन्दर के सारे दुखों-विपत्तियों को सम्भाल न पा रहे हों। फिर वे यह देखकर काफी अचम्भित थे कि डॉक्टर का फ्लैट बहुत आरामदेह था। यहाँ तक कि प्रतीक्षा-कक्ष भी शानदार थे। कोनों में फूलों के विशालकाय गमले रखे हुए थे और दीवारों पर विदेशी दिखने वाले कालीन लगे थे। लोहे के हैट-स्टैण्ड पर टंगे मरीज़ों के कोट और छाते तुलनात्मक रूप से काफी फटीचर लग रहे थे।

पेंटिंग-रूम में सात या आठ औरतें बैठी थीं, सब की सब मध्यवर्गीय किस्म की थीं। जब डॉक्टर ने अगले मरीज़ को अन्दर बुलाने के लिए अपने कमरे का दरवाज़ा खोला तो बिना पॉली के बारी के उसे इशारे से बुला लिया क्योंकि उसने औरों से अच्छे कपड़े पहने थे। वह डरी हुई सी उसके पीछे चली गयी। सैनिक वेटिंग-रूम में ही बैठा रहा।

डॉक्टर वैसा ही आदमी था जिन्हें औरतें आदमी का एक सुन्दर नमूना कहती हैं, सलीके से छँटी हुई नर्म दाढ़ी और ऊँचा मस्तक। लेकिन जिस तरह से उसने अपने हाथ मोड़े उसे देखकर कोई भी समझ सकता था कि उसे उन चीज़ों पर अभिमान है। लेकिन उसका चेहरा शराब की वजह से छितरा-सा गया था और उसकी आँखों में एक अप्रिय भाव था। उसकी आवाज़ खुशामदी थी।

जब वह एक पुस्तिका में पॉली का नाम और पता लिखने लगा तो पॉली का निजी भय जाग उठा। उसने कमरे में चारों और नज़र दौड़ाई। दीवारों पर हर तरह के हथियार जैसी देशी बरछी, धनुष, तरकश, और छोटे चाकू और पुरानी

तरह की पिस्तौलें भी टंगी हुई थीं। दूसरे कोने में, एक शीशे की अलमारी में शेल्फों में तमाम तरह के सर्जरी के औज़ार रखे थे, जो कहीं ज़्यादा ख़तरनाक लग रहे थे। डेस्क पर धूल की अच्छी-खासी मोटी परत बैठी हुई थी।

डॉक्टर पीछे की तरफ झुक गया और अपने सफेद हाथ बाँध लिए।

इससे पहले कि पॉली अपना नाम और पता बताने के आगे कुछ बताती उसने बोलना शुरू किया, *‘हाँ तो आप जिस काम के लिए मुझसे कह रहीं हैं वह बिल्कुल नामुमकिन है, माई डियर यंग लेडी। क्या आप जानती हैं कि आपके अनुरोध का क्या अर्थ है? इस बात के अलावा कि यह गैर-कानूनी है, हर जीवन पवित्र है। जो डॉक्टर आपकी चाहत पूरी करेगा वह अपनी प्रैक्टिस तो गवाँएगा सो गवाँएगा, जेल भी चला जाएगा। आप शायद कहेंगी-हम डॉक्टर अपने मरीज़ देखने के समय के दौरान अक्सर ही यह सुनते रहते हैं-कि यह मध्यकालीन कानून है। वेल, माई डियर यंग लेडी, मैं कानून तो नहीं बनाता न। इसलिए मैं आपको यही सुझाव दूँगा कि आप चुपचाप घर जाएँ और अपनी माँ को सबकुछ बता दें। वह भी आप ही के समान एक औरत है और समझदारी की उनमें कमी नहीं होगी। उनके पास शायद ऐसे ऑपरेशन के लिए ख़र्च नहीं होगा। इसके अलावा, मेरी अंतरात्मा मुझे ऐसा कृत्य करने की कभी इजाज़त नहीं देगी। कोई डॉक्टर दस-बीस पाउण्ड की एक कम्बख़्त रक म के लिए अपना पूरा कैरियर दाँव पर नहीं लगाएगा। हम अपने साथी मनुष्यों की तकलीफ़ों के प्रति असंवेदनशील नहीं होते। डॉक्टर की हैसियत से सामाजिक व्यथा की हमारी अन्तर्दृष्टि ज़्यादा होती है। वस्तुतः, अगर किसी भी तरह यह सम्भव होता, अगर आपके किसी प्रकार के लक्षण होते, यहाँ तक कि क्षय के, तो भी मैं कहताः “मैं इसे दुरुस्त कर सकता हूँ; पांच मिनट में यह रफूचक्कर हो जाएगा। और बाद में कोई पेचीदगी नहीं पैदा होगी।” लेकिन आपको देखकर कतई ऐसा नहीं लगता कि आपको क्षय रोग है। आप खुद भी इस बात को मानती होंगी। जब आपने जवानी की मस्ती में मज़े लूटे तो आपको उसी वक्त परिणामों के बारे में सोचना चाहिए था। हमें आगे की ओर देखना चाहिए; हमें अपनी भावनाओं के हिसाब से नहीं चलना चाहिए, चाहे वे कितनी भी आनन्ददायी हों। उसके बाद आप भागे-भागे डॉक्टर के पास जाते हैं और हंगामा और झंझट होता है। डॉक्टर ऐसा, डॉक्टर वैसा, डॉक्टर मेरी ज़िन्दगी बरबाद होने से बचा लीजिये! लेकिन आपको कोई परवाह नहीं होती कि, डॉक्टर, जो सबसे ज़्यादा ख़तरा उठा रहा होता है, अपनी जिन्दगी न तबाह कर ले, क्योंकि उसकी भलमनसाहत उसे आपको इंकार नहीं करने देगी। ओह*

स्वार्थवाद! लेकिन निश्चित तौर पर यह एक ग़ैर-कानूनी ऑपरेशन है और अगर मरीज़ की ख़ातिर कोई नारकोटिक्स इस्तेमाल न भी किया जाय तो भी इसमें पन्द्रह पाउण्ड लग जाते हैं; और वह एडवांस में देने होते हैं, नहीं तो आप बाद में कहेंगीः "क्या! मैंने आपको अपने मामले में दख़ल देने को कहा था?" और फिर डॉक्टर जिसे जीना होता है, इतनी परेशानियाँ उठाकर कुछ नहीं पाता। ऐसे मामलों के लिए वह बहीखाते नहीं रख सकता और न ही बिल भेज सकता है-शुद्ध रूप से मरीज़ के हित में। अगर वह समझदार है तो वह पूरे धन्धे को ही अलग छोड़ देता है। वह अन्त में बस अपने आपको बरबाद कर लेता है। माई डियर यंग लेडी, एक भ्रूण रूप जीवन भी किसी भी दूसरे रूप के जीवन के समान पवित्र होता है। चर्च ने अपनी महान उद्घोषणाएँ यूँ ही नहीं की हैं। शनिवार की दोपहर को मैं कंसल्टेशन के लिए ख़ाली रहूँगा, लेकिन इस मामले पर एक बार फिर से सावधानीपूर्वक सोच लीजिए। सोच लीजिए कि आप इतनी गम्भीर ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हैं या नहीं; अगर नहीं तो बेहतर है कि जैसा चल रहा है चलने दें। और अपने साथ पैसे लाएँ वरना दोबारा आने की कोई ज़रूरत नहीं है। बाहर जाने का रास्ता यह है मेरी प्यारी बच्ची।'

पीच वहाँ से बहुत निराश होकर गयी। 15 पाउण्ड कहाँ से आएँगे।

वह और सैनिक साथ-साथ एक दूसरे के बगल में उदास चल रहे थे।

सैनिक ने थोड़ी देर बाद कहा, 'एक और पता है।' उन्होंने वहाँ जाने का फैसला किया।

दाई एक बूढ़ी औरत थी और पार्लर में अपना धन्धा करती थी। पॉली एक लाल रंग के मखमली सोफे पर बैठी।

'इसमें एक पाउण्ड लगेगा,' बूढ़ी औरत ने शंकापूर्ण ढंग से बोलना शुरू किया। 'मैं और सस्ते में कर सकती हूँ और अगर चिल्लाना शुरू करोगी तो मैं काम वहीं रोक दूँगी और तुम्हें भगा दूँगी। पैसा है तुम्हारे पास? यह आधे घण्टे में हो जाएगा।'

पॉली खड़ी हो गयी।

'मुझे शंका है कि मैं पैसे नहीं लायी हूँ। मैं कल फिर आऊँगी।'

जब वे सीढ़ियाँ उतर रहे थे तो उसने फ्यूकूम्बी से कहाः

'मैंने चारों तरफ देखा था। बहुत गन्दा था।'

'यह नौकरानियों के लिए ज़्यादा होता है,' सैनिक ने कहा। वे घर चले गये।

पॉली का ख़याल दुकान की तिजोरी की दराज़ पर आकर टिक गया।

चोरी से पॉली को गहरी घृणा थी। बहुत छोटी उम्र से ही उसके अन्दर चोरी के प्रति घृणा और चोरी की आदत दोनों साथ बढ़े थे। पकड़े जाने पर (टर्किश डिलाइट (जेली जैसी एक मिठाई-अनु.) के लिए) उसे और कम पैसे और ढेर सारी अच्छी सलाह मिलती। जब भी वह अपनी नन्हीं उंगलियाँ जैम के डिब्बे में डालती तो उसकी अन्तरात्मा से भयंकर टीस उठती। जैम का स्वाद मीठा था तो मनाही का ख़याल कड़वा। उसे बतलाया गया था कि भगवान हर जगह देख सकते हैं और दिन-रात घात लगाए बैठे रहते हैं। जाहिरा तौर पर वह जो कुछ भी करती, भगवान सब देख लेते थे। लेकिन कुछ चीज़ों को देखना धृष्टता है। उसके अनुसार अगर भगवान ने पर्याप्त पाप देखें हैं, तो कितना भी अच्छा (लेकिन थकाऊ) व्यवहार हो, उन्हें पापी के पक्ष में कभी प्रभावित नहीं कर पाएगा। सज़ा का बहीखाता पहले ही भरा हुआ था; और चूँकि नये अपराधों के लिए जगह बाकी नहीं बची थी, उन्हें आत्मविश्वास के साथ अंजाम दिया जा सकता था। पॉली एक बहकी हुई लड़की थी और इस हैसियत से वह अपने आपको हर छूट दे सकती थी। इसके अलावा यह सयाने लोगों का आलस्य ही होता है जो उन्हें जैम के डिब्बों और पैसे की तिजोरियों की एक रक्षक कुत्ते के समान रक्षा करने के लिए प्रतिनिधि ईश्वर बना देता है।

लेकिन कुछ आनों की चोरी और पन्द्रह पाउण्ड की चोरी के बीच में बहुत बड़ा फर्क है।

चोरी करने की तकनीकी दिक्कतों से पीच को काफी निराशा हुई, क्योंकि वह उन्हें बहुत बड़ा समझ रही थी। वह आराम से अपने बाप से चुरा सकती थी। दुकान की दराज़ हमेशा सुरक्षित रूप से बन्द रहती थी, लेकिन मि. पीचम अपनी पतलून के जेबों में ढेर सारा पैसा अपने साथ लेकर चलते थे। वह निष्ठुरता से भिखारियों से एक-एक आना वसूल करके उसे नोटों में बदलते और बेपरवाह ढंग से अपनी जेबों में ठूँस लेते। उनका मानना था कि ये पैसा या कोई और पैसा अन्त में उन्हें नहीं बचा सकता। यह बस एक कर्तव्यनिष्ठा की भावना थी जो उन्हें ये पैसे यूँ ही उड़ा डालने से रोकती थी, और यही उनकी चरम निराशा को प्रमाणित करती थी। कुछ भी दान नहीं दिया जा सकता। दस लाख पाउण्ड होने पर भी वह ऐसा ही सोचते। यह उनकी पक्की धारणा थी कि न तो उनका पैसा (न ही दुनिया भर का पैसा) और न ही उनका दिमाग़ (न ही दुनिया के सारे दिमाग़) उनको बरबादी से बचा सकते हैं। यही वजह थी कि वह काम नहीं करते थे, बल्कि हैट लगाकर हाथ जेबों में डाले अपने व्यापार संस्थान के इर्द-गिर्द यह

देखने के लिए घूमते रहते थे कि कहीं कोई काम छूटा तो नहीं है।

एक हफ्ते के अन्दर उनकी बेटी ने रात के वक्त उनके बेडरूम में जाकर आसानी से 15 पाउण्ड ले लिए होते; और अगर वह पकड़ी भी गयी होती तो यह उतना बुरा नहीं होता जितना वह सोच रही थी। अगर वह उठ जाते और अपनी बेटी को अपनी जेबें खाली करने का कारनामा करते देख भी लेते तो अपनी पलकें तक नहीं हिलाते; वह बस दुबारा सोने चले गये होते। उनकी बेटी को सज़ा मिलती लेकिन वह उनकी नज़र में शायद ही गिरती। ऐसा कोई नहीं था जो उनकी नज़र में गिरता।

बदकिस्मती से लोगों को अपनी ही क्षमताओं के बारे में बहुत कम पता होता है, इसलिए पॉली वे ज़रूरी 15 पाउण्ड अपने पिता से कभी नहीं पा सकती थी।

जब पॉली ने सैनिक को इस रकम के बारे में बतलाया तो उसने उस भद्र पुरुष की हड्डियाँ तोड़ने की पेशकश की। लेकिन तोड़नी तो तिजोरियाँ थीं ताकि पैसे बाहर निकलें। लेकिन दुर्भाग्य से मि. स्माइल्स कोई तिजोरी नहीं थे। इसलिए पॉली का ध्यान बार-बार मि. बेकेट की तरफ़ चला जाता था।

लेकिन सैनिक कुत्तों की देखरेख पूरी करने के बाद वापस गया और अपने सफरी खाट पर लेट गया। अगर वह कुछ सोच रहा होता तो वह सोच-विचार कुछ ऐसा होताः

'फिर 15 पाउण्ड चाहिए! अगर पैसे हमेशा मौजूद रहते तो कोई पैदा ही क्यों होता है, इसकी व्याख्या ही असम्भव होती। अगर किसी औरत के पास वे 15 पाउण्ड हैं जो एक बच्चे को अजन्मा छोड़ देने के लिए काफी हैं तो वह इतनी अमानवीय कैसे हो सकती है कि उसे दुनिया में लाए? अगर हर बार उसको पैदा होने से रोकने के लिए वे 15 पाउण्ड मौजूद रहते तो क्या चंद-एक साँसों के लिए बदस्वाद खाने के एक निवाले के लिए और टपकती छत की ख़ातिर इतनी विकट संख्या में एक-दूसरे को चीर-फाड़ डालने के लिए इंसान होते? तब अनचाहे युद्ध कौन चलाता और ऐसे युद्ध किसकी ज़रूरत होते? अगर 15 पाउण्ड की कमी की वजह से माँ का पहले ही शोषण न हुआ होता तो शोषण करने के लिए कौन होता? सारे प्रोफेसरगण कहते हैं कि सम्पत्ति के वितरण को कोई चीज़ नहीं बदल सकती। मालिकों को कभी छुटकारा नहीं मिल सकता, मगर कम-से-कम ग़ैर-मालिकों को क्यों नहीं मिल सकता? कानून गर्भपात को वर्जित ठहराता है और दुखी लड़कियाँ जल्दी ही खुश हो जाएँगी अगर उन्हें गर्भपात कराने की इजाज़त मिल जाए। सो वह

कानून के ख़िलाफ़ लड़ती हैं। मगर उनकी तमन्ना पूरी नहीं हो सकती। कतई नहीं! वह तो वाकई शर्मनाक होगा। क्या चर्च ने जीवन को पवित्र घोषित नहीं किया है? तो ये औरते बच्चों को ठसाठस भरी, बदबूदार, भुखमरी की चीखों से भरपूर इस दुनिया में लाने से इंकार करके जीवन को ख़तरे में कैसे डाल सकती हैं? उन्हें यूँ ही छोड़ देने की बजाय अपने आपको सम्भालना चाहिए। उन्हें व्हिस्की का एक पेग लेना चाहिए, दाँत को पीसना चाहिए और बस बच्चा पैदा कर देना चाहिए! क्योंकि कोई भी आकर कह सकता है वे पैदा नहीं करना चाहतीं! निश्चित रूप से खून पानी से गाढ़ा होता है और हर माँ सोचती है कि यह दुनिया उसके बच्चे लायक नहीं। उसका बच्चा तो अपवाद होता ही है! यह एक अच्छी बात है कि गर्भपात में पैसा लगता है। नहीं तो कोई रोक ही नहीं होती...'

अगर वह सोच *रहा* होता तो मोटा-मोटी यही उसके ख़्यालात रहे होते। लेकिन उसने सोचा नहीं; उसे शिक्षण देने के लिए साधा गया था।

इसके बाद वह जल्दी ही उठा और पीच को कुछ बतलाने के लिए ऊपर गया। वह उसे अपनी दोस्त के पास ले जाता। वहाँ उसे इस मुसीबत से पिण्ड छुड़ाने का कोई न कोई उपाय ज़रूर मिल जाता।

जब वह उस छोटे-से गुलाबी कमरे में घुसा तो पीच पीठ के बल लेटे हुए हाथ बगल में रखे छत पर घूर रही थी।

फ्यूकूम्बी बस बोलने की वाला था कि उसकी नज़र बेंत वाली कुर्सी की सीट पर पड़ी एक फटी-पुरानी किताब पर गयी। यह *एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका* का वही खण्ड था, बल्कि उसका एक हिस्सा था जिसे फ्यूकूम्बी ने घण्टों पढ़ा था। उसके कुछ पन्ने तो उसे पहले ही ज़बानी याद थे, लेकिन अभी भी सीखने को कितना कुछ बाकी था!

जिस किताब की कमी वह सैनिक इतनी शिद्दत से महसूस कर रहा था, वह वहाँ पड़ी थी, इस बात से उसे काफ़ी धक्का लगा। वह खुश नहीं था कि वह अब इसे वापस ले सकता था। उसे इस बात से काफी धक्का लगा कि वह कभी ग़ायब हो गयी थी। इस किताब की उसकी नज़र में बहुत ज़्यादा अहमियत थी। अगर उसने ऐसी किताब कबाड़ की दुकान में देखी होती तो उसने वह किताब खरीद ली होती; लेकिन क्या गारण्टी थी कि उसे वही खण्ड मिल जाता? ऐसा बिरले ही होता है। जैसा कि हम जानते हैं उस किताब का पीच के लिए कोई ज़्यादा मूल्य नहीं था। लेकिन शायद दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी

जिसके बदले फ्यूकूम्बी वह किताब दे देता-उसके सारे खण्डों के अलावा। फिर भी, वह उस किताब को उठाकर यह नहीं कह सकता था : आह, यह रही मेरी किताब; यहाँ कैसे पहुँच गयी यह। ऐसे व्यवहार से इस मामले का बेहद अनुपयुक्त ढंग से अन्त हो गया होता। कमरे में इस किताब के दिखाई पड़ने से मिस पीचम के बारे में फ्यूकूम्बी की धारणा पूरी तरह से बदल गयी। जब पीच ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए तो वह 'बसयूँहीहालचाललेनेआगया' जैसा कुछ बुदबुदाया और एक बार भी उसकी या उस किताब की तरफ देखे बिना कमरे के बाहर चला गया। उसका यह अजीबो-ग़रीब व्यवहार देखकर पीच काफ़ी बेचैन थी।

फ्यूकूम्बी के साथ ही एक मित्रवत व्यक्ति उस कमरे से बाहर चला गया, ऐसा व्यक्ति जो आज की दुनिया में अनिवार्य और अद्वितीय था, जो ऐसे मशविरों को ख़ज़ाना था जिससे पीच की पूरी ज़िन्दगी ही बदल गयी होती।

उन दिनों पॉली फिर से स्माइल्स के पास जाया करती। चूँकि स्माइल्स की मकान मालकिन पहले ही शंकालु हो गयी थी, वे पार्क में जाया करते। पॉली बेंच पर बैठना पसन्द करती, लेकिन स्माइल्स झाड़ियों में किसी जगह बैठने पर ज़ोर देता।

पॉली इसे ब्लैकमेल मानती थी।

उसके नितम्बों पर हाथ रखे स्माइल्स ने उसे बतलाया कि उसकी सहायता करने के लिए कोई उपाय ढूँढने के लिए वह काफी प्रयास कर रहा है।

'तुम्हें ऐसा बिल्कुल नहीं सोचना चाहिए कि मैं इसके बारे में रात-दिन परेशान नहीं रहता,' अपना गाल उसके गाल पर दबाकर उसने कहा। 'खुद मेरे लिए यह बेहद अप्रिय है। इसके अलावा तब से तुम बहुत चिड़चिड़ी हो गयी हो। उदाहरण के लिए, यहाँ झाड़ियों के नीचे इतना अच्छा लग रहा है, चुपचाप बैठने की बजाय-चाँद को देखो, यह हमेशा इतना सुन्दर नहीं लगता डार्लिंग; लेकिन तुम उसे ठीक से नहीं देख रही हो-ओह, हाँ, तो मैं कह रहा था कि इस मामले से ध्यान हटाने की बजाय, जो तुम्हारे लिए अच्छा साबित हो सकता है, तुम हमेशा वही कहानी शुरू कर देती हो। क्या तुम अब मुझे नहीं चाहती? क्या अभी भी तुम्हें अच्छा नहीं लगता जब मैं अपना हाथ यहाँ रखता हूँ, तुम्हारी छाती पर? तुम मुझपर भरोसा नहीं करती। यह मेरा कर्तव्य है कि इस मुसीबत से मैं तुम्हें बाहर निकालूँ जिसमें मैंने तुम्हें डाल दिया है-बावजूद इसके कि इसमें तुम भी मेरी भागीदार थी, जो तुम्हें स्वीकार करना चाहिए, डार्लिंग। लेकिन सुनो, मैंने एक चीज़ ढूँढ निकाली है जो मैं यकीनन कह सकता हूँ कारगर साबित होगी। यह

तरकीब तुम अकेले लागू कर सकती हो और इसमें ख़र्चा भी नहीं आएगा। तुम एक प्याज़ लो...'

पीच ने आश्चर्य से उसको देखा। उसने अपनी बाँह हटाते हुए हड़बड़ी में बोलना जारी रखा :

'तुम एक प्याज़ लो, एक साधारण प्याज़ जैसा किचन में होता है....और मामला ख़त्म। आसान है, क्यों?'

पॉली गुस्से में उठी। उसने अपने स्कर्ट से थोड़ा-सा मॉस झाड़ा और बिना कुछ कहे अपना हैट सिर पर सीधा रखा जब उसने देखा कि स्माइल्स इससे आहत हुआ है तो उसने रुखाई से कहाः 'जब एक प्याज़ से ही काम बनता हो तो कोई 15 पाउण्ड नहीं देगा। इसके अलावा इससे दर्द होगा।'

वे एक तरह से तेज़ी से पार्क से निकल गए। जब वे अलग हुए तो स्माइल्स ने साफ़ तौर पर जता दिया कि उसके ख़याल से उससे जितनी उम्मीद की जा सकती थी, वह कर चुका है।

पॉली बेकेट के दूसरे नाम मैकहीथ और बी.शॉप्स के बारे मे भी जानती थी। उसने पॉली को सबकुछ बतला दिया था। चूँकि वह लकड़ी का भी व्यापार करता था, इसलिए उसने अपने आपको लकड़ी का व्यापारी कहने का अधिकार भी दे रखा था।

पॉली उससे कई बार मिली और चलताऊ ढंग से उसे दलाल कोक्स से अपनी भेंट के बारे में बतलाया। उसने बेकेट को कोक्स के घर जाने और अपने पिता के पत्र के बारे में तो कुछ नहीं बतलाया लेकिन उसने उन चन्द दिलचस्प तस्वीरों का ज़िक्र किया जो कोक्स ने उसे दिखाने का वायदा किया था। उसने बाद में यह जोड़ा कि वह जल्दी ही कोक्स से मिलने जाने वाली है क्योंकि उसने सुना था कि उसकी बहन बहुत ही आकर्षक महिला हैं।

मि. बेकेट ने उदासी से उसको सुना और ऐसा प्रभाव दिया मानो वह कोई फैसला लेने वाले हों।

उस वक्त दोपहर अपनी समाप्ति की और थी जब पॉली उस छोटे-से तहखाने में अपनी माँ के पीछे-पीछे गयी जहाँ सेब रैकों पर पड़ें हुए थे। वह जानती थी कि मिसेज पीचम को यह पसन्द नहीं था कि कोई वहाँ उनके पीछे आए। लेकिन पॉली ने मन बना लिया था कि वह वहीं पर उनसे बात करेगी और कहीं नहीं।

जब उसने दरवाज़ा खोला तो उसने अपनी माँ को अलमारियों के बीच चेहरे

पर आतंक का भाव और हाथ में व्हिस्की का ग्लास लिए खड़ा पाया। व्हिस्की के यदा-कदा लिए जाने वाले महज़ एक गिलास की ख़ातिर अपनी बच्ची के सामने ऐसे अगरिमापूर्ण छलों के लिए अपने पति द्वारा मजबूर कर दिया जाना मिसेज पीचम के लिए बहुत पीड़ादायी था। वह छियालिस साल की थीं और अपनी आज़ादी की कमी पर झुंझलायी हुई थीं।

पॉली ने उनसे बहुत विनम्रता से बात की क्योंकि उसके अन्दर अपराधबोध था; लेकिन वह और मौक़ों पर बेहद उग्र भी हो जाती थी। पॉली ने उन्हें बताया कि वह बेकेट से शादी करना चाहती है।

'उसका नाम बेकेट नहीं है,' मिसेज पीचम ने अरुचि से कहा।

'मैं जानती हूँ। उसका नाम मैकहीथ है-बल्कि, शायद यही है।'

'और पीचम? पीचम ऐसे आदमी से क्या कहेगा जिसका नाम शायद यह या शायद वह है?' मिसेज पीचम ने सबसे करीब वाली रैक पर धड़ाम से अपना गिलास पटकते हुए कहा। 'वह कोई शादी करने लायक आदमी नहीं है। मेरे सिर में भी आँखें हैं और मैं देख सकती हूँ कि वह कैसे नाचता है-अगर उसे ऐसा न भी लगता हो कि मैं देख रही हूँ। कोई भी आदमी जिसका कोई सम्मानजनक धन्धा हो वह एक जवान लड़की को पेट के चारों और उस तरह से नहीं पकड़ता। और तो और उस "ऑक्टोपस" बियर के चार-पाँच गिलास उतारने के बाद उसे लगता है कि मैं मैं नहीं हूँ। मुझे चराने की कोशिश मत करो पॉली डियर! ये कोई पर्याप्त वजह नहीं है जो तुम्हें ऐसे आदमी के बारे में सोचने पर मजबूर कर दे। यह कोई बिल्कुल अलग ही चीज़ है जिसका बेशक मैं ज़िक्र नहीं करूँगी। उसने तुम्हारा दिमाग़ ख़राब कर दिया है। मामला यह है।'

'हाँ वह मुझे आकर्षित करता है।'

'बिल्कुल जैसा कि मैंने कहा,' मिसेज पीचम विजयोल्लास में चीख उठीं। 'तुम अपने होश खो बैठी हो। तुम उसके प्यार में अन्धी हो गयी हो और तुम्हें इतना तक नहीं दिख रहा कि दो और दो चार होते हैं।'

पॉली नाराज़ हो गयी।

'इतना मत बोलिये!' उसने अक्खड़पन से कहा। 'पापा को बता दीजिये और फिर वह मि. बेकेट से बात कर लेंगे।' और वह मुड़ी और अपने कमरे में वापस लौट गयी।

मिसेज़ पीचम ने आह भरी और कटुता से अपना गिलास ख़ाली किया। उसी रात उन्होंने अपने पति से बात की। वह पॉली को जानती थी।

उस दोपहर पीचम की कोक्स के साथ भयंकर मुठभेड़ हुई थी। एक वाइन रेस्तराँ के पीचे वाले कमरे में उस दलाल ने खुलेआम नये जहाज़ों की खरीद की माँग की थी। यह मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी पर एक वज्रपात के समान था। ईस्टमैन जो पिछले कुछ समय से एक अच्छी डील की आशा कर रहा था, एकाएक अपनी कुर्सी में गिर गया; लेकिन बुकमेकर उछला और बैल की तरह दहाड़ा और फिर सुबकने लगा। किसी चीज़ का कोई फ़ायदा नहीं था। कोक्स के अनुसार एक संसदीय कमीशन द्वारा करार की जाँच के लिए शुरुआती कदम पहले से ही उठा लिए गए थे। इसलिए उन्होंने पीचम को जो कम्पनी के 2/7वें हिस्से के मालिक थे, कोक्स के साथ साउथैम्प्टन जाने के लिए प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया। उसे 'उचित' जहाज़ों के लिए बातचीत शुरू करनी थी।

फिर भी वे सरकार को पुराने जहाज़ों की आधिकारिक सुपुर्दगी के लिए गोदी पर गए। उन्हें वे जहाज़ इसलिए सुपुर्द करने थे ताकि शक न पैदा हो, लेकिन बाद में उन्हें बदला जा सकता था। जहाज़ों के जीर्णोद्धार का काम अभी ख़त्म नहीं हुआ था, जो अभी भी एम.टी.सी. के तत्वावधान में चल रहा था। कमीशन की नुमाइन्दगी लाउंज-सूट पहने दो भद्र-पुरुषों ने की जिन्होंने औपचारिकताओं को खटाखट निपटा दिया। वे मात्र पन्द्रह मिनट तक एक हवादार घाट पर खड़े रहे। बारिश हुई और सबके सब जम से गये।

उस शाम सोने जाने से ठीक पहले मिसेज पीचम ने अपनी बेटी के सम्बन्ध में मैकहीथ के नाम का ज़िक्र किया। पीचम एकदम आवेश में आ गये।

'*किसने* तुमसे उसका परिचय कराया?' वह चिल्लाए। 'वह बी.शॉप्स वाला धोखेबाज़? वह क्या है? उसने अपना परिचय दिया? तुम किस तरह की जगहों पर जाती हो जहाँ अजनबी आदमी तुम्हें अपना परिचय देते हैं? वह आदमी पूरे शहर में एक उचक्के के रूप में जाना जाता है! तो इस तरह से तुम अपनी बेटी की देख-रेख करती हो! यहाँ मैं दिन-रात उसकी ख़ातिर खट रहा हूँ और उधर तुम उसे उन बदनाम लम्पटों से मिलवाती हो जो बैंकों के वेटिंग रूम में दिन भर अपने कबाड़खानों में पैसा लगाने की कोशिश में लगे पड़े रहते हैं। तुम्हारी बेटी के साथ दिक्कत क्या है? मैं जल्दी ही उस दिशा में चीज़ों की व्यवस्था कर दूँगा! अपने माँ-बाप की नज़रों के नीचे इस कोक्स से नैन लड़ाना वह-। तुम्हारी बेटी ये कामुकता कहाँ से पाती है?'

'तुमसे नहीं,' मिसेज पीचम ने अपनी ठोड़ी को नीचे से ऊपर खींचते हुए कहा।

'निश्चित रूप से मुझसे नहीं,' अन्धेरे में तमकते हुए मि. पीचम ने कहा। 'मेरे लिए ये चीज़ें बेकार हैं। मुझे एक साफ़ दिमाग की दरकार है ताकि ये लकड़बग्घे मुझे कई टुकड़ों में न फाड़ डालें।' उन्होंने बात को अन्त तक नहीं खींचा :

'मैं और कुछ नहीं सुनना चाहता। आगे से मैं तय करूँगा कि पॉली को किससे मिलना है।'

जहाँ तक पॉली का प्रश्न था, उन्होंने अपना मन बना लिया था।

अगली सुबह उन्होंने ऑफिस में पॉली से बात की। उन्होंने उस रोती हुई लड़की से निष्ठुरता से मि. कोक्स के घर जाने के बारे में प्रश्न पूछे और तस्वीरों वाली घटना भी उससे निकलवा ली। उसमें नग्न महिलाएँ थीं।

इस पूछताछ के बाद पीचम ने उसे बतलाया जो कुछ उसने उन्हें बताया है उसमें से अधिकांश को वह झूठ मानते हैं। मि. कोक्स एक बहुत प्रतिष्ठित व्यापारी थे और उसे उनका शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उन्होंने उसमें दिलचस्पी ली और उन्होंने उसके दोस्तों के बारे में कुछ नहीं सुना था। इस संकेत के साथ उन्होंने बात को वहीं छोड़ दिया।

जब पॉली मैकहीथ से फिर मिली तो उसने उसे बताया कि उसके पिता उसे उससे शादी को स्वीकृति कभी नहीं देंगे, अपितु मि. कोक्स ने हफ्ते के अन्त में उसे पिकनिक पर बुलाया है।

पहली बात सच थी, दूसरी झूठ।

जब मि. मैकहीथ ने पीच से जाना कि मि. कोक्स उसके माता-पिता द्वारा समर्थित वर हैं तो उनके दिमाग में यह स्पष्ट हो गया कि उन्हें इस कोक्स का कुछ करना पड़ेगा।

थोड़े सोच-विचार के बाद वह एक घोड़ा-गाड़ी में बैठकर उन दो कमरे वाले अखबार के दफ्तरों में से एक में पहुँचे जिनमें आम तौर पर दम्भपूर्ण आवाज़ों वाले गन्धले जिज्ञासु भद्र पुरुष रहते हैं।

कुछ चीकट, फटे-चीथड़े अखबारों के पुलिंदे लाए गए और उन सारों का अध्ययन किया गया। फिर उन्होंने एक और घोड़ा-गाड़ी पकड़ी और लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर गए जहाँ वह एक टूटे-फूटे घर में गए और एक शैतान से दिखने वाले बेतकल्लुफ आदमी को कुछ आदेश दिये।

इसके बाद, हालाँकि अभी भी दोपहर शुरू हुई थी, वह एक और घोड़ा-गाड़ी

से घर गए।

उनका दक्षिणी उपनगरों में से एक में छोटा-सा घर था। यह एक छोटे-से बगीचे के पीछे इसी के जैसे दिखने वाले अन्य घरों के साथ एक लाइन में स्थित था। उनके इस घर के मालिक हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ था; वह मुश्किल से रहने लायक था। उन सादे कमरों में से एक में फर्नीचर के कुछ टुकड़ों के बीच एक नया सोफा था जिस पर वह सोते थे, और किचन में एक गैस-कुकर और आइस-चेस्ट रखा था। घर कोई नया नहीं था। इसे उन्होंने अपने एक व्यापार सहयोगी से लिया था जो दीवालिया हो गया था।

सीढ़ी पर खड़े उन्होंने एक चाभियों का गुच्छा निकाला और इससे पहले कि वह सही चाभी पाते, उन्होंने कई से ताला खोलने की कोशिश की। इसके बाद वह सीटी बजाते हुए एक बिल्कुल खाली हॉल में घुसे जहाँ एक खूँटी भी नहीं थी जिसपर वह अपना हैट टाँगते।

पहली मंज़िल पर अपने कमरे में पहुँचकर, जो काफी साफ़-सुथरा था, उन्होंने अपने बूट उतारे और एक सोफे पर लेट गये और अन्धेरा होने तक वहीं पड़े रहे। करीब दस बजे नीचे घण्टी बजी। वह नीचे गए और एक मोटे आदमी को अन्दर बुलाया। एक भी शब्द कहे बिना उन्होंने उस आदमी से वह सामान लिया जो वह लाया था और फिर उसे बाहर ठेल दिया। वह भुनभुनाते हुए चला गया। जाहिर था कि वह अपने इर्द-गिर्द के इलाके की स्थिति से वाकिफ़ थे। मैकहीथ ने (जो दरअसल यहां मिलबर्न के नाम से रहते थे) बास कागज़ के पुलिन्दे को खोलने के बाद उसमें से अपनी मुँह-हाथ धोने की मेज़ पर चिट्ठियों और कागज़ात का एक बण्डल निकालकर रखा और एक पेट्रोलियम लैम्प की रोशनी में आधे घण्टे तक उनका अध्ययन किया। फिर उन्होंने कुछ कम्बलों से एक बिस्तर तैयार किया जो उन्होंने एक अलमारी से निकाले थे, और जल्दी ही सो गए।

अगली सुबह उन्होंने पुलिस हेडक्वार्टर पर असिस्टेण्ट कमिश्नर से बातचीत की।

दोनों भद्र पुरुष खाली डेस्क पर झुक गए और उसी बास कागज के पुलिन्दे की सामग्री का अध्ययन किया, ख़ास तौर पर लाल कवर वाली एक लाइनों वाली कॉपी का, जो मि. कोक्स की डायरी थी।

उस डायरी में सिर्फ उस दलाल की निजी ज़िन्दगी से सम्बन्धित जानकारियाँ थीं। असिस्टेण्ट कमिश्नर के अवलोकन करने के पहले मि. मैकहीथ ने भरोसा

दिलाया कि उसमें व्यापार सम्बन्धी टिप्पणियाँ नहीं हैं। अगर ऐसा होता तो मि. ब्राउन इसका निरीक्षण करने की स्थिति में न होते।

उस कॉपी की सामग्री ज़्यादातर सदाचार सम्बन्धी थी। संकेतों में कुछ निश्चित भेंट-मुलाकातों और अन्य तथ्यों की कमी नहीं थी लेकिन ज़्यादातर उसमें सदाचार-सम्बन्धी टिप्पणियाँ और बेबाक आत्मालोचनाएँ थीं, जो अत्याधिक कामुकता के विरुद्ध सतत संघर्ष का गवाह थीं। ज़्यादातर बार ये टिप्पणियाँ दोनों पाठकों की मानसिक क्षमताओं से परे थीं, जिसके लिए वह लक्षित भी नहीं थीं।

उसमें नाम भी थे। वे आद्यक्षरों से लिखे गए थे।

लगभग हर दूसरे या तीसरे दिन (एक दिन भी छोड़ा नहीं गया था, क्योंकि डायरी को बहुत सावधानी से रखा गया था, और शायद ही कोई शब्द काटा गया था) लाल स्याही से संख्याएँ लिखी गई थीं और उन्हें स्केल से सफ़ाई से रेखांकित किया गया था, जैसे : 'दो बार' या '4 बार'। दरअसल, '4 बार' बहुत कम था और '5 बार' से ज़्यादा कहीं नहीं लिखा था। कभी-कभी सिर्फ 'एक बार' लिखा होता था, और इसे रेखांकित नहीं किया गया होता था लेकिन इसे छोटे-से गोले द्वारा घेरा गया होता था।

दो अलग-अलग चिन्ह भी थे। उनका क्या मतलब था यह कवर के अन्दर के तरफ एक प्रविष्टि से समझाया गया थाः रिक्तीकरण और मृदु विरेचक औषधि। ये चिन्ह भी बहुत सावधानी से बनाए गए थे। मि. कोक्स का लेखन बेबाक, बल्कि एक हद तक आडम्बरपूर्ण था।

उसे पुलिन्दे की शेष सामग्री में अत्यन्त आपत्तिजनक तस्वीरें थीं। उन्हें देखकर लगता था कि उनका पर्याप्त इस्तेमाल हुआ था।

एक शान्त निरीक्षण के बाद ब्राउन ने बटन दबाया और एक अधिकारी को एक कागज़ दिया जिस पर उसने कुछ शब्द घसीट रखे थे। जब अधिकारी वापस आया तो उसने कागज़ात का एक पुलिन्दा मेज़ पर रख दिया। उसमें पुलिस दस्तावेज़ और फाइलें थीं।

ब्राउन ने एक घिचिर-पिचिर करके लिखा हुआ कागज़ निकाला और कोक्स की डायरी की एक प्रविष्टि से किसी चीज़ की मिलान की। अपनी मोटी तर्जनी उस जगह पर रखते हुए उसने अपने धीमे गम्भीर तरीके से कहा :

'माई डियर मैक, हम इस आदमी को इस आधार पर नहीं पकड़ सकते। हम नहीं जानते कि वह किस प्रकार का धन्धा करता है; और हम प्रतिष्ठित लोगों के व्यापार उद्यमों में कभी अपनी नाक नहीं घुसाते। ये हमको कहाँ ले जाएगा?

यह आदमी अपना कर अदा करता है-इसलिए एकदम ठीक है। लोगों की निजी ज़िन्दगी से हमारा कोई मतलब नहीं होता और इस आदमी ने कोई चोरी नहीं की है। केवल एक ही मौक़े पर गड़े मुर्दे उखाड़े जा सकते हैं जब यह भद्र पुरुष एक सन्देहास्पद होटल में नौकाधिकरण के एक अधिकारी की पत्नी के साथ पाया गया था। लेकिन बेहतर है कि तुम ये मामला अखबार वालों के हाथ में छोड़ दो। मैं तुम्हें कुछ भरोसेमन्द लोगों के नाम बता दूँगा जो इससे कुछ निकाल सकते हैं।'

उसने फिर एक बटन दबाया और वह एक आदमी एक और पुलिन्दा ले आया जिसकी जिल्द पर मोटे अक्षरों से लिखा था : ब्लैकमेल।

उसने उसके अन्दर की सामग्री सावधानी से देखी, जैसा कि उसका तरीका था, और अन्त में कहाः

'गॉन के पास जाओ। वह सबसे अच्छे लोगों में से एक है।'

मैकहीथ ने पता लिया और अपने सामान के साथ रखा। फिर उसने अपने दोस्त की पीठ थपथपायी और लापरवाही से कहा :

'जब मैं अगली बार शादी करता हूँ-आधिकारिक तौर पर, तुम समझते ही हो-तो क्या तुम शादी में आओगे? मैं इन बैंक के लोगों को लेकर चिन्तित हूँ। वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास नहीं कर रहे हैं।'

'अगर आ सका तो आऊँगा, लेकिन यह कई बार नहीं होनी चाहिए,' ब्राउन ने बिना किसी उत्साह के कहा।

मैकहीथ विचारमग्न वहाँ से चला गया। ब्राउन अब वही पुराना ब्राउन नहीं था, जहाँ तक अपने दोस्त के प्रति उसके रवैये का सवाल था। निश्चित तौर पर वह इस्पात के समान सच्चा था, लेकिन अभी-अभी ऐसा लगा कि उसके पास बहुत ज़िम्मेदारियाँ थीं....

अब तक मैकहीथ को बैंक से कुछ हासिल नहीं हो रहा था। वे हमेशा नयी आपत्तियाँ कर रहे थे।

उसके अपने लोग भी उत्पाती होते जा रहे थे। इस बात का अहसास कि वह 120 लोगों के लिए, उनमें से कुछ परिवार सहित, ज़िम्मेदार था उसे काफी परेशान कर देता था। वह इसे बहुत गम्भीरता से लेता था।

कुछ न कुछ होना बहुत ज़रूरी था, इसमें कोई शक नहीं था। एक बार वह बुड्ढे पीचम का पैसा हासिल कर लेता तो वह फिर से आज़ादी से साँस ले सकता था।

वह वाटरलू ब्रिज के पास अपनी एक दुकान पर गया। यह कोई बी.शॉप

नहीं थी बल्कि एंटीक्स का एक प्रतिष्ठित धन्धा था और फैनी क्राइस्लर नाम की एक औरत इसको चलाती थी जो कला के बारे में थोड़ा-बहुत जानती थी। जब भी उसे किसी चीज़ पर चिन्तन-मनन करना होता था तो वह वहाँ जाता था। वह किसी किताव के पन्ने पलटते दफ्तर में बैठ जाता।

दुर्भाग्य से फैनी वहाँ नहीं थी। वह किसी नीलामी में गई हुई थी। मैक ने इस बात को महत्वपूर्ण समझा कि वहाँ से बिकने वाली कुछ चीज़ों का उचित बर्थ सर्टिफिकेट होना चाहिए।

वहाँ पर ढेर में लगीं किताबें किंग शेल के पुरोहित की लाइब्रेरी की थीं, जिसे पैकिंग केस के ढक्कन पर लिखी नीली पेंसिल की लिखावट पुष्ट करती थी। वे अत्यन्त फूहड़ नक्काशी की पुस्तकें थीं। मैक ऐसी चीज़ें बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह किसी भी रूप में मौजूद कला के ख़िलाफ़ था। घृणा से उसने उन मूल्यवान वृहद ग्रन्थों को किनारे रख दिया।

फिर उसने पॉली के बारे में सोचा।

जब भी वह देर तक पॉली के बारे में सोचता, अवर्णनीय बेचैनी उसे घेर लेती थी। वह कहीं ज़्यादा कामुक थी।

वह उठा और ओल्ड ओक स्ट्रीट गया।

उसके घर के सामने से दो बार गुज़रने के बाद, पॉली नीचे आयी। वह दो-चार बार भवन खण्ड के इर्द-गिर्द उसके साथ टहली।

वह बहुत संवेदनशील थी और किसी परेशानी में मालूम पड़ रही थी। वह आम तौर पर जितनी विवर्ण लगती थी उससे अधिक विवर्ण भी लग रही थी। उसकी आँखों के नीचे के कालेपन से मैकहीथ को झटका लगा। जब वे अलग हुए तो पॉली ने उसके चेहरे की और नहीं देखा।

उसने अनौपचारिक तौर पर मैकहीथ को बताया था कि वह कुछ समय तक गृह-व्यवस्था की क्लास नहीं जाएगी, लिहाज़ा वह उससे और नहीं मिल पाएगी। इसलिए इतवार को कोक्स के साथ पिकनिक होना तय था।

मैकहीथ ख़राब मिजाज़ में टनब्रिज गया। उसे याद था कि गुरुवार है।

टनब्रिज के एक निश्चित घर पर हर गुरुवार को अपनी शाम गुज़ारना उसकी आदत थी। उसने लड़कियों के साथ एक कप कॉफी पी और जेनी से बात की। इस बार, चूँकि वह निराश था, उसने जेनी से पत्तों से अपना भविष्य बताने को कहा। लेकिन उसने कोई दिलचस्प बात नहीं बताई। हमेशा की तरह लड़कियों ने उसे बोर किया। वह उस जगह पाँच साल से भी अधिक समय से जा रहा था।

अगले दिन वह गॉन के पास गया, जो कई घिनौने अखबारों के लिए लिखता था, और जिसने विलियम कोक्स के ख़िलाफ़ सबूत दिये।

उसके थोड़ी ही देर बाद नेशनल क्रेडिट बैंक के मिलर ने एक व्यापार सम्बन्धी बातचीत के दौरान एक ऐसी टिप्पणी कर दी जिससे उसे यह वांछनीय प्रतीत होने लगा कि वह सारे दूसरे सोच-विचार को किनारे करके जितनी जल्दी हो सके एक सम्मान्य घरेलू जीवन शुरू कर दे-जो पॉली पीचम की इच्छाओं से मेल खाता था।

फलस्वरूप मि. कोक्स पर हमला अतिरेकपूर्ण हो गया और मैकहीथ को अब अभियोगात्मक सामग्री के बारे में कोई चिन्ता नहीं थी।

5

तो उन्होंने 'पाया एक दूसरे को' हिरन और मछली के बीच
और 'एक हो गए उनके सांसारिक रास्ते'
और उनके पास था न बिस्तर न टेबल न ही तश्तरी
और नहीं था उनके पास मृगमांस न ही मछली
कोई नाम भी नहीं अपने बच्चों के लिए।
लेकिन हालाँकि बर्फीली हवाएँ हुआँई, हालाँकि
क्रोधोन्मत्त हुई बारिश
और डूब गया हरा-भरा मैदान,
अपने पति की तरफ, मेरी बच्ची,
खड़ी रही हाना कैश।
शेरिफ कहता है वह एक घटिया चोर है
और ग्वालिन कहती है : वह पंगु हो गया है।
लेकिन वह कहती है : मुझे इस सबसे क्या?
क्योंकि वह मेरा मर्द है। और आपकी आज्ञा से
वह उसके साथ लगी रहेगी, ठीक वैसे ही।
क्या हुआ कि वह लंगड़ाता है और क्या हुआ कि वह पागल है
और उसे बुरी तरह पीटता है
घबराओ मत हाना कैश, मेरी बच्ची :
वह जानती है कि वह उसे सच्चा प्रेम करती है।

(बैलेड ऑफ हाना कैश)

एक छोटा मगर अच्छी तरह पूँजीकृत धन्धा

दि नेशनल क्रेडिट बैंक एक छोटा मगर अच्छी तरह से पूँजीकृत धन्धा था जिसका सरोकार मुख्य रूप से अचल सम्पत्ति से था। इसका मालिकाना एक सात साल की छोटी लड़की के पास था और इसकी व्यवस्था का काम मि. मिलर नाम के

एक सयाने प्रतिनिधि करते थे, जो एक उतने ही सयाने वकील हॉथॉर्न के निर्देशों के मुताबिक काम करते थे। हॉथॉर्न उसे छोटी लड़की के अभिभावक थे।

मैकहीथ को बैंक के साथ अपनी बातचीत में न सिर्फ मि. मिलर से बल्कि मि. हॉथॉर्न से भी लेन-देन करना पड़ा था। एक साथ कुल मिलाकर वे 150 साल के थे, और जब कोई उनके साथ सौदा करता तो इसका मतलब होता कि वह डेढ़ सदियों से निपट रहा होता।

मैकहीथ विशेष रूप से उनके पास आया था, और फलस्वरूप धैर्य की एक लगभग असहनीय परीक्षा अपने मत्थे ले ली थी, क्योंकि वह अपनी बी. शॉप्स के बारे में अफवाहों का बाज़ार हमेशा के लिए ठण्डा कर देना चाहता था। क्योंकि शहर में कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ऐसा कोई व्यापार जिसमें नेशनल क्रेडिट बैंक दिलचस्पी लेता हो, 1780 *के बाद* शुरू हुआ हो और उतनी पुरानी फर्में वाकई विश्वास योग्य होती हैं।

लेकिन इसी बात की वजह से उसकी इस काम में कोई प्रगति नहीं हुई।

बैंक एक के बाद एक टालमटोल करता रहा। वे सबकुछ जानना चाहते थे, दुकान के किराए से लेकर दुकानदारों के जीवन इतिहासों तक। फिर भी, इस सबके बावजूद, ऐसा लगता था कि उन्हें इसमें अद्‌भुत रूप से दिलचस्पी थी। और मैकहीथ जानता था कि ऐसा क्यों है। अचल सम्पत्ति का व्यापार, ख़ास तौर पर मि. मिलर इससे जो मतलब समझते थे, अब वैसा नहीं रह गया था जैसा कि वह हुआ करता था। नए निवेश बेहद कम हो रहे थे और पुरानी सम्पत्तियों को भयंकर अवमूल्यन का सामना करना पड़ रहा था।

मि. हॉथॉर्न भविष्य को काफी आशंका के साथ देखते थे। वह मैनेजन मि. मिलर से पूरी तरह खुश नहीं थे; हालाँकि वह खुद मि.मिलर से ज़्यादा बुजुर्ग थे, लेकिन उन्हें बैंक को सम्भालने के लिए काफी बूढ़ा समझते थे। अपने आडम्बरपूर्ण तरीके से वह मिलर के आडम्बर को कई व्यावसायिक नुकसानों का ज़िम्मेदार मानते थे। कभी-कभी वह मन ही मन उसको बेदखल कर किसी कम उम्र के और ज़्यादा ऊर्जावान व्यक्ति को रखने के बारे में सोचते थे और मिलर को इस बात का आभास था।

दरअसल, आधुनिक युग के प्रति दोनों का दुश्मनाना रुख काफी समय पहले ही कमज़ोर पड़ना शुरू हो गया था। शायद हर चीज़ के साथ ऐसी पण्डिताऊ सख्ती से पेश आना वाकई उचित नहीं था। दूसरे व्यवसाय इतने सख्त न थे; वे धन्धा करते थे और उतने ही विश्वस्नीय माने जाते थे। हो सकता है एक निश्चित

उदारता समय के रुख में थी।

इसलिए नयी बी.शॉप्स का प्रस्ताव उनके समक्ष रखा गया तो वे इस उद्यम के प्रति उतने अनिच्छुक नहीं थे जितना कोई सोच सकता था। इस धन्धे की हर चीज़ थोड़ी अजीब और अनियमित थी, लेकिन यह तो बस उसकी आधुनिकता और नवीनता थी। निश्चित रूप से, अपनी ज़मीन पर से, वे एक नये उद्यम और दूसरे नये उद्यम के बीच उतनी आसानी से फर्क नहीं कर सकते जितनी आसानी से वे एक नये और एक पुराने उद्यम के बीच कर सकते थे। उनकी जाँच-पड़ताल लगभग दिखावे के लिए ही होती थी। पहले ही वे प्रस्ताव स्वीकार करने का आंशिक रूप से मन बना चुके थे। ख़ास तौर पर हॉथॉर्न अपना मन बना चुके थे।

मिलर ने सुस्पष्ट संकेत दिये थे कि आमन्त्रण मिलने की सूरत में, वह मैकहीथ की मेहमाननवाज़ी स्वीकार करने के प्रति अनिच्छा नहीं जताएँगे-जिसका काफी-कुछ मतलब निकलता था। बदकिस्मती से मैकहीथ के पास मेहमाननवाज़ी पेश करने के नाम पर कुछ नहीं था। लेकिन जब उसने मि. मिलर को अपनी लटकी शादी में आमन्त्रित किया तो उन्होंने तत्परता से स्वीकार कर लिया, मि. हॉथॉर्न के लिए भी।

मैकहीथ को लगता था कि यह आमन्त्रण उसके व्यावसायिक प्रस्तावों को हकीकत में उतारने में दुनिया के सारे दस्तावेज़ों से ज़्यादा कारगर साबित हो सकता है। वह सही था।

बैंक से निकलने के बाद वह खुशी-खुशी वाटरलू ब्रिज के पास के इलाके की तरफ बढ़ा। दुकान के पिछवाड़े स्थित दफ्तर में उसकी फैनी क्राइस्लर के साथ बातचीत हुई और फिर वह उसके साथ बाहर गया।

साथ में वे फर्नीचर पसन्द करते हुए जिले की सबसे अच्छी एंटीक की दुकानों में गए। सबसे बढ़िया माल चुना जाना था; दाम को लेकर मगजमारी नहीं करनी थी।

लेकिन जब वे एक कॉफी घर में दोपहर का भोजन का रहे थे तो फैनी ने पल भर की चुप्पी के बाद अपना चम्मच तश्तरी पर बजाया और अचानक कहा :

'लेकिन यह हास्यास्पद है! तुम्हें ये फर्नीचर किसलिए चाहिए? अपने लिए? जाहिरा तौर पर नहीं! ज़रूरत पड़ने पर तुम इसके साथ रह सकते हो, हालाँकि तुम्हें मेरे साथ दिखावा करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने जो चीज़ चुनी है

उसकी बजाय फैक्ट्री से निकला नया 40 पाउण्ड का सूट तुम्हारे लिए ज़्यादा उपयुक्त है। तुम्हारी पसन्द फर्नीचर-पैकर वाली है-इस बात को मानो, इसमें कोई शर्म की बात नहीं है। लेकिन यह फर्नीचर तुम्हारे लिए बिल्कुल नहीं है मैक। इनका काम जनाब मिलर और हॉथॉर्न के लिए है-और तुम्हारे ख़याल से इनका उनपर क्या प्रभाव पड़ेगा? तुम्हारे पास एक आधुनिक मकान होना ही चाहिए और यह ख़र्चीला ज़रूर होना चाहिए। यह एक ऐसे आदमी का घर होना चाहिए जो समय के साथ चलता है। कुछ ऐसी चीज़ें हों जो तुम्हें अपनी माँ से विरासत में मिली हों। एक सिलने वाली टेबल के साथ एक आर्मचेयर और इसी तरह की कुछ चीज़ें। मैं इसे सम्भाल लूँगी। इसे मुझपर छोड़ दो। मैं इस तरह से इंतज़ाम कर दूँगी कि डेढ़ सदी के पास उस पैसे के बारे में चिन्ता करने की कोई वजह नहीं होगी, जो वह तुम्हारे सुपुर्द करेंगे।'

मैकहीथ हँसा; वे उन दुकानों पर फिर से गये और अपने सभी ऑर्डरों को बदल दिया। फिर फैनी अकेली गयी और उसने कुछ फर्नीचर खरीदे।

जब पॉली ने उस पिकनिक का ज़िक्र किया था जिस पर मि. कोक्स ने उसे आमन्त्रित किया था तो उसने झूठ बोला था। उसने फिर मि. कोक्स को देखा भी नहीं था। एक या दो बार उसने उस जड़ाऊ पिन की बाबत उसके पास जाने के बारे में सोचा था। उसके विचार से किसी जौहरी के पास या गिरवी की दुकान में भी उसे उस जड़ाऊ पिन से कम से कम 15 पाउण्ड मिल जाते।

लेकिन मैक के साथ उसके बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। वह उसे ज़्यादा आकर्षित करता था। और उसने गौर किया था कि वह उस पर निगरानी रखता था। वाद्य-यंत्रों की उस दुकान के बाहर हमेशा कुछ लोग पड़े रहते थे जो जब भी वह बाहर जाती तो उसका पीछा करते थे। शुरू-शुरू में इससे उसे चिढ़ होती थी, पर अब इससे उसे बस खुशी होती थी। मैक के साथ उसे सुरक्षा का अहसास होता था। वह स्माइल्स की तरह कोई जवान ठठेरा नहीं था, जिसे ज़िम्मेदारी का कोई अहसास नहीं था। जब मैक ने उससे गुपचुप शादी करने के बारे में बात की तो उसने आह्लादित होकर इस बात के खुलासे पर कल्पना में अपने पिता के चेहरे की तस्वीर बनाई।

वह एकदम मान चुकी थी कि यह उस पिकनिक का ज़िक्र ही था जो मैक को इस निर्णय तक खींच लाया। उसने ऐसे पिकनिक की कल्पना की थी जिसमें कोई बड़ी बदमाशी वाली चीज़ होती। जब वह इस बारे में सोचती तो हँसती।

शुक्रवार की दोपहर मिसेज पीचम ने अपने पति के लिए एक कमीज़ और

कुछ कॉलरों के साथ एक बैग तैयार किया और उसके साथ स्टेशन गयीं। आधे घण्टे बाद पॉली ने भी पैकिंग की।

उसने चोरी-छिपे अपने लिए सिल्क कॉम्बिनेशन का एक जोड़ा और कासनी रंग की चोलियों का एक जोड़ा खरीदा था-सबकुछ बी.शॉप्स से ताकि वह मैक को हैरत में डाल सके। उसने बिना पैबन्द वाली उस एकमात्र लम्बे गले कि रात की पोशाक के साथ इन चीज़ों को एक पुराने काले झोले में रख लिया।

सड़क के छोर पर एक बन्द गाड़ी उसके पास आयी। इसमें मैकहीथ बैठा था।

मैकहीथ बहुत अच्छे मिजाज़ में नहीं था क्योंकि वह एकदम सुबह से ही दौड़-भाग करता रहा था और आम तौर पर ली जाने वाली दोपहर की नींद नहीं ले पाया था।

पहले वे पुलिस हेडक्वार्टर गए। मैकहीथ ने गाड़ी रुकवायी और दौड़कर ऊपर ब्राउन के पास गया। उसने ब्राउन को घबराया हुआ पाया। वह पहले ही दो बार उसे अपने आसन्न आगमन की याद दिलाने उसके पास जा चुका था।

स्वागत-सत्कार के लिए उपयुक्त घर की तलाश अब तक असफल साबित हुई थी। और इसलिए दोपहर में मैक को एक दूसरा पता देना पड़ा था, जिससे ब्राउन के मिजाज़ में कोई सुधार नहीं हुआ था। अब चीफ इंस्पेक्टर साहब उन आनन्दोत्सवों में शरीक होने के प्रति ज़्यादा उत्सुकता तो नहीं दिखा रहे थे, लेकिन उन्होंने आने का वादा किया। वस्तुतः शादी की सम्पूर्ण प्रक्रिया की कामयाबी उनके प्रकट होने पर निर्भर थी। सवाल केवल मिलर और हॉथॉर्न को प्रभावित करने का नहीं था, बल्कि कुछ अन्य मेहमानों का भी था जिनको पुलिस अफसर की उपस्थिति एक सन्देश दे देती।

मैकहीथ ने पॉली को कॉन्वेण्ट गार्डन के पास एक कॉफी घर में बिठाया और अकेले केनिंग्स्टन में एक घर पर गया। उस सुबह एक दूसरे मकान पर एक अप्रिय घटना हुई थी, और वहाँ के लोग इसे शादी में फिर से मंचित करने की तैयारी कर रहे थे। दक्षिणी लन्दन में मैक के अपने घर के इस्तेमाल पर तो सोचा भी नहीं जा रहा था क्योंकि वह बहुत छोटा था।

मैक ने हर चीज़ को भयंकर अव्यवस्था में पाया। भूतल के लिए फर्नीचर पहली मंज़िल के फर्नीचर से पहले ही आ गया था और अब रास्ते में था। उसके लोग कुशल स्थान परिवर्तक नहीं थे; और उन्होंने पी भी रखी थी। ओ'हारा ने, जो सारे कामों की देख-रेख करने वाला था, यह कहकर कि वहाँ काफी लड़ाई

हुई थी, अपनी जान छुड़ा ली।

वह घर डिल वाटर के ड्यूक का शहर का छोटा निवास-स्थान था। बड़ी वाली हवेली भी ख़ाली थी क्योंकि ड्यूक खुद रिवियेरा में ठहरे हुए थे; लेकिन वह अत्याधिक भड़कीला हो जाता और इसके अतिरिक्त यह फर्नीचर से युक्त था; जबकि छोटा वाला घर नीचे, बटलर के कमरे तक बिल्कुल खाली था। बटलर मैकहीथ से किसी वचन के तहत बँधा था।

यहाँ मैकहीथ के लिए करने को ज़्यादा कुछ नहीं था, लिहाज़ा वह जल्दी ही फिर चला गया और एक बार फिर ब्राउन के पास गया। लेकिन वह स्कॉटलैण्ड यार्ड में नहीं मिला। अतः मैकहीथ ने वॉटरलू ब्रिज के पार जाकर फैनी को पॉली के पास भेज दिया और ब्राउन से मिलने उसके निजी मकान पर गया। लेकिन वह वहाँ भी नहीं मिला।

फैनी पीच को मैकहीथ के वर्णन से फौरन पहचान गयी। उसने जल्दी से अपना परिचय दिया। पीच थोड़ा घबरा गयी थी। क्योंकि मैक काफी देर से गया हुआ था। वह पहले से ही तीसरी कप चाय पी रही थी। और उसके पास पैसा नहीं था।

शुरू में फैनी के आगमन से पीच की जान में जान आयी; लेकिन फिर उसे इस उलझन ने घेर लिया कि फैनी का मैक के साथ क्या रिश्ता है। फैनी अचानक हँसी और पीच को बताया कि वह वाटरलू ब्रिज के पास मैक के लिए एक एंटीक्स की दुकान चलाती है और उसका एक बीमार पति और दो बच्चे हैं। इससे पीच को प्रकट रूप से राहत मिली, हालाँकि बहुत समय के लिए नहीं।

सबसे बुरी बात तो यह थी कि जाकर विवाह परिधान खरीदने के लिए अब काफी देर हो चुकी थी। पूरी शाम अपने रोज़ाना की पोशाक में बिताने की आशंका ने पॉली के लिए समारोह का सारा मज़ा ख़त्म कर दिया। मैक ने उसे बताया था कि वहाँ बने-ठने बाँके लोगों की भीड़ होगी।

ब्राउन को खोज पाए बिना मैक कुछ देर से ही वापस आया और दोनों महिलाओं को अपने साथ गाड़ी में ले गया। पॉली को फैनी के वापस भेजे जाने का कोई संकेत नहीं मिला, जैसा कि मैक ने तय किया था। उसके ये बहाने कि वह उचित पोशाक में नहीं है पॉली की अपशकुनी चुप्पी द्वारा अनसुने कर दिये गए।

मैक ने समय देखा और परिस्थितियों को कोसा। निश्चित रूप से अब तक सारी दुकानें बन्द हो चुकी थीं। उसने पूरी तरह से समझ लिया था कि पॉली अपने

भविष्य के घर में अपनी रोज़ाना की पोशाक में नहीं घुसना चाहती थी, पिछले दरवाज़े से भी नहीं। उसके द्वारा एक शब्द भी कहे जाने से पहले, उसने गाड़ीवान से घर से कुछ सौ यार्ड पहले एक पार्क में गाड़ी रुकवायी और खुद कुछ कपड़ों का इंतज़ाम करने के सिलसिले में चला गया।

उसने इस काम की ज़िम्मेदारी अपने एक आदमी को सौंपी थी, फैशन के एक विशेषज्ञ को, जिसके के पास वर्थ्स (दुकान का नाम-अनु.) में खरीदारी करने लायक परख तो आराम से थी, लेकिन ईमानदारी नहीं। अगली सुबह एक प्रमुख दर्जी की दुकान से पाँच पोशाकें ग़ायब थीं, और दुकान की व्यवस्थापिका ने बताया कि वे सबसे उम्दा पोशाकों में से थीं। इसके परिणाम के रूप में आने वाले सप्ताहों में बुली को अत्याधिक क्लेश का सामना करना पड़ा क्योंकि अण्डरवर्ल्ड में इतनी अच्छी अभिरुचि वाला कोई और व्यक्ति नहीं था। लेकिन मैक गाड़ी में पॉली के पास पहले दर्जे की बढ़िया शादी की पोशाक लाने में सफल रहा।

फैनी ने बाकी चार में से एक पोशाक पहन ली; लिहाज़ा वह भी अब शादी के जोड़े में थी।

घर में पॉली पचास लोगों से मिली जो समाज के काफी अलग तबकों से सम्बन्ध रखने वाले मालूम पड़ते थे। ब्लूम्सबरी के जागीरदार एक कर्नल, दो संसद सदस्यों और सेंट मार्गरिट्स के पुरोहित (जिन्होंने बैकरूम में धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न किया) के अलावा विशाल संख्या में मौजूद मोटे दुकानदारों से और मैक के कुछ दलालों और खरीदारों से भी, हाथ मिलाया। उनमें से ज़्यादातर अपनी पत्नियों के साथ आए थे।

भ्रम की वजह से पॉली घर का ज़्यादा हिस्सा नहीं देख पायी; लेकिन उसने अपने पति को एक जागीरदार से कहते हुए सुना कि उसने यह घर अपने एक दोस्त ड्यूक ऑफ बिल वॉटर से किराए पर लिया है।

दुल्हन के बगल में बैठे थे हॉथॉर्न। वह पॉली को उसके छुटपन से ही जानते थे क्योंकि वह अपने पिता के साथ बैंक आती थी और जब वे दोनों भद्रजन बातचीत में मशगूल रहते थे तो वह चेकों के साथ खेलती थी। अब पॉली ने उसे बताया कि उसने और मैक ने उसके माँ-बाप से पिछले दिन झगड़ा कर लिया था क्योंकि मैक ने 'फैक्ट्री' से किसी को भी आमन्त्रित करने से इंकार कर दिया था। यह थोड़ा अटपटा तो लगा मगर डेढ़ सदी ने तत्काल यह बात मान ली।

शुरुआत में दूल्हा-दुल्हन के दाईं और वाली सीट खाली रही।

ब्राउन अभी भी आया नहीं था। खाने के बीच मैकहीथ कई बार उठकर

बाहर गया और उसे ढूँढने के लिए किसी को भेजा। ब्राउन के बिना उसके लिए इस पूरी शादी का कोई मतलब नहीं था। मैक का यह भी मानना था कि किसी पुलिस अधिकारी की मौजूदगी डेढ़ सदी पर स्थायी प्रभाव डालती।

जब लोग मुर्गा खाने की मंज़िल तक पहुँच गए तब जाकर ब्राउन प्रकट हुआ। वह बहुत प्रसन्न नहीं दिख रहा था और उसने वर्दी नहीं पहन रखी थी। मन ही मन मैक ने इसे भारी तिरस्कार के रूप में लिया।

पॉली के लिए वह आकर्षक था। वह भी उसको काफी आकर्षित कर रही थी। वह शर्म से थोड़े लाल हुए गालों के साथ बहुत सीधे होकर बैठी और खाना शुरू किया। उसने हर चीज़ बहुत थोड़ी-थोड़ी खाई, जो एक दुल्हन के लिए उचित भी होता है। जब कोई एक कोमल प्राणी को मुर्गा और मछली भकोसते देखता है तो यह उस पर भद्दा प्रभाव छोड़ता है।

लोवर टेबल पर बैठे ज़्यादातर मेहमानों की नज़र में बैठने की व्यवस्था कुछ ठीक नहीं थी, लेकिन किसी ने इसके लिए दुल्हन को दोष नहीं दिया। वह इतनी कान्तिमय लग रही थी कि हर कोई उसे देखकर आनन्दित हो रहा था।

मैकहीथ अपने मेहमानों के व्यवहार के बारे में चुपचाप चिन्ता कर रहा था। बी.शॉप के लोग बहुत विनम्र थे क्योंकि वे अपने आपको घर पर नहीं महसूस कर रहे थे, लेकिन खरीदार स्वाभाविक रूप से कम उलझन महसूस कर रहे थे। मैकहीथ जो उनके साथ भोजनोपरान्त मिष्ठान्न के लिए बैठा था, अनिच्छा से उनकी पत्नियों की बातें सुन रहा था जो सभी एक दूसरे से घृणा करती थीं और उसने एक बेपरदा फूहड़पन को फटकारा भी जिसकी शुरुआत करने वाले को उसने पहचान लिया।

लेकिन मोटे तौर पर अपने लोगों में से मेहमानों का उसका चुनाव एक शानदार चुनाव था। वहाँ मौजूद लोगों में से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जिसका नाम देश या विदेश में पुलिस फाइल में हो-ग्रूच को छोड़कर, और इस वक्त पूरा का पूरा स्कॉटलैण्ड यार्ड भी उसे उसकी उंगलियों के निशान के बिना नहीं पहचान सकता था। वहाँ मौजूद भीड़ में अधिकांश दुकानदारों का था जिनके पास उनके खिलाफ कुछ भी नहीं था और जिनका घामड़ रूप उन्हें अतुलनीय रूप से सम्माननीय बना दे रहा था। जेनी को भी बुलाया जाना ओ'हारा की अभद्रता का एक उदाहरण था; वेश्याओं का पारिवारिक दायरे से कोई सम्बन्ध नहीं होता, और इसके अलावा कर्नल उसे ज़रूर जानते होंगे। लेकिन रीड 'दि ट्रैवेलर' जैसे लोगों ने जो कि देश के सर्वश्रेष्ठ ब्लैक जैकरों और सम्भाषण कला में माहिर

व्यक्तियों में से एक थे, सामाजिक स्तर बहुत ऊपर उठा दिया।

कॉफी के बाद मैक हॉथॉर्न और मिलर के साथ पड़ोस के एक कमरे में चला गया, जहाँ टेबलों और कुर्सियों पर अभी भी शादी की तैयारी का सामान बिखरा पड़ा था। ब्राउन दफ्तर के काम का हवाला देकर जा चुका था। तीनों आदमियों ने शराब के एक गिलास के साथ नेशनल क्रेडिट बैंक द्वारा बी.शॉप्स में पूँजी लगाने पर चर्चा की।

बुजुर्ग भद्र पुरुष बारीकियों में नहीं गये। वे ये बताने से ज़रा भी नहीं चूके कि पॉली के माता-पिता की नामौजूदगी से वे हैरान थे। मैकहीथ ने निश्चित रूप से यह अनुमान कर लिया था कि इस बात से वे परेशान हो जाएँगे। वह जानता था कि आज नहीं तो कल मि. पीचम इन अकाट्य सच्चाइयों को स्वीकार कर लेंगे, और डेढ़ सदियों की चुप्पी ने उसे दिखला दिया कि वह स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर देख रहे हैं और उसकी मान्यता के सहभागी हैं।

लौटने पर उन्होंने सारे लोगों को नाचने में मशगूल पाया। पीच ओ'हारा के साथ नाच रही थी। कमरे में उत्सव सा माहौल था। यह सबसे आधुनिक शैली में सजाया गया था।

मैक कुछ मिनटों तक खाली टेबल पर बैठा रहा। उसकी मांसल ठुड्डी उसके सख्त कॉलर में धँस गयी थी और उसका गंजा सिर कुछ लाल-सा हो गया था, क्योकि वह पीता रहा था। उसने सोचने की कोशिश की। अपेक्षाकृत कम समय में ही वह कुछ विचार इकट्ठा करने में कामयाब हो गया।

उसने सोचा, *'कितने दुख की बात है कि जीवन के सबसे सुन्दर क्षणों में क्लेश इस तरह आ जाते हैं जैसे कबाब में हड्डी। परेशानी और चिन्ता से कोमलतम दृश्य चौपट हो जाते हैं। जब एक व्यक्ति अपने आपको दिल से उल्लसित और पवित्रतम भावनाओं से परिपूर्ण पाता है, तभी आर्थिक दिक्कतें आ जाती हैं। मैं यहाँ बैठकर चुपचाप शराब नहीं पी सकता। अगर मैंने ऐसा किया, तो मेरे प्यारे मेहमान सुअर फौरन यहाँ मौजूद हर साफ़ चीज़ को गन्दा कर देंगे। सो मुझे निगरानी रखनी है, और मैं अपनी पतलून को सही नहीं कर सकता, जहाँ वह मेरे पेट पर इतनी चुस्त है। मुझे अपने आप पर भी निगरानी रखनी होगी; मैं भी एक सुअर हूँ। सबकुछ कितना सुन्दर हो सकता था अगर ये जानवर एक इंसान की ज़िन्दगी के सबसे खूबसूरत दिन पर उसकी भावनाओं की कद्र करते। मैं दुनिया का सबसे अच्छे मिजाज़ वाला आदमी हूँ मगर जब क्लाउड चार्ली की बीवी के साथ ड्राइंग रूम जाता है तो मेरा दिमाग फिर जाता है। मैं*

अपने घर में इस किस्म की चीज़े बर्दाश्त नहीं करूँगा। जेनी को भी यहाँ से दूर रखा जा सकता था; वह यहाँ असंगत है। मैं अपनी पत्नी को ऐसे लोगों के साथ घुलने-मिलने नहीं दे सकता, यह कुछ ज़्यादा ही हो रहा है। पॉली सबको अच्छी लगती है। मैं नहीं चाहूँगा कि मुझे किसी को यह बतलाना पड़े कि वह मेरी पत्नी के साथ न सोए। सुअर! उन्हें अपनी कुतियों के साथ सन्तुष्ट रहना चाहिए। निश्चित तौर पर मेरा यह मतलब नहीं कि मेरी वाली भी कुतिया है। मुझे ऐसा कतई नहीं कहना चाहिए। मुझे अपनी वाली का ज़िक्र औरों के साथ एक साँस में कतई नहीं करना चाहिए। वह उनके मुकाबले कहीं ऊँची पड़ती है। मैं उसके काबिल होने लायक सम्माननीय नहीं हूँ, वास्तव में एक सलीके का आदमी नहीं हूँ। लेकिन मैं अपनी पूरी जान लगा दूँगा। जब बैंक वाला मामला निपट जाएगा तो मैं एक प्रतिष्ठित आदमी बन जाऊँगा। प्रतिष्ठित होना कितना अच्छा है, और इससे किसी को माली नुकसान भी नहीं होता। यह थोड़ा-सा ही होता है। या उल्टे यह मदद ही करता है। अब मुझे फिर से खड़ा होना होगा। किसी के जीवन के सबसे सुन्दर क्षण परेशानियों से भरे हैं। यह दुखदायी है, बहुत दुखदायी।'

मैकहीथ गाड़ी बुलाने के लिए खड़ा हुआ। जब वह अपना बैग खोजने गया तो उसने बुली, उर्फ हुक-फिंगर जैकब को रॉबर्ट दि सॉ की पत्नी के साथ पकड़ लिया, और उसे खलबली मचानी थी और 'ऐसी जुगुप्सापूर्णता को अपने घर में निषिद्ध करना था'। पॉली को अभी तक उस बातूनी ओ'हारा के साथ नाचते देखकर भी उसे उतना ही बुरा लगा। उसने एक हद तक अशिष्टता से नाच को बीच में ही रोक दिया। लेकिन कुल मिलाकर वह पार्टी की सफलता के बारे में कोई शिकायत नहीं कर सकता था।

जब विवाहित जोड़ा वहाँ से रवाना हुआ, तो रिवाज़ के मुताबिक मेहमानों ने सीढ़ी पर खड़े होकर और हाथ हिलाकर उन्हें विदा किया। लेकिन मानवता के एक गहन प्रेक्षक होने की बदौलत यह बात सिर्फ मैक की नज़र में आयी, जो गाड़ी की पीछे वाली खिड़की से झाँक रहा था, कि मेहमान फैनी के साथ दूसरी दुल्हन की तरह व्यवहार कर रहे थे।

उन्होंने लिवरपूल की ट्रेन मुश्किल से पकड़ी।

हनीमून मि. मैकहीथ के लिए सही मौक़े पर नहीं आया था।

दो हफ्ते पहले दो लोहे के सामान की दुकानों में सेंधमारी हो गयी थी। साप्ताहिक पत्रिका *रिफ्लेक्टर* में, जिसका ऐसा नाम इसलिए था क्योंकि उसका सम्पादकीय स्टाफ अपने साथी मनुष्यों को तब तक आईना दिखाता रहता था

जब तक वह पैसे अदा नहीं कर देते थे, एक लेख आया जो यह बताता था कि कैसे उनके स्टाफ के एक सदस्य ने एक बी.शॉप से कुछ रेज़र ब्लेड खरीदे जो इन लोहे की दुकानों में से किसी एक थे। ओ'हारा ने फौरन बातचीत की व्यवस्था की थी, लेकिन मैकहीथ कीमत देने के लिए एकदम अनिच्छुक था-इतना अनिच्छुक कि उसने आईना दिखाने की कोशिश करने वाले एक सम्पादक को निकाल बाहर फेंका। तब से *रिफ्लेक्टर* माँग कर रहा था कि बी.शॉप्स रेज़र-ब्लेड की खरीद की अपनी रसीदें पेश करे। निश्चित रूप से आसानी से इसकी व्यवस्था कर दी गयी, लेकिन इतने पर भी मामला ख़त्म नहीं हुआ।

काम को निपटाने के चक्कर में एक अनिष्ट भी घटित हो गया था; काम जल्दी किया जाना था और नतीजा था एक व्यक्ति की मौत। उस गिरोह ने अपने मुखिया से यह चीज़ छिपाने की कोशिश की थी ताकि उसकी खुशी न चौपट हो, मगर मैक को इसकी भनक लग गयी थी। यहाँ भी घटिया काम की वजह पैसे की कमी थी।

जब मैक ने मौत के बारे में सुना तो उसने हनीमून स्थगित कर दिया होता; लेकिन यह असम्भव था। इसलिए उसने सोचा कि वह कम से कम अपनी यात्रा को कुछ धन्धे के काम से मिला तो सकता है और इसी वजह से उसने लिवरपूल चुना था।

पीच रेलवे के कम्पार्टमेंट में बहुत सुन्दर दिख रही थी। ओ' हारा औसत से अच्छा डांसर था, और चेस्टनट के गहरे घने वृक्षों से ढँके, सीढ़ियों से गाड़ी तक के रास्ते में पीच के मन में बेहद साफ़-सा अहसास था कि यह उसके जीवन का सबसे शानदार दिन था। कभी भी उसके इर्द-गिर्द इतने लोग नहीं मँडराए थे। वह खुश थी। मैक ने उसके गर्म हाथों को कसकर दबाया, जो अन्य यात्रियों ने नहीं देखा।

लिवरपूल में उन्होंने एक छोटे-से होटल में कमरा बुक कर रखा था। बिस्तर पर जाने से पहले उन्होंने हॉल में बर्गण्डी की आखिरी बोतल पी। लेकिन यह एक ग़लती थी। सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त मैक को यह अहसास हुआ कि वह कुछ थक-सा गया है।

वह मुश्किल से पॉली के संयुक्त अधोवस्त्रों की तारीफ़ करने की हालत में था और उसकी कासनी रंग की चोली में उसे कुछ भी नया नहीं दिख रहा था।

लेकिन वह केवल थकान से चूर था।

वे जल्दी ही नींद में खो गए, लेकिन आधी रात में अलार्म बज पड़ा जिसे

मैक ने बड़ी सावधानी के साथ लगाया था, और उन्हें एक और खुशनुमा घण्टा बिताने को मिला। तत्परतापूर्ण पूछताछ के बाद मैक ने कुछ पुराने प्रेम सम्बन्धों की बात स्वीकारी (फैनी वाला नहीं और जेनी वाला भी एक प्रकार से पूरी तरह नहीं), और पीच ने एक लम्बे संघर्ष के बाद स्माइल्स से एक चुम्बन की बात स्वीकारी। इस तरह से इस स्वीकीरोक्ति ने दिन का समापन किया और एक लम्बे और स्थायी प्रेम की नींव डाली।

पॉली भी प्रसन्न थी और उसने एक सेंधमार के रूप में बीते मैक के पिछले जीवन के लिए उसे माफ कर दिया, जिसका मैक ने हाल में बर्गण्डी की बोतल खत्म करने के दौरान खुलासा किया था-उसने पीच को मोटी छड़ी में छिपे ख़ंज़र को थोड़ा-सा बाहर निकालने दिया। पीच ने उसके पुराने प्रेम सम्बन्धों के लिए भी उसे माफ कर दिया, और तो और उसकी कुछ अजीबो-ग़रीब मामूली सनकों को भी माफ कर दिया, कमीजकेभीतरअपनीछातीकोखुजलाना; और इसी से वह जानती थी कि वह सचमुच अपने पति से प्रेम करती थी।

बैरोनेट, बुकमेकर, आवासीय सम्पत्ति के मालिक, कार्टन मैन्यूफैक्चरर, और रेस्तराँ-कीपर द्वारा मि. जोनाथन जेरेमिया पीचम को पूरी छूट दे दी गयी थी। वह कोक्स से वॉटरलू के प्लेटफॉर्म पर मिले।

साउथैम्प्टन तक की यात्रा में दोनों सज्जनों ने एक-दूसरे से दस शब्दों से ज़्यादा नहीं कहे। कोक्स नाक पर अपना नाक-पकड़ चश्मा टिकाए *दि टाइम्स* पढ़ता रहा, और पीचम सीने पर हाथ बाँधे कोने में स्थिर बैठे थे।

दलाल ने एक बार ऊपर देखा और लापरवाही से कहा :

'मैफेकिंग अभी भी डटा है। तगड़े लौण्डे हैं!'

पीचम ने कुछ नहीं कहा।

अपने कोने में उन्होंने सोचा, *'ये तो बुरा है, अंग्रेज़ अंग्रेज़ों से लड़ रहे हैं। केवल यही आदमी नहीं बल्कि मैफेकिंग के आदमी भी मेरे ख़िलाफ़ हैं। उन्हें हार मान लेनी चाहिए! फिर उन्हें किसी राहत और जहाज़ों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और ये धन्धा, जो लगता है कि मेरी जान लेकर मानेगा, ख़त्म हो जाएगा। वे वहाँ गर्म मौसम में दिन-पर-दिन उन जहाज़ों के इंतज़ार में बैठे हैं, जो मैं अपनी खून-पसीने की कमाई से उनके लिए खरीदने वाला हूँ। डटे रहो! वे हर दिन एक दूसरे से कहते हैं, पीछे मत हटो, न ही कमज़ोर पड़ो; कम खाओ; गोलियों की बौछार में भी जमे रहो जब तक कि बूढ़ा जोनाथन पीचम अपनी आखिरी पूँजी से जहाज़ नहीं ख़रीदता जो हमें राहत देंगे। अगर उनकी चली होती तो इन*

कम्बख्त जहाज़ों की ख़रीद जल्दी होती; अगर मेरी चलती तो धीमे होती; और इसलिए हमारे हित बिल्कुल उल्टे हैं, और हम एक दूसरे को जानते तक नहीं हैं।'

साउथैम्प्टन में होटल में वे फौरन एक दूसरे से अलग हो गए; उन्होंने अपना रात का खाना तक साथ नहीं किया। लेकिन आधी रात को कोक्स के कमरे से भयानक शोर की आवाज़ आने लगी जो पीचम के साथ वाला कमरा ही था।

पीचम ने अपनी पतलून पहनी और कमरे के अन्दर गए। वहाँ कोक्स ठुड्डी तक चादर चढ़ाए बिस्तर पर लेटा था, और कमरे के बीचों-बीच एक जवान-सी स्त्री खड़ी थी, जिसने मोज़े के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पहन रखा था और उसे मछियारी के समान गाली दिये जा रही थी।

उसके शब्दों की बौछार से कोई भी समझ सकता था कि वह अपने समक्ष रखी गयी माँगों को मानने को तैयार न थी। उसने बतलाया कि उसके पास अनुभवों से समृद्ध एक लम्बा कैरियर है और साथ ही उसने सभी प्रतिकूल परिस्थितियों से अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता पर ज़ोर दिया; इसके सबूत के रूप में उसने हर प्रकार के गोदी मज़दूरों और जहाज़ियों, व्यापक रूप से यात्राएँ किए हुए और अत्याधिक माँग करने वाले भद्रजनों का हवाला दिया। लेकिन शहर भर में एक लम्पट के रूप में मशहूर किसी बुड्ढे मजिस्ट्रेट ने भी दस शिलिंग में ऐसी माँगें करने की हिम्मत नहीं की थी।

वह कोक्स को अपमानित करने की कला में पूरी तरह माहिर थी। बिना किसी परेशानी के उसने कोक्स के लिए ऐसी तुलनाएँ खोज निकालीं, जो अगर छापी जा सकतीं तो अपनी काव्यात्मकता से इस किताब को अमरता के काफी करीब पहुँचा देतीं।

पीचम अभी कमरे में घुसा ही था कि दरवाज़े पर खटखटाने की आवाज़ आयी। पीचम को कई उत्तेजित बैरों को धकेलकर बाहर करना पड़ा। फिर वह उस महिला की ओर मुड़ा जिसने कलात्मक ढंग से एक मखमली मेज़पोश से अपना कंधा ढंक रखा था और अपने जूते पहनने जा रही थी। जल्दी ही वह उसमें धन्धे वाला रवैया जागृत करने में सफल हो गया।

लम्बी बहस के बाद उसने कुछ नोट अपनी जुराबों में ठूँसे और बाहर चली गयी-इस शब्दों के साथ :

'बेहतर हो कि तुम अपने दोस्त के लिए दो-तीन औरतों का इंतज़ाम करो, फौरन; यानी अगर तुम उसे उचित स्थिति में चाहते हो ताकि वह दो टाँगों पर ही होटल छोड़ सके।'

जब वह चली गयी तो दोनों भद्रजनों को अपना बोरिया-बिस्तर बाँधना पड़ा क्योंकि उस होटल को अब वहाँ उनकी मौजूदगी मंजूर नहीं थी। वे दूसरे होटल में चले गए।

अब लगभग चार बज चुके थे। इसलिए वे फिर सोने नहीं गए बल्कि एक पॉट चाय मँगाई और बात करने लगे।

कोक्स ने बातचीत करने की प्रबल इच्छा दिखाई। उसने मि.पीचम से यह बात नहीं छिपाई कि हाल में उपस्थित हुए दृश्य ने उसे अनियंत्रणीय घृणा से भर दिया था। उसने खुले तौर पर जनसाधारण के ऐसे नीच हिस्से के साथ साहचर्य के लिए अपनी कमज़ोरी की आलोचना की।

उसने दुख से और प्रबलता के साथ कहा, 'जब कोई इन लोगों को सीधे उन परिस्थितियों से बाहर लाता है जिनके ये आदी होते हैं तो ये पूरी तरह अपना नियंत्रण खो देते हैं। भद्रजनोचित व्यवहार उनकी समझ से परे होता है। कोई उन्हें दोष भी तो नहीं दे सकता; वे इससे अच्छा कुछ जानते ही नहीं। वे हमेशा सबसे भद्दी गालियों का इस्तेमाल करते हैं। पैसे के लिए लगातार होने वाला उनका आत्मपतन उनकी सारी अच्छी भावनाओं को नष्ट कर देता है। काम वे करना नहीं चाहते। वे जो कमाते हैं उसका समय भी नहीं छोड़ना चाहते। वे बस आरामतलब ज़िन्दगी चाहते हैं और कुछ नहीं। यही चीज़ मुझे समाजवाद का विरोधी बनाती है। ठेठ भौतिकवाद असह्य है। ऐसे किसी प्राणी के लिए सर्वाधिक प्रसन्नता निकम्मेपन के साथ जीना है। ये समाज-सुधारक कभी कुछ भी नहीं हासिल कर पाएँगे। वे मानव-स्वभाव से कोई नाता नहीं रखते जो हद दर्जे की बदचलनी है। निश्चित रूप से, अगर लोग वैसे होते जैसा कि हम चाहते हैं तो कोई उनके साथ हर तरह की चीज़ कर सकता था। तो कुछ भी ठीक नहीं है। अन्त में जो चीज़ आपको हासिल होती है वह है सिरदर्द।'

पीचम उठा और अपने चिर-परिचित अन्दाज़ में खिड़की पर खड़े होकर पहले से बढ़ते उजाले में नीचे चौराहे पर देखने लगा जिसे ऊपर से नीचे तक नीली वर्दी पहने एक आदमी एक नलके से धो रहा था। पहले सब्ज़ी ठेले गोदी से अपने रास्ते पर खड़खड़ाते हुए बढ़े चले जा रहे थे।

जब कोक्स ने बोलना बन्द किया तो उसने रुखाई से कहा :

'तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए कोक्स।'

कोक्स को इस सलाह का वैसे ही सहारा मिल गया जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिलता है।

‘शायद सचमुच मुझे शादी कर लेनी चाहिए,’ खोए-खोए रहते हुए उसने कहा। ‘मुझे अपने पीछे एक स्नेहमय नारी की ज़रूरत है। क्या आप मुझे अपनी बेटी देंगे?’

‘हाँ,’ पीचम ने बगैर मुड़े कहा।

‘आप उसे मेरे ज़िम्मे सौंपेंगे?’

‘ज़रूर।’

कोक्स ने सुनाई पड़ने जितनी आवाज़ में साँस ली। अगर पीचम मुड़ा होता तो उसने देखा होता कि कोक्स बहुत अच्छा नहीं दिख रहा था। उस मामले ने उसे परेशान कर दिया था।

कोक्स घबराया हुआ-सा बोला, ‘आपको एक बुरा दामाद नहीं मिलेगा, मुझे मेरा काम पता है। मैं एक सिद्धान्तनिष्ठ आदमी हूँ। हमें इस मामले पर संजीदगी से विचार-विमर्श करना चाहिए। आप तो देख ही सकते हैं कि जो कारोबार मेरे हाथ में है वह काफी चंगी हालत में है; यह वाकई बढ़िया है। आपको कोई अन्दाज़ा नहीं है कि यह *कितना* बढ़िया है। आप खुद इसमें संलग्न हैं और अच्छे-खासे अन्दर तक! मुझे नहीं लगता कि आपको यह अहसास भी है कि मैं इससे कितना कमाता हूँ। जिस तरीके से मैं सारी चीज़ों का इंतज़ाम करता हूँ उस पर आप भरोसा कर सकते हैं। अब जबकि हमारे बीच यह समझदारी हो गयी है, मैं आपको अपने भरोसे में ले सकता हूँ; खास तौर पर इसलिए क्योंकि हर चीज़ व्यवस्थित कर दी गयी है। जहाँ तक मैं याद कर पा रहा हूँ, आपका कम-से-कम 7,000 पाउण्ड तक इसमें लगा हुआ है। आपको मेरे ऊपर विश्वास नहीं है? आपको क्या लगता है, उन नावों की क्या कीमत पड़ेगी जिन्हें हम आज देखने जा रहे है? हमारे बीच की बात है, मैं पहले से ही जानता हूँ। वे सभी पहले दर्जे के जहाज़ हैं। हम, बल्कि आप, उन्हें कभी 35,000 पाउण्ड से कम में नहीं पाएंगे। अगर एक निश्चित समय में खरीदने का अधिकार न हो जो मेरा उन पर है तो वे और भी महँगे पड़ेंगे। एकबारगी तो आप कहेंगे कि फिर भी सरकार द्वारा अदा किए जाने वाले 49,000 पाउण्ड में अच्छा-खासा मुनाफा बैठता है। लेकिन ऐसा सिर्फ लगता है। आप नए जहाज़ खरीदेंगे और पुराने बेचेंगे-लेकिन उसी कीमत में जिसका आपका सलाहकार ने ज़िक्र किया था। वाकई वे उससे ज़्यादा कीमत के नहीं हैं। क्या आपको अभी भी याद है? 200 पाउण्ड।’

पीचम लम्बे समय के बाद मुड़ा। अब उसने कांपते हाथों से अपने पीछे लगे पर्दों को भींच लिया। उसने कोक्स को ऐसे घूरा जैसे किसी बड़े-से अजगर को

देख रहा हो।

कोक्स हँसा और कहता गया :

'मरम्मत का खर्च, घूस और मेरा हिस्सा बहुत ज़्यादा नहीं है जब तक कि जहाज़ सस्ते हैं और आपको सिर्फ 11,000 पाउण्ड में मिल जाएं। लेकिन अगर उनकी कीमत आपको 35,000 पाउण्ड पड़ेगी तो मामला बिल्कुल अलग होगा। और सोने पर सुहागा यूँ हो जाएगा कि आपको जहाज़ों की अदला-बदली के लिए नई रिश्वतें भी देनी पड़ेंगी-कम-से-कम 7,000 पाउण्ड। इसके बारे में आप क्या सोचते हैं?'

भोर की मद्धिम रोशनी में पीचम बहुत बीमार दिख रहा था। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसे इस चीज़ का अन्देशा था! वह एक चार सौ बीस के शिकंजे में फँस गया था और उसे एकदम शुरू से ही इस बात का अन्दाज़ा था। अगर वह पढ़ा-लिखा आदमी होता तो, शायद चीख उठा होता :

'मेरी तुलना में ऑडिपस भी क्या है? अकेला, सदियों तक वह नश्वर जीवों में सबसे दुखी नश्वर के रूप में जाना जाता था, ओलम्पिया के प्रतिशोध का क्लासिकल उदाहरण, स्त्रियों से जन्में सभी पुरुषों में सबसे अभागा। मुझसे तुलना की जाय तो वह भी किस्मत वाला था। वह एक ग़लत धन्धे में लग गया बिना यह जाने कि वह एक ग़लत धन्धा है। पहले-पहल यह उसे अच्छा लगा; नहीं-यह अच्छा था। उस औरत के साथ सोना प्रीतिकर था। उस घुमन्तू को एक खुश घर मिल गया; सालों तक पति को कोई चिन्ता या परवाह नहीं थी और उसने सार्वभौमिक सम्मान का सुख लिया। फिर, एक दिन, यह बात सामने आयी कि जिन विवाह के बन्धनों में वह बन्धा था, वे स्थायी नहीं हो सकते थे। उन्हें टूटना ही था, वह फिर अविवाहित था और भविष्य में विवाह शैया उसके लिए निषिद्ध थी। मूर्खों और ईर्ष्यालुओं ने उस पर आरोप लगाए; इनमें से अच्छे-खासे आरोप, दरअसल, लगभग सबके सब अप्रीतिकर थे। लेकिन और भी जगहें थीं: उस जैसे घुमक्कड़ों के लिए हमेशा से ही कई देश रहे हैं। अपनी भर्त्सना करने के लिए उसके पास कुछ नहीं था; उसने ऐसा कुछ नहीं किया था जिसे वह टाल सकता था। लेकिन मैं, मैं तो सबकुछ जानता था, मैं खुद मूर्ख हूँ और इस जीवन के लायक नहीं हूँ। यह तो पहले से ही स्पष्ट है कि कोई मुझे नीली मक्खी को भी हज़ार पाउण्ड बताकर भ्रमित कर सकता हैं। अब तो मैं इस विचार के बिना एक सड़क भी नहीं पार कर सकता कि कहीं मैं हवा में उड़ते पत्ते को ओमनीबस न समझ बैठूँ। मैं उन लोगों की मण्डली का सदस्य हूँ जो उन्हीं हथियारों की सबसे

ऊँची कीमत अदा करते हैं जो खुद उन्हें ही ख़त्म कर देते हैं और जिनमें उनकी कब्र की कीमत भी शामिल होती है!'

इस बीच उस बुड्ढे आदमी को देखने से कोक्स को उबाहट होने लगी थी।

उसने शान्त चित्त से कहा, 'इन सब कारणों की वजह से ही मैं बिल्कुल आदर्श दामाद हूँ।'

उन्होंने दो सम्बन्धियों के रूप में नाश्ता किया। पीचम ने अपने वाद्य-यंत्रों के कारोबार के बारे में सावधानी के साथ कुछ शब्द कहे; उस दलाल ने पीच की खूबसूरत त्वचा का संक्षिप्त-सा वर्णन किया। फिर वे दोनों जहाज़ देखने गए।

दो बहुत ही अच्छे और बेहद खर्चीले जहाज़ बिकाऊ थे। प्लाईमाउथ में एक तीसरे जहाज़ के साथ जिसके बारे में कोक्स को जानकारी थी, कुछ कीमत बिल्कुल ठीक 38,500 पाउण्ड बैठती थी जिसमें कोक्स की दलाली लगभग 8,000 पाउण्ड की बनती। चूँकि पीचम ने भेड़ को कसाई के बूचड़खाने मे जाने के लिए छोड़ ही दिया था, इसलिए उसने कोई ख़ास आपत्ति नहीं उठाई। मुख्य रूप से वह घर जाने की जल्दी में था। शौचालय में एक कागज़ के टुकड़े पर उसने जोड़ लिया था कि बिना पॉली के उसे कितना नुकसान हुआ होता। लेकिन यह तो और बदतर ही होता अगर उसे कोक्स के मुनाफे का बोझ भी सहन करना पड़ता। यह सब जोड़ते-घटाते वह इतनी ज़ोर से कराहा कि बाहर से गुज़रते हुए एक व्यक्ति ने पूछा कि कहीं वह बीमार तो नहीं।

असल में पीचम का अब उस विनाशकारी घाटे से, जो उस पर हावी हो गया था, कहीं कम सरोकार था, बनिस्बत उस ज़बर्दस्त फ़ायदे के जो उसे उसे दलाल के सम्बन्धी की उस उपाधि से था, जो उसे मिलने वाली थी।

अब सबसे अहम काम था पीच को तैयार करना। उस लड़की को इससे अच्छा पति नहीं मिल सकता था। वह आदमी मेधावी था।

मैकहीथ ने लिवरपूल में अपना काम जल्दी ही खत्म कर लिया। पहली बार पॉली उसके साथ उसकी एक दुकान में गयी।

एक बड़ा-सा बिना हजामत बनाए आदमी एक अंधकारमय बैकरूम से उनसे मिलने आया। दुकान में सफेदी हुई थी। खुरदरे पटरों के काउण्टरों पर सलीकेदार पंक्तियों में सामानों के विशालकाय बण्डल, पीले घरेलू जूतों के अनखुले बण्डल, जेब-घड़ियों के बक्से, टूथब्रश, सिगरेट लाइटर, लैम्पों का ढेर, नोटबुक, पीपे रखे हुए थे-जो बीस किस्म के सामानों में शामिल थे।

जब उस आदमी ने समझा कि उसके सामने कौन है, तो उसने अपने पीछे का छोटा-सा दरवाज़ा खोला और अपनी पत्नी को दुकान में बुलाया। एक बच्चे को अपने हाथ में लिए वह एक खिड़की वाले छोटे-से बेसमेण्ट से प्रकट हुई जिसके खुले हुए दरवाज़े से पॉली अस्त-व्यस्त फर्नीचरों और बच्चों को देख सकती थी।

उसे जोड़े ने एक खराब प्रभाव छोड़ा।

वह आशा से परिपूर्ण थे। पति ने सोचा कि वह इससे सफलता पा लेगा। वह अपने पैरों पर खड़े होने से प्रसन्न था। जब वह कुछ शुरू करता था तो इतनी आसानी से हार नहीं मानता था।

'मेरे पति उन लोगों मे से हैं जो कभी हार नहीं मानते,' उस औरत ने कहा जो कुछ-कुछ अल्पपोषित लग रही थी।

जहाँ तक पॉली समझ सकती थी, इस सबके बावजूद वे अच्छी हालत में नहीं थे। किराया ज़्यादा नहीं था, लेकिन रकम अदायगी में किसी तरह की देरी की इजाज़त नहीं थी। मैकहीथ के हेडक्वार्टर से जो माल आता था वह अनियमित रूप से पहुँचता था और मात्रा भी बदलती रहती थी, और न बिक पाने वाले माल ने उस जगह को एक कबाड़खाने में तब्दील कर दिया था। क्योंकि वहाँ पर हमेशा ढेर सारी चीज़ें होती थीं-या फिर बहुत थोड़ी चीज़ें। एक व्यक्ति की, जिसे गँवारू जूते चाहिए होते थे, जेब-घड़ियों में कोई दिलचस्पी नहीं होती थी, हालाँकि उसके एक छाता खरीदने की कल्पना की जा सकती थी। इस शृंखला की दूसरी दुकानें अपनी ऊँची कीमत के बावजूद शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी थीं।

उस आदमी ने कहा कि उसे महीने के अन्त में भुगतान करने मे काफी दिक्कत हो रही है।

मैकहीथ ने उसे स्पष्ट रूप से शान्ति से समझाया कि बड़ी दुकानों से प्रतिद्वंद्विताा ही अनैतिक है, क्योंकि वे विदेशी श्रम का शोषण करती हैं और कीमतों को बिगाड़ने के लिए यहूदी बैंकरों के साथ मिलकर काम करती हैं। लेकिन बड़े कारोबारों के सवाल पर उसने उसे यह कहकर राहत पहुँचायी कि इन दिखावटी दुकानों में, विशेषकर उस ई. आरों की दुकानों में, चीज़ें किसी भी तरह उतनी समृद्ध नहीं होतीं जितनी कि वे दिखती हैं। अन्दरूनी तौर पर वे पूरी तरह सड़ चुकी होती हैं, अगर वे ऊपर से चमकदार दिखें तो भी। अब समय आ गया है जब आरों और उसे जैसों के विरुद्ध शिथिल न पड़ने वाली ऊर्जा के साथ युद्ध का बीड़ा उठा लिया जाय। कतई कोई दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।

जहाँ तक किराए का सवाल था, उसने छूट देने का वायदा किया; और साथ

ही छोटे व और विविधतापूर्ण सामानों की खेप का वादा भी किया। वह समय से सामानों को पहुँचाने पर भी सहमत हो गया। बदले में उसने दुकान की तरफ से और अधिक प्रचार की माँग की। वह युगल इश्तेहार पर्चे बना सकता था और बच्चे उन्हें कारखानों के गेट पर खड़े मज़दूरों के हाथ में थमा सकते थे। हेडक्वार्टर कागज़ पहुँचा देता।

बच्चे वहाँ काफी थे। पॉली क्षण भर के लिए बैकरूम में गयी। वह बिल्कुल साफ़ था, लेकिन वहाँ फर्नीचर के बस कुछ टुकड़े थे। एक कमज़ोर-से सोफे पर, जिसका कभी भी ढह जाने का ख़तरा था, एक वृद्ध महिला लेटी थी जो दुकान के मालिक की माँ थी। बच्चों ने आँखें फाड़कर देखा। वह वृद्ध महिला हठ के साथ दीवार की तरफ घूरे जा रही थी।

जब वे दोनों ताज़ी हवा में वापस आए तो उन्होंने काफी राहत महसूस की। मैक ने अपनी मान्यता को एक वाक्य में बाँधाः

'एक व्यक्ति के पास या तो एक बी.शॉप हो *या* ढेर सारे बच्चे!'

अगली बी.शॉप पर (अभी तक लिवरपूल में दो से ज़्यादा बी.शॉप नहीं थीं) मैक के काम ख़त्म करने तक पॉली बाहर इंतज़ार करती रही। दुकान की उस खिड़की से, जिसमें आश्चर्यजनक रूप से सस्ते और अच्छे सूट के कपड़े टंगे थे, उसने मैक को एक जवान क्षय रोगग्रस्त व्यक्ति से बात करते देखा जो एक खुरदरी लकड़ी की टेबल पर सूटों की कटिंग कर रहा था। बातचीत के दौरान एक क्षण के लिए भी उसने अपना काम नहीं रोका।

बाद में पॉली को मालूम हुआ कि उस आदमी को काम की सामग्री की आपूर्ति कर दी गयी है; कई सूटों के लिए कई यार्ड कपड़ा जिसके दाम तय थे-जाहिरा तौर पर काफी कम। वह और अच्छी स्थिति में होता अगर उसका परिवार होता, क्योकि तब और काम करने वाले होते। लेकिन यह उसका मामला था। बी. व्यवस्था के अनुसार उसे किसी नियम या नियंत्रण का पालन करने की ज़रूरत नहीं थी।

मैकहीथ ने पॉली को बताया कि कैसे उस आदमी ने अपने इस्त्री वाले पटरे के सामने वाली दीवार पर एक अखबार की कतरन ठोंक रखी है। इस पर लिखा थाः 'न घाटा, न लाभ'।

मैक के एक लोहे के सामानों की दुकान पर जाकर एक पुरानी तारीख की रसीद पर रेज़र-ब्लेडों की एक खेप का ऑर्डर देने के बाद, उसका लिवरपूल का काम खत्म हो गया और अब वे वापस लन्दन जा सकते थे।

उन्होंने शुरू में मि. पीचम से शादी को गुप्त रखने की योजना बनाई थी ताकि बेवजह उनका मिजाज़ न ख़राब हो। पॉली घर अकेले पहुँचकर अपनी माँ को शान्त करना चाहती थी (उसके पास उसके झोले में ब्राण्डी की बोतल थी), जब उसके पिता साउथैम्प्टन से वापस आते तो तब मैक का नाम लेती।

लेकिन जब पॉली दुकान में घुसी तो मि. पीचम साउथैम्प्टन से लौट चुके थे और रात भर उसके ग़ायब रहने के कारण पूरा माहौल ज़बर्दस्त उत्तेजनापूर्ण था।

दरवाज़े की सीढ़ी पर ही माँ ने उसका झोला उसके हाथ से छीन लिया। उसमें से उसने ब्राण्डी की एक बोतल, लिवरपूल में खरीदी गयी एक नाइट-ड्रेस और शादी का जोड़ा निकाला।

इस प्रकटीकरण का प्रभाव विचलित करने वाला था; लेकिन पारिवारिक दृश्य किसे पसन्द है और बुड्ढे लोगों ने अपने ही देह की संतति अपनी बेटी को क्या-कुछ कहा, इसे छोड़कर कौन नहीं आगे बढ़ना चाहेगा? सारे भेद खुल गए, 'ऑक्टोपस' भी और लिवरपूल में बुक किया गया दो पलंग वाला कमरा भी। अपनी इकलौती बेटी के साथ मैकहीथ का नाम पीचम के लिए एक धराशायी कर देने वाला प्रहार था। इसके लिए, जो सोहो और व्हाइट चैपल में सम्मान के साथ 'भिखारियों के राजा' के रूप में जाना जाता था, ब्रिटिश उपद्वीपों और डोमिनियनों की आपराधिक दुनिया एक खुली किताब थी। वह जानता था कि मैकहीथ कौन है।

इसके अलावा, वह न सिर्फ एक अपमानित बल्कि एक बरबाद व्यक्ति था। न वे तीन घर जिसमें उस पर किस्मत की यह बेरहम चोट हुई और न ही वह दीमक-चटा टेबल अब उसका था जिसके सहारे वह खड़ा था। इसी सुबह उसने साउथैम्प्टन में तीन जहाज़ देखे थे, जिसमें से कम-से-कम एक उसे अकेले ही खरीदना था। और उसकी बेटी, उसकी आखिरी उम्मीद लिवरपूल के होटल में एक घटिया सेंधमार के साथ हमबिस्तर हो चुकी थी!

वह चीखा, *'मेरा अन्त पागलखाने में होगा, मेरी बेटी ही मुझे पागलखाने पहुँचा देगी। आज सुबह-सुबह साउथैम्प्टन में, रतजगा करते हुए रात गुज़ारने के बाद मैं बाहर गया और उसके लिए नयी पोशाक लेकर आया, वह ऑफिस में पड़ी है, दो पाउण्ड की है वह! मैंने सोचा था कि मैं उसके लिए कुछ ले आऊँगा, वह समझेगी कि उसकी फिक्र की जाती है। दूसरे बच्चों को कम उम्र से ही खुद को सम्भालना पड़ता है, उनके पैर मुड़े होते हैं क्योंकि दूध की किल्लत होती है।*

उनकी आत्माएँ विकृत हो जाती हैं क्योंकि उन्हें जीवन का अंधकारमय पहलू बहुत जल्दी ही देखना पड़ता है। मेरी बेटी ने तो पिंट से दूध पिया, मलाई सहित! वह तो सिर्फ कोमलता और समर्पण से परिचित थी। उसने पियानो बजाना सीखा! और अब, पहली बार जब मैं उससे कुछ माँगता हूँ; कि वह एक प्रतिष्ठित व्यापारी से शादी कर ले, जो एक सिद्धान्तनिष्ठ आदमी है और जो उसकी देखभाल करेगा। यह मुझे पागल बना देगी, क्योंकि इसी की ख़ातिर मैंने एक ऐसे कारोबार में हाथ डाला जिसका क ख ग भी मुझे नहीं आता था, बस इसके लिए दहेज हासिल करने के लिए! यह कम्बख्त अपने आपको समझती क्या है? अगर मुझे अपनी सिलाई वाली कोई लड़की मेरे मैनेजर के साथ मिले, तो उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है!-इसी तरह से मैं अपने घर में सदाचार बनाए रखता हूँ। और मेरी ही बेटी ने अपने आपको एक दो पत्नी रखने वाले और दहेज के पीछे भागने वाले दुष्ट के चंगुल में फँसा लिया है। अब मुझे यह सोचना पड़ेगा कि मैं उसे उससे कैसे तलाक दिलवाऊँ। लेकिन फिर भी उसने अपनी ज़िन्दगी तबाह कर ली है। कोक्स कभी उसे माफ नहीं करेगा; स्त्रियों की पवित्रता पर उसकी बड़ी सख्त सोच है और, जो स्थिति है उसमें उसे सख्त होने का अधिकार है!'

पीच अपने गुलाबी कमरे में पड़ी रो रही है। सारी मुसीबतों की जड़ उस 'ऑक्टोपस' में बैठे मैक को कोई सन्देश भिजवाने की हिम्मत करना उसके बस की बात नहीं है, जो अपने ससुर से निर्णायक मुलाकात के लिए बुलावे का इन्तज़ार कर रहा था।

मैकहीथ पूरी शाम धैर्य से इन्तज़ार करता रहा। और अगली सुबह वाद्य-यंत्रों की दुकान पर पहुँचा।

निर्दय दिखने वाले एक विशालकाय अक्खड़ आदमी ने उसकी अगवानी की, और जब मैक ने अपना नाम बताया तो उसने बिना कोई शब्द कहे उसे कंधे से पकड़ा और दरवाज़े का बाहर फेंक दिया।

दो दिन बाद उसे पीच द्वारा लिखा एक पर्चा मिला जिसमें कहा गया था कि वह किसी भी सूरत में वहाँ दर्शन न दे; लेकिन शाम को बहुत ही लाल हुई आँखों के साथ गली के कोने पर आयी और उसने मैक को बताया कि उसके पिता ने उसे घर पर ही रहने का आदेश दिया है। नहीं तो वह उसे उत्तराधिकार से वंचित कर देंगे और मैक के पीछे पुलिस लगा देंगे जिसके बारे में वह काफी कुछ जानते थे।

मैक ने पर्याप्त शान्त भाव से पूरी बात सुनी और भागने या वैसी ही किसी बेवकूफी के बारे में कुछ नहीं कहा। वह बस पाँच मिनट पीच के साथ पार्क में गुज़ारना चाहता था लेकिन वह नहीं गयी।

अगले दो हफ्तों के दौरान उन दोनों ने एक-दूसरे को सिर्फ एक बार कुछ सेकेंडों के लिए देखा।

6

मैं इससे घृणा करता हूँ; मैं हमेशा तो नहीं जियूँगा; मुझे छोड़ दो अकेला; क्योंकि व्यर्थ है मेरा जीवन।
क्या है आदमी कि गुणगान करो तुम उसके वजूद पर? और क्यों तुम अपना दिल दे बैठो उसे? और हर सुबह मिलो तुम उससे और तंग करो हर क्षण उसे?
मैंने पाप किया है; क्या करूँ मैं अब बता, ओ मनुष्यों के रक्षक? क्यों बना दिया है तूने मुझे अपनी सत्ता की खिलाफत का प्रतीक, जिससे मैं खुद पर ही बन गया हूँ बोझ?
क्यों नहीं कर देता क्षमा तू मेरे अपराध को और हर लेता मेरी दुष्टता? सो जाऊँगा मैं अब कब्र में; और खोजेगा तू मुझे सुबह, और नहीं मिलूँगा मैं।

(दि बुक ऑफ जोब)

तुर्की हम्माम

बैटरसी में फूर्नी एण्ड डीन सड़क के कोने में एक हम्माम था, सिर्फ पुरुषों के लिए, जिसके अधिकांश ग्राहक उम्रदराज़ भद्रजन थे। इसके साज़ो-सामान कुछ पुराने किस्म के थे। नहाने के टब लकड़ी के थे और कुछ-कुछ मौसम द्वारा पुराने पड़ गये थे। वे टेबल जिस पर ग्राहकों की मालिश की जाती थी, डावाँडोल होने की ओर प्रवृत्त थीं, और अत्याधिक इस्तेमाल के चलते तौलियों में छेद हो गये थे। लेकिन वहाँ जड़ी-बूटियों से होने वाले औषधीय स्नान होते थे, जो और कहीं नहीं होते थे। इन स्नानों की डॉक्टरों द्वारा सिफारिश नहीं की जाती थी, एक ग्राहक दूसरों से इसकी सिफारिश करते थे। यह जगह 'फेदर्स बाथ' कहलाती थी। कीमतें यहाँ काफी नीचे थीं। वह लड़कियाँ परिचारिकाएँ थीं।

विलियम कोक्स अक्सर यहाँ आया करता था; हफ्ते में कम-से-कम एक बार वह यहाँ आया करता था। मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के सदस्यों ने भी वहाँ आने की आदत डाल ली थी जब भी उन्हें उससे मिलना होता था।

लोग बँटी हुई कोठरियों में नहाते थे, जहाँ मालिश भी होती थी। लेकिन स्टीम कैबीनेट और आराम के लिए बिस्तर एक ही बड़े से कमरे में थे। यहाँ पर

आप अपेक्षाकृत आराम से बातचीत कर सकते थे विशेष रूप से अगर आपने सारे कैबीनेट हथिया रखे हों। ऐसी स्थिति अब इस स्नानघर में आम हो गयी थी; ऐसे में भुगतान के डेस्क के सामने एक तख़्ती लटका दी जाती थी जिस पर लिखा होता था-'फुल अप'।

उनका मिलने का साधारण दिन था सोमवार। यह जगह सप्ताहांत पर बंद रहती थी ताकि स्टाफ नये सप्ताह के शुरू होने पर बहुत थका न रहे। ऐसी अटकलबाज़ियों में कोक्स माहिर था।

शुरुआत में साझीदारों ने मिलने की ऐसी जगह के चुनाव का विरोध किया। लेकिन अन्त में कोई यहाँ से अलग नहीं रहना चाहता था। सभी ऐसी बैठकों में विशेष रूप से अतिशिष्टाचार के साथ उपस्थित होने लगे जब एम.टी.सी. के मामलात ने इस कदर अपशकुनी रुख अपना लिया।

यहाँ तक कि फिनी भी आता था। वह हमेशा झींकते रहने वाला एक बुजुर्ग सुक्खड़ आदमी था, जो हर विलास वस्तु से घृणा करता था, लेकिन जो यह भी कहता था कि औषधि-स्नान से उसके पेट को हर दूसरे आजमूदा उपायों से ज्यादा राहत दी है। उसे सन्देह था कि उसे कैंसर था और वह उसके लक्षणों के बारे में बात करना पसन्द करता था। न.6 की परिचारिका को पहले से ही ये लक्षण ज़बानी याद थे।

पीचम ने अन्तिम रूप से अपने लिए एक अकेले पुरुष निरीक्षक को नियुक्त कर लिया था जो अपनी बलपूर्ण मालिश के लिए प्रसिद्ध एक विशालकाय मोटा आदमी था। लड़कियों की आम तौर पर ज़्यादा आग्रही नहीं थी, लेकिन पीचम की पसन्द के हिसाब से उन्होंने काफी कम कपड़े पहन रखे होते थे।

साउथैम्प्टन से लौटने के बाद फौरन उसने ईस्टमैन से बात की थी और उसे नये जहाज़ों की कीमत की सूचना दी थी। उसने उसे राज़ी कर लिया कि खरीद निश्चय ही और जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी पूरी होनी चाहिए। इस मकसद से उसने कोक्स के बारे में अपने विचार बलपूर्वक व्यक्त किए और उसे एक सिद्धान्तनिष्ठ निर्दयी ठग बताया। वह यह ख़बर ज़रूर फैलाता कि कम्पनी पुराने सड़े जहाज़ सरकार को बेचने की कोशिश कर रही है। शुरू से ही वह पूरा गोरखधन्धा खड़ा कर रहा था ताकि वह सबको आपराधिक क्रिया-कलापों में फँसा दे और फिर सबको ब्लैकमेल करे। आम तौर पर युद्ध आपूर्तियों पर होने वाला निश्चित मुनाफा 300 फीसदी था। कम्पनी का लक्ष्य 450 प्रतिशत का मुनाफा बनाना था और वह भयंकर सड़ाँध पैदा करता। ईस्टमैन उसके साथ

सहमत हुआ कि वे उस दलाल से अपने हिसाब-किताब तभी बराबर कर सकते थे जब वे नये जहाज़ ख़रीद लें। उन्होंने तय किया कि अन्य साझीदारों को कुछ और दिनों तक अटकलों में कुलबुलाते रहने दिया जाय, जब तक कि सामान्य सोमवार बैठक न हो जाए। कोक्स की उपस्थिति का तब नुकसानदायक की बजाय फायदेमन्द प्रभाव होगा क्योंकि वह सरकार के खरीद-मूल्य में बढ़ोत्तरी को लेकर उनकी उम्मीदें बढ़ाएगा।

आने वाले सोमवार को उन सात भद्रजनों के बीच नहाने के टबों में जो विचार-विमर्श हुआ वह थोड़ा तनावपूर्ण रहा।

जब ईस्टर्मन ने अपने स्टीम कैबीनेट से उन्हें सम्बोधित करना शुरू किया तो कपड़ा व्यापारी मून, बैरोनेट फिनी पहले ही अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। अभी भी पीचम की मालिश चल रही थी; और रेस्तराँ-कीपर क्रॉल जो नहाने का इच्छुक नहीं था, पूरे कपड़ों में कुर्सी पर बैठा हुआ था। कोक्स कसरत कर रहा था।

ईस्टमैन ने इस ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए अपनी बात शुरू की कि वे पुराने जहाज़ों को बेचने का विचार अपने दिमाग़ से निकाल दें। उसने स्वीकार किया कि यह विचार आकर्षक तो था लेकिन यह अव्यावहारिक सिद्ध हो चुका है। उस 5,000 पाउण्ड के बदले में, जो उन्होंने नौकाधिकरण में कोक्स के दोस्त को दिये थे, वे सक्रिय सहयोग की उम्मीद तो कर सकते थे, मगर उस मौन अनुमति की नहीं जो करीब-करीब धोखा थी। *लवली एना, यंग सेलरबॉय* और *ऑप्टिमिस्ट* के साथ कम्पनी के पहले अभागे प्रयास को दबा जाने, और नये जहाज़ों को यह नाम देने के काम में 7,500 पाउण्ड, 4,000 बकाए में और सौदे के पूरे होने पर 3,500 पाउण्ड और खर्च होते। उन्हें इस रकम को इस अनुभव की कीमत के रूप में लेना था।

अपने सुपरइन्टेण्डेण्ट द्वारा रुखाई से मालिश कराए जाने की प्रक्रिया में, पीचम दिलचस्पी के साथ अपने स्टीम कैबीनेट में मौजूद मोटे ईस्टमैन और अपनी काठ की कुर्सी पर पूरे कपड़ों में बैठे क्रॉल के बीच पसीना बहाने में हो रहे एक शान्त और भयंकर प्रतिस्पर्द्धा को देख रहा था। क्रॉल अवर्णननीय लालची भाव-भंगिमाओं के साथ ईस्टमैन को घूर रहा था। भेड़-पालक के जाने के बाद, वह रेस्तराँ-कीपर एम.टी.सी. की सबसे कमज़ोर कड़ी था। शुरू से ही उसने कारोबार की पतली हालत के बारे में शिकायत की थी और लगातार अपने सिर के ऊपर लटक रही तलवार के बारे में भी कहा था। इसी वजह से उसने इस भावी

तौर पर मुनाफे वाले धन्धे में अत्याधिक उत्साह के साथ कदम रखा था। धन्धे में उसके निवेश की पहली किश्त उसके ससुर की बदौलत आयी थी, और अब, ताज्जुब की बात है कि वह उस सम्पत्ति मालिक से पसीना-बहाऊ प्रतियोगिता में लगा हुआ था। जग ईस्टमैन, जो अभी-भी अपेक्षाकृत सूखा हुआ था, ने इस समय उपयुक्त ट्रांसपोर्ट जहाज़ ढूँढने में होने वाली दिक्कतों के बारे में बोलना शुरू किया तो उसके माथे पर पसीने की बूँदें बहने लगीं। और जब ईस्टमैन असली कीमतों (38,500 पाउण्ड और 7,500 पाउण्ड) पर आया और खुद पसीने की पहली छोटी बूँदें टपकायीं, तो वह रेस्तराँ-कीपर पसीने में नहाए बैठा था।

पीचम ने सोचा *'आत्मिक प्रभावों का असर किस कदर शुद्ध रूप से भौतिक दबावों के असर से प्रबल होता है। मानव शरीर पूरी तरह से मन और आत्मा का गुलाम होता है।'*

दूसरे भद्रजनों ने भी बाह्याकृति और व्यवहार में आत्मिक विपत्ति के भयानक लक्षण प्रदर्शित किए। फिनी, जो ज़्यादा से ज़्यादा एक कायर था, अपने हाथ निराशा से अपने शरीर पर मार रहा था; और मून एक बुढ़िया के समान रिरिया रहा था। अगर परिचारक वहाँ मौजूद होते तो वे इन दूसरी दृष्टि से प्रभावाशाली आदमियों की शक्तिहीनता पर चकित हुए होते। लेकिन, निश्चित रूप से, जैसा कि वैज्ञानिक शोधों ने सिद्ध किया है, एक औरत दर्द को सहने के मामले में एक आदमी से कहीं बेहतर होती है।

खुद पीचम ने उस वक्त अपने आपको बेहद अभागा महसूस किया जब उसने अपनी बेटी की बेवक्त शादी से मिले भयानक आघात के बारे में सोचा।

जब ईस्टमैन ने बोलना ख़त्म किया और अपने कैबीनेट से बाहर आया तो रेस्तराँ-कीपर ने पहले असाधारण रूप से दबी आवाज़ में कहा कि अब वह दीवालिया हो चुका है और उससे कहा कि वह बाकी सज्जनों से कह दे कि वे अब उसे अपने साथ न गिनें और सवाल उसके वकील से पूछे जाएँ।

उसने जोड़ा कि उसके ससुर 78 वर्ष के हैं और अपनी बेटी को चिन्तारहित जीवन देने की आशा में उन्होंने अपने वृद्धावस्था बीमा से पैसे निकाले थे। उसके, यानी क्रॉल के बच्चे, 8 और 12 साल के थे। ईस्टमैन ने अपने गोल-मटोल पैर सुखाते हुए जवाब दिया कि चीज़ें उतनी ख़राब हालत में नहीं हैं जितनी दिख रही हैं; लेकिन मून ने काफी कटुता से उसका विरोध किया जिससे उसे झुंझलाहट हुई।

फिनी ने अपनी गम्भीर (सम्भवतः जानलेवा) बीमारी की तरफ ध्यान खींचा और यह सन्देह व्यक्त किया कि वह आवश्यक रकम जुटा भी पाएगा या नहीं।

ईस्टमैन ने गुस्से में जवाब दिया कि वह भी 3,000 पाउण्ड के बेहतर इस्तेमालों के बारे में सोच सकता है। बैरोनेट ने कुछ नहीं कहा। उसकी शिक्षा पर अच्छा-खासा पैसा खर्च हुआ था।

इस बीच कोक्स अपनी कसरत कर चुका था और अब वह निर्णायक चोट कर सकता था। उसने गुलाबी नहाने की पोशाक और रबर के काले जूते पहन रखे थे।

उसने कहा, 'सज्जनो, हमारा काम अभी ख़त्म नहीं हुआ है। आपने वह कीमतें सुन ली हैं जिस पर उपयुक्त जहाज़ उपलब्ध हैं। आपको यह जानकर ताज्जुब नहीं होगा कि पैसा सारे काम नहीं बना सकता। मसलन, यह जहाज़ सिर्फ पैसे के बूते हासिल नहीं किए जा सकते।'

इस पर क्रॉल बेवकूफों की तरह दाँत निपोरने लगा। वह बिल्कुल लुटा-पिटा सा अपनी काठ की कुर्सी पर बैठा था और अपना मोटा सिर हिला रहा था और खींसे निपोर रहा था।

दूसरे झटके का उस पर प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि पहले वाले ने ही उसे चारों खाने चित कर दिया था।

कोक्स ने उस पर एक शंकालु निगाह डाली और आगे बोलने लगाः

'मैं यह मान सकता हूँ कि आप खुद पर आधा विश्वास खो चुके हैं। लेकिन दुर्भाग्य से यह आप ही नहीं हैं जो एम.टी.सी. पर से भरोसा खो चुके हैं। हम भी खो चुके हैं। नौकाधिकरण में जो मेरा स्कूल के दिनों का दोस्त है वह चाहता है कि आगे के धन्धे का संचालन मैं करूँ।'

उस रेस्तराँ-कीपर के अपवाद को छोड़कर वे सारे भद्रजन नग्न अवस्था में थे और इस प्रकार वे उस शर्मिन्दगी की स्थिति में थे, धार्मिक शिक्षाओं के अनुसार जिसमें कालान्तर में वे ईश्वर के मुकुट के समक्ष हाज़िर होते। वे कोक्स को सुनकर और ज़्यादा निरुत्साहित हो गए। पीचम ने अपने मोटे सुपरइंटेण्डेण्ट को एक और ठेल दिया और उठ बैठे। कोक्स जो कुछ कह रहा था वह उनके लिए भी नया था।

कोक्स ने कहा, 'हमने सोचा था कि हम इस तरह से इस दुर्भाग्यपूर्ण धन्धे को निपटा सकते हैं। आपकी कम्पनी पहले ही 8,200 पाउण्ड अदा कर चुकी है। उस रकम से कुछ खास चीज़ें खरीदी गयीं, जिनका बेशक हम ज़िक्र नहीं करेंगे। जैसा कि मुझे बताया गया है, आपने खरीदी हुई चीज़ों की मरम्मत के लिए 5,000 पाउण्ड अलग निकाल लिए हैं। सरकार से आपको 5,000 पाउण्ड मिले

हैं। अपने सौदे के मुताबिक आप मुझे बिक्री कीमत का 25 फीसदी देंगे, जो 12,500 पाउण्ड बैठता है, और मेरे दोस्त को, जिसे पहले 5,000 पाउण्ड मिल चुके हैं, आपको 7,500 पाउण्ड और देने हैं, दो किश्तों में , जैसा कि मि. ईस्टमैन ने आपको पहले ही समझा दिया है। इसके साथ, नये जहाज़ों के लिए 38,500 पाउण्ड और बनेंगे। अगर आप ये सारी रकमें जोड़ दें तो पाएँगे कि आपका कुल ख़र्चा लगभग 75,000 पाउण्ड बैठेगा। सरकारी भुगतान लगभग 49,000 पाउण्ड है और मैं आपसे वे तीन चीज़ें दो-दो हज़ार पाउण्ड में खरीद लूँगा, जिनका मैं नाम नहीं लूँगा-चूँकि मैं कोई वकील नहीं हूँ। आपके विशेषज्ञ के मुताबिक वे 200 पाउण्ड से ज़्यादा के नहीं हैं, लेकिन आपने उनकी मरम्मत पर 5,000 पाउण्ड ख़र्च कर दिये हैं और मैं हमेशा उचित मूल्यांकन के पक्ष में रहता हूँ। अगर आप जोड़े-घटाएँ तो पाएँगे कि कुल मिलाकर आपको 26,000 पाउण्ड से अधिक का घाटा नहीं होने वाला, यदि मेरी गणनाएँ सही हैं। मुझे बतलाने की ज़रूरत नहीं है कि इसका विकल्प मोटे तौर पर 20 साल की जेल है, जो उससे अधिक नहीं है जितने कि आशा आप ऐसे लेन-देन के नतीजे के तौर पर कर सकते हैं। सज्जनो, आखिरी रास्ता अभी भी आपके लिए खुला हुआ है। अगर आप उस पर चलना चाहें, तो मैं तत्काल आपको 5,000 पाउण्ड के वे चेक लौटा सकता हूँ, जो आपने मुझे मेरे दोस्त के लिए दिये थे। वे मेरे पास ही हैं।'

वहाँ मौजूद लोगों में से अधिक चालाक लोगों को इस दिन के आने पर कभी शक नहीं था। पूरा जाल बड़ी ही कुशलता के साथ कोक्स द्वारा बुना गया था। चेकों और कुछ विशेष कूट साक्ष्यों की वापसी के बावजूद वह नौकाधिकरण वाला आदमी गम्भीर मुसीबत में फँसने वाला था; क्योंकि यह तथ्य तो किसी सूरत में नहीं छिप सकता था कि उसने वे जहाज़ खरीदे थे जिन्हें उसने कभी नहीं देखा था। लेकिन उससे कम्पनी को शायद ही कोई फायदा होता। उन्होंने वे जहाज़ खरीदे थे जिनकी अयोग्यता के बारे में उन्हें चेताया गया था।

फिर कोक्स ने माँग की कि कम्पनी उसे पूर्ण अधिकार दे दे, ताकि वह कदम-ब-कदम धन्धे को दुरुस्त कर सके। लेकिन तैयार जहाज़ों को सरकार के सुपुर्द किए जाने तक सारे काम कम्पनी को करने थे; तभी वह खुद सरकार के साथ सौदे में शामिल होगा-यानी जब नये जहाज़ पुराने जहाज़ों से बदले जाने के लिए तैयार होंगे।

तब तक पुराने जहाज़ों पर काम जारी रहना चाहिए क्योंकि असम्भावित जाँच-पड़ताल भी हो सकती है। और इस प्रकार एकदम आखिरी क्षण तक एम.

टी.सी. के सिर पर तलवार लटकी रहनी थी।

इस चीज़ का विरोध करने की कम्पनी में ताक त नहीं थी।

जब कोक्स ने अन्त में उन्हें एक पड़ोस रेस्तराँ में दोपहर के खाने के लिए आमन्त्रित किया तो उसे उत्तर देने की इच्छा किसी को नहीं थी। इसलिए उसने हड़बड़ी में कहा कि जहाज़ों की सुपुर्दगी के लिए वह किसी भी हालत में आठ हफ्तों से ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता; और फिर वह उनके पास से चला गया।

कम्पनी ने आगे होने वाले सारे खर्चों की ठीक-ठाक गणना करने का काम ईस्टमैन और पीचम पर छोड़ने और जैसे ही वे दोनों तैयार हों, अधिक से अधिक सोमवार तक, मिलने का फैसला किया। अब हालात उस मंज़िल में पहुँच गए थे जिसमें तय कामों से बचकर रहना था और ऐसे दिखाना सबसे अच्छा था कि एक संयोग से होने वाली मुलाकात भी पर्याप्त है।

पीचम अब हमेशा से अधिक चिन्तित थे।

अब वह कोक्स के पक्ष में होने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन उनकी बेटी भी उनके पास अपनी ख़ातिर खाली नहीं थी। तो अब क्या होने जा रहा था?

हर सुबह वह गोदियों पर जाता। जहाज़ मधुमक्खी के छत्तों की तरह भनभना रहे थे। हर तरफ ठुंकाई-पिटाई और कटाई और रंग-रोगन जारी था। मज़दूर झूलती सीढ़ियों पर खड़े थे और कमज़ोर जालीदार झूलों पर लटक रहे थे। पीचम इस पूरे उद्योग और गतिविधि के बीच खड़े काँप रहे थे। सारे सामानों को अधिकतम सम्भव सस्ता किया जा रहा था; लकड़ी, लोहा और यहाँ तक कि पेण्ट भी सबसे सस्ते वाले थे। और फिर भी यह पूरा कारोबार एक विशालकाय और पूरी तरह घाटा था।

फिर पीचम दौड़ते-भागते अपने कारखाने पर पहुँचा। यहाँ भी हर चीज़ पूरे ज़ोरों पर थी। दफ्तर में भिखारी बैठ रहे थे। बियरी सावधानीपूर्वक एक सूची से उनकी आय मिला रहा था और अनुभवी अविश्वास के साथ असफलता के लिए उनके बहाने सुन रहा था। उसने सीमा-विवादों का निपटारा किया और घुसपैठियों के ख़िलाफ़ कार्यवाही का इंतज़ाम किया। वर्करूमों में लड़कियाँ लम्बी टेबलों पर झुकी बैठी थीं। जब कारखाने की माँग की आपूर्ति हो जाती थी तो वे पुरानी कपड़ों की दुकानों और सेकेण्ड-हैण्ड कारोबारियों के लिए आपूर्ति करती थीं। वाद्य-यंत्र बनाने वाले हर्डी-गर्डी के लिए पीपों की मरम्मत कर रहे थे। कुछ भिखारी नये म्यूज़िक रोलों (स्वरलिपि के खर्रे-अनु.) पर हाथ साफ़ कर रहे थे और रोल का चयन करने के लिए मन बनाने में काफी समय लगा रहे थे।

स्कूल-रूम में निर्देश दिये जा रहे थे। एक रूखी-सी बूढ़ी औरत जो महिला प्रसाधन गृह में परिचारिका थी, शाम के वक्त एक लड़की को यह समझा रही थी कि फूल कैसे बेचते हैं।

पीचम इधर-उधर आहें भरतें खड़ा था। इस सबका क्या लाभ था जब हर मिनट आपको सीढ़ियाँ चढ़ते उन कदमों की आहट सुनाई देती हो जो आपको ये बताने आ रहे हैं कि नीचे ऑफिस में पुलिस आपका इंतज़ार कर रही है?

सब उसकी बेटी की वजह से हुआ था।

अपनी असीम कामुकता के जरिये, जो निस्सन्देह रूप से उसने अपनी माँ से विरासत में लिया था, और अपराधी अनुभवहीनता के चलते पॉली ने अपना भाग्य एक ऐसे आदमी के हाथों में सौंप दिया है, जो एक बेहद धूर्त इंसान है। उसने फौरन अपने प्रेमी से शादी क्यों की, यह उनके लिए एक रहस्य था। पीचम को किसी भयंकर चीज़ की आशंका थी। लेकिन सम्बन्धियों से एक आवश्यक दूरी कायम रखने पर उसके विचार उसे यह इजाज़त नहीं देते थे कि वह अपनी बेटी से उसके निजी मामलों के बारे मे बात करें। इसके अलावा उन घटनाओं के बारे में बात करने से सिर्फ नुकसान ही होता है, जिन्हें किसी भी स्थिति में नहीं घटना चाहिए। स्पष्टवादिता ऐसी चीज़ों को संभाव्यता के दायरे में लेती आती है और नतीजतन, आप अपना मुख्य शस्त्र खो देते हैं, यह समझने की स्पष्ट अक्षमता कि कुछ ग़लत हो सकता था।

आधी रात में जब सुबह होने वाली होती थी, तो पीचम आम तौर पर उठते और यह देखने के लिए बालकनी के किनारे-किनारे ऊपर जाते कि पॉली अपनी जगह पर है या नहीं। फिर उन्होंने अधखुली खिड़की से उसे अस्पष्टता से बिस्तर पर लेटे हुए देखा। घर पर रहते हुए अब वह काफी सन्तुष्ट थी और ऐसा बिरले ही लगता कि वह अपने पति से मिलेगी।

किसी भी हालत में उसकी शादी को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी रद्द करना था। पीचम को अपनी बेटी की ज़रूरत थी।

पीचम को कभी एक पल के लिए भी इस बात पर सन्देह नहीं हुआ कि कोक्स पहले की तरह पॉली को अब भी स्वीकार कर लेगा। साउथैम्प्टन में उसने उसके अन्धे उतावलेपन को देखा था। यह लम्पट अपनी काम-वासना का पूरी तरह गुलाम था।

और ऐसा लगता था कि यह मैकहीथ अपनी पत्नी के लगातार अपने मायके में रहने को सह जाने का इरादा बना चुका है। उसने कोई गम्भीर मुसीबत नहीं

खड़ी की। उसने अपने आपको उठाकर बाहर फेंका जाने दिया और कोई बदले का कदम नहीं उठाया और, जहाँ तक पीचम जान सकते थे, उसने अपनी पत्नी का नाम किसी को नहीं बताया था। ऐसा लगता था कि सम्पत्ति से बेदखली की धमकी का वांछित प्रभाव हुआ था। स्पष्ट रूप से वह पैसा पाने के लिए काफी लालायित था। सम्भवतः उसे पैसों की ज़रूरत थी।

उसकी बी.शॉप्स काफी चालाकी से सोच-समझकर बनायी गयी थीं, और उनसे ग़रीबों की बचत का कुशल उपयोग होता था। लेकिन यह भी सच था कि ये दुकानें भोंड़ी-अनगढ़ थीं क्योंकि वास्तव में ये अन्धेरे, सफेदी किये गये खानों से ज़्यादा कुछ नहीं थी, जिनमें चीड़ की लकड़ी के पटरों पर बिकाऊ सामानों का ढेर पड़ा रहता था, और जिनके पीछे अवसादग्रस्त लोग हुआ करते थे। इन बेहद सस्ते सामानों का स्रोत ज्ञात नहीं था।

पीचम ने अपने भिखारियों के जरिये कुछ बी.शॉप्स के मालिकों से सम्पर्क साधने की कोशिश की थी। ज़्यादा सफलता उसके हाथ नहीं लगी। वे लोग एक रूखी-सी चुप्पी कायम रखते, भिखारियों से नफरत करते, और ऐसा लगता था कि वे अपने बिकाऊ सामानों के स्रोत के बारे में कुछ नहीं जानते।

जो भी हो इस मैकहीथ के गुज़रे हुए दिनों के बारे में पीचम की जाँच-पड़ताल को ज़्यादा सफलता मिली। इस खोज-बीन से एक अर्ध-अंधकार द्वारा धूमिल किए गए वर्षों की एक शृंखला सामने आयी, वही अर्ध-अंधकार जो हमारे महान व्यापारियों की जीवनियों के कुछ खास हिस्सों को सार की दृष्टि से बहुत घटिया बना देते हैं; 'उद्योग-जगत के दिग्गज' आम तौर पर 'कठिन और अभावग्रस्त, अचानक और आश्चर्यजनक जीवन' के इतने-या-उतने साल बाद, अप्रसिद्धि से 'सीधे' उभरते हुए दिखते हैं-मगर जिस जीवन का साधारणतया ज़िक्र नहीं होता।

बी.शॉप्स के ऐसे कम ही प्रतिद्वंद्वी थे जो यकीन के साथ यह कह सकते थे कि जवानी के उन दिनों में मैकहीथ जाली शादियाँ करने का दोषी पाया गया था, जिन्हें बीते अभी ज़्यादा दिन नहीं हुए थे। इस जाल में फँसी लड़कियों को वे 'बी. ब्राइड्स' कहते थे, मगर कोई पता देने में अक्षम थे। ऐसी उड़ती अफवाहों से कुछ होना -जाना नहीं था। लेकिन इतना बिल्कुल स्पष्ट थाः किसी न किसी तरह से इस आदमी की ज़िन्दगी के तार अण्डरवर्ल्ड से जुड़ते थे। कुछ समय पहले तक ही इस कामयाब आदमी के तौर-तरीके आज से कहीं ज़्यादा बिन्दास, क्रूर और खुले तौर पर गैर-कानूनी हुआ करते थे।

अन्य लोगों में पीचम *रिफ्लेक्टर* के दफ्तर गया। *रिफ्लेक्टर* वही अखबार

था जिसने यह दावा किया था कि उसके पास ऐसी सामग्री है जो बी.शॉप्स के मालिक पर लगे कुछ आरोपों को साबित करती है। लेकिन सम्पादकगण उस मामले को कुछ धुँधला सा ही याद कर पाए और उपयुक्त प्रमाण की कमी के बारे में कुछ बुदबुदाए। नतीजतन, पीचम बिना कुछ हासिल किए ही लौट गए, लेकिन वह इस सुस्पष्ट प्रभाव के साथ लौटे कि वे लोग ज़रूर कुछ जानते हैं और उनके पास सामग्री भी है।

मिसेज पीचम को, जिन्हें इन दिनों हमेशा से ज़्यादा, उनकी किस्मत पर और तहखाने पर छोड़ दिया गया था, घर पर मण्डरा रहे खतरे का अस्पष्ट-सा अन्देशा होने लगा। वह इस पर भी मगजपच्ची कर रही थीं कि पॉली को इस 'लकड़ी व्यापारी' से कैसे अलग किया जा सकता है। वह कोक्स को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं क्योंकि वह एक धोखेबाज़ था; लेकिन निश्चित तौर पर वह एक बेहतर सौदा था।

उन्होंने मैकहीथ को किसी औरत के आगोश में पकड़ने की योजना बनाई। उसका औरत से चक्कर ज़रूर होगा; वह पॉली के नितम्बों पर उसकी पकड़ को भूली नहीं थी; और अब वह पूरे वक्त बिना किसी बीवी के बिता रहा था।

लेकिन बाद में, कॉम्नैक (फ्रांसीसी ब्राण्डी-अनु.) से आत्मिक रूप से जागृत होने पर, उन्होंने इस युक्ति पर पुनर्विचार किया और उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि इस मुकाम पर इस तरह के रहस्योद्घाटन, अपने अश्रुपूर्ण पुनर्मिलनों के साथ पति और पत्नी में और गहरा जुड़ाव पैदा कर देंगे। सो उन्होंने अपनी योजनाओं को फिर त्याग दिया।

पीचम इस दहेज-शिकारी को पैसे की पेशकश करने पर पहले ही विचार कर चुके थे, लेकिन यह अस्वाभाविक समाधान वास्तव में बहुत कठिन मालूम पड़ता था।

उन्होंने बियरी को मैकहीथ के पीछे भेजा। लकड़ी व्यापारी ने उससे फैनी क्राइस्लर की एंटीक्स की दुकान पर बात की।

बियरी एक कच्चे मांस के ढेले समान एक कमज़ोर चिप एण्ड डेल कुर्सी (अट्ठारहवीं सदी की इंग्लैण्ड में बनने वाले खास किस्म के फर्नीचर-अनु.) के कोने पर बैठा और अपनी हैट को अपने चौड़े घुटनों पर झूलता छोड़ दिया।

उसने ऐलान किया 'मि.पीचम ने मुझे तुम्हें यह बताने के लिए कहा है कि तुम्हें जितनी जल्दी हो सके पॉली को इस झंझट से निकालना है, नहीं तो तुम मुसीबत में फँस जाओगे। वह बहुत सह चुकी है तुम्हें। और तो और मि.पीचम

भी तुम्हें बहुत झेल चुके हैं। अगर तुम्हें लगता है कि तुम्हारी दाल आसानी से गल जाएगी तो तुम गफलत में हो। कोई दहेज-वहेज नहीं मिलने वाला! हम वह साधारण दिन की आमदनी भी मुश्किल से जुटा पाते हैं जिसकी हमें ज़रूरत होती है। अगर तुमने अलग सुना है, तो कोई तुम्हें बेवकूफ बना रहा है। और हमने कुछ ऐसी औरतों को भी खोज निकाला है जो अगर चाहती तो अपने आपको मिसेज मैकहीथ कह सकती हैं, और जो तुम्हारा ठिकाना जानना चाहेंगी। और याद रखो कि हम हर वह काम करेंगे जो तुमसे पिण्ड छुड़ाने के लिए हम कर सकते हैं। मगर मि.पीचम कहते हैं कि वह तुमसे झगड़ा नहीं करना चाहते हैं। वह शान्ति और दोस्ती से सारा मामला निपटा देना चाहते हैं। ऐसा वह क्यों कह रहे हैं, यह मेरे लिए एक रहस्य है। मैं तो कुछ अलग ढंग से मामला निपटाता, मैं कहे देता हूँ!'

मैकहीथ हँसा।

'मेरे ससुर से कह दो कि अगर वह मुसीबत में हों तो मैं छोटी-सी रकम से उनकी मदद कर सकता हूँ,' उसने भद्रता से कहा।

बियरी ने रूखेपन से जवाब दिया, 'हम मुसीबत में नहीं हैं, लेकिन *तुम* जल्दी ही होगे। हम एक मुक्त देश में हैं। मैं फिर तुम्हें बता दूँ : तुम जितना अन्दाज़ा लगाते मालूम पड़ते हो उतना पैसा हमारे पास नहीं है। यह ठीक नहीं है। हम ग़रीब भिखारी हैं और तुम्हें ऐसे लोगों को रौंदने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। कीड़े भी हमला कर सकते हैं, और कभी-कभी बड़ी दुष्टता से।'

'लेकिन बाहर, वह बाहर हमला कर सकता है, यहाँ मेरी दुकान के अन्दर नहीं,' मैकहीथ ने अधिकारपूर्वक कहा।

बियरी धमकी भरी घुरघुराहटों के साथ चला गया। जब पीचम को ख़बर मिली तो उन्होंने आह भरी।

उसके पास सिर्फ आठ हफ्ते थे; उसके बाद या तो उसे अपनी बेटी पर नियंत्रण हासिल करना था या इसकी कीमत चुकानी पड़ती।

क्रॉल, रेस्तराँ-कीपर ने झूठ नहीं बोला था। ऐसा लगता था कि न सिर्फ उसके पास लगाने के लिए ज़्यादा पैसा था बल्कि वह तो मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के मुनाफे के भरोसे बैठा था-और तत्काल मुनाफे के भरोसे। वह पूरी तरह दीवालिया हो चुका था।

इसके अलावा बैरोनेट, जो अभी भी एक नौजवान आदमी था, एक दिन प्रकट हुआ और उसने पैसा देने में अपनी अक्षमता जाहिर की। वह स्कॉटलैण्ड में गिरवी रखी गयी जायदादों का मालिक था और निगरानी में रखे जाने की

कगार पर था। पीचम और ईस्टमैन ने उससे पीचम के ऑफिस में बात की। वे उससे ऐसे व्यवहार कर रहे थे जैसे वह एक बीमार जानवर हो।

अभी भी उसकी शादी से पैसे हासिल करने की सम्भावना थी। एक अमीर स्वतन्त्र अमेरिकी महिला थी जो उसका प्राचीन नाम और संस्कृति खरीदने को तैयार थी। वह उसके गाँव के घर के फर्नीचर, ख़ास तौर पर कुर्सियों से आकर्षित थी।

नौजवान क्लाइव ने उसे एक बूढ़ी बकरी कहा और अपनी घृणा जाहिर की, लेकिन ईस्टमैन ने इस पर बेहद कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की और गम्भीर और असहमति जताने वाला चेहरा बना लिया और उस महिला के बारे में नुक्तेवार पूछताछ की। उसके पैरों की एक (कुपोषित) घोड़े की टाँगों से तुलना पर उसने ध्यान नहीं दिया।

दोनों सज्जनों ने बैरोनेट को उस बदनामी का हवाला देकर हड़काया जो एम.टी.सी. के गिर जाने से होगी और उस नौजवान की अन्तरात्मा को इतना धिक्कारा कि अंततः उसने उस अमेरिकन से अच्छा व्यवहार करने का वायदा किया।

घर लौटते समय रास्ते में ईस्टमैन ने पीचम से कहा, *'हम अपने कुलीन वर्ग के लोगों को अपने कॉलेजों में इतने ध्यान से क्यों शिक्षित करते हैं? हम उन्हें क्यों प्रशिक्षित करते हैं, क्यों सारे अप्रिय तथ्य उनसे दूर रखते हैं और इतने शानदार तौर-तरीके उनके मन में डालते हैं कि वह सबसे बढ़िया नौकरों को रख पाते हैं? गोबिलिन (पेरिस का कारखाना-अनु.) का कपड़ा कोई दुछत्ती पर नहीं टाँगता। रेस के घोड़े रेस करने के लिए तैयार किये जाते हैं। मनुष्यों की उच्चतर किस्में भी भोग-विलास के लिए नहीं पैदा की जातीं। कुछ समय पहले बाज़ार हमारे साहबों से कुछ भरा हुआ था। आज माँग हमेशा की तरह ज़बर्दस्त है। अटलाण्टिक-पार के एक मीट-किंग की यह बेटी हमारे इस जवान से बेहतर कोई चीज़ नहीं ढूँढ सकती अगर वह सचमुच ऐसा कोई चाहती है जो जानता हो कि ठीक तरह से जम्हाई कैसे लेते हैं और जो निम्नतर श्रेणी की जातियों को नियंत्रण में रख सकता हो। यह देखने के लिए उसे सिर्फ अखबार पढ़ने की ज़रूरत है कि हमारे देश का यौवन उत्कृष्ट व्यवहार करता है और सार्वभौमिक लोकप्रियता का स्वामी है।'*

लेकिन फिर भी क्लाइव अस्थायी तौर पर एम.टी.सी. में एक कमज़ोर कड़ी बना रहा।

सोमवार को रखी गयी बैठक से पहले पीचम और कोक्स के बीच एक बातचीत हुई।

कोक्स ने क्रॉल के अन्तिम रूप से हार मान लेने और बैरोनेट की अस्थायी घबराहट की ख़बर को बिना किसी उत्तेजना के सुना। उसने बस इतनी टिप्पणी की कि उसे मैरीन ट्रांसपोर्ट से बस समग्रता में लेन-देन करना होगा। उसने सलाह दी कि सड़ी हुई शाखाओं को मूल तने से काट देना चाहिए, लेकिन यह जोड़ा कि यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि निकाले गये सदस्य अपना मुँह बन्द रखें। फिर वह पॉली की बात करने लगा। उसने माना कि वह उसे अपने दिमाग से बाहर नहीं निकाल पा रहा है। साउथैम्प्टन में हुए भयानक अनुभव ने उसे अन्दर से बदल डाला है। कहने का मतलब यह है कि उसके अन्दर के कुछ विशेष अच्छे गुण अचानक निकलकर सामने आ गये हैं। वह अपने अन्दर शुद्धता की एक अचम्भित कर देने वाली प्यास महसूस कर रहा है। पॉली अब उसकी आराध्य थी। वह उसे साफ़ पानी के एक कुँए के समान प्रतीत होती थी। उसके साथ हुई एक बातचीत उसके काम के पूरे हफ्ते को पवित्र कर देती थी। उसने यह सब बहुत सादगी से और पीचम की आँखों में सीधे देखते हुए कहा।

पीचम ने ग़ौर से सुना और महसूस किया कि उनके बीच इस जहाज़ कारोबार का अन्तिम समापन कोई विशेष परेशानी नहीं पैदा करेगा। उसने कोक्स की सावधानी वाले कथनों का अनुमोदन किया। दलाल जानता था कि किसी बात को घुमा-फिराकर कैसे कहा जाता है।

पीचम स्नानागार में अकेले गये।

दूसरे पहले से ही उनका इन्तज़ार कर रहे थे। नहा कोई नहीं रहा था। वे सभी पूरे कपड़े पहने लकड़ी की कुर्सी पर बैठे थे, हालाँकि वातावरण असह्य रूप से गर्म और नमी वाला था।

पीचम ने सबसे पहले उन्हें क्रॉल और बैरोनेट की वादाख़िलाफ़ी के बारे में बताया।

ये दोनों सज्जन सीधे उनके सामने देख रहे थे, बैरोनेट मुस्करा रहा था।

कुल घाटा, पीचम समझाता गया, जैसा कि कोक्स ने जोड़ा था, लगभग 26,000 पाउण्ड था-जिसका मतलब था प्रत्येक सदस्य के ऊपर 3800 पाउण्ड का। यह एम.टी.सी. के हित में था कि कारोबार जितनी शान्ति से सम्भव हो उतनी शान्ति से चलना चाहिए।

उसने अपने बैंक, नेशनल क्रेडिट बैंक की सहायता सुरक्षित करने का प्रस्ताव

रखा अगर वे धन्धे का सम्पूर्ण नियन्त्रण उसके हाथ में सौंप दें।

पसीने से तर-बतर सबने सिर हिलाया। यहाँ तक कि क्रॉल और बैरोनेट ने भी सिर हिलाकर हामी भरी।

पीचम ने उन दोनों पर अर्थपूर्ण निगाह डाली। तब उसने फिर बोलना शुरू किया और साफ़-साफ़ माँग की कि क्रॉल और बैरोनेट घाटे में अपनी साझीदारी के लिए प्रतिज्ञात्मक नोट दें, और जो हो चुका है, उसके विस्तृत विवरण पर भी दस्तखत करें। उन्हें एक स्वीकारोक्ति पर दस्तख़त करना था कि उन्होंने सरकार को पुराने जहाज़ जाँच-पड़ताल के बाद और उनकी उत्तमता पर एक विशेषज्ञ की राय सुनने के बाद, बेच दिये हैं, और यह कि उन्हें बिक्री की कीमत मिल गयी है। दस्तख़त करने वालों को ये दस्तावेज़ उनके वादों के पूरे होने पर लौटा दिये जाएँगे; अपने आपमें इनका कोई महत्व नहीं था क्योंकि पूरी कम्पनी को संकट में डाले बिना इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी, लेकिन उनकी ओर से होने वाली किसी मूर्खता से ये कम्पनी की रक्षा करते।

बैरोनेट ने इस्तीफे पर हस्ताक्षर करने के अन्दाज़ में हस्ताक्षर किया। *उसने* जो कुछ समझा वह यह कि अब उसे उस 'बूढ़ी बकरी' से बिना और देरी के शादी करनी होगी। रेस्तराँ-कीपर ने ऐसे व्यवहार किया मानो वह संज्ञाहीन हो।

उसने बताया कि वह अपनी पत्नी और अपने 78 वर्षीय ससुर के सिर ऐसी बदनामी कभी नहीं ला सकता। वह ऐसे जहाज़ किसी तरह सरकार को नहीं बेच सकता जो समुद्र के काबिल हो ही नहीं। उसके ससुर एक कर्नल रह चुके थे। न ही ऐसे दस्तावेज़ पर दस्तख़त के बाद वह कभी अपने बच्चों की साफ़ आँखों में आँखें डाल सकता है। उसने हमेशा बेईमानी वाले रास्ते से पैसा बनाने के किसी भी प्रयास का विरोध किया है, ऐसा न होता तो आज उसकी स्थिति अलग होती। उसका सम्मान उसके लिए ज़्यादा अहमियत रखता था, धन्धे के घाटों से भी ज़्यादा।

उसके चेहरे पर आँसुओं की धाराएँ बह रही थीं, उसने कहा, 'तुमने मुझे बरबाद कर दिया है, मैं एक टूटा हुआ आदमी हूँ।'

उस दृश्य ने सबको परेशान कर दिया।

ईस्टमैन ने मून से घर जाते हुए रास्ते में कहा, 'वह क्रॉल एक भद्र आदमी की तरह नहीं हार सकता। ख़राब शिक्षा! उस कमज़ोर आदमी की कम्बख़्त देह में कोई इज़्ज़त नहीं है। बैरोनेट को देखो! उसने एक आदमी की तरह दस्तख़त किये। वह एक भयावह प्राणी से शादी करने जा रहा है-एक आदमी की तरह।

वह जो करता है उसकी ज़िम्मेदारी लेता है। एक बीवी-बच्चे वाले आदमी को ऐसे धन्धे में घुसना ही नहीं चाहिए। वह अपने बच्चों की आँखों में आँखें डालकर नहीं देख सकता! लेकिन वह *लवली एना* की आँखों में आँखें डालकर देख सकता है! और *यंग सेलरबॉय* कम-से-कम उसके ससुर जितना पुराना तो है ही। उन्हें फिर से युद्ध में भेजने को वह बिल्कुल तैयार था। क्यों न उसके ससुर भी ऐसा ही करें?-बेबाक कर देना भी मुझे पसन्द नहीं। फिनी को पेट का कैंसर है। क्या वह झींकता है? क्या वह इसका बहाना बनाता है? पीचम के दो हिस्से हैं। क्या वह इसकी शिकायत करता है? इस क्रॉल को उचित शिक्षा नहीं मिली है, यही दिक्कत है उसके साथ। ऐसे लोगों को शहर में रहने की इजाज़त ही नहीं देनी चाहिए! किसी कारोबार में घुसने से पहले आदमी को अपने साझीदार से पूछना पड़ेगा : "आपका पालन-पोषण कहाँ हुआ था?" जब लेन-देने पूरा हो जाएगा तो क्या तुम अपने बच्चों की आँखों में देख पाओगे? क्या तुम्हारे ससुर अभी भी काम कर रहे हैं?-यह क्रॉल कतई एक अंग्रेज़ नहीं है-किसी भी तरह, अंग्रेज़ की मेरी जो धारणा है, वह वैसा नहीं है। क्या वह एक महान राष्ट्र के नागरिक का नमूना है?'

पीचम ने इस बैठक के बाद अपने आपको काफी अभागा महसूस किया। जैसे ही एम.टी.सी. कारोबार के उपयुक्त आर्थिक संसाधन जुटा लेगी, सरकार के साथ हुए सौदे को कोक्स के हाथों में सौंप दिया जाएगा। और अभी भी उनका कोक्स के साथ विशाल मुनाफे में हिस्से के लिए कोई नियंत्रणकारी करार नहीं था, न ही अपने घाटों की भरपाई का कोई वायदा। जो हालात थे उनमें ऐसे किसी समझौते के बारे में तब तक सोचा भी नहीं जा सकता था जब तक पॉली कोक्स से शादी के लिए तैयार नहीं हो जाती।

पीचम उस स्थिति के हर ख़याल से मुँह चुराता रहा कि क्या होगा अगर वह कोक्स के साथ कोई बन्दोबस्त नहीं कर पाता। पहले ही अब उन भयंकर नुकसानों को झेलने के लिए सिर्फ तीन लोग, फिनी, मून, और ईस्टमैन, बचे थे। अगर वे नये जहाज़ों की कीमत अदा करने की स्थिति में नहीं आते तो अभी भी अंजाम तबाही हो सकता था।

उन्हें कोक्स की अब हमेशा से ज़्यादा ज़रूरत थी।

एक शाम उन्होंने पॉली से बात की और उसे बताया कि उसे कोक्स से अच्छे ढंग से पेश आना चाहिए। किसी भी सूरत में उसे उसकी शादी के बारे में पता नहीं चलना चाहिए। फिर उन्होंने उसे समझाया कि वह और कोक्स कुछ जहाज़ों

के सौदे में शामिल हैं और इस कदर कि, 'शायद पूरा घर और दुकान बिक जाए'।

जब पॉली ने यह सब सुना तो उसने भय से उस जाने-पहचाने से, अपने-अपने-से, कमरे में चारों ओर देखा; छत ढँकने वाले रोगन-हीन पटरे जो रेगमाल से चिकने किये गये थे, सफेद खपरों वाली अंगीठी, महोगनी फर्नीचर और मलमल के पर्दे। वह इस पुराने घर को बहुत प्यार करती थी, ख़ास तौर पर अहाते और काठ की बालकनियां। और उस रात, चूँकि जहाज़ की बात हुई थी, उसने सपना देखा कि घर, जो दरअसल तीन घर थे, समुद्र में डूब रहा है और लहरें दरवाज़ों के रास्ते अन्दर आ रहीं थीं।

अगली सुबह उसने एक बलिदान देने का आंशिक रूप से निर्णय ले लिया था।

उसने सोचा, 'आखिर जो कुछ हो सकता है उसका इल्ज़ाम मैं अपने सिर नहीं लेना चाहती, और बाद में कोई नहीं कह सकेगा कि मैं बलिदान करने से पीछे हट गयी। निश्चित रूप से यह कोई मामूली बात नहीं है कि कोई लड़की अपने आपको एक ऐसे आदमी के हाथों में सौंप दे जिसे वह प्यार नहीं करती, ख़ास तौर पर तब जब वह मि.कोक्स जैसा दिखता हो। लेकिन परिवार तो परिवार है, और अहम्मन्यता घृणास्पद होती है। किसी को सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए।'

वह थोड़ी और देर तक बिस्तर पर लेटी रही और उसने उस जड़ाऊ पिन को याद किया जो उसने कोक्स के घर पर देखा था और जो अब उसके मन में अपृथक रूप से कोक्स से जुड़ा हुआ था। शुरू में वह उसे 15 पाउण्ड के लिए बेचने के लिए पाना चाहती थी, जिसकी उसे उस समय सख्त ज़रूरत थी। अब उसे उन पैसों की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन वह जड़ाऊ पिन को अब भी पाना चाहती थी।

रात के खाने के बाद वह अपने पिता के एक पत्र के साथ कोक्स के घर गयी। जब वह चिट्ठी उसे थमाई गई तो उसने एक उदासीन और रूखी-सी भाव-भंगिमा बना ली। अब उसे उस बात पर यकीन नहीं था जो उसके पिता ने आसन्न बरबादी के बारे में पिछले दिन बताई थी; वह तो सिर्फ इसलिए बताई थी क्योंकि वह मैक को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

कोक्स के प्रति भी वह बहुत उदासीन रही। उसने उस जड़ाऊ पिन को भी मुश्किल से देखा जो अभी भी लिखने वाली टेबल पर पड़ा था।

फिर भी वह उससे बहुत प्रभावित थी।

कोक्स ने उसे एक झूलने वाली कुर्सी में बिठाया जो लिखने वाली मेज़ से कुछ ही दूर थी और उसे भारी चमड़े में बँधी ढेर सारी किताबें पकड़ा दीं। लेकिन जब तक वह पत्र पढ़ता रहा उसने उन किताबों को नहीं देखा। इसलिए वह उठा और कमरे से बाहर चला गया।

फिर भी उसने वह किताबें नहीं पढ़ीं। लेकिन उसका चेहरा लाल था।

मामला यह था कि उसने अचानक वह जड़ाऊ पिन हासिल करने का मन बना लिया था। उसने सोचा, 'अगर वह मुझे देगा तो पूरा मामला पाँच मिनट तक चलेगा, ज़्यादा से ज़्यादा। जैसा वह लगता है, बिना कुछ दिये इसकी उम्मीद तो कर नहीं सकता। जड़ाऊ पिन निश्चित रूप से 20 पाउण्ड का है और एक खुली पोशाक के साथ जँचेगा। निश्चित रूप से एक चुम्बन से ज़्यादा के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता; बहुत ज़्यादा होगा तो वह अपनी बाँहों में मुझे ले सकता है। उस जड़ाऊ पिन की कीमत अदा करने के लिए यह बहुत ज़्यादा नहीं है। मेरी उम्र की दूसरी लड़कियों को अपनी रिहायश की कीमत देने के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है। आदमी काफी पागल होते हैं, जिस तरह वे ऐसी चीज़ों के लिए कुछ भी दे देते हैं। लेकिन अब वे ऐसे ही हैं!'

और उसने आह भरी।

जब वह दलाल लौटा तो वह ऐसा सोचने को मजबूर था कि वह इस बीच उन किताबों को देखती रही थी और उनके प्रभाव में थी। फौरन ही लिखी गयी जवाबी चिट्ठी को स्याही सुखाने के लिए लहराते हुए उसने कमरा पार किया और पॉली पर झुक गया। जब उसने उसका चेहरा देखा तो जल्दी से उठी।

कोक्स ने पक्का कर लिया था कि उसकी बहन घर में नहीं थी। इसलिए उसने पत्र को लिखने वाली मेज़ पर रखा और अचानक पॉली को अपनी बाँहों में भर लिया।

उसने ज़्यादा प्रतिरोध नहीं किया, हालाँकि शुरुआत में उसे अफसोस हुआ कि उसे वह जड़ाऊ पिन नहीं मिला था, लेकिन उसने फिर समर्पण कर दिया, क्योंकि वह आनन्द में एकदम आपे से बाहर हो गया था। फिर भी उसे इससे कुछ ख़ास हासिल नहीं हुआ क्योंकि बीच में ही उसे मैक का ख़याल आया, जो इसका अनुमोदन नहीं करेगा।

जब उसने विदा कहा तब चिट्ठी की स्याही सूख चुकी थी।

घर पहुँचने पर उसने पत्र अपने पिता की डेस्क पर रखा और ऊपर चली गयी जहाँ उसने फौरन सामान बाँधना शुरू कर दिया। आधे घण्टे बाद बिना कोई

ख़ास सावधानी बरते वह बिल्कुल सामने वाले दरवाज़े से अपना झोला लिये चली गयी।

उसने सुना था कि मैकहीथ अब अपना पूरा समय एक दूसरी औरत फैनी क्राइस्लर के साथ बिता रहा था जिसकी वॉटरलू ब्रिज के पास एंटीक्स की दुकान थी।

उसके माँ और बाप ने आधी रात तक उसका इंतज़ार किया। मि. पीचम खिड़की पर खड़े हुए और कहाः

'तो वह आया और उसे ले गया। उसे लगता है वह ऐसा कर सकता है। उस जैसे कोई कानून नहीं जानते। अगर वह कोई चीज़ चाहता है तो उसे ले लेता है। अगर वह मेरी बेटी के साथ एक रात गुज़ारने की ज़रूरत महसूस करता है तो वह उसे मेरे घर से उड़ा ले जाता है और उसे पा लेता है। उसकी त्वचा उसे आकर्षित करती है। उसके पास जितने कपड़े रहे हैं उसकी एक-एक सिलाई की कीमत मैंने दी है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है उसने खुद अपनी देह कभी नहीं देखी है। उसे एक नाइट-ड्रेस में नहलाया जाता था। उसकी लम्पट माँ की बेवकूफी और खुद उसकी मूर्खता से, जो उपन्यास पढ़ने से पैदा हुई है, वह वैसी बन गयी है, जैसी वह आज है। लेकिन मैं क्या बात कर रहा हूँ; मानो इसका प्यार से कोई लेना-देना हो! मानो उसके जैसा कोई आदमी दहेज के अलावा किसी और चीज़ के साथ सो सकता हो! वह मेरा पैसा चाहता है और वह ले भी लेता है। मेरे इस परिवार को क्या हो गया है। जो कभी मुसीबत के वक्त एक पक्की पनाहगाह हुआ करता था? हालाँकि बाहर ज़िन्दगी के तूफान उमड़ते-घुमड़ते थे, यहाँ शान्ति और चुप्पी होती थी। अस्तित्व की लड़ाई के संत्रास यहाँ कभी ज्ञात नहीं थे, जहाँ एक कोमल-सा बच्चे का अच्छे पालन-पोषण के तरीकों से पालन-पोषण हो रहा था; धन्धे और मोल-भाव की दिक्कतों का परिरक्षित शरणस्थली में कोई स्थान नहीं था। जब एक जवान आदमी इस घर की बेटी की तरफ आता (बेटी के भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी उठाने में अपनी काबिलियत के सबूत पेश करने के बाद), तो चिन्तित अभिभावक निश्चिन्त हो सकते थे कि, कुछ एक दुर्भाग्यवान मामलों को छोड़कर, ये प्यार था जिसने इस जवान जोड़े को मिलाया है। लेकिन हुआ क्या है? बेरहम डकैती! मैं कठिन परिश्रम और चिन्ता से थोड़ी-बहुत समृद्धि जुटाता हूँ, हर समय लफंगों और आलसी मज़दूरों से घिरा रहते हुए जो अपने काम में मज़ा नहीं लेते बल्कि बस मज़दूरी के बारे में सोचते रहते हैं, और फिर यह कोक्स आता है और कुछ अपराधी षड़यंत्रों से मुझे धोखा देता है और लूट

लेता है! और जबकि मैं अपनी ज़िन्दगी और सम्पत्ति बचाने के लिए लड़ रहा होता हूँ तो मुझे अपनी बेटी को भी एक लुटेरे द्वारा मुझसे झपटे जाते देखना पड़ता है। मैंने उसके लिए अपना हाड़ गलाकर काम किया है। मैं मानव जाति के कूड़े-कचरे से सम्बन्ध रखता ही क्यों हूँ? वह आदमी एक शार्क है! अगर मैं अपनी बेटी दे दूँ जो इस बुढ़ापे में मेरा इकलौता सहारा है, तो मेरा घर मिट्टी में मिल जाएगा और मेरा आखिरी कुत्ता भी मेरा साथ छोड़ देगा। अब सोते-जागते यह ख़याल मेरा पीछा करता रहता है कि मैं भुखमरी के साथ रासलीला रख रहा था।'

लेकिन पॉली वापस नहीं आयी, न उस रात, न बाद में, तब तक जब तक उसका पति गिरफ्तार नहीं हो गया।

और मि. पीचम कभी नहीं जान पाए कि पॉली ने उस दलाल की कामेच्छा को बढ़ाने की बजाय उसे शान्त कर दिया था।

अगले कुछ दिनों के दौरान मिसेज पीचम ने आम तौर पर जितना वह पीती हैं, उससे ज़्यादा पिया। और इसी हालत में उन्होंने उस भूतपूर्व सैनिक से अपनी परेशानियों के बारे में बात की जो कुत्तों की देखभाल करता था।

उसने अभी तक पीच को उसका एनसाइक्लोपीडिया लेने के लिए माफ नहीं किया था-हालाँकि वह किताब उसको वापस मिल गयी थी। शुरुआत में वह उसे ढूँढना नहीं चाहता था, क्योंकि उसका आत्म-गौरव उसे रोक रहा था। लेकिन वह अपने आपसे इस संघर्ष में हार गया और एक दिन रात के खाने के वक्त वह गया और उसने वह किताब फिर से ले ली।

मिसेज पीचम से उसकी बातचीत के नतीजे के तौर पर उसके शान्तिपूर्ण अध्ययन में एक बाधा आयी।

जब उस परेशान माँ ने उसे बताया कि उसकी अभागी बेटी ने व्यापारी मैकहीथ से शादी कर ली है, तो उसे अपनी जिन्दगी के उस सबसे बुरे वक्त की याद आ गयी जब, सेना निकलने के बाद और अपने मुआवज़े के पैसे वंचित कर दिये जाने के बाद, वह एक सैनिक की पत्नी के साथ रहा था। उसका नाम मैरी सॉयर था और वह एक बी.शॉप की मालकिन थी। असावधानी से उसने उसके बारे में कुछ शब्द बोल दिये। उस शाम मि.पीचम ने उसे ऑफिस में बुलाया और उसे कमीशन दिया।

वेस्ट इण्डिया डॉक्स में अभी भी कुछ दर्ज़न मज़दूर, विलियम कोक्स की

एक युक्ति की बदौलत उन तीन बूढ़े ढहते भारी-भरकम जहाज़ों की मरम्मत में लगे हुए थे, जिन्हें अंततः टुकड़े-टुकड़े हो जाने के पहले स्कॉटिश जायदादों से उगाहे गए पैसों की अच्छी-खासी रकम, एक समृद्ध बुकमेकिंग के धन्धे, हार्डविच के एक लगभग दिवालिया हो चुके रेस्तराँ, केनिंग्स्टन की जागीरों के एक खण्ड, लंकाशायर की एक कपड़े की मिल, और *ओल्ड ओक स्ट्रीट में सेकेण्ड हैण्ड सांगीतिक वाद्य यंत्रों को बेचने के एक विशाल धन्धे* को नये इलाकों में स्थानान्तरित करने में एक महती भूमिका निभानी थी। और ख़तरे में पड़ी इन फर्मों में से उस फर्म को हर कीमत पर बचाना था जिसका ज़िक्र आखिरी में किया गया है।

खण्ड - दो

दुकानदार मैरी सॉयर की हत्या

शार्क के दांत होते हैं और
आप उन्हें देख सकते हैं उसके चेहरे पर,
और मैकहीथ, उसके पास उसका छुरा है मगर
वह छिपाता है उसे दूसरी जगह पर।

थेम्स के हरे जल के किनारे
अचानक कोई गिरता है
प्लेग से नहीं और कॉलरा से भी नहीं,
मैकहीथ की कृपा से।

और सैम मीयर अभी भी लापता है
कई अमीर आदमी ख़त्म कर दिये गये हैं
और मैकहीथ, उसी के पास उनका पैसा है
लेकिन साबित कुछ भी नहीं हो सकता।

जेनी टॉलर, जब वे उसे खोज पाए
उसकी छाती में घुसा हुआ था एक छुरा
मैकी टहलता है घाट के किनारे पर,
और उतना ही जानता है जितना बाकी सब।

कहाँ है अल्फांस ग्लाइट, वह गाड़ीवान?
क्या वह फिर कभी सूरज को देख सकेगा?

कुछ ऐसे हैं, शायद, जो जानते हों-
मैकी सचमुच कुछ नहीं कह सकता।

शार्क के पंख किरमिजी होते हैं
जब उसके शिकार का खून बह जाता है
लेकिन मैकहीथ, वह तो अपने दस्ताने पहने रहता है
और आप लाल रंग नहीं देख पाते।

(मैकी दि नाइफ के अपराध)

7

coelum, non animum mutant,
qui trans mare currunt.

मि. मैकहीथ

एक साधारण लंदनवासी के विचार में 'जैक दि रिपर' और आम तौर पर 'नाइफ' कहे जाने वाले उस अंजान हत्यारे जैसे चरित्रों ने कोई ख़ास भूमिका नहीं निभाई है। हालाँकि वे आए दिन लोगों को चौंकाते रहते हैं, लेकिन वे उन अनिश्चित समयों में, ट्रांसवाल में युद्ध चला रहे उन जनरलों से कुख्याति के मामले में प्रतिस्पर्द्धा करने की आशा नहीं कर सकते थे। इसके अलावा सबसे ज़्यादा सक्रिय छुरा नायक जितने लोगों के लिए ख़तरा था उससे अतुलनीय रूप से अधिक लोगों के लिए ये जनरल ख़तरा थे। लेकिन लाइन हाउस और व्हाइट चैपल में 'नाइफ' की प्रसिद्धि बोअरों से लड़ रहे जनरलों से कहीं ज़्यादा थी। व्हाइट चैपल के पत्थर की विशाल कोठरियों में रहने वाले लोग एक रंगीन जनरल और उनके अपने नायकों की उपलब्धियों के बीच भेद निश्चित करने के मामले में शानदार रूप से निर्णायक थे। उनके लिए यह बिल्कुल साफ़ था कि 'नाइफ' उन सरकारी चित्र-पुस्तकों के नायकों के मुकाबले कहीं ज़्यादा व्यक्तिगत ख़तरा उठाकर अपराध करता था।

लाइम हाउस और व्हाइट चैपल के पास अपना इतिहास और उसे पढ़ाने की अपनी पद्धति थी। शिक्षण शिशु काल में शुरू होता है और हर उम्र के लोगों द्वारा दिया जाता है। सबसे अच्छे शिक्षक बच्चे होते हैं; क्योंकि वे शासन करने वाले स्थानीय राजवंशों के प्रत्येक विवरण की जानकारी रखते हैं।

ये सरदार उन्हें कर देने से इंकार करने वाले लोगों को सज़ा देने के तरीकों के बारे में ठीक उतनी ही अच्छी तरह जानते हैं जितना वे सरदार जानते हैं

जिनका ज़िक्र स्कूल की किताबों में होता है। और लोगों की तरह सही और गलत की उनकी भी एक संहिता होती है; लेकिन इन लोगों में कमज़ोर लोग कम ही होते हैं, क्योंकि उनके पीछे पुलिस लगी होती है, जैसा और लोगों के साथ कभी नहीं होता। जाहिरा तौर पर, दूसरों की ही तरह, वे भी असली रूप की जगह किसी अलग रूप में दिखने की कोशिश करते हैं; वे इतिहास में गोलमाल करते हैं और किवदंतियाँ गढ़ते हैं।

कभी-कभी प्रभावशाली व्यक्तित्व एक उलका-पिण्ड के समान अंधकार से उभरते हैं। वे बाधाएँ जिन्हें पार करने में दूसरे, उतने ही प्रतिभावान लोगों को कई दशक लग जाते हैं, ऐसे व्यक्तित्व हफ्तों में निपटा देते हैं। शुरू से ही एक अनुभवी कारीगर की निष्कलंकता से अंजाम दिये गये चन्द दुस्साहसिक अपराध-और वे शीर्ष पर होते हैं। वह आदमी जिसे गन्दी बस्तियों में रहने वालों ने 'नाइफ' नाम दिया था कभी सच्चाई के साथ ऐसे कैरियर का दावा नहीं कर सकता था। लेकिन फिर भी उसने ऐसा किया। उसके करीबी सहयोगी, उसके गिरोह ने उसकी तुच्छ शुरुआत और उसकी शागिर्दी के दिनों के शर्मनाक रूप से नीच कामों को दबाने की अधिकतम सम्भव कोशिशें कीं।

लेकिन यही तय करना मुश्किल था कि जिस आदमी ने गिरोह की स्थापना की वह 'नाइफ' था या नहीं। उसने अपने लोगों से यह दृढ़तापूर्वक कहा था कि वही वह हत्यारा स्टैनफोर्ड सिल्स है; और इसी विश्वास से उसने अपने गिरोह को जोड़े रखा था। लेकिन डाटमूर में 1895 में एक व्यक्ति को मौत की सज़ा दी गयी जिसके बारे में यह कहा गया, जाहिरा तौर पर खुद उसके द्वारा नहीं, बल्कि पुलिस द्वारा कि *वही* स्टैनफोर्ड सिल्स था।

जिन कारनामों से 'नाइफ' की प्रसिद्धि फैली थी वह एक के एक जल्दी-जल्दी होने वाली हत्याओं की एक शृंखला थी, जिन्हें खुली सड़क पर अंजाम दिया जाता था। इन्हीं के लिए डाटमूर में उस आदमी को मौत की सज़ा दी गयी थी। यह एक मानी हुई बात है कि लोग एक लोकप्रिय नायक की मौत पर कभी विश्वास नहीं करेंगे, जैसा कि किचेनर और क्रूगर के हाल के मामलों में देखा जा सकता है; और निष्कर्ष के रूप में 1895 की सर्दियों में हुई कई हत्याओं को 'नाइफ' के मत्थे मढ़ दिया गया, जो निश्चित तौर पर डाटमूर के कब्रिस्तान के उस मृत व्यक्ति द्वारा अंजाम नहीं दिये जा सकते थे और उस व्यक्ति ने भी शायद ही यह कत्ल किये थे, जिसने उसका मुँहबोला नाम अपना लिया था और इन हत्याओं का दावा करता था।

जिस क्रूरता, निष्ठुरता और चालाकी से यह आदमी दूसरे अपराधियों को अपने कारनामों का श्रेय उसे देने का बाध्य करता था वह शायद उनके अपने शिकारों से सलूक से भी ज़्यादा भयानक था। यह केवल उस तरीके से थोड़ा कम जघन्य था जिससे हमारे विश्वविद्यालय प्राध्यापक अपने सहायकों के काम पर अपना नाम लगा देते हैं।

इन हत्याओं की प्रेरणा सम्भवतः शुद्ध रूप से भुखमरी के कारणों से आती थी, क्योंकि वह असाधारण रूप से निष्ठुर सर्दियाँ थीं और बेरोज़गारी बहुत ज़्यादा थी। लेकिन इस आदमी की, जिसने अपने गिरोह को संगठित करने के प्रयोजन से 'नाइफ' नाम का इस्तेमाल किया था, की एक और कमज़ोरी थी जो आम तौर पर उन लोगों में पाई जाती है, जो हम किताब खरीदने वालों से सुपरिचित क्षेत्रों में घूमते हैं। हमारे सबसे सफल उद्योगपतियों, लेखकों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, आदि, की तरह उसे भी अखबारों में यह पढ़ना बेहद अच्छा लगता था कि उसके कारनामे किसी भौतिक लाभ के लिए नहीं बल्कि इसके उल्टे *मनबहलाव* या किसी रचनात्मक अभिलाषा को पूरा करने के लिए या किसी अव्याख्येय *पैशाचिक अंतःप्रेरणा* के कारण अंजाम दिये गये थे।

सनसनीखेज अखबारों में लगातार ऐसे लेख छप रहे थे जो 'नाइफ' के अपराधों में मनबहलाव के पहलू पर ज़ोर देते थे।

लेकिन इस बात की पूरी सम्भावना है कि यह शैतान, हमारे अन्य प्रसिद्ध दोस्तों के समान अखबार पढ़ने के अतिरिक्त अपना बैंक बही खाता भी पढ़ते होंगे। जो भी हो, उसने जल्दी ही इस बात का अहसास कर लिया था कि किसी के साथी कर्मचारी हमेशा सबसे अधिक लाभ कमाते हैं; और यही वह अहसास है जो अकेले ही एक सफल कैरियर को सुनिश्चित कर सकता है।

शुरुआत में ये गिरोह छोटा था और इसकी गतिविधियाँ साधारण। उस वक्त भी हिंसात्मक डकैतियाँ, तथा, बिरले होने वाली क्रूर और बर्बर चोरियाँ भी देखी जा सकती थीं। ज़्यादा मौलिकता जब्त किये गये लूट के माल के निपटारे के कुछ तरीकों में दिखलायी गयी। इनमें से एक तो दुनिया भर अखबारों में छा गया।

एक दिन दो ताकतवर दिखने वाले सज्जन हैम्प्स्टीड के एक फैशनेबल रेस्तराँ के डाइनिंग-रूम में दाखिल हुए। वे पल भर के लिए कमरे में चारों और निगाहें दौड़ाते खड़े रहे और फिर एक टेबल पर बैठे एक व्यक्ति की तरफ कदम बढ़ाए जो काफी बाँके अन्दाज़ में सजा-धजा था।

उनमें से एक ने तेज़ आवाज़ में कहा, 'वह रहा वह। यहाँ बैठा है और मेरा पैसा फूँक रहा है! मेरा नाम कूपर है और इसका हॉक। मि. बैलिफ, ये है मेरी रिट! निर्णय को तत्काल लागू किया जा सकता है। उसकी बीच वाली उंगली पर जो अंगूठी है वह आराम से दो सौ पाउण्ड की है, और बाहर इनकी गाड़ी खड़ी है जिसका किराया एक पेनी तो है ही-जैसा कि पता ही चल जाएगा, जब हम इसकी नीलामी करेंगे!'

इस मौक़े पर बैरों को इस भद्र आदमी को उछलकर अपने इन बेशऊर लेनदारों की गर्दन पकड़ लेने से रोकते हैं।वह तब बलपूर्वक कहेगा कि वह उनके कर्जे से इंकार नहीं करता, लेकिन उसे उस तरीके पर आपत्ति है जिससे वे उसके सामानों की कुर्की कर रहे थे।

यह दृश्य उन तीन व्यक्तियों और कुछ और मेहमानों के बाहर जाने और गाड़ी देखने के साथ समाप्त हुआ। फिर एक पास के शराबघर में नीलामी हुई।

उसके बाद, वह देनदार और दोनों तगादा करने वाले वहाँ से चले गये, और इस तरह चोरी की गाड़ी और आभूषणों से जो आमदनी 'नाइफ' को हुई वह उस रकम से बहुत अधिक थी जो किसी 'चोरी का माल खरीदने वाले' को बेचकर हुई होती।

वह एक नया तरीका था। लेकिन इसे दोहराया नहीं जा सकता था। चोरी में बुराई थी 'चोर बाज़ार'। लूट के माल को पैसों में बदलना इस पूरे धन्धे का सबसे कमज़ोर पहलू रहा। गिरोह की गतिविधियों को विस्तृत करने की सारी तिकड़में इस रोड़े पर आकर ढेर हो जाती थीं।

'96 के आखिरी दिनों में 'नाइफ' अण्डरवर्ल्ड की नज़रों की पहुँच से लगभग ओझल ही हो गया, और *जिमी बेकेट* नाम के एक शान्तिप्रिय आदमी ने सोहो में फर्शी पत्थर बेचने की एक दुकान खोली। पड़ोस में ही उसका एक वुडयार्ड भी था। जब घर गिराए जा रहे थे तो उसने पुराने फर्शी पत्थर खरीद लिए और इसमें रसीदों के मामले में उसने बहुत सख्ती बरती।

इसके बाद व्हाइट चैपल में इन पत्थरों की व्यापक रूप से चोरियाँ हुईं। दिनदहाड़े कई छोटे ठेले आए और जब मज़दूर खाना खा रहे थे तो नए फर्शी पत्थरों का ढेर उसमें भरकर ले गए। किसी ने उनको रोकने के बारे में नहीं सोचा। ठेलों का काफिला जिमी बेकेट की दुकान की तरफ चला गया। लेकिन मि.बेकेट इन पत्थरों के लिए पक्की रसीदें दिखा सकते थे।

एक दिन गोदी के किनारे की पूरी सड़क ही साफ़ कर दी गयी; इस बार

काठ के साँचे हाथ आए। शाम के वक्त, जब ट्रैफिक सबसे ठसाठस था कुछ मज़दूर एक ठेले के साथ प्रकट हुए; उन्होंने सड़क के आर-पार बैरियर लगाए, उसे तोड़ा-फोड़ा, और लकड़ी के साँचे ठेले में भर लिए।

यह घपला अखबारों में नहीं आया क्योंकि उस समय कंट्री काउंसिल एक फर्म के मामले की छानबीन कर रही थी जिसने बेदाग वैधता के साथ और कुछ पुराने और पूरी निगरानी के साथ रोक दिये गये ठेकों के आधार पर कुछ ऐसी सड़कों की ज़िम्मेदारी ले ली थी जिनकी पहले ही कुछ अन्य और छोटी फर्मों द्वारा मरम्मत हो चुकी थी; जिससे कि उस बड़ी फर्म का फिर से भुगतान किया जाना था हालाँकि सड़कों को किसी मरम्मत की ज़रूरत नहीं थी। अधिकारी नहीं चाहते थे कि इस मामले में कोई भी तुलनाएँ की जाएँ।

इस बार फिर हत्या और नरहत्या की कई घटनाएँ हुईं जिनके लिए 'नाइफ' गिरोह को ज़िम्मेदार माना गया, ख़ास तौर नरहत्या के लिए। लेकिन अखबारों में इनका बेहद कम ज़िक्र हुआ, क्योंकि इन सभी घटनाओं में शिकार मानवता के निम्नतम वर्गों से आते थे। लगभग सारे शिकार अपराधी थे जिन्हें जानबूझकर आयोजित झगड़ों में गोली मार दी गयी।

यहाँ इस बात में कम ही सन्देह था कि ये हत्याएँ इस गिरोह द्वारा ही की गयीं थीं।

इस बार भी गिरोह ने सड़क चलते की जाने वाली डकैतियों को पूरी तरह छोड़ दिया और अपना पूरा ध्यान सेंधमारी में लगा दिया। उनकी विशेषता बड़े पैमाने पर दुकानों में सेंध लगाने की थी।

वर्ष '97 में ही 'नाइफ' गिरोह में आराम से 120 से ज़्यादा सदस्य थे। संगठन का निर्माण बड़ी सावधानी के साथ किया गया था; ज़्यादा से ज़्यादा दो या तीन सदस्य ही 'मुखिया' को चेहरे से जानते थे। उन लोगों मे स्मगलर, 'चोर-बाज़ारिये' और वकील शामिल थे। 'नाइफ' (यानी वह आदमी जो अपने आपको इस नाम से पुकारता था) एक बेहद घटिया सेंधमार था और स्वेच्छा से इस बात को स्वीकार करता था। लेकिन दूसरी और, वह एक बेहतरीन संगठनकर्ता था। और सभी जानते हैं कि वर्तमान युग के जयपत्र संगठनकारी वर्ग को मिलते हैं। वे सर्वाधिक अपरिहार्य प्रतीत होते हैं।

दरअसल 'नाइफ' गिरोह ने अविश्वस्नीय रूप से अल्प समय में ही व्यावहारिक तौर पर ऐसी हर चीज़ को अपने नियंत्रण में लाने में सफलता पा ली थी जो दुकानों में सेंधमारी की श्रेणी में आती हैं। किसी अकेले ऑपरेटर के

लिए इस क्षेत्र में आना बहुत ख़तरनाक हो गया। और यह गिरोह पुलिस को अपना सहअपराधी बनाने पर शर्मिन्दा भी नहीं था। हर किसी को मालूम था कि मि. बेकेट के मुख्यालय में मित्र थे।

पुलिस को धोखा भी गिरोह के आंतरिक अनुशासन के सशक्तीकरण का एक माध्यम था। वर्ष '98 की शुरुआत में ऐसे सदस्य अभी भी यही जानते थे कि संस्थापक सभी, या लगभग सभी हैं, जिन्हें पुलिस ने गिरफ्तार किया और कई वर्षों की सज़ा भी मिली।

एक दिन मि.बेकेट किसी मि.मैकहीथ के हाथों बिक गये जिन्होंने अभी-भी शहर में कई दुकानें खोली थीं, तथाकथित बी.शॉप्स जिन्हें वे सस्ते सामानों से भर देना चाहते थे।

जब जिमी बेकेट, लकड़ी व्यापारी, इंग्लैण्ड से ग़ायब हुआ-कहने के लिए कनाडा चला गया था-तो जैसा कि अण्डरवर्ल्ड फौरन ही जान गया, कोई *ओ'हारा* नाम का व्यक्ति प्रकट हुआ, जो महान प्रतिभा वाला नौजवान था, और जो संगठन का आधिकारिक मुखिया बन गया।

मि.बेकेट ने उसकी सिफारिश मि.मैकहीथ से की और प्रत्यक्ष तौर पर मि. मैकहीथ ने भी उसे काफी महत्व दिया क्योंकि उससे उन्हें बिकाऊ सामानों के बड़े और प्रायः मिलने वाले जखीरे मिलते थे। इसका मतलब था 'चोर-बाज़ार' बिरादरी की समाप्ति।

संगठन को नियमित ग्राहक मिल गया था और वह ज़बर्दस्त तरीके से फला-फूला।

इस प्रकार मि.मैकहीथ अपनी कीमतें बहुत नीचे रखने में सक्षम थे, लेकिन उन्हें कभी मालूम नहीं होता था कि उन्हें किस किस्म के सामान मिलने वाले हैं। अंततः यही सबसे बेहतर साबित हुआ कि ऐसी वस्तुओं को चुना जाय जिनकी बाह्याकृति बी.शॉप्स के दुकानदारों के उद्योग में बदली जा सके। सो इन दुकानों को अपने आपको प्राप्तकर्ता से उपभोक्ता में परिवर्तित करना पड़ा।

विकास के इस चरण में पूँजी हासिल करने का प्रश्न खड़ा हुआ। गिरोह का दुकानों और गोदामों में सेंधमारी की इसकी गतिविधियों में और विस्तार उतनी पूँजी से अधिक की माँग करता था जितनी मि.मैकहीथ के हाथ में थी। उनका उद्यम अब उसी दुविधा में था जिससे हमारे सभी कारोबारी लोग बेहद डरते हैं।

अगर आपूर्तिकारी संगठन को बड़ा बनाया जाता तो दुकानों की मौजूदा संख्या मालों की बड़ी आपूर्ति को खपाने में अक्षम होती, जबकि अगर दुकानों

की संख्या को बढ़ाया जाता तो पहले वाला संगठन छोटा साबित होता। आपूर्ति और माँग में जिस बढ़ोत्तरी की परियोजना थी उसके लिए दोनों ही व्यवस्थाओं को एक साथ विस्तार देना पड़ता।

पहले दूसरी दुकानों की श्रृंखलाएँ बड़ी व्यापार संस्थाएँ थीं जिनका अच्छे बैंकों के साथ मेलजोल था। उनके बीच तीखी प्रतियोगिता थी। मि.मैकहीथ इन सबसे जीतने के लिए जितने संसाधनों का इस्तेमाल कर रहे थे, इस लक्ष्य में उससे कहीं ज़्यादा संसाधन ज़रूरी थे।

ये स्थिति थी जब मि.मैकहीथ ने मिस पॉली पीचम से शादी की।

एक खूबसूरत गर्मी की शाम मि.मैकहीथ एक पुरानी उपयुक्त घोड़ागाड़ी से पश्चिमी उपनगर गये जहाँ नेशनल क्रेडिट बैंक के मि.मिलर रहते थे।

उन्होंने हल्का भूरा सूट पहन रखा था और भीड़-भाड़ सड़कों से होकर हुई ये यात्रा मनोरंजक थी; लेकिन वह खुश नहीं थे। उनकी शादी एक निराशा का विषय बन गयी थी।

उसकी पत्नी उन सभी से खूबसूरत थी जिनका पति वह पहले रह चुका था, और इस प्रकार वह उससे प्यार करता था; अब वह बीस साल का नहीं रहा था और रोमाण्टिक होने के बारे में उसमें किसी तरह की कोई भावना नहीं थी। कभी-कभी उसे इस विचार को अपने दिमाग से निकालना पड़ता था कि एक तरह से वह ठगा गया है।

मि.मिलर ने अपने छोटे-से घर की सीढ़ियों पर उसका स्वागत किया। उनके पीछे खड़ी थीं उनकी पत्नी, जो पचास से ऊपर की एक मिलनसार, बातूनी महिला थीं, और जिन्होंने फौरन मैकहीथ से अपने बेटे की तरह व्यवहार किया। उन्होंने साथ चाय पी और मिलर ने बीते दिनों की बातें की। उनमें कुछ कड़ियाँ उन्होंने नेशनल क्रेडिट बैंक के इतिहास से भी जोड़ीं।

बैंक का संस्थापक रॉथ्सचाइल्ड वालों के यहाँ उस वक्त कर्मचारी हुआ करता था जब उस घराने ने अपने शुरुआती महान युद्ध लड़े थे। उसका नाम टॉक था। मिलर ने एक कहानी भी जोड़ी जो बूढ़ा टॉक उन्हें अक्सर सुनाया करता था।

रॉथचाइल्ड घराना तब पहले से ही बड़े पैंमाने पर कारोबार में लिप्त था और पूरे महाद्वीप की सबसे महत्वपूर्ण फर्मों मे उसकी गिनती होती थी, जब उसकी लंदन शाखा के प्रमुख, नथैनियल रॉथचाइल्ड ने एक नई युक्ति आजमायी। वह युद्ध जैसा समय था। फर्म की प्रारंभिक कार्रवाइयाँ मुख्यतः कुछ सरकारी प्रोजेक्टों

में पूँजी लगाना था। ये पूरी तरह से युद्ध आपूर्तियों से नहीं जुड़े थे, मगर निश्चित रूप से उनमें ये भी शामिल थीं। अपने बड़े ग्राहकों के साथ बैंकों के खाते ज़्यादातर बहुत जटिल थे; वहाँ थोड़ा ढीलापन भी था। कई आकस्मिक घटनाओं ने हर चीज़ को काफी असाधारण रूप से खर्चीला बना दिया। सारे लेन-देन सैंकड़ों अतिरिक्त खर्चों के बोझ तले दबे थे। इनका सम्बन्ध अधिकांशतया उन लोगों से था जो अज्ञात बने रहना चाहते थे। बूढ़े नथैनियल, जो उस वक्त एक नौजवान आदमी ही था, के पास ऐसे कारनामे तैयार करने की तरकीब थी जिनका वैसे ही पालन किया जाय जैसा कि उसमें निर्दिष्ट हो। वह खर्चों की गणना पहले ही कर लेना और फिर उसी रकम तक सीमित रहना चाहता था, चाहे बीच मे कोई भी घटना हो जाए।

इस तरह उसने अर्थप्रबन्ध की दुनिया में उस गुणवत्ता को समाविष्ट करने की आशा की जिसे निजी जीवन में ईमानदारी कहते हैं।

यह एक साहसपूर्ण विचार था और दूसरे रॉथचाइल्ड वाले जो, जैसा कि हर कोई जानता है, बैंकर थे, शुरुआत से ही प्रबलता से इसके विरुद्ध थे। उन्होंने परिवार के मुखिया को डराने का प्रयास किया। मगर उसने उनकी कोई परवाह नहीं की और अपने क्रान्तिकारी विचारों को तत्काल व्यवहार में उतार दिया।

जब मैकहीथ उस छोटे-से बागीचे में बुरुंश के पेड़ों को देख रहा था तो मिलर ने उसे वह तरकीब समझाई। वह कुछ हद तक जटिल ही थी, इसका कॉफीघर में किसी कोने से कुछ लेना-देना था।

इस अटकलबाजी के दौरान पूरा परिवार निराशा में डूब गया था। दूसरे भाई तो तंत्रिका विशेषज्ञ से सलाह लेने की हद तक चले गये और एक बार नथैनियल को ज़बर्दस्ती उसके दफ्तर से घसीट लाने और गुप्त उपचारालय में बन्द करने का प्रयास भी किया। लेकिन डॉक्टर के मुकाबले तो उन्हें कम ही झेलना पड़ा। उसे तो पूरी तरकीब सुननी पड़ी और उस आदमी का सामना करना पड़ा। उस तरकीब ने उसे और रोग-निदान करने से रोक लिया।

डॉक्टर अपने दो सहायकों के साथ नथैनियल के दफ्तर में घुसा।

'अब और चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है, मि.रॉथ्सचाइल्ड। आपके भाइयों ने मुझे बताया कि हाल ही में आपके दिमाग में कुछ बेहद दिलचस्प तरकीबें आयीं, पर आप काम करते-करते थक गए हैं और थोड़ा कमज़ोर हो गये हैं। अब आप मेरे साथ वेल्स में एक प्यारे से शान्त घर में चल रहे हैं; अब कुछ समय तक आपको किसी चीज़ के बारे में परेशान होने की ज़रूरत नहीं होगी और आप एक

तन्दुरुस्त और खुशनुमा ज़िन्दगी जियेंगे। हम साथ में आपकी तरकीबों के बारे में बात करेंगे जो बिलाशक बेहद फायदेमन्द हैं। कुछ मत कहिये। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ और आपको समझता हूँ। आप सही हैं और आपके परिवार वाले ग़लत हैं; आप अपने खातों में कोई खर्चे नहीं चाहते, यही तो होना भी चाहिए। क्या आप मुझे तुरत बता सकते हैं कि 13 गुना 4 कितना होता है?'

डॉक्टर को पीछे हटना पड़ा, मगर नथैनियल अक्सर अपने आपको निराशाजनक स्थितियों में पाता। उसे हर किसी ने धोखा दिया था; कोई अपने करारनामे के मुताबिक नहीं चलता था, हालाँकि उसे खुद चलना पड़ता था। लेकिन अंततः यह उद्यम सफल हुआ हालाँकि उसके भाई पूरी तरह ग़लत नहीं थे जैसा कि हर किसी ने बाद में सोचा। परिवार का भाग्य वास्तव में एक तिनके के सहारे था। और सफलता सिर्फ इसलिए हासिल हुई क्योंकि तरकीब बिल्कुल अद्वितीय और अनपेक्षित थी। हर जगह ख़र्चे लगते थे; केवल रॉथ्सचाइल्ड वाले कुछ नहीं लगाते थे। एक विशेष रूप में यह अनुचित प्रतियोगिता थी। सरकारें स्वाभाविक रूप से थोक तौर पर रॉथचाइल्ड वालों के पास दौड़ी आईं, कम-से-कम तब तक जब तक दूसरों ने भी यह तरकीब नहीं अपनायी। आज पूर्ण ईमानदारी सभी बन्दोबस्तों में फेर की बात है, लेकिन किसी को किसी न किसी वक्त यह विचार तो आना ही था। मानवता को हर चीज़ के लिए, प्रगति की सीढ़ी पर ऊपर जाने वाले हर कदम के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

मैकहीथ पूरा ज़ोर लगाकर सुनता रहा। वह मि.मिलर की कहानी के प्रवाह को बमुश्किल ही समझ पा रहा था; कहने का अर्थ है कि वह कभी इसकी तह तक नहीं पहुँच सका।

अन्त में उन्होंने अनिश्चितता के साथ कहा, 'यह आपको इस बात का अहसास कराता है कि धन्धे में *हर चीज़* को आज़माना चाहिए। तुमको ऐसा नहीं लगता? अगर कोई प्रगति करना चाहता है और साल के अन्त में अच्छी-खासी बचत दिखलाना चाहता है, तो उसे हर चीज़ को आज़माना चाहिए, यहाँ तक कि सबसे प्रतिभाहीन प्रस्तावों को भी।'

अपनी चाय ख़त्म करने के दौरान, जिसमें वह अपने कप में काफी अन्दर तक अपना अँगूठा डाले हुए था, उसने कुछ गम्भीर चिन्तन किया। उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा था कि मिलर उसके विचारों के बारे में कुछ शंकालु था और उसे दिखाना चाहता था कि असली कारोबारी कुशाग्रता क्या होती है। अतः जब मिलर ने बोलना ख़त्म किया तो उसने अपनी कुछ योजनाओं को सुबुद्धिपूर्वक

रखने का प्रयास किया।

शुरू करने से पहले, उसने सावधानी से अपने सीने वाली जेब से दो बार मोड़ी हुई अखबारी कतरनें निकालीं जिनमें बी.शॉप्स के उसके सिद्धान्त, छोटे दुकानदारों की स्वतन्त्रता, आदि पर उसके लेख थे। उन्हें लाल पेन्सिल से घेर रखा गया था। मिलर पहले से ही उन्हें पढ़ चुका था।

फिर मैकहीथ ने अपने सीने वाली जेब से एक सिगार निकाला, उसके अगले छोर को दांतों से काटा, उसे दो मोटी उंगलियों से बजरी बिछे रास्ते पर फेंका और तकल्लुफी से उसे जलाया। उसके पास कुछ और विचार थे जो अब तक अखबारों में छपे नहीं थे।

उसने समझाया कि फिलहाल उसकी मुख्य गतिविधि ग्राहकों का अध्ययन था।

ग्राहक आम तौर पर दुकानदार को एक अनिर्णायक, कंजूस, दुर्भावपूर्ण और शंकापूर्ण व्यक्ति दिखता है। वह पूरी तरह दुश्मनाना प्रतीत होता है। दुकानदार में ग्राहक अपना ऐसा दोस्त और सलाहकार नहीं देखता है जो उसके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है, बल्कि दुष्ट इरादों वाले एक ऐसे शैतान प्राणी को देखता है जो उसके साथ धोखा और विश्वासघात करने की फिराक में है। बदले में तर्जुबों से पका दुकानदार दुविधा में पड़ जाता है और ग्राहक का दिल वाकई में जीत लेने, उसे बेहतर बनाने, उससे व्यक्तिगत सम्पर्क बनाने, और संक्षेप में, उसे एक उच्चवर्गीय ख़रीदार में तब्दील करने को कोई भी उम्मीद छोड़ देता है। वह धैर्यपूर्वक काउण्टर पर अपने बिकाऊ सामान बिखेर देता है और अपनी एकमात्र उम्मीद उस चाहत और उस प्रकट आवश्यकता पर टिका देता है जो जब-तब ग्राहक को कुछ ख़रीदने पर बाध्य करती हैं।

मगर दरअसल यहीं पर ग्राहक को एकदम ग़लत समझ लिया जाता है। अपने अस्तित्व की गहराइयों में वह उससे कहीं बेहतर है जितना कि वह दिखता है। बात सिर्फ इतनी होती है कि उसके परिवार के अन्दर, या उसके कारोबारी कैरियर में कुछ दुखद अनुभवों से उसे चुप्पा और शंकालु बना दिया होता है। उसके अन्तर्मन की गहराई में अभी भी इस उम्मीद की रोशनी टिमटिमा रही होती है कि उसे अभी भी उस चीज़ के रूप में पहचाना जा सकता है जो वह वास्तव में हैः एक सम्भावनासम्पन्न ख़रीदार! क्योंकि वह ख़रीदना चाहता है! कितना कुछ है जिसकी उसे ज़रूरत है! और अगर उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं होती तो वह नाखुश महसूस करता है। इसलिए वह चाहता है कि कोई उसे इस बात

पर सहमत कर ले कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है! कितना कम जानकार होता है वह।

मैकहीथ अपना चम्मच महोगनी की टेबल पर ठकठकाते हुए बोला, *'एक दुकानदार होने का मतलब है एक शिक्षक होना। "बेचने" का मतलब है उपेक्षा से, जनता की उस भयंकर उपेक्षा से, लड़ना। कितने लोग ऐसे हैं जो जानते हैं कि वे कितने ख़राब तरीके से जी रहे हैं! वे कठोर और चरमराते बिस्तरों पर सोते हैं, वे तकलीफदेह और बदसूरत कुर्सियों पर बैठते हैं। उनकी आँखें और पिछवाड़े लगातार तकलीफ में रहते हैं; वे उड़न्त-पड़न्त ढंग से इस चीज़ को महसूस भी करते हैं, लेकिन जब वे किसी अलग तरह की चीज़ को देखते हें, तभी वे जान पाते हैं। आपको उन्हें बच्चों की तरह बताना ही चाहिए कि उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत है। उन्हें वह चीज़ ज़रूर ख़रीदनी चाहिए जिसकी उन्हें ज़रूरत है, वह नहीं जो उनके पास होनी ही चाहिए। और इस उद्देश्य में सफल होने के लिए आपको उनका मित्र बनना ही पड़ता है। हर हालत में आपको उनके प्रति मित्रवत ही रहना चाहिए,* नम्र। *निश्चित रूप से एक व्यक्ति जो कुछ नहीं ख़रीदता नीच मालूम पड़ता है। एक कंजूस! आप अनिच्छा से नफरत और घृणा से भरकर सोचते हैं। लेकिन एक दुकानदार के रूप में आपको कभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए। आपको मित्रवत, हमेशा मित्रवत बने रहना चाहिए, भले आपका दिल टूट जा रहा हो।'*

मैकहीथ को जितना अहसास हुआ वह उससे कहीं ज़्यादा उत्तेजित हो गया था। यही उसकी छोटी दुकानों की दुखती रग दी। लोग पर्याप्त मित्रवत नहीं थे। वह अपने 'ख़रीदारों' के जरिये उन सब पर लगातार निगाह रखता था, और उन दुकानदारों को सज़ा देता था जो मित्रवत नहीं थे। लेकिन इससे बहुत फ़ायदा नहीं हुआ। जहाँ तक इस तरकीब का सवाल था, वह बड़ी दुकानों के मामले में ज़्यादा कारगर थी। पूरा स्टाफ मुस्कराता रहे, इसके लिए ज़रूरी था कि उन्हें अपनी पीठ पर चाबुक का अहसास रहे। अगर कोइ ग्राहक चुनने में काफी ज़्यादा वक्त लगाता तो छोटे दुकानदार फौरन उस किराए के बारे में सोचने लगते जो अभी उसे देने होते थे। वे ऐसा चेहरा बनाते जैसे उनकी पूरी दुनिया तबाह हो रही हो, सो ग्राहक बिना कुछ ख़रीदे ही दुकान से निकल जाते। जाहिरा तौर पर ग्राहक अपने आपको दुकानदार की बदहाली का ज़िम्मेदार बनाए जाने से नफरत करता है। अगर दुकानदार उसपर ऐसा जाहिर कर देता है कि वह कुछ न ख़रीदकर उसपर एक जानलेवा चोट कर रहा है, तो वह नाराज़ हो जाता है। आपको हर

हालत में दिल में मौत के ख़याल के साथ भी मुस्कराना सीखना चाहिए! मैकहीथ ने सोचा कि मैं उन्हें खुश दिखना सिखाऊँगा, भले ही मुझे बिच्छुओं द्वारा उन्हें रास्ते पर लाना हो, और फिर उसने अपने माथे से एक विशालकाय रुमाल से पसीना पोछा।

बिना किसी हास्य के उसने बोलना जारी किया।

उसने जनता की कमज़ोर और अविकसित क्षुधाओं को जागृत करने के कई तरीकों का ज़िक्र किया। सामानों के बीच कुछ ख़ास तरीके से गड़बड़ करने से चमत्कार हो जाते हैं। इस तरीके से ग्राहक खोजें कर सकता है। वह कुछ उपयोगी चीज़ों को ताड़ लेता है। थोड़े ही समय बाद उसकी निगाहें उल्लेखनीय रूप से तेज़ हो जाती हैं। एक चीज़ ढूँढते हुए वह कोई दूसरी चीज़ ढूँढ लेता है। सामानों के अम्बार में उसकी बाज़-सी निगाहें एक दिलपसन्द साबुन ढूँढ लेती हैं। इसका उस माल से कोई ताल्लुक नहीं होता जिसकी ज़रूरत उसे एप्रनों के लिए होती है, लेकिन क्या सिर्फ इसी वजह से वह कोई कम उपयोगी हो जाता है? नहीं! वह उस साबुन को ख़रीदता है। वह नहीं जानता कि कब उसे इसकी ज़रूरत पड़ जाए। बस उसने एक बार ख़रीदा और हो गया ख़रीदार।

निश्चित तौर पर कीमतें एक निर्णायक कारक हैं। अगर उनमें बहुत ज़्यादा असमानता होती है, तो वे ग्राहक को थका देती हैं। वह जोड़ना-घटाना शुरू करता है। और हर हालत में उन्हें रोका जाना होता है। मैकहीथ एक नयी व्यवस्था लाना चाहता था जिसमें सारी कीमतें कुछ श्रेणियों में आ जाएँगी। कोई भी चीज़ खरीदार को इस कदर आत्मविश्वास के नशे से नहीं भर देती हैं, क्योंकि यह ख़ास रकम में ही उसके द्वारा खरीदे जा सकने वाली चीज़ों की सम्भावना विशाल हो जाती है। क्या! इस विशाल गार्डन फर्नीचर की कीमत सिर्फ इतनी है? और हजामत बनाने का यह जटिल सरंज़ाम भी कोई ख़ास महँगा नहीं है?

लेकिन ये कीमतें बेहद सावधानी से ही नियत की जानी चाहिए। जनता बड़ी संख्याओं से उतनी आसानी से नहीं डरती जितना कि बड़ी रकमों से। ऐसी तमाम औरतों के लिए दो शिलिंग बहुत ज़्यादा होते हें जो एक शिलिंग ग्यारह पेंस और आधी पेनी स्वेच्छा से दे देंगी।

मिलर ने अपनी उड़ती निगाहों से उसे जिज्ञासा के साथ देखा। मैकहीथ अब पूरे रंग में था और उसने मिलर को अपनी मोल-भाव वाली दुकानों की तरकीब समझाई : सामानों का केवल एक छोटा-सा संग्रह और तीन या चार से ज़्यादा तरह की चीज़ें नहीं। इसमें कोई नुकसान नहीं है अगर कुछ सामानों का मेल

जनता को बिठाना पड़े। मसलन, कोई बागीचे वाली कुर्सियाँ खरीदे जिनमें अलग-अलग डेक-कुर्सियाँ, फुटरेस्ट और छतरी शामिल हो, इस तरह एक साथ खरीदने पर वे ज़्यादा महँगी पड़ती बनिस्बत पहले तय हुई उच्चतम कीमत के, और फिर भी वे तीन श्रेणियों के भीतर आ जाती हैं।

वर्कशॉप्स वाली बिल्कुल छोटी दुकानों को, जो जूते या अण्डरवियर या तम्बाकू बेचती थीं, पहले की तरह ही चलाया जाना था और सीमित उधार ही दिया जाना था। लेकिन बड़ी दुकानों को जितना सम्भव हो उतना अधिक सामानों से भर देना था। एकक कीमतों को वह आधार विचार बनना था जो लंदन पर हावी होने वाला था। वह इनकी शुरुआत एक ज़बर्दस्त ख़रीद वाले सप्ताह के साथ करना चाहता था।

मिलर अपनी पत्नी की ओर मुड़ा।

मिसेज मिलर विचारशीलता से उठीं और कमरे से बाहर चली गयीं। मिलर ने विचारों में खोए-खोए अपना सफेद सिर हिलाया और अपने मेहमान की तरफ देखा मानो शब्द ढूँढ रहा हो। अंततः उसने पूछा 'तुम्हारी शादी को लेकर मि. पीचम का क्या रवैया है? क्या वह इससे सहमत हैं?'

'उनका दिल पत्थर का नहीं है।' मैकहीथ ने जवाब दिया।

'वाकई?' अचम्भित मिलर ने कहा।

मैकहीथ ने अपने कप से एक घूँट लिया। वे कुछ पलों के लिए शान्त रहे। बाहर गली में कुछ बच्चे चिल्ला रहे थे। वे किसी चीज़ के बारे में कसम खा रहे थे।

मिलर ने सौम्यता के साथ बोलना जारी किया :

'तो सबकुछ बिल्कुल सामान्य है। तुम समझ ही सकते हो कि इस मामले में हम तुम्हारे ससुर को साथ लेना चाहेंगे।दरअसल उन लोगों की वजह से जो हमसे पूछ सकते हैं कि क्यों खुद तुम्हारे ससुर इस योजना में नहीं थे। आख़िर वही वास्तव में वह आदमी हैं जो तुम्हारी तरकीब की सबसे ज़्यादा समझ रखते, क्योंकि वह तुमसे रिश्ते से बँधे हैं। मि.पीचम को अपने साथ लाओ, और पाँच मिनट में सारे काम निपटा दिये जाएँगे, मैकहीथ!'

आकस्मिक अशिष्टता के साथ मैकहीथ ने पूछा, 'और अगर अपने ससुर से किसी समर्थन के लिए कहना मेरे लिए मुनासिब न हो तो?'

'उत्तेजित मत हो, मैकहीथ। इसकी कोई मामूली से मामूली वजह भी नहीं हो सकती। तुम्हें समझना चाहिए कि हमें सावधान रहना पड़ेगा। बैंक कोई हमारी

जागीर नहीं बल्कि छोटे टॉक की सम्पत्ति है, जो एक अपवादस्वरूप आकर्षक बच्चा है। बिल्कुल ठीक है कि तुम्हारे पास दुकानें हैं। लेकिन वाकई, यह तो तुम्हारी वह तरकीब है जिसमें हमें दिलचस्पी है, दुकानें गौण महत्व की हैं, मैं समझता हूँ कि वे काफी साधारण हैं। एक जैसी कीमतों, बिक्री सप्ताहों और छोटे मालिकों की स्वतन्त्रता के फल के तुम्हारे विचार ही मुख्य बिन्दु हैं, और रहते हैं।'

मैकहीथ कुछ तेज़ी से वहाँ से चला गया।

कुछ रास्ता उसने पैदल तय किया। अन्धेरा तो पहले से ही हो चुका था। वह अपनी मोटी छड़ी घुमाता और उसे सामने की छोटे बागीचे की यू की झाड़ियों में बार-बार घुसा देता। वह बेहद असन्तुष्ट था।

पिछले दिन दोपहर में पॉली उसके साथ थोड़ी देर के लिए पार्क में टहलने गयी थी। दो घण्टे बाद वह 'घर' चली गयी थी। उसने उसे रोकने की हिम्मत नहीं की थी।

उसने किस अभागे दिन शादी कर ली थी?

अगले दिन उसने मिलर और हॉथॉर्न से बैंक में आगे की बातचीत की। स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। ज़्यादा से ज़्यादा वे अगली मुलाकात की तारीख तय कर पाए।

मैकहीथ ने बूढ़े सज्जनों को यह समझाने की हर सम्भव कोशिश की कि उसके विचार कितने शानदार हैं। उसने असाधारण जीवन्तता के साथ प्रतियोगिता पर उनके प्रभाव का विवरण दिया।

उन्होंने कदरदाँ के समान और ग़ौर से उसे सुना और फिर वही सबकुछ कहा जो हवाई किले बनाने के समान था। उसे अपने ससुर की इसमें दिलचस्पी पैदा करनी पड़ेगी और फिर सबकुछ ठीक हो जाएगा।

इस चिड़चिड़वा देने वाली बातचीत के पूरे सिलसिले के दौरान मैकहीथ इस प्रभाव से छुटकारा न पा सका कि यह मिलर के साथ बीती शाम ही थी जिसने सारा गुड़गोबर कर दिया था। शायद इन पुराने साँचों में ढले लोगों के लिए उसके विचार ज़्यादा प्रगतिशील थे। बूढ़े टॉक की मूर्खतापूर्ण रॉथ्सचाइल्ड कहानी पर वह फिर गुस्से से भर गया।

इस बात की सुगम सम्भावना तो काफी बाद में फैनी क्राइस्लर के बताने पर उसे सूझी कि शायद उसके अज्ञात अतीत और उसके मालों के उतने ही अज्ञात स्रोत, जिसका सीधा सम्बन्ध उसके अतीत से ही था, के कारण पुराना और प्रतिष्ठित नेशनल क्रेडिट बैंक उसे साथ जुड़ने में आनाकानी कर रहा हो।

तय की गयी बैठक में स्वाभाविक रूप से मैकहीथ के पास उन्हें बताने के लिए कुछ भी नया नहीं था। उसे स्वीकार करना पड़ा कि वह और मि.पीचम एकदम 'परस्पर विरोधी' हैं। मिलर और हॉथॉर्न ने फौरन एकदम अचम्भित भावमुद्रा बना ली। उन्होंने उसे बाहर नहीं फेंका मगर काफी मुँहफट तरीके से उससे कुछ बेशऊर और हक्का-बक्का कर देने वाले सवाल पूछे।

वे वाकई निराश हुए थे। अब तक उन्होंने उस नयी ईजाद को लेकर सन्तोष कर लिया था और दरअसल वे अपना पुराना जाल ही नये तालाब में डालने को उत्सुक थे।

कुछ हफ्तों बाद मैकहीथ को पता चला कि वे *क्रेस्टंस चेन स्टोर्स* से बातचीत कर रहे हैं।

यह उसके लिए एक कड़वा घूँट था। क्रेस्टन चेन शॉप्स ही वे दुकानें थीं जिनकी मैकहीथ अपने महत्वाकांक्षी ढाँचे के रूप में कल्पना करता था; अच्छी जगहों पर बिकाऊ मालों के एक बढ़िया संग्रह के साथ विशाल और प्रभावशाली इमारतें। उसकी तरकीब का एक हिस्सा इस संगठन को इसके घुटनों पर आने पर मजबूर कर रहा था। इसके उल्टे अब उसे ख़बर मिल रही थी कि नयी पूँजी लगाने के साथ-साथ नयी *ईजादें* करने की योजना लगा रहा था। उसने महा *बिक्री सप्ताह* की घोषणा की जिसमें जनता के लिए हर तरह की आश्चर्यजनक चीज़ें होंगी। बिल्कुल जाहिर था कि यह उसके विचारों की बेहद दुष्ट किस्म की चोरी थी। स्पष्ट रूप से मैकहीथ को उन दो बुड्ढों पर कभी यकीन नहीं करना चाहिए था। और इससे वह भड़क गया था।

वह फैनी के सामने गरजा, *'क्यों हर कोई मुझे धोखा देने की कोशिश करता है? मैं प्रतिष्ठित बनने की हर सम्भव कोशिश करता हूँ। मैं हिंसा के किसी भी रूप में इस्तेमाल से दूर रहता हूँ, मैं कानून की गुलामी करता हूँ, या किसी भी रूप में उसके काफी करीब तो रहता ही हूँ। मैंने अपने बीते कल को भी ग़लत ठहरा दिया है, ठाठ से खड़ा कॉलर लगाया, एक पाँच कमरे का मकान किराए पर लेता हूँ, एक फायदेमन्द शादी करता हूँ, और इस उच्च अवस्था में जो पहली चीज़ मेरे साथ होती है वह यह कि मैं लूट लिया जाता हूँ। तो पहले मैं जो कुछ हमेशा करता आया यह उससे ज़्यादा सम्मानजनक है! यह तो कहीं बदतर है! हम साधारण अपराधी इन लोगों की बराबरी के नहीं हैं, फैनी। दो चौबीस घण्टों के दौरान वे ना सिर्फ हमारे खून-पसीने से जुटायी कमाई उड़ा ले गये, बल्कि हमारे घर और जूते तक ले गये; और यह सब वे बिना कोई कानून तोड़े उड़ा ले गये, शायद इस*

अच्छे से अहसास के साथ कि उन्होंने तो सिर्फ अपना कर्तव्य निभाया है!'

अपने साथ हुई दगाबाज़ी से वह बहुत गहराई से आहत हुआ था और उसे अपनी ही क्षमता पर सन्देह होना शुरू हो गया। अपने अस्पष्ट विचारों का पीछा करते हुए वह घोड़ा-गाड़ी में सवार होकर घण्टों लंदन की सड़कों पर कभी आगे, कभी पीछे घूमता रहा। भीड़ के चढ़ते-उतरते कोलाहल से उसे राहत मिल रही थी, और विपन्नता और सम्पन्नता के बदलते माहौल उसे दिलासा दे रहे थे। लेकिन शिक्षा की उसकी कमी से एक छोटे-से बैंक और क्रेस्टन चेन स्टोर्स द्वारा उसे मूर्ख बना दिया जाना, लगातार उसे कचोटता रहा। बड़ी दिक्कतों के बाद ही वह फिर से अपना सन्तुलन हासिल कर सका।

मैकहीथ ने अपने जीवन के सबसे उदासी भरे वक्तों में से एक को जिया।

दोस्ती का हाथ

उन दिनों फैनी क्राइस्लर एक मज़बूत सहारा बन गयी।

लैम्बेथ में उसका एक छोटा-सा घर था जिसमें खूबसूरत पुराने फर्नीचर और एक फालतू कमरा था।

वह ज़्यादा समय फैनी की दुकान में बैठा रहता और शाम को वह उसे अपने साथ ले जाती जब वह घर नहीं जाना चाहता। वह हमेशा कहता कि घर पर उसके पास नाश्ता नहीं है।

ग्रूच के साथ, जिसके साथ उसका स्थायी प्रेम-सम्बन्ध था, किसी भी दिक्कत से बिना परेशानी बच लिया जाता था, उसने सीधे उससे कह दिया कि वह कुछ हफ्ते तक वहाँ से दूर रहे।

वह कभी मैकहीथ की शादी चर्चा नहीं करती थी, क्योंकि वह जानती थी कि वह इसे एक निराशाजनक मामला मानता है और अब पॉली को कभी-कभार ही देख पाता था। सो वह बी.शॉप्स के मामले को पुनर्संगठित करने में उसकी मदद और अधिक ऊर्जा के साथ कर रही थी, जो लगातार गम्भीर होते जा रहे थे।

मालिक किराया अनियमित रूप से देते थे या नहीं देते थे। वे अभी भी उन्हीं मालों की विशाल खेपें पा रहे थे-एक बार घड़ियाँ और चश्मे, दूसरी बार तम्बाकू और पाइप-और वे नहीं जानते थे कि इससे छुटकारा कैसे पाएँ।

एक औरत के साथ, जिसे उसने दयावश एक छोटी-सी दुकान में बैठा दिया था, उसके एक अप्रिय अनुभव ने ही एकदम स्पष्ट रूप से इन दयनीय प्रतिष्ठानों की स्थिति को दिखा दिया। वह औरत उसके पुराने दोस्तों में से एक थी, कोई मैरी सॉयर नाम की।

उसने पाया कि मैकहीथ ने अभी अभी शादी की है। किसी वजह से ऐसा लगता है कि वह मानती थी कि शादी करके उसने उसे धोखा दिया है। उसने काफी हो-हल्ला मचाया और मालिकों की बातचीत को मि.मैकहीथ के विषय के इर्द-गिर्द लाने के लिए बी.शॉप्स जाने वाले लोगों में उसे कुछ समर्थक भी मिल गये। ये समर्थक *रिफ्लेक्टर* के सम्पादकीय कार्यालय में बैठते थे। यह सम्पादकीय विभाग उसके एक सहयोगी के बाहर फेंके जाने के बाद से बी.शॉप मालिकों के मामलों में बहुंत दिलचस्पी लेने लगे थे। वे इतना विश्वास करने के लिए पर्याप्त अंधविश्वासी थे कि जो आईना तोड़ता है सात साल तक उसकी किस्मत ख़राब हो जाती है। इसके अलावा उनकी छवि एक समाजवादी अखबार की थी क्योंकि वे केवल अमीर लोगों पर हमला करते थे, हालाँकि इसकी वजह यह थी कि और लोगों के पास वह पैसा नहीं था जिसके लिए उन्हें ब्लैकमेल किया जाता। लिहाज़ा मैकहीथ को अपना कवच धारण करना पड़ा। सभी खाते-पीते लोगों के समान, उसे एक अनिंद्य नैतिक प्रतिष्ठा कायम करनी थी। और बिना किसी रोक-टोक के बी.शॉप मालिकों को झाँसा देने के लिए भी उसे इसकी ज़रूरत थी।

उसके और मैरी सॉयर के बीच बातचीत फैनी क्राइस्लर की एंटीक्स की दुकान में और उसकी उपस्थिति में हुई।

मिसेज सॉयर, एक खूबसूरत, पूरी तरह से सुनहले रंग के बालों वाली एक गोरी-चिट्टी स्त्री थी जो प्रस्फुटित हो चुकी अपने जीवन के तीसरे दशक के उत्तरार्द्ध में थी। उसने घोषणा की कि वह कंगाली के कगार पर खड़ी है। मैक ने उसे उसकी मण्डली से चुना था और सालों तक अपनी ईर्ष्या के साथ उसे छेड़ा था। और सालों तक उसे बस बैठे देखते रहना पड़ा था, जब, कह सकते हैं कि वह एक फूल से दूसरे फूल पर फड़फड़ाता रहा। अब उसने खुल्लमखुल्ला शादी करके उसे धोखा देने की ढिठाई की थी। उसने मैक के उकसावे पर सिर्फ अपने पति से शादी की थी जो अब युद्ध पर था, और उसके पति से कोई जुड़ाव नहीं था। मैक ने जो दुकान उसे दी थी वह कोई बहुत उम्दा नहीं थी। उसके पति ने उस पर दो बच्चों का भार भी डाल दिया था। अगर वह कम-से-कम कुछ पाउण्ड भी नहीं कमा पाती जिससे सिलने वाली लड़की को भाड़े पर लिया जाता, तो

वह निश्चित रूप से नदी में छलाँग मार देती। उसके धैर्य ने जवाब दे दिया था। उन चन्द अभिव्यक्तियों को जो उसने गुस्से में दीं, उन्हें इसी तरह समझाया जा सकता है।

किसी और चीज़ से पहले फैनी ने यह जानने की कोशिश की कि *रिफ्लेक्टर* से कोई सम्बन्ध स्थापित किया गया है या नहीं। उन्होंने पूछा :

'ये बातें तुमने किससे कही हैं? यह अहम बात है।'

लेकिन मिसेज सॉयर में इतनी ताक त तो आराम से थी कि वह इस चंगुल में न फँसे। वह कुछ उड़न्त-पड़न्त और उलाहना भरी बातें ही कहती रही। उसने मैक को अपने जीवन के सबसे बेहतरीन साल दिये थे। जब उसके साथ उसका चक्कर शुरू हुआ था तो वह कली के समान खिलती हुई एक जवान लड़की ही थी; बारह साल की उम्र में हुए कए आक्षेप को छोड़कर उसका किसी भी आदमी से कोई लेना-देना नहीं था। अब, अगर मैक उसको छोड़ देता तो वह और किसी को पाने के बारे में नहीं सोच सकती थी। और उसने उन चिन्हों को उंगली से इशारा करके दिखाया जो इन गुज़रे वर्षों और मैक की चिन्ता ने उसके चेहरे पर बना दिये थे।

जब उसने बोलना ख़त्म किया तब मैक बोला।

उसने ज़ोर देकर कहा कि वह औरतों की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की वकालत करता है। अगर वे स्वयं को किसी आदमी पर न्यौछावर कर देती हैं तो यह उनकी अपनी ज़िम्मेदारी और ख़तरे पर होता है। वह औरतों के किसी नियम या कानून में बाँधे जाने का पूरी तरह विरोधी था। प्रेम कोई युगों पुरानी नीति नहीं है। लम्बे समय तक चलने वाले प्रेम का निश्चित रूप से आनन्द लिया गया होता है।

मैरी फिर चिल्लाने लगी। मैक के साथ हुई उसकी पुरानी आनन्दानुभूतियों का इससे क्या लेना? उसको यही चीज़ किसी और से भी मिल सकती थी; मसलन, एक ऐसे प्रतिष्ठित आदमी से जो ऐसी औरत की पूरी देखभाल करता जिसने उसको अपना सबकुछ अर्पित कर दिया। वह दुकान में काम करने वाली एक लड़की थी और मैक ने उसको वहीं से लिया था क्योंकि उसने देखा था कि उसका मैनेजर कैसे किसी शेल्फ से कोई डिब्बा उतारने के लिए सीढ़ी पर चढ़वाता और उसकी जाँघें देखता था। अब कोई उसकी जाँघें नहीं देखना चाहता था। जिस नौजवान ने उस पूरे भयंकर मामले के बारे में उससे बहुत अच्छी तरह बात की थी उसी ने उसे ऐसा बताया था।

मैकहीथ तीखा जवाब देना चाहता था, लेकिन फैनी ने सोचा कि सावधानी

बरतना ही बेहतर है। यह पानी की तरह साफ़ था कि वैसे निरीह-सी इस औरत के ऐसे व्यवहार के लिए धन्धे की ख़राब हालत ज़िम्मेदार है।

मैरी ने गुस्से में पूछा, 'मैं गोबर कैसे बेचूँगी? मेरे ग्राहकों को घड़ी की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अधोवस्त्रों का धन्धा शुरू करने का प्रयास कर रही हूँ। अगर मिसेज स्क्रब को घाघरे की ज़रूरत है, तो मुझे कहना पड़ता हैः मुझे डर है कि स्टॉक में घाघरा नहीं है, लेकिन शायद आप एक घड़ी लेने के बारे में सोचें? हाँ, यह हो सकता है कि घड़ियों को चुराना ज़्यादा आसान हो-बीच में मत टोकिये। अगर मैं मैक की नयी बीवी की तरह बोर्डिंग स्कूल में नहीं रही होती तो भी मैं अपने बारे मे सोच सकती थी-मैं धुलाई का सारा काम अकेले नहीं कर सकती, मुझे दो नौकरानियों की ज़रूरत है, और इसका मतलब है मेरे पास पैसे होने ही चाहिए।'

ये बातचीत लम्बी और थका देने वाली थी। मैरी एक शेरनी की तरह लड़ रही थी। फैनी का यह सुझाव कि मैक, हालाँकि वह उसके प्रति अपना कोई कर्ज़ नहीं मानता था, अधोवस्त्रों की बिक्री के लिए उसकी बी.शॉप के विस्तार में पैसा लगाएगा अगर वह बदले में अपने मैक के साथ सम्बन्ध के मामले में चुप रहे, मैरी ने माथे पर पड़ी लकीरों और अविश्वास से उत्तेजित चेहरे के साथ स्वीकार किया।

उसने लालच से चेक लिया, जल्दी से उसे अपने रेशम के बटवे में डाला और मैक पर एक बार भी निगाह डाले चली गयी।

उस शाम मैकहीथ ने लैम्बेथ में बैठे हुए फैनी से कहा, *'ताज्जुब है, किस तरह ये कभी वैसी नहीं रहना चाहतीं जैसी कि वे हैं। एक समय था जब कोई दुकान खुलती थी, जैसे मान लो एक लुहार की, तो यह लुहार की ही रहती थी। आज यह हमेशा कुछ और हो जाना चाहती हैं। कोई कुछ भी शुरू करे, वह कभी वैसी नहीं बनी रह सकतीं, जैसी वह हैं। एक होज़री की दुकान को निश्चित तौर पर दर्ज़ी की दुकान बन जाना है, या दिवालिया हो जाना है। और दर्जी की दुकान को तत्काल शाखाएँ खोलनी ही होती हैं। बड़े कारोबारों के साथ भी स्थिति अलग नहीं है। क्रेस्टन के पास दुकानों की श्रृंखला है मगर अब उसे मेरी तरकीबें चुरानी पड़ती हैं और कुछ बिल्कुल नया आज़माना पड़ता है। यह प्रगति नहीं है, यह तो पीछे हटना है। और यह सबकुछ इसलिए है क्योंकि सम्पत्ति अब सम्पत्ति नहीं रह गयी है। पहले एक आदमी एक दुकान या एक घर का मालिक होता था और वह मुनाफे का एक स्रोत था। आज यह घाटे और तबाही का एक स्रोत हो सकता*

है। इससे चरित्र-निर्माण की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। मान लो एक आदमी के पास साहस और उद्यम है। पिछले सालों में पहले ही वह कुछ पैसा बना चुका है। आज वह एक धन्धा खोलता है और लुट जाता है। सावधानी बरतने पर भी वह लुट जाता है। अचानक साहस का मतलब कर्ज़ चुकाने की क्षमता हो गया है; नहीं, कर्ज़ कम करने की क्षमता। अगर किसी आदमी का तीन साल से बिल्कुल समान दृष्टिकोण है, तो इससे यही पता चलता है कि तीन साल से उसने कभी वास्तविकता का सामना नहीं किया है।'

फैनी ने चाय बनाई और अपना पायजामा पहन लिया। उसकी त्वचा, जाँघों पर भी भूरे रंग की थी। पॉली से बिल्कुल भिन्न मैकहीथ ने सोचा।

बी.शॉप्स का क्या किया जाना चाहिए, इसके बारे में उसके अपने विचार थे।

वह मानती थी कि शादी या नेशनल क्रेडिट बैंक द्वारा पैसा सुरक्षित करने के असफल प्रयासों के बाद वे ख़त्म हो चुकी थीं। उसकी धारणा थी कि मैक को उन्हें छोड़ देना चाहिए था।

पैर पर पैर रखकर पीछे झुकते हुए और चाय का प्याला गोद में रखकर उसने कहा, 'मेरी दुकान कहीं अच्छी है। तुम्हें उसी पर अपना ध्यान लगाना चाहिए। ग्रूच बहुत चालाक है। वह कहता है कि अगर उसके पास आधुनिक औज़ार होते तो वह हर तरह की चीज़ कर सकता है। अगर तुम्हें बहुत धीमी रफ्तार का काम लगे तो तुम एक या दो सौदों से पैसों का ढेर इकट्ठा कर सकते हो और फिर मैदान में उतर सकते हो। लेकिन यह काम वह बिल्कुल आधुनिक औज़ारों से ही करेगा।'

'तो फिर से चोरी-चकारी!' मैकहीथ ने हताशा में कहा।

'हाँ, लेकिन आधुनिक हथियारों के साथ!'

जब वे इस पर राज़ी हुए तो लगभग सुबह हो चुकी थी।

दुकान जाने से पहले फैनी ने कबाड़खाने से सारे बिस्तरे हटा दिये, और शाम को ग्रूच ने उनके साथ बैठकर अपनी सारी शर्तें सुना दीं।

मैकहीथ इस पूरे धन्धे को लेकर खुश नहीं था। इसने उसे यह देखने को मजबूर कर दिया कि अब फैनी भी उसे एक ऐसा सक्षम आदमी नहीं मानती थी जो बैंक से बड़ा सौदा कर सके। उसे यह अहसास था कि यह एक भयानक अधःपतन था और निर्णायक भी।

कुछ दिनों बाद वह और ग्रूच लिवरपूल गये जहाँ उस वक्त अपराध और

उस पर रोक की एक अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनी लगती थी।

उन्होंने कुछ शानदार चीज़ें देखीं। वहाँ पर हर तरह की, यहाँ तक कि सबसे आधुनिक तिजोरियों के लिए तिजोरी तोड़ने वाले औज़ार थे। कोई भी स्वचालित अलार्म आधुनिक तकनीक को हरा नहीं सकता था। ताले, संरचना में चाहे जितने भी जटिल हों, केवल कानूनी इरादे वाले लोगों के लिए अड़चन बनते थे; विशेषज्ञों के लिए तो वे बच्चों का खेल थे।

होटल में उस शाम वे झगड़ने लगे, क्योंकि ग्रूच फ्रेंच मॉडलों को चाहता था जबकि मैकहीथ अंग्रेज़ी मॉडलों की वकालत कर रहा था। 'हम इंग्लैण्ड में हैं ग्रूच,' उसने उसे गुस्से में याद दिलाया। 'अंग्रेज़ अंग्रेज़ी औज़ार इस्तेमाल करते हैं! कैसा होगा अगर यहाँ पर फ्रेंच उत्पादों को प्राथमिकता दी जाने लगे? वह अच्छी हालत होगी! तुम्हें "देशभक्ति" शब्द का कोई अहसास नहीं है। इन औज़ारों की कल्पना अंग्रेज़ दिमागों ने की है, इन्हें बनाया अंग्रेज़ी उद्योग ने है, और इसलिए वे अंग्रेज़ों के लिए पर्याप्त अच्छे हैं। मैं कुछ और नहीं लूँगा।'

उन्होंने दो बजे तक इंतज़ार किया और फिर काम शुरू कर दिया।

एक बार इमारत में उन्होंने तेज़ी से काम किया और जल्दी ही चौकीदार को प्रभावहीन कर दिया। लेकिन जब बाहर कदमों की आवाज़ सुनाई दी तो मैकहीथ की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी। उसके माथे से पसीना बहना शुरू हो गया और वह भयभीत आँखों के साथ वहाँ खड़ा था और वह सही ताला तोड़ने वाला औज़ार नहीं ढूँढ पा रहा था। ग्रूच ने सिर झटका और चाभियों का गुच्छा उसके हाथों से छीन लिया। प्रत्यक्ष रूप से यह महान व्यापारी अब इस तरह के कामों के लायक नहीं रह गया था।

ग्रूच को सबकुछ लगभग खुद ही करना पड़ा। वह सफल हुआ। अगली सुबह उन्होंने फैनी के सामने वे औज़ार रखे।

अपने खाली समय के दौरान ग्रूच ने पहले ही आगे के उद्यमों के लिए हर तरह की योजनाएँ तैयार कर ली थीं। उसके सामने चुनने के लिए तमाम योजनाएँ थीं।

उसने चिन्तामग्न होकर कहा, 'यह तो पैसों की बौछार कर देगा, यह शादी करने से ज़्यादा सुरक्षित है।'

लेकिन जब मैकहीथ कुछ विशेष प्रश्नों पर राय देने के लिए ब्राउन से मिलने स्कॉटलैण्ड यार्ड गया तो उसे हासिल हुआ एक अप्रिय आश्चर्य।

ब्राउन गरजा, 'तो ये ग्रूच था? अब तो हद हो गयी! तुमने अखबार पढ़ें हैं।'

उसके पास गुस्सा होने का कारण भी था। प्रेस ने अपराध प्रदर्शनी में सेंधमारी का काफी बतंगड़ बनाया था।

उन्हें ये बहुत मज़ेदार बात लगी कि किसी ने पुलिस से सेंधमारी के औज़ारों की सेंध लगा दी।

ब्राउन बहुत गम्भीर रूप से परेशान था और उत्तेजित हो गया।

उसने शिकायत की, 'मैंने कभी तुम्हारी किसी चीज़ को तुमसे नहीं छीना जाने दिया, और मैं तुमसे *अपने* कैरियर के प्रति भी उतना ही सम्मान दिखाने की उम्मीद करता हूँ। अब तक हमने हमेशा एक-दूसरे के साथ सही किया है। मैं खुशी से मानता हूँ कि मैं उन गिरफ्तारियों के बिना इतनी जल्दी अपनी वर्तमान स्थिति पर नहीं पहुँचता, जो मैंने तुम्हारी मदद की बदौलत कीं। मगर हमारे सम्बन्ध, जो तब से हैं जब से हम भारत में एक साथ थे, मेरे लिए महज़ एक कारोबारी बन्दोबस्त से ज़्यादा अहम हैं। और अब तुम पुराने दोस्तों के बीच के सबसे आदिम समझौते की बुनियाद की बेकद्री कर रहे हो। मैं अपनी नौकरी से बँधा हूँ। अगर मैं अपने पेशे की परवाह नहीं करता तो मैं इसे करूँगा ही नहीं। मैं कोई राजगीर नहीं हूँ। मेरी क्षमताएँ मुझे कमिश्नर के दर्ज़े तक पहुँचा सकती हैं। लेकिन मैं उस गधे विलियम्स को एक ऐसे पद पर काबिज़ देखना नहीं सह सकता जिसके वह कभी काबिल नहीं था। शाम तक मुझे हर हालत में औज़ार-*और* उसे चुराने वाला आदमी-दोनों मेरे हाथ में होने चाहिए।'

मैकहीथ संत्रास के साथ सुनता रहा। उसे अहसास हुआ कि उसने ब्राउन की दुखती नब्ज़ दबा दी है। वह केवल उसको समझा सकता था कि कौन-सी चीज़ ने उसे सेंधमारी के लिए बाध्य कर दिया था।

ब्राउन ने थोड़ा नर्म होकर कहा, 'अगर तुम्हें किसी भी तरह पैसे चाहिए ही थे, तो उसे हासिल करने के और भी तरीके हैं। तुम किसी बैंक के पास क्यों नहीं जाते? नेशनल क्रेडिट के अलावा और बैंक भी तो हैं।'

मैकहीथ ने जवाब दिया कि उसकी दुकानें, और उन्हें सप्लाई करने वाली कम्पनी भी, उस स्थिति में नहीं थे कि वे बैंक को उन्हें पैसे देने के लिए राज़ी कर पाएँ। शहर में एक प्रतिष्ठित कार्यालय के बिना वह कुछ भी नहीं कर सकता था।

इस मौक़े पर ब्राउन ने अपने सबसे अच्छे पहलू का प्रदर्शन किया। बिना ज़्यादा उकसाए उसने अपने कुछ पैसे लगाने का प्रस्ताव रखा।

मैकहीथ के विवेक को टटोलते हुए उसने कहा, 'नीच रास्ता क्यों चुना जाय।

किसी को ऐसा नहीं करना चाहिए। एक व्यापारी सेंधमारी नहीं करता। व्यापारी खरीदता और बेचता है। इस रास्ते से भी वह उसी मुकाम तक पहुँचता है। जब हम कारतूसों की जानलेवा बौछार के नीचे पेशावर के सामने एक चावल के खेत में लेटे थे तो क्या तुमने एक पेड़ की टहनी या ऐसी कोई चीज़ लेकर सिखों पर धावा बोल दिया था? नहीं! वह एक नौसिखुए जैसा काम होता और बेकार भी। तुम्हारा कहना है कि तुम्हारे धन्धे को किसी भी तरह पहले ऐसी स्थिति में लाना है जो बैंको को आकर्षित करे। अरे, तो उसे ऐसी स्थिति में लाओ! तुम मेरे पास क्यों नहीं आए? अगर एक दोस्त से पैसा लेना तुम्हें गवाँरा नहीं, तो मुझे सूद दे देना! मुझे उससे ज़्यादा सूद देना जितना तुम किसी और को देते-बीस, यहाँ तक कि मुझे इसकी भी परवाह नहीं, अगर तुम पच्चीस दे दो। फिर भाग्य तुम्हारे साथ होगा। मैं जानता हूँ कि तुम एक कुशल व्यापारी हो। मैं नहीं चाहता कि तुम व्यापार का अलिफ भी न जानने वाले किसी मन्दबुद्धि घामड़ की तरह चोर हो जाओ और चोरी करने लगो। तुम्हें किसी भी हालत में इस ग्रूच जैसे लोगों के साथ कभी काम नहीं करना चाहिए! सभी दूसरे प्रतिष्ठित व्यापारियों की तरह बैंकों के साथ काम करो! इसकी बात कुछ अलग ही होगी!'

मैकहीथ बहुत प्रभावित हुआ। उन लोगों की तरह जिन्होंने ज़िन्दगी के तूफान साथ खड़े होकर पार किये हैं, वे हल्के ढंग से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाए। ऐसी स्थिति में उलझन भरे भाव एक आलिंगन से ज़्यादा कारगर था।

मैक ने रुंधी हुई आवाज़ में कहा, 'ऐसा कैसे, फ्रेडी। कुछ लोग ऐसे तो हमेशा मिल जाएँगे जो एक अच्छी सलाह देते हैं। लेकिन तुम व्यावहारिक मदद करते हो। यही तो है दोस्ती, केवल यही है सच्ची दोस्ती। एक दोस्ती का हाथ....'

मैकहीथ को सच्ची निगाहों से घूरते हुए ब्राउन ने जोड़ा, 'बदले में मैं सिर्फ एक चीज़ की माँग करता हूँ। मैं तुम्हें इन ग्रूच और ओ'हारा जैसे लोगों का साथ पूरी तरह छोड़ने के लिए कहता हूँ। अगर फौरन नहीं तो किसी भी तरह जब तुम इस दुर्भाग्यपूर्ण झंझट से निकल जाओ। जो धन्धा तुम्हारे दिमाग में है तुम्हें करने के काबिल कर देगा। अगर आज मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ तो वह इसलिए क्योंकि भविष्य में मैं तुम्हें अलग माहौल में देखना चाहता हूँ। इससे मेरा मतलब कल या परसों नहीं है। मुझे मालूम है कि सफलता हासिल करने के लिए अभी तुम्हें इन प्राणियों की ज़रूरत है। लेकिन कभी इसका अन्त भी होना चाहिए-मैं माँग करता हूँ।'

मैकहीथ ने चुपचाप सिर हिलाया; उसकी आँखों में आँसू थे।

वह खुशी-खुशी वहाँ से गया। वे ग्रूच को कुछ समय तक न छेड़ने पर और सेंधमार के रूप में किसी और को पकड़ने पर सहमत हुए थे। उस दोपहर मैकहीथ ने खुद वे औज़ार सौंप दिये।

ब्राउन ने भी अपना वादा निभाया। पैसा इकट्ठा करना उसके लिए आसान नहीं था। पहले उसे कई क्लबों पर छापे डालने की व्यवस्था करनी पड़ी; और मैकहीथ ने उसके प्रयासों के उस वक्त परिणाम भी देख लिए जब वह उस गुरुवार को टनब्रिज में मिसेज लेक्सर के पास गया। लड़कियों ने अपनी तनख्वाहों में से मिसेज लेक्सर द्वारा की गयी कटौती की बहुत कटु रूप से शिकायत की।

लेकिन हफ्ते भर बाद मैकहीथ के हाथ में वे साधन थे जिनसे वह एक बार फिर से अपने 'खरीदारों को उनकी क्षमता के शिखर पर पहुँचा सकता था।

ओ'हारा के साथ उसने एक विस्तृत अभियान की योजना बनाई।

मोजूदा कबाड़खानों के अलावा कई और बड़े सायबान किराए पर लिए गए। परिवहन के साधन भी उपलब्ध कराए गए-बड़ी लॉरियाँ। प्रान्तीय नगरों में नौकरियों के लिए, पैसे झटपट जमा किए गए और रिहायश की व्यवस्था की गयी।

ओ'हारा ने प्रदर्शित कर दिया कि अपनी नौजवानी के बावजूद वह बेहद काम का आदमी है। किसी चीज़ पर कब्ज़ा करने में उसकी सुस्पष्ट अनिच्छा होती थी जो कई महान कैरियरों का आधार है। मैकहीथ की नज़र फौरन इस पर गयी थी; यह नौजवान इस मामले में उस जैसा ही था।

ओ'हारा की सफलता तक पहुँचने की दास्तान का मूल बहुत अस्पष्ट था। सोलह साल की उम्र में वह कुछ अपराध करने वाले उठाईगीरों और नौकरानियों को उपकृत किया करता था जिनमें नौकरानियाँ गर्भवती होकर आसानी से क्षमा पा सकती थीं। लेकिन कोई उस समय या उस पेशे की उसे याद दिलाए, यह उसे पसन्द नहीं था।

फैनी के उससे अच्छे सम्बन्ध नहीं थे। उसका मानना था कि औरतों ने उसे बरबाद कर दिया है। वह उस पर अविश्वास करती है। वह ग्रूच का प्रतिद्वंद्वी भी था और लिवरपूल वाले मामले में मैकहीथ की नज़रों में ग्रूच की हैसियत कम कर दी थी।

वे अपनी मुलाकातें लैम्बेथ में किया करते। बाद में मैकहीथ हमेशा ओ'हारा

के साथ चला जाता। इससे फैनी की नज़रों में यह साबित हो गया कि वह भी उस पर विश्वास नहीं करता। एक बार ओ'हारा उसके साथ रुकने के लिए वापस आया और फैनी को दो-टूक बात करनी पड़ी थी।

लेकिन किसी भी चीज़ से पहले यह लूट के माल के बँटवारे पर ओ'हारा का निर्लज्ज रवैया था जिससे उसे चिढ़ थी। असली जोंक था वह-कभी प्यास नहीं बुझती थी कम्बख्त की। अगर कोई फायदा न हो, तब भी वह मुनाफे के उसके हिस्से में नाक ज़रूर घुसाता।

वह पूरी रात लोगों से माल ऐंठने की नयी तरकीबें निकालने के लिए जगा रहता।

इसके लिए वह हमेशा उसे फटकारती। यह आर्थिक रूप से उसे मूर्खता लगती थी।

लिवरपूल मामले के बाद, पुलिस ने रॉबर्ट दि सॉ को गिरफ्तार किया था। नतीजतन, उस गिरोह ने लगभग खुले तौर पर अपने नेता के ख़िलाफ़ विद्रोह कर दिया। हवा में तो यह अफवाहें भी थीं कि रॉबर्ट दि सॉ को पुलिस को सौंप दिया गया है; और अचानक ऐसे कुछ मामलों को भी याद किया गया।

ओ'हारा ने बेवकूफ की तरह खींसें निपोरते हुए लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर पर मची खलबली की ख़बर सुनाई।

लेकिन फैनी ने उसे चुप करा दिया। उसने उत्तेजित होते हुए कहा कि इसमें हँसने की कोई बात नहीं है। अगर वाकई ऐसा हुआ है तो यह एक अत्यन्त गम्भीर घटना है और एक सबसे अफसोसनाक घटना भी।

'मगर मुखिया खुद रॉबर्ट के पास उसकी कोठरी में गए और उससे हाथ मिलाया,' ओ'हारा ने ताना दिया और कनखियों से मैकहीथ को देखा। मैकहीथ ने वाकई अपने अभागे कर्मचारी की गिरफ्तारी के बाद जेल का दौरा *किया था*। और उसे बताया था कि वह उसका साथ देगा। ऐसे सूक्ष्म विवरणों में वह एक नेता के रूप में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करता था।

फैनी क्राइस्लर ने उन भाव-मुद्राओं को थोड़ा ही उदासीन समझा। उस छोटे से घर में एक लम्बा विवाद शुरू हो गया। मैकहीथ एक पतला-सा काला सिगार दांतों में दबाए चुपचाप बैठा था। गर्मागर्म बातचीत उसका मनोरंजन कर रही थी। वह अभी भी ईर्ष्यालु था, हालाँकि किसी भी अर्थ में वह प्यार नहीं करता था। उसे इस बात से सुख मिलता था कि ओ'हारा की फैनी के साथ किस्मत चमकने वाली नहीं।

फैनी ने ध्यान दिलाया कि रॉबर्ट दि सॉ की गिरफ्तारी के बाद से गिरोह के भीतर की खलबली थमी नहीं है; और इसकी वजह से कई धन्धे गड़बड़ हो गये हैं; और आखिर में, कई घण्टों की तू-तू-मैं-मैं के बाद फैनी ने ओ'हारा से अनुरोध किया कि पुलिस को सौंपे जाने का सिलसिला ख़त्म होना चाहिए। वह मैकहीथ को भी इस बात पर सहमत करने में कामयाब हो गयी, जो हमेशा उदार कदमों का पक्ष लेता था, कि गिरफ्तार हो जाने वाले गिरोह के सदस्यों के बचाव के लिए वकीलों के किसी प्रतिष्ठित संस्था की सेवा ली जाए।

मैक तो और आगे चला गया। उसने तय तनख्वाहों का वायदा किया।

उसने विचारशील अन्दाज़ में कहा, 'वे सुरक्षा के साथ जीना चाहते हैं, एक तरह की आधिकारिक स्थिति उन्हें आकर्षित करती है। वे शान्ति के साथ सोना और इस बारे में निश्चिन्त रहना पसन्द करते हैं कि महीने के अन्त में मकान के किराए कि लिए पैसा होगा या नहीं। यह तो समझने वाली बात है, भले ये उससे कुछ अलग हो, जिसकी मैंने आशा की थी। मैंने सोचा था कि शायद हमारी यह छोटी-सी मण्डली एक प्रकार के भावनात्मक जुड़ाव के साथ मेरी इज़्ज़त करेगी-कि उनका नेता अच्छे और बुरे दौरों में उनके साथ काम कर रहा है। मुखिया ख़र्च और कम करता है और लड़के भी करीब आते हैं; या ऐसा ही कुछ, तुम जानते ही हो। लेकिन वे जो चाहे कर सकते हैं। उन्हें तनख्वाह मिलेगी क्योंकि मेरा मानना है कि वे तनख्वाहें चाहते हैं।'

उसने पहले ही समझ लिया था कि तय तनख्वाहें उसके लिए पर्याप्त सस्ती पड़ेंगी क्योंकि अब उसे बहुत बड़े पैमाने पर 'खरीद' शुरू करनी थी ताकि वह बैंकों को अपनी दुकानों से ललचा सके।

गिरोह ने नियमित तनख्वाहों की नयी व्यवस्था को एक जीत माना, और अब फैनी लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर के लोगों में एक लोकप्रिय नायिका थी क्योंकि ग्रूच ने ऊँची आवाज़ में लोगों में उसकी लम्बी प्रशस्तियाँ इतनी ज़्यादा गाईं थीं कि ओ'हारा भी चिढ़ गया था। ऐसा कहा जा रहा था कि उसने मुखिया को सारा ख़तरा अपने कन्धों पर लेने को बाध्य कर दिया था; और कथित रूप से वह मान गया था, चाहे वह उसे अच्छा लगा या बुरा, क्योंकि उसे उसकी ज़रूरत थी और उसे अच्छे मिजाज़ में रखना भी उसकी मजबूरी थी।

पुनर्संगठन के बाद ओ'हारा गैंग के सेंधमार अब छोटे स्वतन्त्र चोर नहीं रह गये थे बल्कि एक बड़े प्रतिष्ठान के कर्मचारी बन गये थे; और केवल इसी तरह, यानी अपनी हैसियत के लोगों के साथ घनिष्ठ सहकार में काम करके ही वे अपने

कामों में सफल हो सकते थे। क्योंकि कुछ धौंकनी के इस्तेमाल में उस्ताद थे; तो दूसरे, यानी 'यात्री', ज़मीन की नाप-जोख करते; जबकि बाकी दूसरे अभियान की योजना को बेदाग बनाते। एक आदमी सामानों के भण्डारण की व्यवस्था करता, तो दूसरा अपराध के समय अन्यत्र होने के बहाने निकालता। और अब जब सेंधमारी हो जाती, तो 'ख़रीदार' जो सामानों का चुनाव करता और जिसे विशेषज्ञ होना आवश्यक था, पैकर्स के अपने जत्थे के साथ आता और उन्हें शेल्फों पर काम पर लगा देता। यह काम करने का एक खुशगँवार और आधुनिक तरीका था, और इन उच्च प्रशिक्षण प्राप्त आदमियों के लिए आदिम तरीकों पर वापस लौटना लगभग नामुमकिन हो गया होता-अगर और किसी नहीं, तो सिर्फ मनोवैज्ञानिक कारणों से। अपने काम की परस्पर निर्भरता वाली प्रकृति के चलते, यह, जाहिरा तौर पर, अनिवार्य था कि उन्हें यथासमय और लगातार व्यस्त रखा जाय, या कम-से-कम पैसे दिये जाएँ। सामानों की बिक्री में मन्दी हो या न हो, उन्हें व्यस्त रखा जाना था क्योंकि बिक्री समस्याओं से उनका कोई सरोकार न था।

एक रात जब ओ'हारा ब्लैकस्मिथ स्क्वायर गया हुआ था तो फैनी ने मैकहीथ से कहा, 'अब वे कहीं अच्छी तरह तुम्हारे हाथ में हैं। मानना पड़ेगा कि अब तुम कोई पिस्तौल और छुरा उसके खिलाफ इस्तेमाल कर सकते, मगर उनके काम के औज़ार तुम्हारे पास हैं। अब तुम उन्हें पुलिस के हाथ गिरफ्तार नहीं कराते, मगर उनकी भूख उन्हें काम पर लगाए रखती है। यकीन मानो, यह कहीं बेहतर है। सभी आधुनिक मालिक इसी तरह प्रबन्ध करते हैं।'

मैकहीथ ने अन्यमनस्कता से सिर हिलाया। वह नीली चीनी कालीन पर आगे-पीछे लम्बे डग भरते हुए टहल रहा था, जो फैनी का सबसे बढ़िया नमूना था और अपनी पतलून की जेब में कुछ सिक्कों को झनका रहा था, और उन्हें जब-तब बाहर निकालकर हवा में उछाल रहा था और लपक रहा था।

अब वह डेढ़ सदी द्वारा दिये गये झटके से लगभग उबर चुका था और मन ही मन लम्बी-चौड़ी योजनाएँ बना रहा था।

ये योजनाएँ विशालकाय थीं, मगर वे उसके अन्दर के आत्मविश्वास के अतिरेक से नहीं पैदा हो रही थीं। वे तबाही से उसे बचाने के लिए आवश्यक थीं। खरीदारी का मामला तो अब फल-फूल रहा था। मालों की एक बाढ़ दुकानों में आ गयी थी। रुखड़े शेल्फ ठस्सम-ठस्स भरे हुए थे। मैरी सॉयर के वहाँ सिलाई करने वाली लड़कियाँ देर रात तक बैठतीं और काम करतीं। चमड़े की गाँठों को

जूते में रूपान्तरित किया जाता था। ऊन जम्परों (स्त्रियों का एक ढीला-ढाला जैकेट-अनु.) में परिवर्तित होने के लिए पूरे के पूरे परिवारों के उद्यमी हाथों से गुज़रते थे। लिखने के सामान और लैम्प, वाद्य-यंत्र और कालीनें, उन बुझे हुए झोपड़ों में भर गए जिन्हें बी.शॉप्स कहा जाता था।

लेकिन मैकहीथ जानता था कि ब्राउन से लिया गया उधार ओ'हारा के गिरोह को छः हफ्ते तक चलाने के लिए मुश्किल से ही पर्याप्त होगा।

ऐसे हालात में नेपोलियनी कद के मंसूबे ही उसे बचा सकते थे।

8

On s'engage et puis on voit

(NAPOLEON)

'ओह! मगर बारिश हो रही है बाहर!'
'ओह! मगर घर आग में झुलस रहा है, मत भूलो!
ज़िन्दा जल जाने की बजाय
चलो बाहर चलें और भीग जाएँ!'

(युवा प्रवर्तकों का गीत)

नेपोलियनी योजनाएँ

शहर की एक विशालकाय इमारत में एक नौजवान आदमी ने एक पूरी मंज़िल किराए पर ले रखी थी। उसे समझौते पर लॉर्ड ब्लूम्सबरी के रूप में दस्तख़त किए और चार या पाँच कमरे कार्यालय के रूप में सजा दिये। उसने जो फर्नीचर लगाए वे ज़्यादातर पुराने और जर्जर थे, मगर ये कमरे में एक युग पुरानी सम्माननीयता का वातावरण बनाते थे। सुनहली भूरी चमड़ी वाली एक जवान औरत ने हर चीज़ की व्यवस्था करने और कर्मचारियों को लगाने में उसकी मदद की।

जब फर्नीचर आए और उसने लॉर्ड ब्लूम्सबरी को उन्हें अननुमोदन की दृष्टि से देखते हुए पाया तो उसने कहा, 'आप जानते हैं, पुरानी संस्थाओं का लोगों में बड़ा आकर्षण होता है। उनकी उम्र साबित करती है कि वे कभी मुसीबत में नहीं पड़ीं हैं, और यही बात इसकी गुंजाइश बेहद कम कर देती है कि कभी भविष्य में वे मुसीबत में पड़ेंगी।'

सबसे बड़े कमरे को सम्मेलन कक्ष के रूप में व्यवस्थित किया गया। बाहरी शीशे के दरवाज़े पर बड़े-बड़े सुनहरे अक्षरों में लिखा था : 'C.P.B.' नीचे काफी छोटे अक्षरों में लिखा था 'सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड।'

इस नयी कम्पनी के निदेशकों की पहली बैठक संक्षिप्त रही। दो वकील, शहर में प्रसिद्ध, कोई मि.ओ'हारा, कोई लॉर्ड ब्लूम्सबरी, कोई मिसेज़ क्राइस्लर ने मिलकर किसी मि.मैकहीथ को जो पेशे से व्यापारी थे, अध्यक्ष चुना। उपाध्यक्ष लॉर्ड ब्लूम्सबरी थे। मैकहीथ उनसे टनब्रिज के एक घर में मिला था जहाँ वह अपनी गुरुवार की शामें बिताता था। वह इस नीरस, मगर खुशगवाँर नौजवान आदमी को फँसाने में आसानी से सफल हो गया था, क्योंकि उसे स्थायी रूप से पैसों की ज़रूरत रहती थी और वह मिसेज लेक्सर की मुख्य तारिका जेनी मंथ पर पूरी तरह निर्भर था। वह बहुत बेवकूफ था मगर बोलता कम था, और उसकी एक बेहद-बेहद अभिभूत मुस्कान थी, जो बिना किसी कारण अचानक आती थी। वह अच्छा प्रभाव छोड़ता था और इसी के बूते जीता था।

कम्पनी का पहला काम दो इकरारनामों का प्रालेख लिखने का था। इनमें से एक में मि.ओ'हारा ने सस्ते मालों की विशाल खेपों की सी.पी.बी. को आपूर्ति का इकरार किया। दूसरे ने मि.मैकहीथ को सी.पी.बी. द्वारा सम्भाले जाने वाले हर माल पर बी.शॉप्स के लिए चुनने की आज़ादी दे दी। फिर मि.मैकहीथ ने अपनी कुर्सी अपने दोस्त लॉर्ड ब्लूम्सबरी को दे दी और वहाँ मौजूद लोगों को उनकी अध्यक्षता को अगली सूचना तक गुप्त रखने को कहा।

हर कोई वहाँ से सबसे बढ़िया ताल्लुकात विदा हुआ और कार्यालयों ने अपनी गतिविधियाँ मिसेज क्राइस्लर के प्रबन्धन के तहत शुरू कर दीं।

इन गतिविधियों में इंग्लैंड और महाद्वीप में उन तमाम दलालों के साथ पत्राचार शामिल था जो सी.पी.बी. के लिए दीवालिया कारोबारों के माल ख़रीदते और सोहो के कबाड़घरों में पहुँचाते। पाई गई वस्तुओं की सूचियाँ और अदा की गई रकमों की रसीदें दो अलग विभागों में सावधानी के साथ फाइलों में रखी जाती थीं। कबाड़घरों को की गई आपूर्तियाँ भी अलग से दर्ज़ की जाती थीं और बी.शॉप्स को भेजी गई हर चीज़ के साथ स्वतन्त्र रूप से उनका लेन-देन होता था।

इन कार्यालयों को खुले अभी पन्द्रह दिन भी नहीं हुए थे कि दो सज्जन मि. मैकहीथ और मि.ब्लूम्सबरी *कॉमर्शियल बैंक* के परिसर में प्रकट हुए और अध्यक्ष से बात करने का आग्रह किया।

कॉमर्शियल बैंक एक ऐसा संस्थान था जिसके डोमिनियनों और ग्रेट रसेल स्ट्रीट के नये-नवेले और बेहद सजे-धजे आवासों के साथ शानदार सम्बन्ध थे। यह हर तरह के व्यापारिक उद्यमों में पैसा लगाता था, उनमें औरों के अलावा आरों

की चेन शॉप्स (बी.क्रेस्टन के ज़बर्दस्त प्रतिद्वंद्वी) और प्रान्तों में इस श्रेणी की छोटी संस्थाओं की एक पूरी शृंखला शामिल थी।

कॉमर्शियल बैंक के लोग बहुत प्रतिष्ठित और फुटकर व्यापार के अच्छे जानकार थे। मैकहीथ का उनका स्वागत काफी मितभाषी था। और पता यह चला कि उन्हें इस संगठन और बी.शॉप्स की स्थिति के बारे में आश्चर्यजनक रूप से अच्छी तरह पता था।

मैकहीथ के पास मिलने का एक सावधानी से रचा गया रुख था।

'पुराने नेशनल बैंक ने मेरे नये कबाड़घरों पर कुछ भी लगाने से इंकार कर दिया क्योंकि उनके पास एक परले दर्जे की वंशावली नहीं है,' ग्रेट रसेल स्ट्रीट जाने से पहले उसने ब्लूम्सबरी से कहा। 'अब उनके पास एक वंशावली है; और इसके अलावा अब एक तीखी प्रतियोगिता है; यह हमारे सस्ते मालों के स्रोत के प्रति जिज्ञासा को काफी कमज़ोर करेगी। मुझे कहना होगा कि ये कबाड़घर बहुत सस्ते हैं, नहीं तो वे मानेंगे नहीं कि वह पैसा जो वे मुझे उधार देने जा रहे हैं लाभदायक ढंग से लगाया जाएगा। मगर एक शर्मनाक ब्याज दर का प्रस्ताव रखने के लिए, जिसके लिए वे अवश्य कहेंगे, मुझे या तो कबाड़ घरों को *इतना* ज़्यादा सस्ता बताना पड़ेगा कि वे इसके स्रोत के बारे में पूछने को मजबूर हो जाएँ, या फिर मुझे एक ऐसा मूर्ख बनना पड़ेगा जिसने खुद को बरबाद कर लिया है। वे निराशाजनक संकट में फँसे लोगों से प्यार करते हैं। मेरा यकीन मानो ब्लूम्सबरी मेरी हालत में एक निराश व्यक्ति दिखना मेरे लिए मुश्किल नहीं होगाः मैं हार गया हूँ।'

तो मैकहीथ एक ठण्डे व्यापारी जैसा नहीं बल्कि एक बरबाद हो चुके याचक जैसा दिखा। पीले चेहरे और माथे पर पसीने की बूँदों के साथ उसने माना कि उसके संसाधन अब समाप्ति की कगार पर हैं। वह भरोसे के साथ एक विस्तृत प्रस्तावित योजना के साथ नेशनल क्रेडिट बैंक के पास गया था और उसके आत्मविश्वास का लज्जाजनक ढंग से दुरुपयोग किया गया। इन लोगों ने ठण्डे ढंग से उसके विचारों को चुराया और उनको लेकर क्रेस्टन की संस्था के पास चले गये। अब उसके पास विशाल कबाड़घर आ गये थे जिनका उत्तरदायित्व लेने की उसने कसम खाई थी और जिनके लिए सी.पी.बी. बहुत अधिक किराया और ब्याज़ दर माँग रही थी।

उसे उन आवश्यक पैसों की कमी थी जिसके बूते वह अपनी दुकानों का विस्तार करने और उधार व्यवस्था करने में सक्षम हो पाता। सी.पी.बी. से अनुरोध

करके इन कबाड़घरों को देखा जा सकता था।

जाँच-पड़ताल लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर में हुई और उससे उल्लेखनीय रूप से उत्साहवर्द्धक परिणाम निकले। रसीदें और सूचियाँ प्रस्तुत की गयीं जिनमें डैनिश और फ्रांसीसी संस्थाओं की रसीदें और मालों की सूचियाँ थीं।

कॉमर्शियल के निदेशकों के चेहरे जाँच के दौरान स्पष्ट रूप से प्रसन्न हो गये।

लेकिन जब मैकहीथ और ब्लूम्सबरी अगले दिन बैंक में आए, तो उन्होंने अचानक जैक्स और हेनरी ऑपर बंधुओं के बगल में बेहद यहूदी रंग-ढंग के एक मोटे सज्जन को बैठे देखा। यह मि.आई.आरों, आरों चेन शॉप्स के मालिक थे, जो, जैसा कि जैक्स ने समझाया ऑपर बन्धुओं के साथ काम करते थे।

छोटे ऑपर ने बहुत ही शिष्ट आवाज़ में कहा, 'मि.आरों, जिनका नाम बेशक आपसे अंजाना नहीं है, आपके विचारों में काफी दिलचस्पी रखते हैं, सज्जनो।'

मैकहीथ को थोड़ा सदमा-सा लगा।

आई.आरों सबसे अच्छे इलाकों में स्थित कम-से-कम अट्ठारह बड़ी दुकानों का मालिक था और उनकी तुलना में बी.शॉप्स एक विशालकाय, खाए-पिए न्यू फाउण्ड लैण्ड (एक विशाल शिकारी कुत्ता-अनु.) के बरक्स जुओं-चिल्लरों से भरे एक सड़कछाप खजुहे कुत्ते के समान थीं।

कुछ मिनटों के लिए तो मैकहीथ यही सोचता रह गया कि फौरन उस कमरे से निकल जाना बेहतर नहीं होगा। उससे यह जानने के लिए दोनों ऑपरों पर सिर्फ एक निगाह डालनी पड़ी कि आरों के समर्थन के बिना कोई बातचीत नहीं करेंगे। उसे यह प्रबल अहसास हुआ कि उसे टोपी पहना दी गयी है, एक ऐसा अहसास जिसे बाद में उसे अक्सर याद करना था। लेकिन उसकी स्थिति उसे पीछे हटने की इजाज़त नहीं देती थी। उसे पैसों की ज़रूरत थी।

मैकहीथ ने अपनी कहानी दुहरायी और महान आरों ने फटी आवाज़ में कहा कि ठीक इसी चीज़ की उम्मीद उसने क्रेस्टन से की होती। उसकी राय में, जो वह अक्सर मज़ाकिया लहज़े में जाहिर करता, क्रेस्टन एक अपेक्षाकृत नौजवान आदमी, एकदम बेशरम था और कैसे भी पैसा बनाने पर तुला था। अपनी नौजवानी के बावजूद या शायद इसी वजह से वह उन कुछ पुराने ढंग-ढर्रे वाले व्यापारियों की एक ठेठ मिसाल था, जो जनता को ठगने के लिए औकात-भर सबकुछ करते हैं। वह, आरों, किसी भी तरह नैतिकतावादी नहीं था, वह तो

अनैतिकता से मनोरंजन करता था, लेकिन धन्धे में वह इससे दूर ही रहता था। यह ख़तरा मोल लेने लायक सौदा नहीं था।

उसने सौम्यता के साथ मैकहीथ के घुटने पर थपकी मारते हुए कहा, 'इकाई मूल्यों की आपकी तरकीब बुरी नहीं है, लेकिन आपके कबाड़घर,' और वह ब्लूम्सबरी की तरफ घूम गया जो सी.पी.बी. की नुमाइंदगी कर रहा था, 'और बेहतर ही है। आप मि. मैकहीथ के पास कैसे चले गये? आपको सीधे मेरे पास आना चाहिए था। लेकिन मैं समझता हूँ कि अब आपका रास्ता वाया मि.मैकहीथ के ही है। हमारे छोटे बी.शॉप भाइयों को शामिल कर लिया जाएगा।'

मैकहीथ ने उसे कुछ कौतुक के साथ सुना। उसे उसके मज़ाक घटिया लगे। उसने कबाड़घरों को आरों के साथ साझा करने की कोई चाहत नहीं महसूस की। केवल ज़ोरदार आत्मनियंत्रण के बाद ही वह क्रेस्टन द्वारा अपमानित एक छोटे आदमी की भूमिका को निभा पाया।

आरों बहुत गदगद मालूम हुआ, लेकिन मैकहीथ ने ग़ौर किया कि जब भी क्रेस्टन का नाम आया उसकी कनपटी पर एक हल्की लाली दौड़ जाती। उसे क्रेस्टन के साथ कुछ हिसाब चुकता करना था।

मामला यह था कि क्रेस्टन अभी काफी उत्थान पर था। यहाँ तक कि कॉमर्शियल बैंक के भद्रजनों के भी इस पर अपने ही विचार थे। नेशनल क्रेडिट बैंक उनके लिए वही था जो क्रेस्टन आरों के लिए। वो डेढ़ सदी भूसम्पत्ति में लेन-देन करते थे, फुटकर व्यापार से वे क्या चाहते थे? कुछ फफूँद लगी तिजोरियों के साथ एक छोटी-सी अनुद्यमी संस्था। कॉमर्शियल इतनी छोटी संस्था नहीं थी कि वह प्रतिस्पर्द्धात्मक ईर्ष्या महसूस करे, मगर फुटकर व्यापार में अपने प्रभाव के बारे में उसकी काफी ऊँची राय थी। व्यापार की इस शाखा में कुछ भी करने का वह अपना *अकेला* प्राधिकार मानता था। तेज़ और बेईमानी वाले सौदों में हिस्सा लेने का उसका कोई विचार न था। इसका अभियान था *फुटकर व्यापार की नैतिकता* पर निगाह रखना।

यह उसके लिए बिल्कुल साफ़ था कि मैकहीथ की किस्म के लोगों से चिमटी के साथ ही निपटा जा सकता है, सीधे हाथ से नहीं; लेकिन नर्मी से कहा जाय, तो इस मामले में ऐसा लग रहा था कि एक कुछ सन्देहास्पद से व्यक्ति के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार हुआ था। कोई भी देख सकता था कि वह बुरी तरह व्यग्र था। वह एक टूट चुके इंसान का प्रभाव छोड़ रहा था।

उसने सीधे-सीधे यह दिखलाया नेशनल क्रेडिट बैंक और क्रेस्टन के ख़िलाफ़

बदले की भावना से भरा हुआ था। ऐसा लग रहा था कि वह इन सज्जनों को उन्हीं के हथियार से सबक सिखाने के लिए कुछ भी कर गुज़रता, यहाँ तक कि व्यकितगत कुर्बानी भी। प्रत्यक्षतः अपनी ही वाकपटुता के प्रवाह में बहते हुए उसने क्रेस्टन को कुचलने के लिए आई.आरों को अपने कबाड़घर ज़बर्दस्त कम कीमतों पर देने की पेशकश की, और बदले में उसने सिर्फ यह माँग की कि बी. शॉप्स को भी, जिनके प्रति उसकी कुछ बाध्यताएँ थीं, व्यापार में शामिल किया जाय, जिनकी एक अतिरिक्त वजह यह भी थी कि इसे वे छोटे स्वतन्त्र लोग चलाते थे जिन्होंने उस पर विश्वास किया था।

कॉमर्शियल बैंक के भद्रगणों और आई.आरों ने भी तय किया कि इस बी. शॉप नेपोलियन के बदले की भावना का लाभ उठाने के लिए, जो उसके अस्पष्ट अतीत की ओर इशारा करती प्रतीत होने वाली एक कमज़ोरी थी, इस योजना की और करीब से जाँच की जाय।

मि.मैकहीथ ने कॉमर्शियल बैंक के अध्यक्ष मि. जैक्स ऑपर की ओर से वॉर बॉर्न किले पर अपना एक सप्ताहांत गुज़ारने का आमन्त्रण स्वीकार किया।

वॉर बॉर्न किला फुटकर व्यापार के लिए वही हैसियत रखता था, जो राजनीति के लिए डॉनिंग स्ट्रीट की ऑर व्यापार की एक अन्य शाखा के लिए वॉल स्ट्रीट की थी। सारे 'तार' वहीं से जुड़ते थे।

मैकहीथ काफी उत्तेजना में सी.पी.बी. के कार्यालय में आया और फैनी ने किसी को ब्लूम्सबरी को तत्काल ढूँढकर लाने के लिए भेज दिया। मैकहीथ ने बतलाया कि वॉर बॉर्न किले में लोग मछली कैसे खाते हैं इसकी कोई जानकारी नहीं है। ऑपर बन्धु वहाँ ज्यादा लम्बे समय से नहीं थे।

फैनी ने जैक्स ऑपर के साथ एक बेलाग-लपेट बातचीत से इस उलझन को सुलझा दिया। वह बगल में पूरी जानकारियों से भरा एक पोर्टफोलियो दबाए कॉमर्शियल बैंक गयी और ऑपर के उसके प्रमुख के चाल-चलन के बारे में हर सम्भव भ्रमों को मिटा दिया। उसने कहा कि जिन लोगों को पैसों को हाथों से उलीचने की आदत होती है, वे तश्तरियों से मांस उलीचने में भी अपने हाथों का ही इस्तेमाल करते हैं। तो अगर वह ब्लूम्सबरी को भी आमन्त्रित करेंगे, तो आपके पास एक ऐसा व्यक्ति भी होगा जो मैकहीथ जितना प्रतिभावान नहीं होगा। नतीजतन, ऑपर ने मैकहीथ को भी आमन्त्रित कर लिया।

लेकिन इतने पर भी इस नौजवान ने पूरे मामले का सर्वनाश कर ही डाला था। उसकी ऑपर बन्धुओं के बारे में मैकहीथ जितनी ऊँची राय नहीं थी क्योंकि

वह पैसे के बारे में थोड़ा-बहुत समझता था और हर कीमत पर जेनी को अपने साथ लाना चाहता था। उसे लगता था कि यह एक भारी मज़ाक होगा। उसने सोचा कि वह कहेगा कि जेनी उसकी बहन है और फिर उसके सबसे ताज़ा-तरीन नाचों का प्रदर्शन कराएगा। उसने पूर्वानुमान किया कि इससे आश्चर्यजनक नतीजे प्राप्त होंगे।

फैनी ने बड़ी मुश्किल से उसे रोका।

उसने सावधानीपूर्वक मैकहीथ के कपड़ों का निरीक्षण किया और उसकी गुप्ती उससे ले ली।

'अब तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं है,' उसने कहा।

लेकिन आखिरी क्षण उसने बछड़े की चमड़ी के स्वाभाविक रंग वाले दस्ताने खरीदे जिनपर काले धागों की मोटी सिलाई थी, जिन्हें फैनी ने नहीं देखा। ब्लूम्सबरी ने बखुशी उनपर ग़ौर किया।

वॉर बॉर्न किले की यात्रा के दौरान ब्लूम्सबरी ने मैकहीथ को इस बात पर सहमत किया कि यह उसके लिए एकदम अनिवार्य है कि वह अपनी आदत में रचे-बसे तौर-तरीकों को न छोड़े; नहीं तो ऑपर बन्धु मैकहीथ को नवधनाढ्य नहीं समझेंगे। यह ओजस्वी भाषण जो ब्लूम्सबरी ने दिया वह वॉर बॉर्न किले में मैकहीथ की घुसपैठ से शुरू होने वाले कारोबार में उसका एकमात्र योगदान था।

सप्ताहान्त मैकहीथ की आशा से कहीं अधिक खुशनुमा रहा।

वे काफी देखरेख में रखे गये लॉन पर टहले और शिकार का मांस व मृगमांस खाया तथा अंगूर की शराब पी। लाईब्रेरी में पुराने चमड़े की गन्ध व्याप्त थी और मैकहीथ *éditions de luxe* नामक अश्लील पत्रिका की प्रशंसा के फैनी के पाठों का अच्छा इस्तेमाल करने में सफल रहा।

मि. जैक्स ऑपर अविवाहित थे और सौन्दर्यबोधात्मक वस्तुओं, मुख्यतः लाईकर्गस की आत्मकथा में अपने को व्यस्त रखते थे। कारोबार की चालक शक्ति मि.हेनरी ऑपर थे।

ब्लूम्सबरी एक हद तक फिजूल ही था। मछली वाली समस्या पैदा ही नहीं हुई।

किले में जिस तरह कारोबारी मामलों का निपटारा होता था, मैकहीथ उस पर आश्चर्यचकित था। पैसे का कभी जिक्र तक नहीं होता था। ब्लूम्सबरी ने पाया कि महाशय आरों को सिर्फ इसलिए आमन्त्रित नहीं किया गया था क्योंकि वह जैक्स ऑपर की रुचि के हिसाब से पैसों के बारे में कुछ ज़्यादा ही बात थे।

जैक्स ऑपर पैसे को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। वह कहते थे : इन चीज़ों को किसी तरह ऐसे निपटा देना चाहिए कि जीवन को सह्य बनाया जा सके। उस शाम एक रात्रि भोज के बाद वह विषय पर वापस आए।

'मानी हुई बात है कि आदमी जीने के लिए खाता है। लेकिन ज़रूरी नहीं कि जिस आदमी ने खा लिया है उसने जी भी लिया है। मानवता की असली प्रेरक शक्ति आत्माभिव्यक्ति की ज़रूरत है, यानी, व्यक्तित्व का सततीकरण। यह कैसे होता है, यह अभी मुद्दा बिल्कुल नही है। जन्मजात घुड़सवार स्वयं को घुड़सवारी द्वारा अभिव्यक्त करता है। घोड़ा उसका है या नहीं यह अहमियत नहीं रखता। वह घुड़सवारी करना चाहता है। दूसरा आदमी मेज़ें बनाना चाहता है। वह खुश तब होता है जब उसकी मनपसन्द लकड़ी उसके हाथ में होती है और वह अपने औज़ारों के साथ खुद को कमरे में बन्द कर सकता हो। यही जीने का पूरा राज़ है। एक इंसान जिसे कुछ भी नहीं चाहिए, जिसका हर काम पैसा कमाने की चाहत से प्रेरित होता है, हमेशा एक ग़रीब आदमी होता है, अगर उसे उसके पैसे मिल भी जाएँ। दरअसल वह अभावग्रस्त होता है। वह खुद कुछ होता नहीं और इसलिए कुछ रचने की चाहत भी उसमें नहीं होती।'

हेनरी ऑपर के बिना मैकहीथ के लिए बातचीत को घुमाकर चेन स्टोर्स और उधार पर लाना टेढ़ी खीर थी।

कॉफी के बाद छोटे दुकानदारों की स्वतन्त्रता पर अपने सिद्धान्त की एक तस्वीर खड़ी करने में बहुत समय नहीं लगा। जब वह रंग में आ गया तो उसने समझाया कि किस तरह से वह अपने सिद्धान्त आंशिक तौर पर कम-से-कम, आरों की दुकानों जैसी बड़ी दुकानों में भी जाना पसन्द करेगा।

ज़बर्दस्त दृढ़ता और काफी दोहराव के साथ उसने सभी को निश्चिन्त कर दिया कि यह सोचना निश्चित रूप से एक अन्धविश्वास है कि सबसे ज़्यादा लाभ ग्राहकों से आता था। मुनाफे का असली स्रोत तो कर्मचारी थे और हमेशा रहेंगे।

आखिर ग्राहक तो सिर्फ इसलिए थे ताकि व्यापारी अपने कर्मचरियों और मज़दूरों का इस्तेमाल कर सकें।

लेकिन कर्मचारियों का प्रमुख उद्देश्य तो साझा आत्महित ही था। मैकहीथ ने दुखड़ा रोया कि दुकानदार अपने प्रतिष्ठान के कल्याण की क्या परवाह करता है? जब तक उसे अपना वेतन मिलता रहता है तब तक वह पूरी तटस्थता के साथ ग्राहकों को बाहर खड़ा देखता रहता है। एकमात्र समाधान यह है कि धन्धे में

उसकी दिलचस्पी पैदा की जाय। संक्षेप में कहें तो, आपको उन्हें रिश्वत देनी ही पड़ेगी।

'कहीं आप लाभ-सहभाजन के बारे में तो नहीं सोच रहे?' ऑपर ने भय से पूछा।

'बिल्कुल यही बात है।'

'लेकिन वह तो भयंकर रूप से खर्चीला है,' ऑपर ने कहा।

मैकहीथ ने जवाब दिया, 'इस बात पर मैं आप से सहमत नहीं हो सकता। वितरण स्वाभाविक तौर पर प्रतिष्ठान पर उधारी रसीद के रूप में दिया जाएगा। यानी कि दुकानदार ग्राहक के रूप में दर्ज किये जाएंगे।'

हेनरी ऑपर कुछ बड़बड़ाया। लेकिन उस किताबी-कीड़े जैक्स ने ग़ौर से और कुछ ढूँढती निगाहों से देखा।

कुल मिलाकर वह शाम सफलतापूर्ण रही। वे काफी जल्दी ही सोने चले गये, लेकिन मैक सो नहीं पा रहा था। उसने ब्लूम्सबरी को उच्च वर्गों के पतन पर भाषण दिया।

अपने गेलिस किनारे की और झुलाते हुए, टहलते हुए कहा, 'इन लोगों में संजीदगी की कमी है। उनकी बातें सुनकर कोई सोचेगा कि वे सिर्फ इससे जुड़ी उत्तेजनाओं की ख़ातिर अपना पैसा बनाते हैं। यह तो बिल्कुल उस कुत्ते जैसा होगा जो नदी में गिर जाता है और फिर कहता है वह तो बस मज़े के लिए किनारे तक तैर रहा है। उन्हें लगता है कि मैं नहीं जानता कि उन डेढ़ सदियों के फुटकर व्यापार में आने से उनकी रातों की नींद उड़ने वाली है। क्रेस्टन के पास पैसा है; इसका मतलब है कि आरों को भी पैसों की ज़रूरत पड़ेगी। मुझे वे यहाँ लाए तो ऐसे हैं मानो मेरे चरित्र की जाँच करना चाहते हों, लेकिन तय बात है कि ये दरअसल मेरे कबाड़घर हैं जिनमें उनकी दिलचस्पी है। अगर वे यह नहीं जानते, तब तो और भी बुरी बात है उनके लिए। मेरे कबाड़घरों के बिना आरों अपनी ऊँची कीमतों को कभी नीचे नहीं कर सकता। और लाईकर्गस, या जो भी उस पुराने यूनानी का नाम था, के बारे में की गयी बकवास के बावजूद जैक्स सामानों कीमत को काफी ग़ौर से सुन रहा था। मेरे विचार से तो ये लोग अब और सवाल नहीं पूछेंगे। वह पुरानी कहावत कि "कुछ चीज़ें चुराए बिना हासिल नहीं की जा सकतीं" अब पुरानी पड़ चुकी है, क्योंकि चोरी में बड़े पैसे लगते हैं। तुम देखना कि वह पैसा जिसे वे इतना तुच्छ समझते हैं, मैं उनसे निकलवाता हूँ या नहीं।'

मैकहीथ ने जैक्स की हेनरी से कहीं ज़्यादा भर्त्सना की, उसने उसे मूर्ख

कहा; लेकिन साथ ही, जैसा कि उसने अपने मित्र को समझाया, जैक्स ऑपर ने ही अपने अभी तक शंकालु भाई की उसके बारे में एक अनुकूल धारणा बनाई।

उसने कहा, 'इस साधारण आदमी के पास विचार हैं, और भी महत्वपूर्ण बात यह कि उसके पास एक सहज वृत्ति है। दुकानदार से ग्राहकी की प्रतिस्पर्द्धा के मूल्य की उसकी धारणा पूरी तरह यूनानी है। आरों की तरह वह सिर्फ सामान्य बिक्री अभियानों को ही नहीं देख रहा है; अपने मन की आँखों से वह रथों की दौड़ देख रहा है। उसका मुनाफा ही वह लॉरेल का मुकुट है जो विजेता के मस्तक पर सजता है। वह इतना सबकुछ नहीं जानता, लेकिन वह ऐसा महसूस करता है। वह दुकानदार के पूर्णतया विकसित, सामंजस्यपूर्ण *व्यक्तित्व* की वाजिब ही माँग करता है। कोलोकैसेडिया, जैसा वह कहता है, मैंने एस्लिबिएडस को अपने सामने देखा। यह बुरा नहीं है!'

सोने से पहले, छोटे ऑपर ने आरों के दुकानदारों की अभिभूत ग्राहकों को पे-डेस्क पर वैसे ही घसीटकर लाते हुए कल्पना की जैसा कभी तुमने एकिलस ने हेक्टर को घसीटा था।

इस सप्ताहान्त के बाद आने वाले हफ्ते में आरों की चेन शॉप्स, कॉमर्शियल बैंक और सी.पी.बी. के बीच की व्यवस्था अनुमोदित हो गयी। अब से आरों को सी.पी.बी. से बी.शॉप्स जितनी कीमतों पर ही माल खरीदना था।

जिन करारनामों पर ब्लूम्सबरी को सी.पी.बी. के लिए दस्तख़त करने पड़े वे भयानक थे।

मैकहीथ ब्लूम्सबरी से आँखें मिलाने की हिम्मत न कर सका।

फिर गली में उसे हिस्टीरिया के दौरे पड़े। शर्मिन्दा, लेकिन ज़्यादा चकित हुए बिना, ब्लूम्सबरी उसे पास के एक चायखाने में ले गया। वहाँ उन्होंने ब्रेड और मक्खन मँगवाया। यह सब मैकहीथ के पुनः आत्म-नियंत्रण पा लेने के कुछ देर पहले हुआ।

चायखाने से बाहर निकलते हुए मैकहीथ ने ब्लूम्सबरी से कहा, 'आरों को जो कीमतें देनी हैं, उनपर तो हम सामान चोरी भी नहीं कर सकते। लम्बे समय तक टिके रहना असम्भव होगा। ज़्यादा से ज़्यादा हम यही कर सकते हैं कि क्रेस्टन की तरह हम भी बिक्री-सप्ताह चलाएँ, और यही ऑपर बन्धु चाहते हैं। वे हमारे साथ न्यूनतम सम्भव समय के लिए सौदा चलाने की बाध्यता चाहते हैं। हमारे मुकाबले वे बहुत ऊँचे लोग हैं। उनके दफ्तर ही देख लो, ब्लूम्सबरी! संगमरमर

और काँसा! मेरी कभी समझ में नहीं आया कि क्यों जनता ऐसी इमारतों में अपना पैसा लगाती है, जो इतने महँगे पड़ते हैं और हमेशा पड़ते रहेंगे। जाहिरा तौर पर लोग सोचते हैं कि ऐसे प्रतिष्ठान जो संगमरमर और काँसे का खर्च उठा सकते हैं उनको और पैसों की ज़रूरत नहीं पड़ती और इसलिए *उनका* पैसा वहाँ सुरक्षित है।'

पुराना नेशनल क्रेडिट उसकी पसन्द की लिहाज़ से ज़्यादा उपयुक्त था। इसके गन्दे दफ्तर यह कहते प्रतीत होते थे : हम अपने ग्राहकों से ज़्यादा नहीं कमाते।

उसने अफसोस के साथ नेशनल क्रेडिट बैंक के बारे में सोचा, वह दगाबाज़ पुराना दोहरी चाल वाला अभयचर। राष्ट्रीय *के बगैर* होने का अर्थ था राष्ट्रीय के *विरुद्ध*। मगर नेशनल के पास उसकी पत्नी का दहेज था। मैकहीथ जब भी इस बाबत सोचता तो वह कड़वे अहसासों से भर जाता। उसके दिमाग में एकदम साफ़ था कि अब उसकी लड़ाई इस दहेज के ख़िलाफ़ निर्देशित है; दरअसल, उसकी मौजूदा हालत इतनी अजीब थी, कि उसे इसे नष्ट करने का हर प्रयास करना था अगर उसे पूरी जंग जीतनी थी। युद्ध किसी क्षमादान की इजाज़त नहीं देता था; वह अपने विरोधियों के ख़ात्मे के साथ ही जीत सकता था।

मैकहीथ अपने सामने एक कड़े परिश्रम का समय देख रहा था।

कॉमर्शियल को फँसाने के जाल के रूप में सी.पी.बी. का उद्घाटन काफी ख़र्चीला रहा था; अगर उसे अपनी ज़रूरतमन्द बी.शॉप्स को विस्तारित करने की आज्ञा मिल गयी होती तो, उनमें ढेर सारे मालों की आपूर्ति हो गयी होती और वे अच्छी-खासी सफल हो गयी होतीं। उल्टे सबसे बुरी चीज़ हुई; उसे आरों को अपनी योजना में शामिल करने पर मजबूर कर दिया गया-जो उसका श्रेष्ठ प्रतिद्वंद्वी था! उसने अपने कबाड़घरों का सिर्फ इसलिए विस्तार किया था कि एक दिन उन्हें चुरा लिया जाय! एक बार फिर वह वास्तव में उस जगह से आगे नहीं जा पाया जहाँ वह पहले था। अगर किस्मत की कोई लहर मैकहीथ की मदद के लिए न आयी तो वह अब भी, पहले की तरह हार जाएगा। उसकी हालत उसी आदमी की तरह थी जो लाल सुलगते कोयलों पर खड़ा था। वह हवा में उछलना कभी बन्द नहीं करता, हालाँकि वह बस एक गर्म स्थान से दूसरे गर्म स्थान पर चला जाता जो उतना ही असह्य होता था। उसके खुशी के क्षण वही होते थे, जब उसके पैर हवा में होते।

फिलहाल, मैकहीथ के हाथ में अपनी बी.शॉप्स की बेहतरी के लिए कुछ

पूँजी थी। अब उन्हें बढ़ाया और फिर से मालों से भरा जा सकता था। ओ'हारा के 'खरीदारों' की बदौलत बकाया हुई मजदूरियाँ दे दी गईं।

मैकहीथ ने न्यूगेट में इकट्ठा हुए बी.शॉप मालिकों के समक्ष एक प्रोत्साहित करने वाला भाषण दिया।

पहले उसने घोषणा की कि उसने निर्णय किया है कि अब से वह अपना पूरा ध्यान उन्हें, यानी बी.शॉप्स को देगा। इस काम के लिए अपने आप को ख़ाली करने के लिए उसने ख़रीदारी पक्ष को भी छोड़ दिया है, जिस पर सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड नाम के एक बहुत प्रभावशाली प्रतिष्ठान ने नियंत्रण कर लिया है। यह कम्पनी शानदार सामानों की पेशकश करती है, जो, फिर भी, सस्ते पड़ते हैं अगर बड़ी मात्रा में लिए जाएँ। यहाँ सी.पी.बी. को अन्य दुकानों को भी उतनी ही फायदेमन्द शर्तों की पेशकश करने से रोकने का भी सवाल था, हालाँकि बी. शॉप्स उनके सभी सामानों को लेने की स्थिति में कभी नहीं होंगी।

उसने बोलना जारी रखा :

'जैसा कि आप सबने सुना होगा, बी.शॉप्स ने कल संयुक्त रूप से आरों की चेन शॉप्स के साथ एक घनिष्ठ व्यापार सहयोग कायम किया। सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड आरों की दुकानों को भी माल देगा। शक्तिशाली आरों की व्यापारिक संस्था की ओर से इस सनसनीखेज़ कदम का क्या मतलब है? सज्जनो, इसका अर्थ है विजय, बी.शॉप्स के लिए एक अभिभूत कर देने वाली विजय। *और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि* बी.शॉप्स आदर्श *के लिए विजय। यह आदर्श क्या है? सज्जनो, यह वह आदर्श है जो आधुनिक उद्योग के उपहार जनता के निर्धनतम वर्गों की मदद के लिए लाते हैं। जनता के एक आदमी के तौर पर, आम लोगों के बीच से आने वाले एक इंसान के रूप में - आप सोच सकते हैं कि ये बहुत प्रेरणादायक मुहावरे हैं। लेकिन सज्जनो, आप ग़लती पर हैं। ये साधारण लोग ही हैं जो अहम हैं। वह व्यापारी जो एक कौड़ी की, मज़दूर के खून-पसीने से कमाई गई कौड़ी की उपेक्षा करता है, वह एक भारी भूल करता है। वह कौड़ी किसी अन्य कौड़ी जितनी ही अच्छी है। और एक दर्जन एक से बारह गुना ज़्यादा होता है। यही* बी.शॉप्स *का आदर्श है। और* बी.शॉप्स *के इस आदर्श ने, आपके आदर्श ने अपनी दर्जनों शानदार शाखाओं वाले शक्तिशाली आरों के प्रतिष्ठान पर एक निर्णायक विजय दर्ज़ की है। भविष्य में आरों की दुकानें भी ग़रीब लोगों के लिए अपने दरवाज़े खोल देंगी और इस प्रकार सस्तेपन और* सामाजिक प्रगति

के आदर्श की सेवा करेंगी। आप में से कुछ लोग विश्वास नहीं कर रहे हैं-क्योंकि हर जगह कमज़ोर और शिकायत करते रहने वाले बड़बड़िया लोग होते हैं-और मैं उन्हें खुद से यह कहते हुए सुन सकता हूँ : आरों की शक्तिशाली व्यापार संस्था हम छोटे दुकानदारों के साथ काम करना क्यों चाहने लगी? और इस सवाल पर हमें मानना ही होगा : बार्गेन शॉप्स की नीली आँखों की वजह से नहीं! हम प्रकृति में कहीं भी नज़र दौड़ाएँ भौतिक लाभ के बिना कुछ भी नहीं किया जाता! जब भी कोई व्यक्ति किसी दूसरे से कहता है : मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ, आइये साथ में काम शुरू करें...वगैरा, तो इसका मतलब है, सावधान हो जाइये! क्योंकि लोग केवल इंसान ही हैं, कोई फरिश्ता नहीं, और वे सबसे पहले अपने बारे में सोचते हैं। कोई भी काम सिर्फ दयालुतावश नहीं किया जाता! ताकतवर कमज़ोर पर काबू पा लेता है, और इसलिए, आरों के साथ हमारे परस्पर काम में, पूरे दोस्ताने में ही, सवाल यह होगा कि कौन ज़्यादा ताक तवर है? एक लड़ाई? हाँ, भद्रजनो, एक लड़ाई! स्वस्थ, सोचने वाला व्यापारी लड़ने से नहीं डरता। केवल कमज़ोर डरते हैं और उन पर नियति का चक्का चलेगा, उन्हें कुचल और तबाह कर डालने के लिए! आरों का प्रतिष्ठान हमसे मिल गया है, इसलिए नहीं कि हमारी नीली आँखें उन्हें आकर्षित करती हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें मिलना ही था; क्योंकि वे बी.शॉप्स के कठिन, सहिष्णु और आत्म-बलिदानी काम की इज़्ज़त करते हैं। और इन गुणों को अभी और भी मज़बूत बनाना ही होगा। हमारी शक्ति हमारे **उद्यम** और हमारी **सन्तुष्टता** पर निर्भर करता है। हर कोई जानता है कि हममें से प्रत्येक अपना हिस्सा पूरा करता है! और इसलिए मैंने भी, भविष्य में अपनी सभी क्षमताओं को आपको और बी.शॉप्स को समर्पित करने का फैसला किया है। भौतिक लाभ की वजहों से नहीं बल्कि इसलिए क्योंकि मैं इस आदर्श में विश्वास करता हूँ और क्योंकि मैं जानता हूँ कि स्वतन्त्र फुटकर व्यापार व्यापार की जीवन-रेखा है और एक सोने की खान भी!'

भाषण लगभग आदमियों और औरतों समेत पचास लोगों और कुछ पत्रकारों द्वारा सुना गया, और इसने काफी प्रभाव छोड़ा। भीड़ में तमाम कमज़ोर-से या कमज़ोर दिखने वाले लोग थे, लेकिन जैसा कि हर कोई जानता है, व्यक्तिगत प्रयास के लिए की गई अपील बिरले ही अनसुनी जाती है।

मैकहीथ अपनी सफलता पर आराम से सन्तुष्ट हो सकता था, मगर वह फैनी क्राइस्लर के साथ उस मजमे से चला गया और किसी तरह से पॉली के कान में यह ख़बर पड़ी।

एक शाम जब निश्चय ही काफी देर हो गयी थी, मैकहीथ ने ननहेड में उसे अपने घर के सामने खड़ा पाया। उसने किसी बी.शॉप में उसके पते के लिए पूछा था और उसे दरवाज़े की सीढ़ी पर बैठे पहले ही कई घण्टे बीत चुके थे। वह एक हद तक उदास मनःस्थिति में थी और उसने फौरन कहा कि वह उसके बिना और नहीं जी सकती।

उसने दरवाज़ा खोलते हुए उसे नये घर की स्थिति के बारे में चेताया जिसका फौरी तौर पर सिर्फ एक कमरा सजाया गया था। बड़े घर को छोड़ने का कारण उसने उसे ऊपर जा कर समझाया, जब वह वहाँ रखी एकमात्र कुर्सी पर अपना झोला अपने पैरों पर रखकर बैठ गयी।

उसने उसे गम्भीरता से बताया कि उसके पिता के उसके प्रति रवैये ने उसके लिए हालात मुश्किल कर दिये थे। उसने खुल्लमखुल्ला माना कि उसने उसके दहेज पर निगाहें रखी थीं या कम-से-कम अपने उधार में सुधार की उम्मीद तो की ही थी।

उसने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि तुम्हें यह जानकर निराशा नहीं हुई होगी कि तुम्हें एक ऐसा पति मिला है जो कौड़ी-छदाम तक गिनता है। अपनी पूरी जिन्दगी भर मैंने हाड़तोड़ मेहनत की है; और अब जब कि कामयाबी आँखों के सामने है, तो हर चीज़ अच्छे से निपटाने के लिए थोड़े अतिरिक्त पैसों की ज़रूरत है। मेरी क्षमता के इंसान को देखे-जाने बगैर शादी नहीं करनी चाहिए। उसे सावधान रहना ही चाहिए। उसकी पत्नी उसके लिए एक मदद के समान होनी चाहिए। जब मुझे तुम्हारे प्रति अपनी भावनाओं का अहसास होता है, तब भी मैं साफ़ दिमाग रहकर अपने आपसे ठण्डे ढंग से पूछता हूँ : क्या यह तुम्हारे लिए एक सही पत्नी है? मेरी सहज वृत्ति कहती है : हाँ। और मेरी जाँच-पड़ताल ने, जो मैंने अधिकतम समझ-बूझ से की, साबित कर दिया कि मेरी सहज वृत्ति ग़लत नहीं रही थी। किपलिंग भी आखिर क्यों कहते हैं : बीमार आदमी मरता है और ताकतवर आदमी लड़ता है।'

इस प्रकार अब वह मौजूदा हालात का सामना धैर्य के साथ कर सकता था।

अच्छा तो फिर। उसने घर बेच दिया था। वे यहाँ रह सकते थे, अगर वह अपने पिता के पास लौटना नहीं चाहती थी जिनका दुश्मनाना रुख फिलहाल सबसे अवांछनीय होता। क्यों होता, इसकी चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

वह थोड़ा रोई और फिर उसने मि.कोक्स के दुराग्रह के बारे में बात की जिसके सामने उसकी अरक्षित रूप से नुमाइश हो गयी थी। वह फौरन ही यह

बात समझ गया, और जब उसने बताया कि उसे बच्चा होने वाला है, कि एक नन्हा मैकहीथ उसके दिल के नीचे बड़ा हो रहा है, तो उसने अपना सबसे अच्छा पहलू दिखाया।

उसका लहज़ा पहले से अलग था। वह अब उससे एक निश्चित आकस्मिक लज्जा के साथ व्यवहार कर रहा था, जिसने पॉली को काफी अच्छी तरह खुश कर दिया।

खुशी-खुशी उसने माना कि वह उसका इंतज़ार करती रही थी कि वह एक रात उसके पास आएगा। उसकी बालकनी तक चढ़ना कोई मुश्किल काम नहीं था। नाखुशी से अचम्भित होकर उसने जवाब दिया कि वह अपनी ही पत्नी के साथ सोने के लिए रात के सन्नाटे में किसी बालकनी पर नहीं चढ़ सकता था। यह उसे पूरी तरह अनुचित लगता था।

उसने अपनी सहमति जतायी।

लम्बे समय तक वह जगा हुआ उसके बगल में लेटा रहा। उसने हाथ सिर के पीछे बाँध रखे थे, और पर्दों से धुँधली चमकों पर नज़रें गड़ाए हुए था।

उसने कल्पना की, *'मैं उसे डिक बुलाऊँगा, मैं उसे हर चीज़ में निर्देशित करूँगा, हर वह चीज़ उसे बताऊँगा जो मैं जानता हूँ। मैं बहुत कुछ जानता हूँ। बहुत सी चीज़ें जो मुझे अपने लिए खोज कर निकालनी पड़ीं, वह सीधे मुझसे बिना किसी प्रयास के ही सीख लेगा। मैं उसके छोटे से हाथ को पकड़कर उसे बताऊँगा कि कोई धन्धा कैसे चलाते हैं और दूसरे लोगों से अपने जुगाड़ू, गैर-भरोसेमन्द नीच बिरादरों से किस तरह से कुछ हासिल किया जाता है। अगर कोई तुम्हारी थाली से दलिया चुराने की कोशिश करे तो तुम उसे अपने चम्मच से मारो, मैं बताऊँगा उसे; बार-बार, हर बार जब तक कि वह समझ न जाए। जब भी तुम कोई अधखुला दरवाज़ा देखो अपना पैर उसमें डालो और फिर धकिया कर घर में घुस जाओ। बस कभी हताश खड़े मत रहो और किसी चीज़ के अपने दामन में गिर जाने का इंतज़ार मत करो। मैं उसे बड़े धैर्य के साथ सिखाऊँगा मगर मैं सख्त भी रहूँगा। तुम्हारा बाप एक अशिक्षित आदमी था, मगर कोई इतिहास का प्रोफेसर उसे नहीं सिखा सकता था कि लोगों को धोखा कैसे दें! तुम विश्वविद्यालय जा सकते हो, मगर कभी मत भूलो कि किसने ऐसा तुम्हारे लिए सम्भव बनाया। तुम्हारे पिता को तुम्हारी शिक्षा के लिए अपने क्रूर विरोधियों की जेबों में काँटा डालकर, एक-एक कौड़ी करके पैसा निकालना पड़ा था। इस पूँजी को बढ़ाना पड़ा था! तुम्हारे ज्ञान को विस्तृत करना पड़ा था।*

लेकिन साथ ही नींव को भी मज़बूत बनाना पड़ा था!'

अपने माथे पर एक गहरी खाँच लिए, मगर पॉली से काफी प्रसन्न, वह सो गया।

अगली सुबह पॉली डेरी से दूध लेकर आयी, कलेजी को उसी तरह पकाना सीखा जैसा कि मैकहीथ को पसन्द था, और अन्य कमरों को व्यवस्थित करने में उसकी मदद की।

उसने कभी फैनी क्राइस्लर का ज़िक्र नहीं किया, न उस रात न फिर कभी।

हाल में मैकहीथ के फैनी क्राइस्लर के साथ सम्बन्ध काफी अन्तरंग हो गये थे और उसे भय था कि वह कुछ दिक्कत पैदा कर सकती हैं। लेकिन उसे बड़ी राहत मिली जब फैनी ने उसके रात में फिर घर जाना शुरू करने पर अपने रवैये में कोई बदलाव नहीं दिखाया। फैनी की भावनाओं को ठेस पहुँचाकर उसे बेहद अफसोस हुआ होता क्योंकि सी.पी.बी. में वह उसके लिए बेहद मददगार थी। वह उसे लाया ही इसलिए था क्योंकि वह मानता था कि फैनी शारीरिक वजहों से जुड़ी है।

उसे भी फैनी की ज़रूरत थी।

क्रेस्टन के बिक्री सप्ताह की मुनादी काफी तूर्यनाद के साथ हुई थी।

एक मीटिंग में, जो कॉमर्शियल बैंक के महोगनी-सज्जित विशाल बोर्डरूम में हुई, यह तय किया गया कि बी.शॉप्स और आरों के चेन स्टोर्स को क्रेस्टन को एक निर्णायक लड़ाई में खींचना चाहिए, एक ज़बर्दस्त विशाल बिक्री सप्ताह से जो तीन हफ्ते बाद शुरू होना है।

9

चूँकि मनुष्य जीता है अपने दिमाग के बूते;
उसे ज़रूरत होती है एक बड़े आकार वाले दिमाग की;
खुद ही आजमा लो तुम। तुम्हारा दिमाग
तो जुओं के एक जोड़े को भी नहीं जिला सकता।
इसलिए, क्योंकि इस जीवन को जीने को,
कोई भी पर्याप्त होशियार नहीं है,
हर मक्कारी और झाँसापट्टी सीखने को
यह जीवन पर्याप्त नहीं है।

तो अपनी छोटी-सी योजना बनाओ
और सोचो कि तुम हो महा-होशियार,
फिर एक और छोटी-सी योजना बनाओ-
ये सब तुम्हें दुविधा में डाल देगा।
इसलिए, क्योंकि इस जीवन को जीने को,
कोई भी पर्याप्त बुरा नहीं है,
फिर भी उनको बदमाश दिखने का प्रयास करते हुए देखना,
अच्छा है।

तो भागो और पकड़ लो अपने भाग्य को
मगर बहुत तेज़ मत भागना,
क्योंकि सबके-सब भाग्य के पीछे ही भागते हैं
और भाग्य सबके पीछे भाग रहा है।
इसलिए, क्योंकि इस जीवन को जीने को
कोई भी पर्याप्त विनम्र और नरम नहीं है।
उसके सारे उत्कृष्ट उद्यम कुछ नहीं,
बस एक और झाँसापट्टी ही है।

(मानवीय प्रयासों की व्यर्थता का गीत)

चौतरफा लड़ाई

मि.पीचम भी एक असाध्य लड़ाई में उलझे हुए थे।

शिपिंग कारोबार की ज़िम्मेदारी अपने कन्धों से हटाने के लिए वह दिनों-रात संघर्ष कर रहे थे। अपने पुराने पेशे यानी भीख माँगने के थोक व्यापार की ओर लौटने के लिए वे एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे थे।

अपनी कहानी की कीचड़ में समाप्ति के उनके डर और अपने से अधिक धूर्त, क्रूर और चालाक व्यक्ति द्वारा झाँसा दिये जाने के उनके अहसास ने उन्हें अपने कारोबार को और फैलाने के ख़यालों से भर दिया, जो कि खुद उत्पीड़न और धोखे के बूते फल-फूल रहा था। वह अपनी मुसीबतों तक से पैसा बनाने के आदी थे।

कभी-कभी वह अहाते में कुकुरशाला के पास खड़े होते थे और फ्यूकूम्बी से ऐसे बात करते थे मानो वह कोई दोस्त हो। वह लंगड़ा आदमी तब तक इस बात पर आश्चर्यचकित रहता था जब तक कि उसे यह अहसास नहीं हो गया कि मि.पीचम सम्भवतः कुत्तों को सम्बोधित कर रहे थे, क्योंकि वह कभी उसको नहीं देखते थे।

एक दिन उन्होंने कहा, *'मैं अखबारों में पढ़ रहा हूँ कि इन दिनों भीख माँगना कुछ ज़्यादा ही बढ़ गया है। यह हास्यास्पद है! ज़्यादातर आप हर कुछ मीलों बाद एक भिखारी को देखते हैं और वह हमेशा वही भिखारी होता है। अगर संख्या से चलें तो आप सोचेंगे कि ग़रीबी नहीं है। मैंने अक्सर अपने आप से पूछा है : ग़रीब कहाँ हैं? जवाब है : हर जगह। वे अपने आपको अपने जैसों की ही भीड़ की आड़ में छिपा लेते हैं। ऐसे कई बड़े शहर हैं जो पूरी तरह उन्हीं द्वारा बसाए गए हैं, लेकिन वे भी उसी तरह छिपे हुए हैं। वे कभी ऐसी किसी जगह पर नहीं दिखते जो खुशगँवार हो। खुली सड़कों से वे दूर ही रहते हैं। वे अधिकांशतः काम करते हैं। यह अपने आपको छिपाने का सबसे बढ़िया तरीका है। किसी का इस बात पर ध्यान नहीं जाता कि वे अपनी भूख मिटाने के लिए खाना खरीदने में अक्षम हैं, क्योंकि वे कुछ खरीदने को कभी दुकानों में नहीं आते। पिछले हातों के मकानों में पूरी की पूरी कौमें मुरझा जाती हैं। उनकी बरबादी की यह प्रक्रिया लगभग अव्यक्त ही होती है (इसके अलावा कि ये अज्ञात भी होती हैं!)। वे तबाह हो जाते हैं, मगर यह तबाही कई वर्षों तक चलती है। मिलावट वाला खाना और*

वह भी काफी कम, संक्रामित रिहायश, नैसर्गिक वृत्तियों का दमन, यह सबकुछ एक मनुष्य को तबाह करने में एक लम्बा समय लेती हैं। मनुष्य के पास सहनशीलता की अविश्वस्नीय शक्तियाँ होती हैं। वह बहुत धीरे-धीरे मरता है, इंच-इंच करके। और हर समय वह एक मनुष्य जैसा ही दिखता है। एकदम अन्त में ही वह हार मानता है और पूरी तरह हथियार डाल देता है। क्षरण की यह अजीबो-गरीब प्रक्रिया इसके व्यापक और अगणनीय प्रभावों को समझने को मुश्किल बना देती है। मैंने अक्सर यह सोचने की कोशिश की है कि कोई इस ग़रीबी-वास्तविक ग़रीबी के बारे में कुछ भी कैसे कर सकता है। यह ग़ज़ब का धन्धा होगा। लेकिन यह असम्भव है। किस तरह आप उस माँ के हृदय-विदारक दृश्य का इस्तेमाल कर सकते हैं जिसने अपना बच्चा अपनी गोद में ले रखा है और अपने कमरों की दीवारों से बहते पानी को देख रही है? ऐसी माँएँ हैं, सैंकड़ों-हज़ारों की तादाद में, लेकिन कोई उनके साथ क्या कर सकता है। आप उस तरह से ग़रीब बस्तियों के इर्द-गिर्द चलने वाले टूर पर नहीं जा सकते, जैसे आप एक युद्ध-क्षेत्र के इर्द-गिर्द जा सकते हैं! एक ऐसे आदमी का नज़ारा जिसे यह अहसास है कि उसे जीवन के संघर्ष से किनारे लगाया जा रहा है क्योंकि वह थका-माँदा है-और यह वह नहीं बल्कि उसके इर्द-गिर्द की दुनिया है जिसने उसकी ताक   त को खपा डाला है; मानी हुई बात है कि ऐसा नज़ारा हृदय-विदारक होता है, लेकिन वह आदमी इसका आवश्यक प्रचार नहीं करता। कारोबार की नज़र से वह बेकार है। ये हज़ारों में से केवल दो उदाहरण हैं।'

मि.पीचम अचानक इस मुद्दे में दिलचस्पी खोते नज़र आए। एक अस्पष्ट-से इशारे से उन्होंने फ्यूकूम्बी को वापस काम पर लगने का आदेश दिया और अपने चेहरे पर एक परेशान-बेचैन भाव लेकर चले गये।

या वह कहते :

'भीख माँगने के धन्धे के साथ कुछ असामान्य बात है। यहाँ तक कि शुरू में मेरे लिए भी इसमें विश्वास करना मुश्किल था। लेकिन जल्दी ही मैंने ग़ौर किया कि लोग उसी डर से देने को प्रेरित होते हैं जो उन्हें लेने के लिए प्रेरित करता है। दुनिया में हमदर्दी की कोई कमी नहीं है; केवल हमदर्दी के साथ आप गर्मागर्म खाना उतनी आसानी से नहीं कमा सकते जितनी आसानी से आप उसके बगैर कमा सकते हैं। मेरे लिए अब यह बिल्कुल साफ़ है कि क्यों लोग भीख देने से पहले भिखारियों के ज़ख्मों की ज़्यादा करीब से जाँच नहीं करते। वे यह मानकर चलते हैं कि ज़ख्म हैं ही इसलिए क्योंकि उन्होंने ही वे ज़ख्म दिये हैं। जब कोई

आदमी कारोबार करता है तो क्या कहीं और कोई दूसरा आदमी बरबाद नहीं हो रहा होता है? जब कोई आदमी अपने परिवार का पालन-पोषण करता है तो क्या दूसरे परिवारों को नाले में नहीं धकेला जा रहा होता है? ये सभी लोग पहले से ही यह माने बैठे हैं कि, उनके जीने के तरीके की वजह से, हर जगह रेंगते हुए गन्दे, ग़रीबी के मारे अभागे लोग तो होंगे ही। तो क्यों यह बात पक्की करने की मुसीबत वे अपने सिर लें? वह भी उन दुअन्नियों-चवन्नियों की ख़ातिर जो वे खुशी-खुशी दे देंगे?'

एक दूसरे दिन उन्होंने सिर्फ इतना कहा :

'ऐसा मत सोचना कि मैं अपने अन्धों वाले कुत्तों को इसलिए भूखा रखता हूँ क्योंकि मैं क्रूर हूँ; ऐसा तो बस इसलिए करता हूँ कि अगर वे खाए-पिये नज़र आएँगे तो धन्धे को नुकसान होगा।'

और एक दिन वह फ्यूकूम्बी के प्रसन्न चेहरे पर इन शब्दों के साथ टूट पड़े :

'तुम कुछ ज़्यादा ही तृप्त नज़र आ रहे हो। मैं अपने सारे लोगों को बतलाता हूँ कि उनको नीच और दुखी नज़र आना चाहिए। ऐसे घृणास्पद दृश्य से पीछा छुड़ाने की ख़ातिर लोग खुशी-खुशी दे देते हैं।'

वह निश्चित तौर पर अन्दर से दहल गये होते अगर उन्हें पता होता कि अपने से हीन लोगों के सामने ऐसे स्वगत कथन गम्भीर मनोवैज्ञानिक विकारों का लक्षण होते हैं; क्योंकि वह जानते थे कि बीमार लोग विचार किये जाने की कोई उम्मीद नहीं रख सकते।

साउथैम्प्टन वाले जहाज़ों की खरीद के लिएपैसा जुटाना बेहद मुश्किल साबित हो रहा था।

नेशनल क्रेडिट बैंक के मिलर हाथ उठाकर इस सुझाव को खारिज कर दिया कि वह 50,000 पाउण्ड ऋण दे दे। वह अपने ग्राहक को नाराज़ नहीं करना चाहता था और इसलिए उसने बैंक के छोटे-से सात साल के मालिक के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का हवाला दिया। वह सिर से लेकर पाँव तक बड़े कारोबारी सौदों में डूबा हुआ था, और ख़ास तौर पर, वह आत्मविश्वास से जोड़ सकता था, क्रेस्टन संस्थान के साथ हुए सौदे में। पीचम की पूँजी की कमी पर वह काफी स्तब्ध दिखाई पड़ा और वह तो उससे भी ज्यादा स्तब्ध था जितना कि वह दिखाई पड़ा।

पीचम के लगभग 10,000 पाउण्ड नेशनल में जमा थे। मगर किसी भी

हालत में वह उसे छूना नहीं चाहते थे। इसके अलावा, वह पर्याप्त भी नहीं होता।

फिनी ने घोषणा की कि अब, आखिरकार उसके लिए अपना ऑपरेशन करवाना अपरिहार्य था, और अगले दिन ही अस्पताल जाने की धमकी दी। केवल ईस्टमैन लड़ता रहा, लेकिन उसके प्रयास बेकार मालूम पड़े।

और तभी एक ख़बर उन तक पहुँची कि नौकाधिकरण के हेल को बदनामी की धमकी दी गयी है।

कोक्स खुद पीचम के पास आया और लोहे की चादर से ढँके दरवाज़े के पीछे छोटे-से ऑफिस में उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि ईस्टमैन को खोज नहीं लाया गया।

कोक्स ने उन्हें पूरी स्थिति से अवगत कराया।

कुछ दिनों पहले हेल को एक ब्लैकमेलिंग वाली चिट्ठी मिली। दो साल पहले उसकी पत्नी एक पुलिस छापे में पकड़ी गयी थी। वह अपने पति के एक मित्र के साथ एक सन्देहास्पद होटल में पाई गई थी। ब्लैकमेलर ने घोषित किया कि उसके कब्ज़े में इस मित्र की डायरी थी। और यह डायरी यह राज़ खोलती है कि हेल इस प्रेम-प्रसंग के बारे में जानता था-और इस मामले में कुछ भी नहीं किया था। दरअसल, अब वह इस दोस्त के साथ धन्धे में लगा हुआ था...

वह दलाल तीक्ष्णता के साथ ईस्टमैन की तरफ देख रहा था, जिसकी ओर वह मुख्य रूप से मुख़ातिब था। ईस्टमैन ने अपना सताया हुआ चेहरा पीचम की ओर घुमाया।

पीचम फिर काफी बीमार दिखे।

'डायरी की कीमत क्या पड़ेगी,' उसने दर्द के साथ कोक्स की निगाह से किनारा काटते हुए पूछा।

कोक्स ने बेपरवाह ढंग से कहा, 'एक हज़ार।'

'उसे वह मिल गए हैं। एम.टी.सी. ने उसे 9,000 पाउण्ड दिये हैं।'

यह ईस्टमैन था जो बोल पड़ा।

और कोक्स ने धैर्यपूर्वक कहा :

'उसके पास कुछ भी नहीं है। उसकी पत्नी के पास कपड़े होने ही चाहिए, नहीं तो उसके पास कोई दोस्त नहीं होंगे, होटलों में भी नहीं। एम.टी.सी. से प्राप्त कुल रकम का बाकी बचा पैसा जाँच को दबाने में इस्तेमाल होगा। इस शख़्स का मामला काफी दुखद है।'

पीचम ने पूछा, 'अगर वह पैसा न दे तो क्या होगा?'

'तो उसे इस्तीफा देना होगा। जिन लोगों के साथ आपके कारोबारी सौदे हों उनके गुप्त प्रेम प्रसंग होना भयंकर होता है। ज़रूरत के वक्त में, हेल फौरन मेरी तरफ मुड़ा क्योंकि मैं उसका सबसे अच्छा दोस्त हूँ। वह कोई मदद नहीं चाहता था। तुम्हारी मुसीबत, मेरी मुसीबत, यह मैंने ही उससे कहा। सज्जनो, हमें कुछ न कुछ ज़रूर सोचना चाहिए। हेल जैसा एक आदमी ऐसी छोटी-सी बात के लिए बरबाद नहीं होना चाहिए। मानवता के नाते, हमें ऐसे अनर्थ के लिए अपने आपको ज़िम्मेदार नहीं बनने देना चाहिए! मगर शुद्ध रूप से स्वार्थपूर्ण कारणों के चलते ही, हमें हेल की मदद करनी ही चाहिए।'

जब कोक्स ने दुकान से विदा ली तो वह पल-भर को हिचकिचाया।

'मिस पॉली अभी शामोनी से वापस नहीं आईं?' उसने पूछा, अपनी मूछ को ऐंठकर आकार देते हुए-एक गर्वीला और गुस्ताख़ आकार।

'नहीं,' पीचम ने फटी आवाज़ में कहा।

कोक्स को बताया गया था कि पॉली स्विट्ज़रलैण्ड में है, अपनी पढ़ाई पूरी कर रही है। पीचम ने पहले ही विचार कर लिया था कि भ्रम को और मज़बूत बनाने के लिए उन्हें शामोनिक्स से भेजे गये जाली सचित्र पोस्टकार्डों की व्यवस्था करनी चाहिए या नहीं। मगर इस बात की सलाह नहीं दी जा सकती थी। आज नहीं तो कल इस पूरी ख़ौफनाक कहानी को कोक्स के सामने स्वीकार करना होगा; हालाँकि ऐसा तब तक नहीं होना था जब तक कि सारी चीज़ों को संतोषजनक रूप से ठिकाने नहीं लगा दिया जाता।

कोक्स पॉली के बारे में पूछताछ करना कभी नहीं भूलता था।

पीचम को कोक्स और हेल से अगले सोमवार स्नानघर में मिलना था। कोक्स अब एम.टी.सी. के साथ अपना सारा धन्धा फिदर्स बाथ में करता था, और हमेशा सोमवार को ही, भले ही उसके कारण कितना ज़्यादा समय नष्ट हो सकता था।

पीचम से मिलने के लिए तय हुए समय से आधे घण्टे पहले कोक्स और हेल वहाँ पर मिले।

उन्होंने धीरे-धीरे कपड़े उतारे, लड़कियों के बिना। हेल ने, जो कि अपने जीवन के पाँचवे दशक में चल रहा एक स्थूल व्यक्ति था, कहाः

'मैं हमेशा ईवलिन के साथ तुम्हारे प्रेम-प्रसंग के विरुद्ध था, और यह तुम जानते थे विलियम। तुमने उसके और रैंच के बीच में और कुछ नहीं बस दिक्कत पैदा की है। मैं तुम्हें उन झड़पों की कुछ बढ़िया कहानियाँ सुना सकता हूँ जो

उसकी रैंच के साथ हुईं, सब तुम्हारी वजह से। कोई भी मनोवैज्ञानिक चिन्ता कई दिनों के लिए उसे अशान्त कर देती है। मैं उसे चाहता हूँ। और फिर वह होटल! तुम ज़रूर पागल हो गये होगे! मुझे ताज्जुब हुआ कि उसके शरीर पर लाल चकत्ते नहीं पड़े! उस जैसे होटलों में जहाँ चादरें हर दो घण्टे पर बदली जाती हैं और नतीजतन वे गीली रहती ही हैं! और सबसे बड़ी बात एक *होटल* का आइडिया! ईवलिन मेरे जानने वालों में सबसे संवेदनशील व्यक्ति है। वे चादरें ईवलिन के लिए निश्चित रूप से शुद्धतः एक विकृत इंद्रजाल जैसी रही होंगी। अन्य बातों में वह बिल्कुल सामान्य है। यह उसकी मधुरतम विशेषताओं में से एक है। मैं तुम्हें इसके लिए कभी माफ नहीं कर सकता; और भगवान कसम, ये नतीजे नहीं हैं जिनके बारे में मैं चिन्ता कर रहा हूँ। लेकिन अब मुझे अपने आपको विनम्र बनाना होगा और इन व्यापारियों से 1,000 पाउण्ड की भीख माँगनी होगी। मैं ऐसा करने से नफरत करता हूँ। मेरे निजी मामलों का उनसे क्या लेना-देना? वे अपने पक्के अधिकार के साथ कह सकते हैंः हम आपके साथ व्यापार कर रहे हैं, हम आपके गन्दे लिनेन की धुलाई का शुल्क अदा करने नहीं जा रहे हैं।-मैं उल्टे अब चला ही जाऊँगा। आख़िर, मैं एक सरकारी अधिकारी हूँ।'

कोक्स ने उसे देखा और कहा :

'हाँ, आख़िर आप एक सरकारी अधिकारी हैं।'

'मैं जानना चाहूँगा कि यह गॉन तुम्हारी डायरी कैसे पा गया,' एक स्टूल पर अपने मोज़े व्यवस्थित करते हुए हेल भुनभुनाया।

वे लकड़ी के टबों में चढ़कर बैठ गये।

हेल मृत्तिका स्नान कर रहा था। कोक्स के टब में कुछ विशेष शक्तिदायी जड़ी-बूटियाँ थीं।

हेल ने लेटते हुए दुख के साथ बोलना जारी रखा, *'ज़रा सोचो, सोचो कि ऑफिस में ईमानदारी के निर्देशों का हमें कितनी करीबी से पालन करना चाहिए। किसी दूसरे लेन-देन में हम भाग नहीं ले सकते। नौकाधिकरण में हुई हालिया घटनाओं का मैं ज़िक्र नहीं करूँगा। मैं उचाट मन से ग्रेट ब्रिटेन को छोड़ना ज़्यादा पसन्द करूँगा। ऐसी चीज़ों के बारे में मैं कुछ नहीं जानता, और एक अंग्रेज़ आदमी के रूप में मैं उनके बारे में कुछ जानना भी नहीं चाहता। लेकिन देखो, हर्र वॉन बिस्मार्क ने जर्मनी में क्या किया है! वह एक महान आदमी है। उसने पहले ही विशाल भूमि पर कब्ज़ा कर लिया है, और उसके देश को इससे फ़ायदा हुआ है। जनता हमेशा हमारे राजनीतिज्ञों को सही नहीं आँकती। वे बस इस या*

उस काम को देखते हैं, और उसकी आलोचना करते हैं। मगर ऐसी चीज़ों के बारे में वे समझते ही क्या हैं? वे कहते हैं : फलाँ-फलाँ राजनयिक कदम ग़लत था। लेकिन सिर्फ इसलिए क्योंकि वे बाहरी नतीजों के हिसाब से चलते हैं। एक पूरी तरह से मज़ाकिया नज़रिया! क्या वे जानते हैं कि उस कदम का असली लक्ष्य क्या था? जब जर्मन कैसर ने राष्ट्रपति क्रूगर को टेलीग्राफ भेजा तो क्या तुम जानते थे कि कौन-सा स्टॉक चढ़ा है और कौन-सा गिरा है? नहीं! जाहिरा तौर पर सिर्फ कम्युनिस्ट ऐसा पूछते हैं। लेकिन हमारे बीच ऐसा सिर्फ कम्युनिस्ट नहीं करते; राजनीतिज्ञ भी जानना चाहते हैं। बेशक, यह कुछ खरा-सा उदाहरण है, लेकिन यह विचार असलियत के काफी करीब है। मुख्य बात ही खरा सोचना सीखना है। खरा चिन्तन महान चिन्तन है। राजनीतिक गैर-कारोबारी तरीकों से कारोबार के अनुसरण का नाम है। और इसी वजह से हमें सावधान रहना चाहिए कि हमारे निजी सम्मान पर कोई बट्टा न लगे। अगर होटल वाला यह मामला बाहर आया तो मैं तिरस्कार और गालियों के साथ नौकाधिकरण से निकाल बाहर किया जाऊँगा। भरोसेमन्द सेवा का कोई भी रिकॉर्ड चाहे कितना भी लम्बा हो, ऐसा सन्देह नहीं झेल सकता। लेकिन आखिर मैं सहज रूप से ईमानदार हूँ और यही चीज़ मुझे इन व्यापारियों से सम्बद्ध होने के लिए असंगत बना देती है।'

इसी मौक़े पर उसकी बात पीचम के आगमन से बाधित हो गयी। तीनों सज्जनों ने एक टर्किश बाथ साथ में लिया।

वे गद्देदार सोफों पर, गीले तोलियों को सिर के नीचे लगाए अपने आपको ठण्डा कर रहे थे, जब मि. पीचम ने बोलना शुरू किया। वह धीमे-धीमे बोल रहे थे, एक बीमार आदमी की तरह; जो वह असल में थे।

'मि.हेल, आपके साथ हमारे लेन-देन उनकी सफलता के लिए कोई ख़ास नहीं रहे हैं। हमारी अपेक्षाओं के विपरीत, हमें ख़बर मिली है कि आप सरकार की ओर से हमारे जहाज़ ख़रीदने की स्थिति में नहीं हैं। बेशक, हमारे लिए इसका मतलब भारी नुकसान है।'

हेल कुछ बड़बड़ाया। वह पूरा फैलकर लेटा था और अपनी गिलगिली छाती को लगातार अपने छोटे-से स्थूल हाथों से थपथपाए जा रहा था।

पीचम ने आगे बोलना शुरू किया, अभी भी काफी मन्द स्वर में और कठिनाई के साथ।

'हम बस छोटे-मोटे व्यापारी हैं। हमारी पूँजी खून-पसीने की कमाई है। मुझे उम्मीद है आपन हर तरकीब आज़मा ली होगी?'

पीचम ने अपना मुँह एक तरफ घुमाया और राज्य सचिव को देखा। वह अब चुप था। वह कोई ख़ास प्रभावशाली नहीं लग रहा था। कोक्स ने उसे बिना कपड़ों के प्रस्तुत करके ग़लती की थी। वह एक मोटा, बेवकूफ, अधेड़ आदमी लग रहा था, और एक ऊँचे सरकारी अधिकारी जैसा तो कतई नहीं दिख रहा था। और उसकी किसी चीज़ ने 'भिखारियों के दोस्त' का ध्यान खींचा।

पीचम की आवाज़ में अब एक ऐसा बदलाव दिखाई पड़ने लगा जो बुद्धि से परे था।

'हमने मि.कोक्स से सुना है कि आपकी कुछ निजी परेशानियाँ हैं जो आपके काम में बाधा डाल रही हैं? हमें इसका काफी अफसोस है। अगर हम इन परेशानियों के कारण को हटा दें तो क्या ये आपके काम में मददगार होगा?'

हेल फिर कुछ बड़बड़ाया। उसने कोक्स की तरफ देखना पसन्द किया होता। साक्षात्कार उस रास्ते पर नहीं चल रहा था, जिसका उन्होने पूर्वानुमान किया था।

पीचम ने बोलना जारी रखा, 'आप शायद जानते हैं कि ट्रांसपोर्ट जहाज़ प्राप्त करने में हमारी किस्मत ख़राब रही है। जो जहाज़ हमने ख़रीदे थे, वे कोई खास संतोषप्रद नहीं थे, जैसा कि उनके विवरण से हमें मानना पड़ा। हमने यह भी सुना कि आप इन जहाज़ों के कारण होने वाली अप्रियता से डरते हैं। हम आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि निजी परेशानियाँ आपके लिए इन अप्रियताओं की तरफ पूरा ध्यान लगाना और मुश्किल बना देती हैं। इस बात पर मैं एक व्यक्तिगत मामले का भी ज़िक्र ज़रूर करूँगा। मि.कोक्स में मैं अपने भावी दामाद को देखता हूँ।'

कोक्स ने अलसाते हुए करवट बदली। उसने हल्के से अचम्भे के साथ पीचम की तरफ देखा। उसे अचानक पीचम की दुकान के उस क्षण की याद आयी जब पीचम ने उससे पूछा था कि इस ट्रांसपोर्ट के कारोबार से पिण्ड छुड़ाने के लिए वह कितना पैसा लेना चाहेगा। उस समय उस पर पीचम का विलक्षण प्रभाव पड़ा था जो अब तक वह भूल चुका था। इस बीच पीचम ने अपना एकालाप जारी कर दिया था।

उसने शान्त स्वर में कहा, 'हमें *अब भी* इन पुराने जहाज़ों का इस्तेमाल करने का प्रयास करना चाहिए।'

बाकी दोनों सज्जन शान्त रहे। पीचम अब वह बात जानता था जो वह साउथैम्प्टन में नहीं जानता था। वे तो शुरू से ही पुराने जहाज़ इस्तेमाल करने

का इरादा रखते थे!

कोक्स काफी कर्कश स्वर में हँसा।

उसने कहा, 'समझ गया, कुछ हज़ार पाउण्ड के लिए तुम अभी-भी अपने इन भारी-भरकम ढाँचों को सरकार के गले मढ़ना चाहते हो।'

अब पीचम चुप था।

'क्या यही एम.टी.सी. का फैसला है?' कोक्स ने पूछा। उसकी आवाज़ में एकाएक अक्खड़पन आ गया था।

पीचम ने अपना सिर उसकी तरफ घुमाया।

'नहीं,' उसने कहा, 'यह मेरा फैसला है।'

कुछ मिनट बाद हेल ने धुन्ध के बारे में भुनभुनाना शुरू कर दिया। पीचम ने उसके साथ सहमति प्रकट की। वे कोठरी में चले गये। फिर स्नानघर के बाहर, उन्होंने अगली मीटिंग तय की। कोक्स के मुँह से फिर कभी एक शब्द भी नहीं फूटा।

आखिरकार, महीनों अन्धेरे में टोहते-टटोलते रहने के बाद, जोनाथन जेरेमिया पीचम को अपना रास्ता एकदम साफ़-साफ़ नज़र आया।

जब उसने राज्य सचिव के साथ बातचीत शुरू की थी तो निश्चित रूप से उसने कभी पल भर के लिए भी नहीं सोचा था कि वह बिल्कुल अनुचित दावों पर भी रियायतें देने के लिए तैयार हो जाएगा या यह कि वह बदले में किसी चीज़ की माँग कर सकता था। यह एक ऐसे व्यापारी के रूप में उसका लम्बा प्रशिक्षण ही था, जिसने वर्षों के अरसे के दौरान सीखा था कि फोकट में कुछ मत दो। और इसी चीज़ ने उसे ऐसी किसी चीज़ के बारे में सोचने के लिए बाध्य किया, रीति की ख़ातिर ही सही, जिसकी *वह* बदले में माँग कर सकता है। *बिना किसी चीज़* के पैसा देने का अपमान उसे असह्य लगा। सो उसके अन्दर के व्यापारी ने उसके बरबाद भाई से, जिसकी बरबादी उसे हर कीमत पर रोकनी थी, उसे यह माँग करने को प्रेरित किया कि वह अपना जीवन बीमा उसे सौंप दे; या, यह कहे कि, उसने एक भिखारी को पुरानी रोटी की पपड़ियों के लिए एक गड्ढा खोदने को कहा और फौरन दूसरे भिखारी को उसे भरने को कहा। हेल की चुप्पी ने उसे असीमित उत्तेजना से भर दिया है। उसने अचानक देखा।

लेकिन उसे देखकर दुख ही पहुँचा।

ये वे साउथैम्प्टन वाले जहाज़ नहीं थे, जो उसे बरबादी की कगार पर लाए

थे, बल्कि वही पुराने समुद्र के लिए नाकाबिल जहाज़ थे जिन्हें सरकार को दिया जाना था। कोक्स और यह अभागा हेल, दोनों कमज़ोर, बीमार, सुस्वभाव मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी में अभी भी बची एक-एक कौड़ी को बेरहमी से निचोड़ रहे थे। वे नये जहाज़ खरीदें या न ख़रीदें, इसका सरकार से कोई लेना-देना नहीं था; लेकिन चाहे जो हो, एम.टी.सी. को रकम अदा करनी ही पड़ती। और इन सबकी योजना शुरुआत से ही बन गयी थी!

कोक्स ने उन्हें इस योजना में शामिल नहीं किया, यह जानकर उन्हें गहरा सदमा पहुँचा। अन्य सभी मामलों में कोक्स ने उनके साथ अपने भावी ससुर जैसा व्यवहार किया था।

लेकिन अब पीचम को सिवाय इस बात के और किसी भी चीज़ का डर नहीं था कि कोक्स पॉली के मामले में जल्दबाज़ी करने लगे। लेकिन कोक्स ने कोई अधैर्य नहीं दिखलाया।

जब पीचम ने हेल के लिए तय रकम उसे सौंपी, तो नरभसाई हुई हालत में उन्होंने बातचीत अपनी बेटी के विषय की तरफ मोड़ दी। शुरुआत में कोक्स चुप था, फिर उसने कहा कि पॉली पर दबाव डालना उसके मिजाज़ के मुताबिक नहीं है। उसे प्यार मिले यह वह अपनी ख़ातिर चाहता है। पीचम को भी परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। मिस पॉली उसके बारे में जैसा भी सोचे, वह, यानी पीचम उसकी नज़र में हमेशा पॉली के पिता रहेंगे। यह उसके लिए खुशी की बात थी कि अपनी ज़िन्दगी में, एक ऐसी ज़िन्दगी जिसके कई बदशक्ल पहलू थे, एक बार वह एक ज़्यादा गहरे और पवित्र उद्‌देश्य के लिए कुर्बानी दे पाया।

मि.कोक्स *मुग्धकारी वक्ताओं* की सुलभ प्रजाति के थे।

पीचम ने निर्विकार भाव से बात सुनी और हज़ारवीं बार मन बनाया कि कोक्स और अपनी बेटी की शादी जितनी जल्दी हो सके करायी जाय। उसे लगा कि कोक्स की बातें इतनी हल्की हैं और उसकी प्रेरणाएँ इतनी खूबसूरत कि उनमें टिकाऊपन का कोई गुण नहीं है। और कोक्स पहले ही मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी की मौजूदगी में यह कह चुका था कि मि.पीचम का पैसा लेने में उसे कोई संकोच नहीं होगा।

ओल्ड ओक स्ट्रीट में एक थका देने वाली बातचीत के बाद यह तय हुआ कि पॉली को आज़ाद कराने का एक और प्रयास किया जाय। शायद मि.मैकहीथ के लिए कारोबारी दिक्कतों का जुगाड़ करना सम्भव होगा।

एक दिन, भव्य बिक्री अभियान के बीच मैकहीथ को यह बताया गया कि

भिखारियों की विशाल भीड़ इकट्ठी हो गयी है, वह भी उसकी दुकानों के सामने। वे सारे माले गड्ड-मड्ड कर रहे थे और जो नुक्ताचीनी कर रहे थे, उन पर भी दया नहीं कर रहे थे। ज़ोर-ज़ोर से शिकायतें करते हुए वे सबकुछ उलट-पलट दे रहे थे। वे दुकानों के दरवाज़ों के सामने दो-दो, तीन-तीन झुण्ड बनाए खड़े थे और उस कबाड़ के बारे में ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे जो अन्दर बेचा जा रहा था। चूँकि ग्राहकों को दुकानों के अन्दर जाने के लिए इन भिखारियों के बीच से ही धक्का-मुक्की करके राह बनानी थी, और चूँकि ये भिखारी असाधारण रूप से गन्दे थे, ग्राहकों की बड़ी संख्या कहीं और जाने का रास्ता पकड़ ले रही थी। अपनी कई दुकानों के सामने खड़े अपने ससुर के खुशामदी टट्टुओं को मैकहीथ पहचान गया। पहले तो उसने पुलिस बुलाने का इरादा किया। लेकिन फिर उसे एक बेहतर रास्ता सूझा। अगले शुक्रवार को, जब भीड़ सबसे ज़्यादा थी, उसने अपने दुकानदारों से हस्तलिखित सूचनाएँ उनकी खिड़की पर टंगवाईं। इन लिखा था :

भिखारी भी यहाँ अव्वल दर्ज़े का माल खरीद सकते हैं

यह मामला अखबारों तक पहुँच गया और बी.शॉप्स हमेशा से ज़्यादा लोकप्रिय हो गईं।

मि.पीचम को एक बार फिर हार झेलनी पड़ी थी।

लेकिन हालाँकि उनका दामाद अपने आगे खड़ी तमाम मुसीबतों को देख रहा था, वह ज़्यादा दिक्कतें नहीं देख पा रहे थे। नौकाधिकरण के एक उच्च अधिकारी के साथ ही मि.पीचम की महँगी मीटिंग का मि.मैकहीथ की महत्वाकांक्षी योजनाओं पर दूरगामी प्रभाव पड़ने वाला था। अब से एक तस्वीर लगातार मि. पीचम की आँखों के सामने रहने लगी। तीन क्षरित होते, सैनिकों से भरे जहाज़ों का चित्र, जो खुले सागर में तैरते जा रहे हैं। एक भयानक कारोबार!

सोल्ड आउट

मैकहीथ ने ओ'हारा और फैनी क्राइस्लर के बीच में अपना समय बाँट लिया। वह लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर के दो अन्य लोगों, फादर और ग्रूच नामक पुराने सेंधमारों के साथ ओ'हारा से एक नाई की दुकान में मिलता था। उन्होंने

पास के शराबखाने में ज़्यादा महत्वपूर्ण सेंधमारियों की योजना बनाई।

मैकहीथ के पास अभी भी अच्छे विचार थे और एक संगठनकर्ता के रूप में उसका कोई सानी नहीं था, मगर सी.पी.बी. के कार्यालयों में फैनी क्राइस्लर के साथ होने वाली मुलाकातें उसे कहीं ज़्यादा आत्मिक संतोष देती थीं। दीवालिया दुकानों के स्टॉक खरीदना कोई कम चालूपन की माँग नहीं करता था और, कुल मिलाकर, ज़्यादा फायदे वाला था।

इस धन्धे में वह पानी में मछली की भांति महसूस करता, अगर आरों के साथ हुआ सौदा उसके गले में चक्की के पाटे की तरह न लटक रहा होता।

मैकहीथ, फैनी क्राइस्लर और ओ'हारा के बीच सी.पी.बी. के बैठक कक्ष में हुई तमाम अंतरंग बातचीत अपशकुनी सन्नाटे में ख़त्म हुईं।

आरों की दुकानों में सी.पी.बी. के माल के आने के साथ एक सावधान शुरुआत पहले ही की जा चुकी थी। ओ'हारा ने तनख्वाहशुदा खरीदारों को उत्तेजित कर बेचैनी की हालत में ला दिया था। लेकिन यह पहले ही साफ़ हो गया था कि, हालांकि सी.पी.बी. बी.शॉप्स को आपूर्ति का एक कभी न ख़त्म होने वाला स्रोत रहा था, लेकिन एक साथ बिक्री सप्ताह और खेल में आरों चेन स्टोर्स के आगमन से आवश्यक आपूर्ति माँग में अचानक हुई ज़बर्दस्त वृद्धि से निपटने के लिए यह समर्थ नहीं था।

बहुत थोड़े समय बाद ही बिकाऊ मालों की आपूर्ति घटने लगी।

कई दिनों तक मैकहीथ पहले से कहीं ज़्यादा निराश घूमता रहा। उसे एक भयानक डर था, कि उसे आरों और ऑपर बन्धुओं के सामने यह स्वीकारना पड़ेगा कि क्रेस्टन के विरुद्ध आसन्न और निर्णायक लड़ाई नहीं हो पायी। तब उसे अचानक एक असामान्य रूप से ख़तरनाक योजना सूझी।

हर रात वह कई घण्टों तक अपनी संकटपूर्ण स्थिति पर सोचता रहता था। जब वह पॉली की शान्त, अविकल सांसों को सुनता था तो वह ज़्यादा साफ़-साफ़ देख और सोच पाता था। तभी उससे सबसे बिन्दास फैसले लिए जाते थे।

एक सुबह, वह फैनी या ओ'हारा को बताए बगैर आरों के पास गया और उसने जो बोला, वह कुछ यूँ था।

'हमें हर चीज़ अपने बिक्री सप्ताह के भरोसे ही नहीं छोड़ देनी चाहिए। हमें क्रेस्टन के अभियान शुरू करने से पहले ही उसकी बिक्री का डिब्बा बन्द कर देने की कोशिश करनी चाहिए। सबसे बढ़िया यह रहेगा कि हम पहले ही अपनी कीमतें गिराना शुरू कर दें। सी.पी.बी. जितने मज़े से अभी माल पहुँचा रही है

उतने मज़े से ही बाद में भी पहुँचा सकती है। लेकिन क्रेस्टन के सस्ते माल अभी तैयार नहीं हैं।'

आरों कल्पनामग्न उसे देख रहा था। मैकहीथ में कुछ ऐसा था जिसे वह पसन्द नहीं करता था। एक लुटेरे के लिए वह एक तरह से कुछ ज़्यादा ही सम्माननीय था, एक ईमानदार नागरिक के लिए वह जाहिरा तौर पर वह बहुत बेईमान था। इसके अलावा उसकी मूली जैसी खोपड़ी पर बहुत थोड़े ही बाल थे। ऐसी छोटी-सी बात का भी आरों पर असर पड़ता था।

मगर फिर भी वह सहमत हो गया। पिछले कुछ दिनों के दौरान उसकी पत्नी मिसेज मैकहीथ के साथ खरीदारी पर गयी थी और इस नवविवाहित जोड़े के बारे में कहने को कुछ अच्छा ही था उसके पास। इसी के जरिये आरों को पता चला कि वे कुछ किफायत कर रहे हैं। मैकहीथ घरेलू सामानों का बहीखाता रखता था। उसका विचार था कि फालतू बची कौड़ी ही अन्त में काम आती है।

और तो और, मैकहीथ को ऑपर बन्धुओं में से बड़ा भाई समर्थक के रूप में मिल गया। उसने आरों के घराने और उसकी नीतियों के पुनर्गठन में व्यक्तिगत रुचि दिखलायी थी। वह यूनानी प्रतियोगिता के विचार पर सम्मोहित था और इसकी शुरुआत करने वाले व्यक्ति के रूप में मैकहीथ की अस्वार्थपूर्ण ढंग से प्रशंसा करता था। बिक्री स्टाफ का अब मुनाफे में हिस्सा था, इसलिए वह भी उतनी दिलचस्पी ले रहा था जितना कि मालिक। प्रतियोगिता फली-फूली।

प्रचार वैसे ही बढ़े जैसे खरगोश बढ़ते हैं। दुकानों में प्रचुरता से आपूर्ति हुई; मालों की संख्या और विविधता में भी भारी वृद्धि हुई। बी.शॉप्स के छोटे-से-छोटे विक्रेता की दुकान भी छत तक पटी हुई थीं। जनता-जनार्दन एक चीज़ ख़रीदती तो उतनी ही इष्ट दूसरी चीज़ देखती। और कम दामों से अचम्भित जितना ले जा पाती, ख़रीद ले जाती। ब्राउन पेपर पर रंगीन चॉकों से लिखे विशालकाय अभिलेख जनता को सूचित करते कि ये इफरात सामान खरीदने का एक और एकमात्र और फिर-कभी-न-आने-वाला मौक़ा है। खरीदार दुकानों से चोरों की तरह खिसक लेते, इस गुप्त भय से भरे हुए कि कहीं दुकानदार का ध्यान अचानक इस बात पर न चला जाए कि शिलिंग लेने की बजाय उसने कौड़ियाँ ले लीं हैं।

मैकहीथ पागलपन की हद तक व्यस्त था। वह एक दुकान से दूसरी दुकान जाता और मालिकों की अच्छी सलाहों से और सामानों को नामज़द कर मदद करता। लेकिन उसका मुख्य काम था सस्ते से सस्ते सामानों की भारी मात्रा में प्राप्ति करना, जिनमें से कुछ तो डेनमार्क, हॉलैण्ड और फ्रांस तक से आ रहे थे।

ओ'हारा के अन्तर्गत उसका सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड दिनों-रात काम कर रहा था।

एक या दो सामान की खेपों को सेंधमारी की आमदनी के तौर पर पहचाना गया। एक बी.शॉप के खिलाफ जानकारी मलबेरी स्ट्रीट में पहुँचायी गयी थी जिसकी मालकिन मैरी सॉयर नाम की एक औरत थी। सन्देहास्पद सामानों की भिखारियों ने निन्दा की थी।

मैकहीथ ने सम्बन्धित वस्तुओं को वापिस ले लिया और दूसरी दुकानों से आने वाले माल के रूप में पुलिस को सौंप दिया और घटिया सेंधमारों में से कुछ को गिरफ्तार करा दिया।

फिर मैकहीथ कुछ समय के लिए अच्छी-खासी व्याकुलता की स्थिति में रहा। उसे शक था कि उसके ससुर ने अभी निर्णयात्मक शब्द नहीं बोले हैं। अब तक उसको बस मौक़े की कमी रही है।

मैकहीथ ने पॉली से कहा, 'मेरे लिए तुम्हारे बाप की नफरत अस्वाभाविक है। इस कोक्स पर उनकी निर्भरता फिर बढ़ गयी होगी। वह कभी मुझे सताना बन्द नहीं करते। जब भी मैं उनके बारे में सोचता हूँ मेरे मन में एक अप्रिय भावना उग जाती है। मैंने सोचा कि एक दिन उनको असलियत समझ में आ जाएगी। आख़िर मैं हम दोनों के लिए मुश्किल से बस जीविका ही तो कमा पा रहा हूँ।'

उसके धन्धे में आये उथल-पुथल भरे बदलावों में वह इस चिन्ता को पूरी तरह भूल गया।

आरों स्टोर्स औंर बी.शॉप्स ने प्रमुख अखबारों में यह घोषणा कर दी कि वे सक्रिय सेवा में लगे सैनिकों के सम्बन्धियों को छूट दे रहे हैं। नयी बी.शॉप्स के लिए आवेदनों पर विचार करते समय भी वे युद्ध-विधवाओं को प्राथमिकता देते थे। इस कदम को बहुत वाहवाही मिली।

कीमतें गिराने के लिए हर सम्भव जरिया इस्तेमाल किया गया।

क्रेस्टन की चेन शॉप्स को जल्दी ही विनाशकारी प्रतियोगिता महसूस होने लगी और उन्होंने भी स्वयं को कीमतें गिराने को बाध्य पाया। नेशनल क्रेडिट बैंक ने आश्चर्यजनक प्रयास किये। पूरी-पूरी रात मिलर और हॉथॉर्न ने क्रेस्टन के साथ बैठकर बहीखातों में मगजपच्ची करते हुए बितायी। उनका अभियान ख़ासी मोटी रकमें निगल जा रहा था। वह डेढ़ सदी बिरले ही एक-दूसरे की आँखों में देखने की हिम्मत करते थे। वे बहुत शिद्दत से अपनी ज़िम्मेदारी महसूस कर रहे थे।

उनको अत्यधिक सम्भव प्रेरित करने के लिए मैकहीथ ने फिर बिचौलियों

के माध्यम से उनसे सम्पर्क के तार जोड़े। इस कदम का उन्होंने यह मतलब निकाला कि आरों स्टोर्स और बी.शॉप्स के साथ, कॉमर्शियल बैंक धीरे-धीरे ढह रहा है और ऑपर बन्धु अन्दरखाने क्रेस्टन के धन्धे से टाँका भिड़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने ये नतीजे निकाले और अपने मालों की कीमत और नीचे कर दी।

नतीजतन, आरों और मैकहीथ को भी अपनी कीमतें फिर घटानी पड़ीं। और इसी मुकाम पर दोनों उद्यम अपने भव्य बिक्री सप्ताहों की सीमा पर थे!

जनता-जनार्दन को बहुत पहले ही यह अहसास हो गया था कि यह आरों और क्रेस्टन के बीच की मृत्यु-पर्यन्त लड़ाई है। कुछ बिन्दास घरेलू औरतों ने पहले ही ख़रीदारी शुरू कर दी थी, लेकिन विशाल बहुसंख्या और कम दामों का इंतज़ार कर रही थी। वह ललचायी-ललचायी-सी दुकान से दुकान बौड़िया रही थी, कीमतों की तुलना करते हुए।

आरों ने नये पैमाने पर बदली कीमतों के लिए प्रारम्भिक कार्य पहले ही शुरू कर दिया था। इस काम को करने के दौरान उसे अपने साथी कीमत का अहसास हुआ। जब भी वह मैकहीथ का मूली जैसा सिर देखता था तो उसे शक होता था कि क्या यह आदमी बिना कोई शब्द ग़लत लिखे एक छोटा-सा पत्र भी लिख सकता है; लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि वह हिसाब-किताब साफ़ कर सकता था। जल्दी ही यह भी स्पष्ट हो गया कि वह और भी बहुत कुछ कर सकता है।

सी.पी.बी. अब उस महान बिक्री सप्ताह की तैयारी कर रहा था जो पहले हुए सभी प्रयासों को ढँक लेने वाला था। बिना क्षण भर भी रुके, आरों की चेन शॉप्स ने सी.पी.बी. की तीन आपूर्तियों को पहुँचते ही निगल लिया, और उनके लिए शुक्रिया भी शायद ही कहा। मुनाफा बहुत भारी नहीं था क्योंकि कीमतें पहले से ही आवश्यक स्तर से नीचे थीं। लेकिन पूरी योजना ही वास्तव में प्रतियोगिता ख़त्म करने का एक जरिया थी। भव्य बिक्री सप्ताह के लिए आरों पूरी तरह से आश्चर्यजनक सी.पी.बी. पर निर्भर रहा। उनके पास असीमित क्षमता प्रतीत होती थी।

बदकिस्मती से उनके पास ऐसा कुछ नहीं था।

जब कबाड़घरों में स्टॉक ज़्यादा से ज़्यादा कम होने लगा, तो फैनी की दुकान में मैकहीथ का तंत्रिका तंत्र जवाब दे गया। वह चीखा, रोया कि वह बरबाद हो रहा है और यह कि बटमारों के बीच आ गिरा है। वह जो कर सकता था, कर

रहा था, मगर वे तो उसकी पीठ की चमड़ी ही पा लेना चाहते थे। इस ज्वालामुखी पर बैठकर जीना अब वह और बर्दाश्त नहीं कर सकता। वे उससे उतनी ज़्यादा अपेक्षा नहीं रख सकते, जितनी उसकी सहनशक्ति से बाहर हो।

इस बीमारी के दौरे का तत्काल परिणाम जैक्स ऑपर के साथ एक बातचीत थी जिसमें महान बिक्री सप्ताह की तुलना एक ओलम्पिक से की गई है, और हेनरी ऑपर अतिकाल्पनिक आयामों के एक प्रचारात्मक विनियोजन पर सहमत हो गया।

फैनी ने ठण्डी पट्टियाँ रखीं और मैक की छाती पर आर्निका मला। पूरी आधी रात वह रोता रहा और उसे एक ईनामी लड़ाका समझने के लिए फैनी को भी कोसा, जो उसकी ख़ातिर अपनी सेहत तबाह कर देने वाला था।

कई महान पुरुषों की तरह, वह भी जब फैसलों को पूरा करने का वक्त आता तो कदम पीछे हटा लेता था। यहाँ तक कि नेपोलियन भी उस वक्त बेहोश गया था जब वह साम्राज्य एक हकीकत बन गया जिसकी वह लम्बे समय से योजना बनाता रहा था।

ये मिजाज़ दूसरे मिजाज़ों के साथ अदला-बदली होता रहता था।

कभी-कभी वह अच्छी तबीयत में रहता था और फैनी को बाहर सोहो के साफ़-सुथरे रेस्तराँ में ले जाता, जहाँ वह उन भावों पर उसके साथ हँसता जो उसकी *शानदार* योजना के सफलता पर आरों और ऑपर बन्धु के चेहरे पर आते।

फैनी भी हँसती, मगर वह यह नहीं समझती थी कि शानदार योजना से उसका क्या मतलब है। उसने किसी को अपने इरादों के बारे में नहीं बताया था, फैनी को भी नहीं।

लेकिन आम तौर पर उस पर उदासी वाला मिजाज़ ही छाया रहता था। ओ'हारा के लोगों ने स्थिति का लाभ उठाना और माँगें करना शुरू कर दिया।

सितम्बर में एक दिन मैकहीथ को ओ'हारा के एक सन्देशवाहक द्वारा लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर बुला भेजा गया।

वह सबसे ज़्यादा बेकायदगी थी। मैकहीथ लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर में कभी नही दिखलायी पड़ता था। पूरे गैंग में से केवल ओ'हारा, फादर और ग्रूच उसे पहले के मि.बेकेट के रूप में जानते थे।

फिर भी मैकहीथ वहाँ गया। ज़रूर कोई असामान्य घटना हुई होगी। वह ओ'हारा से नाई कि दुकान में मिला।

उन्होंने कोई बात नहीं की और सीधे पड़ोस के शराबखाने पहुँच गये।

ओ'हारा ने बुलावे के लिए माफी माँगी और समझाया कि वह मैकहीथ से बात करना चाहता था और चाहता था कि मिसेज क्राइस्लर को इस बारे में कुछ भी पता न चले। इस गिरोह में तरह-तरह की असाधारण चीज़ें हो रही थीं, और इन सभी घटनाओं में फैनी ने कुछ रहस्यमय भूमिका निभायी थी।

गिरोह नये इंतज़ामात से असन्तुष्ट था। तयशुदा तनख्वाहें उनके लिए बहुत कम थीं। उसने, यानी ओ'हारा ने इस मामले में तत्काल ही आवश्यक कदम उठा लिये थे, मगर जहाँ भी सम्भव था फैनी ने उसका विरोध किया और उसके सभी उपायों को निष्फल कर दिया। शायद वह ग्रूच के साथ काम कर रही थी, जो निश्चित रूप से गिरोह मे विद्रोह भड़काने में उसकी मदद कर रहा था। वह फिर से लैम्बेथ में फैनी के साथ रह रहा था।

मैकहीथ बहुत क्षुब्ध था। वह फैनी को पूरी तरह वफादार मानता था।

अब, ओ'हारा के मुताबिक, फैंनी सी.पी.बी. से हिस्सा काट-काटकर, क्रेस्टन के ख़िलाफ़ अभियान शुरू होने के बाद तनख्वाहों में आयी कमी की क्षतिपूर्ति कर रही थी। लेकिन इससे भी गिरोह सन्तुष्ट नहीं हुआ। पिछले सप्ताह के दौरान वे उस तरह काम नहीं कर रहे थे जिस तरह वे आम तौर पर करते हैं। तोड़-फोड़ की तमाम कार्रवाइयाँ हुई थीं और कई सदस्य काम पर नहीं आए थे। ओ'हारा ने पूछा कि क्या बी.शॉप्स आपूर्ति में आई कमी के बारे में शिकायत नहीं करती रही थीं।

मैकहीथ ने शिकायतों के बारे में कुछ नहीं सुना था। उल्टे बी.शॉप्स वाले लोग तो काफी आशापूर्ण दिख रहे थे।

'तब तो वह कहीं और से माल ख़रीद रही है,' उत्तेजित होते हुए ओ'हारा ने कहा। 'और यहाँ क्या हो रहा है, इसके बारे में उसने तुम्हें कुछ नहीं बताया?'

मैकहीथ ने टेबल पर रखी बियर के घोल में अपनी उंगलियाँ भिगोईं और अपनी पनीली आँखों से ओ'हारा पर एक तिरछी नज़र डाली। उसने कुछ तेज़ सिगारों का ऑर्डर किया और उस नौजवान को राइड लेने भेजा जहाँ, जैसा कि उसने कहा, इस वक्त गिरोह की एक बैठक चल रही है।

ओ'हारा सी.पी.बी. की नियमित ख़रीद के बारे में कुछ नहीं जानता था। मैकहीथ की राय में उसका इस बात से कोई लेना-देना नहीं था कि सी.पी.बी. रसीद के साथ सामान प्राप्त कर रही है या नहीं।

जब ओ'हारा वापस आया तो उसने बताया कि वहाँ कुछ नहीं होना था।

गिरोह ने उसे बताया कि मिसेज क्राइस्लर उनकी माँगें जानती हैं।

उसने सौवीं बार शिकायत की कि उसने विरोधी सदस्यों को पुलिस को सौंपना छोड़कर उसकी सारी शक्ति ही छीन ली है।

वे साथ-साथ वॉटरलू ब्रिज गये, मगर फैनी की दुकान पहले ही बन्द हो चुकी थी। उन्होंने उसे लैम्बेथ में पाया। ग्रूच भी उसके साथ था।

एक उत्तेजनापूर्ण झगड़ा शुरू हो गया जिसके दौरान मैकहीथ चुप रहा। फिर ग्रूच पर एक तिरछी निगाह डालते हुए, जिसका उसने बहुत ठण्डेपन से अभिवादन किया था, बगल वाले कमरे में गया और एक एम्पायर डेस्क की दराज़ों को तब तक छानता रहा जब तक उसे एक सिगरेट का डिब्बा नहीं मिल गया। इससे ऐसा प्रभाव गया मानो वह इस घर के बारे मे काफी कुछ जानता है, और इससे फैनी कुछ शर्मिन्दा-सी लगी।

अन्त में यह बात निकलकर सामने आयी कि फैनी वाकई गिरोह की माँगों को जायज़ समझती थी। वे फिर से अपनी हैसियत बदलना चाहते थे। वे इसे पहले जैसा चाहते थे; वे अपने ख़तरे पर काम करेंगे और मालों के बदले पैसे लेंगे।

फैनी ने यह कहकर बात ख़त्म की, 'तनख्वाह बहुत कम कर दी गयी है, बस यही दिक्कत है।'

मैकहीथ ने दलील दी, 'ऐसा बस कुछ समय के लिए है, इस समय सामानों को सस्ता ही रहना चाहिए। जब क्रेस्टन दौड़ से बाहर हो जाएगा, हम कीमतें और तनख्वाहें फिर से ऊँची रख सकते हैं।'

ओ'हारा ने टेबल पर मुक्का मारा।

'वे हालात का फ़ायदा उठा रहे हैं। बस यही बात है!'

फैनी भी डटी रही, 'क्रेस्टन के ख़िलाफ़ अभियान की बात कोई उन्हें नहीं समझा सकता। इसके अलावा इसका उनसे कोई लेना-देना नहीं है। वे नहीं जानते कि वे किसके लिए काम कर रहे हैं और उन्हें यह भी नहीं बताया गया है कि काम कब ख़त्म होगा।'

'ये अच्छी बात नहीं है,' प्रत्यक्ष रूप से ख़यालों में खोए हुए मैकहीथ ने कहा। 'पहले वे तय तनख्वाहें चाहते थे, अधिकारियों की तरह अब वे फिर अलग से कमाई चाहते हैं। यह एक नेता और उसके पीछे चलने वालों के परस्पर लगाव को प्रदर्शित करने का कोई तरीका नहीं है। वे हमेशा पाला बदलते रहते हैं। कल तय तनख्वाहें, आज मुनाफे में हिस्सेदारी। इससे किसी का भला नहीं होने वाला। अच्छे और बुरे वक्त साथ रहना इसे तो नहीं कहते।'

'बस अच्छे-बुरे वक्त साथ रहने की बात मत करते रहो, मैक!' फैनी ने गुस्से में कहा। 'लग तो यह रहा है कि यह तुम्हारे लिए अच्छा वक्त है और उनके लिए बुरा।'

'मगर हो सकता है कि बुरा वक्त आ रहा हो,' मैकहीथ ने दलील दी, 'और तब की ज़िम्मेदारी कौन लेगा?'

'वे खुद लेंगे ज़िम्मेदारी। अपनी बेहतर भावनाओं को अपने साथ यूँ बेलगाम न हो जाने दो मैक!'

'बहुत अच्छे,' मैकहीथ एकाएक एकदम से बोल पड़ा। 'उन्हें वह मिल जाएगा जो उन्हें चाहिए। उन्हें बता दो कि वे तुम्हें इसके लिए आभार प्रकट करें, फैनी।'

और वह खड़ा हो गया।

फैनी ने खोजती हुई निगाहों से उसे देखा।

'तो वे फिर से अपने हिसाब से काम कर सकते हैं?'

'हाँ। मगर ऑर्डर मैं दूँगा।'

उसने हैट स्टैण्ड की उनकी खूँटियों से ओ'हारा और ग्रूच के हैट उतारे और अन्यमनस्क निगाहों के साथ उन्हें दे दिया। ग्रूच कुछ अचम्भित-सा दिखा।

'मुझे तुमसे कुछ और बात करनी है,' मैकहीथ ने फैनी से बेपरवाह ढंग से कहा, और दोनों सज्जन असन्तुष्ट भाव से बाहर चले गये।

फैनी उन्हें नीचे तक ले गयी। जब वह वापस आयी तो मैकहीथ चेहरे पर कुछ अनिश्चित भाव लिए खिड़की के बराबर में खड़ा था। उसने परदों को खिसका दिया था और नीचे सड़क पर देख रहा था।

उसने शान्त स्वर में कहा, 'ग्रूच फिर देखने आ सकता है कि बत्तियाँ अभी भी जली हुई हैं या नहीं। बेहतर होगा कि हम बेडरूम में चलें।'

वह आगे बढ़ गया। बेडरूम बैठक कक्ष के आगे वाला था और वह भी सड़क से लगा हुआ था। मैकहीथ ने फैनी के अन्दर आने तक इंतज़ार किया और फिर बैठक-कक्ष की बत्ती बुझा दी।

उसने कहा, 'यहाँ पर एक बत्ती काफी होगी। अब तुम्हें काफी किफायत करनी पड़ेगी। जो हिस्सा गिरोह को गया है वह तुम्हारी तनख्वाह में से काटा जाएगा।'

वह बिस्तर पर बैठा और उसने एक छींट वाले कपड़े से ढँकी कुर्सी की ओर बैठने का इशारा किया। फैनी आहत हाव-भाव के साथ बैठी। वह स्पष्टतः

व्याकुल थी। मालिकाने के अपने अधिकार को इतनी निर्दयता से दिखलाने की उसे आदत न थी।

'क्या तुम मुझसे जलती हो?' उसने अचानक पूछा।

फैनी ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा। फिर वह हँस दी।

'मैं तुमसे यही तो पूछने जा रही थी, मैक। तुम भी अजीब हो।'

वह गुस्से से बड़बड़ाया, 'तो बताओ तुम योजना के बारे में क्या जानती हो। सबकुछ!'

वह तो एक तरह से अचम्भित रह गयी, क्योंकि वह उसकी योजना के बारे में कुछ नहीं जानती थी। उसकी दिलचस्पी तो बस इस बात में थी कि काम करने वालों के साथ उचित ढंग से व्यवहार हो। दिक्कत पैदा करना उसका मकसद नहीं था। उसका नज़रिया था कि, जियो और जीने दो। उसने ऐसा नज़रिया शायद इसलिए अपनाया था कि ग्रूच गिरोह से जुड़ा हुआ था।

जब मैक ने उसे अपनी योजना बताना शुरू किया, तो वह वाकई अचम्भित हो गयी थी।

अब मैक को उसके इस दावे पर भरोसा हो गया था कि वह कुछ नहीं जानती, लेकिन वह पूरे प्रवाह में था और उसने पूरी योजना उसके सामने खोलकर रख दी। उसक जानने वालों में फैनी ही सबसे बेहतर ढंग से सुन सकती थी।

क्रेस्टन और नेशनल क्रेडिट बैंक की स्थिति में तरह-तरह की कमज़ोर कड़ियाँ थीं। और यहीं वह ज़बर्दस्त सम्भावनाओं को देख रहा था। डेढ़ सदी के प्रमुख ग्राहकों में से एक मि.पीचम थे, और मि.पीचम अभी भी उसके ससुर थे। लेकिन पहले वह अपने सहयोगियों, आरों और कॉमर्शियल बैंक के साथ 'खुले में आना चाहता था'।

'मैं साथ-साथ उनसे भी उतने दिल से और कठोरता से तब तक नहीं लड़ सकता, जितना मैं चाहता हूँ, जब तक मुझे यह अहसास सालता रहेगा कि उन्होंने मुझे पट्टी पढ़ाई है। यह अहसास हम दोनों के बीच खड़ा है। जैसे ही मैं उन्हें कोई सबक सिखा दूँगा, हमारे लिए एक सही आपसी समझ पर आ पाना और आसान हो जाएगा।'

वह निकट भविष्य में आरों की दुकानों और बी.शॉप्स, दोनों की ही आपूर्ति में कटौती का प्रस्ताव रख रहा था। इस पैंतरे से उसे उम्मीद थी कि वह आरों और कॉमर्शियल बैंक को एक हताश स्थिति में पहुँचा देगा, ताकि, इससे ठीक

पहले कि वह क्रेस्टन को 'आधा निवाला बाहर और आधा निवाला अन्दर धरे' उसके घुटनों पर ले आते, उनको संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक आपूर्तियों की कमी हो जाए और नतीजतन उनको इस बात का अहसास होता कि वे किस कदर उसकी मुट्ठी में हैं। तब सी.पी.बी. करार को बदलने और नयी शर्तें लिखवाने की स्थिति में होती। आरों प्रतियोगिता के बीचों-बीच और भव्य बिक्री सप्ताह के ठीक पहले खाली गोदामों के साथ बैठे रह जाना कभी नहीं चाहेगा। लेकिन अगर आरों दूसरी, ज़्यादा मुनासिब कीमतें देने पर राज़ी हो जाता है तो ख़रीद के सन्देहास्पद तरीकों के बिना भी काम चलाया जा सकता है। इसी वजह से ओ'हारा के आदमियों के साथ होने वाला बन्दोबस्त किस्मत से एक बिल्कुल अप्रत्याशित चीज़ था। कुछ ख़ास परिस्थितियों में ऐसी योजना बेहद अनुकूल होती है।

मैक ने बड़े सीधे-सादे अन्दाज़ में कहा, 'मुझे एक परिवार बनाना चाहिए। मैं उम्र के उस मुकाम पर पहुँच गया हूँ जब एक आदमी के पास एक बैंक खाता होना चाहिए।'

अपने वक्तव्य के दौरान वह काफी प्रसन्नचित्त हो गया था और कमरे में पैर पटक-पटक कर सिगार के कश लेते हुए आगे-पीछे कर रहा था।

फैनी को सबकुछ बताने की उत्तेजना में वह ग्रूच के ख़िलाफ़ अपना गुस्सा भूल गया था। उसने सोचा था कि फैनी को उसकी योजना के बारे में कुछ अन्दाज़ा चल गया होगा, तभी उसने गिरोह की स्वतन्त्रता की माँग की होगी।

अब वह इतनी उत्साहित हो गयी थी कि उसे अब जाने में दिक्कत हो रही थी। ननहेड जाते हुए रास्ते में ही उसे ग्रूच और इस तथ्य का ध्यान आया कि अब वह फिर फैनी के साथ रह रहा है। उसने यह मन बना लिया कि सबकुछ के बावजूद वह फैनी से थोड़े ठण्डेपन से व्यवहार करेगा। इसके अलावा, जितना मैक पसन्द करता था, फैनी उससे ज़्यादा स्वतन्त्र हो रही थी।

एक ऐतिहासिक सम्मेलन

कुछ दिनों बाद मैकहीथ की मौजूदगी में सी.पी.बी. की एक मीटिंग हुई।

मैकहीथ ने सज्जनों को अपने सिगार लेने के लिए आमन्त्रित करके बातचीत की शुरुआत की। व्हिस्की और सोडा बगल की टेबल पर रखे हुए थे,

क्योंकि मीटिंग शायद थका देने वाली होगी।

और फिर प्रत्यक्ष आनन्द के साथ मुँह में नया सिगार डालते हुए हरे खोल वाली टेबल पर उसने आगे आने वाले बिक्री सप्ताह के लिए उसके और महान आरों द्वारा निर्मित व्यवस्था के कागज़ात को रखा। वे काफी सर्वतोमुखी थे और उसकी शुरुआत से आखिर तक हर जानकारी पूर्ण थी।

'हमने इनपर चार दिन तक काम किया है। पिछले रविवार को मैंने इन्हें वारबॉर्न कैसल में दिया था। जैक्स ऑपर ने कहा कि वे ऐसा ओलम्पियाड करेंगे जो लन्दन के कारोबारी दायरों में बरसों तक याद किया जाएगा।'

मैकहीथ धीरे-धीरे और स्पष्टता के साथ बोल रहा था। वह अपनी अध्यक्ष वाली कुर्सी में पीछे झुका और उसने फैनी से पूछा कि सी.पी.बी. समय पर सामानों को आवश्यक मात्रा मे प्राप्त कर सकती है या नहीं। जिन मात्राओं का उल्लेख किया गया था, वे विशालकाय थीं।

'असम्भव। हमारी आपूर्तियाँ बस ख़त्म होने की कगार पर हैं। एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दें तो भी हम आपके द्वारा बताई गई मात्रा का एक-तिहाई दे सकते हैं। अभियान बहुत जल्दी शुरू हो गया है।'

'ये तो बुरा है,' मैकहीथ ने छत पर देखते हुए कहा।

'हम अभी भी एक-तिहाई की आपूर्ति कर सकते हैं,' फैनी ने बिन्दास अन्दाज़ में कहा।

मैकहीथ ने गम्भीरता से जवाब दिया, 'एक विशाल योजना में, जिसके बारे में जैक्स ऑपर कहते हैं कि यूनानी ओलम्पिक प्रतियोगिताओं के बाद ऐसा कुछ नहीं हुआ है, योगदान के रूप में देने के लिए, यह कोई अच्छा सुझाव नहीं है। एक-तिहाई! मैं उस व्यक्ति में विश्वास करता हूँ जो अपने करार पूरी तरह निभाता है या बिल्कुल नहीं निभाता। मेरा मतलब असली वाले कानूनी करारों से है, केवल दोस्तों के प्रति होने वाले नैतिक दायित्वों से नहीं, जैसा कि यहाँ बैठे लोगों का वेशक एक-दूसरे के प्रति है।'

फैनी ने छोटे-से अन्तराल के बाद कहा, 'हमने हर सम्भव तरकीब लगा ली है।'

'बुरा हुआ,' मैकहीथ ने कहा और छत की तरफ देखने लगा।

वहाँ मौजूद वकीलों में से एक रिगर नाम के आदमी ने, जो इस छोटी-सी कामदी से मैकहीथ जितना ज़्यादा बहल नहीं रहा था, कहा, 'आपका क्या मतलब है आप कहते क्यों नहीं? तो आप इस मुसीबत में आरों का साथ छोड़ देना चाहते

हैं?'

'क्या मतलब है तुम्हारा : मैं चाहता हूँ? मुझे करना ही पड़ेगा! आखिर यह मेरी बी.शॉप्स को भी प्रभावित करेगा,' मैकहीथ ने चिड़चिड़ाकर कहा। 'उनपर भी विपत्ति की मार पड़ेगी। मैं उनके लिए कोई अपवाद नहीं कर सकता। क्रेस्टन अपना बिक्री सप्ताह चलाएगा, और हम नहीं, यह अपने आप में पर्याप्त बुरी बात है। लेकिन हम इसमें कुछ नहीं कर सकते। मैंने आप लोगों को व्हिस्की लेने की सलाह यूँ ही नहीं दी थी। हम समाप्ति की कगार पर आ गए हैं और हम खुशनसीब होंगे अगर सी.पी.बी. इस संकट को झेल जाए। अब आइए, तथ्यों पर आ जाएँ। आरों को एकदम खुले तौर पर बताने से बचना सबसे अच्छा होगा। सामानों के प्रवाह को धीरे-धीरे कम होना चाहिए। इस चीज़ की व्यवस्था की जा सकती है। अगर हम सक्षम रूप से आपूर्ति की व्यवस्था नहीं कर सकते, तो कम-से-कम आपूर्ति रोकने का इंतज़ाम तो कर ही सकते हैं। अैर एक और बात सज्जनो। कभी मत भूलिये : बीमार मरता है और ताकतवर लड़ता है। यही जीवन है।'

'धन्धे की बात पर आइये,' बीच में ही रिगर ने बात काटी। उसके पास कहने को कुछ नहीं था, मगर वह पूरे मामले से बहुत प्रसन्न नहीं था।

मैकहीथ ने अभी अपनी बात ख़त्म नहीं की थी।

अपना सिगार बाएँ हाथ में लेते हुए, ताकि वह दाएँ हाथ में पेंसिल पकड़ सके, उसने धीरे-धीरे बोलना जारी रखा, 'बी.शॉप्स के हमारे दोस्तों के लिए यह एक कठिन परीक्षा होगी, मगर दुर्भाग्य से उनकी मदद करना हमारे बस की बात नहीं। उनमे ंसे बहुत से किराया और देय रकम देने में पिछड़े हुए हैं और अब हमें अपने पैसे की एक-एक कौड़ी की ज़रूरत है। उन्हें अपने ऊपर चढ़े उधार को चुकाने के बारे में सोचना ही चाहिए। हमने उनकी मदद की जब हमने उन्हें उधार दिया, अब उन्हें वह उधार चुकाकर हमारी मदद ज़रूर करनी चाहिए; यही सही है। हमें आने वाले कठिन वक्त से निपटने के लिए कुछ बचत की ज़रूरत है। आपको कभी नहीं भूलना चाहिए कि अगर हम ढहे तो वे बरबाद हो जाएँगे।'

अब तो फैनी भी भयभीत हो गयी थी। उसने नहीं सोचा था कि ऐसा भी ज़रूरी होगा। मैक बचत काहे के लिए चाहता है? वह कैसे कमाएगा अगर उसकी दुकानें दीवालिया हो जाएँगी? आरों लड़खड़ाएगा मगर अपने आपको जिला ले जाएगा; क्रेस्टन, यानी शत्रु, शानदार तरीके से विजय प्राप्त करेगा, भले ही थोड़े समय के लिए, जैसा कि मैक को उम्मीद थी। मगर छोटी दुकानें तो अल्पायु

मक्खियों के समान मर जाएँगी।

मैकहीथ पहले ही मेहनत से अपने काम में जुट गया था। अपनी पहुँच में रखे हर कागज़ पर वह बेतरह कुछ घसीटे जा रहा था। ओ'हारा आराम से था।

उन पाँचों लोगों ने बिल्कुल ठीक-ठाक इस बात की व्यवस्था बनाई कि किस प्रकार दुकानों में सामानों का प्रवाह सूख जाना था और मैकहीथ ने ज़ोर देकर कहा कि बी.शॉप्स को भी आरों की दुकानों की ही तरह वस्तुओं की कमी में चलना होगा। वह आरों, और उसके साथ ही कॉमर्शियल बैंक को शिकायत की कोई जायज़ ज़मीन देने का नुकसान नहीं उठा सकता था।

इस फैसले को लागू करने का काम तत्काल लागू कर दिया गया। बिक्री अभियान के बीचों-बीच मालों की आपूर्ति जवाब देने लगी।

सी.पी.बी. की असीमता में आँख मूँदकर भरोसा करने की वजह से आरों ने अनापूर्ति की सूरत में जुर्माना लगाने वाले नये और खरे करारनामे बनाने के काम की उपेक्षा कर दी थी। आरों और उसके बैंक को एक भ्रम की स्थिति में डाल दिया गया था। उन्होंने सबसे पहले इस बात का पता लगाया कि बी.शॉप्स में ज़्यादा अच्छी तरह से आपूर्ति हुई थी या नहीं। उन्होंने पाया कि वे भी मालों के लिए उतनी ही भूखी थीं जितनी कि खुद उनकी दुकानें।

दरअसल बी.शॉप्स के मालिकों ने पहले ही सी.पी.बी. के ऑफिस पर धावा बोलना शुरू कर दिया था जहाँ, मिसेज क्राइस्लर, हमेशा की तरह दोस्ताना अन्दाज़ में हर दिन उन्हें सांत्वना दे रही थीं।

घर लौटने पर वे मि.मैकहीथ के पत्र पाते जिसमें उनसे उनका बकाया अदा करने का विनम्र निवेदन किया गया होता था।

कॉमर्शियल बैंक के सज्जनों द्वारा बुलाए जाने पर मैकहीथ उनके दफ्तर गया और असहाय रूप से और दुख के साथ अचम्भित होते हुए अपना दोष स्वीकार कर लिया।

उसने अपने केस से एक सिगार निकाला, फिर अपना सिर हिलाया और सिगार को ऐसे वापस रख दिया मानो उसने धूम्रपान के सारे आनन्द को ही खो दिया हो। तब उसने कहा :

'मैं बहुत निराश हूँ। मेरी दुकानें बहुत बुरी मुसीबत में हैं। ये बेचारे घोषणाएँ करने में बहुत बड़ी मुसीबत में फँस गये हैं। ज़्यादातर मामलों में उन्होंने तख्तियाँ खुद रंगी हैं। और अब उनकी दुकानें चूहे के बिल की तरह ख़ाली हो गयी हैं। लोगों से भरी हुई और सामानों से ख़ाली! और वो भी अक्टूबर से ठीक पहले

जब किराया देना बंधा होता है! और इन सारी चीज़ों के बाद करेले पर नीम यूँ चढ़ा कि उन्होंने बिक्री के लिए सहायक रख लिए हैं। मगर मैं इन चीज़ों की बात नहीं करूँगा।आख़िर ये सब तो *भौतिक* नुकसान ही हैं। मुझपर इससे भी ज़्यादा मार इस त्रासदी के दूसरे भाग से पड़ी है। ब्लूम्सबरी मेरा एक व्यक्तिगत मित्र था। उसे मेरे साथ ऐसा बर्ताव कभी नहीं करना चाहिए था। मैं इस पूरे मामले को एक व्यापारिक आपदा नहीं, बल्कि एक नैतिक आपदा मानता हूँ।'

मैकहीथ ने निश्चय और सफलता के साथ यह रुख़ अपनाए रखा। वह किसी भी हालत में बी.शॉप्स के अपने दोस्तों से मिलने से बचता नहीं था। उल्टे, वह बिल्कुल पहले की ही तरह उनसे मिलने जाता रहा। गम्भीर चेहरे के साथ, वह उन्हें समझाता कि क्यों वह पैसा जुटाने पर मजबूर था। वह छोटे पिछवाड़े वाले कमरों में बैठता और बच्चों को अपने घुटनों पर बिठाता और हताश दुकानदारों में अपने आत्मविश्वास और आशावाद का कुछ अंश भरने का हर सम्भव प्रयास करता।

वह औरतों से दिक्कतों के बारे में बात करता और उन्हें बतलाता कि किस प्रकार हमेशा किफ़ायतसारी के नये तरीके मौजूद रहते हैं। वह आदमियों से अलग से बात करता।

वह कहता, 'इस धन्धे की मार मुझपर बड़ी तगड़ी पड़ी है, मगर मैं इसे दिखलाता नहीं। इस मुसीबत की घड़ी में तुम्हें अपनी पत्नी का सहारा बनना चाहिए।'

इस तरह से वह अपने आपको पैदाइशी नेता साबित कर देता और यह भी साबित कर देता कि जब तक आदमी का निश्चय अटल है वह कुछ भी कह सकता है। वह इन लोगों को जानता था। वह उदास चेहरा भी, जो वे उसे दिखाते उसे डरा नहीं पाता था। अब उन्हें डटे ही रहना था और मज़बूत बने ही रहना था। उनकी विचलित निगाहों से वह अपनी बेधती हुई निगाह मिलाते हुए बोलता, 'केवल मज़बूत आदमी ही बचता है'। काफी समय बाद ही वे इस बेधती निगाह को भूल पाते।

जैसा कि इतिहास दिखलाता है, यही वह तबका है जिसके लोग इसी बात को एकमात्र सही बात मानते हैं कि मज़बूत कमज़ोर पर विजय हासिल करे।

इस दौरान मैकहीथ पॉली से भी उसी प्रवाह में बात करता था। वह उससे यथासम्भव मितव्यय की माँग करता था। वह उसे संजीदगी से बताता था कि वह अपने लोगों के साथ ही भूखा मरना चाहता है। वह ज़्यादा सस्ते सिगार लाता

और उन्हें पीता भी कम ही था। उसने तो अपने दैनिक अखबारों में से भी एक रोक दिया।

वह कहता था, 'भरोसा रखो! मैं उनसे बहुत सी चीज़ों की उम्मीद रखता हूँ-हर चीज़ की। जैसा कि एक स्पार्टन माँ ने अपने बेटे से कहा था, जब वह युद्ध पर जा रहा था : अपनी कुलचिन्ह ढाल के साथ या अपनी कुलचिन्ह ढाल पर; वैसे ही मैं अपने बी.शॉप्स के दोस्तों से कहता हूँ : अपने निशान के साथ या अपने निशान पर! लेकिन तब मुझे भी निराशाजनक समय में उनके साथ भरोसा रखना चाहिए। अब तुम समझी कि मैं तुम्हारे घर चलाने की रकम में से क्यों कटौती कर रहा हूँ!'

उसने जैक्स ऑपर के सामने भी अपनी सफाई पेश करने की कोशिश की। मगर वह अजीब ढंग से विच्छिन्न था। उसने रुखाई से कहा कि वह अभागे लोगों को उन लोगों की श्रेणी में रखता है जिनके पास अक्ल नाम की कोई चीज़ नहीं होती। पराजित के लिए दया एकमात्र कमज़ोरी थी।

मैकहीथ ने यूनानी दर्शन को अपनी पसन्द के लिए एक तरह से कुछ ज़्यादा ही अमानवीय पाया।

सैनिकों के लिए सुख-साधन

अपने कबाड़घरों में मैकहीथ के पास अभी भी लिनेन और ऊन बड़ी मात्रा में उपलब्ध थे। दुकानों को मालों की आपूर्ति में कटौती के निर्णय से ठीक पहले, लिनेन की कई खेपें, लंकाशायर की एक कपड़ा मिल में सेंधमारी के फल के रूप में प्राप्त हुई थीं। वह नहीं जानता था कि उनके साथ क्या करना है।

अखबार एक बार फिर से साउथ अफ्रीका में युद्ध के बारे में खूब लिख रहे थे।

केवल लन्दन में ही नहीं बल्कि साउथ अफ्रीका में भी भीषण लड़ाइयाँ लड़ी जा रही थीं। और केवल लन्दन में हितों के टकराव की बदौलत ही निर्धन वर्ग दुर्दशा में नहीं थे-बी.शॉप्स के टॉम स्मिथों और मैरी सॉयरों के बारे में सोचिये-बल्कि साउथ अफ्रीका में हितों के टकराव के कारण भी वे दुर्दशा में थे।

उस दिशा में सहायता के लिए कुछ न कुछ ज़रूर किया जाना चाहिए।

कल्याण समितियाँ बनाई गईं। उच्च वर्ग की महिलाओं में टकराहट पैदा हो

गई। बुजुर्गों और जवानों ने होड़ की। कुलीन घरों और चुनिन्दा स्कूलों के शिष्ट हाथों ने लिनेन के चिथड़ों को फाड़कर घायलों के लिए पट्टियाँ बनाईं। और बहादुर सैनिकों के लिए कमीज़ें बनाई गईं और मोज़े भी सिले गये। *कुर्बानी* शब्द ने नये अर्थ ग्रहण कर लिए।

मैकहीथ ने पॉली को ऐसी ही एक समिति में भेजा। उसे अपने लिनेन के लिए अच्छा बाज़ार नज़र आया-और अपने ऊन के लिए भी।

पॉली कामचलाऊ सिलाई कक्षों में अपनी दोपहर गुज़ारती, जहाँ महिलाएँ एक कप चाय पर कमीज़ें सिलतीं। वे सब गम्भीर चेहरा बनाए रखते और उनकी बातचीत *कुर्बानी* की विषयवस्तु से सारगर्भित रहती थी।

'वे ऐसी सुन्दर सफेद कमीज़ों को पाकर खुश हो जाएँगे,' महिलाएँ कहा करती थीं।

सिलाई को अपने अँगूठे के नाखून से सपाट करते हुए, वे इंग्लैण्ड की महानता की बात करतीं।

औरतें जितनी ज़्यादा उम्र की होतीं उनके स्वभाव खून के उतने ही ज़्यादा प्यासे होते।

'हम उन जानवरों के साथ कुछ ज़्यादा ही दयालुता बरतते हैं, जो हमारे बहादुर जवानों को घात लगाकर गोली मार देते हैं,' पॉली के पीछे बैठी एक कुलीन बुजुर्ग महिला ने कहा। 'हमें बस उन पर धावा बोलना चाहिए और उन सबको गोली से उड़ा देना चाहिए, ताकि वे समझ जाएँ कि इंग्लैण्ड से झगड़ा करने का क्या मतलब होता है। वे तो पुरुष हैं ही नहीं! वे तो जंगली जानवर हैं! तुमने सुना है वे कैसे कुँओं को ज़हरीला कर दे रहे हैं? केवल हमारे ही लोग हैं जो ईमानदारी से लड़ते हैं, मगर उनको ऐसा नहीं करना चाहिए जब उन्हें तेली-तम्बोलियों से निपटना हो। तुम्हें ऐसा नहीं लगता, प्यारी?'

सुनहले फ्रेम का विशाल चश्मा लगाए, एक और ज़्यादा बूढ़ी महिला ने आह भरी, 'मुझे बताया गया है कि हमारे जवान आग के बीच भी अनसुनी वीरता के साथ बढ़ते जाते हैं। वे गोलियों की बारिश के बीच से भी यूँ गुज़रते हैं, मानो वे परेड मैदान के पार जा रहे हों। वे मरते हैं या नहीं, इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। एक समाचार पत्र संवाददाता ने उनसे सवाल पूछे। उन सबने एक ही बात कही : जब तक इंग्लैण्ड हमें गौरव के साथ याद करता है हमें किसी बात की परवाह नहीं।'

पहली वाली औरत ने कठोरता से कहा, 'वे बस अपने कर्तव्य का पालन

कर रहे हैं। क्या हम अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं?'

और वे और तेज़ सिलने लगीं।

दो जवान लड़कियाँ ही-ही-ठी-ठी करने लगीं। उनका चेहरा एकदम लाल हो गया था और वे एक-दूसरे को न देखने की कोशिश कर रही थीं, नहीं तो फिर उनके ठहाके फूट पड़ते। उनकी माँओं ने गुस्से से उन्हें चुप रहने का इशारा किया।

एक दूसरी लड़की ने, जो करीब 20 साल की रही होगी, शान्त भाव से कहा :

'जब कोई अखबारों में पढ़ता है कि वहाँ क्या हो रहा है और फिर अपने सैनिकों की वर्दी में खूबसूरत जवान आदमियों को देखता है, तो यह उसे दुखी कर देता है।'

दोनों जवान लड़कियाँ ठहाका मारकर हँसने लगीं। लेकिन एक पल को भी उन्होंने अपने तुच्छ स्वभाव के ख़िलाफ़ संघर्ष नहीं छोड़ा; उन्होंने उग्रता से थूक निगला, अपने चेहरे भयंकर गम्भीर बना लिये, जबकि उनके शरीर हँसी से हिल रहे थे, और गम्भीर बने रहने के प्रयास में पूरे दोहरे हो गये थे।

एक नौजवान महिला उनकी सहायता के लिए आयी।

एक नयी बातचीत शुरू करते हुए उसने कहा, 'क्या तुम जानती हो, जब मैं हमारे बहादुर जवानों को उनके पसीने-मिट्टी से सने जीर्ण-शीर्ण फौजी कोट में देखती हूँ और जब मैं उन ख़तरों और मुसीबतों के बारे में सोचती हूँ जिनसे वे गुज़रते हैं, तो मैं उन्हें चूम सकती हूँ, बिल्कुल उसी हालत में जिसमें वे होते हैं, सभी पसीने से तर, बिना नहाए और खून में रंगे हुए। मैं वाकई चूम सकती हूँ।'

पॉली ने उस पर एक क्षणिक निगाह डाली।

अपना गोल चेहरा सिलाई पर और झुकाते हुए उसने सोचा, 'मेरे पिता कितने सही हैं। जीत के बाद आपको क्षत-विक्षत गन्दे और दयनीय सिपाहियों को भीख माँगने भेज देना चाहिए। लेंकिन हार के बाद उन्हें चुस्त-दुरुस्त और साफ़-सुथरा और बाँका बन जाना चाहिए। यही पूरी कला है।'

बातचीत सैनिकों के लिए सुख-साधन के विषय की ओर मुड़ गयी।

महिलाएँ गुलाबी और कासनी रंग के रिबनों में बंधे सिगरेट और तम्बाकू, चॉकलेट और उत्साहवर्द्धन की छोटी-छोटी टिप्पणियाँ भेज रही थीं।

एक लड़की ने प्रफुल्लता के साथ कहा, 'मिलर स्ट्रीट पर आरों की दुकान में एक शिलिंग में ज़्यादा तम्बाकू मिलता है। शायद यह बहुत अच्छा नहीं होता,

लेकिन फिर उन्हें गुण की बजाय ज़्यादा मात्रा चाहिए, वे सब यही कहते हैं।'

सैनिक अपनी उपकारिणियों को पत्र के जरिये धन्यवाद ज्ञापित करते जिसे वे लड़कियाँ चारों और घुमातीं। इन चिट्ठियों में सबसे प्यारी हिज्जे की ग़लतियाँ होती थीं जिन्हें काफी बहुमूल्य समझा जाता था।

मिलर स्ट्रीट पर खरीदारी करने वाली लड़की ने कहा, 'अफसोस की बात है कि हम कमीज़ें और जुराबें भी अपनी छोटी-सी टिप्पणियों के साथ नहीं भेज सकते। उसमें तो और ज़्यादा मज़ा आता।'

अचानक चश्मे वाली बूढ़ी महिला पॉली की ओर मुड़ी और उसने भावावेश में काँपते हुए कहा :

'जब मैं सोचती हूँ कि यह साफ़-सुथरा अंग्रेज़ी लिनेन शायद जल्दी ही एक ब्रिटिश सैनिक के खून के धब्बों से रंग जाएगा तो उस वक्त मैं अपने हाथों से ऐसे हत्यारों को ख़त्म कर सकती हूँ।'

पॉली ने भयाकुल हो उस बुढ़िया को घूरा। उसका सूखा हुआ हाथ, जिसने एक सुई को कसकर जकड़ रखा हुआ था, बीच हवा में थरथराया और उसके रक्तपिपासु ऐंठे हुए मुँह में उसका निचला जबड़ा लटका हुआ था।

पॉली ने अचानक अपने आपको बीमार महसूस किया और उसे बाहर जाना पड़ा।

महिलाओं में एक क्षणिक विस्मय फैल गया।

वे एक-दूसरे से फुसफुसायीं, 'उसके पाँव भारी हैं।'

अभी भी कुछ फीका चेहरा लेकर पॉली जब वापस कमरे में आयी और सिलाई करते खून चूसने वालों के कोरस के बीच बैठी तो एक बड़ी और गाय-सी मृदुल आँखों वाली एक औरत ने कहा :

'मुझे उम्मीद है कि लड़का होगा। इंग्लैण्ड को पुरुषों की ज़रूरत है!'

फिर बातचीत दूसरे सवालों की तरफ मुड़ गयी। फूलदार रेशमी पोशाक पहने एक मोटी औरत ने, जिसका पति, जैसा कि सभी जानते थे, एक एडमिरल था, बोलना शुरू किया :

'हमारे निम्न वर्गों का व्यवहार शानदार है। मैं एक दूसरी समिति में भी हूँ जहाँ हम पट्टियाँ फाड़ते हैं। आप लोगों को वहाँ आकर देखना चाहिए। तो, आखिरी गुरूवार को एक काफी साधारण-सी औरत वहाँ आयी। कोई भी बिल्कुल सीधे तौर पर देख सकता था कि वह कामगार तबके की थी। और वह एक साफ़-सुथरी और पैबन्दों से भरी शर्ट लायी थी। उसने कहा, "मेरे पति के

पास दो और हैं, और मैंने पढ़ा है कि वहाँ भयंकर संख्या में घायल लोग हैं।" जब मैंने यह बात अपने पति को बताई तो उन्होंने कहा, "यह है एक सच्ची ब्रिटिश माँ! ड्यूक-सी हैसियत वाली तमाम औरतें उससे कुछ सीख सकती हैं।"'

उसने गर्व से चारों और देखा।

पॉली के पीछे बैठी कुलीन बुढ़िया ने सारगर्भित ढंग से कहा, 'हर कोई अपनी हैसियत के मुताबिक, और हर कोई अपने जरियों के मुताबिक।'

पॉली अब अपने पति को बता सकती थी कि उसके पास रईस घरों में बुलावे का ढेर लग गया है। वह बहुत खुश था कि उसने अपने स्टॉकों को बेचकर निपटा डाला है, और उसने पॉली को ब्रिटिश सैनिकों के लिए महान कल्याण कार्य में खूब मेहनत से लगे रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

मि. एक्स

मैकहीथ जब भी आरों और ऑपर बन्धुओं से मिलता तो अपने एक वक्त के दोस्त ब्लूम्सबरी की बेवफाई की शिकायत करता; मगर उसे यह अहसास था कि उसे सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड पर अपनी पूर्ण निर्भरता पर और ज़्यादा ज़ोर के साथ बल देना चाहिए। कॉमर्शियल बैंक के सन्देहों को शान्त करना ख़ास तौर पर मुश्किल काम था। आपूर्ति रोकने के पैंतरों से बैंक पूरी तरह सी.पी.बी. की मुट्ठी में आ गया था, और किसी भी हालत फर्म की मुट्ठी को मैकहीथ की मुट्ठी से जोड़कर देखे जाने से बचाना था।

सो उसने सी.पी.बी. की एक दूसरी और पक्के तौर पर गोपनीय मीटिंग बुलाई। मीटिंग के ब्यौरे में उसके नाम को मि. एक्स के रूप में दर्ज किया गया। उसने कुशलता के साथ लिखा गया कानूनी रूप से त्रुटिहीन पत्र मि.मैकहीथ, ननहेड के नाम तैयार किया, जिसमें सी.पी.बी. ने विनम्रता और दृढ़ता के साथ इस बात की और ध्यान दिलाया था कि उनके बीच के मूल करार ने केवल उन मूल्यों की गारण्टी दी थी जो सिर्फ अस्थायी प्रचार के लिए अभीष्ट थे। सी.पी. बी. के संसाधन फिलहाली तौर पर, कुछ ख़त्म-से हो रहे थे, मगर जितनी जल्दी हो सकेगा, वस्तुओं की आपूर्ति और ज़्यादा मात्राओं में फिर से जारी कर दी जाएगी। आपूर्ति, बेशक, नई कीमतों के आधार पर।

तब, सबको अचम्भा हुआ, जब जैसे ही काम ख़त्म हुआ और नौ बजने जा

रहे थे, ब्लूम्सबरी खड़ा हुआ, और उसने हकलाती हुई आवाज़ में पूछा कि क्या ये कदम बी.शॉप मालिकों को नुकसान नहीं पहुँचाएगा।

ब्लूम्सबरी की आपत्ति बिल्कुल अनपेक्षित थी।

अभी शाम बीती नहीं थी। वे सभी उस भारी टेबल के चारों और चुपचाप बैठे हुए थे। खिड़कियाँ खुली थीं क्योंकि मौसम गर्म था और वे सड़क के पार गैस लाइन की रोशनी में चेस्टनट के पेड़ों की हरियाली को हल्का-हल्का चमकते हुए देख सकते थे।

मैकहीथ ने फौरन अपना सिगार नीचे रखा और एक छोटा-सा भाषण दिया, जो मुख्य रूप से ब्लूम्सबरी की और लक्षित था। इसमें उसने इस तथ्य पर ज़ोर दिया था कि बी.शॉप्स के मालिकों के लिए इस कदम का मतलब स्वाभाविक तौर पर कुछ समय के लिए आत्म-त्याग है मगर हर कारोबार, और निस्सन्देह हर नश्वर सफलता, सही वक्त पर त्याग करने की क्षमता पर ही निर्भर करती है। बीमार मरता है, मज़बूत लड़ता है। हमेशा से ऐसा ही रहा है और हमेशा ऐसा ही रहेगा। अब बी.शॉप मालिकों को यह दिखलाना ही होगा कि *वे किसी मिट्टी के बने हैं*। उसने फैनी क्राइस्लर को ठीक-ठाक यह ध्यान रखने को भी कहा कि कौन ढहता है और कौन टिकता है। उसने यह जोड़ा कि ओ'हारा को भी इस *मर्मान्तक प्रश्न* का सामना करना है।

अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी वह खुद लेगा। हर उस बी.शॉप मालिक को, जिसे फैनी ने रामभरोसे छोड़ दिया, *उसने* रामभरोसे छोड़ दिया था। उसमें यकीन न करने वाला कोई आदमी उसके साथ काम नहीं कर सकता था।

लेकिन तभी फैनी मैकहीथ को देखे बिना उठ खड़ी हुई और उसने बी.शॉप मालिकों की संकटग्रस्त स्थिति के बारे में कुछ तथ्यों का वर्णन किया। जो उनके साथ किया जा रहा था वह एक क्रूर हत्या से कम नहीं था। उनमें से ज़्यादातर लोग एक और महीने भी नहीं टिक सकते। वे अपने आपसे और एक दूसरे से पूछ रहे थे कि बी.शॉप दीवालिया हो जाए तो क्या कम्पनी को ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है?

उसने इन शब्दों के साथ बात ख़त्म की :

'अगर हम कुछ राहत देने वाले कदमों के बारे में यहाँ और अभी तय नहीं कर पाते तो महाविपदा अवश्यम्भावी हो जाएगी।'

मैकहीथ ने प्रत्यक्ष अचम्भे के साथ काफी ठण्डे ढंग से कहा : पहली बात, बुरा से बुरा हो तो यही होगा कि बी.शॉप मालिक दीवालिया हो जाएँगे, बी.शॉप्स

नहीं, जो कि एक बिल्कुल अलग चीज़ हैं; और दूसरी बात, कम्पनी विधवाओं और अनाथों का कल्याण करने की स्थिति में नहीं है। इसके अलावा, उसने यह नज़रिया अख़्तियार किया : जो गिर रहा है उसे गिरने दो-और तो और, जो गिर रहा है, उसे एक धक्का और दे देना चाहिए।

इसके साथ ही मीटिंग समाप्त हो गयी। वह शनिवार की शाम थी। तारीख थी 20 सितम्बर।

ओ'हारा गुस्से में चला गया। मैक के ढोंग करने की आदत पर वह हमेशा नाराज़ हो जाता था। सिर्फ इस ब्लूम्सबरी की वजह से, वह ऐसा दिखावा क्यों करे जैसा कि वह वाकई अपने शब्दों में विश्वास करता हो?

लेकिन जब वह आपस में भी बात कर रहे होते थे तो भी मैक अपना मुखौटा गिरने नहीं देता था। उसे निन्दा वाली बातचीत से नफरत थी और सर्वाधिक सन्देहास्पद विषयों पर भी वह बिल्कुल तटस्थ स्वर में बातचीत करता था। ओ'हारा का शालीनता का बोध इस व्यवहार से आहत होता था।

लेकिन हर चीज़ उसने बिल्कुल बैसे ही की जैसा तय हुआ था और वह एक असली पुरुष की तरह खरीदारों के समक्ष खड़ा हुआ और उसने उन्हें बताया कि उन्हें कुछ हफ्तों की छुट्टी और मनानी पड़ेगी, इस बार अपने ख़र्च पर। अब सामानों का प्रवाह बिल्कुल ही सूख गया। और सी.पी.बी. के उस पत्र ने, जिसे मैकहीथ ने बिना एक भी शब्द कहे कॉमर्शियल बैंक को सौंप दिया, काफी गहरा प्रभाव छोड़ा।

कुछ दिनों में ही बी.शॉप्स के अपेक्षाकृत ग़रीब मालिक भयंकर हताशा की स्थिति में पहुँच गये। वे सभी अपने मकानमालिकों के कज़ों में डूबे हुए थे और उन्होंने दूसरे कामों में भी उधार ले रखा था, कुछ तो अपने स्टॉकों के लिए और कुछ अपने घरेलू ख़र्चों के लिए। एकदम हाल में ही आधा दर्जन नयी बी.शॉप्स खुली थीं और उन्हें ठीक से शुरुआत करने का भी वक्त नहीं मिला। अब उन्हें स्वाभाविक रूप से यह विश्वास हो चला था कि उनके साथ विश्वासघात करके उन्हें बड़े चेन स्टोर्स के रहम पर छोड़ दिया गया है। उनका भ्रम टूट चुका था।

इसके बाद से, मि.पीचम के नौकर लगातार उन बी.शॉप मालिकों या उनके रिश्तेदारों के पास आ रहे थे जो गलियों में भीख माँगने की कोशिश कर रहे थे।

चूँकि वे मैकहीथ के एजेण्टों द्वारा अपने घरों से खदेड़ दिये गये थे, इसलिए उनकी *स्वतन्त्रता* बढ़ गयी थी। असल में उनकी *स्वतन्त्रता* बिल्कुल असहनीय हद तक बढ़ गयी थी क्योंकि उनके सिर के ऊपर छत नहीं थी। *अपनी ही क्षमता*

से उन्होंने अपना वज़न आठ स्टोन (चौदह पौण्ड का भार-अनु.) तक घटा लिया था।

पीचम के लिए वे किसी काम के नहीं थे, क्योंकि अपना *गर्व* खोने में उन्हें कम से कम दो महीने लगेंगे।

आरों और ऑपर बन्धुओं के सामने एक समस्या खड़ी हो गयी थी। शुरुआत में तो ब्लूम्सबरी के प्रति उनका बर्ताव बड़ा अन्यायपूर्ण रहता था, मगर बिक्री सप्ताह के ठीक पहले यह असामान्य रूप से नर्म हो गया। आरों की दुकानें सी.पी.बी. के सस्ते मालों की उसी तरह आदी हो गयी थीं, जैसा एक नशेड़ी कोकेन का आदी हो जाता है। उन्हें वह *चाहिए ही* होती है।

मैकहीथ कॉमर्शियल मे नहीं था जब ब्लूम्सबरी ने वहाँ फोन किया। वह आरों के सामने अपने इस दावे पर पूरी तरह अडिग था कि वह ब्लूम्सबरी से पूरी तरह अलग हो गया था और कई सप्ताह से सी.पी.बी. के दफ्तर में नहीं दाख़िल हुआ है। आरों और दोनों ऑपर, जो, चलते-चलते बता दें कि अब आरों से उतने मित्रवत नहीं रह गये थे, दोनों ही ब्लूम्सबरी को लेकर काफी व्याकुल थे, जो एक मोटी कोरोना सिगार के साथ बैठा जेनी के बारे में सोच रहा था। उसने उनके बीच 'मतभेदों' को ख़त्म करने के लिए हर सम्भव प्रयास करने का वायदा किया। उन्होंने भव्य बिक्री सप्ताह को न टालने का फैसला किया। ब्लूम्सबरी ने इन आशाओं से लुभाया कि सी.पी.बी. जल्दी ही आपूर्ति फिर से शुरू करने का तैयार हो जाएगी। उन्होंने शिष्टतापूर्वक हाथ मिलाकर एक-दूसरे विदा ली। दोनों पक्षों के अन्दर परस्पर *पुनर्मिलन* के प्रयासों में योगदान करने की भावना थी। उच्चतर कीमतों का ज़िक्र भी कर दिया गया था।

और तो और जैक्स ऑपर ने एक दूसरे सप्ताह के अन्त में वॉरबॉर्न किले पर मैकहीथ तक को न्यौता किया।

इस बार मैकहीथ पॉली को अपने साथ ले गया। पॉली के कपड़ों की अलमारी को औसत दर्जे का बनाए रखने के लिए फैनी को मनाने की अपनी पूरी ताक त झोंक देनी पड़ी थी। मैकहीथ उसे एक ड्यूक की पत्नी की तरह सजाना-सँवारना चाहता था; यह तो ब्लूम्सबरी की जेनी को साथ ले जाने की योजना से भी बदतर होता। मिसेज़ ऑपर ने बहुत सुन्दर ढंग से पॉली की अगवानी की।

पॉली ने न बहुत ज़्यादा बोला न बहुत कम। लेकिन उसे ताज्जुब हुआ कि

ऑपर परिवार खाते वक्त अपने होंठ इतनी ज़ोर से चठकारते हैं। जैक्स ऑपर के साथ उसे हमेशा की तरह सफलता मिली, जैसा उसे उस उम्र के भद्रजनों के साथ हरदम ही मिलती थी।

जब जैक्स ऑपर और मैकहीथ पार्क के किनारे टहल रहे थे, तो उस बैंकर ने उन पुराने गाँठदार ओक के पेड़ों की तरफ इशारा किया, जो अपनी एकाकी गरिमा में बढ़ रहे थे, और कहा :

'उनको देखो प्यारे मैकहीथ। वे एक-दूसरे से काफी अलग, अकेले-अकेले खड़े हैं। वे किस्मत वाले हैं, एह? जानते हो, मैं उन लोगों को पसन्द करता हूँ जो किस्मत वाले होते हैं। कोई उनके बारे में यह नहीं कहता कि वे अपने आपको सावधानी से लगाने में मालियों की मदद नहीं कर पाए। वे शानदार दिखते हैं।'

मैकहीथ उसके पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा और उसने किस्मत वाला होने का मन बना लिया।

बदकिस्मती से इस शान्तिपूर्ण दृश्य में एक बेमेल पर्चा आया। मैकहीथ को ब्राउन से एक ज़रूरी संदेश मिला जिसमें लिखा था कि वह अब अपने दोस्त की गिरफ्तारी के वारण्ट को लागू किये जाने के काम को और टाल नहीं सकता। यह पूछने पर कि उसे क्यों गिरफ्तार किया जाना है, मैकहीथ को यह जवाब मिला : बी.शॉप कीपर मैरी सॉयर की हत्या के सन्देह में।

10

मेरे अच्छे सज्जनो, शायद आज आप देख रहे हों मुझे गिलास धोते हुए
और शायद रोज़ सुबह देखें मुझे बिस्तर ठीक करते हुए।
मैं धन्यवाद करती हूँ आपको पैसे के लिए और आप सोचते हैं कि मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं
क्योंकि आपको नज़र आ रहा है सिर्फ मेरा फटा-पुराना फ्रॉक और यह गन्दा-पुराना होटल
और कोई आपको चेतावनी देने वाला भी नहीं है।
लेकिन एक बढ़िया-सी रात गोदी में हलचल होगी
और वे पूछेंगे : कौन मचा रहा है यह सारा उत्पात?
और वे देखेंगे मुझे अपने गिलास धोते वक्त मुस्कराता हुआ
और वे कहेंगे : अब वह किस पर मुस्करा रही है?
और एक जहाज़ आठ पालों वाला
और पचास बड़ी तोपों वाला
लंगर डालेगा घाट पर

कोई कहेगा : जाओ और सुखा लो अपने गिलास, बच्ची।
एक पेनी देगा मुझे वह बाकियों की तरह।
और वह पेनी स्वीकार ली जाएगी
और बिस्तर ठीक कर दिया जाएगा, बिल्कुल ठीक,
लेकिन उस रात कोई उस पर सोने नहीं जा रहा है
और कौन हूँ मैं सचमुच यह वह अभी भी नहीं भाँप पाए होंगे।
और उस शाम गोदी में होगा शोर-गुल
और वे पूछेंगे : कौन कर रहा है यह शोरगुल?
और वे देखेंगे मुझे खिड़की पर खड़ा देखते हुए
और कहेंगे : इतने निर्लज्ज ढंग से क्यों खीसें निपोरती है वह?
और वह जहाज़ आठ पालों वाला
और पचास विशाल तोपों वाला,
शहर पर गोले गिराएगा।

मेरे अच्छे भद्रजनो, वह आपके चेहरे से मुस्कराहट उड़ा देगा,
क्योंकि दीवारे चौड़ी दरारों के साथ खुल पड़ेंगी
और शहर भहरा कर मिट्टी में मिल जाएगा
लेकिन एक गन्दा पुराना होटल सही-सलामत खड़ा रहेगा
और वे पूछेंगे : कौन बड़ा रईस रहता है इसमें?
सारी रात होटल के बारे में हल्ला-गुल्ला होगा
और वे पूछेंगे : इसे इतनी सावधानी से क्यों रखा जाता है?
और फिर वे मुझे देखेंगे सुबह दरवाज़े से आते हुए
और वे कहेंगे : क्या! वह रहती है यहाँ?
और वह जहाज़ आठ पालों वाला
और पचास विशाल तोपों वाला
फैला देगा अपने मस्तूलों को

दोपहर में ज़मीन पर आ रहे होंगे सौ आदमी
और अन्धेरे कोनो में शिकार शुरू हो जाएगा
वे हर घर में घुसेंगे और सामने आने वाली हर आत्मा हो हर लेंगे
जकड़ देंगे उन्हें बेड़ियों में और सीधे मेरे पास लाएँगे
और पूछेंगे : इनमें से हम किनको दें मौत?
और उस दोपहर गोदी काफी बुरी हालत में होगी
जब वे पूछेंगे कि किसे मरना है।
और फिर वे सुनेंगे मेरा जवाब : सभी को!
जैसे-जैसे सिर गिरेंगे मैं चिल्लाऊँगी : हॉपला!
और वह जहाज़ आठ पालों वाला
और पचास विशाल तोपों वाला
मेरे साथ ओझल हो जाएगा

(रसोई घर की नौकरानी के सपने)

एक बार फिर 20 सितम्बर

मैरी सॉयर की बी.शॉप वॉटरलू ब्रिज के पास मलबेरी स्ट्रीट पर थी। जब भी फ्यूकूम्बी उससे मिलने जाता तो ज्यादातर बी.शॉप मालिकों की तरह वह उसे अपने दो बच्चों के साथ दुकान के पीछे के एक छोटे-से कमरे में रहता हुआ पाता। खुद दुकान ही एक तरह से सबसे बड़ी थी और उसे एक पर्दे से दो हिस्सों में बाँट रखा गया था। सड़क के सामने वाले दरवाज़े की तरफ वाले अगले हिस्से में

काउण्टर चलता था; परदे के पीछे दो कम उम्र लड़कियाँ बैठती थीं जो गैस लाइट की रोशनी में सिलाई करती रहती थीं। बैठकी में रोशनी पिछले अहाते की ओर खुलने वाली एक छोटी-सी खिड़की से आती थी। कार्यकक्ष के लिए इतनी रोशनी काफी नहीं थी, हालाँकि गर्माहट के लिए दोनों कमरों के बीच का दरवाज़ा हमेशा खुला छोड़ दिया जाता था।

मैरी की ज़िन्दगी ठीक नहीं चल रही थी। मैफेकिंग से उसका पति व्यवहारतः कुछ भी नहीं भेज रहा था। चूँकि उसका पति पहले भी एक शादी कर चुका था, इसलिए मैरी उसकी तनख्वाह का सिर्फ आधा हिस्सा पाती थी।

दुकान अच्छे-ख़ासे कर्जे में चल रही थी। मैक का चेक बहुत दिनों तक नहीं चल पाया था। मैरी कुछ-कुछ लापरवाह भी थी और कारोबार चलाने के बारे में तेरह-बाईस ही जानती थी। वह सिलाई वाली लड़कियों को नाम मात्र का ही कुछ देती थी, मगर फिर उनके काम का मुनाफा भी कोई ज़्यादा नहीं था। और मैरी उनको खुश करने को बेचैन रहती थी, क्योंकि जब भी वे अपने ब्रेड के टुकड़े और मार्जरिन (कृत्रिम मक्खन-अनु.) खाने को निकलतीं तो वह उन्हें कुछ खाने को दे देतीं जिसे वे काम करते हुए घण्टो चबाती रहतीं। मैरी हमेशा लोगों को खुश करना और अपनी दरियादिली के लिए सराहा जाना चाहती थी। वह पैसे उधार तक दिया करती थी।

उसकी दुकान की खिड़की के आर-पार कागज़ की एक पट्टी लगी थी; उस पर यह लिखा था : एक सैनिक की पत्नी यह दुकान चलाती है। वह ग्राहकों को मैफेकिंग में अपने पति के बारे में बताना पसन्द करती थी और उन्हें *दि टाइम्स* से काटी हुई सामरिक स्थितियों की स्केच दिखलाती जिसमें उस शहर की स्थिति को समझाया गया होता था जिसमें घेरा डाला गया था। अपने काउण्टर के पीछे वह बहुत सुन्दर दिखती थी, मगर दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि उसने जबसे अधोवस्त्रों का डिपार्टमेण्ट खोल दिया था, उसके सामान ज़्यादातर महिलाओं द्वारा खरीदे जाते थे, पुरुषों द्वारा नहीं। नहीं तो, शायद वह और बेहतर कारोबार कर सकती थी। लेकिन तब उसने किसी भी ग्राहक को जांघिया-बनियान के एक की बजाय दो जोड़े कभी नहीं दिये होते, क्योंकि वह भूल जाती या इसलिए क्योंकि वह तटस्थ थी। इस तरह की चीज़ ग्राहक के आत्मविश्वास को हिला देती है।

फ्यूकूम्बी शामों को कई बार आता, जब दुकान बन्द हो गयी होती थी, बैठता और बच्चों के सो जाने के बाद उसे सफाई करते हुए देखता।

उसने फ्यूकूम्बी को बताया कि खिड़की पर लगी घोषणा की वजह से उसके लिए काफी अप्रीतिकर स्थितियाँ पैदा हो गयी थीं। पड़ोस की दुकानों ने उससे पक्षपातपूर्ण प्रतियोगिता की शिकायत की थी। वे कहती थीं कि इस बात का उसकी दुकान में मोज़ों की शर्मनाक ढंग से कम कीमतों से कोई ताल्लुक नहीं है कि उसका पति एक सैनिक है। देशभक्तिपूर्ण कारणों के हिसाब से भी ऐसी नोटिसें असंगत हैं। यह अच्छा नहीं लगता कि अंग्रेज़ सैनिकों की पत्नियाँ जनता की सहानुभूति के लिए अपील करें। फ्यूकूम्बी बाद वाले तर्क से सहमत था।

मैक के विषय में उसे ज़्यादा कुछ नहीं कहना था। और वह पॉली के बारे में भी बिरले ही पूछती थी। आखिर उसने मैकहीथ को बरसों से नहीं के बराबर ही देखा था।

चूँकि उसने सिलाई वाली लड़कियों को रखा हुआ था, वह कुछ बेहतर काम कर ले रही थीं। व्यापार सुधर रहा था।

लेकिन तभी वे दिन आ गए जब आपूर्ति रुक गयी। उस जुटान के बाद ही वह बड़ी चिन्तित हो कर घर गयी थी जिसमें मैकहीथ ने आरों के चेन स्टोर्स के साथ बी.शॉप्स की एकता की घोषणा की थी। मगर इसका मतलब तो यही होता कि कीमतों को फिर नीचे करना होगा और सामान आरों के विशाल प्रतिष्ठान से भी कम कीमतों पर पहुँचाया जाएगा। वह लन्दन की आबादी की अभावग्रस्त स्थिति में कोई दिलचस्पी नहीं लेती थी।

मैक की भाषण कला की शक्तियों का उसके लिए लगभग वही मतलब था जो सर्दियों में बादलों की शक्ति का बर्फ के लिए होता है; मगर वास्तविकता में वह उसके लिए वैसे ही ख़तरा थी जैसे तूफान की विनाशकारी ताक   त समन्दर में जहाज़ के लिए होती है।

सभी दुकानों ने फौरन अपनी कीमतें घटा दीं। क्रेस्टन की दुकानें भी लागत दर से भी कम कीमतों पर अपने माल बेच रही थीं। और अब, पतझड़ में, ठीक उसी वक्त जब लोग ऊन और सूत खरीद रहे थे, ऊन और सूत की उसकी आपूर्ति समाप्त हो गयी! उसे एक छपा हुआ नोटिस प्राप्त हुआ जो यह बताता था कि वह अपने सामानों में किफायत करे क्योंकि जल्दी ही आपूर्ति के लिए कुछ नहीं बचने वाला है। बिल्कुल शुरू से ही, वह अपने होश पूरी तरह गवाँ बैठी।

प्रतिरोध के लिए अब उसमें ज़रा भी ताक   त नहीं बची रह गयी थी। उसने अपनी जीविका कमाना काफी कम उम्र में शुरू कर दिया था। अदक्ष हाथों द्वारा हल किये गये गर्भावस्था के कई व्यवधानों ने उसे काफी क्षति पहुँचाई थी।

सामान्य रूप से, अपने जीवन के तीसरे दशक में लोगों के सामने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ हिस्सा होता है; पर यदि वे झोपड़ियों में किसी बी.शॉप के मालिक हों तब ऐसा नहीं होता।

शुरुआत में उसने मैक को पकड़ने की कोशिश की। लेकिन जाहिरा तौर पर वह उस तक कभी नहीं पहुँच पाई। फैनी ने बार-बार उसका सामना किया। अन्त में उसने धमकी दी कि अगर मैक कम-से-कम उससे बात नहीं करता तो वह *रिफ्लेक्टर* के लोगों के पास जाएगी।

लेकिन मैक ने उससे बात करने से इंकार कर दिया, नतीजतन एक शाम वह फ्यूकूम्बी के साथ *रिफ्लेक्टर* के कार्यालय में गयी।

उन लोगों ने उसके साथ काफी अच्छा बर्ताव किया। उन्होंने बी.शॉप के राजा के विरुद्ध सामग्री के बदले में उसे पैसे देने का वादा किया। वे उसके सामानों के स्रोत के बारे में कुछ जानना चाहते थे। लेकिन वह इस बाबत कुछ नहीं जानती थी। माल बस सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड से आ जाता था। फिर उसने उन्हें बताया कि मैकहीथ ही *नाइफ* था। सम्पादक उसकी तरफ खुला मुँह लिए ताकते रहे और फिर ठहाका मारकर हँस पड़े। जब वह भ्रमित हो गयी और उसने उन्हें बताया कि उसी ने एडी ब्लैक को मारा था, तो उन्होने सौजन्यता से उसकी पीठ थपथपाई और रात्रि भोज के लिए उसे बाहर बुलाया।

वह निराश होकर चली गयी। फ्यूकूम्बी ने पीचम को हर बात बताई। यह वह पहली जानकारी थी जो वह उन्हें दे पाया था।

पीचम अपने छोटे-से अन्धेरे कमरे में अपना बॉलर हैट सिर पर पीछे की ओर झुकाए खड़े हुए और उन्होंने विचार-मग्न हो उस सैनिक को घूरा। उन्होंने अपने सेरेबरल (नर्क द्वारा का प्रहरी-अनु.) को बाहर भेज दिया था। लेकिन मैकहीथ अभी भी उनका दामाद था।

यह जानकारी एकदम फालतू थी। यह अफवाह कि मैकहीथ ही *नाइफ* है, पहले ही उसके भिखारियों द्वारा उस तक लायी जा चुकी थी। जाहिरा तौर पर वह इतना मूर्ख नहीं थे कि यह अफवाह लेकर पुलिस के पास चले जाएँ। वे बस उन पर हँस पड़े होते। यह आदमी मानवता के निम्नतर स्तर से उठा था, यह बात निश्चित रूप से सच थी। मगर वही *नाइफ* भी था-यह बात गले के नीचे उतारनी थोड़ा मुश्किल थी, पीचम के लिए भी। लेकिन अगर यह सच भी होता, तो भी ऐसी सूचना पूरी तरह अरुचिकर थी। दूसरे लोग ऐसे सत्यों की जाँच-परख में अपना वक्त बरबाद कर सकते थे जो *असम्भाव्य* हैं। सत्य खुद कुछ नहीं होता,

सम्भाव्यता सबकुछ होती है।

पीचम कहा करते थे, *'हर कोई जानता है कि पैसे वालों के अपराधों की रक्षा उनकी असम्भाव्यता से ज़्यादा और कोई चीज़ नहीं करती। केवल सियासत वाले पैसे हड़प सकते हैं क्योंकि जनता-जनार्दन को उनका भ्रष्टाचार औरों से इतना निर्मल और इतना उत्कृष्ट दिखता है जितना वह वास्तव में होते नहीं हैं। क्या किसी को उन्हें वैसे ही दिखलाना चाहिए जैसे वे हैं, यानी, पर्याप्त बेईमान, तब तो सारी दुनिया चिल्लाएगी : क्या बेईमान बदमाश है और इससे उनका इशारा असलियत दिखलाने वाले की तरफ होगा। मि.ग्लैड्स्टोन चाहते तो आसानी से वेस्टमिन्स्टर एबी में आग लगा देते और कह देते कि कंज़रवेटिव पार्टी वालों ने यह कारस्तानी की है। निश्चित रूप से, कोई इस पर विश्वास नहीं करता, क्योंकि कंज़रवेटिव पार्टी वाले मानते हैं कि जो भी वे पाना चाहते हैं उसे पाने के उनके पास कहीं बेहतर तरीके हैं; लेकिन यह भी उतना ही पक्का है कि किसी ने ग्लैड्स्टोन पर आरोप डालने का सपना तक नहीं देखा होता। कोई कैबीनेट मन्त्री पैराफिन के डब्बे लेकर नहीं घूमता है! ग़रीब लोग कहते हैं कि अमीर लोग दूसरे लोगों की जेबों से सीधे पैसे निकाल ही नहीं लेते हैं। बिल्कुल मानने वाली बात है। रॉथ्सचाइल्ड के बैंकों पर कब्ज़ा करने के तरीकों और एक साधारण बैंक डकैती में बहुत बड़ा फर्क है। सभी यह बात जानते हैं। लेकिन यह बात मैं अच्छी तरह से जान गया हूँ : जो बड़े अपराध कर लेते हैं केवल वही बिना पकड़ाए छोटे अपराध कर सकते हैं। और लोग इस बात का पूरा फ़ायदा उठाते हैं।'*

लेकिन और जानकारी निकालने के लिए फ्यूकूम्बी से मिसेज सॉयर से मिलने जाते रहने को कहा गया।

तो उन दिनों वह सैनिक उसके साथ काफी उठता-बैठता था। उससे बात करते हुए उसने कई शामें गुज़ारीं। उसे यह अपशकुनकारी अहसास था कि चीज़ें उसके नियंत्रण से बाहर जा रही है जो आगे चल कर उसे निश्चित तबाह कर देंगी।

मैकहीथ ने उससे उसकी थोड़ा-बहुत जमा पूँजी दुकान में ही रखने के लिए विवश कर दिया था और बता दिया था कि अब वह उसकी और मदद नहीं करेगा। उसे और माल नहीं मिल रहा है, यह बात अब उसे महत्वपूर्ण नहीं लग रही थी। पाने के लिए और कुछ था ही नहीं, और यही बात थी। लेकिन फिर मैकहीथ को उसकी मदद करनी चाहिए थी जब उसकी पूँजी ने जवाब दे दिया।

उसने कहा, 'वह आदमी जानता है कि वह मेरा गुनहगार है। कोई भी

किस्मत के ख़िलाफ़ नहीं जा सकता, फ्यूकूम्बी। मेरी किस्मत का नाम मि.मैकहीथ है जो ननहेड में रहता है। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि उसके थोबड़े पर अपने मुक्के बरसाने में कितना मज़ा आएगा। वह *बहुत* अच्छा होता। कम से कम मैं उसे उसकी नीचता पर दण्ड देने का सपना देखना पसन्द करूँगी। मैं हमेशा यही सपना देखना चाहती हूँ मगर कभी नहीं देखती। रात को मैं बहुत थकी हुई होती हूँ।'

एक दूसरे मौक़े पर उसने शिकायत की :

'मैं एक-एक कौड़ी गिनती हूँ। लोग कहते हैं कि मैं बहुत उधार देती हूँ। कि मैं बहुत दयालु हृदय हूँ। लेकिन यह एक अनुचित आरोप है। अगर मैं उधार न दूँ तो ग्राहक दूर ही रहते हैं। बाकी बड़ी दुकानों पर चले जाते हैं जहाँ ज़्यादा विकल्प होते हैं। और इसमें सबसे भयंकर बात तो यह है कि उसने क्लाइथ स्ट्रीट में नयी बी.शॉप खोल दी है। इसने मुझे तोड़ दिया है। यह मेरे लिए असहनीय है।'

वह हमेशा घूम-फिरकर इस नयी दुकान पर जा अटकती थी। उसे रात-दिन अपने सामने वही दिखायी पड़ती रहती थी। वह नदी में कूदने की बात ज़्यादा से ज़्यादा करती थी।

जब वह डब्बों को साफ़ करती और वापस शेल्फों पर लगाती तो फ्यूकूम्बी उसके साथ बैठा रहता था। सबसे ऊपर वाले शेल्फ तक पहुँचने के लिए हमेशा मैरी को काफी ज़ोर लगाना पड़ता था। वह एक जीर्ण-शीर्ण बेंत की सीट वाली कुर्सी पर बैठता था जिसके सिर्फ तीन पाये थे। उसकी पीठ और कुर्सी की पुश्त के बीच कुछ कार्डबोर्ड के डब्बे फंसे रहते थे। वह अपना छोटा-सा पाइप पीता रहता था जो उसने उस जगह से उठा लिया था जहाँ वह अपना पैर छोड़ आया था। और वह चिन्तामग्न होकर बात करता था।

उसने धीरे से कहा, *'तेरे अन्दर कोई प्रतिभा नहीं। तेरे पास बेचने को भी कुछ नहीं। जो थोड़ी-बहुत और छाती और जवान चमड़ी तेरे पास कभी थी वह जल्दी ही बिक गयी और तूने बहुत सस्ते मे बेच दिया उसे; या शायद उसकी उससे अधिक कीमत भी नहीं थी। आजकल हर चीज़ का बहुत कम दाम मिलता है। और कुछ बन्दे होते हैं जो प्रतिभा, एकदम बढ़िया, बिकाऊ माल से भरे-लदे होते हैं, इतना कि उनसे सम्भाले नहीं सम्भलता है। बस उनके चारों और चार दीवारें डालो, दुकान तैयार है। मगर तू वैसी नहीं है-मैं भी नहीं हूँ। लोग तुझे और मुझे समन्दर किनारे जाकर समुद्री नमक बेचता देखना पसन्द करते हैं। हमारे पास*

एकदम प्रतिभा नहीं है, उतनी भी नहीं जितनी मुर्गी के मुँह होते हैं। मुझे एक घर मिल गया है, मगर मैं हमेशा वहाँ नहीं रह सकता। वह एक वक्ती बन्दोबस्त ज़्यादा है। मैं तो अभी भी नहीं जानता कि वह मुझे वहाँ क्यों रखते हैं। मुझे हमेशा किसी ऐसी चीज़ की तलाश रहती है जो मुझे उनके लिए अपरिहार्य बना देगी। मैंने सोचा था कि शायद इसका कुत्तों से कोई लेना-देना हो। मगर उनकी देखभाल तो कोई भी कर सकता है। यह तो कोई ऐसी चीज़ होनी चाहिए जो उन्हें यह कहने को मजबूर कर दे : फ्यूकूम्बी कहाँ है? उसे जल्दी ढूँढो, हम यह काम उसके बिना नहीं कर सकते। सारा काम रुका हुआ है-शुक्र है भगवान का, वह रहा वह!-मैं ऐसी किसी चीज़ की तलाश में लम्बे समय से हूँ, लेकिन मुझे कोई चीज़ नहीं मिली है। अगर आपके पास प्रतिभा नहीं है तो, आपको कुछ और करना चाहिए। तो यह मामला कुछ यों है : अपने आपको किसी भी अन्य व्यक्ति से दोगुना और तिगुना काम का आदमी बनाइये।'

जब वह इतना बोल चुका होता तो वह कुर्सी में बेचैन हो जाता और उससे मैकहीथ के बारे मे पूछने लग जाता, जिसके बारे में या तो उसे और जानकारी हासिल करनी थी या अपनी नौकरी से हाथ धोना था।

लेकिन वह इससे मैरी को शक्की ही बना देता था और वह उसे कुछ नहीं बताती थी।

वह लगभग हमेशा ही सामान्य-सामान्य सी बात करती थी।

एक बार वह एक बूढ़ी औरत से मिली जो एक बी.शॉप चलाती थी और जिससे वह उस जुटान में मिली थी जिसमें मैकहीथ ने आरों के साथ गठजोड़ की घोषणा की थी। वे साथ-साथ एक ज्योतिषी के पास गये। वहाँ पर हुए तजुर्बों को उसने फ्यूकूम्बी को कई बार बताया। वह उन महँगे ज्योतिषियों में से एक नहीं था।

मैरी ने कहा, 'शायद वह महँगे वालों जितनी अच्छी नहीं थी।'

वह औरत चाल की पाँचवी मंज़िल पर रहती थी और रसोई घर में अपने पत्ते दिखलाती थी। वह उनकी तरफ बैठती तक नहीं थी। फिर, 'मानो उसने इसे अपने दिल से सीखा हो', वह 'पत्तों के एकदम सही न गिरने' के बारे में बड़बड़ाती थी; लेकिन शायद, वह कहती थी कि, उनके हाथों के साथ उसे ज़्यादा कामयाबी मिलेगी।

'आप एक मज़बूत व्यक्तित्व वाली हैं, जीवन के तूफानों से अनछुई,' उसने उस बूढ़ी औरत से कहा जो इसलिए आयी थी क्योंकि वह अपनी दुकान के बारे

में चिन्तित थी। 'आपको अपने तरीके से काम करने की आदत है। आपकी राशि मकर है। आप मज़बूती और ऊर्जा के साथ जीवन का सामना करती हैं और अन्त में आपकी ही विजय होगी। आपकी दो कमज़ोरियाँ हैं जिनपर आपको अवश्य ध्यान देना चाहिए। उस औरत से सावधान रहियेगा जिसका नाम 'ब' से शुरू होता है। उसपर बहुत भरोसा मत कीजिये; वह आपकी किस्मत के रास्ते में बाधा बन सकती है। अगले साल के जून महीने में आप अवश्य सावधान रहियेगा, क्योंकि तब सीरियस तुला राशि में प्रवेश करता है। यह आपके लिए अपशकुनकारी है। लेकिन मुझे यही एक ख़तरा दिखाई दे रहा है। और इसकी कीमत एक शिलिंग हो सकती है।'

मैरी इसे दिल से जानती थी और इस पर थोड़ा हँसी। लेकिन उसने भी अपनी किस्मत का लेखा पढ़वा लिया होता अगर वह बूढ़ी औरत पेट में पर्याप्त खाना न होने के चलते अचानक बीमार न पड़ गयी होती।

उसने कहा, 'जानना अच्छा रहता, और किसी दूसरी जगह कहाँ जान सकता है कोई?'

रिफ्लेक्टर के अपने असफल दौरे के बाद शुक्रवार की सुबह, मैरी फैनी से उसकी एंटीक्स की दुकान में मिलने गयी। फैनी उसे देखकर डर गयी और उसने पूरी सुबह उसे वहीं रखा क्योंकि उसने सोचा कि मैक आ रहा होगा। लेकिन मैक नहीं आया और वे दोनों ननहेड में मैक के घर गए, हालाँकि वह जानती थी कि मैक इसे कितना नापसन्द करेगा।

पॉली ने बड़े भले ढंग से उनकी अगवानी की। वह उन्हें सबसे बढ़िया बैठकी में ले गयी और फिर चाय बनाने के लिए भागकर किचन में गयी। उसने अपने चारों ओर एप्रन बाँधा और उन जवान घरेलू औरतों के बीच प्रचलित दौड़-धूप वाली सक्रियता के साथ सबकुछ तैयार किया, जिन्हें अभी भी सॉसपिन को सम्भालने में कुछ कामुक नज़र आता था।

फैनी ने मैरी को कारोबार का ज़िक्र करने से स्पष्ट रूप से मना कर दिया था। मैक का इंतज़ार करना कहीं बेहतर होता। लेकिन जैसे ही पीच चाय लेकर आयी मैरी की रुलाई फूट पड़ी। वह अपने आप पर और काबू रख पाने में अक्षम थी।

जो कुछ भी बताने को था, उसने लगभग हर चीज़ बता दी; लेकिन जाहिरा तौर पर उस आरोप के बारे में कुछ नहीं बताया जिसने हँसा-हँसाकर *रिफ्लेक्टर* के सम्पादकीय स्टाफ को मार ही डाला था। उसके प्रति मैक के कर्तव्यों के सभी

कारणो पर उसने बल दिया।

पॉली जिज्ञासा के साथ उसकी तरफ देख रही थी। वह अभी-भी चाय और वाय अपने हाथों में लिए खड़ी थी।

सारी स्थिति अप्रिय रूप से साफ़ थी; मैकहीथ ने उसे बार्गेन शॉप के फन्दे में फँसा लिया था और अब उसे उसकी किस्मत पर छोड़ रहा था। उससे उकता जाने के बाद फरसे से उसकी हत्या कर देना उसके प्रति ज़्यादा दयालुतापूर्ण होता।

जब पॉली जवाब में बोली तो उसके हाथ की क्रॉकरी हिली। उसने कुछ यूँ जवाब दियाः

जहाँ तक कारोबार की स्थिति का सवाल है, वह फैसला करने की स्थिति में नहीं थी। लेकिन उसके पति (मेरे पति) ने मैरी को बी.शॉप के फन्दे में फँसा लिया है, यह बात गले के नीचे उतारना उसके लिए मुश्किल लग रहा था। यह बात की वह उसे उसके भाग्य की दया पर छोड़ने जा रहा था, एक हास्यास्पद आरोप है और एक ऐसा आरोप जिसका, मैक की पत्नी के रूप में, उसने बुरा माना। मैरी बी.शॉप की कोई अकेली मालकिन नहीं थी। और निश्चित रूप से मैक सारे बी.शॉप मालिकों को 'उनकी किस्मत के भरोसे' नहीं छोड़ने जा रहा था। इसकी गुंजाइश नहीं के बराबर है। मगर जहाँ तक दूसरे आरोप का सवाल है, एक स्त्री से दूसरी स्त्री के रूप में, उसे यह कहना पड़ेगा, कि मैक ने शादी के पहले क्या किया या क्या नहीं किया (किया या नहीं किया) उसकी राय में उसका उससे कोई सरोकार नहीं। लेकिन उसे एक औरत होने के नाते यह भी कहना पड़ेगा कि, जब कोई औरत किसी आदमी से उलझती है तो वह ऐसा अपने जोखिम पर करती है।वह यह उम्मीद नहीं कर सकती कि वह आदमी बाकी ज़िन्दगी उसका भरण-पोषण करे। अगर ऐसा होने लगे तो हर आदमी के पास तीस का होने से पहले ही आधा दर्जन परिवार होंगे। जब आप खुद परेशानी में फँस जाते हैं तो हमेशा दूसरों पर आरोप नहीं मढ़ना चाहिए।

जब उसने इतना सबकुछ कह डाला तो उसने चाय का सामान कुछ ज़ोर से टेबल पर रख दिया और एक चुप्पी छा गयी। मैरी सॉयर ने रोना बन्द कर दिया था और अपने सामने बैठी उस नौजवान औरत की और चेहरे पर एक ख़ाली-सा भाव लिए देख रही थी। फैनी तक अचम्भित रह गयी थी। वह अचानक उठ कर खड़ी हो गयी।

इस बीच पॉली ने चाय का पॉट फिर से उठा लिया था और चाय ढालने लगी। अभी केतली उसके हाथ में ही थी कि दोनों औरतें चली गयीं।

फैनी मैरी को अपने साथ रोकना चाहती थी। लेकिन मैरी ने सिर झटका और पास से गुज़र रही एक ट्राम पर चढ़ गयी। उसके चेहरे पर एक अन्यमनस्क-सा भाव था, और फैनी ने ग़ौर किया कि वह ट्राम मलबेरी स्ट्रीट में स्थित उसकी दुकान की दिशा में नहीं जा रही थी। मैरी के विचार अब उतने साफ़ नहीं रह गये थे। उसके पास जीने के लिए सिर्फ सत्ताइस घण्टे (27) और बचे थे।

फैनी का बाकी दिन मैकहीथ को ढूँढने में गुज़रा। लेकिन अगली सुबह से पहले उसने मैकहीथ को नहीं देखा, जब वह हड़बड़ाया हुआ-सा उसकी दुकान पर उससे मिला। उसकी पत्नी ने उन दोनों के वहाँ आने के बारे में जो बताया था उससे वह बेहद परेशान और नाराज़ था। वह फैनी पर काफी बरसा और जानना चाहा कि वहाँ पर क्या हुआ। उसने भावहीन चेहरे के साथ मैकहीथ को सारी कहानी सुना दी। पॉली के व्यवहार से उसे इतना गुस्सा आया था कि वह शब्दों में उसे बयान नहीं कर सकती थी। उसे अचानक यह महसूस हुआ था कि वह एक नौकर से ज़्यादा और कुछ नहीं थी।

मैक के बर्ताव पर भी उसे काफी गुस्सा आया।

उसने मैक को क्लाइथ स्ट्रीट की नयी दुकान के बारे में बताया और बताया कि कैसे मैरी की सहनशीलता का प्याला बस छलकने वाला है। और किस तरह वह नदी-में-डूब-जाने की बात लगातार कर रही थी।

जब फैनी ने उससे कहा कि मैरी मलबेरी स्ट्रीट पर उसका इंतज़ार कर रही है तो मैक ने बस क्रुद्ध होकर उसे देखा। फिर वह तेज़ी से दुकान से बाहर निकल गया। आज सी.पी.बी. की सलाहकार कमेटी की दूसरी बैठक थी। उसे बैठक के पहले बहुत-से काम निपटाने थे।

कुछ घण्टे बाद उसने एक सन्देशवाहक का एक नोट के साथ मैरी के पास भेजा, यह कहते हुए कि वह वेस्ट इण्डिया घाट के पास वाले शराबखाने में सात बजे उसका इंतज़ार करे। शायद अचानक उसे लगा था कि वह बहुत कुछ जानती है।

जब फैनी पाँच बजे के करीब मलबेरी स्ट्रीट पहुँची तो दुकान को खुला पाकर उसे काफी राहत महसूस हुई। मैरी काउण्टर के पीछे बैठी थी और फैनी के अन्दर आने पर उसने सिर हिलाया। दुकान में एक लकड़ी के पैर वाला आदमी था।

ठीक छः बजे मैरी ने दुकान बन्द की, दर्ज़िनों को घर भेजा, और बच्चों को जल्दी से सुला दिया। फिर वह फ्यूकूम्बी के साथ वेस्ट इण्डिया घाट गयी। इस तरह उसके जीवन के अन्तिम घण्टों के दौरान भी कोई उसके साथ था।

रास्ते में उस सैनिक ने उससे बात करने का प्रयास किया। लेकिन वह बस 'हाँ-ना' में बात करती रही। शराबघर के बाहर उसने फ्यूकूम्बी को दूर भेज दिया। वह बेकार ही उसके साथ चला आया था। और वह सोचता था कि वह आराम से उसे कुछ ऐसा बता देती जो मि.पीचम के बाबत उसकी हालत में उसकी कुछ मदद कर देता।

दिन के इस वक्त बार लगभग ख़ाली ही था और मैरी सॉयर ने करीब दो घण्टे इन्तज़ार किया, जैसा कि बाद में भटियारे के बयान से साबित हो गया।

फिर, चूँकि मैकहीथ आया नहीं था, वह घाट की दिशा में चल पड़ी। जैसा कि उसने सराय के मालिक को बताया, वह उन महाशय से वहाँ मिलने की उम्मीद कर रही थी जिनसे वह वहाँ मिलने वाली थी। लेकिन वह किसी से नहीं टकरायी और फिर कभी नहीं टकरायी।

कुछ घण्टे बाद एक पुलिस वाले और दो गोदी मज़दूरों ने उसे पानी से खींचकर बाहर निकाला।

मि.पीचम को राह दिखी

चूँकि मैरी सॉयर ने फ्यूकूम्बी से लौटते वक्त बच्चों को देखते हुए जाने को कहा था और उसे आगे वाले दरवाज़े की चाभी दी थी, उसने रात मैरी के घर पर ही गुज़ारी। नहीं तो वह घर में नहीं आ पाती।

सुबह वे मैरी को घर ले आये। आस-पड़ोस से हर तरह के लोग फौरन दुकान में जमा हो गये। नतीजतन, सैनिक पर किसी का ध्यान नहीं गया और वह वहाँ से निकल जाने में कामयाब रहा। उन्होंने शरीर को काउण्टर पर रखा क्योंकि बिस्तर कार्डबोर्ड के डिब्बों से पटा हुआ था।

फ्यूकूम्बी के जरिये पीचम को काफी पहले मैरी सॉयर की मौत की ख़बर मिली और वह अगले कदम उठाने के काबिल हुआ। सबसे पहले उसने तथ्यों की जाँच-परख कर पक्का करने का काम किया।

उसने तीस से भी ज़्यादा भिखारियों को वेस्ट इण्डिया घाट, मलबेरी स्ट्रीट और फैनी क्राइस्लर की पुरानी चीज़ों की दुकान में और ननहेड में भेजा, जिन्होंने पूछताछ का काम किया।

मलबेरी स्ट्रीट में हुई पहली पुलिस जाँच के दौरान पीचम के कुछ आदमी

वाकई वहाँ मौजूद थे।

उसे मालूम हुआ कि कुछ जहाज़ी कुलियों ने, जो पिछली रात नौ बजे के आस-पास घाट पर मटरगश्ती कर रहे थे, एक औरत को पानी की तरफ तेज़ी-से जाते हुए देखा था। फ्यूकूम्बी बच्चों को फैनी क्राइस्लर के घर ले जाने के लिए मलबेरी स्ट्रीट गया और वह मैक का नोट अपने साथ लाया जिसे एक बच्चा चबा रहा था। दोपहर के बाद पीचम के लिए यह बात एकदम साफ़ थी कि यह आत्महत्या का मामला है।

एकदम पक्का कर लेने के लिए वह दो और दिनों तक मैकहीथ के मामलों की छानबीन करते रहे। जाहिरा तौर पर यह पता लगा पाना नामुमकिन था कि वारदात के वक्त मैकहीथ कहाँ था, मगर यह तय था कि उस शाम वह मैकहीथ से नहीं मिली थी। आरोप लगाने के लिए यह आधार पर्याप्त था।

यह एकदम पक्का कर लेना महत्वपूर्ण था कि मैकहीथ का वास्तव में मैरी सॉयर की मौत से कोई लेना-देना नहीं था क्योंकि दूसरी सूरत में अपराध के वक्त कहीं और होने का एक बिल्कुल सटीक बहाना उसके पास होगा। लेकिन किसी भी सूरत में एक बना-बनाया बहाना उसके पास नहीं होगा। और कहीं अन्यत्र होने का एक स्वाभाविक तर्क हमेशा एक गढ़े गये बहाने से कम विश्वस्नीय होता है।

सो पीचम ने अनाथ हो गये बच्चों की तरफ से एक बढ़िया वकील लगाया और सरकारी वकील को सामग्री सौंप दी। पीचम ऐसा कर सकते थे क्योंकि वह एक भारग्राही अफसर थे। वकील वैली मि.मैकहीथ के अन्यत्र होने के बहाने के सम्बन्ध में मि.पीचम के तर्कों से सहमत हो गये। उन्होंने कहा :

'जितना कुछ हम लोग जानते हैं, उसे ध्यान में रखते हुए मैं भी इस बात को असम्भव मानता हूँ कि आपके दामाद का इस मैरी सॉयर की मौत से कोई लेना-देना रहा होगा। इसलिए इस बात की गुंजाइश नहीं के बराबर है कि उसके पास बचने का कोई बहाना होगा। वह ऐसी कोई कहानी गढ़ेगा कि वह "एकरेस्तराँमेंबैठाथा" या "किसीथियेटरमेंगयाथा" या यह भी हो सकता है कि "औरतकोसंकटमेंनहींडालसकता"। आखिरी वाला आपके लिए आदर्श होगा अगर सारी चीज़ें ऐसे ही रहीं तो। ऐसा ही बहाना बनाए वह, एह? एक बचने के लिए बनाया गया तर्क तभी कारगर हो सकता है जब वह गढ़ा गया हो और गढ़ा तभी जाता है जब अपराध किया गया हो। सारे आपराधिक कामों का यह एक अभिन्न हिस्सा है। राजनीति को ही देखिये! मिसाल के लिए जब भी कोई

युद्ध शुरू किया जाता है, हमेशा कोई न कोई बहाना होता है। तख्तापलट की तो बात ही छोड़ दें! शिकार हमेशा ज़िम्मेदार होता है। हमलावर के पास कोई न कोई बहाना होता है!’

अभियोग में फँसाने की सामग्रियों में मृत औरत को भेजा गया मैकहीथ का हस्तलिखित नोट, भूतपूर्व सैनिक फ्यूकूम्बी की गवाही, और उन दो भिखारियों के बयान शामिल थे, जो यह गवाही देने को तैयार थे कि उन्होंने शनिवार की शाम नौ बजे वेस्ट इण्डिया घाट पर मैकहीथ को मैरी सॉयर के साथ देखा था।

मि. मैकहीथ लंदन नहीं छोड़ना चाहते

मैकहीथ अगले गुरुवार से पहले गिरफ्तार नहीं हो सका। जब उसे ब्राउन से ख़बर मिली तो उसने अपनी पत्नी को ईस्ट एण्ड के एक होटल में भेज दिया। ओ’हारा आकर उसे ले गया और उन्होंने रात का खाना साथ-साथ खाया। ओ’हारा ने कोई गड़बड़ टालने के लिए अपना सारा ज़ोर लगा दिया, लेकिन उसे सारे मामले की जानकारी ही काफी देर से मिली थी। ताज्जुब की बात तो यह थी कि फैनी क्राइस्लर ने कुछ नहीं कहा था जबकि उसने मैरी सॉयर की मौत के बारे में ज़रूर सुना होगा।

ओ’हारा ब्राउन से मिलने भी गया था। ब्राउन को काफी देर बाद यह समझ में आया था कि इस अपराध में शक की सुई मैकहीथ की तरफ है। पहली जाँच स्कॉटलैण्ड यार्ड के किसी बीचर नाम के आदमी ने चलायी थी। वह सचमुच एक खोजी कुत्ता ही था, जो एक बार शिकार पर निकल पड़ता, तो उसे रोका नहीं जा सकता। शुरुआत में बीचर ने इसे साफ़-साफ़ आत्महत्या का मामला माना था। और *रिफ्लेक्टर* के कुछ विशेष लेखों के साथ, जो मैकहीथ के उद्यमों के बारे मे बतलाते और बी.शॉप्स की निराशाजनक स्थितियों को बेनकाब करते थे, अन्य बी.शॉप्स में पूछताछ ने आत्महत्या के लिए बिल्कुल उपयुक्त प्रयोजन को सामने ला दिया। मगर पीचम के वैली के जरिये लगाए गए फटकार-भरे आरोप के बाद, बीचर ने मैरी सॉयर का एक अधूरा पत्र प्रस्तुत किया जो मृत औरत के शरीर पर मिला था। इस पत्र में मैरी ने स्वीकार किया था कि उसी ने अनाम रहते हुए *नाइफ* के विषय में कई अखबारी कतरने भेजी हैं और पूछा था कि क्या पत्र पाने वाला व्यक्ति उसके प्रति ‘थोड़ा-सा नर्म होना’ स्वीकार नहीं करेगा। वह पत्र कुछ

यूँ शुरू हुआ थाः 'प्यारे मैक'।

ओ'हारा भी वह समय एकदम ठीक-ठीक जानता था जब मैरी मरी होगीः नौ बजे के करीब। जब उसने यह बात मैकहीथ को बताई तो मैकहीथ ने उस पर एक तीखी नज़र डाली। नौ बजे एक बहुत दुर्भाग्यपूर्ण समय था। नौ बजे वह मैकहीथ सी.पी.बी. की बैठक में था। उस बैठक के निचोड़ का और सी.पी.बी. के परिसर में मैकहीथ की मौजूदगी का भी, कहीं भी सार्वजनिक रूप से ज़िक्र नहीं किया जा सकता था; क्योंकि अगर ऐसा किया जाता, तो उसके सारे लम्बे-चौड़े मंसूबे बरबाद हो जाते। ब्लूम्सबरी एक खुशमिजाज़ नौजवान मूर्ख था, मगर वह कभी किसी अदालत में झूठ नहीं बोलेगा और यह नहीं बोलेगा कि यह भद्रजन तो ब्रिज (ताश का एक खेल-अनु.) खेल रहे थे।

इसलिए मैकहीथ को, हर कीमत पर, ग़ायब हो जाना था और विदेश में छिपे रहना था; कम-से-कम तब तक जब तक कि ब्राउन जाँच को दबा नहीं देता या कॉमर्शियल बैंक के साथ कारोबार पूरा नहीं हो जाता। ओ'हारा की राय यह थी कि मैकहीथ ग्रूच और फैनी के साथ स्वीडन चला जाय, ताकि, उसी वक्त वह यहाँ 'ख़रीदारी' का काम व्यवस्थित कर सके।

जहाँ तक कारोबार का सम्बन्ध था, ओ'हारा पूर्ण नियंत्रण चाहता था, मगर मैकहीथ यह हक पॉली को देना चाहता था। वे थोड़ी देर तक झगड़े; फिर ओ'हारा चला गया।

पॉली ने निस्तेज चेहरे के साथ बिना कोई प्रश्न किये सारी बात सुनी थी। उसे यह बात समझ में आ गयी थी कि यह पूरा मामला मैकहीथ के ख़िलाफ़ उसके बाप की साज़िश थी। वह एकदम सहमत थी कि मैरी सॉयर मैक से बदला लेने की ख़ातिर पानी में कूद गयी होगी। लेकिन वह एकदम दृढ़संकल्प थी कि मैकहीथ को फैनी क्राइस्लर के साथ स्वीडन नहीं जाना चाहिए।

रात्रि भोज के बाद वह बिना कुछ बोले घर चली गयी। जब वह कपड़े उतार रही थी तो उसने फैनी के साथ मैक की प्रस्तावित यात्रा का गुस्से के साथ ज़िक्र किया। मैक हँसा और बिना शर्त उसने वायदा किया कि वह फैनी को लंदन में छोड़कर जाएगा। उसने कहा कि फैनी और ग्रूच के बीच कुछ चल रहा है। लेकिन पॉली को तब भी भरोसा नहीं हो रहा था। वह मैक की हर बात का यकीन करती थी-बशर्ते कि वह औरतों के बारे में न हो।

देर रात वह उठा और उसने पॉली के सुबकने की आवाज़ सुनी। वह थोड़ा अटक-अटक कर बोली और फिर, जब उसने मैक से नाराज़ न होने का वादा ले

लिया, तो उसने माना कि एक हफ्ते पहले उसे एक मूर्खतापूर्ण सपना आया था। उसने सपना देखा कि वह ओ'हारा के साथ सोई है। फिर उसकी सिसकियाँ फूट पड़ीं और उसने पूछा कि क्या यह बहुत अनैतिक है, जबकि मैक उसके बगल में लेटा रहा, स्तम्भित चुप्पी में जकड़ा हुआ।

पॉली ने कहा, 'देखा तुम मुझसे नाराज़ हो गये। मुझे तुमसे कुछ कहना ही नहीं चाहिए था; किसी को कुछ भी कभी नहीं कहना चाहिए। मुझे सपना आया तो मैं इसमें कुछ नहीं कर सकती। यह एकदम छोटा-सा था, और यह भी एकदम साफ़ नहीं था कि वह ओ'हारा ही था। बस मुझे ऐसा लगा, जब मैं उठी तब, और फिर मैं डर गयी थी। मैं तुम्हारे सिवा और किसी के साथ नहीं सो सकती। लेकिन मैं अपने सपनों का तो कुछ नहीं कर सकती। मैंने फौरन सोचा : मुझे क्या करना चाहिए? मैं मैक को बता दूँगी और फिर सबकुछ ठीक हो जाएगा। लेकिन फिर मैंने सोचा, तुम नहीं समझोगे और सोचोगे कि मैं ओ'हारा को पसन्द करती हूँ, और यह निश्चित रूप से सच नहीं है। वो मुझे बिल्कुल आकृष्ट नहीं करता। कहो न मैक, ठीक है न! मैं दुखी हूँ कि मुझे यह सपना आया था। अगर तुम्हें अभी चले नहीं जाना होता, तो मैंने इस बारे में कभी कुछ नहीं कहा होता। तब से, मुझे और मूर्खतापूर्ण सपने नहीं आये, सच्ची। या बस तुम्हारे बारे में आए!'

मैक लम्बे समय तक बिना जवाब दिये लेटा रहा। फिर, उसे राहत पहुँचाने के पॉली के तमाम प्रयासों पर कोई ध्यान न देते हुए और एक छड़ की तरह एकदम सख्त लेटे हुए उसने उससे छोटे, बेढंगे वाक्यों में, भर्रायी आवाज़ में सवाल पूछे। जब यह हुआ तो कैसा था। क्या यह बिस्तर पर हुआ। क्या वे ख़ास तौर से इसी के लिए बिस्तर पर गये थे। क्या उसने बस उसे आगोश में लिया या कुछ और भी हुआ था। क्या उसने ओ'हारा को प्रोत्साहित किया। क्या उसे फौरन पता चल गया कि यह ओ'हारा ही है। जब वह जान गयी तो उसने उसे रोका क्यों नहीं। क्या जब यह हुआ तो उसे मज़ा आया। अगर उसे कोई ख़ास मज़ा नहीं आया तो ओ'हारा को पहचान लेने पर उसने उसे रोका क्यों नहीं। 'कोई ख़ास मज़ा नहीं' आने से उसका मतलब है। वगैरा, वगैरा, तमाम बातें पूछता रहा, तब तक जब तक कि पॉली इतना थक नहीं गयी कि वह सोने लगी।

मगर आखिर में, जाहिरा तौर पर, उनकी सुलह हो गयी और मैकहीथ को अच्छा लगा जब उसने ज़ोरदार ढंग से उससे इस वायदे की माँग की कि वह फैनी के साथ नहीं जाएगा। उसने उसे अपने माँ-बाप के पास लौट जाने के लिए मनाने का प्रयास किया। उसका बाप उसके ख़िलाफ़ क्या योजना बना रहा है, इससे

वह उसको अवगत करा सकती थी। वह पूरी तरह सुलह के बाद सो गये।

अगली सुबह उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली। जब मैकहीथ गया तो एक बार फिर वह अपने भेड़ की खाल वाले दस्ताने और अपनी पुरानी गुप्ती साथ लेकर चल रहा था। उसकी ट्रेन देर शाम से पहले नहीं छूटने वाली थी, मगर अभी भी उसे बहुत से काम निपटाने थे। ओ'हारा के आदमी बहुत अच्छे मिजाज़ में नहीं थे, और अभी आरों या किसी एक ऑपर से मिलना बाकी था।

लेकिन पहले वह गॉन के पास गया जिसे उसने पीचम के साथ ही कोक्स के ख़िलाफ़ सामग्री दी थी। वह सामग्री अभी तक कहीं दिखलाई नहीं पड़ी थी। गॉन घर पर नहीं था। उन्होंने बताया कि वह 'कॉरेस्पॉण्डेण्ट' में है। वहाँ मैक ने कई पत्रकारों को गॉन के इर्द-गिर्द बैठा पाया, जो उससे घुड़दौड़ के गुर निकलवाने की कोशिश कर रहे थे। जब मैकहीथ ने प्रवेश किया, तो एक अजीब सन्नाटा पसर गया।

एक नौजवान ने कहा, अकृपालुता से नहीं, 'ओहो, हमारे मित्र मैकहीथ! मेरा ख़याल है आप अपनी गिरफ्तारी का विरोध करना चाहते हैं। क्या यह विरोध-प्रदर्शन यहाँ होगा। यह तो आपकी शालीनता होगी।'

गॉन जो बीच में बैठा मुस्करा रहा था और करीब आधा पाउण्ड चुइंगम चबा रहा था, समझ गया कि मैकहीथ को कुछ नहीं मालूम। उसने अपनी सीने वाली जेब से एक अखबार निकाला।

पुलिस पहले से ही मैकहीथ को खोज रही थी। उसका नाम और तस्वीर सुबह के सभी अखबारों में था। बीचर ने एक साक्षात्कार दिया था और मृत महिला के पास पाए गए अधूरे ख़त का हवाला भी दिया था।

गॉन ने मैकहीथ को बाँह से पकड़ा और उसे वहाँ से ले गया।

वे एक छोटे-से शराबघर में गये।

गॉन ने बताया कि कोक्स के ख़िलाफ़ जो सामग्री है वह दरअसल नौकाधिकरण के हेल के ख़िलाफ़ जाती है, जिनकी पत्नी से उसका सम्बन्ध है। एक या दो दिन में अभियान शुरू हो जाएगा।

वह यह बात छिपा गया कि वह उस सामग्री का, जिसे काफी भरोसे के साथ उसे दिया गया था, थोड़ी फायदेमन्द ब्लैकमेलिंग के लिए इस्तेमाल कर रहा है। इसकी कीमत मि.पीचम को अच्छी-खासी पड़ रही थी। फलस्वरूप, पॉली का दहेज बढ़ाया नहीं गया था।

मैकहीथ ने एक बार फिर उसके दिमाग में बैठा दिया कि वह कोई सामाजिक

बवेला नहीं बल्कि कोक्स और उसके सभी सहयोगियों को कारगर ढंग से धमकाना चाहता है। गॉन ने अपनी पूरी ताक त झोंक देने का वादा किया और एक साक्षात्कार का आग्रह किया।

उन्होंने साथ मिलकर एक साक्षात्कार गढ़ा।

वह शाम के अखबारों में आया। व्यापारी राजकुमार मैकहीथ ने पुलिस के आरोप पर काफी अचम्भाव व्यक्त किया।

वह साक्षात्कार कुछ यूँ था, 'मैं एक व्यापारी हूँ, कोई अपराधी नहीं। मेरी बी.शॉप्स की बेमिसाल कामयाबी ने मेरे दुश्मनों को इस साज़िश का सहारा लेने को प्रेरित किया है। मेरे तरीके इससे ज़्यादा सीधे-सादे हैं। मैं अपने प्रतिद्वंद्वियों को अपने ग्राहकों की सेवा में अनथक परिश्रम से हराने का प्रयास करता हूँ। मेरे ख़िलाफ़ सभी सन्देह अगले कुछ दिनों के दौरान इन्हें फैलाने वालों के ही सिर पर आ जाएँगे। मुझे उम्मीद है कि फुटकर व्यापार के मेरे किसी भी दोस्त को जिसका भला मेरी दिली चाहत है, मुझपर कोई सन्देह होगा। इस मैरी सॉयर से मैं व्यक्तिगत तौर पर शायद ही परिचित होऊँ। जहाँ तक मैं याद कर पा रहा हूँ, वह मलबेरी स्ट्रीट के आस-पास एक छोटी-सी बी.शॉप की मालकिन थी। मुझे उससे उतना ही लेना-देना था जितना एक दर्जन दूसरे बी.शॉप मालिकों से है। लगता है उसने खुदकुशी की है। मैं इस त्रासदी को उतनी ही गहराई से महसूस करता हूँ जितना कोई भी दूसरा व्यापारी करेगा। निराशा के लिए पर्याप्त कारण हैं; कारोबारी लोगों से बेहतर इस बात को कोई नहीं जानता। लगता है मिसेज सॉयर अपवादस्वरूप कमज़ोर हालत में थीं।'

इस साक्षात्कार के बाद मैकहीथ गाड़ी में सवार होकर कॉमर्शियल बैंक पहुँचा जहाँ वह हेनरी ऑपर से मिला।

सुबह के अखबारों ने मैक का नाम भड़कीली सुर्ख़ियों में छापा था और ऑपर उसे देखकर काफी अचम्भित लगा। उसने चुपचाप मैक की बात सुनी और फिर कहा : 'किसी हालत में तुम्हें जेल नहीं जाना चाहिए। चाहे तुम अपराधी हो या न हो, तुम्हें जेल नहीं होनी चाहिए। विदेश भाग जाओ! तुम अपना कारोबार वहाँ से भी चला सकते हो। सी.पी.बी. में तुम्हारे दोस्त हैं और हम भी तुम्हारे हितों की रक्षा कर सकते हैं, अगर तुम चाहो तो। लेकिन तुम फौरन नौ दो ग्यारह हो जाओ। आरों पहले ही यहाँ आया था। वह बेचैनी के मारे आपे से बाहर हो रहा है।'

मैकहीथ काफी विचारमग्न हो वहाँ से चला गया। उसे भगाने के लिए ऑपर

की हड़बड़ी ने उसे परेशान कर दिया। वह गाड़ी में सवार हो लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर पहुँचा। वह एक गन्दे-से सैलून में घुस गया। उस निचले कमरे में जिसमें ठण्डे धुँए की गन्ध भरी थी धन्धा एकदम चकाचक था। आधा लंदनिया अपराध जगत वहाँ जुटता था। लंदन में कोई और जगह ऐसी नहीं थी जहाँ इतने कम समय में कोई इतना कुछ सुन सके।

सारी कुर्सियाँ भरी हुई थीं। मैकहीथ उन लोगों के साथ एक बेंच पर बैठ गया जो प्रतीक्षा में थे। उनके सामने ज़मीन पर एक विशालकाय पीतल का कटौरा रखा था जिसमें सिगरेट के टुर्रे और चुइंगम थूके जाते थे।

मैकहीथ को कोई जाना-पहचाना चेहरा नज़र नहीं आया।

एक लम्बोतरे चेहरे वाला आदमी डैनिश गोदी पर होने वाली कस्टम स्मगलिंग के बारे में ज़ोर-ज़ोर से बात कर रहा था।

उसने शिकायत की, 'वे देश में कोई भी चीज़ सस्ती नहीं चाहते। ग़रीब आदमी को किसी भी हालत में अपने लिए हीरे ख़रीदने की आज़ादी नहीं दी जानी चाहिए। ये गन्दा है! आपके पास कोयला और आलू ज़रूर होना चाहिए। लेकिन अगर वे हीरों के मामले में भी हल्ला मचायें तो आप भी वैसे ही अलविदा कह सकते हैं।'

मैकहीथ ने वक्ता पर ग़ौर किया; वह एक मनमौजी आदमी था।

हज्जाम किसी आदमी की बेढंगी और विशालकाय मूर्ति जैसा था और उसका सिर छोटा-सा था, जिसका ऊपरी भाग हजामत की कला का बेमिसाल नमूना था। जब मैकहीथ बैठा तो उसने तेज़ी से एक तिरछी निगाह उसपर डाली। मैकहीथ के साथ उसका यह सौदा था कि जब भी वह आये तो वह बातचीत उस पर लेता आये, और अब यही उसने किया। पूरी दुकान सॉयर हत्या पर चर्चा करने लगी।

सामान्य विचार यही था कि उस महान व्यापारी का मैरी सॉयर की मौत से कोई सरोकार नहीं होगा।

उस स्मगलर ने कहा, मानो वह सब जानता हो, 'उसके जैसे आदमी ने यह काम नहीं किया होगा। उसके पास करने के लिए दूसरे काम हैं। आपको कोई अन्दाज़ा नहीं है कि दिन भर में उसे कितने सारे काम करने होते हैं। लोग-बाग कह रहे हैं कि वह उसको धमका रही थी। वह किस बात से उसे धमका सकती है? जो भी वह कहती, उसे फौरन पुलिस को उलझाने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाता!'

‘और मैंने सुना है कि उसके पास अपराध के वक्त कहीं और होने का बहाना नहीं है। क्या आप सोचते हैं कि हर उस आदमी को वह दस पाउण्ड दे रहा है जो यह कहता है कि उसने उस वक्त उसे वहाँ नहीं देखा? ऐसा वह नहीं कर सकता! वह बस यह देखना चाहता है कि जब वह गिरफ्तार हो रहा होगा तो सबसे तेज़ हँसी किसकी है। यही बात है!’

इस बात ने इस विषय को निश्शेष कर दिया।

मैकहीथ ने अपनी बारी आने का इंतज़ार नहीं किया। बगल में अपनी मोटी छड़ी दबाए वह वहाँ से निकल गया। दो या तीन सँकरी गलियाँ पार करने के बाद वह एक टूटे-फूटे, एकमंज़िला मकान के आगे रुक गया, जिस पर एक कोयला व्यापारी का कब्ज़ा था। दरवाज़े के बगल में एक कार्डबोर्ड टंगा था जिसपर कीमतें लिखी हुई थीं।

मैकहीथ ने पत्थर वाले कोयले के आगे ‘23’संख्या देखी। दरवाज़े को अपनी छड़ी से खटखटाने के बाद वह एक ‘23’ नंबर वाले घर में घुस गया। पत्थर वाले कोयले की कीमत 23 कभी-कभी 27 या 29 तक होती है, यह इस पर निर्भर करता था कि उस वक्त गिरोह का मुख्यालय कहाँ है। मैकहीथ ने एक बार ओ’हारा से कहा था कि कोयले की असली कीमतें कुछ ख़ास हालातों पर निर्भर करती हैं, जिनका कोयले से कोई लेना-देना नहीं है। और इसके अलावा, वह कोयला व्यापारी पत्थर वाला कोयला बेचता ही नहीं था।

मैकहीथ ने गूँजते हुए कदमों के साथ छप्परों से भरे दो बड़े अहातों को पार किया। वह तीसरे अहाते में घुसा और भूतल पर स्थित एक कार्यालय में घुस गया जहाँ बत्तियाँ जल रही थीं।

ग्रूच और फादर अपने बगल में बियर की बोतलें रखे एक महोगनी की टेबल पर बैठे थे, और ग्रूच एक चुस्त-दुरुस्ट ढंग से कपड़े पहने एक नौजवान लड़की से पत्र लिखवा रहा था। अगले कमरे में पैकिंग के डिब्बों पर काँटियाँ ठोंकी जा रही थीं।

मुखिया के आगमन पर ग्रूच खड़ा हो गया। फादर बैठा रहा।

फादर ने कटुता से कहा, ‘बीच-बीच में कुछ समय पर हाल-चाल ले लेना अच्छा होता है, यहाँ कोई काम नहीं है। सिवाय परेशानी और असन्तोष के कुछ भी नहीं है।’

बिना कोई जवाब दिये, मैकहीथ ने अनगढ़ ढंग से बने ताखे पर से एक मोटा-सा बहीखाते का पन्ना उठाया और एक एम्पायर कुर्सी के हत्थे पर बैठ

गया। उस कुर्सी ने इससे अच्छे दिन और बेहतर कम्पनी को देखा था। शहर में सी.पी.बी. की आधिकारिक जगहें थीं। यहाँ उसके गोदाम थे। दोनों के बीच में बहुत घुमावदार रास्ते से होने वाले संचार के अलावा कोई आवाजाही नहीं होती थी।

जब तक फादर टेबल पर बैठा रहा मैकहीथ ने बात करने से इंकार कर दिया। इसलिए ग्रूच ने ही बोलना शुरू किया।

खुद पर थोप ली गयी इस निष्क्रियता के बेहद दुर्भाग्यपूर्ण नतीजे सामने आ रहे थे। वे छप्पर अभी भी आंशिक रूप से सामानों से भरे थे। ओ'हारा ने तब तक कर्मचारियों को अपने से काम करने की इजाज़त दे दी थी जब तक कि कम्पनी को फिर से तेज़ आपूर्ति की ज़रूरत नहीं पड़ती। लेकिन उसने औज़ार उनको नहीं दिये थे। वे कम्पनी की सम्पत्ति थे। अपने पुराने, बाबा आदम के ज़माने के औज़ारों के साथ ओ'हारा के विशेषज्ञ अब और काम नहीं करेंगे या नहीं कर सकते थे। और दुकान में सेंध लगाने के लिए, कम-से-कम ठेले तो ज़रूरी थे ही। और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि साथ काम करने के लिए उनके पास तालमेल के साथ बनी योजनाओं की कमी थी। नतीजतन सारे आदमी मजबूरन निष्क्रिय हो गये थे। वे बैठे रहते और झगड़ते रहते।

मैकहीथ हँसा।

वह एकदम से बोल पड़ा, 'मैंने सोचा कि एक तनख्वाहशुदा सुरक्षा की ज़िन्दगी के लिए वे कुछ ज़्यादा ही अच्छे हैं। वे फिर से आत्मनिर्भर होना चाहते थे, बेरोक और आज़ाद। वे हमेशा बदलाव लाना चाहते रहते हैं और जब उन्हें उनकी मनचाही चीज़ दे दी जाती है, तब भी वे कभी अचम्भित नहीं होते। जब भी *मुझे* अपनी मनचाही चीज़ मिल जाती है तब मैं हमेशा सबसे बुरी चीज़ की अपेक्षा करता हूँ।'

'वे बिल्कुल ठीक रहते अगर उनके पास उनके औज़ार रहते,' फादर ने रूखे स्वर में कहा।

'हाँ, अगर होते तो,' मैकहीथ्ञ ने कहा।

फादर ने फिर हमला किया :

'क्वायट हमसे हमारे नये बरमें ख़रीदना चाहता है। वह कह रहा है कि इसके लिए उसके पास पर्याप्त पैसा है और उसके सिवा उन बरमों को और कोई इस्तेमाल नहीं कर सकता।'

मैकहीथ ने गुस्से में आकर कहा, 'मैं अपना कोई भी औज़ार नहीं बेचूँगा

और मेरी टेबलें बैठने के लिए नहीं बनी हैं।'

उसने साफ़-सुथरे ढंग से कार्डबोर्ड की चादर पर सारणीबद्ध उठाई, और सिर हिलाकर उस लड़की को बाहर भेज दिया।

'छप्पर अभी तक भरे क्यों पड़े हैं? हर चीज़ 23 तक ख़त्म कर देने की बात तय हुई थी।'

ग्रूच ने फादर की तरफ देखा जो बड़बड़ाते हुए खड़ा हो गया था।

उसने फादर पर नज़र गड़ाए हुए ही कहा, 'ओ'हारा ने हमें इसके बारे में कुछ नहीं बताया।'

मैकहीथ अपने अचम्भे को छिपा गया। वह वक्त लेने के लिए एक सूची के पन्ने पलटने लगा।

फिर उसने शान्त स्वर में बोलना शुरू किया:

'29 वाले छप्पर को हर कीमत पर निकाल देना है। मुमकिन है कि ओ'हारा को बहुत जल्दी ही दिखलाना भी पड़े कि वह जगह ख़ाली है।'

'इन चीज़ों को जाना कहाँ है? इनमें से ज़्यादातर तम्बाकू और हजामत के सामान हैं। इस ढेर को कुछ समय तक गोदाम में रखना पड़ेगा, यह अभी बहुत नया है। बर्मिंघम वाला सामान भी यहाँ है। अखबार में अभी भी उन पर लम्बे-चौड़े लेख लिखे जा रहे हैं। और फिर चमड़ा और ऊन है; बी.शॉप्स उनसे काम चला सकती हैं।'

'इन सबसे छुटकारा पाना है। इसमें से कुछ भी बेचना नहीं है। बेहतर होगा कि तुम इसे जला दो। छप्परों का बीमा है।'

ग्रूच को गहरा सदमा लगा।

'लेकिन क्या लड़के इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते? अगर यह सब उन्हें जलाना पड़ा तो हंगामा हो जाएगा। आख़िर उन्होंने ही इसे इकट्ठा किया है।'

मैकहीथ इस बहस से एकदम ऊब गया था।

'मेरा मानना है कि इसके लिए उन्हें पैसे दे दिये गये हैं। और इस माल से पिण्ड छुड़ाने के उनके काम में मैं उन्हें घण्टे के हिसाब से मेहनताना दूँगा। मैं नहीं चाहता कि इसमें एक भी माल बिके। और उन्हें अपना तम्बाकू खुद ख़रीदना चाहिए बी.शॉप्स से, अगर उन्हें पसन्द हो तो। और एक और बात : सभी कागज़ात पर मेरी पत्नी के हस्ताक्षर होंगे, ओ'हारा के नहीं। समझ गये?'

वह खड़ा हो गया और अपने दस्ताने चढ़ाने लगा। लेकिन ग्रूच ने उसे रोका।

'हनीमेकर यहाँ आता रहता है। वह कहता है कि वह हर तरह का काम करने

को तैयार है। सेफ्टी तालों का कारोबार पिट गया है।'

'क्या वह पर्याप्त सुरक्षित नहीं था, या कुछ ज़्यादा ही सुरक्षित था?'

'ओह, वह सब तो ठीक ही था। मगर कारखाने ने पेटेण्ट पर उसे ठग लिया है।'

मैकहीथ फिर हँसा। अपने दिनों में, हनीमेकर अपने धन्धे की शान था, अव्वल दर्ज़े का सेंधमार। मगर जब वह शारीरिक रूप से कमज़ोर पडने लगा-उन दिनों खेल अभी तक फैशन नहीं बना था-उसने आविष्कारक का काम अपना लिया और एक सेफ्टी ताले का आविष्कार किया। उसने अपना सारा अनुभव उस ताले मे उड़ेल दिया था, अध्ययन और उद्यम से भरे जीवन का समृद्ध अनुभव। और अब, उस प्रसिद्ध ताले की फैक्ट्री में, जिसे उसने अपने ताले की पेशकश की थी, उसे अपना भी उस्ताद मिल गया था।

'वह एक बी.शॉप ले सकता है,' मैकहीथ ने कहा और खींसें निपोरता चला गया।

मगर वह कोई प्रसन्नता का अनुभव नहीं कर रहा था।

उसके आदेशों का पालन नहीं हुआ था। अब किसी भी दिन, आरों के दिमाग में खुद जाकर गोदामों की जाँच करने का विचार आ सकता था। और फैनी को, यह सोचते हुए कि योजना के मुताबिक माल साफ़ कर दिया गया होगा, उसे इंकार करने की कोई वजह नहीं समझ में आएगी; जबकि सारे समय गोदाम माल से ठसाठस भरे थे।

जब वह सड़क पर पहुँचा तो मैकहीथ ने पल भर को सोचा कि वह सीधे फैनी क्राइस्लर के पास जाए या टनब्रिज में मिसेज लेक्सर के पास। आज उसका गुरुवार था।

फिर उसे लगा कि फैनी से तो वह स्टेशन पर मिल ही लेगा जब वह उसे विदा करने आएगी, और टनब्रिज में शायद उसे ब्राउन भी मिल जाए। उसकी तरह, ब्राउन भी वहाँ हर गुरुवार को होता था। आम तौर पर वे साथ-साथ ड्रॉट्स की शृंखला खेला करते थे।

मैकहीथ की नज़र में मिसेज लेक्सर के घर की महिलाओं के साथ उसके सम्बन्ध को एक बहाने की ज़रूरत थी, हालाँकि उसके धन्धे का विशेष स्वभाव अपने आप में एक उपयुक्त वजह थी। यहाँ, कहीं और से बेहतर ढंग से, वह अपने गिरोह के निजी मामलों के बारे में जानकारी जुटा सकता था। इस तरह आकस्मिक आमोद-प्रमोद के उन उद्देश्यों के लिए वह शुद्ध रूप से कारोबारी

सम्बन्धों का इस्तेमाल करता था, जिसके नियंत्रण का काम उसे एक कुँवारे के तौर पर सौंपा जाता था। अपने जीवन के इस अन्तरंग पहलू के बारे में वह अक्सर कहता था कि वह टनब्रिज कॉफीघर को होने वाले अपने नियमित और सख़्त उसूली दौरों को बहुत ऊँचा करके आँकता है क्योंकि ये वे *आदतें* हैं, जिन्हें पैदा करना और पालना बुर्जुआ अस्तित्व का शायद सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। कुछ जवानी की नासमझियों के बाद, मैकहीथ ने अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति का काम उस दिशा में करना शुरू कर दिया जहाँ वह इसके तार या तो ऐशो-आराम के साथ या फिर व्यापार के साथ जोड़ सकता था। यानी उन औरतों के साथ उसने यह काम किया जो एकदम कंगाल नहीं थीं या जिनके साथ उसके कारोबारी सम्बन्ध थे।

मैकहीथ पूरी तरह समझता था कि उसे अपनी शादी से अपने संगठन में खरीदने वालों के पक्ष के बीच काफी नुकसान पहुँचा था। मैरी सॉयर की मौत ने भी कुछ ख़ास लोगों को नाराज़ कर दिया था। वे अब शायद साथ बैठे हुए थे और कह रहे थे : मैक अमीर हो रहा है। वह समझता है कि वह सातवें आसमान पर है।

ऐसे लोग बिरले ही थे जो ईमानदारी से कसम खाकर कह सकते थे कि वह हमेशा से मैकहीथ ही कहलाता रहा है; लेकिन ऐसा भी कोई नहीं था जो यह साबित कर पाता कि उसका फलाँ नाम था और वह फलाँ स्कूल में थे, कि वह गुण्डा था या पुजारी, कि वह फलाँ मकान में रहता था। मगर हर दिन यह अफवाह उड़ती रह सकती थी कि वह एक साधारण सम्माननीय नागरिक है, और उस आरामदायक झुटपुटे को फिर से लाने के लिए एक महँगे और ख़तरनाक कत्ले-आम की ज़रूरत पड़ती जिसमें एक आदमी मोटा और समृद्ध बन सकता है। और इस काम के लिए तो वह दरअसल कुछ ज़्यादा ही मोटा हो गया था; वह अब मानसिक श्रम के लिए ज़्यादा उपयुक्त था।

तो वह सूचना की तलाश में और ब्राउन से मिलने टनब्रिज गया।

वह सीधे सबसे नीचे वाले कमरों में नहीं गया, बल्कि ऊपर जाने वाली काँपती सीढ़ियों से चढ़ा और किचन में घुस गया। कुछ लड़कियाँ वहाँ बैठी थीं और कॉफी पी रही थीं। घाघरा पहने एक मोटी औरत कपड़े इस्त्री कर रही थी। खिड़की की दूसरी और हाल्मा की बाज़ी चल रही थी। एक पतली, चपटी नाक वाली लड़की मोज़ों के अम्बार को रफू कर रही थी। उन सबने ढीले-ढाले कपड़े पहन रखे थे; लेकिन बस उनमें से एक ने एक फूलों वाली रात की पोशाक पहन

रखी थी।

जब मैकहीथ अन्दर आया तो अचम्भे से एक सामान्य बड़बड़ाहट हुई। उन सबने अखबार पढ़ा था, और गॉन के साथ साक्षात्कार इस्त्री वाले पटरे पर पड़ा था। इस बात ने कि, वह किसी भी दूसरे गुरुवार की तरह इस बार भी आया है, सभी को काफी प्रभावित किया।

ब्राउन अभी तक वहाँ नहीं आया था।

मैकहीथ ने अपनी कॉफी ली और अखबार के लिए अपना हाथ फैलाया।

पढ़ते हुए वह बोला, 'आज शाम मैं जा रहा हूँ। मैंने मन ही मन सोचाः क्या मज़ाकिया बात है कि आज गुरुवार है। बहुत ख़तरनाक होता है जब आदमी आदतों का गुलाम बन जाता है। लेकिन मैं अपनी सबसे पुरानी आदत नहीं छोड़ सकता। नहीं तो मैं दोपहर को ही चला गया होता। ब्राउन कहाँ रह गया।'

किसी कमरे में घण्टी बजी। उस मोटी औरत ने इस्त्री को स्टैण्ड पर रखा, एक सूती खोल डाला, और ग्राहक को देखने चली गयी। पाँच मिनट बाद वह वापस आयी, अपनी नम उंगलियों से इस्त्री को परखा और काम में लग गयी।

'*तुमने* सॉयर का काम नहीं तमाम किया,' उसने कहा-तिरस्कार के साथ, ऐसा मैक को लगा।

'हैं?' उसने कहा और उस मोटी औरत की तरफ देखा।

'हमने तो बस यह सोचा कि ऐसे काम के लिए अभी तुम बहुत भले हो।'

मैक ने दिलचस्पी के साथ पूछा, 'किसने ऐसा सोचा?'

उस मोटी औरत ने उसे शान्त किया :

'धीरज धरो, मैक। तुम ही एक नहीं हो जिसके बारे में बात होती है।'

मैक को माहौल की बहुत अच्छी समझ थी। यहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ ज़रूर थी। मैक को अचानक एक प्रतिकूलता के अहसास ने जकड़ लिया।

उस गन्दे किचन में बैठकर उस औरत को इस्त्री करता हुआ देखते हुए, मैक ने अपनी हालत की इतनी सम्पूर्णता में समीक्षा की जितनी उसने लम्बे समय से नहीं की थी।

वह ज़मीन जिस पर वह हमेशा से खड़ा रहा था और लड़ा था, उसके पैरों के नीचे से खिसक रही थी। वे मूर्ख जो उसके लिए ख़रीदारी करते थे लम्बे समय से एक बुद्धिमान नेतृत्व के आगे झुकने को तैयार नहीं थे। पिछले हफ्तों के दौरान घटीं तमाम छोटी-छोटी बातें जिस पर उसने ध्यान नहीं दिया था, अचानक उसके दिमाग में आने लगीं। कई सुस्पष्ट और सुविचारित आदेशों पर सख़्ती से अमल

नहीं हुआ था; बाद में इस उपेक्षा को संगठन के प्रमुखों द्वारा उससे छिपाया गया था। और ख़ास तौर पर महान माल आपूर्ति रोक के बाद से उसने ग्रूच से कर्मचारियों के असन्तोष के बारे में ढेर सारी बातें सुनी थीं। ये मूर्ख बड़े पैमाने पर होने वाली कार्रवाइयों को नहीं समझ सकते।

और अब उसे ये मालूम होना नसीब था कि ओ'हारा ने सीधे-सीधे उसके सबसे महत्वपूर्ण आदेशों को अनदेखा कर दिया था!

पिछले कुछ समय से ओ'हारा का बर्ताव बेहद असन्तोषजनक रहा था। आज वह पूर्ण नियंत्रण चाहता था। जब पूर्ण नियंत्रण पॉली को दे दिया गया तो उसने बहुत देर तक बहस नहीं की। क्यों नहीं की?

एकदम अचानक अविश्वास की एक प्रबल धारा उसे बहा ले गयी।

पॉली! उसने सोचा। पॉली और ओ'हारा के बीच क्या चल रहा है? अब कारोबार की लगाम उसके हाथ में है तो इसके साथ वह क्या करेगी? उसी वक्त वह यह भी समझ गया कि थेम्स के किनारे हुए पिकनिक से लौटते समय हुई घटना ने उसे इतना परेशान क्यों कर दिया था।

उसने कटुता से कहा, *'एक औरत जो इतनी मामूली-सी जान-पहचान में उस चीज़ की इजाज़त दे दे, वह कभी भी किसी आदमी के लिए एक अच्छी पत्नी नहीं बन सकती। वह कुछ ज़्यादा ही कामुक है। और यह सिर्फ एक प्रेम की कमी नहीं है बल्कि यह-ऐसा लगता है-एक कारोबारी कमी भी है। उस शक्ति के साथ आखिर वह क्या करेगी जो मैंने उसे भरोसे के साथ सौंपी है, जब वह अपने निज के बारे में ही संशयहीन नहीं है? यहीं पर एक औरत की वफ़ादारी एक ज़्यादा गहरा अर्थ ग्रहण कर लेती है!'*

कितनी जल्दी दोनों उसके वहाँ से जाने के बारे में सहमत हो गये थे! कोई ऐसी बात नहीं हुई कि 'मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी'। वह बहुत अक्लमन्द थी। वह पता करने का एक अच्छा तरीका था!

मैकहीथ कड़वाहट से भरा उठ खड़ा हुआ और कार्यालय में चला गया। वहाँ अच्छे-खासे बड़े कमरे थे जहाँ ख़ाली फर्नीचर राइटिंग पैड सहित छोटी टेबलें और साधारण सोफे थे। वहाँ बिना सोफे वाले कमरे भी थे, और फिर हरे रंग के सोख्ता कागज़ सहित टेबलों वाला एक कमरा था। यह इस घर की सुख-सुविधाओं में से एक था कि कोई ग्राहक अपने पत्र-व्यवहार का काम भी यहाँ से कर सकता था। वहाँ की सभी लड़कियाँ माहिर शॉर्टहैण्ड टाइपिस्ट थीं।

इस घर को सबसे ज़्यादा व्यापारियों से संरक्षण प्राप्त था।

मैकहीथ कुछ पत्र लिखवाना पसन्द करता; मगर अपने पत्र-व्यवहार के लिए वह सिर्फ जेनी पर भरोसा करता था और वह उसके तरीके जानती थी। अगर ज़रूरत पड़ती तो वह सिर्फ कुछ टिप्पणियों के आधार पर पत्र लिख सकती थी।

लेकिन जेनी वहाँ नहीं थी। वह ब्लूम्सबरी के साथ समुद्र-तट पर थी। ऐसा नहीं लगता था कि इस दुनिया में उसकी उन्नति पर कोई नाराज़ होगा।

मैकहीथ ने दीवार पर लगे एक छोटे-से शटर को उठाया और अगले कमरे में किसी को चिट्ठी लिखवाते हुए सुना।

'...और इसलिए हम आपके नज़रिये को समझ पाने में असमर्थ हैं। या तो और 85 1/2 की दर पर, सांतों (अजवाइन का सूखा फल-अनु.) की एंटवर्प की मुफ्त आपूर्ति करें, *या* आप अत्यधिक कीमत को, अत्यधिक के नीचे रेखा खींच दो, कम करें और चुंगी से हम खुद निपट लेंगे।'

मैकहीथ उदास होकर किचन में गया और फिर बैठ गया।

वह अभी भी ब्राउन का इंतज़ार कर रहा था। उससे बातचीत के बाद ही यह तय होगा कि उसे लंदन छोड़ना पड़ेगा या नहीं।उसके भागने के लिए हर चीज़ बिल्कुल तैयार थी। ग्रूच स्टेशन पर उसका इंतज़ार कर रहा होगा, शायद फैनी के साथ। मगर आधा घण्टा बीत गया; बाहर अन्धेरा हो गया और सड़क के लैम्प जल गये; ग्राहक धीरे-धीरे आने लगे; और ब्राउन अभी तक नहीं आया। किसी ने मैकहीथ पर ध्यान नहीं दिया। वह किचन में बैठा रहा और ऊँघने लगा।

जैसे हालात थे, वह उनमें जा नहीं सकता था।

सबसे पहले उसे सी.पी.बी. पर अपने पूर्ण नियंत्रण को बहाल करना था और फिर उसका बोरिया-बिस्तर समेट देना था। क्या जिन्दगी है, जब एक आदमी जिसके पीछे पुलिस पड़ी है, शान्ति नहीं प्राप्त कर सकता!

और जिस कदर वह अयोग्य मूर्खों से घिरा हुआ था, वह अपने भारी कारोबारी लेन-देन की देख-रेख विदेश से बेहतर जेल से कर सकता था।

सम्माननीयता की एक नैसर्गिक चाहत ने उसे वशीभूत कर दिया। बड़ा कारोबार चलाने वाले आदमी के लिए थोड़ी ईमानदारी और सच्चाई और यहाँ तक कि थोड़ा-सी भरोसेमन्दी भी लाज़िमी होती है। नहीं तो, अगर कोई ईमानदारी के बिना भी अपना काम चला लेता, तो लोग ईमानदारी को इतना कीमती क्यों मानते? आख़िर, पूरा सामाजिक ढाँचा ही इस पर टिका हुआ है। एक इंसान के लिए ज़रूरी है कि वह अपने कर्मचारियों से जो कुछ भी निचोड़ सकता है, निचोड़ ले और फिर शालीन, सम्माननीय लेन-देन का काम हाथ में ले।

अगर वह अपने साथियों पर भी विश्वास नहीं कर सकता तो उससे अपने कारोबार पर पूरा ध्यान लगाने की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

आख़िरकार, सात बजे ब्राउन आया।

यह हमेशा से ही उनके मिलने के लिए सबसे अच्छी जगह रही थी। इस संस्था में कोई ब्राउन की जासूसी नहीं करता था। स्कॉटलैण्ड यार्ड का कोई भी अधिकारी यहाँ सूँघकर सुराग लगाने के लिए आने को धृष्टता मानता। क्योंकि, कुछ भी कहा जाय, एक आदमी की निजी जिन्दगी से किसी का कोई ताल्लुक नहीं होता।

ब्राउन ने फौरन उसको धिक्कारना शुरू कर दिया।

कमरे में पिंजड़े के बाघ की तरह घूमते हुए वह चिल्लाया, 'तुम अभी तक यहाँ क्या कर रहे हो? मैंने तुम्हें बताया है कि यहाँ पर दिक्कत होगी। बीचर जाँच चला रहा था और वह मेरा सबसे गैर-भरोसेमन्द आदमी है। एक बार वह शिकार पर निकल पड़ता है तो उसे कोई चीज़ नहीं रोक सकती और वह सारा अनुशासन भूल जाता है। वह अपनी माँ को भी गिरफ्तार कर लेगा। आज दोपहर शव-निरीक्षक ने शरीर को देखा है। बीचर के बयान के बाद, उन्होंने यह नतीजा निकाला कि यह हत्या का मामला है। सन्देह तुम्हारे ऊपर है। और सबसे बदतर बात तो इस मामले में मैरी सॉयर का वह ब्लैकमेल करने वाला पत्र है जिसमें उसने खुले तौर पर तुम्हें *नाइफ* का भण्डाफोड़ करने की धमकी दी है। इस बाबत वह क्या जानती थी?'

शाम के अखबारों के साथ सोफे पर बैठे मैकहीथ ने कहा, 'कुछ नहीं। उसे बस शक था।'

'और ये फ्यूकूम्बी?'

'मेरे ससुर का नौकर है, एक पूर्व सैनिक। ऐसा लगता है कि वह हाल में मैरी सॉयर के पास आता-जाता रहा था।'

ब्राउन ने अपने कफ पर कुछ नोट किया।

'ओ'हारा कहता है कि तुम्हारे पास अपराध के पास कहीं और होने का बहाना है, मगर वह तुम सामने नहीं ला सकते?'

'हाँ, एक कम्पनी मीटिंग का एजेण्डा जो नहीं होनी चाहिए थी।'

'एक अच्छी बात यह है कि दो जहाज़ी कुलियों ने जो मिसेज़ सॉयर से मिले थे, बयान दिया है कि मिसेज सॉयर के साथ कोई नहीं था। मगर उस शाम उससे मिलने का वक्त तय करने वाला तुम्हारा सन्देश भयंकर है। वह इस केस के

कागज़ात की फाइल में है।'

ब्राउन फिर चीखने लगा। मैकहीथ को फौरन इसी वक्त जाना होगा।

मैकहीथ ने उसकी ओर भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से देखा।

उसने भावनात्मक स्वर में कहा, 'मैं तुमसे किसी और बात की उम्मीद कर रहा था। मैंने उम्मीद की थी कि अगर कभी मैं हर किसी का निशाना बन, हर किसी से धोखा खाकर ऐसी हालत में फँसूँगा तो मैं तुम्हारी तरफ मुड़ सकता हूँ, फ्रेडी। मैंने सोचा कि हमारी दोस्ती के नाते तुम मुझसे कहोगे : मैक, यहाँ है तुम्हारे लिए पनाह। यहाँ रहो। अगर तुम अपनी इज़्ज़त खो भी दो, तो कम-से-कम तुम्हारे पास अपनी पूँजी बचाने का मौक़ा होगा।'

'क्या मतलब है तुम्हारा?' ब्राउन ने पूछा।

मैकहीथ ने दुखभरी निगाह से उसकी ओर देखा।

'मैं विदेश से अपना धन्धा नहीं चला सकता। तुम ऐसा कैसे सोच सकते हो? ऑपर मुझे बताता है कि अगर मैं जेल गया तो प्रतिष्ठा गिर जाएगी; लेकिन मैंने सुना है कि अगर मैं देश छोड़ दूँ तो उनका इरादा मुझे बरबाद कर देने का है। मुझे अपनी कुर्सी पर बरकरार रहना ही होगा। मुझे तुम्हारे पास जेल में आकर अपना काम वहाँ काम वहाँ से जारी रखना ही होगा। मैं ऐसे घोड़े के समान हूँ, फ्रेडी, जो अपने साज़ में ही मरता है।'

'यह नामुमकिन है,' ब्राउन बड़बड़ाया, मगर वह कमज़ोर होता नज़र आने लगा।

मैकहीथ ने धीमी आवाज़ में उसे याद दिलाया, 'ज़रा सोचो, कितने लोगों ने अपना भविष्य मेरे भरोसे छोड़ रखा है और तुम उनमें से एक हो। तुम्हारा पैसा भी डूब जाएगा, अगर मैं लंदन छोड़ता हूँ। जाहिरा तौर पर तुम इतना नुकसान उठा सकते हो; लेकिन दूसरे लोग भी हैं जो बरबाद हो जाएँगे।'

ब्राउन फिर बड़बड़ाया।

मैकहीथ ने शिकायत की, 'यह मेरे ससुर ही हैं। वह मुझे बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैंने कभी उनकी शत्रुता पर ध्यान नहीं दिया है। वह ऐसे दांत की तरह है जो दर्द होने लगता है। आप उसकी उपेक्षा करते हैं। सोचते हैं कि, शायद, दर्द रुक जाए। फिर सोचना भी छोड़ देते हैं, और फिर एक बढ़िया सी सुबह आपका गाल मालपुए के समान फूला होता है।'

वे एक घण्टे से ज़्यादा समय तक साथ बैठे रहे और ब्राउन ने दुख के साथ वह सबकुछ बयान कर डाला जो वह सारी मुसीबत की जड़ मि.पीचम के बारे

में जानता था।

मि.जे.जे.पीचम पुलिस के लिए अंजान नहीं थे। उनकी वाद्य-यंत्रों की दुकान कमिश्नर के कमरे में हुई कई गम्भीर वार्ताओं का विषय रही थी जिनमें से पहली वार्ता बारह साल पहले हुई थी। उस समय वे उनके कारोबार को बन्द कराना चाहते थे। मगर वे कामयाब नहीं हुए थे। ब्राउन ने मैक को पूरी कहानी सुनाई :

'हम उनकी वाद्य यंत्रों की दुकान के बारे में सबकुछ जानते थे और वह जानते थे कि हम उनके ख़िलाफ़ कोई कदम उठाने जा रहे हैं। इसलिए वह यार्ड पर आए। फिर उन्होंने ग़रीबों के सूँघने के अधिकार आदि के बारे में एक हास्यास्पद और अनादरपूर्ण भाषण दिया। जाहिरा तौर पर हमने उन्हें उठाकर बाहर फेंक दिया और केस में आगे बढ़े। जल्दी ही हमने ग़ौर किया कि वह कुछ गड़बड़ करने की फ़िराक में हैं। ठीक उसी वक्त एक लोकोपकारक की याद में, जिसने शराब के दुरुपयोग के ख़िलाफ़ कोई मूर्खतापूर्ण अभियान चलाया था, एक स्मारक का अनावरण व्हाइट चैपल के सबसे घटिया कोने में होने वाला था। मेरा मानना है कि उन्होंने ढेर सारी लड़कियों की सहायता से, जिन्हें किसी तरह से बचा लिया गया था, शिकंजी के गिलास बाँटे। चूँकि स्मारक अनावरण गोरे लोगों का एक बड़ा मामला था, इसलिए महारानी आने वाली थीं। हमने आस-पास की जगह को थोड़ा साफ़ कर दिया। चूँकि यह ऐसी हालत में था कि इसने यहाँ रहने वालों को शराब के दुरुपयोग करने को मजबूर कर दिया था, इसलिए यह देखना महारानी के लिए ठीक नहीं था। लेकिन कई गैलन चूना करने से चमत्कार हो गया। हमने उस जगह को स्वर्ग के एक लघुरूप में तब्दील कर दिया। कूड़े-करकट के ढेर बच्चों के खेल के मैदान बन गये। टूटे-फूटे मकान ऐसे दिखने लगे मानो कोई त्योहार हो; सबसे गन्दी जगहों को मालाओं से ढँक दिया गया। उन कोटरों में विशालकाय बीस फुट के झण्डे लगा दिये गये, जिनमें बारह से पन्द्रह लोग एक कमरे में रहते थे। मुझे अभी भी याद है कि लोगों ने कितनी शिकायत की थी कि झण्डे के डण्डों ने उनकी काफी जगह घेर ली थी; ऐसे लोगों को उन घिनौनी कोठरियों पर शर्म भी नहीं आती थी जिनमें वे रहते हैं! हमने एक बदनाम मकान से सहवासियों को निकाल बाहर किया और बाहर एक तख्ती लगा दी जिस पर लिखा थाः अधोपतित कन्या गृह-जो कि वह था भी। संक्षेप में, हमने एक परिचित, आकर्षक दृश्य तैयार करने के लिए जी-जान लगा दी। लेकिन यह प्रधानमन्त्री द्वारा प्रारम्भिक जाँच का मौक़ा था जब वह परेशानी सबसे पहले

हुई। फूलों से लदे सफेदी किये गये घरों से मि.पीचम के पेशेवर भिखमंगों के जाने-पहचाने वीभत्स चेहरे झाँकते नज़र आए। वे सैंकड़ों की तादाद में थे। और जब प्रधानमन्त्री नीचे से गाड़ी से गुज़रे तो, वे कुत्तों की तरह की तरह बिलबिलाते हुए राष्ट्रगान गाने लगे! हमने उस इलाके के बच्चों को कभी ठीक-ठाक करने की कोशिश भी नहीं की थी; उनका भेस बदलने का कोई भी प्रयास व्यर्थ होता; कितना भी कपड़ा हो वे रिकेट्स-पीड़ित पैरों को नहीं छिपा सकते। और उनकी जगह आरक्षी बच्चों को ले आने का क्या फायदा होता जब एक असली बच्चा कहीं चुपके से आयातित बच्चों की कतार में आ जाता, और फिर, अगर मोटा, लाल-लाल गालों वाला प्रधानमन्त्री उससे उसकी उम्र पूछता तो पाँच बताने की बजाय, जिसकी उम्मीद हर कोई उसका आकार देखकर करता, वह सोलह बताता? स्मारक के चारों और अल्प-विकसित जीव जमा हुए थे जिनकी आँखों से दुनिया-भर होशियारी खींसें निपोरे झाँक रही थी। वे गुब्बारों और लेमनचूस के साथ छोटे-छोटे दलों में आए। वह जाँच भ्रम की स्थिति समाप्त हुई। और हमने मि.पीचम के ख़िलाफ़ अपनी खोजबीन छोड़ दी। हम उसके साथ और कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते थे। और *वह* आदमी तुम्हारा ससुर है! यह कोई मज़ाक नहीं, मैक।'

ब्राउन वाकई चिन्तित था। उसने अपने आपको एक भीषण युद्ध के लिए तैयार कर लिया था। उसमें कई दुर्गुण थे, लेकिन वह एक अच्छा दोस्त था। उसने और मैक ने एक साथ भारत में सेवा की थी। मैक उसकी वफादारी पर भरोसा कर सकता था।

ब्राउन, वह पुराना सैनिक, अक्सर अपने अंतरंग मित्रों के बीच कहा करता था, *'वफादारी, वफादारी बस सैनिकों पाई जाती है। ऐसा क्यों है? जवाब सीधा है : क्योंकि सैनिक को वफादारी सिखाई जाती है। जब आपको संगीन से हमला करना होता है-जो आम तौर पर बिना किसी वजह के होता है-और जब आपको काट, घोंप और पीस डालना होता है तब आपके साथ एक वफादार साथी होना चाहिए जिसके पास संगीन हो जिससे वह भी घोंप और काट और पीस डाले। केवल ऐसे हालात में ही यह गुण अपना श्रेष्ठतम रूप प्राप्त कर सकता है। एक सिपाही के लिए वफादारी उसके पेशे का ही एक हिस्सा होता है। लेकिन वह सिर्फ किसी एक ख़ास दोस्त के लिए वफादार नहीं होता। वह पदोन्नति किसी की कृपा दृष्टि से नहीं पा सकता। इसलिए बस उसे ईमानदार होना चाहिए। एक नागरिक यह बात नहीं समझ सकता। मिसाल के तौर पर, वह नहीं समझ सकता कि कैसे*

एक जनरल पहले अपने राजा के प्रति वफादार हो सकता है और फिर गणतन्त्र के प्रति, जैसे मार्शल मैकमाहोन। मैकमाहोन हमेशा वफादार रहेगा। अगर गणतन्त्र का पतन हो गया, तो वह राजा के प्रति वफादार हो जाएगा और यही सिलसिला अनन्त तक चलता रहेगा! केवल यही सच्ची वफादारी है!'

जब मैकहीथ वहाँ से गया था, तब तक ब्राउन अपने मित्र के जेल जाने के निर्णय पर राज़ी हो गया था। ख़ासी राहत महसूस करते हुए, उसने जल्दी से जेल के गवर्नर के नाम एक पत्र लिखवाया।

उन्होंने इस बात की व्यवस्था की थी कि मैकहीथ स्कॉटलैण्ड यार्ड पर स्वयं को प्रस्तुत करेगा। लेकिन जब वह बस पर सवार हुआ, तो पॉली के ख़याल उसके मन में मण्डरा रहे थे जिन्होंने उसे घण्टों से परेशान कर रखा था। इसलिए उसने अपनी योजना बदली और ननहेड की और चल पड़ा।

वह करीब आठ बजे वहाँ पहुँचा। अचम्भे के साथ उसने देखा कि पहली मंज़िल पर पॉली के कमरे में बत्ती जल रही है। उसे तो बहुत पहले ही अपने माँ-बाप के घर चले जाना चाहिए था।

छोटे बगीचे के सामने दो पुलिस अधिकारी खुलेआम ऊपर-नीचे गश्त लगा रहे थे।

अब एक दूसरी खिड़की की बत्ती जल गयी। पॉली शायद रसोई घर में व्यस्त थी। जाहिर था कि उसने वहीं रात बिताने का फैसला किया था।

मैकहीथ सामने वाले दरवाज़े की तरफ निश्चयपूर्ण कदमों के साथ बढ़ा। बगीचे के गेट पर उसे रोक दिया गया। जब उसके कन्धे पर पीछे से किसी ने हाथ रखा तो उसने सिर हिलाया। अधिकारी उसके अन्दर जाने और अपनी पत्नी से बात करने पर राज़ी हो गये।

पॉली असल में रसोई घर के दायरे में खड़ी थी। वह फौरन समझ गयी कि मैक के साथ जो आदमी हैं वे कौन हैं, लेकिन वह अचम्भित थी कि मैक लंदन में ही रह गया था।

रसोई के दरवाज़े पर खड़े होकर उसने चिड़चिड़ाकर पूछा, 'तुम घर नहीं गयी?'

पॉली ने शान्त स्वर में कहा, 'नहीं, मैं फैनी क्राइस्लर के साथ थी।'

'और?' उसने उससे पूछा।

'वह स्वीडन जा रही है।'

उसने उदासी भरे स्वर में कहा, 'मगर मैं नहीं जा रहा। मेरे लिए कुछ कपड़े

पैक कर दो।'

वह बहुत परेशान-सा जेल गया, और परेशान वह पॉली की वजह से था।

अगली सुबह मि.पीचम के निर्देशों पर वैली उससे मिलने पहुँचा। उसने मैक से तलाक के बारे में बात की और इशारा किया कि उसे स्थिति में कुछ विशेष फायदेमन्द सामग्री प्रकाश में आ सकती है।

वकील ने पूछा, 'तुम क्यों कार्रवाई चाहते हो? तुम्हारा फल-फूल रहा है। तलाक हो जाने दो और अभियोग पक्ष केस छोड़ देगा। निर्णायक सबूत हमारे हाथ में हैं। मि.पीचम अपनी बेटी वापस चाहते हैं, बस।'

लेकिन मैकहीथ ने बड़ी अशिष्टता के साथ उसे दोटूक जवाब दे दिया। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसकी शादी प्रेम विवाह थी।

11

ओह, वे कितने प्यारे लोग हैं
अगर तुम उन्हें छोड़ दो बिल्कुल अकेला
जब वे लड़ रहे हैं वापस पाने को वे चीज़ें
जो कभी नहीं रहीं उनकी अपनी।

(पुलिस कमिश्नर का गीत)

पत्ते पीले हुए

एक दिन सुबह-सुबह, पॉली पीचम, अब मिसेज मैकहीथ, फिर से घर आयी। भोर का वक्त होने के बावजूद उसने एक बग्घी कर ली थी। मैदान के किनारे से गुज़रते हुए उसने देखा कि ओक के वृक्षों की पत्ते पीले हो चुके थे।

जैसे ही वह दुकान में घुसी, चारों ओर मची जल्दी और भाग-दौड़ पर वह अचम्भित रह गयी। उसकी माँ बियरी से झगड़ते हुए दर्ज़िनों के एक समूह के बीच खड़ी थी। उन्होंने पीच पर शायद ही ध्यान दिया। कोई उसका सामान और, थोड़ी देर बाद उसका नाश्ता ऊपर लेता गया।

वे पुलिस के छापे की उम्मीद कर रहे थे और पिछले सात घण्टे से हर सम्भव चीज़ को वहाँ से हटा रहे थे। अन्य चीज़ों के बीच बैसाखियाँ जिनका एक पैर वाला आदमी इस्तेमाल नहीं कर सकता था, पैरों को छिपाने वाली दराज़ों से लैस ठेले और सबसे मुख्य रूप से सैनिकों की पोशाकें थीं। कार्ड सूचियों को दूर स्थित तहखानों में ले जाया गया।

आधी रात से सन्देश वाहक भिखारियों को अगली सुबह हेडक्वार्टर न आने की चेतावनी देते चारों ओर जा रहे थे।

दोपहर के आस-पास जब पुलिस परिसर में दाखिल हुई, तो नाई की दुकान तक को बगल वाले मकान में स्थानान्तरित कर दिया गया था।

ख़ास तौर पर, वे सैनिक फ्यूकूम्बी को खोज रहे थे जिसने थाने पर हाज़िरी

नहीं दी थी, जैसा कि तय हुआ था। लेकिन सैनिक को तो वहाँ मिलना नहीं था। उसे गुस्ताख़ बर्ताव के लिए पिछली शाम निकाल दिया गया था-ऐसा मि.पीचम ने कहा।

बीचर ने ख़बर की कि, वह मकान, बल्कि वह तीन मकान एक खरगोश के बाड़े के समान हैं और उनमें एक बढ़ई की वर्कशॉप और एक दर्ज़ी की दुकान है; सबकुछ भिखारियों के लिए और सबकुछ आश्चर्यजनक रूप से बड़े पैमाने पर।

फ्यूकूम्बी असल में कुछ दिनों के लिए गोदी पर स्थित एक होटल में चला गया था। उसे अपना कमरा छोड़कर बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी, मगर उसके पास *एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका* का अपना खण्ड था।

उसके कुत्तों की ज़िम्मेदारी पीच ने ले ली थी, जो कोई काम पाकर खुश थी। अगली सुबह से पहले उसने अपने पिता को नहीं देखा। उन्होंने उससे ऐसा बर्ताव किया मानो वह कभी दूर गयी ही न हो।

लेकिन दोपहर खाने के वक्त के करीब कोक्स आ गया मि.पीचम से बात करने और जब वह ऑफिस से बाहर आया और गलियारे में पॉली से टकरा गया, तो उसने खूब झुक कर पीच का अभिवादन किया।

उसने ज़ोर देकर कहा, 'बेशक , पीच सयानी हो गयी है! यह ज़रूर दक्षिण का असर होगा!'

उसने उसके दोनों हाथ पकड़े और पियानो पर कुछ सुनने की माँग की।

उसके पीछे मि.पीचम खड़े थे, और पॉली ने उनकी ऐसी चिरौरी करती नज़रें देखीं, कि वह बिना कोई शब्द कहे मुड़ी और उस दलाल के साथ ऊपर गयी और उसने *एनी लाउरी* बजाया।

जब वह दलाल चला गया था और पॉली भी बाहर जा रही थी, तो उसने अपने पिता को पहली मंज़िल पर ड्राइंग रूप में खिड़की पर नज़रें गड़ाए बैठे पाया।

कोक्स ने उन्हें सूचना दी थी कि ट्रांसपोर्ट कारोबार अगले दो हफ्तों में पूरा हो जाना चाहिए।

पहली बार, उस दलाल ने यह बतलाने की भद्रता दिखलायी थी कि उसने धन्धे को कैसे समेटने की योजना बनाई थी। पहले पीचम के पास सारा पैसा तैयार इकट्ठा हो जाना चाहिए; उसके बाद प्रायोजित शादी का सौदा यह तय करेगा कि पीचम और कोक्स के पास क्या बन्दोबस्त होगा। इस तरह से पीचम

को अपने नुकसानों की अदायगी हो जाएगी और कोक्स दहेज की जगह मुनाफे से सन्तोष कर लेगा।

पहले सारा पैसा तैयार रहे! यह भयंकर था!

जब मिसेज पीचम घर आयीं, तो उन्हें अपने पति को बिस्तर पर लिटाना पड़ा। वह मुश्किल से ही बात कर सकते थे, और बड़ी कठिनाई से सीढ़ियाँ चढ़ पाए। रात में उन्होंने सोचा कि वह मर रहे हैं। उनकी पत्नी को आधी बोतल आर्निका की उनकी छाती वाली जगह पर मालिश करनी पड़ी। उन्होंने किसी डॉक्टर को ढूँढकर ले आने तक का सुझाव दे दिया!

अगली सुबह अवसाद से भरे, वह अहाते में टहलते रहे, जिसके एक-एक पत्थर की उन्होंने कीमत अदा की थी और जिसकी अब उन्हें उन तीन सड़ते जहाज़ों के लिए कुर्बानी देनी पड़ेगी, जिनकी इस वक्त उनके ख़र्चे पर गोदी में मरम्मत हो रही थी। एक शानदार धन्धा-उन लोगों के लिए जिन्होंने इसकी व्यवस्था की।

वह पाँच कदम की दूरी पर जेब में हाथ डाले खड़े थे, उनकी टोपी सिर पर पीछे की और झुकी हुई थी, और वे अन्यमनस्क भाव से कुत्तों की देखभाल करती अपनी बेटी को देख रहे थे। वह दो बौने पेड़ों के बीच घुटनों के बल बैठी थी जिसके फूल-पत्ते पहले ही पीले पड़ चुके थे।

क्या अभी भी वह, पॉली के जरिये, पूरे कारोबार को कामयाब नहीं बना सकते थे और इस तरह उस भयंकर अनर्थ को रोक नहीं सकते थे? बस अगर वह उसे कोक्स के लिए मुक्त कर पाते! घनिष्ठतम पारिवारिक सम्बन्धों से कमतर कोई भी चीज़ इस पतित, बेईमान, महालालची दलाल को उन्हें कारोबार में शामिल करने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। सिर्फ उसकी जुगुप्सित कामुकता ही, शायद उससे यह करवा सकती है। शायद!

और यह मैकहीथ अपनी बीवी को छोड़ने की बजाय जेल जाना और एक भयानक आरोप का सामना करना पसन्द करेगा।

पीचम उसे पिछवा कर उससे तलाक दिलवाने के रास्ते पर मगजपच्ची करने लगे।

उन्होंने उसके पास जाने और यह कहने के बारे में सोचा :

'क्या तुम्हें इस बात का अहसास है कि तुमने एक ग़रीब आदमी को लूटा है? शायद तुम यह सोचते हैः एक ग़रीब आदमी, बहुत अच्छे! मैं उसके साथ जो चाहे कर सकता हूँ। मगर यहीं आप करते हैं, महाशय! ग़रीब की ताक त को कम

करके मत आँकिये। शायद आप इस बात से अंजान है कि हमारे देश में ग़रीबों के पास अमीरों जितने ही अधिकार हैं? कमज़ोर लोगों की रक्षा की जानी चाहिए नहीं तो वे मर जाएँगे। याद रखो! उसके पास इन समानता के अधिकारों के सिवा कुछ नहीं है!'

घण्टों तक खड़े-खड़े उन्होंने इस तरह के भाषण तैयार किये। लेकिन वह किसी ज़ोरदार बात के बारे में नहीं सोच पाए। उन्हें अहसास हुआ कि ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो एक समझदार आदमी को वह छोड़ देने के लिए मना ले जो उसके पास पहले से हो-सिवा वास्तविक शक्ति के।

उस दिन पूरी सुबह पीचम अपने आप से लड़ते रहे। फिर उनकी असह्य वेदना और अनिर्णय से, बेधड़क कदम उठाने का इरादा पैदा हुआ, अपने दामाद को *पैसा* देने का इरादा।

एक छोटे-से चापलूस सज्जन ने, जो ईस्ट एण्ड के एक वकील थे, मि.पीचम का प्रस्ताव मैकहीथ के सामने रखा।

दूसरे वाक्य में ही उसने आह भरी और मुँहफट ढंग से मैकहीथ के तलाक देने पर राज़ी होने के बदले में पैसे की पेशकश की।

'कितना पैसा?' मैकहीथ ने अविश्वास से मुस्कराते हुए पूछा।

वकील कुछ 100 पाउण्ड जैसा कुछ बड़बड़ाया।

मैकहीथ ने उस पर ऐसे नज़रें गड़ाए कहा मानो वह किसी दिलचस्प साँप को देख रहा हो, 'तुम मेरे ससुर को बता सकते हो कि मेरी पत्नी के पिता मेरी नज़र में इतनी ऊँची हैसियत रखते हैं कि मैं यह पेशकश नहीं स्वीकार कर सकता। मैं सोच भी नहीं सकता कि मेरे ससुर वाकई ऐसा मानते हैं कि उनकी बेटी एक ऐसे आदमी को दिल दे देगी जो फिर उसे 500 पाउण्ड में बेचने के काबिल है।'

उलझन में हार मानकर वकील चला गया।

कुछ दिनों बाद मैकहीथ ने स्वयं को इस स्थिति में पाया जिसमें उसने ऐसी पेशकश रखे जाने पर, उस पर कहीं ज़्यादा करीबी से ग़ौर किया होता, बशर्ते कि इस रकम को दोगुना कर दिया जाता।

लेकिन वह चापलूस छोटे सज्जन वापस नहीं आये। ऐसे मौक़े ज़िन्दगी में दो बार भी मुश्किल से ही आते हैं।

विचार स्वतन्त्र होते हैं

मैकहीथ एक ऐसी कोठरी में था जो एक ख़ाली गलियारे में थी। पहले इस कोठरी ने कई मरीज़ों के लिए बीमारों वाले कमरे का काम किया था और यह ऊँची और लम्बी-चौड़ी थी। इसमें पर्याप्त रोशनी भी आती थी क्योंकि इसमें दो उपयुक्त रोशनदान थे।

ब्राउन ने बिछाने के लिए एक मोटी, लाल कालीन का इंतज़ाम कर दिया था। दीवार पर महारानी विक्टोरिया की एक तस्वीर टंगी थी। मैकहीथ को अखबार लेने की भी इजाज़त थी, मगर वह उन्हें पढ़ना पसन्द नहीं करता था; वे मैरी सॉयर के शोचनीय वर्णनों से भरे होते थे, जिसे पाठकों के सामने बहुत सुन्दर औरत के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। ज़्यादा नुकसानदायक उस दुकान और उस दयनीय माहौल के वर्णन थे जिसमें उसने अपने अन्तिम छः साल गुज़ारे थे।

खुद उसका ज़िक्र सिर्फ ज़्यादा सनसनीखेज अखबारों में किया गया था, और सीधे आरोपों से बचा गया था। लेकिन उनमें बेहद अप्रिय कटाक्ष थे।

अश्लील साहित्य छोड़कर वह जितनी चाहे उतनी किताबें रख सकता था। उन्हें रखने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि जेल का पादरी जब-तब आ जाया करता था। लेकिन बाइबिल की अनुमति थी।

मुलाकाती कुछ ही थे, मगर इसलिए कि नहीं कायदे-कानून उन्हें रोकते थे। इस इमारत मे आने के प्रति ओ'हारा में गहरी अरुचि थी। उसे अचानक होने वाली मुलाकातों से चिढ़ थी। अपने कैरियर के बाद के वर्षों में उसे ऐसी इमारत में कई वर्ष बिताने थे। फैनी क्राइस्लर भी कभी-कभार ही यहाँ आया करती थी।

गिरोह की गतिविधियों और बी.शॉप्स की स्थितियों से सम्बन्धित सारी ख़बरें उस तक पॉली पहुँचाती थी। वह ओ'हारा के साथ काम करती थी; और दोपहर में ज़्यादातर ननहेड में मैक के अध्ययन-कक्ष में। लेकिन फिर भी मैक की गिरफ्तारी एक गम्भीर बाधा थी।

जिस बात से मैकहीथ को निराशा हुई वह यह थी कि आरों की तरफ से कोई खोज-ख़बर नहीं थी। आख़िर, वह उसका साझीदार था। उसने सोचने की कोशिश की कि महान आरों के पास उसके ख़िलाफ़ क्या हो सकता है। यह सिर्फ़ इतनी-सी बात नहीं हो सकती कि वह गिरफ्तार कर लिया गया है। कारोबारी

दुनिया इससे कहीं ज़्यादा बदकिस्मती से परिचित होती है।

धीरे-धीरे यह बात उसे साफ़ समझ आ गयी कि आरों और ऑपर बन्धुओं से लेन-देन में आने वाली भारी दिक्कतों का उसे पूर्वानुमान करना ही होगा। जो आरोप उसके ऊपर उसके ससुर ने मढ़ दिये हैं, उसका मतलब आरों और ऑपर के साथ उसके व्यापारिक सहयोग की समाप्ति भी हो सकता है। अगर उसे अपराध के वक्त अपने अन्यत्र होने का बहाना प्रस्तुत करने को बाध्य कर दिया गया, तो वह 'तटस्थ' सी.पी.बी. के संगठनकर्ता के तौर पर, नग्न रूप में और बेनकाब हो सामने आ जाएगा!

उस पूरी निस्तब्ध रात, वह अपनी कोठरी में ताज़ा तरीकों और जरियों के बारे में सोचता रहा। उसके विचार ज़्यादा से ज़्यादा क्रेस्टन की तरफ मुड़ रहे थे। क्या वह क्रेस्टन को काबू में नहीं कर सकता, या कम-से-कम उससे गठजोड़ नहीं बना सकता?

उसने सोचा, 'मेरा दोस्त आरों स्पष्ट रूप से मेरे दुखों में मुझसे मिलने के ख़तरे को उठाने की कोई वजह नहीं समझता। मैंने उसे अपना एक दोस्त माना है-कुछ ख़ास छोट-मोटे मतभेद समय के साथ सुलझ गये होते-और क्रेझटल मेरा दुश्मन था। और यह एक पुरानी कहावत है कि जब कोई दोस्ती ठण्डी पड़ने लगे तो चालाक आदमी हमेशा उसे *सही वक्त पर* तोड़ देता है, ताकि पहला वही रहे। किसी लड़ाई में आपका कोई तय नियम नहीं होना चाहिए कि कौन दोस्त है और कौन दुश्मन। यह किसी भी पूर्वानुमानित धारणा की तरह ही ख़तरनाक है। शायद मेरा वास्तविक, स्वाभाविक मित्र क्रेस्टन है और शत्रु आरों। कारोबार के किसी भी दौर में यह सच साबित हो सकता है। जाहिरा तौर पर यह काफी भयानक होता है जब एक आदमी का ऐसे दूरगामी महत्व के फैसलों से बार-बार सामना होता है!'

उसने कड़वाहट के साथ इस बारे में सोचा कि यह पॉली के दहेज के न होने के ही चलते हुआ कि वह उस राह पर चलने पर मजबूर हो गया जिस पर वह तबसे अनर्थकारी परिणामों का सामना करते हुए चला जा रहा है।

विचारों में डूबे हुए उसने अपनी कोठरी के कोने में काल्पनिक पॉली को देखा। क्या वह अब भी *उसके* जरिये पूरे धन्धे को कामयाब नहीं बना सकता?

धीरे-धीरे उसने एक नयी योजना गढ़ना शुरू कर दिया।

जब भी वह अदालत जाता था, तो पॉली उसके साथ जाती थी। ऐसी एक यात्रा पर, जब वे दो पुलिसवालों के साथ, जो उसके सामने बैठे थे, एक जर्जर

गाड़ी में बैठकर कोहरे से ढँकी सड़कों पर चले जा रहे थे, तब उसने उससे बात कर अपने आप को चिन्तामुक्त कर लिया। उसने कहा, 'सबसे बुरी बात तो यह है कि ओ'हारा अब पूरा सहयोग नहीं कर रहा है। मेरे स्पष्ट आदेशों के बावजूद वह गोदाम खाली नहीं कर रहा है। क्या तुम जानती हो कि आख़िर वह करना क्या चाहता है?'

थोड़ा डरकर पॉली ने कहा, 'नहीं'।

रुक-रुककर आती रोशनी की चमक में उसके चेहरे पर खोजती हुई-सी निगाहें डालते हुए उसने पूछा, 'क्या तुम पता नहीं कर सकती?' उसके साथ एक और यात्रा की याद तुरंत उसके जेहन में फिर ताज़ा हो गयी। यह याद कुछ बेमज़ा थी, क्योंकि वह ओ'हारा के बारे में सोच रहा था। यह इसलिए भी बेमज़ा थी क्योंकि उसने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया।

मैकहीथ को उसकी वफादारी पर शक था। वह अपने आप से बार-बार कहताः

'निश्चित रूप से वह मेरे प्रति वफादार है; सिर्फ इसलिए क्योंकि उसके पाँव भारी हैं। वह कभी भी ऐसा कुछ नहीं करेगी। यह बहुत भयंकर होगा और बहुत मूर्खतापूर्ण भी। मुझे बिल्कुल पक्के तौर पर पता करना चाहिए, और फिर वह क्या करेगी? इसलिए वह ऐसा नहीं करेगी क्योंकि वह बहुत समझदार है। वह जानती है कि मैं उसका खून कर डालूँगा-हाँ, खून कर डालूँगा-अगर सबसे बुरी बात हो ही गयी। मैं उसे वेश्या कहने की हद तक भी चला जाऊँगा। मैं कहूँगा, "क्या! मैं यहाँ जेल में बैठा हूँ और तुम तीन हफ्ते भी इन्तज़ार नहीं कर सकती? तुम एक वेश्या हो, और कुछ नहीं!" वह पक्का रो पड़ेगी। वह चीख उठेगी, "ऐसा मत कहो, ऐसा नहीं हो सकता कि मैं इतना नीचे गिर जाऊँ।" मैं कहूँगा, "तुम एक वेश्या हो, दिल से बच्ची, मगर फिर भी वेश्या? हद हो गयी! एक गोदी की वेश्या भी ऐसा नहीं करेगी! मुझे घिन के मारे उल्टी आती है जब मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ।" उसे यह सब सुनना होगा। कोई औरत इतना ख़तरा नहीं उठाएगी। यह बिल्कुल सच है; मैं वाकई नरमदिली से नहीं पेश आ सकता अगर मेरी पत्नी किसी और आदमी के साथ चली जाए। एक औरत होने के नाते वह आदमी के हाथ का मैल है। ऐसा कोई काम किसी आदमी की मानसिकता पर गहरा प्रभाव डालेगा। उसके बाद वह मेरे लिए बिल्कुल बेकार हो जाएगी। कोई भी आदमी आराम से उसे अपने साथ घर चलने के लिए कह सकता है। वह मुझे छोड़कर जाने में हिचकिचाएगी नहीं। और फिलहाल मुझे उस पर निर्भर रहना

ही होगा। यह अच्छा हुआ कि मैंने उसे गर्भवती कर दिया। ऐसे में वह बेलगाम इधर-उधर नहीं भाग सकती। वह बस नहीं भाग सकती। उसे शारीरिक रूप से मेरी ज़रूरत है। ऐसी स्थिति में एक और किसी दूसरे आदमी को अपने आस-पास नहीं फटकने दे सकती, जैविक कारणों की वजह से। जैविक कारण हमेशा सबसे अच्छे होते हैं!'

दरअसल, उस पूरे सप्ताह के दौरान, वह उससे बहुत मीठा व्यवहार कर रही थी और उसने फैनी क्राइस्लर और स्वीडिश दौरे का फिर कोई ज़िक्र नहीं किया था। वह उस पर फादर के जरिये लगातार नज़र रखे हुए था और उसने इस यातनादायी शक से लड़कर निपट लिया था कि पॉली ओ'हारा के दल में थी जिस पर उसे मुख्य रूप से सन्देह था। क्योंकि अब उसे पॉली और ओ'हारा की ज़रूरत थी, जबकि महायुद्ध लड़ा जाना था। और उसे अपने असली पत्ते जेल से ही फेंकने थे।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि वह एक कठिन स्थिति में था। यह बात उसे बिल्कुल स्पष्ट थी कि जब तक कारोबारी लेन-देन पूरे न हो जाएँ, उसे अपने ज़ाती मामले किनारे ही रखने होंगे।

उसे पॉली को नेशनल क्रेडिट बैंक को क्रेस्टन की कम्पनी से अलग करने के औज़ार के रूप में इस्तेमाल करना होगा। जेल जाने से ठीक पहले उसने पॉली को उसकी ज़िम्मेदारियों के बाबत निर्देश दे दिये थे।

उसे नेशनल क्रेडिट बैंक में मिलर के पास जाना था, अपने पिता की ओर से शुभकामनाएँ देनी थीं, फिर आगा-पीछा करना था मानो उसे ठीक से पता न हो कि वह कैसे कहे कि वह क्या चाहती है, फिर फूट-फूटकर रोने लगना था और उस बुजुर्ग आदमी से पूछना था कि वह क्या करेः जल्दी ही उसका पति बैंक से उसके बाप की जमा रकम (जो उसका दहेज था) निकाल लेने वाला था और इसे अपनी बी.शॉप्स में लगाने जा रहा था। उसके पिता एक या दो दिन में इस बात को पक्का करने बैंक आने वाले थे। फिर मिलर शायद यह सुझाता कि वह अपने बाप से कहे कि वह दहेज उसके हवाले न करे। इस पर पॉली को यह जवाब देना था कि उसके पिता पूरी तरह उसके पति के प्रभाव में हैं। फिर उसे रोते हुए चले जाना था।

वह यह सबकुछ करने के लिए इतनी तैयार थी कि मैक प्रभावित हो गया और उसने उसे इन कदमों के पीछे की वजह भी बता दी।

उसने उसे समझाया कि बैंक सम्भवतः इस सब के बाद उसके पास आएगा।

फिर वह यह माँग कर सकेगा कि बैंक अपने आपको क्रेस्टन से अलग कर ले। इस तरह क्रेस्टन अपने महाबिक्री सप्ताह के पास आते ही, घुटनों पर चलकर उसके पास आने को मजबूर हो जाएगा।

जिस तरह से मैक ने अपने कारोबार के बारे में बात की उसने पॉली पर गहरा प्रभाव डाला।

उसे यह अहसास हुआ कि वह उन दोनों की ज़िन्दगी को कामयाब बनाने पर तुला हुआ है।

उसने सोचा, *'मैं एक अच्छी पत्नी नहीं हूँ। वह मेरे लिए काम करता है और मैं कुछ नहीं करती। भले ही यह एक थोथी बात हो और इसका मेरी गहरी भावनाओं के साथ कोई लेना-देना न हो कि मैं समय-समय पर आदमियों के साथ सोती हूँ, क्योंकि मैं खुद को रोक नहीं पाती जब एक पुरुष मेरा हाथ चूमता है और मैं भी उससे कुछ नहीं लेती, फिर वह मुझे बाद में भी उतना ही आकर्षक पाता है, और फिर भी यह अच्छा है, खास तौर पर ओ'हारा के मामले में और इसका किसी और के साथ कुछ भी लेना-देना नहीं होता, यह फिर भी सही नहीं है और आगे चलकर लोग देखेंगे कि मैं ऐसी ही हूँ क्योंकि तब मेरे चेहरे पर गहरी रेखाएँ होंगी।'*

वह दुखी मन के साथ वहाँ से गयी और उसने ओ'हारा के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ने का मन बना लिया, जिसके प्रति निस्सन्देह वह सिर्फ शारीरिक आकर्षण का अनुभव करती थी, ख़ास तौर पर तब से जब से वह मैक के बारे में ख़राब ढंग से बात कर रहा था और उसने अपने स्वतन्त्र होने की योजनाओं की तरफ इशारा किया था।

उसने उसे यह बात उसी शाम उस रेस्तराँ में बता दी, जहाँ वे आम तौर पर मिला करते थे। वह हँसा और उसने उस दिन का काम घर निपटाने का सुझाव रखा। उसे कई ऑर्डरों पर दस्तख़त करने थे।

उसने कहा, 'बहुत अच्छे, हम इसको बिल्कुल रोक देंगे। तुम अपने बारे में फैसला करने के लिए पूरी तरह आज़ाद हो। तुम्हें कोई वह काम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता जो तुम नहीं करना चाहती। किसी औरत पर प्यार थोपने वाला मैं आखिरी इंसान होऊँगा। जब किसी काम को बरबाद कर देने वाली कोई छोटी से छोटी बात पैदा हो जाए तो फौरन उस पूरे काम को ही त्याग देना सबसे अच्छा होता है। लेकिन तुम अभी भी आ सकती हो और अपना काम ख़त्म कर सकती हो। इसका हमारे सम्बन्ध से क्या लेना-देना? क्या दो सयाने लोग बिना

एक-दूसरे पर सवार हुए एक कमरे में अकेले नहीं रह सकते? हमारे सम्भोग न करने के पीछे मनोवैज्ञानिक और नैतिक वजहें हैं इसलिए हम सम्भोग नहीं करेंगे। यह एकदम सीधी-सी बात है। हम कुण्ठित अविश्वास और अपने गन्दे सन्देहों वाले दूसरे मूर्खों पर ध्यान क्यों दें? हम दो आज़ाद व्यक्ति हैं।'

वह बात करने में माहिर था और एक पब्लिक स्कूल में रहा था। इसलिए वह उसके साथ चली गयी और उन्होंने काम ख़त्म कर लिया। फिर वे साथ सोए, क्योंकि, हालाँकि इसके ख़िलाफ़ मनोवैज्ञानिक और नैतिक वजहें थीं, इसके पक्ष में यौन वजहें भी थीं। फिर भी यह लम्बे समय तक के लिए उसके लिए आखिरी आनन्द भोग था।

अगली सुबह पीच नेशनल क्रेडिट बैंक में मिलर से मिलने गयी।

वह ताज़ा और खुश दिख रही थी और पूरे रंग में थी। उसे अन्तरात्मा की चिन्ता कभी भी पतन के बाद नहीं होती थी, बल्कि पहले होती थी।

मिलर उससे अपने निजी ऑफिस में मिला। उसने अपने पिता की शुभकामनाएँ प्रस्तुत कीं, आगा-पीछा किया मानो उसे ठीक से पता न हो कि वह कैसे कहे कि वह क्या चाहती है, फिर फूट-फूट कर रोने लगी और वह सबकुछ कह दिया जो मैक ने उसे बताया था।

उसने सिसकते हुए कहा, 'मैक बहुत महत्वाकांक्षी है। वह हमेशा औरों से बेहतर करना चाहता है। और इसलिए उसे ज़्यादा से ज़्यादा पैसों की ज़रूरत है। वह बहुत से लोगों को पैसे देता है। इस मैरी सॉयर को भी वही पैसे देता था। यह उसकी दुष्टता ही थी कि उसने मैक के ख़िलाफ़ इस तरह से ग़लत प्रचार किया। अगर वह मेरा दहेज चाहता है तो मैं उसे रोक नहीं सकती, वह इतना दरियादिल है।'

मिलर को उसकी उम्मीद से ज़्यादा सदमा पहुँचा। उस बुजुर्ग का चेहरा यह सुनकर काफी उदास हो गया कि पीचम का खाता बन्द होने वाला है। उसने हकलाते हुए हॉथॉर्न के बारे में कुछ कहा और बगल वाले कमरे में चला गया। पन्द्रह मिनट बाद पॉली वहाँ से चली गयी क्योंकि वह वापस नहीं आया था।

उसी दोपहर डेढ़ सदी मैक की कोठरी में बैठे थे। वह अपना साधारण सूट पहने हुए था। उसने उन लोगों के लिए कुर्सियाँ मँगवा रखी थीं और उसने उनके सामने सिगार पेश किया।

वह कोठरी मुलाकात के लिए कोई बुरी जगह नहीं थी-हालाँकि लाल कालीन अब वहाँ नहीं था। एक अखबार ने व्यापारियों के राजकुमार द्वारा जेल में उठाए

जा रहे ऐशो-आराम के बारे में एक लेख छापा था। जिसके बाद दो पुलिस वाले वह कालीन समेट कर वहाँ से उठा ले गये थे। मगर महारानी की तस्वीर अभी भी दीवार पर टंगी थी।

ब्राउन जितना सम्भव था उतना उपकारी बना हुआ था। उसे नियमित तौर पर मैकहीथ से अपना हिस्सा मिलता रहा था और वह स्वाभाविक रूप से अहसानमन्द था। वह कोई राजनीतिज्ञ नहीं था; उसे अपने वायदे निभाने की आदत थी।

चारों और सन्तुष्ट निगाहों से देखते हुए, मैकहीथ ने बूढ़े हॉथॉर्न से कहा, *'एक इंसान जेल की दीवारों के बीच भी आज़ाद रह सकता है। आज़ादी एक रूहानी चीज़ है। जिसके पास भी यह एक बार आ जाती है, वह कभी इसे खो नहीं सकता। कुछ लोग होते हैं जो जेल के बाहर भी कभी आज़ाद नहीं होते। शरीर को ज़ंजीरों में जकड़ा जा सकता है, रूह को कभी नहीं। आपके विचार आज़ाद होते हैं।'*

सबसे पहले धन्धे की बात पर आने वाला मैकहीथ ही था।

कोठरी में इधर से उधर डग भरते हुए उसने कहा, 'सज्जनो, आपने मुझे आप लोगों के यहाँ आने से कुछ अचम्भित और व्याकुल पाया। बहुत समय नहीं बीता है जब जीवन की चंचलता, इसके सतत उतार-चढ़ाव ने हमें अलग कर दिया था। हम उन हमसफरों की तरह जुदा हुए जो कहते हैं : "हम साथ-साथ बहुत दूर तक चले-मगर यहाँ हमारे रास्ते अलग होते हैं। हम दुखी न हों। आइये एक दूसरे को पुनर्मिलन तक के लिए शुभकामनाएँ दें!" मैंने सुना कि आप क्रेस्टन के पास चले गये; मैं आरों की और मुड़ा। हम दोनों ने ही अपने कारोबार के हित में काम किया जिसका मकसद एक ही है, जनता की कारगर ढंग से सेवा करना।-ठीक है न?'

मिलर ने अपना गला साफ़ किया और हॉथॉर्न नीच हाव-भाव के साथ विषय पर बोलने लगा।

उसने नरमी से कहा, 'मि.मैकहीथ, जो कुछ हुआ है, उसे आप जैसे समझते हैं, वह आपकी उदारता है। बहुत से लोगों ने हमारे इरादों को ग़लत समझा होगा, जब चिन्तापूर्वक किये गये विचार के बाद, हमने क्रेस्टन के पक्ष में फैसला किया था। नेशनल क्रेडिट बैंक एक बच्चे का है। हम उसके नुमाइन्दे हैं और दूसरे आज़ाद लोगों की तरह अपनी चाहतों की आवाज़ पर नहीं चल सकते। हमने सुना है कि आप वह पैसा वापस लेना चाहते हैं जो आपके पूज्य ससुर जी ने

हमारे बैंक में जमा कर रखे हैं।'

मैकहीथ ने जवाब दिया, 'बिल्कुल ठीक। मुझे अपनी एक-दो कारोबारी कार्रवाइयाँ करने के लिए इस पैसे की ज़रूरत है, जिन्हें मेरी दुकानों पर प्रतिद्वंद्विता ने थोप दिया है।'

हॉर्थॉर्न और मिलर ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

'क्या यह क्रेस्टन की दुकानें हैं जिन्होंने आपको ये कार्रवाइयाँ करने को मजबूर किया है?' हॉर्थॉर्न ने करीब-करीब फुसफुसाकर पूछा।

मैकहीथ ने कहा, 'शायद।'

'हमें यह सुनकर बहुत खेद हुआ,' हॉर्थॉर्न ने कहा और मिलर ने सिर हिलाकर हामी भरी।

मैकहीथ ने कहा, 'मुझे आप पर विश्वास है।'

हॉर्थॉर्न कुछ विस्मित-सा रह गया।

उसने कहा, 'निश्चित रूप से यह एक स्वाभाविक बात है कि ज़्यादा ताकतवर कारोबार कमज़ोर वाले को निगल जाए। प्रकृति में भी यही होता है। मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है।'

मैकहीथ ने कहा, 'नहीं'।

'जब, कुछ क्षण पहले आपने हमसे फिर से बात शुरू की, तो हमें यह विश्वास था कि वह क्षण आ गया है जब हम आपके सामने अपनी मदद की पेशकश कर सकते हैं।'

मैकहीथ अन्दर ही अन्दर खुश हुआ।

'मैं जानता हूँ। आपने अपने प्रयासों को फिर दोगुना कर दिया। आपने तुरत क्रेस्टन के उद्यम में अपना सारा पैसा लगा दिया; और वह भी लगा दिया-जो आपका नहीं था।'

मैकहीथ रुक गया। उसने आखिरी वाक्य एकदम लापरवाही से, बिना सोचे बोल दिया था। अब वह विरोध की उम्मीद कर रहा था और अचानक उसने यह देखा, और उसे देखकर बहुत अचम्भा हुआ, कि यह विरोध नहीं आया।

उसे डेढ़ सदी पर बस एक निगाह डालने की देर थी और वह सबकुछ समझ गया।

उसने जमा खाते की हुण्डी काटी थी!

मैकहीथ की आवाज़ में कोई हिचकिचाहट नहीं थी जब उसने बड़बोले अन्दाज़ में फिर से बोलना शुरू किया :

'तो आपने कुछ कह देने की तरह, अपनी आखिरी कमीज़ और बदकिस्मती से दूसरे लोगों की कमीजों को भी, दाँव पर लगा दिया। ठीक कह रहा हूँ न मैं?'

हॉर्थॉर्न ने अपना सिर झुका दिया। मिलर ने विचारशून्य निगाहों से खिड़की की तरफ देखा।

हॉर्थॉर्न ने भर्राई आवाज़ में हकला कर कहा, 'आप क्या चाहते हैं?'

मैकहीथ ने खुशी से कहा, 'सबकुछ। या लगभग सबकुछ; और इस तरह बहुत ज़्यादा कुछ नहीं। लेकिन रुकिये! हम देखेंगे कि क्या किया जा सकता है।'

उसने सावधानी से डिब्बे में से एक मोटा-सा सिगार चुना, उसका छोर काटा, उसे बाहर थूका और उस विकट बुरी वस्तु को अपने मोटे होंठों के बीच लुढ़का दिया, और उसे सुलगा लिया। यह उसके जीवन के सबसे आनन्दपूर्ण क्षणों में से एक था। नीले धुँए का एक बादल उसके मुँह से लहराता हुआ निकला।

उसने कहा, 'ठहरिये! आपने मेरे ससुर के पैसे का दुरुपयोग किया है। अपने पूरे डेढ़ सौ सालों के दौरान आप गबन के दोषी रहे हैं। इसी पैसे से क्रेस्टन को डटे रहने के काबिल बनाया गया है, हालाँकि वह अपने माल आर्थिक कीमतों से नीचे करके बेचकर डटा रह पाया। इससे मेरी बी.शॉप्स और आरों के बरबाद होने की उम्मीद की गयी थी। इस तरह, पहले लूट फिर हत्या। सड़कों-गलियों में तो मामला उलटा होता है। वहाँ, हत्या पहले आती है और फिर जब हम बरबाद हो गये होते तो आपने हमें निगल लिया होता! बाप रे! सचमुच हॉर्थॉर्न, यह तो काफी कुछ प्रकृति जैसा ही है!'

'आप क्या चाहते हैं?' हॉर्थॉर्न ने अब नीली, दृढ़निश्चय आँखों से अपने विरोधी को घूरते हुए दोहराया।

मैकहीथ ने सोचा कि यह पहले ईमानदार लोग हैं जिनसे मैं मिला हूँ। एकमात्र ईमानदार लोग।

उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'सुनिये, मैं बहुत सी चीज़ें माँग सकता हूँ; लेकिन इसकी बजाय मैंने बहुत-सी चीज़ों की पेशकश करने का फैसला किया है। ऐसा ही हूँ मैं। मैं आपको बरबाद नहीं करना चाहता बल्कि आपकी मदद करना चाहता हूँ। इस काम के लिए सबसे अच्छा यह होगा कि मैं बैंक में, कह सकते हैं कि, कारोबारी निवेश निदेशक के रूप में प्रवेश करूँ। और उसके पहले हम यह प्रबन्ध कर लें: हम क्रेस्टन से अपना समर्थन वापस ले लेंगे क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से कमज़ोर है। मालों की वह पागलपन भरी और अनुचित बरबादी रुक जाएगी। हम अपना पैसा वापस माँगेंगे ताकि वह अपनी कमज़ोरी

को ठीक से महसूस कर सके। शायद तब वह एक मज़बूत हाथ की ज़रूरत महसूस करेगा जो उसे राह दिखा सके। क्या अच्छा सुझाव है यह?'

मिलर खड़ा हो गया था। हॉथॉर्न ने उसे देखा। मिलर ने उस पर एक संक्षिप्त और अचम्भित निगाह डाली मगर वह बैठा ही रहा। इसने मिलर के लिए बहुत कुछ बदल डाला। वह बुढ़ाने लगा। वह झुक गया, उसके दांत टूट गये, बाल सफेद हो गये, उसकी अक्ल बढ़ी।

वह बुदबुदाया, 'इससे कम्पनी का भला होगा, अगर मैं इस्तीफा दे दूँ।'

'तो दे दीजिये,' मैकहीथ ने कहा।

डेढ़ सदी दुखी होकर वहाँ से चले गये। उन्होंने मैकहीथ के नेशनल क्रेडिट बैंक में प्रवेश के लिए ज़रूरी कागज़ात तैयार करने का वायदा किया था और वे क्रेस्टन को उधार बन्द करने पर भी सहमत हो गये थे।

हर दिन मैकहीथ क्रेस्टन से भेंट का इंतज़ार करता, जिसे घुटनों पर चलकर उसके पास आना चाहिए था क्योंकि वह बैंक के समर्थन के बिना अपना आसन्न बिक्री सप्ताह नहीं चला सकता था। पिछले हफ्तों की गलाकाटू प्रतियोगिता के बाद, उसकी आपूर्ति के स्रोत ज़रूर करीबन सूख गये होंगे।

मगर क्रेस्टन नहीं आया।

इसकी बजाय सी.पी.बी. में अज्ञात और रहस्यमय घटनाएँ हो रही थीं।

जो ख़बरें लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर से जेल आयीं वे नाकाफ़ी और ग़लत थीं। ओ'हारा ने अभी भी अपने दर्शन नहीं दिये। जाहिर था कि मैकहीथ के आदेशों को अनदेखा किया गया था।

न ही पॉली उसे कुछ भी ठीक-ठाक बता पायी। वह गोदामों में जाती रहती थी मगर उसे कुछ ख़ास पता नहीं लगा। ओ'हारा ने कहा कि वह स्टॉक की सूची बना रहा है। बस यह सूची कभी ख़तम होती नहीं लगती थी।

अच्छा-ख़ासा परेशान होने के बाद जब पॉली एक बार फिर वहाँ गयी तो उसने मालों को डिब्बे मे बन्द हो गाड़ियों में कहीं जाते देखा; घोड़ों ने अहातों की तरफ जाने वाले अन्धकारमय गलियारे में उसे गिरा ही दिया होता। ओ'हारा वहाँ नहीं था, और ग्रूच बड़ी उलझन में पड़ गया। वह यह बताने में अक्षम था कि वे डिब्बे कहाँ से आये थे। पॉली स्तब्ध रोष में घर आयी। उसने ओ'हारा से बहुत पहले ही सम्बन्ध तोड़ लिये थे, क्योंकि वह उसे अपने पति के हितों के विरुद्ध काम करता सहन नहीं कर सकती थी। अगली सुबह वह मैक के पास गयी और उसने ओ'हारा को रोते हुए बुरा-भला कहा और बताया कि वह बेईमान है और

वह गुप्त रूप से बेच देने के लिए माल चुरा रहा है, और उसने उससे सेंधमारी के औज़ारों के लिए चाभी लेने की कोशिश की क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से वह कुछ लड़कों के साथ अपना गिरोह बनाना चाहता है।

मैकहीथ ने उसे शान्त किया। उसने उसे मिलर के पास जाने को कहा।

इससे उसे काफी सन्तोष हुआ कि मैक ने अपना कारोबार इस कदर उसके जिम्मे छोड़ दिया है। वह बैंक में ऐसे पहुँची जैसे कि संयोग से चली आयी हो, और जब मिलर ने उसे ख़बर बतायी, वह कमरे में, अपने झोले को पीठ पर लटकाये और दीवार की छींट को देखते हुए टहलती रही।

उसे पता चला कि पहले तो क्रेस्टन उधार के रुकने पर भयभीत हुआ, लेकिन अब उसने कहा कि वह सबकुछ और उधार के बिना ही ठीक से चला ले जाने की उम्मीद कर रहा है। उसे हाल में ही आश्चर्यजनक रूप से कम कीमत पर मालों की विशाल आपूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं और इस हफ्ते वह अच्छा धन्धा करने की उम्मीद कर रहा है।

मैकहीथ यह ख़बर पाकर बहुत परेशान हो गया।

पॉली ने बैंक का दूसरा दौरा किया और मैकहीथ के नाम पर यह माँग की कि मिलर को कोई भी आगे का कदम उठाने से पहले इन सस्ते मालों को खुद देखना चाहिए।

इस जाँच पर फैनी क्राइस्लर मिलर के साथ थी, जिसका मैकहीथ ने फिर इस्तेमाल करने का फैसला किया था। उसने फौरन पहचान लिया कि ये नये और आश्चर्यजनक रूप से सस्ते सामान जिनके साथ क्रेस्टन अपने बिक्री सप्ताह को फिर से चालू कर रहा है, लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर से आये हैं।

जब वह मैकहीथ की कोठरी में उसके सामने बैठी थी तो सच बताने की हिम्मत उसने शायद ही की। वह दूसरे मामलों पर इतनी देर तक बात करती रही कि वह अन्त में उस पर चिल्ला उठा। इससे पहले कि वह अपना पहला वाक्य ख़त्म कर पाती, वह सबकुछ समझ गया।

गोदामों को खाली करने का ओ'हारा ने एक फायदेमन्द रास्ता ढूँढ लिया था। वह विरोधियों को आपूर्ति कर रहा था।

वह भयंकर क्रोधोन्माद में बह गया।

वह चीखा, 'यह तो युद्ध की पूर्वसन्ध्या पर ग़द्दारी है। और वह भी तब जब मैं यहाँ हाथ-पाँव में ज़ंजीर डाले बैठा हूँ! और मैं यहाँ क्यों बैठा हूँ? मैंने अपने ऊपर इस भयानक शक को क्यों रहने दिया है? एक शब्द बोलूँ, और मैं

यहाँ से आज़ाद होकर चल दूँगा। मैं क्यों नहीं बोल रहा? क्योंकि मैं इसे अपना फर्ज़ समझता हूँ कि मैं इस कारोबार को चलाऊँ और दुश्मन के सामने झण्डा समर्पित न करूँ! क्योंकि मैं उन सब लोगों के बारे में सोचता हूँ जो मेरे बोलने से बरबाद हो जाएँगे। क्योंकि मैं कहता हूँ : भरोसा रखो! फिर मेरे साथ ऐसा सुलूक किया जाता है! अब मैं ग़रीब बी.शॉप मालिक से क्या कह सकता हूँ जब वह मुझसे पूछेगा कि मैं करना क्या चाहता हूँ? वहाँ खड़ा है वह, अपनी आधी खाली दुकान में, बकाया किराए के साथ, बिना माल के, खिड़की में लगी फट्टी महाछूट का ऐलान करती है, उसके पीछे उसका भूख से मरता परिवार है जिसके पास काम करने के लिए कोई कच्चा माल नहीं है। लेकिन फिर भी वह सीधा खड़ा है, संघर्ष में अनथक, आशा से परिपूर्ण, मुझमें भरोसा कायम रखे हुए, महान आदर्श से प्रेरित! और तभी यह आदमी ग़द्दार हो जाता है! मैं उसका कीमा बना दूँगा!'

वह अपनी कोठरी की सीमाओं में ही कई मील चला। मगर अगली सुबह उसने ओ'हारा के ख़िलाफ़ कोई कदम नहीं उठाया।

फैनी ने ग्रूच से कहा, 'यह उसका पुराना ढुलमुलपन है। अफसोस की बात है कि वह इस कदर मिजाज़ पर चलने वाला आदमी है। जब वह निराश हो जाता है तो उसे स्थिति की एक स्पष्ट दृष्टि हासिल करने में हफ्तों लग जाते हैं। वह अपनी निराशा के सामने एकदम हथियार डाल देता है। और फिर वह अपने विचार पर धीरे-धीरे ही लौटता है।'

ग्रूच ने संशयपूर्वक पूछा, 'उसके पास कोई विचार है भी या नहीं? मेरा मतलब है ठोस तरकीब, गोल-मोल सी योजना नहीं। कभी-कभी मुझे डर लगता है कि अगर एक बार उसके हाथ से विचार गया, तो वह तो ख़त्म समझो।'

'हमें उस पर भरोसा करना चाहिए,' फैनी ने शान्त स्वर में कहा।

लेकिन राइड लेन से अवैध आपूर्तियाँ जारी रहीं। मैकहीथ ने उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं किया।

उसकी जगह उसने सी.पी.बी. के दो वकीलों और फैनी की सभा बुलायी और 20 सितम्बर को हुए फैसलों के ऐलान का इंतज़ाम किया, जिसके अनुसार बी.शॉप्स के कर्जों को फौरन इकट्ठा किया जाना था। जाहिर था कि उसने कोई नयी योजना सोच ली थी।

वह ज़्यादा से ज़्यादा ठोस नकद अपने हाथ में सुरक्षित कर लेने के प्रयास कर रहा था। फैनी ने सी.पी.बी. के ऑफिस में काम करके इसमें सहायता की।

उसके विचार सामाजिक कल्याण के थे और बी.शॉप्स की यह बरबादी उसके उसूलों के ख़िलाफ़ थी। मगर वह जानती थी कि यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। उसने दुकानदारों से हर सम्भव कौड़ी तक को निचोड़ डाला। उसे यह बात केवल बाद में समझ आयी कि पैसे का क्या हो रहा है।

एक शाम जब वह सी.पी.बी. में काम से थकी घर जा रही थी, तो उसने अपनी एंटीक की दुकान का दौरा करने का फैसला किया। हालाँकि यह दुकान बन्द होने के बाद का समय था, मगर उसने दुकान में अच्छी-खासी रोशनी देखी। दुकान में कई सज्जन खड़े थे, जिनके बीच में रिगर, वह वकील भी खड़ा था। फैनी का क्लर्क उन्हें किताबें दिखला रहा था।

रिगर ने उसे रुखाई से बताया कि मैकहीथ उस दुकान को बेचना चाहता है। वह इस बात पर अचम्भित लगा कि फैनी इस बाबत कुछ नहीं जानती है। उसे हिस्टीरिया के दौरे पड़े।

मैकहीथ वास्तव में उसे बताना भूल गया था। उसके बारे में वह इतना निश्चित था कि उसने फैनी को यह बताने में कोई आगा-पीछा नहीं किया होता कि उसे उस पैसे की ज़रूरत है जो उस दुकान में अटका पड़ा है। यह उसकी सबसे फायदेमन्द बचत थी। बदकिस्मती से, उसने फैनी से इस बारे में एक भी शब्द नहीं कहा, हालाँकि उस दोपहर वह उसके साथ ही थी।

वह बहुत विक्षोभ में घर गयी।

जब, पहले निर्धारित कार्यक्रम के बावजूद, वह कई दिनों तक नहीं आयी तो मैकहीथ ने उसके नाम एक नियत पत्र लिखा। वह अच्छी तरह समझ सकता था कि उसके साथ क्या बात है, मगर फिर भी उसने अपने आपको माफ नहीं किया। उसकी दूसरी चिन्ताएँ भी थीं। यह फैनी के लिए अच्छा होगा कि वह याद रखे कि वह अभी भी एक *कर्मचारी* है।

मैकहीथ अब जोश के साथ कामों में लगा हुआ था, हालाँकि उसकी आज़ादी और बाधित हो गयी थी।

कई दिनों तक अच्छी-खासी संख्या में लोग उससे मिलने को कह रहे थे; और इन लोगों ने इजाज़त मिलने पर इसका कोई लाभ नहीं उठाया था। और फिर *रिफ्लेक्टर* में इस बात पर रोशनी डालता हुआ एक सनसनीखेज लेख आया कि कितने सारे लोगों को यह इजाज़त मिली। इसलिए ब्राउन को मुलाकातियों की तादाद को थोड़ा सीमित करना पड़ा। इन तरीकों से मि.पीचम जब-तब अपनी उपस्थिति का अहसास करा देते थे।

लेकिन मैकहीथ की कारोबारी कार्रवाइयाँ किसी भी सीमा की इजाज़त नहीं देती थीं।

उसे अचानक दांत दर्द हुआ और ब्राउन ने उसे किसी दंत चिकित्सक को दिखाने की इजाज़त दे दी। चिकित्सा कक्ष के दो दरवाज़े थे। जब पुलिस गलियारे और प्रतीक्षालय की निगरानी करती रही, उस बीच मैकहीथ ढेर सारे लोगों से मिला जिनसे बातचीत करना उसके लिए अनिवार्य था।

उसने दंत चिकित्सक की कुर्सी पर बैठे ढेर सारी औरतों और लड़कियों से बातचीत की, किसी पुलिसवाले के आने की सूरत से निपटने के लिए उसने गले के चारों ओर नैपकिन लपेट रखा था।

पॉली भी वहाँ थी। जब दंत-चिकित्सक नाश्ता कर रहा था तो वह एक डेस्क पर बैठी थी। एक छोटी सी पुस्तिका में उसने मुलाकातियों के नाम और मैकहीथ द्वारा उनको सौंपी गयी धन राशियों को नोट किया। उसने पैसे एक चमड़े के झोले में से निकाले जो वह अपने साथ लायी थी। यह बी.शॉप्स से आया पैसा था। इस संग्रह में कई गुमाश्तों ने मदद की थी।

औरतों ने जाने से पहले छोटी-सी रसीदों पर दस्तख़त किये। वे सब हँसीं; और पॉली भी हँसी। यह बहुत मज़ेदार था।

अगले दिन *रिफ्लेक्टर* के मुखपृष्ठ पर यह सुर्ख़ियाँ आयीं : **शहर की शार्क मछलियाँ अपने दाँतों की मरम्मत करा रही हैं।** लेकिन जो किया जाना था वह पहले ही हो चुका था।

मैकहीथ बहुत सन्तुष्ट था।

उसने लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर से ग्रूच को बुलवाया और उससे सिगार के लिए पूछा-और दंत चिकित्सक की उपस्थिति में यह भी पूछा कि-उसकी राय में गिरोह में कितने लोग धन्धे से थक गये हैं। वह उनको कुछ बदलाव देने के बारे में सोच रहा था।

उसे एक ख़ास तादाद में लोगों की ज़रूरत थी-अगर सम्भव हो तो कुछ औरतों सहित-जो, एक ख़ास दिन उसके लिए ख़रीदारी करने जाते। ब्यौरे बाद में दिये जाते। जो भी इसमें स्वेच्छा से इसमें अपनी सेवा देता वह विशेष रूप से अनुकूल शर्तों पर एक बी.शॉप पाने की उम्मीद कर सकता था। जल्दी ही सी.पी.बी. पहले से कम ऑर्डरों को पूरा कर रही होगी और इसलिए सन्देहास्पद स्रोतों से आने वाले सभी मालों को ठुकरा देगी। दुकानों के सामने एक शानदार

भविष्य था और वे एक नयी जिन्दगी शुरू करने का एक आदर्श जरिया थीं। उसके लिए यह एक खुशी की बात थी कि वह कुछ सक्षम लोगों (अन्य लोगों में उसकी दिलचस्पी नहीं थी) को सामाजिक रूप से इतने फायदेमन्द पेशों में रखने के लिए सक्षम है।

फिर उसने अचम्भित ग्रूच को एक भाषण दिया।

उसने कहा, *'ग्रूच, तुम एक पुराने सेंधमार हो। सेंधमारी तुम्हारा पेशा है। मैं ऐसा कहने के बारे में नहीं सोचूँगा कि तुम्हारा पेशा अपने आप में पुराना पड़ गया है। यह कुछ ज़्यादा हो जाएगा। ग्रूच, केवल यह अपने रूप में समय से पीछे रह गया है। तुम एक कारीगर हो, एक साधारण कमेरे, और इसके लिए बस यही सबकुछ है। वह दर्जा घट रहा है-तुम इससे इंकार नहीं कर सकते। एक तालातोड़ की ब्याज वाले शेयर के सामने क्या बिसात? बैंक की सेंधमारी, एक बैंक को खड़ा करने के सामने क्या है? मेरे प्यारे ग्रूच, एक आदमी की हत्या एक आदमी को रोज़गार देने की तुलना में क्या है? एक मिसाल देखो। कुछ साल पहले हमने लकड़ी के रोड़ों से बनी एक पूरी सड़क ही चुरा ली; हमने खोद-खोद कर रोड़ों को बाहर निकाला, उसके एक ठेले पर चढ़ाया और उसे ले गये। हमने सोचा कि हमने कोई शानदार काम किया है। असल में, हमने सिर्फ एक फालतू काम किया था, और एक फालतू ख़तरा उठाया था। कुछ समय बाद ही मैंने सुना कि आपको खुद ठेकों का इंतज़ाम करने के लिए सिर्फ शहर का सभासद बनना होता है। फिर आपको फलाँ-फलाँ सड़क का ठेका मिल जाता है और कइ सालों तक बिना कोई ख़तरा उठाए पक्के तौर पर मुनाफ़ा भी। एक दूसरे मौक़े पर मैंने एक ऐसा घर बेच डाला था जो मेरा नहीं था; वह उस वक्त खाली था। मैंने एक सूचना लगा दी : बिकाऊ है। ख़रीदने के लिए एक्स.एक्स के पास दस्तखत करें। वह मैं था। बचकानापन! वह वाकई अनैतिक था क्योंकि यह गैर-कानूनी तरीकों और जरियों का बिला वजह फायदा उठा रहा था। यह काम उतनी ही आसानी से कुछ रद्दी और बेढंगे बने मकानों को बनवाकर, उन्हें किश्तों में बेचकर और, खरीदारों के कंगाल हो जाने का इंतज़ार करके भी किया जा सकता था! और फिर आपके पास घर भी हैं और आप जब भी जितनी बार चाहें उतनी बार इस प्रक्रिया को दोहरा सकते हैं और यह सबकुछ पुलिस को दखल देने का कोई बहाना दिये बगैर किया जा सकता है! मिसाल के तौर पर, अपने ही धन्धे को लो : हम वह माल पाने के लिए दुकानें तोड़कर उसमें घुसते हैं जिसे हम बेचना चाहते हैं। क्यों? जब दुकानें गैर-किफायती ढंग से चलने से दीवालिया हो जाएँ, तो हम उनके माल पूर्ण*

रूप से कानूनी तौर पर उनसे सेंधमारी में आने वाले ख़र्चे से कम दाम पर ख़रीद सकते हैं! और फिर, अगर तुम ऐसी चीज़ों की दुकान लगाते हो, तब भी हमारे पास उतने ही चुराए सामान होते हैं जितना सेंधमारी करने पर होता, क्योंकि आखिर दीवालिया दुकानों के वे सामान उन लोगों से ही छीने गये होते हैं जो उन्हें बनाते हैं या खरीदते हैं, और जिन्हें बताया गया होता है : काम करो या ज़िन्दा रहो! आजकल आपको कानून के भीतर रहकर ही काम करना पड़ता है; इसमें भी उतना ही मज़ा आता है! मैं भी कई बार बेल्जियम से वापस आया हूँ, और मैंने नरम हैटों वाले भ्रदजनों को अपने चेहरों पर पट्टियाँ बाँधकर पीछे छोड़ा है जो जहाज़ से तट पर आने वाली सीढ़ियों पर खड़े रहते हैं। मगर सी.पी.बी. की इस योजना के सामने वह क्या है? बच्चों का खेल? आज के इस युग में आप ज़्यादा शान्तिपूर्ण तरीके इस्तेमाल करते हैं। हिंस्र शक्ति का उपयोग पुराना पड़ चुका है। हत्यारों को क्यों भेजें जब आप न्यायचारियों को काम पर लगा सकते हैं? हमें निर्माण करना होगा, ध्वंस नहीं; मतलब, हमें मुनाफे के लिए निर्माण करना चाहिए।'

अधखुली आँखों से वह ग्रूच पर ग़ौर कर रहा था। ग्रूच से समझौता करके वह फैनी को शान्त करने की उम्मीद में था।

उसने बोलना जारी किया, 'मैं अपनी ख़रीदारी वाला पूरा संगठन बन्द और तुम्हारे सहित, सभी कर्मचारियों को बर्खास्त करने की सोच रहा था। मगर शायद तुम्हें बर्खास्त करने से बचा जा सकता है। तुम्हारे ख़याल से कितने कर्मचारी ख़ाली होने वाली कई बी.शॉप्स में से कुछ को खरीदने के लिए पर्याप्त पूँजी इकट्ठा कर सकते हैं? मेरे लिए एक सूची बनाओ। इस तरह से मैं अभी भी लड़कों का कुछ इस्तेमाल कर सकता हूँ। उन्हें सीधे सड़क पर फेंक देने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम फैनी से पूछ सकते हो कि वह किनको ज़्यादा भरोसेमन्द समझती है; उनके प्रति वह हमेशा नरम रुख़ रखती है। समझे ग्रूच, मैं सुधर रहा हूँ। मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए बुलाया क्योंकि तुम एक काबिल इंसान हो; क्योंकि यहाँ ऐसे लोग भी हैं जो समय के इशारे नहीं समझ सकते और जो, इस वजह से प्रगति चक्के तले कुचल दिये जाएँगे।'

ग्रूच धैर्यपूर्वक सुनता रहा और उसने समय के इशारे समझने के प्रत्यक्ष प्रयास किये। फिर वह ओ'हारा के बारे में कुछ बुदबुदाया।

मैक ने खिन्न स्वर में कहा, 'ओ'हारा? वह हमेशा औरतों के बारे में सोचता रहता है। मैं बिल्कुल यकीन के साथ कह सकता हूँ कि उसकी मालों की रसीदें

उतनी सावधानी के साथ व्यवस्थित नहीं होंगी जितनी होनी चाहिए। और एक बढ़िया दिन पुलिस उससे सवाल करने आएगी-तब क्या करेगा?'

उसने ग्रूच के साथ एक बढ़िया समझदारी बना ली। अगले कुछ सालों के दौरान ग्रूच ने दक्षिण लंदन में दुकानों के लिए ख़रीदारों के काम का प्रबन्ध कुशलता और ईमानदारी के साथ किया।

क्रेस्टन का बिक्री सप्ताह

सर्दियों के एक अच्छे से दिन क्रेस्टन ने इकाई कीमतों की घोषणा के साथ अपना बिक्री सप्ताह शुरू किया।

दुकान खुलने के तय वक्त के दो घण्टे पहले, सात बजे ही दरवाज़ों के बाहर लोहे की जाली के सामने भारी भीड़ इकट्ठा हो गयी। इस भीड़ में कोई असामान्य बात नहीं थी-सिवाय, शायद इस बात के कि उसमें तुलनात्मक रूप से पुरुष ज़्यादा थे।

भव्य उद्‌घाटन के लिए मिलर बन्धु और नेशनल क्रेडिट बैंक के हॉथॉर्न ने वहाँ उपस्थित होने की कृपा की। लम्बे सूखे हुए और मज़बूत मि.क्रेस्टन के साथ वे विलासमय मुख्य व्यवसाय स्थान के कार्यालय में बैठे थे। ये बुड्ढे बुरी तरह नरभसाए हुए थे। क्रेस्टन बिल्कुल शान्त था। उसकी तैयारियाँ बड़ी सावधानी से हुई थीं। उसका स्टाफ कीमतों की उनकी चार श्रेणियों में जगह बदलने का काम पिछली रात देर तक करता रहा था। नौ के घण्टे के साथ दरवाज़े खुले और जनता लहरों की तरह अन्दर उमड़ चली।

एकदम शुरुआत से ही सारी क्रेस्टन की दुकानों में कई बेहद असाधारण घटनाएँ घटीं। जनता ने काफी अजीब तरह से बर्ताव किया।

अभी लोगों को अन्दर घुसने ही दिया गया था कि वे पागलों की तरह ख़रीदने लगे। किसी ने चुनने की भी ज़हमत नहीं उठाई। सबसे करीब वाले काउण्टर से ही ख़रीदारी शुरू हो गयी और अन्दर आगे वाले काउण्टरों की और बढ़ती गयी। बिना हिचकिचाए लोगों ने एक ही जैसे सामानों के अम्बार बटौर लिये। उन्हें झोलों में, और यहाँ तक कि दुपट्टों में भरा, और अच्छे-ख़ासे मूल्यांकों वाले सिक्कों से कीमत अदा की और तेज़ी से चले गये-कई मिनटों बाद खाली हाथ फिर से आने के लिए।

क्रेस्टन को जल्दी ही समझ में आ गया कि क्या हो रहा है। ये कोई साधारण ग्राहक नहीं थे; वे कोई शक्की, नकचढ़े, दुश्मनाना लोग नहीं थे जो आखिरी फैसला लेने से पहले घण्टों तक उठाते और चुनते हैं। ये लोग अपनी कुहनियों का बेरहमी से इस्तेमाल कर रहे थे और ज़्यादा हुज्जती ग्राहकों को धकिया कर काउण्टरों से बर्बरता से दूर कर रहे थे और कुल मिला कर एक आतंक का राज्य कायम कर रहे थे।

बिक्री वाला स्टाफ जो अब मुनाफे में हिस्सेदारी के नये नियम का आनन्द उठा रहे थे, माँग पूरी करने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे। गालियों के साथ सामान उनके साथ से छीन लिये जा रहे थे। केवल नकद डेस्क पर ग्राहक ज़्यादा तुनकमिजाज़ी दिखला रहे थे। वे मुहर लगी रसीद लेने पर ज़ोर दे रहे थे।

क्रेस्टन ने पुलिस बुला ली। वे आये और उन्होंने अपने आप को सहमत किया कि जनता की ओर से अपवादस्वरूप तगड़ी माँग है। उन्होंने कई बदमाश और अवांछित तत्वों को भी भीड़ में देखा। लेकिन इस असामान्य स्थिति के चलते वे हस्तक्षेप नहीं कर पा रहे थे। जनता को नकद के बदले सामान ख़रीदने से लाठियों से शायद ही रोका जा सकता था।

फिर क्रेस्टन ने जो इस बीच अपनी अन्य दुकानों का दौरा कर चुका था और वही चीज़ें वहाँ भी होते देख आया था, कुछ घण्टों के लिए अपने दरवाज़े बन्द कर दिये। मगर जब पत्रकार स्पष्टीकरण माँगते वहाँ पहुँचे तो उसने दरवाज़े फिर से खोल दिये।

सुबह और दोपहर और देर शाम को पॉली और ग्रूच एक छोटे-से शराबख़ाने में बैठे सामानों की रसीदें लेते रहे। वे भारी मात्रा में थे।

शाम के अखबार में क्रेस्टन ने पढ़ा कि उसका बिक्री सप्ताह ज़बर्दस्त तरीके से कामयाब रहा है और जनता-जनार्दन ने उसके बड़े-बड़े स्टॉक पहले ही दिन साफ़ कर दिये हैं।

उसकी दुकानों का अन्दरूनी हिस्सा ऐसा लग रहा था मानो वहाँ से कोई तूफान गुज़रा था। ऐसा लग रहा था मानो सबकुछ खा जाने वाली टिड्डियों का एक विशालकय दल सबकुछ चट कर गया हो। वह इस परिघटना को समझ नहीं पा रहा था।

शाम हो रही थी, जब मालों से ऊपर तक लदे हुए हाथ वाले ठेले और गाड़ियाँ लोवर ब्लैकस्मिथ स्क्वायर के कुछ निश्चित गोदामों की ओर लुढ़क रहे थे, ठीक उसी वक्त मैकहीथ अपनी कोठरी में ओ'हारा से मिला। उसने उसे शान्त

स्वर में बताया, 'मैं स्वतन्त्रता और पहल को पसन्द करता हूँ। क्रेस्टन को उस गैर-बिकाऊ माल की पेशकश करने का तुम्हारा आइडिया शानदार था। हम बिना रसीद के उनसे कभी पिण्ड नहीं छुड़ाते। और अब हमारे पास रसीदें हैं। क्योंकि जैसा कि तुम जानते हो, मैंने उन मालों को फिर से वापस ख़रीद लिया है। पैसा कहाँ है?'

ओ'हारा अवाक् रह गया था। वह टाल-मटोल करने से परे था। उसे क्रेस्टन से रुक्के मिले थे जो उसने मैकहीथ के हवाले कर दिये। मालों की रसीदें न क्रेस्टन द्वारा माँगी गयी थीं न प्राप्त की गयीं थीं।

मैकहीथ के छोटे-से भाषण के बाद ओ'हारा ने अपनी स्थिति स्पष्ट करने के और प्रयास नहीं किये। वह मैकहीथ पर निर्भर था और मैकहीथ उस पर। यह वह संयोग की बात थी कि मैकहीथ ने इस बाबत बात की, वरना वह खुद ही इसका ज़िक्र करता। कोई भी इसकी उल्टी बात साबित नहीं कर सकता था। किसी और चीज़ की कल्पना करना भयावह होता। वाकई, यह बहुत भयावह होता।

जब ओ'हारा चला गया-और वह चुपचाप थोड़ी देर और बैठा रहा-तब मैकहीथ ने ब्राउन को सन्देश भेजा कि वह उसके पास आए।

उन्होंने पानी मिली शराब और सिगार पी। मैकहीथ तख्त पर बैठा उस कालीन पर जूते की नोक से सिलवटें डाल रहा था जिसे ब्राउन उसके लिए फिर से लेता आया था। उसे शुरुआत करने में दिक्कत हो रही थी। आख़िरकार उसने यह जोखिम का काम शुरू कर ही दिया।

'तुम्हें याद है कि तुमने गर्मियों में मुझसे उस वक्त क्या कहा था जब हम लिवरपूल वाले मामले के बारे में बात कर रहे थे? तुमने कहा था कि तुम मुझे सही रास्ता दिखलाओगे। उस वक्त से मुझे समझ में आया कि तुम्हारा क्या मतलब था। मुझे अपने गुज़रे कल से अलग हो जाना चाहिए, यह बात मेरे ज़ेहन में ज़्यादा से ज़्यादा साफ़ होती जा रही है। जब मैं रातों को जागता हूँ, तो मैं तुम्हारे शब्दों के बारे में सोचता हूँ और अपने कमज़ोर पक्ष से लड़ता हूँ।'

उसने एक भावनात्मक विराम दिया। ब्राउन थोड़ा-सा आकुल दिखलायी पड़ा।

उसने असुविधाजनक ढंग से कहा, 'भूलना मत कि मैंने तुम्हें पैसों से मदद की, जो अभी भी तुम्हारे पास है।'

मैकहीथ ने दर्द भरी आवाज़ में कहा, 'मैं तो यह कहूँगा कि हम अभी पैसों

का ज़िक्र न करें। तुम्हारा पैसा सुरक्षित है, यह उतना ही निश्चित है जितना यह कि मुझे मैकहीथ कहते हैं।'

'और मैं यह कहूँगा कि तुम मज़ाक करना बन्द करो, मैक,' ब्राउन ने गुस्से में आकर कहा।

मैकहीथ ने बिना किसी बेचैनी के बोलना जारी रखा :

'मैं उन शब्दों को भी याद कर सकता हूँ जो तुमने इस्तेमाल किये थे, इतनी स्पष्टता के साथ कि मानो तुमने कल ही उन्हें बोला हो। तुमने कहा था कि तुम्हें इस ओ'हारा को छोड़ना ही होगा। तुम्हें अपने आपको एक अलग माहौल में रखना होगा। तुमने कहा था कि तुम मुझे ऐसा करने का वक्त दोगे। और अब मैं उस हद तक आ चुका हूँ।'

उसने उत्सुकता से ब्राउन की ओर देखा।

'मेरी ख़रीदारी व्यवस्था में अनियमितताएँ हुई हैं। शक की सुई मेरे कर्मचारी ओ'हारा की ओर जाकर रुक रही है। क्या तुम उसे जानते हो?'

'क्या किसी ने तुम्हारे साथ धोखा किया है?'

'नहीं, सीधे-सीधे नहीं। लेकिन उन मालों के मामले में कुछ बहुत सन्देहास्पद बात है जो मेरी और आरों की दुकानों पर भी पहुँचने वाले थे। ऐसा लगता है कि सारी रसीदें खो गयी हैं। मुझे मामले की जाँच-पड़ताल करनी ही होगी। नहीं तो आरों जाँच की माँग करेगा और फिर वह मेरे ख़िलाफ़ जाएगी। समझे तुम?'

'समझा। मगर यह ओ'हारा बहुत बदमाश ग्राहक है। वह तुम्हें इसमें न घसीटे इसकी गुंजाइश कम ही है।'

मैकहीथ ने विचारमग्न होकर कहा, 'शायद, शायद वह मुझे इसमें *नहीं* घसीटेगा। उसके पास कुछ चीज़ों की रसीदें हैं। और वे सी.पी.बी. की देख-रेख में हैं। उसे फैनी सम्भाल रही है।'

'आह!' ब्राउन बुदबुदाया।

'हाँ,' मैकहीथ ने राहत के साथ कहा।

'और इस बीच मुझे क्या करना है?' ब्राउन ने पूछा।

'शायद तुम उसके बारे में कुछ और खोज सकते हो। कोई न कोई ऐसी चीज़ ज़रूर होगी जो उसके ख़िलाफ़ जाए जिसे बाद में हम छोड़ दें, जो इस पर निर्भर करता है कि वह औक ात में आता है या नहीं।'

'यह काम तो निश्चित रूप से किया जा सकता है, ग़द्दार मुझे भी नहीं पसन्द हैं,' ब्राउन ने कहा।

मैकहीथ ने जोड़ा, 'और उसकी आदतें बहुत घृणास्पद हैं। वह हमेशा औरतों के पीछे भागता रहता है। मैंने उसे सिर्फ़ उसकी उपयोगिता की वजह से रखा था। मगर अब मेरे धैर्य का प्याला छलक चुका है।'

वे कुछ देर तक बैठकर सिगार पीते रहे।

फिर ब्राउन चला गया।

मैकहीथ धीरे-धीरे सोने चला गया। वह अभी भी चिन्तित था।

12

बिना आग के धुँआ नहीं उठता।

(पुरानी कहावत)

क्या मि. मैकहीथ मैरी सॉयर के गुनहगार हैं?

मैरी सॉयर की मौत को लेकर जो सनसनी थी उसने मि.मैकहीथ को ज़्यादा से ज़्यादा परेशान करना शुरू कर दिया था।

पीचम के वकील, वैली, ने सभी बी.शॉप मालिकों की एक बैठक बुलाई थी। वे एक चौथे दर्जे के रेस्तराँ के पीछे वाले कमरे में मिल थे। और उन्होंने कई अनिष्टकारी योजनाएँ रची थीं।

इस केस ने बी.शॉप मालिकों की हालत का खूब प्रचार कर दिया था। उस मोटे वकील ने घायल परचूनियों की एक यूनियन बनाने का आह्वान किया। उसने ख़बर दी कि हत्या के आरोपी के पास जेल में फारसी कालीन वाला एक शाही कमरा है।

एक पतले-दुबले, क्षय रोगी जूता बनाने वाले ने मैकहीथ और मार दी गयी औरत के बीच की असामान्य 'दोस्ती' का हवाला दिया और उग्रता के साथ मालिकों और स्त्री कर्मचारियों के बीच सम्बन्ध की जाँच की माँग की। इस दिशा में, उसने घोषणा की, कि शक्ति का *दुरुपयोग* किया जा रहा है!

ज़्यादा जागरूक सदस्यों में से कुछेक ने संयत व्यवहार की वकालत की।

एक बूढ़ी औरत ने सुझाव दिया कि मैकहीथ के सारे करारों को फैसले का ऐलान होने तक टाल दिया जाना चाहिए और यह कि उन्हें उसे अक्टूबर के किराए देने को बाध्य करना चाहिए। उसे सिर्फ एक समर्थक मिला जिसने इन कदमों का इसलिए समर्थन किया क्योंकि ये 'मि.मैकहीथ को दिखला देंगे कि वे उस पर से सारा भरोसा खो चुके हैं।'

मगर ज़्यादा जागरूक लोगों के हिस्से के नुमाइंदे उस दिन पर छाए रहे। यह फैसला हुआ कि आर्थिक मुद्दों को बहस से बाहर ही रखा जाय; क्योंकि उनका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं था और वे सिर्फ वहाँ मौजूद उच्च नैतिक दृष्टिकोण वाले लोगों को पूर्वाग्रह ग्रसित करेंगे। यह फैसला एकमत से अपनाया गया। वह बूढ़ी औरत भी सहमत हो गयी।

इस प्रकार आर्थिक मुद्दों का ज़िक्र नहीं हुआ। ग़रीब लोगों को अपने ख़ात्मे को काफी ऊँचे स्थान से देखने का बेहद शौक होता है।

इसलिए यह तय हुआ कि छोटे परचूनियों की असुरक्षा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी जाय और हत्यारे को 'उसके वर्ग या पद पर ध्यान दिये बिना' निमर्म सज़ा दी जाय।

फिर भी इन सबके बावजूद इस बैठक का नतीजा मैकहीथ के लिए प्रतिकूल था। उसके विरुद्ध भावना सामान्य तौर पर बढ़ी।

बच्चों का चित्र अखबार में आया। एक तस्वीर में वह तख्ती भी दिखलायी पड़ी जिस पर लिखा था : 'यह दुकान एक सैनिक की पत्नी द्वारा चलायी जाती है।'

पीचम खुद से ही आगे निकल गये जब उन्होंने हर बी.शॉप के सामने एक भिखारी, एक भूख से पीड़ित दयनीय जीव को बैठा दिया और उसके गले में यह घोषणा टाँग दी : 'अगर आप यहाँ ख़रीदते हैं तो आप *मेरी* दुकान में ख़रीद रहे हैं।' दुकान के मालिकों ने इसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं किया, और अखबारों ने इसे छापा।

भारी-भरकम काली सुर्खियों में यह सवाल पूछा गया था : **क्या मैकहीथ मैरी सॉयर की मौत के लिए ज़िम्मेदार है?**

ऊपर से मैकहीथ के सामने यह समस्या भी थी कि उसे अपराध के समय कहीं और होने के बहाने को बताये बिना इस कानूनी कार्रवाई से निपटना था।

सबकुछ इस बात पर निर्भर करता था कि मैरी द्वारा खुदकुशी के विचार

को पर्याप्त विश्वस्नीय बनाया जा सकता है या नहीं।

उसने डेढ़ सदी को औक ात में ला दिया था और क्रेस्टन को अभियोग में फँसाने लायक सामग्री उसके पास थी। मगर बैंक में घुसने के लिए आवश्यक औपचारिकताएँ समय ले रही थीं और वह उस सामग्री को क्रेस्टन के ख़िलाफ़ कारगर ढंग से तब तक इस्तेमाल नहीं कर सकता था जब तक वह बैंक के निदेशकों के बोर्ड में नहीं बैठ जाता।

लेकिन अन्यत्र होने के बहाने को खोलने से तभी बचा जा सकता था जब मैरी सॉयर की आत्महत्या साबित हो जाए। दूसरी तरफ आत्महत्या का मामला बी.शॉप्स की बेहद ख़राब हालत को साबित कर देगा।

मजिस्ट्रेट के सामने सुनवाई के पहले वाली शाम ब्राउन उसकी कोठरी में आया और उसने अफसोस के साथ मैकहीथ को बताया कि वे आदमी जिन्होंने मैरी को उसकी मौत से ठीक पहले अकेला देखा था, वे प्रत्यक्ष रूप से हवा में ग़ायब हो गये हैं। ब्राउन ने उन्हें ढूँढने की हर सम्भव कोशिश की थी। कोई न कोई ज़रूर उन्हें लेकर चम्पत हो गया है। वैली ने उसे (ब्राउन को) खींसें निपोरते हुए सुझाया था कि उन दोनों ने पुलिस से झूठ बोला होगा और अब वे शपथ लेकर अपना बयान देने से डर गये हैं। तो मैकहीथ आसानी से अन्दाज़ा लगा सकता था कि इन गवाहों के ग़ायब हो जाने के लिए कौन ज़िम्मेदार है। शायद वे अब उसी होटल में रह रहे होंगे जिसमें फ्यूकूम्बी ठहरा हुआ है।

मैकहीथ ने ब्राउन से कहा, जो खिन्नता के साथ उसे सुन रहा था, *'यह अच्छी बात नहीं है, तुम्हारी वफादारी का क्या फायदा अगर सवाल कदम उठाने का ही आ जाय। तुमसे मुझे बूढ़े स्किलर की याद आती है जो दुनिया में सबसे अधिक इच्छा शक्तिवान था, और जो एक आत्मा को इसलिए धोखा नहीं दे पाया था क्योंकि उसके पास वह क्षमता नहीं थी। वह हमेशा अपने दुश्मनों को पटकने के लिए तैयार रहता था, बस वह कभी भी बहुत देर हो जाने से पहले उन्हें पहचान नहीं पाता था; चार रात्रि पहरी भी उसे डरा कर भगा नहीं सकते थे, मगर वह अपने औज़ार हमेशा घर पर भूल आता था! तुम बिल्कुल वैसे ही हो। जब तुम सेना में मेरे साथ गुज़रे वक्त को याद करते हो तो मेरी मदद के लिए आने में तुम ज़रा भी नहीं हिचकिचाते। मगर बदकिस्मती से मैं कभी पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि तुम कुछ घर नहीं भूल आए होगे। यह बहुत बड़ी नाकामयाबी है, फ्रेडी! निश्चित रूप से, तुम्हारी सेवा सरकार के लिए है, लेकिन दुख की बात यह है कि जो भी सरकार की सेवा में आते हैं वे ज़्यादातर वे लोग होते हैं जो*

खुले बाज़ार में अपनी जगह ही बचा पाने में नाकाबिल होते हैं। मिसाल के तौर पर, इसलिए आप इन न्यायाधीशों को बेहद नेक इरादों से भरा पाते हैं, मगर अक्ल की उनमें थोड़ी कमी होती है। वे दलिद्दरों और कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ सख़्ती से कानून लागू करने को हमेशा तैयार रहते हैं, मगर वे उनके कैरियरों को छोटा करने, ठीक से उनका मुँह बन्द करने, और संक्षेप में, उनकी गर्दन फाँसी के फन्दे में डालने में बिरले ही कामयाब हो पाते हैं! दूसरी तरफ, वे इस बात को, काफी स्पष्टता के साथ, समझते हैं कि फलाँ-फलाँ प्रतिवादी उनके वर्ग से सम्बन्ध रखता है, और उनके साथ हमदर्दी रखते हैं; मगर कानून को उपयुक्त ढंग से लागू करने और जिस उद्देश्य से वह बना है, उसे ठीक उसी तरह से लागू करने की शुद्ध अक्षमता के चलते और अक्सर कल्पना की अतिसिद्धान्तवादी कमी के कारण भी, वे उसे बचाने में काफी अक्षम साबित होते हैं, और अगर वे उसे बचा भी लेते हैं तो उनकी यह अकुशलता हमारी कानून व्यवस्था को पूरी तरह से भ्रष्ट और बेईमान दिखला देती है। जबकि, उल्टे यह व्यवस्था सम्पूर्ण, इस उद्देश्य के लिए बिल्कुल आदर्श है, और इसे समझदारी और तर्कपरता के साथ लागू किया जाना चाहिए ताकि किसी का बाल भी बाँका न हो। हम जैसे लोगों के लिए जो परेशानियों से बचना चाहते हैं, कानून को तोड़ने-मरोड़ने की कोई ज़रूरत नहीं, इस्तेमाल करने के लिए यही काफी है! ओ फ्रेडी, तुम मेरे लिए बहुत अच्छे हो; मैं यह जानता हूँ। मगर तुम बहुत चालाक नहीं हो!'

वे बीते कल की पुरानी यादों को ज़िन्दा करते हुए देर रात तक बैठे रहे। और ब्राउन जाने से ठीक पहले ही अपने दोस्त के सामने यह स्वीकार करने की हिम्मत कर पाया कि उसकी कर्मचारी फैनी क्राइस्लर तक उसके ख़िलाफ़ गवाही देने जा रही है।

कार्रवाई एक खुशनुमा हवादार कमरे में हुई। मजिस्ट्रेट चौड़ी नीली आँखों वाला एक छोटा-सा चीमड़ आदमी था, जो सफेद पर्दों और सफेदी की गयी दीवारों वाले चमकदार, सुन्दर कोट से पूरी तरह मेल खा रहा था।

मेडिकल अफसर और पुलिस के बयानों ने ज़्यादा वक्त नहीं लिया। कार्रवाई जल्दी ही मैकहीथ पर केन्द्रित हो गयी जिस पर दुकानदार मैरी सॉयर के कत्ल का गहरा शक था।

पीचम द्वारा सहायता प्राप्त वैली मृत औरत के बच्चों की नुमाइन्दगी कर रहा था। मैकहीथ का बचाव रिगर और विद कर रहे थे। उसने अपना पेशा एक 'थोक व्यापारी' के रूप में बताया।

जब उससे पुरानी सज़ाओं के बारे में पूछा गया तो उसने एक छोटी-सी ग़लती कर दी। उसे यह अहसास हुआ कि उसे पहले कभी सज़ा नहीं मिली और उसने कहा :

'कोई नहीं।'

वैली ने खट से उसे पकड़ लिया।

'क्या आपको तीन साल पहले सज़ा नहीं दी गयी थी, और एक पाउण्ड जुर्माना नहीं लगा था?'

मैकहीथ ने अप्रिय रूप से अचम्भित होकर कहा, 'मुझे याद नहीं आ रहा।'

'आह! आपको याद नहीं आ रहा। आपको याद नहीं आ रहा कि आपने लाईसेंस कानूनों का उल्लंघन किया था? आपने उल्लंघन किया था मगर आपको याद नहीं आ रहा। तो मुझे बताने दें : आपको पहले एक सज़ा मिल चुकी है।'

रिगर व्यंग्यात्मक ढंग से हँसा।

'लाईसेंसिंग कानूनों के उल्लंघन के लिए सज़ा मिली! यही सज़ा तुम्हें मिल ही सकती थी मैकहीथ!'

वैली फिर खड़ा हुआ :

'अपराध की प्रकृति अहम नहीं है, बल्कि यह उल्लेखनीय तथ्य है कि आरोपी ने यह तथ्य छिपाने की कोशिश की कि वह इसके लिए अपराधी ठहराया गया था और उसे सज़ा भी मिली थी। इस पूरे मामले के मामूलीपन से ही साबित होता है कि ऐसी किसी भी चीज़ की छिपाना मैकहीथ का दूसरा स्वभाव बन गया है, जो उसे कुख्याति दिलाए। इस कार्यवाही के दौरान ऐसी ही कई और घटनाएँ सामने आएँगी।'

रिगर इस हमले का विरोध करने ही वाला था, मगर विद ने उसे कमीज़ की बाँह से पकड़ा और वापस खींच लिया।

वह एक मोटा आदमी था और बचाव कैसे किया जाय इस बाबत उसके कुछ अपने सिद्धान्त थे। मगर वह रिगर से कोई समझौता कर पाने में असफल रहा था। वह आत्महत्या साबित करना चाहता था, जबकि रिगर कुछ व्यक्तियों द्वारा या अंजान व्यक्तियों द्वारा कत्ल की बात साबित करना चाहता था। जो भी हो अन्यत्र होने के बहाने का इस्तेमाल नहीं किया जाना था।

बदकिस्मती से, ऐसा लगता था कि वैली को इस केस को बेहद उग्रता के साथ लड़ने को कहा गया था, जैसा कि उसकी शुरू की बातों से ही दिख रहा था।

वे दो लोग जिन्होंने नौ बजे के आस-पास गोदी की तरफ एक औरत को देखा था, निश्चित रूप से खो गये थे, लेकिन, वे भिखारी जिन्होंने आरोपी को मैरी सॉयर के साथ टहलते देखा था, वहाँ मौजूद थे। उनमें से एक, स्टोन नाम का एक बुड्ढा, कुछ यूँ बोला :

'मैं साफ़ तौर पर उस आदमी को याद कर सकता हूँ जो उस लड़की के साथ था। वह वहाँ पर बैठा है। हम लोगों को बड़े ध्यान से देखते हैं। वह उन लोगों में से है जो एक टका देने से पहले तीन बार अपनी जेबें झाड़ते हैं। और वे ऐसा भी इसलिए करते हैं क्योंकि एक महिला उनके साथ होती है। उसने एक पर्याप्त छोटा सिक्का ढूँढने में इतना वक्त लगाया कि मैंने उससे कहा : शायद आप पहले घर जाएँ और उस आधी कौड़ी के लिए सबकुछ उतिन-पतिन करें जो शायद ग़लती से सोफा के पीछे गिर गया हो, श्रीमान। मैं यह सब ऐसे याद कर सकता हूँ मानो कल की ही बात हो। ऐसा लगता था कि उसकी जेब में सिर्फ एक पाउण्ड के सिक्के थे। लेकिन तभी उसे एक टका मिल गया।'

कोर्ट हँसा। रिगर ने अपने ब्रीफकेस से एक अखबार निकाला और उसे जूरी के हवाले कर दिया। उसमें दुकान की एक खिड़की की तस्वीर थी जिस पर सैनिकों के सम्बन्धियों को छूट दिये जाने की घोषणा करने वाली एक तख्ती लगी थी।

रिगर ने उत्तेजित होकर कहा, 'यह तस्वीर हमारे विरोधियों ने छपवायी है। मैं आपसे पूछता हूँ कि, एक आदमी जिसे सामाजिक दायित्व का कोई बोध न हो, ऐसा बर्ताव करता है?'

वैली ने सिर्फ यह कहकर सन्तोष कर लिया कि वह मि.मैकहीथ के सामाजिक दायित्वबोध पर बाद में कुछ रोशनी डालेगा। पिछले छोटे से घटनावृत्त से यह स्थापित हो गया कि मि.स्टोन ने आरोपी को पहचान लिया है। निश्चित रूप से, एक लखपति के रूप में मैकहीथ कानूनी तौर पर भिखारियों को पतलून के बटन देने के लिए अधिकृत थे-सवाल सिर्फ यह था कि, वह इन बटनों को कहाँ से प्राप्त करते हैं।

यह मैकहीथ के व्यापार के तरीकों को दिया जाने वाला पहला झटका था, और मैकहीथ काफी बेचैन हो गया।

उसने तीखेपन के साथ कहा : बटन फैक्टरी में बने थे।

वैली ने दबदबे वाले हाव-भाव के साथ कहा कि सवाल यह है कि बटन के निर्माताओं को अपने माल की पूरी कीमत मिली या नहीं।

अब रिगर उछल पड़ा और उसने पूछा कि क्या कोर्ट कम्युनिस्ट प्रचार को बर्दाश्त करने को तैयार है।

मजिस्ट्रेट ने दोनों पक्षों को शान्त किया। गवाह के बयान का निचोड़ यह था कि उसने आरोपी को अपराध वाली शाम को मैरी सॉयर के साथ वाले आदमी के रूप में पहचान लिया था।

रिगर ने उस गवाह पर बाद में वापस आने का वादा किया और इस तथ्य की ओर ध्यान खींचा कि उसकी गवाही दो गोदी कर्मचारियों की गवाही से मेल नहीं खा रही है। उसने उस इंस्पेक्टर को बुलाया जिसने उन दोनों आदमियों से पूछताछ की थी जो यहाँ मौजूद नहीं थे। उन्होंने पक्के तौर पर एक औरत के बारे में बताया था जो अकेली थी।

'कौन-सी औरत?' वैली जानना चाहता था।

इंस्पेक्टर ने माना कि मृत औरत की तस्वीर उन दोनों को नहीं दिखलायी गयी थी।

वैली ने विजयी मुद्रा में हाथ खड़े कर दिये।

उसने किलकारी मारी, 'क्या गवाह है! उन्होंने किसी ऐरी-गैरी औरत को गोदी पर अकेले टहलते देखा! मानो एक से ज़्यादा औरतें वहाँ हों ही नहीं!'

उसके इशारे को देखकर गवाह कक्ष से एक औरत प्रकट हुई जो साफ़ तौर पर सबसे निकृष्ट कोटि से आती थी। उसी शनिवार वह उस घाट के किनारे टहल रही थी। उसने कहा कि वह एक वेश्या है और उसका इलाका वही गोदी है। उसे कोई खाली नहीं मिला था। यह एक गया-बीता इलाका था। वह खुद वहाँ इसलिए काम करती थी क्योंकि गोदी पर रोशनी की व्यवस्था घटिया थी और उसके चेहरे पर एक चकत्ता था।

रिगर ने पूछा कि क्या वह इलाका एक अकेली औरत के लिए वहाँ मंडराने वाले अरुचिकर तत्वों के चलते बेहद असुरक्षित नहीं था।

उसने कहाः

'हमारे लिए नहीं है।'

वैली ने समझाया, 'वहाँ पर औरतें अपने साथ ज़्यादा पैसे लेकर नहीं चलतीं।'

रिगर ने अड़कर कहा, लेकिन वहाँ हत्याएँ भी हुई हैं।

गवाह ने शान्त स्वर में कहा, 'वह ख़तरा तो हमें हर जगह होता है।'

वेश्याओं के बीच प्रतिस्पर्द्धा की मौजूदा स्थिति क्या है? रिगर ने पूछा। क्या

ग्राहकों को लेकर लड़कियों के बीच काफी ईर्ष्या नहीं होती? और अन्त में वहाँ के मर्दों के कोई भी पापपूर्ण इरादे हों, लड़कियाँ उन्हें शुद्ध रूप से अपने सम्भवित ग्राहक के रूप में देखती हैं?

'हमारे इलाके बंधे होते हैं,' गवाह ने कहा।

'और तुम्हारे पास भी अपने रक्षक होंगे।'

'नहीं हैं मेरे पास।'

'क्यों नहीं?'

'क्योंकि मैं बहुत थोड़ा कमा पाती हूँ।'

'अरे छोड़ो, छोड़ो, गधे भी दूध देते हैं। यहाँ हमसे झूठ बोलने की कोशिश मत करो। और ये रक्षक सिर्फ ग्राहकों के ख़िलाफ़ ही नहीं होते हैं बल्कि दूसरी वेश्याओं के ख़िलाफ़ भी होते हैं जो भटकते हुए तुम्हारे "इलाके" में चली आती हैं, क्या यह सच नहीं है?'

'शायद,' गवाह ने कहा।

रिगर ने आडम्बरपूर्ण ढंग से कहा, 'मेरा कहना है कि इस गवाह के बयानात से जो तरीके समझ में आते हैं मैरी सॉयर उस तरीके से मारी गयी थी।'

विद ने पीछे से उसे कुहनी मारी।

उसने अपने कागज़ात के पीछे से फुसफुसाकर कहा, 'लेकिन हम जानते हैं कि वह औरत कैसे मारी गयी थी। इस विषय को छोड़ दो!'

गवाह को जाने की इजाज़त दे दी गयी। सबको यह बात माननी पड़ी कि वह भी 'वह औरत हो सकती है जो अकेली थी' जिसे उन दो आदमियों ने देखा था। तो मैरी सॉयर के साथ मैकहीथ भी हो सकता था, जैसा कि भिखमंगों ने बताया।

पत्रकारों में काफी उत्तेजना थी जब वैली ने फ्यूकूम्बी को बुलाया, जो पहली गवाही के बाद से छिपा हुआ था।

रिगर ने फौरन उससे पूछा कि वह कहाँ था।

वैली ने उसकी तरफ से जवाब दिया :

'वह विशेष सुरक्षा में था। हम नहीं चाहते थे कि उसका भी वही हश्र हो जो मिसेज सॉयर का हुआ।'

फ्यूकूम्बी ने शान्त स्वर में मृत महिला के साथ अपने अनुभवों का ब्यौरा दिया। मैकहीथ ने उसके साथ मिलने का समय तय किया था; वह उसके आने का इंतज़ार कर रही थी जब उसने, फ्यूकूम्बी ने, उससे विदा ली। वह शायद उसे

वित्तीय मदद के लिए पोछियाना चाहती थी; काफी गुंजाइश है कि वह उसे धमकी देने जा रही थी क्योंकि वह उसके बारे में कुछ जानती थी।

रिगर खड़ा हुआ।

'क्या मिसेज सॉयर आरोपी से डरती थीं?'

'इससे क्या मतलब है आपका?'

'क्या वह डरती थीं कि वह उनके साथ कुछ कर सकता है-मिसाल के तौर पर उन्हें पानी में धकेल सकता है?'

'शायद ही ऐसा हो, नहीं तो वह उससे वहाँ मिलने नहीं जाती।'

'बिल्कुल ठीक, फ्यूकूम्बी। नहीं तो वह उससे नहीं मिलती। तो उन्होंने डरे होने के बारे में कुछ नहीं कहा?'

'नहीं।'

अब मोटा विद खड़ा हुआ। अपनी चिंचियाती आवाज़ में उसने पूछा कि क्या तब मिसेज सॉयर के पास मि.मैकहीथ से डरने की कोई वजह नहीं थी? मिसाल के तौर पर, क्या वह इस बात से डरी हुई नहीं थी कि कहीं वह उनके ख़िलाफ़ वित्तीय कदम न उठा दे?

भूतपूर्व सैनिक थोड़ा हिचकिचाया। फिर उसने ठण्डे दिमाग से जवाब दियाः

'वह सोचती थी कि शायद मैकहीथ उसकी मदद करने का इच्छुक न हो। इस रूप में वह उससे डरती थी।'

'बिल्कुल ठीक,' विद ने कहा और संयम के साथ बैठ गया।

वैली खींस निपोरे यह सब सुन रहा था। अब उसने कहा :

'एक तीसरी सम्भावना भी है। आर्थिक मदद पाने की उसकी इच्छा, उसकी ज़रूरत शायद उसके डर से ज़्यादा भारी पड़ी हो और उसी ने उसे शारीरिक ख़तरे उठाने को बाध्य किया हो। आपने अभी-अभी सुना कि सड़क पर चलने वाले उन भयानक ख़तरों पर कितना कम ध्यान देते हैं जो उन्हें घेरे रहते हैं। सज्जनो, मैं यहाँ दो नन्हें, लावारिस बच्चों के नुमाइन्दे के तौर पर खड़ा हूँ। मि.फ्यूकूम्बी के बयान से हमें पता चलता है कि उन बच्चों की माँ ने कोई भय नहीं दिखाया क्योंकि वह अपने बच्चों के लिए लड़ रही थी।'

फिर, एक सवाल के जवाब में, मैकहीथ ने माना कि मैरी सॉयर के साथ मुलाकात का समय और जगह तय करने वाला सन्देश उसी का लिखा हुआ था। उसने कहा कि वह मैरी सॉयर की लिखावट नहीं जानता। वह वाकई नहीं जानता था; नहीं तो वह सही वक्त पर *नाइफ* वाले पत्र के लेखक को पहचान लेता जिसे

वह इतने दिनों से अपने पास रखे हुए था।

कोर्ट दोपहर के भोजन के लिए स्थगित हो गया। पॉली अपने पति के पास गयी जो एक कमरे में बैठा था, जहाँ, उसके अलावा, केवल वे दोनों वकील थे। वे कोने में झगड़ रहे थे कि बचाव किस रास्ते से किया जाना चाहिए।

पॉली और मैक ने सैण्डविच खाए। वह कार्यवाही से काफी परेशान था। अन्य बातों के बीच उसने पूछा कि उस मूर्खतापूर्ण टिप्पणी से वैली का क्या मतलब था : सवाल यह है कि बटन निर्माताओं को अपने माल की पूरी कीमत मिली या नहीं।

मैक ने कहा, 'वह शुद्ध धृष्टता थी। निश्चित रूप से उसका मतलब था कि मेरे सामान चोरी के सामान होते हैं। यह मानते हुए कि मैं उन्हें दीवालिया दुकानों से ख़रीदता हूँ। असल में इसका मतलब यही निकलता है कि मैं उन्हें चुराता हूँ। उनकी पूरी कीमत अदा नहीं की जाती। और अगर मैं इन छोटी दुकानों को पूरी कीमत दे भी दूँ तो वे उत्पादक तो हैं नहीं। उत्पादकों यानी बटन-निर्माताओं, के पास से तो बटन चोरी हो जाते हैं,भले ही उन्हें उनके काम की कीमत मिले। *निश्चित रूप से* उन्हें पूरी कीमत नहीं मिलती। क्योंकि तब तक मुनाफा कहाँ से आएगा? मुझे कहना ही होगा कि मुझे लगता है कि चुराने और 'खरीदने' के बीच चुनने को कुछ भी नहीं है। और वैली इस बात को मेरे ख़िलाफ़ बना रहा है; वह कोर्ट को पूर्वाग्रहित करने का प्रयास कर रहा है!'

पॉली ने उसके साथ सहमति जतायी।

पिछले कुछ सप्ताहों के दौरान वह और भी खूबसूरत हो गयी थी। पूरी गर्मियों के दौरान वह तैराकी करने और सूर्य स्नान करने गयी थी, जाहिरा तौर पर अपनी स्थिति के कारण शेड वाले स्थानों पर। उसकी बाहें हल्के भूरे रंग की थीं, मगर कोहनियों के ऊपर सफेद रंग की थीं जैसा कि उसके ब्लाउज़ की ढीली आस्तीनों के ढलक जाने पर नज़र आता था। पूरा प्रभाव बेहद आकर्षक था; और वह इस बात को जानती थी।

जब कार्यवाही जारी हुई तो वैली ने फैनी क्राइस्लर को कठघरे में बुलाया।

उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे और वह घबरायी हुई थी। उसके लिए उसकी एंटीक्स की दुकान का नुकसान एक भारी झटका था।

उसने सिर्फ यह कहा कि मृत महिला ने मि.मैकहीथ के साथ अपने पहले के दोस्ताना सम्बन्धों के दम पर कर्जत्र की माँग की थी।

'लेकिन इसके साथ ही उसने धमकी दी थी कि वह आरोपी के बारे में कुछ

जानती थी?'

गवाह ने फौरन जवाब दिया, 'शायद उसका मतलब उसकी शादी की परिस्थितियों से था। मि.मैकहीथ का इससे कुछ लेना-देना था जिसकी याद दिलाया जाना वह पसन्द नहीं करते थे।'

वैली ने अचानक पूछा, 'आप *नाइफ* के बारे में क्या जानती हैं?'

वह प्रत्यक्ष रूप से अपने नकाब में पीली पड़ गयी। उसने दृढ़ता के साथ कहा, 'कुछ नहीं। सिवा उसके जो मैंने अखबारों में पढ़ा है।'

'लेकिन मिसेज सॉयर ने आरोपी को पर्दाफाश की धमकी दी और उसी वक्त *नाइफ* का भी ज़िक्र किया।'

लेकिन फैनी ने फिर से अपने आपको सम्भाल लिया था। उसने एकदम से कहाः

'मैं अब याद नहीं कर पा रही हूँ। वह बहुत-सी ऊट-पटांग बातें कर रही थी क्योंकि वह बेहद उत्तेजित थी और समझती थी कि उसके साथ बुरा बर्ताव हुआ है। मुझे भरोसा है कि उसके व्यवहार ने मि.मैकहीथ को सिर्फ नाराज़ कर दिया क्योंकि उसने उनके साथ अपने पुराने सम्बन्धों का फायदा उठाने की कोशिश की।'

अचानक विद ने यह जानना चाहा कि मृत महिला की आर्थिक परिस्थितियाँ क्या थीं।

'वह बहुत अच्छा धन्धा नहीं कर रही थी। मगर उसकी हालत अन्य दुकानदारों से कोई ख़राब नहीं। आजकल धन्धा बहुत मन्दा चल रहा है।'

'क्या आप आरोपी की मुलाज़िम हैं?' वैली ने इशारा करके पूछा।

'हाँ।'

वैली ने व्यंग्यात्मक अन्दाज़ में कहा, 'फिर तो बचाव पक्ष मैकहीथ की कारोबारी कामयाबी पर अपने गवाह पेश करेगा, वे लोग जिन्हें मैकहीथ ने नौकरी नहीं दी है।'

विद नाराज़ हो गया।

उसने आडम्बरपूर्ण ढंग से कहा, 'मेरे काबिल दोस्त, लगता है यह मानते हैं कि अब इंग्लैण्ड में कोई नहीं बचा है जो पहले भौतिक तथ्यों पर ग़ौर किये बग़ैर सच बोलेगा। मुझे कहना ही होगा कि मैं इसे बेहद खेदजनक पाता हूँ।'

वैली ने कुछ सन्तोष दिखलाते हुए कहा, 'आप क्या खेदजनक पाते हैं? यह कि अब ऐसे लोग नहीं पाए जाते, या मैं ऐसा मानता हूँ?'

लेकिन मजिस्ट्रेट ने इस प्रश्न को ख़ारिज कर दिया। वैली ने अब *रिफ्लेक्टर* के सम्पादक को बुलाया।

जब यह गवाह बताने लगा कि किस तरह मृत महिला ने मैकहीथ पर *नाइफ* होने का आरोप लगाया था, तो रिगर अपने अवसर का पूरा लाभ उठाने के लिए बोल पड़ा।

उसने ज़ोरदार ढंग से कहा, 'किसी भी समझदार व्यक्ति को, यानी किसी भी ऐसे व्यक्ति को, जो अखबार नहीं पढ़ता, यह आखिरी गवाही दिखा देगी कि अभियोजन पक्ष ने किन शोचनीय आधारों पर अपना केस खड़ा किया है। तो मि.मैकहीथ *नाइफ* हैं! हमारे महाने व्यापारी डिम लालटेन लिए, दबे पाँव तिजोरियाँ तोड़ते घूमते हैं! सज्जनो, हम जानते हैं कि ईर्ष्या आदमी को किस हद तक ले जा सकती है। मगर हर चीज़ की एक सीमा होती है! पूरा अभियोग ही इस कल्पना पर आधारित है कि हमारे सबसे प्रमुख व्यापारियों में से एक मि. मैकहीथ दरअसल एक व्यापारी नहीं हैं, बल्कि एक अपराधी, एक हत्यारे हैं! क्योंकि इसके बिना अभियोजन पक्ष ही धराशायी हो जाएगा। अगर, फिर भी, वह एक खूनी *नहीं* है बल्कि सिर्फ बी.शॉप्स के प्रसिद्ध मालिक हैं तो एक ऐसी औरत के "पर्दाफाशों" से डरने की उनके पास कोई वजह नहीं है, जिसकी नैतिकता के बारे मे हम कुछ भी अनादरपूर्ण नहीं कहेंगे, क्योंकि वह मर चुकी है। यह हास्यास्पद है।'

वह विजयी मुद्रा में बैठ गया।

वैली आरोपी की तरफ मुड़ाः

'मि.मैकहीथ आप मृत औरत द्वारा आपको दी गयी धमकियों के बारे में क्या कहना चाहते हैं?'

मैकहीथ धीरे-धीरे खड़ा हुआ। वह जाहिरा तौर पर उलझन में नज़र आया।

'मैं स्वीकार करता हूँ,' उसने कहा, 'कि इस मामले पर बोलना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल है। दरअसल, मैं यह बात सिर्फ एक *आदमी* के तौर पर अन्य *आदमियों* से ही कह सकता हूँ। एक तरह से, मुझे मानना ही होगा कि मैं आरोप से अपने आपको पूरी तरह मुक्त अनुभव नहीं करता। हो सकता है आप अपने बारे में कह सकते हों कि हम औरतों के प्रति अपने व्यवहार में एकदम *सही* रहे हैं, हमने कोई मुँहचोरी नहीं की, अनजाने भी, कोई दर्द नहीं दिया। मैं अपने बारे में ऐसा नहीं कह सकता। मेरा इस अभागे जीव के साथ कोई "सम्बन्ध", जैसा कि लोग कहते हैं, नहीं था जिसे मैरी सॉयर के रूप में जाना जाता था और जो किसी

बदमाश या शायद खुद अपने हाथों-जैसा कि मेरे वकील मि.विद मानते हैं-मारी गयी। लेकिन क्या उसके शायद मेरे साथ सम्बन्ध थे? मैं उसका मालिक था और मेरा उसके साथ एक या दो बार सामना हुआ होगा और शायद अनजाने में मैंने उसके अन्दर तरह-तरह की उम्मीदों को जगा दिया होगा। हममें से कौन ऐसी परिस्थितियों में, अनजाने पाप नहीं कर सकता? आप साथ ही यह भी उतनी ही अच्छी तरह जानते हैं जितना कि मैं जानता हूँ कि एक मालिक के लिए अपनी स्त्री कर्मचारियों के साथ उचित *दूरी* बनाए रख पाना कितना कठिन होता है। इन ग़रीब लड़कियों को कौन दोषी ठहरा सकता है, जो जीवन-यापन के लिए दिन-रात एक कर रही हैं और जीवन का कोई आनन्द नहीं प्राप्त कर पा रहीं, अगर वे अपने प्रमुख पर थोड़ा मोहित हो जाएँ जो उच्च वर्गों का सदस्य है और उनके साधारण सहायकों से ज़्यादा उन्नत है? और इस बिन्दु से गुप्त आशाओं और इनसे कड़वी निराशा तक, बस एक छोटा-सा कदम है! आपकी आज्ञा से मैं और कुछ नहीं कहूँगा।'

शाम के अखबारों ने काले अक्षरों में इस पूरे भाषण को छापा। बी.शॉप्स के मालिक के इस 'मानवतावादी' रुख की सर्वत्र प्रशंसा हुई। केवल एक सर्वहारा प्रकाशन ने बी.शॉप नेपोलियन पर कीचड़ उछाला। लेकिन उनको संजीदगी से नहीं लिया जा सकता, क्योंकि विनोदी भावना के विपरीत, उन्होंने अपने शिकार को कोई उद्धार करने वाला गुण नहीं दिया और अपने अधिकांश स्थान को अस्तित्वमान सामाजिक व्यवस्था को बलपूर्वक नष्ट कर दिये जाने की आवेशपूर्ण माँग को समर्पित कर दिया।

मि.मैकहीथ के छोटे-से भाषण से कार्यवाही नहीं समाप्त हुई।

वैली ने मजिस्ट्रेट पर एक सन्तुष्ट निगाह डालते हुए पूछा, 'मिसेज क्राइस्लर की गवाही के मुताबिक खुद आप इन सम्बन्धों को इतनी गम्भीरता से लेते थे कि आपने मिसेज सॉयर को पैसे दिये?'

मजिस्ट्रेट एक सूखा हुआ छोटा-सा आदमी था और यह प्रभाव देना पसन्द करता था कि भाषणों का उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

मैकहीथ ने फौरन उत्तर दिया :

'मैं कह *सकता* था कि, विशेष स्थितियों में, कोई आदमी बिना धमकी पाए भी या धमकी पाने की बजाय पैसे दे देगा, अगर पैसे पाने वाला मुसीबत में है। लेकिन मैं ऐसा नहीं कहूँगा। मैं सिर्फ यह कहूँगा कि मैंने इस अभागी औरत के *रिफ्लेक्टर* के दौरे जैसी घटनाओं को रोकने के लिए अपना पूरा प्रयास किया;

हालाँकि मैं इसमें असफल हो गया। एक व्यापारी के तौर पर मुझे सन्देह की छाया को अपने ऊपर गिरने से रोकने के लिए हर सावधानी बरतनी ही होगी। मैं इन धमकियों को कितना महत्वपूर्ण समझता था, इस तथ्य से समझा जा सकता है कि मैंने उस पर नज़र नहीं रखी और "वॉटरमैंस आर्म्स" पर उससे मिलने नहीं गया।'

'मगर आपने मैरी सॉयर से वहाँ मुलाकात तय की थी?'

'मैंने ऐसा दया के कारण किया था। दया के चलते मैं वहाँ गया भी होता मगर एक व्यापारिक सम्मेलन के कारण आखिरी क्षण पर मैं वहाँ न जा सका। अगर मैंने इसे गम्भीर समझा होता, तो यह चीज़ भी मुझे वहाँ जाने से न रोक पाती।'

वैली मानो जीवित हो उठा।

'इस सम्मेलन की क्या प्रकृति थी? अगर आप सम्मेलन में थे तो आपके पास अपराध के समय अन्यत्र होने का बहाना है।'

मैकहीथ ने अपने वकीलों को देखा। फिर उसने कहा : 'अगर ज़रूरी न हो तो मैं इस मामले पर बातचीत नहीं करना पसन्द करूँगा।'

मजिस्ट्रेट ने रुखाई से कहा, 'यह बेहद ज़रूरी हो सकता है।'

लेकिन रिगर और विद ने सिर हिलाया और बचाव के लिए एक गवाह को बुलाया, 'वॉटरमैंस आर्म्स' के मालिक को।

उसने कहा कि मृत महिला उस शराबखाने में बैठी थी, उसने वहाँ कुछ देर इंतज़ार किया, उसकी बेचैनी बढ़ती गयी, और अन्त में जब वह गयी, तो उसने अपना हैट पहना नहीं, बल्कि उसे हाथ में लेकर गयी। कोई उसे पूछने नहीं आया था, न तब, न बाद में।

वैली ने पूछा कि क्या कोई सड़क से बार के अन्दर देख सकता है।

जवाब हाँ था।

वैली ने अपने नतीजे निकाले : आरोपी अपने शिकार से 'वॉटरमैंस आर्म्स' के बाहर या उसके घर के रास्ते में मिला होगा।

इस मौक़े पर शीशे के विशालकाय गोलों को जलाया गया, क्योंकि यह पतझड़ का मौसम था और शाम हो रही थी।

वैली ने इस काम के ख़त्म होने तक इंतज़ार किया और फिर बोलना शुरू किया :

'यह सवाल पहले ही काफी विनोदप्रियता के साथ पूछा जा चुका है कि इस

ग़रीब दुकानदारिन ने महान मैकहीथ को कैसे धमकी दी होती। अब मैं एक गवाह को बुलाऊँगा जो शायद इस तथ्य पर कुछ प्रकाश डालने में सक्षम हो।'

साफ़-सुथरे ढंग से कपड़े पहने एक लम्बी लटकती बाँहों वाला आदमी कठघरे में आया। वह एक जूता बनाने वाला था जो मैरी सॉयर की दुकान के सामने रहता था। उसने कहा कि मृत महिला ने एक बार उसे बताया था कि वह जानती थी कि उसके माल कहाँ से आते हैं। और उसने यह बात ऐसे लहज़े में बताई कि उसे यह मानना पड़ा था कि सामानों का स्रोत रहस्यमय है, ऐसा जो कोई जाँच नहीं झेल सकता।

मैकहीथ खड़ा हुआ। वह फौरन जवाब देना चाहता था। लेकिन रिगर ने उसकी आस्तीन को ज़ोर से खींचा और फुसफुसाकर उससे कुछ कहा। मैकहीथ बैठ गया और रिगर ने छोटे-से अन्तराल की माँग की। वह अपने मुवक्किल को, जो इस अन्तहीन बातचीत से थक गया था, अपने बहाने को प्रकट करने के लिए मनाना चाहता था।

मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दे दी।

मगर बाहर के गलियारे में मैकहीथ ने काफी ज़ोरदार ढंग से बतलाया कि अभी वह अपना बहाना बतलाने की स्थिति में नहीं है।

उन दोनों ने उसे बतलाया कि तब उसका यह व्यवहार ज़्यादा से ज़्यादा सन्देहास्पद नज़र आएगा और उसे शायद हत्या के अभियोग का सामना करना पड़ेगा। विद अभी कोर्ट को इस बात पर सहमत करना चाहता था कि मैरी सॉयर ने आत्महत्या की थी। रिगर में अब उसका विरोध करने का साहस नहीं था।

पन्द्रह मिनट बाद कार्यवाही फिर से शुरू हुई।

मैकहीथ के वकीलों ने कोर्ट को बताया कि दुर्भाग्य से उसका मुवक्किल यह नहीं बता सकता कि मैरी सॉयर की मौत के वक्त वह कहाँ था। इस चुप्पी की वजह शुद्ध रूप से व्यापारिक है। मजिस्ट्रेट ने यह सफाई एक असहानुभूतिपूर्ण चुप्पी के साथ सुनी। फिर विद ने कहा कि अपने तयीं, वह इस बात से सहमत है कि मैरी सॉयर किसी हत्यारे का शिकार नहीं बनी थी बल्कि अपने हाथों मरी थी। वह अब कोर्ट में यह सिद्ध करने की कोशिश करेगा।विद ने अपने गवाहों को बुलाया और उनसे पूछताछ की। वे सभी बी.शॉप्स के मालिक थे। उसने उनसे उनके धन्धे की स्थिति का वर्णन करने को कहा। उन्होंने एकमत होकर घोषणा की कि उनकी दुर्दशा भयंकर है। उसमें से एक ने कहा कि इसमें कोई अचम्भा नहीं होगा अगर किसी ने फाँसी लगा ली हो। ख़ास तौर पर आपूर्ति बन्द होने

के बाद। यह जानना कठिन था कि किस रास्ते मुड़ना है। विद ने उसे शुक्रिया अदा किया और मैरी के कुछ पड़ोसियों को बुलाया। उसने उनसे पूछा :

'क्या आप स्वर्गीय मिसेज सॉयर के कारोबारी मामलों के बारे में कुछ जानते हैं?'

'हाँ, जितना कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के कारोबार के रूप में जान सकता है।'

'क्या वह बहुत सक्षम दुकानदार थी?'

'वह मेहनती थी।'

'पैसों के मामले में सावधानी बरतती थी?'

'ज़्यादा नहीं। अगर कोई व्यक्ति निम्न वर्ग का होता, तब भी वह उसे बराबर चीज़ें ही लेने देती।'

'तो जिसे दुनिया में काबिल कहा जाता है, उन अर्थों में वह काबिल नहीं थी?'

'वह किसी व्यक्ति को मोज़े दे देती अगर वह उसे एक जोड़ी फटा मोज़ा दिखला देता। उसे बस गीले मौसम में आना चाहिए।'

'तो वह उस किस्म की औरत नहीं थी जिसे हम सावधान कारोबारी औरत कहते हैं?'

गवाह चुप था।

फिर विद ने कहा : 'अगर इस अभागी औरत की मौत स्वैच्छिक थी, जैसा कि हम मानते हैं, तो पहले आये गवाहों के बयानात सिर्फ यह दिखलाते हैं कि उदार हृदयता और दयालुता एक व्यक्ति को किस तंगहाली में ले जा सकते हैं।'

मजिस्ट्रेट मुस्कराया।

एक बूढ़ी औरत कठघरे में आयी।

मि.विद ने उससे पूछा, 'हमें बताइये कि मृत औरत ने आपको अपने दुकान प्राप्त करने के बारे में क्या बताया।'

उस बूढ़ी औरत ने शिष्टतापूर्ण ढंग से नाक छिनकी। शायद वह अपना लाल रुमाल दिखाना चाहती थी।

'उसे तो दुकान यूँ ही मिल गयी थी।'

'मैंने सोचा कि उसने इसके लिए कीमत अदा की थी।'

'थोड़ी-सी। लेकिन शायद उसने कुछ नहीं दिया था। उसका पति एक सैनिक है।'

'लेकिन उसके पास कुछ पैसे थे। और उसने वह दिये?'

'ऐसा वह कहती थी।'

'बताइये, कितनी रकम दी थी उसने?'

'अट्ठारह या उन्नीस पाउण्ड, मेरे ख़याल से। उसके पास निश्चित रूप से और पैसे नहीं थे। कभी नहीं।'

'लेकिन उतने उसके पास थे। और उसने वह दुकान में लगा दिये। ऐसा ही है न?'

'वह बैठकी को बच्चों के लिए और साफ़-सुथरा चाहती थी। यह, दिखावे के लिए, उस पर सारे पैसे खर्च करने जैसा था, और वह भी उस हालत में जिसमें वह थी!'

'और वह उसे, उन अट्ठारह या उन्नीस पाउण्ड को भी गवाँ देती अगर किराए भुगतान न करने या माल की कीमत का भुगतान न करने की वजह से उसे छोड़ना पड़ता?'

'जाहिरा तौर पर; यह तो आप खुद ही समझ सकते हैं।'

'फिर वह क्या कर सकती थी?'

'ज़्यादा कुछ नहीं।'

बुढ़िया अपना रुमाल हाथ में पकड़े हुई थी मानो वह किसी भी वक्त छींक सकती थी। अब उसने उसे तह कर लिया।

कार्यवाही धीमी रफ्तार से जारी रही। तमाम ब्यौरे साफ़ हुए। कुछ भी नया सामने नहीं आया। जब कई दुकानदारों से उनकी बी.शॉप्स में आई मन्दी के कारण के बारे में पूछा गया तो वे सभी इस बात पर सहमत हुए कि मन्दी कीमतों में गिरावट के चलते आयी है। *उसकी* वजह बता पाना असम्भव था। यह पूछना वैसा ही है जैसे कि कोई यह पूछे कि एक साल से दूसरे साल बारिश ज़्यादा क्यों हुई। यह बुरा था कि आपूर्ति के स्रोत सूख गये थे, मगर इसकी वजह शायद यह थी कि अब सस्ते सामान और नहीं बचे थे। मि.मैकहीथ नयी आपूर्ति प्राप्त करने का हर प्रयास कर लिया था क्योंकि उन्हेंाने ही उन्हें सहायक रखने और ज़्यादा व्यापक पैमाने पर प्रचार करने के लिए प्रोत्साहित किया था ताकि वस्तुओं की बिक्री तेज़ गति से हो।लेकिन वह नाकामयाब रहे और उनके खरीदारी संगठन ने उनका सिर नीचा कर दिया।

अंत में विद खड़ा हुआ-रिगर ने असामान्य रूप से चुप्पी धारण कर ली थी-और संक्षेप में हर उस चीज़ को दोहराया जो आत्महत्या के विचार को पुष्ट

करती थी।

वकील महोदय ने घोषणा की, *‘मैरी सॉयर को किसी खूनी की दरकार नहीं थी। जो लोग उन स्थितियों के बारे में जानते हैं, जिनमें जीने को वह मजबूर थी, उनके लिए उसकी मौत कोई अनसुलझा रहस्य नहीं है। जो भी इस जीवन से परिचित है, एक ज़रूरतमन्द मेहनती दुकानदार के जीवन से, उसे मानना ही पड़ेगा कि, ऐसा जीवन जीने का बाध्य किसी भी व्यक्ति के लिए एक ऐसा समय आएगा जब वह कहेगा या कहेगी : बस! ख़त्म! और मैरी सॉयर जैसे किसी जीवन को ख़त्म करने के लिए किसी काफी महान दृढ़ निश्चय की आवश्यकता नहीं है।कर्ज़ों से घिरा, पूरी तरह नाउम्मीद हालात के बरक्स खड़ी तमाम अन्य ज़िन्दगियों जैसी यह ज़िन्दगी जिन्दा रहने के लिए कोई विशेष प्रेरणा नहीं देती। आपको बस इस औरत की रिहायश की जगह देखने की ज़रूरत है। (मैं जानबूझकर “घर” शब्द के इस्तेमाल से बचा हूँ। आप खुद उस जगह को घर कहने की हिम्मत नहीं करेंगे।) उसके बच्चों को देखिये! नहीं, देखिये मत, बस उनका वज़न नाप लें! अपनी पूरी ज़िन्दगी ऐसे हालात में गुजारने के बारे में सोचिये, और कल्पना भी मत कीजिये कि उसको कोई छुट्टी नसीब होती थी! और उस झोंपड़े में भी लोग उसके पीछे पड़े रहते थे! उस दरवाज़े पर भी तगादेदारों की खटखटाहट होती थी! नहीं, मैरी सॉयर को मि.मैकहीथ के हाथों ख़त्म किये जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी-मैरी सॉयर ने अपनी जान खुद ली।’*

अगर यह आपत्ति भी की जाती है कि मैरी को हमेशा ज़िन्दगी से लगाव था, तब भी यह जवाबी तर्क मौजूद है कि व्यापार सम्बन्धी चिन्ताओं ने और इस निजी निराशा ने भी मि.मैकहीथ से मदद नहीं आ रही है, इस लगाव को ख़त्म कर दिया। इस बात पर कि उसने मैकहीथ पर आरोप लगाने का प्रयास किया, शायद यह मानते हुए कि वह सही है, आश्चर्य नहीं होना चाहिए। छोटे कारोबारी लोगों को ठीक-ठीक पता नहीं होता है कि वाणिज्य और व्यापार को कौन से नियम चलाते हैं। जब भी संकट आता है तो वे, लगभग सब के सब बड़े लोगों पर आरोप लगाते हैं।लेकिन उन्हें इस बात का ज़रा भी अन्दाज़ा नहीं होता कि बड़े लोग खुद भी निश्चित, पूर्वनिर्धारित, हालाँकि अनजानी आर्थिक प्रक्रियाओं की दया पर होते हैं। बस एक संकट पैदा हो गया था और छोटे, कमज़ोर बन्धु इसके शिकार बन गये थे।

वैली ने ठीक तब उसे बीच में रोका जब वह एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच चुका था जहाँ वह कुछ और न कहने के बारे में सोच सकता था।

वैली ने अपने आपको एक घण्टा पहले पूछे गये सवाल को दोहराने को मजबूर महसूस किया, जिसके जवाब में पल भर को, ऐसा लगा था कि मैकहीथ अपने दिलचस्प बहाने को प्रकट कर डालेगा। शहर में अफवाह उड़ चली थी कि बी.शॉप्स के माल का स्रोत कुछ रहस्यमय-सा है। मि.मैकहीथ ने कहा था कि, जहाँ तक वह जानते हैं, यह सामान किसी सी.पी.बी. से आये थे। क्या मि.मैकहीथ कोर्ट को इस कम्पनी के बारे में कुछ स्पष्ट बताएँगे?

मैकहीथ के साथ छोटी-सी बातचीत के बाद रिगर ने जवाब दिया, 'नहीं, मि. मैकहीथ नहीं बताएँगे।'

हर मौक़े पर, सी.पी.बी. एक कानूनी रूप से पंजीकृत कम्पनी थी, जिसके बोर्ड पर पियर वर्ग के एक सदस्य और दो वकील थे।यह बिल्कुल सही था कि पिछले कुछ हफ्तों के दौरान, वे मि.मैकहीथ के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को नहीं पूरा कर पा रहे थे। लेकिन यह मि.मैकहीथ और कम्पनी के बीच का मामला है और इसका कोर्ट से कोई लेना-देना नहीं है। उसने यह मुद्दा सिर्फ इसलिए उठाया था ताकि यह प्रभाव न जाए कि मैरी सॉयर की संकटग्रस्त स्थिति का दोष किसी भी तरह से मि.मैकहीथ पर मढ़ा जा सकता है। उसके साथ ही मि.विद ने बी. शॉप्स की अत्यन्त असन्तोषजनक स्थितियों को दिखला दिया था। वे निस्सन्देह रूप से हाल के समय से परेशानियों में थे, मगर मि.मैकहीथ की किसी ग़लती की वजह से नहीं; आरोप तो सी.पी.बी. के दर पर ले जाया जाना चाहिए जिसने आपूर्तियाँ रोक दी थीं।

उसने यह साबित करने के लिए गवाह बुलाए कि वारदात के वक्त मि. मैकहीथ खुद दुकानों में लगे हुए थे और मदद कर रहे थे।

इस मुद्दे पर मैकहीथ को खुद भी कुछ कहना था।

उसने बोलना शुरू किया, 'यहाँ कहा जा चुका है कि मैरी सॉयर का जीवन बहुत कठिन था। और इसलिए आत्महत्या की गंजाइश से इंकार नहीं किया जा सकता। मैं यह जोड़ना चाहूँगा कि बी.शॉप्स में हम हमेशा अपनी पूरी ताकत के साथ काम कर रहे होते हैं।जनता की सेवा के लिए अपने अनथक प्रयासों में हम अपने आप से उन चीज़ों की माँग करते हैं जिसे *सबसे मज़बूत* लोग ही लम्बे समय तक पूरा कर सकते हैं। हम बहुत सस्ती दरों पर बेचते हैं। हमारे मुनाफे इतने कम होते हैं कि हमें लगातार तंगी का सामना करना पड़ता है। शायद ग़रीब ख़रीदारों को सबसे बढ़िया सामान बाजिब दरों पर मुहैया कराने के अपने प्रयासों में हम ज्यादा ही दुराग्रही हैं।

मैं खुले तौर पर स्वीकार करता हूँ कि पिछले कुछ दिनों के दौरान जब हर चीज़ मेरे खिलाफ जाती मालूम पड़ रही है, मैंने अपने आप से कई बार पूछा है कि क्या हम टिके रह सकते हैं। शायद हमें कीमतें फिर से ऊपर करनी पड़ेंगी। मेरा विश्वास कीजिये, मेरी कर्मचारी की मौत ने मुझे गहराई के साथ बेचैन कर दिया है।'

तेजी से घसीटे जा रहे पत्रकारों को मजिस्ट्रेट ने ठण्डी निगाहों से देखा; मैकहीथ से पूछा कि क्या वह अपराध के समय अन्यत्र होने का अपना बहाना बताएगा, नकारात्मक में जवाब सुना, और सबूतों पर विचार करने के लिए चला गया।

ठीक दस मिनट बाद वह वापस आया और उसने अपना फैसला सुनायाः कैदी पर मैरी सॉयर की हत्या का मुकदमा चलाया जाय।

शाम के अखबार 'मैकहीथ केस' से भरे पड़े थे। भड़कीली सुर्ख़ियों में लिखा था : **मैरी सॉयर की मौत के रहस्य पर से पर्दा उठना शुरू हुआ।** और : **अमीर व्यापारी कहाँ था जब महिला मित्र का खून हुआ था?**

अगले सप्ताह, मैकहीथ को आरों की ख़बर मिली। फैनी क्राइस्लर इस पूछताछ के दो दिन बाद जेल आयी। उसने उसे बताया कि सी.पी.बी. से व्यवहार में आरों और कॉमर्शियल बैंक असामान्य रूखेपन से पेश आ रहे हैं।

आरों उनसे मिलने एक बार आया था और उसने बुदबुदाकर 'फलाँ-फलाँ की हत्या और आपूर्तियों के रुक जाने के बीच सम्बन्ध' होने के बारे में कुछ कहा था। राइड लेन में कुछ सन्देहास्पद व्यक्ति, सम्भवतः किसी जासूस ब्यूरो के भेजे हुए लोग, सी.पी.बी. के गोदामों के बारे में पूछताछ करते दिखे थे।

पिछले दिन जैक्स ऑपर ने उसे बैंक में बुलाया और खुल्लमखुल्ला आरों को हुई सामानों की आखिरी आपूर्ति की रसीदें माँगीं।

मैकहीथ बहुत उदास दिखा। थोड़ी देर तक सोचने के बाद, उसने उसे नयी रसीदें प्राप्त करने और बेल्जियम में खरीद के लिए उधार देने में सावधानी बरतने को भी कहा।

जब वह जा रही थी तो उसने कहा :

'अगर तुम्हारा केस ज़्यादा लम्बा खिंचा तो हम बरबाद हो जाएँगे। मुझे उम्मीद है कि तुम यह बात समझते हो।'

निजी मामलों पर बातचीत नहीं हुई थी।

यह अक्टूबर का आखिरी सप्ताह था।

जनाब पीचम और जनाब मैकहीथ के मामले अपनी समाप्ति की ओर बढ़ रहे थे।

रंगरोगन और सजावट के बाद *लवली एना, यंग सेलरबॉय* और *ऑप्टिमिस्ट* उस वक्त का इंतज़ार कर रहे थे जब उनके प्राचीन, बेकार ढाँचे एक बार फिर समुद्र में तैरेंगे; और *ऑप्टिमिस्ट* यह इंतज़ार इस अहसास के साथ कर रहा था कि उसके अंतिम सप्ताह आ गये हैं।पीचम नारंगी फूलों और दुल्हन के घूँघट में मि.कोक्स के पीछे मण्डप की ओर बढ़ते हुए अपनी बेटी की कल्पना कर रहे थे। मैकहीथ उसकी कल्पना अलग स्थिति और दूसरे माहौल में कर रहा था। बी.शॉप्स ने उम्मीदें छोड़ दी थीं और बुद्धि और तजुर्बे में बढ़ गयी थीं। कोक्स अपनी डायरी के और पन्ने अजीबो-गरीब निशानों से नहीं भरने वाला था। मैरी सॉयर के हत्यारे के खिलाफ केस के रिकॉर्डों को व्यर्थ ही दर्ज किया गया और उसमें कुछ और जुड़ना उसकी किस्मत में नहीं बदा था। और सैनिक फ्यूकूम्बी की ज़िन्दगी कि 65 दिन और बचे थे।

खण्ड - तीन

अच्छा जीवन एल.एस.डी. पर आधारित होता है

आदर्श इरादों पर अपना जीवन जीते हुए-
यानी वह भावना, हर कवि जिसका ज़िक्र करता है-
जो कभी नहीं डिगता अपने कर्तव्य के पथ से,
उन कीमती लोगों को काफी ग़लत समझा जाता है।
सच्चे पसीने से नहाए, वे तोड़ते हैं अपनी रोटियाँ,
मेहनत की अपनी इस कमाई को चबाते हैं गर्व के साथ।
सातवाँ धर्मादेश कहता है उन्हें यह बिल्कुल भूल जाने को
भुने मांस का स्वाद उनकी पपड़ी से कहीं अच्छा होता है।
लेकिन-हालाँकि नमनीयता प्रशंसनीय हो सकती है-
अच्छा जीवन एल.एस.डी. पर आधारित होता है।

यह एक बुरी योजना कतई नहीं कि आप टिका दें
अपनी आँखें ज़मीन पर और झटक लें जो झटक पाएँ,
फिर गर्म स्नान करें और निगलें जल्दी से दो-चार निवाले
और जा बैठें सामानों से लदी एक टेबल के सामने।
आप अपनी नाक ऊपर उठाते हैं? कहते हैं यह कोई ज़िन्दगी नहीं?
आपके लिए एक आदमी आदमी नहीं जब तक वह मेहनत नहीं करता
यह एक विचार है जिससे मेरी आत्मा झिझकती है;
शुक्र है भगवान का कि मैं ऐसी नेक मिट्टी का नहीं बना।
समस्या मेरे लिए अपना समाधान खुद ही कर डालती है:
अच्छा जीवन एल.एस.डी. पर आधारित होता है।

(अच्छे जीवन का बैलेड)

13

Ultima retio regis

(एक प्रशियाई तोप पर उत्कीर्णन)

अहम फैसले

एक कमरे में पाँच या छः दूसरे व्यापारियों के साथ मि.पीचम पर मुश्किल से ही ध्यान जाता। चूँकि, अपने साथियों के साथ व्यवसाय में वह एक-एक कौड़ी के लिए खटने को मजबूर थे, इसलिए उनके चेहरे पर कुछ विशिष्ट भाव-मुद्राओं ने अपना डेरा डाल लिया था। यह भाव थे एक कठोर और शक्की व्यवसायी के भाव। लेकिन जो दुनिया की हर चीज़ को शक की निगाह से देखता है उसका खुद पर विश्वास होना भी दूर की कौड़ी होता है। मि.पीचम किसी भी कोण से एक गुणवान व्यक्ति नहीं थे। सभी मानवीय परिस्थितियों की चपलता से एक ज़बर्दस्त, शायद अतिरंजित, भय और उस शहर की (और सभी दूसरे शहरों की भी) दुष्टता और निर्ममता में उनका दृढ़ विश्वास जिसमें वे रहते थे उन्हें अपने हालात द्वारा रखी गयी हर नयी माँग के लिए असामान्य रूप से तेज़ इंतज़ामात करने को मजबूर करते थे। उनके साथी नागरिक उन्हें सिर्फ 'जे.जे.पीचम, भिखमंगों के साज-सामान बेचने वाले' के रूप में देख सकते थे, लेकिन वह किसी भरी वक्त कोई नया धन्धा शुरू करने को तैयार रहते, जो ज़्यादा फायदेमन्द, कम ख़तरनाक और यहाँ तक कि अन्ततोगत्वा ज़्यादा सुस्थिर होता। वह दयनीय दर्शन वाले एक छोटे, सूखे हुए आदमी थे; लेकिन यह भी, मानो, अन्तिम न था। अपने आपको ऐसी स्थिति में पाने पर, जिसमें एक छोटे, सूखे आदमी के लिए कोई सम्भावना नहीं होती, मि.पीचम को निरपवाद रूप से गहरे विचार में डूबे और यह सोचते पाया जा सकता था कि कैसे वे अपने आपको एक मंझोले आकार के खाए-पिये और आशावादी इंसान में बदल सकते हैं। उनका छोटापन, सूखापन

और दुर्दशा असल में उन्हीं का एक अंतर्विश्वास था जो किसी भी समय वापस लिया जा सकता था। इसमें कुछ दयनीय-सा था; लेकिन साथ ही यह उनकी उस कामयाबी की वजह भी था जिसे अनदेखा करना सम्भव नहीं है। वह दुर्दशा का लेन-देन करते थे, वह भी अपनी दुर्दशा का। और इसलिए जिन ख़तरों का वे सामना कर रहे थे वह उन्हें आपे से बाहर कर रहा था। एक और जीविका के साधन से हाथ धोने के ख़तरे से भयभीत, और दूसरी और भारी मुनाफे की सम्भावना से उत्तेजित, वह कुछ ही सप्ताह में एक मरभुक्खे बाघ में तब्दील हो गये, यहाँ तक कि दिखावे में भी। उन दिनों के दौरान जब वह कोक्स के लिए एम.टी.सी. के मामले निपटा रहे थे तो उन्होंने मोटा-ताज़ा और क्रूर भेस धारण किया।

केवल कमीज़ पहने, पतलून की जेब में हाथ घुसाये, वह हेल से मिले, जो एक सौ पाउण्ड उधार लेने आया था जो वह जुए में हार गया था। पीचम ने उसे एक कौड़ी भी नहीं दी।

कम्पनी खुली पीड़ा में छटपटा रही थी।

हेल के साथ पूछताछ के बाद उसने एक और बैठक बुलाई। वे सभी आये। आम तौर पर चुप रहने वाले मून ने हम्माम में बैठक रखने का विरोध किया। वह तयशुदा वक्त से पहले आ गया और हर सदस्य को दरवाज़े पर रोकने लगा। वह सड़क पर उत्तेजित होकर चिल्लाया कि वह इस धोबी-घर कारोबार से तंग आ गया है। अतः कम्पनी का आखिरी बैठक पास के एक रेस्तराँ में हुई।

पीचम ने उन्हें हेल के ब्लैकमेलिंग की तिकड़मबाज़ी के बारे में बताया, उसके सामने घुटने टेकने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया, और इस तथ्य को छिपाने का कोई प्रयास नहीं किया कि उन्हें इस तरह के और प्रयासों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने घोषणा की कि उनका धीरज जवाब दे चुका है। उन्होंने माँग की कि प्रत्येक व्यक्ति द्वारा देय राशि की तत्काल गणना की जाय और यह कि उसके बाद धन्धे को अपने तरीके से पूरा करने की उन्हें पूरी शक्ति दे दी जाय। उन्होंने एक कामयाब समाप्ति की गारण्टी दी अगर कोई उनके काम में दख़ल न दे।

उनका सुझाव मान लिया गया।

विभिन्न देय राशियों को इकट्ठा करने का काम पीचम ने बेहद सख्ती के साथ किया।

बैरोनेट से उन्होंने इतना वसूला कि वह हमेशा के लिए, या कम से कम कई

महीनों के लिए, उस अमेरिकी उत्तराधिकारिणी के बिस्तर पर जाने को मजबूर हो गया। उसका अन्तिम बहाना, कि वह समलैंगिक है, भी पीचम ने नज़रअन्दाज़ कर दिया। ईस्टमैन ने अपेक्षाकृत अधिक सदिच्छा से रकम अदा की। वह इसके काबिल था। उसने उत्तर में स्थित अपनी रिहायशी सम्पत्ति का किराया बढ़ाया था, जिसमें ज़्यादातर मज़दूर रहते थे।इससे थोड़ा भी पहले ऐसे किसी भी कदम को उठाने की वह हालत में नहीं होता। मून को रकम अदा करने से पहले, कुछ आश्चर्यजनक रूप से, विशेष इलाज की ज़रूरत हुई। वह एक बुकमेकर था और जब तक भिखारियों की एक भीड़ उसके ऑफिस में जबरन घुसकर उसके सामने नहीं खड़ी हो गयी, तब तक मून ने 800 पाउण्ड नकद और शेष सिक्योरिटी में अदा नहीं किये। उस भीड़ में कुछ तख्तियाँ ले रखीं थीं जिन पर लिखा था : 'जो दाँव लगाता है, उसके पास पैसा होता है-जिसके पास पैसा होता है, वह दे सकता है' और 'मैंने भी यहाँ दाँव लगाया है'।

क्रॉल अन्तिम मौक़े पर जवाब दे गया।

एक सुबह वह ओल्ड ओक स्ट्रीट आया और उसने पीचम से मिलने की माँग की। दोनों ने मिलकर उसकी स्थिति की समीक्षा की। क्रॉल ने कहा : 'तब मैं अपने भेजे में गोली भी मार सकता हूँ।' पीचम ने उसे कोक्स के ऑफिस का पता दे दिया। उसे यह अच्छा लगा कि कोक्स अपनी योजनाओं के नतीजे देखे।

रेस्तराँ मालिक उसी दोपहर शहर में उसके दफ्तर गया और वहाँ मौजूद कर्मचारी को बताया कि उस दलाल के साथ उसकी मुलाकात का समय तय है और वह वहाँ इंतज़ार करेगा। उसने वहाँ दो घण्टे इंतज़ार किया जबकि कोक्स नहीं आया; दरअसल, बाद में पता चला था कि कोक्स को मुलाकात के समय के बारे में कुछ नहीं पता था। जब लड़की ने दफ्तर बन्द करना चाहा तो वह कुछ बड़बड़ाया, जो अबोधगम्य था, दीवार की ओर मुड़ा जहाँ एक छाता खड़ा था, और अपने मुँह में गोली मार दी। घर पर उसके डेस्क पर उसकी पत्नी को सील किये हुए लिफाफे में उसकी चिट्ठी मिली जिस पर यह लिखा था : 'मेरी पत्नी के लिए। मेरे न लौटने पर आठ बजे खोला जाय।' जो कुछ उस पत्र में लिखा था वह यह है: 'मेरी प्यारी, मुझे बेईमान बदमाशों के एक गिरोह ने बरबाद कर दिया है। मुझे माफ कर देना, मैंने सबकुछ बेहतरी के लिए किया था। अल्बर्ट क्रॉल, रेस्तराँ मालिक।'

मगर सबसे अधिक मुसीबत आखिरी घड़ी में फिनी द्वारा पैदा की गयी थी।

जब उसने क्रॉल द्वारा आत्महत्या के बारे में सुना तो उसने बिना देर किये

ऑपरेशन करवाने का निर्णय किया। लेकिन पीचम को समय रहते इस बात का पता चल गया। वह फौरन भागे-भागे फिनी के घर पहुँचे। फिनी पहले ही नर्सिंग होम चला गया था। घर के रखवाले से नर्सिंग होम का पता प्राप्त करने के लिए उन्हें लगभग शारीरिक शक्ति का इस्तेमाल करना पड़ा था। ऑपरेशन शुरू होने के वक्त से आधे घण्टे पहले वह फिनी के पास पहुँच गये।

उनका गुस्सा बेकाबू था; लेकिन फिनी भी क्रोध से उतना ही लाल-पीला हो रहा था और उसने फौरन घर के रखवाले को बर्खास्त प्रण लिया। पीचम इतनी ज़ोर से चिल्लाए कि इमारत की सारी सिस्टरें दौड़ी-दौड़ी कमरे में आ गयीं। उन्होंने अस्पताल की प्रधान परिचारिका से कहा :

'यह आदमी अपने कमरे के पैसे नहीं देने वाला। यह अपना ऑपरेशन सिर्फ इसलिए करा रहा है क्योंकि यह कर्जे में डूबा है। मेरे सीने वाली जेब में एक अखबार है जिसमें रेस्तराँ मालिक क्रॉल द्वारा आत्महत्या की घोषणा है जो उसी मुसीबत से, उसी तरीके से निजात पाना चाहते थे जिससे यह जनाब पाना चाहते हैं! अखबारों में चर्चा होगी कि आपके सर्जन क्या करते हैं! निश्चित रूप से, हो सकता है कि वह ऐसी भावी-आत्महत्याओं का नियमित व्यापार करते हों!'

फिनी ऐसी मक्कारी का सामना करने में सक्षम नहीं था और ऑपरेशन थियेटर में ले जाये जाने से पहले उसने अपनी बकाया राशि अदा कर दी।

हफ्ते भर में पीचम के पास एम.टी.सी. में से निकाली जाने वाली राशि का एक सटीक नक्शा मौजूद था।

क्रॉल की मौत मैकहीथ के लिए चेतावनी की घण्टी थी।

यह फैनी थी जो दलाल के दफ्तर में रेस्तराँ-मालिक की आत्महत्या की ख़बर वाला सुबह का अखबार उसके पास लायी।

कुछ समय पहले मैकहीथ ने फैनी को पीचम के पीछे लगाया था। उसके ससुर और कोक्स के बीच ट्रांसपोर्ट जहाज़ का धन्धा उसे काफी दिलचस्प लगा था। पॉली ने उसे उसकी पिता की इस स्वीकारोक्ति के बारे मे ंबताया था कि कोक्स ने उन्हें बरबादी की कगार पर ला खड़ा किया है। क्रॉल की आत्महत्या ने इस धन्धे की पृष्ठभूमि पर कुछ और प्रकाश डाला।

पॉली से उसे यह भी पता चला था कि उस मनहूस शाम कोक्स उसके पिता से मिलने आया था, और यह कि कम से कम आधे घण्टे तक उसने ऑफिस को सिर पर उठा रखा था। ऐसा लग रहा था कि वह पीचम पर किसी चीज़ का आरोप लगा रहा था जो उन्होंने उसके ख़िलाफ़ किया था। जाहिर था कि पीचम

और कोक्स जीवन और मरण का युद्ध लड़ रहे थे, लेकिन एक-दूसरे के ख़िलाफ़ या एक साथ किसी और के ख़िलाफ़, यह उतना स्पष्ट नहीं था।

दोपहर के आस-पास फैनी फिर आयी। वह पहले ही आत्महत्या वाले घर हो आयी थी।

उसे काफी कुछ पता चला था। क्रॉल की पत्नी एक बदसूरत, आँसुओं से रंजित औरत थी जो अपना आपा पूरी तरह खो बैठी थी। पाँच मिनट के अन्दर उसने स्वर्गीय रेस्तराँ मालिक की मौत के लिए भगवान और दुनिया को ज़िम्मेदार बना डाला।

फैनी ने घृणा के साथ बताया कि वह अपने बूढ़े बाप के मौजूदगी में ही चीख उठी थी, 'इस बुड्ढे खण्डहर के साथ अब मैं क्या करूँ। इसका तो बीमा भी ख़त्म हो गया है। और जितना वह काम का नहीं है उससे ज़्यादा मुसीबत है!'

मैकहीथ ने इस युक्तिहीनता पर अपना सिर हिलाया। लेकिन वह बेहद परेशान था।

फैनी ने यह भी खोज निकाला था कि एम.टी.सी., जो अब प्रत्यक्षतः पीचम के नियंत्रण में थी, काफी संकटपूर्ण स्थिति में है। ऐसा लगता था कि पीचम पूरी तरह कोक्स की मुट्ठी में हैं, 'जैसे हॉथॉर्न तुम्हारी मुट्ठी में है,' फैनी ने कहा। काफी निकट भविष्य में उन्हें काफी बड़ी रकमों की ज़रूरत पड़ेगी-असल में कुछ ही सप्ताह में। लेकिन लगता है पीचम ने किसी चीज़ का इंतज़ाम कर लिया है जिससे इस मुश्किल जिम्मेदारी से राहत मिल गयी है। शायद यही इस बात की एकमात्र सम्भव व्याख्या है कि उन्होंने नेशनल क्रेडिट बैंक से अपना पैसा क्यों नहीं निकाला है।

मैकहीथ जानता था कि पीचम दलाल के लिए अपनी बेटी को मुक्त करने की उम्मीद में हैं। चूँकि इसमें वह अभी तक सफल नहीं हुए हैं, उन्हें निश्चित रूप से पैसा देना पड़ेगा। इसलिए नेशनल क्रेडिट बैंक का उनका दौरा उम्मीद के मुताबिक घण्टे भर का होगा।

खुद मैकहीथ अभी भी बैंक के बोर्ड पर नहीं था। लेकिन औपचारिकताएँ ख़त्म होने के बिन्दु पर थीं। सबकुछ अब समय प्राप्त करने पर निर्भर करता था। उसे दहेज को पकड़े रहना होगा और पत्नी को दे देना होगा-कम-से-कम कुछ वक्त के लिए। इसका यह मतलब नहीं कि उसने पॉली को खो दिया। वह अभी भी उसकी बदौलत पेट से थी और यह चीज़ उसे वफादार बनाए रखेगी।

उसे अपना काम ज़रूर पूरा करना होगा।

उसी शाम उसने पीचम के वकील वैली को बुलाया और तलाक पर राज़ी हो गया।

कोक्स भी अभी भी पीचम परिवार के यहाँ आता था। हाल ही से वह अपनी बहन को भी अपने साथ ले आने लगा था, और दोनों परिवारों के बीच सम्बन्ध इससे ज़्यादा अन्तरंग नहीं हो सकते थे। मिस कोक्स मिसेज पीचम और उनकी बेटी पर मुग्ध थी। बुजुर्ग महिलाएँ विस्ट खेलतीं और पॉली ट्रैफलगार युद्ध में लॉर्ड नेलसन को दिखलाने वाली एक कढ़ाई पर काम करती। शाम को दलाल अपनी बहन को घर ले जाने के लिए आता, और वह कुछ मिनट महिलाओं के साथ हमेशा बैठता। हमेशा की तरह, वह पॉली से पियानो पर कुछ बजाने को कहता। वह इसे बड़ी खूबसूरती से करती। उसके पास अच्छी आवाज़ भी थी, और जब वह बजाती तो, उसकी महीन रेशमी जालीदार आस्तीन पीछे को ढलक जाती जिससे कोई उसकी पूरी बाँह देख सकता था।

जब वह उसे पियानो बजाते हुए देखता, तब भी वह समझ सकता था कि क्यों एक बार उसने उससे शादी के बारे में सोचा था। उसके अन्दर शानदार गुण थे।

उसने अपनी डायरी में लिखा, *'पहले ही लड़की को हासिल करने से इतना फर्क पड़ता है? उस पहले शोचनीय रूप से अपूर्ण आलिंगन का क्या अर्थ है? आदमी में मौजूद उस अन्दरूनी, प्रभुत्वकारी चाहत के बारे में सोचो जो औरत को दासी बनाने, उसे जीतने से पूरी होती है! नहीं तो पूर्ण अधिकार के बाद भी यह तटस्थता क्यों? आप यह तब भी महसूस करते हैं जब दासी कुँवारी न रह गयी हो! या शुद्धतः आर्थिक मामले ही आदमी के आध्यात्मिक जीवन में भूमिका अदा करते हैं? क्या इस चीज़ को मुझे अन्दरूनी, आध्यात्मिक तौर प्रभावित करना चाहिए कि पीच पर एक पत्नी के रूप में अब गम्भीरता से विचार नहीं किया जा सकता जब कि उसका बाप इतना पैसा गवाँ चुका है? निश्चित रूप से उसके नुकसानों के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ....लेकिन, तथ्यों के ही अनुसार, शायद सहज वृत्ति के लिए कारणों के लिए कोई इज्जत नहीं होती...किसी भी सूरत में, मेरी भावना अब पूर्ण अलगाव की है।'*

ऐसी भावनाओं को पीचम से छिपाया जाना था।

उसने उन्हें छिपाया। कार्नेशन फूलों का गुलदस्ता, जो वह उस परिवार को भेजता था बड़ा होता गया।

सितम्बर के अन्त में उसे पता चला कि मि.पीचम की बेटी छः महीने पहले

ही किसी मैकहीथ से ब्याही जा चुकी थी। वह काफी अचम्भित हुआ, लेकिन कुछ नहीं बोला और उसने इस सूचना को भविष्य में इस्तेमाल के लिए दर्ज़ कर लिया।

फिर क्रॉल की आत्महत्या का वाकया हुआ और कोक्स को निराश होने की एक अच्छी आधिकारिक वजह मिल गयी। इससे वाकई उसे ख़ासी असुविधा हुई थी। व्यावसायिक वजहों से वह एक बेहद सम्माननीय क्लब से जुड़ा हुआ था, और अखबार में अपने दफ्तर में हुई नागवार घटना को पढ़ने के बाद उसने अपने आपको इस्तीफा देने को बाध्य महसूस किया। उससे भी अप्रिय तथ्य यह था कि अगर जहाज़ वाले मामले को लेकर कोई सार्वजनिक विवाद हुआ, तो उसका नाम अब पूरे मामले के साथ अपृथक रूप से नत्थी हो चुका था।

क्रॉल की मौत ने कोक्स को पीचम को चोट पहुँचाने का एक बहाना दे दिया। लेकिन मिसेज पीचम और पॉली से मुलाकात करना उसने अब भी जारी रखा। यह पीचम को कोक्स के भावी इरादों के बारे में निश्चिंत रखने के लिए पर्याप्त था। लेकिन जब गोदी मज़दूरों की हड़ताल शुरू हो गयी तो उनके परस्पर काम ने एक बार फिर उनको एक साथ कर दिया।

पीचम ने कई बार मज़दूरों की मज़दूरी को कम करने की तरकीबें लगाई थीं। और एक सुन्दर सुबह दो सौ में से सिर्फ पाँच मज़दूर काम पर आये। दूसरे मज़दूर गोदी के फाटक के सामने उन मज़दूरों को रोकने के लिए खड़े थे जो अपनी सेवा प्रदान करने की पेशकश कर रहे थे।

यह अप्रीतिकर, यहाँ तक कि ख़तरनाक था। निश्चित रूप से हड़ताल का हवाला देकर जहाज़ों को अन्तिम तौर पर सौंपे जाने का काम टाला जा सकता था। लेकिन, उनकी साझी समस्या से पैदा हुए राज़ बाँटने के मूड में पिघलकर कोक्स ने पीचम के सामने स्वीकार किया कि एम.टी.सी. से जहाज़ खरीदने की सरकार की चाहत कोई ज़्यादा तीव्र नहीं है। उनके पास पर्याप्त जहाज़ हैं। यह तो हेल था जिसने यह खोज निकाला कि ऊपरी दायरों में बैठने वालों को और परिवहन सुविधाएँ सुरक्षित करने पर कोई एतराज़ नहीं है। जब करार पर दस्तख़त हो गये तब हेल ने शुद्ध रूप से असुविधाजनक प्रश्नों को रोकने के लिए युद्ध कार्यालय में अपने मित्रों के जरिये नये ख़रीदे जहाज़ों के लिए एक छोटे-से फौजी रक्षक बेड़े की व्यवस्था कर दी थी। स्वाभाविक रूप से इस बेड़े का परिवहन दूसरे जरियों से हो सकता था। लेकिन साउथैम्प्टन वाले जहाज़ों का रास्ता, जो इस ख़तरनाक सौदे के ख़त्म होने तक खुला रखना था, अब जल्दी ही बन्द होने वाला था। हेल पूरी तरह सिद्धान्तहीन था और किसी भी दिन ब्लैकमेल

करने के नये प्रयास शुरू कर सकता था।

इसलिए पीचम ने जहाज़ पर काम शुरू करवाने के लिए अपनी ताक त भर सबकुछ किया। उन्होंने सार्वजनिक स्थानों के पीछे 'एक ऐसे वक्त में होने वाली सर्वहारा ब्लैकमेलिंग' की बात करते हुए शुरू किया 'जब राष्ट्र तकलीफ में है'।

और फिर उनके मन में सेना का विचार आया।

उन्होंने अपनी कार्यशालाओं में तेज़ गति से वर्दियाँ तैयार करवाना शुरू कर दिया।अपने अगले कदम के रूप में उन्होंने हड़तालों के खिलाफ एक ज़बर्दस्त प्रदर्शन की योजना बनाई, जो अमान्य सैनिकों को अंजाम देना था। अगर युद्ध में घायल सैनिक पूरे राष्ट्र के हित में यह कदम उठाते तो यह बहुत गहरा प्रभाव छोड़ता, ख़ास तौर पर अख़बार के कॉलमों में।

इन गतिविधियों के बीच ही वैली की यह घोषणा भी आ गयी कि मैकहीथ तलाक के लिए तैयार है। इसलिए पीचम की भयंकर कठिनाई-यानी कोक्स के समर्थन को सुनिश्चित करना और इस तरह एक आफत के मारे कारोबार को खुशनुमा अंजाम तक पहुँचाना जिसने तीन महीने तक उन्हें अनिश्चय की स्थिति में कैद रखा था-अब सुलझती नज़र आने लगी।

लेकिन जब उनकी बेटी ने अपने आसन्न तलाक की ख़बर सुनी तो उसने क्रुद्ध होकर उन्हें जवाब दिया, 'मैं पेट से हूँ!' उन्हें सदमा लगा।

वह उस पर चिल्लाए, 'फिर भी तुम्हारा तलाक होने जा रहा है। तुम्हारा तलाक होने जा रहा है और तुम डॉक्टर के पास जा रही हो! तुम समझती हो कि मैं अपने आपको तुम्हारे हाथों बरबाद होने दूँगा? आख़िर मेरी भी भावनाएँ हैं, और मैं खुद को पैरों तले रौंदे जाने की इजाज़त नहीं दूँगा। अगर तुम इसी तरह बर्ताव करती रही तो मैं बिस्तर पर जाकर लेट जाऊँगा और अपना सिर दीवार की और घुमा लूँगा, और सबकुछ रामभरोसे छोड़ दूँगा; और *तुम* सब धर्मशाला में जा सकते हो!'

उन दिनों न वह दाएँ देखते थे न बाएँ। वह भेदिया कुत्ते के समान शिकार की गंध के पीछे चलते रहते।

वह बहुत कम जानकार थे।

अगर उन्होंने यह अन्दाज़ा लगा लिया होता कि दलाल को उनकी बेटी की बदकिस्मत शादी के बारे में बहुत पहले से ही पता है, बस अगर उन्हें यह मालूम होता कि उनकी बेटी के मि.कोक्स के घर के आखिरी दौरे पर क्या हुआ था, तो उन्होंने अलग योजना बनाई होती।

उसी शाम पॉली जेल में अपने पति से मिलने गयी।

निश्चित रूप से, मैकहीथ ने फौरन उसे बताया कि सबकुछ बस दिखावे के लिए है। तलाक में थोड़ा वक्त लगता है। और आख़िर, पूरे मामले को ख़ारिज करने के लिए आपको अन्तिम मौक़े पर सिर्फ तलाक के लिए अपर्याप्त आधार की ज़रूरत है। लेकिन कार्यवाही के रिवाज़ से नहीं बचा सकता था; पॉली के पिता उसपर बहुत दबाव डाल रहे थे और वह पूरी तरह उनकी मुट्ठी में था।

'वह मुझे फाँसी भी चढ़वा सकते हैं-और चढ़वा भी देंगे। तुम तो जानती हो उनको!'

पॉली ने फौरन कहा कि तब उसे डॉक्टर के पास जाकर बच्चा गिरवा देना चाहिए। भ्रम की वजह से उसने स्वीकार किया था कि वह माँ बनने वाली है।

मैकहीथ डर गया। उसने इस बात का अन्दाज़ा नहीं लगाया था। उसने भर्रायी आवाज़ में, और अपनी बीवी की ओर न देखते हुए कहा : निश्चित रूप से इसके बारे में सोचना भी नहीं था, वह अपने बच्चे की बलि नहीं दे सकता, कम-से-कम तब तक नहीं जब तक यह बिल्कुल ही ज़रूरी न हो।

वह इस बारे में वाकई चिन्तित था और पॉली के रोते हुए चले जाने के बाद वह आधी रात जागता रहा। उसके अन्दर पारिवारिक सहज वृत्ति थी और एक बेटा होने के विचार से वह खुश था। उसका पीड़ादायी मनन अन्त में उसे इस हद तक ले गया कि, सोने जाने से ठीक पहले वह वाकई यह मानने लगा कि यह तो सिर्फ अपने छोटे-से बेटे का विचार है जिसने उसे इतने ख़तरनाक कारोबारी कदम उठाने के लिए प्रेरित किया था।

उसने सोचा, *'आह! क्या फायदा इस खून-पसीना बहाने और अनवरत श्रम करने का जब एकाएक हम मर जाएँ और ख़त्म हो जाएँ और काम बढ़ाने के लिए कोई न बचे? अगर अपने बेटे के लिए नहीं तो किसके लिए मैं इस कोठरी में बैठा हूँ? और क्या मुझे जीतते जाने की शक्ति दे सकता है? मैं उसका छोटा-सा हाथ अपने हाथ में लिए उन दुकानों में जाऊँगा जो एक दिन उसकी हो जाएँगी और मैं उससे कहूँगा : मेरे बेटे, इन सारी चीज़ों के लिए बहुत दर्द और तकलीफें उठानी पड़ी हैं, कभी भूलना नहीं इसे! तुम्हारे पिता ने खून बहाया है ताकि तुम्हें ऐसी विरासत मिल सके। वह सिर्फ अपने लिए नहीं खट रहा था। वह तुमसे कोई शुक्रिया नहीं माँग रहा-नहीं, नहीं। वह तो तुम्हें यह सब इसलिए बताता है ताकि तुम समझ पाओ कि हम, यानी तुम्हारा पिता और तुम, कई डोरियों से साथ बंधे हैं। तुम्हारा बाप मर जाएगा जब उसका वक्त आएगा, और फिर तुम उसकी*

स्मृति में काम करोगे जिसने तुम्हारी ख़ातिर...मतलब जिसने तुम्हारे लिए काम किया।-मैं उसे यह बताऊँगा और वह समझेगा। मैं उसे डिक बुलाऊँगा।'

वह वाकई ऐसा सोच रहा था। लेकिन अगली सुबह उसने पॉली से कहा कि उसे डॉक्टर के पास जाना ही होगा, यह ज़रूरी है। वह इस भरोसे था कि पॉली डॉक्टर से मुलाकात जितना ज़्यादा हो सके टाल दे, कम-से-कम दो या तीन दिन। तब तक वह कुछ ऐसा हासिल कर लेने की उम्मीद कर रहा था जो ऑपरेशन को अनावश्यक बना दे। लेकिन फिर भी उसे इसको झेलने के लिए तैयार रहना ही होगा। और किसी भी हालत में अपने बाप को सन्देह का कोई आधार मुहैया नहीं कराना होगा।

असल में, वह उस साँस लेने भर की जगह का और सिंकुड़ना नहीं झेल सकता था जिसे, तलाक पर सहमत होकर, उसने खुद तैयार किया था ताकि वह नेशनल क्रेडिट बैंक के साथ अपने सख़्त हमले को अंजाम देने के काबिल बन सके।

उसने बैंक के पुनः व्यवस्थापन में जल्दी के लिए हॉथॉर्न और मिलर को फिर पिछवाया।

अगली बार जब उन्हें बुलाया गया तो उन्हें प्रतीक्षालय में आधे घण्टे तक इंतज़ार करना पड़ा। मैकहीथ ने इसकी व्यवस्था की थी। तो उन्हें जेल के निवासियों के सम्बन्धियों के साथ, चाहे वे खाते-पीते हों या दरिद्र, स्त्री हो या पुरुष, बैठना पड़ा, बेहद निराशा की हालत में।

मैकहीथ उन दोनों बूढ़ों पर चीखा कि व्यवस्था का काम उसकी इच्छा से बहुत ज़्यादा समय ले रहा है; वह समझ नहीं पा रहा था कि एक सिर से पैर तक भ्रष्ट धन्धे में घुसने में उसे इतना वक्त क्यों लग रहा है।

फिर उसने उनके साथ क्रेस्टन की स्थिति पर विचार-विमर्श किया।

क्रेस्टन ने बिना और पैसे उधार लेने की आवश्यकता के अपना बिक्री-सप्ताह समाप्त कर लिया था। वह अभी भी इस बात पर अचम्भित था कि उसके प्रतिद्वंद्वी ने उसका पूरा स्टॉक ख़रीद लिया। लेकिन निश्चित रूप से, कीमतें सामान्य स्तर से कहीं ज़्यादा नीचे थीं।

वह आरों और बी.शॉप्स द्वारा शुरू किये जाने वाले बहुप्रचारित बिक्री-सप्ताह को लेकर भी परेशान था क्योंकि जनता बड़ी बेसब्री से इसका इंतज़ार कर रही थी। क्रेस्टन बैंक मे मैकहीथ के आसन्न प्रवेश के बारे में अनभिज्ञ था।

अब मैकहीथ ने इस चीज़ की व्यवस्था की कि उसे सूचना मिल जाये कि

अपने बिक्री सप्ताह के दौरान उसने जो तमाम खेपें बेच डालीं वे सन्देहास्पद थीं। मैनचेस्टर में चोरी हुए सामानों का ब्यौरा उनसे काफी मेल खाता था। वह अब रसीदें देखना चाहता था।

इस चाल पर क्रेस्टन खुद आया।

वह छह फुट दो इंच का एक फीके रंग का शख़्स था जिसे गोश्त के डोंगे, पादरी वर्ग और आई. आरों से घृणा थी। वह बहुत बदहवास है।

मैकहीथ ने बहुत रुखाई से उसका स्वागत किया, 'मि. क्रेस्टन, आपको एक दुखदायी कारण यहाँ लाया है। मुझे कहना ही होगा कि मैं अपने कानों पर मुश्किल से ही यकीन कर पाया जब मैंने सुना कि आपके बिक्री-सप्ताह के दौरान सन्देहास्पद स्रोतों वाले मालों की विशाल खेपें जनता को पेश की गयीं। मुझे उम्मीद है कि आपके पास उनकी रसीदें होंगी?'

मि.क्रेस्टन के पास कोई रसीद नहीं थी।

उसने तो खेपें इसलिए खरीद ली थीं क्योंकि वे सस्ती थीं और इसलिए कि हफ्तों की गलाकाटू प्रतियोगिता के बाद उसे मालों की ज़रूरत थी! वह इतना पापबोधग्रस्त दिखा मानो वह अपने सर्वाधिक परिपक्व आस्थाओं के बिल्कुल विरुद्ध ताज़ा कटलेट खाता पकड़ा गया हो।

मैकहीथ ने अपने आपको निष्ठुर दिखलाया। उसने भावावेगपूर्ण ढंग से प्रतियोगिता में न्यायोचितता और कानून के विवेक के बारे में बात की जो चोरी का माल बेचने और हासिल करने वाले को भी उतनी ही कठोरता से दण्ड देता है जितनी कठोरता से चोर को। अब अगर वह, यानी मैकहीथ, उन मालों को अपने बिक्री सप्ताह में बेचेगा तो उसके पास रसीदें होंगी; क्रेस्टन की रसीदें। लेकिन क्रेस्टन के पास कोई रसीद नहीं थीं। फिर उसने उसे संक्षिप्त रूप से और क्रूरता के साथ सूचना दी कि वह नेशनल क्रेडिट बैंक के निदेशक मण्डल में शामिल होने जा रहा है। और अन्त में, उसने वे शर्तें सुना दीं जिसके तहत उसकी, यानी क्रेस्टन की दुकानें मैकहीथ द्वारा नियंत्रित एक शृंखला का हिस्सा बन सकती थीं जिसकी आपूर्ति सी.पी.बी. करता है।

दुबले और लम्बे मि.क्रेस्टन के होश ही फाख़्ता हो गये जब उन्होंने सुना कि उनका प्रतिद्वंद्वी उसी बैंक में प्रवेश कर रहा है जिसने उसे पूरी तरह अपनी मुट्ठी में जकड़ रखा है। अपनी स्थिति को समझने में उसे देर नहीं लगी।

संतरी को पेंसिलें और कागज़ लाने को भेज दिया गया। जल्दी ही वे अनगिनत संख्याएँ लिख रहे थे और सिगार के सुलगते छोरों से उनकी तरफ

इशारा कर रहे थे। अपनी कोठरी की दीवार पर मैकहीथ ने लंदन का एक नीला-हरा नक्शा टांग रखा था; उसने मोटी लाल रेखाओं से कुछ खास इलाकों को घेर दिया जहाँ माल की नियमित और बराबर खपत थी; फिर उसने जगह के नामों को रेखांकित किया और फिर पूरे शहर और इसके मोहल्लों पर उसने रेखाओं का एक जटिल जाल बिछा दिया। यह बी.सी. (बार्गेन-क्रेस्टन) शॉप्स की वितरण योजना थी।

क्रेस्टन की कई दुकानों को बदला, जोड़ा या बेचा जाना था। अपनी लाल पेंसिल से मैकहीथ ने निर्दयता से उनकी तकदीर लिख दी। उसके बैंक को 'इसके' पैसों की ज़रूरत थी।

मैकहीथ ने क्रेस्टन से कहा, 'मत भूलो, यह बैंक एक बच्चे का है। उसके पैसे का बहुत घटिया तरीके से दुरुपयोग किया गया है। दूसरे लोगों का पैसा पहले ही इस नियति को प्राप्त हो चुका है। यह रुकना ही चाहिए। मुझे इस स्थिति में आना ही होगा कि मैं छोटे-से मालिक के प्रति सारी जिम्मेदारियाँ उठा सकूँ। मैं जज्बाती आदमी नहीं हूँ, लेकिन मैं ऐसा कतई नहीं होने दूँगा कि दुनिया-जहान कहे कि मैंने बच्चों को लूटा। बच्चे इंग्लैण्ड का भविष्य हैं, हमें पल-भर को भी यह नहीं भूलना चाहिए।'

कीमतों को धीरे-धीरे उठाया जाना था। 'गुणवत्ता' शब्द को प्रचारों में लाया जाना था।

मैकहीथ ने फैनी को क्रेस्टन से अपनी बातचीत का ब्यौरा दियाः

'हमारे बीच छोटा-सा एक तरफा संवाद हुआ। मैंने उससे पूछा : क्या तुम उसकी ज़िम्मेदारी लेते हो, जो तुमने किया है? उसने फौरन मुझे जवाब दिया : नहीं।-तो तुम अपनी आज़ादी बरकरार नहीं रखना चाहते-किसी भी कीमत पर? मैंने फिर उससे पूछा। उसने जवाब दिया-किसी कीमत पर नहीं। तुम्हें भले ही अपनी हार माननी पड़े और मेरे कदमों के नीचे अपना सिर झुकाना पड़े?-उसका जवाब था, बिल्कुल, आखिर में इसी से कम नुकसान है।-वह ऐसा नहीं है जिसे आप एक महान चरित्र वाला कहते हैं, वह पर्याप्त व्यावहारिक व्यक्ति है। वाकई आजकल दमदार व्यक्तित्व का होने की कोशिश करने का कोई विशेष लाभ नहीं है।'

मिलर और हॉथॉर्न को मैकहीथ के हाथों एक और बेइज्जती झेलनी पड़ी। उसने कहा कि उसे एक बयान पर दस्तख़त करने की गुंजाइश करनी होगी कि उसने, यानी मिलर ने, अपनी ज़िम्मेदारी पर और हॉथॉर्न को बताए बगैर पीचम

की जमा राशि को सट्टेबाजी के लिए गबन किया। बैंक को अकलंकित रहना होगा।

मिलर पूरी तरह से टूट गया। उसने अपना बूढ़ा सिर कुर्सी के सहारे पर टिकाया और रोया। फिर उसने अपने आपको सम्भाला, खड़ा हुआ और काफी गरिमा के साथ कहा :

'मैं ऐसा नहीं कर सकता, मि.मैकहीथ। मैं ऐसे दस्तावेज़ पर दस्तख़त कभी नहीं कर सकता जो कहता हो कि मैंने सट्टेबाज़ी के लिए बैंक को भरोसे के साथ सौंपे गये पैंसों इस्तेमाल किया है। आपको अहसास है कि इसका क्या मतलब है: *भरोसे के साथ सौंपे गये?* आप कहते हैं : मि.मिलर, यह रही मेरी पूँजी, मैं इसे आपके *नेक हाथों* में रखता हूँ, *अपने सारे ज्ञान और कुशलता* के आधार पर इसे लगाइये। मैं आप पर भरोसा करता हूँ। आप एक इज्जतदार शख़्स हैं।-और अब मुझसे यह अपेक्षा की जा रही है कि मैं कहूँ : पैसा गया। मैं अभी भी यहीं हूँ। मगर आपका पैसा गया। कभी नहीं! आप सुन रहे हैं, मि.मैकहीथ, मैं ऐसा कभी नहीं कह सकता।'

'लेकिन आप अभी भी यहाँ *हैं,* और पैसा जा चुका *है!'*

'हाँ,' मि.मिलर ने कहा और एक अचम्भित बच्चे जैसा भाव लिए बैठ गये।

पाँच मिनट तक वे बिना कोई शब्द कहे बैठे रहे। फिर वह अभी भी अपना सिर हिलाते और खुद से बुदबुदाकर कुछ कहते हुए बाहर चले गये।

दो घण्टे बाद हॉथॉर्न दस्तख़त किया बयान ले आया।

मिलर का नाम नीचे लिखा, साफ़ और स्पष्ट, मानो किसी स्कूली लड़के ने लिखा हो।

भावना से काँपती आवाज़ में हॉथॉर्न ने मैकहीथ से मिलर को किसी भी हालत में कुछ समय के लिए बैंक में अपनी डेस्क पर छोड़ देने की भीख माँगी-जाहिरा तौर पर बिना तनख्वाह के-क्योंकि वह बुजुर्ग आदमी नहीं जानता था कि वह अपनी पत्नी और पड़ोसियों से क्या कह सकता है।

मैकहीथ ने इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया।

उसी दिन नेशनल क्रेडिट बैंक में मैकहीथ के प्रवेश की पुष्टि हो गयी।

उसके दिमाग से एक मन वजन हट गया। अब आरों और ऑपर जान सकते थे कि सी.पी.बी. के अध्यक्ष का नाम मैकहीथ है; क्योंकि अब नेशनल क्रेडिट बैंक के डायरेक्टर का नाम भी मैकहीथ था। और क्रेस्टन का कारोबारी मित्र भी मैकहीथ था।

दोपहर के भोजन के बाद पॉली मिसेज क्रॉल के पास गयी।

उसके पिता ने उसे भेजा था। हाल ही में उसने भारग्राही अफसर के तौर पर अपने पिता की कुछ खास जिम्मेदारियो ंको ले लिया था।

खाने की छोटी-सी टोकरी और सेब की शराब की बोतल ने, जो पॉली अपने साथ लायी थी, मिसेज क्रॉल के दिल को छू लिया। उसने तेज़ स्वर में एम.टी. सी. की शिकायत की जिसने घर का सारा फर्नीचर ज़ब्त कर लिया था, सिर्फ उसको छोड़कर जो उनके लिए 'निहायत ज़रूरी' था। उसने अपने बाप की भी शिकायत की, जो दुख के साथ सुन रहे थे।

उसने रोते-पीटते कहा, 'इनका मैं क्या करूँ? वह तो बच्चों से भी गये-गुज़रे हैं जो कम से कम घर तो साफ़ कर देते हैं। और अब जबकि मेरे पति ने सट्टेबाज़ी में अपनी सारी कमाई उड़ा दी, तो हमारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची।'

पॉली ने सहानुभूति के साथ कहा, 'अगर कोई *थोड़े-से* पैसे जमा कर पाता तो मैं उन्हें उनकी छोटी बी.शॉप्स में से एक आपको देने के लिए मना पाती। लेकिन उसमें भी शुरुआत करने के लिए थोड़ी पूँजी की ज़रूरत पड़ती है।'

मिसेज क्रॉल के लिए वह बहुत तुष्ट करने वाली रही। वह निरानन्द कमरा जाने कैसे उज्ज्वल था जब तक वह वहाँ मुस्कराते, खाली टोकरी अपनी गोद में रखे बैठी थी।

मिसेज क्रॉल झिझक रही थी। उसकी बुझी-सी निगाह बूढ़े की उपेक्षा करते हुए दयनीय फर्नीचर पर से गुज़री। फिर उसने अचानक कहा :

'एक सम्भावना बन सकती है। उनकी एक बहन है, जो इतने सुरक्षित निवेश में शायद थोड़ा पैसा लगा पाए-उसके पास ज़्यादा पैसे नहीं हैं।'

फिर वह बूढ़े की तरफ मुड़ी।

'आपको क्या लगता है?'

बूढ़े ने कुछ नहीं कहा। शायद उसकी समझ में नहीं आया था। उसका दिमाग अब बिल्कुल दुरुस्त नहीं मालूम पड़ता था।

दोनों औरतों ने इस सम्भावना पर कुछ मिनट विचार किया। जब पॉली जाने के लिए उठी तो उसने गम्भीरता से उससे वायदा कर दिया था कि वह अपने पति से मिसेज क्रॉल के लिए एक बी.शॉप के लिए कहेगी। विश्वस्नीय रहने के लिए, बाहर की सीढ़ी तक आते-आते वह इस बारे में सबकुछ भूल गयी। लेकिन फिर यह उसकी कमज़ोरी थी कि वह चाहती थी कि हर कोई उसे पसन्द करे।

घर लौटने पर उसे पिता के दफ्तर में बुलाया गया। कुछ रूखे शब्दों में उसके पिता ने उसे बता दिया कि उसका पति बच्चा गिराने को तैयार हो गया है। उसने किसी ग्रूच को भेजा था जिसने खुद आकर उन्हें सन्देश दिया था। पॉली के कमरे में एक चिट्ठी उसका इन्तज़ार कर रही थी।

पॉली ने उसे पढ़ा और उसे गहरी चोट पहुँची। क्या मैक अपने बेटे की इतनी-सी परवाह करता था? क्योंकि उसके लिए यह उसका बेटा *था,* चूँकि वह स्माइल्स के बारे में कुछ नहीं जानता था। यह भयानक था! वह इतनी नाराज़ हुई कि उसने उसी दोपहर डॉक्टर के पास जाने के लिए अपनी माँ से कहा, एक डॉक्टर को वह जानती भी थी, वहाँ 15 पाउण्ड का ख़र्च आता।

मिसेज पीचम पहले कुनैन आज़माना चाहती थी।

पहले दिन मरीज़ को तीन कैप्स्यूल लेने पड़ते थे, अगले दिन चार और फिर इसी तरह से सात तक जाना होता था। इससे आगे जाना ख़तरनाक था; लेकिन जब कान में गड़गड़ाहट, कंपकंपी और बीमारी का अहसास हो, तो उसे थूक देने की भी मनाही थी।

फिर मिसेज पीचम को पता चला कि पहला महीना नहीं चल रहा है; तो सिर्फ डॉक्टर का ही उपाय बचा था।

वे चाय के फौरन बाद गये। ऐसा नहीं लगा कि डॉक्टर पॉली को पहचान रहा है; उसकी प्रैक्टिस शायद काफी चलती थी। इसके अलावा इस बार उसे माँ से निपटना था; और उसके लिए, जिनके साथ वह कीमत तय करता, वह मरीज़ होते थे। वह अपने चमकीले औज़ारों के बीच बैठा था। उसने अपनी खूबसूरत, नर्म, दाढ़ी जिसमें कुछ बैक्टीरिया तो रहे ही होंगे, को ठोंका और कहाः

'बहन जी, मैं आपको बताना चाहूँगा कि आप जो कह रही हैं उसका कानून के साथ सामंजस्य नहीं है, इसके आदेशों के विपरीत है।' उसने अपनी आवाज़ को इस तरह ऊपर-नीचे किया कि जिस सामंजस्य की वह बात कर रहा था वह दिव्य संगीत मालूम पड़ा। लेकिन मिसेज पीचम ने रुखाई से उसे टोका :

'हाँ, मैं जानती हूँ, इसमें पन्द्रह पाउण्ड लगेंगे।'

पति के साथ तीस साल और मादक पेय पदार्थों के प्रचुर मात्रा में सेवन ने उनकी आदम जात की पहचान करा दी थी।

'पन्द्रह पाउण्ड में यह काम नहीं हो सकता; उल्टे मैं तो यह नहीं कल्पना कर पा रहा हूँ कि ऐसी रकम के बारे में आपने सोचा भी कैसे। ऑपरेशन उससे थोड़ा और महँगा है, यह ईमान का मामला है।' डॉक्टर ने खुशामदी अन्दाज़ में

कहा।

'आप कहते हैं कि ऑपरेशन और महँगा है? कितना महँगा!' मिसेज पीचम ने पूछा।

'अच्छा तो, हम 25 पाउण्ड कहें, बहन जी? लेकिन पहले आपको यह भयानक फैसला लेना होगा कि क्या आप वाकई एक खिलते जीवन को ख़त्म कर देना चाहती हैं; यानी, क्या यह वाकई एकदम, अनिवार्य आवश्यकता है, जैसी कि मेरे ग़रीब मरीज़ों के लिए होती है जो बच्चों को पालने-पोसने का ख़र्च नहीं उठा सकते-एक विचार जो, हालाँकि, ऑपरेशन को सही नहीं ठहरा सकता, पर कम-से-कम मानवता के आधार पर इसे समझने लायक बना देता है, आपको नहीं लगता ऐसा?'

मिसेज पीचम ने ग़ौर से उसकी तरफ देखा और फिर कहा :

'यह आवश्यकता का प्रश्न है, डॉक्टर।'

'तब निश्चित रूप से यह एक अलग मामला है,' डॉक्टर ने कहा, क्योंकि मिसेज पीचम और उनकी बेटी अब खड़े हो गये थे। 'तब, शायद, आप कल दोपहर तीन बजे आ सकती हैं। शुल्क पहले ही देय है ताकि आपके घर कोई सूचना न भेजनी पड़े। गुड आफ्टरनून।'

दोनों महिलाओं ने आइसक्रीम खाने का फैसला किया। फिर, चूँकि अभी घर जाना बहुत जल्दी होता, वे एक सिनेमा में चले गये।

यह उन अभागे हॉलों में से एक था जो लगातार चलते रहते हैं। यह एक आयताकार डिब्बे की शक्ल का था। पर्दा छोटा-सा था। बारिश की अनवरत बौछारें चित्रों को धुन्धला बना रही थीं और अभिनेता ऐसे चल रहे थे कि मानो सेण्ट विटस के नृत्य से व्यथित हों।

फिल्म का नाम था *'माँ, तुम्हारा बच्चा पुकारता है!'*

फिल्म नाचघर जाने के लिए एक कुलीन स्त्री के शृंगार पूरा करने के साथ शुरू हुई। अपनी नौकरानी की मदद से उसने तीन फुट की कॉर्सेट (कसी हुई चोली-अनु.) की जोड़ी पहनी और कुछ पाउण्ड हीरे अपने कानों और गर्दन पर लटकाये। पल भर को वह मुग्ध होकर आईने में खुद को देखती रही और फिर अगले कमरे में चली गयी जहाँ उसका बच्चा पालने में लेटा था। यह एक लगभग तीन साल की छोटी-सी बच्ची थी और उस वक्त बीमार थी। डॉक्टर, जो एक गम्भीर, दाढ़ी वाला आदमी था, पालने के पीछे खड़ा था। उसने उसकी धड़कन को जाँचा। फिर उसने कुछ प्रत्यक्षतः बेहद गम्भीर शब्दों का युवा माँ से

आदान-प्रदान किया। लेकिन फिर वह सिर्फ हल्के से हँसी, जल्दी से बच्चे को गले लगाया और बाहर चली गयी।

गलियारे के बीचों-बीच उद्घोषक खड़ा था जो एक मोटा-सा सज्जन व्यक्ति था। उसने एक प्रकार से मंद्र और गम्भीर आवाज़ में घोषणा की, 'क्रूर क्षुद्रता और विलास प्रियता ने युवा माता को स्वर्णित क्षय के आनन्द के लिए अपने बीमार बच्चे को छोड़कर जाने के लिए लुभाया।'

दृश्य बदला और एक असामान्य रूप से रमणीय और अलंकृत दीवानखाने का दृश्य आया जहाँ एक विशाल समूह नृत्य के आनन्द में सराबोर था।

साथ-साथ एक गम्भीर स्वर कह रहा था, 'पूरे जोश से "लाइट फैण्टास्टिक"।'

युवा माँ ने प्रवेश किया। घुटने तक की बिरजिस पहने एक वर्दी वाले नौकर ने उसके आने की घोषणा की। सभी भद्रजन अपने घुटने के बल बैठ गये। शैम्पेन लाने का आदेश दिया गया। युवा माता दो सौन्दर्य प्रेमी शूरवीरों के बीच एक फूले हुए प्लश के सोफा पर बैठ गयी। बीच-बीच में वह नाच के लिए उठती और बाँहों से बाँहों के बीच उड़ती।

उद्घोषक ने श्रोताओं को बताया 'घण्टों बीत गये और पता भी नहीं चला।'

शिशुशाला का दृश्य फिर प्रकट हुआ। बच्चा बुरी तरह बीमार प्रतीत हुआ। वह अपने पालने में उठ बैठी और अपनी अनुपस्थित माँ के लिए अपनी छोटी-सी बाँहें फैलायीं। अचानक वह पीछे गिर गयी।

मन्द्र स्वर आया, 'आह! वह मर रही है; देखो, वह पीछे गिरी! वह चली गयी!'

फिर से नाचघर का दृश्य। सिर पीछे की ओर किये युवा माँ शैम्पेन का गिलास ख़त्म कर रही थी। अचानक नाच-घर की दीवार पारदर्शी हो गयी; शिशुशाला पीछे दिखायी पड़ी; उतना ही पारदर्शी शिशु पालने से ऊपर उठा। वह एकदम सीधा खड़ा था। उसके कन्धे पर दो छोटे-छोटे पंख थे। फिर वह फड़फड़ाता हुआ दीवार के पार उस संगमरमर की मेज़ के पास आया जहाँ वह हृदयहीन माँ बैठी थी। मेज़ के सामने वह ज़मीन में गिरा और ओझल हो गया।

मन्द्र आवाज़ गूँजी, 'एक दृश्य में भयाक्रान्त माँ देखती है कि उसका बच्चा पहले ही मर चुका है। एक फरिश्ते के रूप में प्यारी छोटी बच्ची हमेशा के लिए विदा कहती है।'

युवा माँ बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी। कुछ पल बाद वह सामान घर में दिखलायी जाती है, जहाँ वह जल्दी से एक चादर लपेटती है।

'बेतहाशा धड़कते दिल के साथ वह दुखियारी चादर लपेटती है और बुदबुदाती है, "ओह, शायद इतनी देर न हुई हो!"'

फिर शिशुशाला का दृश्य आता है। माता अन्दर आती है। वह पालने के सामने घुटनों पर बैठ जाती है, अपनी छोटी मृत लड़की को गले लगा लेती है, और उसके हाथ दबाती है। नौकर दौड़ते हुए आते हैं और उसे शान्त करने की कोशिश करते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष रूप से वे उसकी आत्मग्लानि की पीड़ा को दूर कर पाने में असफल रहते हैं।

रुँधते स्वर में मंद्र आवाज़ समापन करती है :

'बहुत देर हो गयी, बहुत देर! जा चुका है तुम्हारा बच्चा!
न ही पीड़ा से न ही दुख से कभी हो पाएगा प्रायश्चित!'

दोनों औरतें पूरी फिल्म के दौरान मन्त्रमुग्ध आतंक में बैठी रहीं। डेस्क पर उन्होंने कुछ चॉकलेट खरीदी थीं। लेकिन यह उन्होंने मेलोड्रामा के शुरुआत के ठीक पहले ख़त्म कर लिया था। फिल्म ने उन्हें मुग्ध कर लिया।

जब निर्दयी माँ द्वारा अकेली छोड़ दी गयी छोटी बच्ची को अकेलेपन में मौत का सामना करना पड़ा तो पॉली को छाती मे बेध डालने वाले दर्द का अनुभव हुआ। अँधेरे में उसने अपनी माँ के हाथ को इधर-उधर टटोला; और दोनों औरतों की आँखों में आँसू थे जब छोटी मृत लड़की अपनी बाँहें फैलाये फड़फड़ाते हुए बॉलरूम में आई। वे इस उत्कृष्ट रचना से गहराई से प्रभावित होकर सिनेमा से निकलीं।

जब वे सड़क पर चल रहे थे तो मिसेज पीचम ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा, '*मैं* तुम्हें कल दोपहर वहाँ नहीं ले जाऊँगी।'

पॉली भी यह समझ पाने मे ंनाकाम थी कि वह कैसे अपने बच्चे को कुर्बान करने की इच्छुक हो सकती थी। क्या वह नाचघर वाली उस आपराधिक रूप से क्रूर माँ की तरह ही नहीं थी?

उस दिन देर रात से पहले दोनों औरतें फिल्म के प्रभाव से नहीं उबर पाईं। फिर मिसेज पीचम अपने सूती लम्बे मोज़ों में पॉली के कमरे में आईं और बिस्तर के कोने पर बैठीं और कहा :

'कल सुबह तुम कुछ खाना मत, वरना एनेस्थीसिया देने के बाद बीमार पड़ जाओगी।'

पूरी रात पॉली डॉक्टर के हथियारों की शस्त्रशाला देखती रही।

मि.पीचम बेहद व्यस्त थे।

उस शाम उनसे मैकहीथ का वकील विद और फैनी क्राइस्लर मिलने आये। पीचम ने ज़ोर देकर कहा था कि उसका दामाद फौरन उस व्यक्ति का नाम दे जिसका सहप्रतिवादी के रूप में ज़िक्र होना है और जो व्याभिचार की गवाही देगा। उन्हें अपने हर कदम के बारे में शंकारहित होना था।

मैकहीथ ने टनब्रिज में मिसेज लेक्सर के घर से एक लड़की का नाम सुझाया था, और मोटा विद उसे अपने साथ ओल्ड ओक स्ट्रीट ले आया। उस लड़की ने बेहद बेलाग-लपेट बात की, लेकिन मि.पीचम ने इसे बदसलूकी समझा और इस गवाह को ख़ारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि वह अपनी बेटी को इस हद तक और सारी दुनिया के सामने अपमानित करने के बारे में सोचेंगे भी नहीं। हालाँकि, असल में उन्हें डर था कि अदालत में शायद एक वेश्या की गवाही मानी न जाय।

इस बात ने मैकहीथ को गुस्से से पागल कर दिया।

'और कितनी औरतों के साथ मेरा यौन सम्बन्ध सम्भावित है, सिर्फ मेरे ससुर के फायदे के लिए?' वह चिल्लाया था।

फिर भी वह फैनी क्राइस्लर का ज़िक्र करने का राज़ी हो गया था।

सच है कि वह बैंक का निदेशक बन चुका था, लेकिन पीचम से तकरार अभी वांछित नहीं थी; वह अब उन्हें एक ग्राहक के रूप में देखता था। और बैंक के लिए यह कहीं ज़्यादा बेहतर होगा कि यह ग्राहक अपने विरोधी के साथ निपटारा ऐसे तरीके से करे कि उसे बैंक से अपने पैसे न निकालने पड़ें।

इस मंज़िल पर पॉली से असली तलाक का ख़याल मैकहीथ के दिमाग में एक से ज़्यादा बार आया।

ग्रूच से, जिससे अपने सामान्य अकुशल अंदाज़ में उसने फैनी क्राइस्लर की गवाह के रूप में उपयुक्तता पर चर्चा की, मैकहीथ ने इस तरह बात की :

'ऐसी स्थितियाँ पैदा हो सकती हैं जो मेरे और मेरी पत्नी के बीच अलगाव को अनिवार्य बना दें। मेरे लिए तो शायद तलाक सबसे सही चीज़ हो। लेकिन अगर मैं फैनी के साथ अपने सम्बन्धों की बात मान भी लूँ, तब भी कोई वजह नहीं है कि इसका मतलब अपनी पत्नी से रिश्ता तोड़ना होगा। अभी भी उसके पेट में मेरा बच्चा है और इसलिए वह इतनी आसानी से अपनी चाहत के आगे हार नहीं मान सकती और किसी भी मामूली से बहाने पर भाग नहीं सकती। केवल बेहद असाध्स कारण ही किसी औरत को ऐसी स्थिति में इस हद तक जाने

को बाध्य कर सकते हैं। यही तो उनके गर्भवती होने का फायदा है। ऐसे में ही उन्हें अहसास होता है कि उनके कर्तव्य क्या हैं। प्रकृति चालू है, ग्रूच। वह जो चाहती है, पा लेती है। और क्यों? क्योंकि वह चालू है!'

ग्रूच सिगरेट पीते हुए और विचारशील ढंग से सिर हिलाते हुए गद्दे पर पालथी मार कर बैठ गया।

मैकहीथ ने चिन्ताकुल होकर बोलना जारी किया, *'केवल एक रास्ता है जिससे मेरी बीवी मुझे हरा सकती है और वह है कि अगर वह अपने बच्चे से पिण्ड छुड़ा ले। लेकिन वह इतना क्रूर कदम होगा कि तब इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि हमारा तलाक हो गया। मैंने यह उसके विवेक पर छोड़ दिया है। मैंने न इसके पक्ष में कुछ कहा है न ही इसके विरुद्ध। इस तरह मैं उसे दिखलाना चाहता था कि फैसला पूरी तरह उसके हाथ में है। यह उसके लिए एक भारी परीक्षा होगी, एक ऐसी परीक्षा जो आखिरी हद तक उसे परखेगी। मुझे बेलाग-लपेट मानना होगा कि मुझे खुद नहीं मालूम कि वह कैसे इस चीज़ का सामना करेगी। मैं बस इतना जानता हूँ कि शायद सबकुछ तय हो चुका होगा। मैं नहीं जानता कि इस वक्त बच्चा उसके गर्भ में है या नहीं। मैंने उससे न पूछने की सावधानी बरती है। प्रत्यक्ष रूप से मैं तटस्थ हूँ। लेकिन समय आएगा जब मैं उससे पूछूँगा : तुम्हारा बच्चा कहाँ हैं? उसका तुमने क्या किया? क्या वह तुम्हारे लिए इतना अहम था कि तुम किसी भी चीज़ के बदले उससे अलग नहीं होना चाहोगी? या ऐसा नहीं था? दूसरी वाली बात से सबकुछ तय हो जाएगा।'*

ग्रूच ने फिर सिर हिलाया और उस वक्त मैकहीथ जो कह रहा था, वाकई वैसा मानता था। सख्त निर्देश देने और फिर उन्हें लागू करने वालों की ओर मुड़कर उन्हें ज़िम्मेदार ठहराने का यह उसका तरीका था। और इस बातचीत के बाद ही विद फैनी को पीचम के पास ले आया। पीचम दोनों से अपने दफ्तर में मिले।

फैनी ने बहुत ही स्वाभाविक व्यवहार किया और हमेशा की तरह एक शिष्ट नारी होने का प्रभाव छोड़ा। उसने कहा कि वह उस सेवा को देने की इच्छुक है जिसकी मि.मैकहीथ ने उससे गुज़ारिश की है। वह किसी भी रूप में ऐसा करने के लिए बाध्य अनुभव नही कर रही है और दुनिया भर की चिरौरी-मिन्नत का उस पर कोई असर नही पड़ता अगर एक बार उसने मन बना लिया होता।

पीचम ने रुखाई से टोका, 'रुको! क्या अभी कही गयी बातों से मुझे यह समझा रही हो कि तुम मि.मैकहीथ की सेवा के लिए झूठी गवाही देने के लिए

तैयार हो? यह हमारे लिए किसी काम की नहीं होगी।'

फैनी ने अचम्भे के साथ वकील की तरफ देखा जो किंकर्तव्यविमूढ़-सा खाली कमरे के एक कोने की ओर घूरे जा रहा था।

वह तीनों में अकेली थी जो बैठी थी और अब उसने एक सिगरेट जला ली और कहा, 'आपका मतलब है कि मुझे आपको यह बताना है कि मैं वाकई आपके दामाद के साथ सोई हूँ या नहीं?'

'निश्चित रूप से,' मि.पीचम ने कहा।

वह हँसी, लेकिन अप्रिय ढंग से नहीं। फिर वह विद की ओर मुड़ी।

'मुझे नहीं मालूम, विद, कि मि.मैकहीथ ऐसे मसले पर मेरा चर्चा करना पसन्द करेंगे या नहीं।'

उसने जानबूझकर 'मिस्टर' ग़ायब कर दिया ताकि वह यह दिखा सके कि सामाजिक रूप से वह उसी पैड़ीं पर खड़ी है जिस पर विद के मुवक्किल होते हैं।

मि.पीचम ने कहा, 'मि.मैकहीथ चाहें या न चाहें, मुझे यह जानना ही है। और मेरी पत्नी को भी जानना है, अगर *इसपर* तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है। कोई मज़ाक नहीं है यह मामला।'

और उन्होंने टिन से ढँका दरवाज़ा खोला और अपनी पत्नी को चिल्लाकर आवाज़ लगायी।

वह बहुत दूर नहीं मालूम पड़ी क्योंकि वह फौरन ही वहाँ पहुँच गयीं। अपने हाथ में पेट पर बाँधे उन्होंने मेहमानों पर सवालिया निगाह डाली। वह कोई शिष्ट महिला नहीं थीं।

'यह मिस क्राइस्लर है,' पीचम ने परिचय में कहा। फैनी ने अपना सिगरेट होल्डर नीचे रख दिया था, लेकिन वह अभी भी पैर पर पैर चढ़ाए अनिश्चिततापूर्वक मुस्कराते हुए वहाँ बैठी थी। 'मिस क्राइस्लर मुझे बताने आयीं हैं कि वर्तमान समय तक उनके मैकहीथ से काफी करीबी रिश्ते रहे हैं, उनकी शादी के बाद भी। है न?'

'बिल्कुल ठीक,' मिस क्राइस्लर ने संजीदगी के साथ कहा। और नवागंतुक पर विचार करने के चलते, उसने नरमी से जोड़ा :

'मैं मि.मैकहीथ के लिए कारोबार चलाती हूँ और हमेशा उनके साथ काम करती हूँ।'

फिर वह उठी, अपना सिगरेट-होल्डर अपने झोले में डाला, थोड़ा सिर

हिलाया और बाहर चली गयी। विद ने एक असमंजसपूर्ण मुस्कराहट के साथ दरवाज़ा खोला।

उस रात, कई महीनों में पहली बार पीचम चैन की नींद सोये।

अगली सुबह वह कोक्स से निर्णायक बातचीत करना चाहते थे। वह पॉली की भूल का स्वीकारना और साथ ही साथ तलाक पर मैकहीथ की रज़ामन्दी की ख़बर देना चाहते थे। फिर साउथैम्प्टन वाले जहाज़ों को ख़रीदने की कोई ज़रूरत नहीं होती, हालाँकि पीचम के हिस्से सहित उसके लिए पैसे जुटाये जा चुके थे।

लेकिन जब वह कोक्स से मिलने जाने के लिए अपनी हजामत बना रहा था तो कोक्स एक चिट्ठी लहराते हुए कमरे में घुसा और उसपर चिल्लाया :

'तुम मेरे साथ किस तरह की चाल खेल रहे हो? महीनों से तुम मुझे अपनी बेटी से शादी कर लेने के लिए पिछवाये हुए हो। महीनों से तुम हम दोनों को हर सम्भव मौक़े पर एक साथ कर देते हो; मेरे ख़याल से, इस उम्मीद में कि तुम इस धन्धे में अपना एक विशेष स्थान सुरक्षित कर लोगे और तुम मुझे अपने साथ उस तरह निपटने से रोक लोगे जिस तरह से मैं उन बाकी दूसरे बदमाशों से निपटता आया हूँ जिनके तुम यार हो। और आज मुझे पता चलता है कि तुम्हारी बेटी की तो काफी पहले ही शादी हो चुकी है और अब तलाक होने वाला है, और यह कि उसका पति एक अपराधी है जो, मुझे बताया गया है, फिलहाल जेल में है। क्या तुम पागल हो?'

पीचम, चेहरा झाग से ढँके हाथ में अभी उस्तरा पकड़े उस छोटे से आईने में घूरते हुए बिना हिले-डुले खड़े रहे जिसे उन्होंने खिड़की के हैण्डल पर टाँग रखा था। वह धीरे से कराहे।

कोक्स ने तीखेपन के साथ कहना जारी रखा, 'क्या यह तुम्हारा जवाब है? क्या यही कहना है तुम्हें मुझसे? एक कराह? बड़े बहादुर हो!'

पीचम ने उस्तरा नीचे किया। उनका चेहरा घटिया था, लेकिन इसमें दर्द अब इतना ज़्यादा हो गया था कि यह लगभग प्रीतिकर मालूम पड़ रहा था।

उन्होंने मन्द आवाज़ में कहा, 'कोक्स, कोक्स! तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?'

और दर्द का भाव इतना असली था कि कोक्स उससे ज़्यादा बिल्कुल नहीं कह पाया जितना एकदम ज़रूरी था।

'दो घण्टे के अन्दर पीचम, दो घण्टे के अन्दर, तुम एम.टी.सी. के लिए पैसे सौंप दोगे, और ये तुम मुझे मेरे दफ्तर में सौंपोगे; और उसके बाद तुम मेरी नज़र

से दूर रहोगे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो पाँच घण्टे के अन्दर, तुम अपने आपको जेल में पाओगे अपने चहेते दामाद के साथ!'

वह एकदम सीधा बाहर निकला और पॉली और उसकी माँ से टकरा गया जिन्हें शोर पीछे सी खींच लाया था। जब वह उनके बगल से गुज़रा तो उसने कटाक्ष करते हुए कहा :

'गुड डे, मिसेज़ मैकहीथ!'

मिसेज पीचम फौरन दफ्तर में गयीं। जब उन्होंने अपने पति को मुर्दे की तरह पीला पड़े, खिड़की के बगल में खड़े देखा, तभी ठीक-ठीक जान गयीं कि क्या हुआ था।

पन्द्रह मिनट बाद उन्होंने अपनी बेटी से कहा, 'बेहतर होगा कि डॉक्टर के यहाँ जाने को हम कुछ समय के लिए स्थगित कर दें।'

पीचम हक्का-बक्का थे। उन्होंने दलाल के लोभ पर कितनी निश्चितता के साथ आस लगायी थी। उनको, श्रीमान निष्ठावान को, यह एकदम पक्का लगा था क्योंकि वह बहुत गन्दा लगा था। वह इतना पक्का थे कि कोक्स अपनी दैहिक भूख के लिए अपने भौतिक हितों की कुर्बानी दे देगा; और उसने इसके लिए उनका तिरस्कार किया। उन्होंने उसे कम करके आँका था...

मि.कोक्स द्वारा इस शहमात के बाद मामले आँख चुँधिया देने वाली गति से आगे बढ़े।

पीचम अपने बैंक गये, और जब उन्होंने कहा कि वह अपना पैसा निकालना चाहते हैं तो काफी देर तक उन्हें टाल-मटोल झेलनी पड़ी। सन्देह होने पर, उन्होंने मिलर से बात करने की माँग की। जब वे उनसे इंतज़ार करवाते रहे, तो उन्होंने बलपूर्वक उस बूढ़े के दफ्तर में जाने का रास्ता बनाया। उसी पल, और काफी जल्दी में हॉथॉर्न भी दूसरे दरवाज़े से आया। डेढ़ सदी पर एक निगाह भर डालने की देर थी कि पीचम सबकुछ या लगभग सबकुछ जान गये।

छोटी-सी बातचीत ने पूरी स्थिति को स्पष्ट कर दिया।

अब अगर वह अपना पैसा निकालना चाहते थे तो उन्हें मि.मैकहीथ से निपटना था। पिछले दिन से मि.मैकहीथ बैंक के प्रबन्ध निदेशक थे और जेल में पाए जाते थे।

पीचम दोनों बूढ़ों के पास से निकले और जल्दी से कोक्स के दफ्तर पहुँचे। पहले ही ग्यारह बज चुके थे।

कोक्स ने शान्ति से ख़बर सुनी। फिर उसने रूखे ढंग से कहा :

'मैं तुम्हें कल दोपहर तक का समय दूँगा। तब तक तुम्हें या तो पूरी रकम जुटानी होगी या फिर उसके लिए सुरक्षा रकम रखनी होगी। तुम्हारे मुताबिक, तुम्हारा दामाद ही अब तुम्हारे बैंक का निदेशक है। कृपा करके मेरे पास सरकार के साथ हुआ करारनामा फौरन ले आओ और वे दस्तख़त किये गये कागज़ात भी जिसमें क्रॉल और बैरोनेट ने अपनी और दूसरों की देनदारी का इकबाल किया है।'

पीचम फिर गये और ढूँढकर कोक्स के लिए ये सारे दस्तावेज़ लाये। वह ऐसे चल रहे थे मानो बेहोशी में हों। इसके बाद वह फिर घर गये और खुद को दफ्तर में बन्द कर लिया। उन्होंने कुछ नहीं खाया। दो बजे के करीब उन्होंने फ्यूकूम्बी को उसके होटल से बुलाया।

भूतपूर्व सैनिक चेहरे से काफी खाता-पीता, लगभग मोटा लग रहा था। बस उसके चेहरे का रंग अस्वस्थ था। जितने भी समय पीचम ने उससे बात की, हमेशा की तरह कोने की खिड़की की तरफ घूरते हुए, वह लंगड़ा आदमी बिना हिले-डुले दरवाज़े के रास्ते पर, अपनी टोपी अपने विशालकाय हाथों में जकड़े खड़ा रहा।

पीचम ने उससे कुछ यूँ बातचीत की :

हाल में उनके कारखाने पर कई हमले हुए हैं। इसलिए वह अपने धन्धे को अच्छी-खासी मात्रा में समेटने और अपने लोगों में से कइयों को सड़क पर धकेलने पर बाध्य हैं। फ्यूकूम्बी को भी इन्हीं लोगों में से होना था।

कुछ समय के लिए मि.पीचम बेरोज़गारी की भयानक समस्या के बारे में बोले।

'मैं काफी अच्छी तरह से जानता हूँ कि इस तरह लोगों को सड़क पर धकेलने का क्या मतलब है। ख़ास तौर पर इस कदम के नैतिक नतीजे सबसे भयंकर होते हैं। ठेठ मज़दूर बेहद जल्दी ही, सभी नैतिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है। बिरले ही ऐसा होता है कि भूख और ठण्ड के मायावी प्रभाव के ख़िलाफ़ वह अपने नैतिक स्तरों को कायम रखने के काबिल हो। उसका आत्मसम्मान टूट जाता है। उसे अहसास होता है कि समुदाय के लिए वह एक बोझ है। ऐसी दिमाग़ी हालत में वह बेहद आसानी से उन भड़काऊ लोगों के बहकावे में आ सकता है जो उसे स्थापित व्यवस्था का दुश्मन बनाना चाहते हैं। मैं यह सब जानता हूँ, लेकिन मैं क्या करूँ?'

फिर भी इस बात की एक सम्भावना थी कि वह शायद तत्काल फ्यूकूम्बी सहित अपने कई कर्मचारियों को निकालने पर मजबूर न हों। लन्दन में कोई

मि.कोक्स हैं, जिनके पास अपने सीने वाली जेब में एक कागज़ का टुकड़ा था जिस पर उनका कोई हक नहीं है। इस कोक्स को कैसे भी रास्ते से हटाना है-और कल सुबह तक। जो कोई भी इतने सारे कर्मचारियों को नौकरी से निकाले जाने से बचाने के लिए इस आदमी को ठिकाने लगाने की जिम्मेदारी लेगा, उसे अपराध के वक्त कहीं और होने का बहाना मुहैया कराया जाएगा। ऐसे व्यक्ति को इस काम को पूरा करने के बाद फलाँ जगह जाना होगा और रात वहीं बितानी होगी।

मि.पीचम ने फलसफाना अन्दाज़ में कहा, *‘ये धन्धे का मामला है। यह दूसरे, तरीकों से धन्धे को चलाना है। युद्ध के बारे में सोचो। तुम एक सैनिक हो। जब कारोबारी लोग किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, सैनिक का प्रवेश होता है। यह बिल्कुल सही है। हम कारोबार में अन्य ज़्यादा शान्तिपूर्ण तरीके अपनाते हैं। लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए है कि आज अपनी चाहत की चीज़ हासिल करने के लिए एक तेज़ छुरे द्वारा हासिल करने से अलग रास्ते भी मौजूद हैं। बदकिस्मती से फिर भी यहाँ अपवाद मौजूद हैं।’*

सैनिक उस दलाल को जानता था। वह एक बार उसे एक पत्र देने गया था।

इस बातचीत के बाद, मिसेज पीचम ने फ्यूकूम्बी को अहाते में देखा। यह आखिरी मौक़ा था जब उन्होंने उसपर निगाह डाली थी और बाद में उन्होंने कहा था कि वह बहुत अजीब दिखा था। वह उन धोए गए कपड़ों के बीच काफी देर तक खड़ा रहा जो सुखाने के लिए बाहर टाँगे गये थे, और कुत्तों को घूरता रहा। लेकिन वह उनके पास नहीं गया, बावजूद इस तथ्य के कि उनको अभी तक अपना रात का खाना नहीं मिला था और वे पहले से ही हुँआ-हुँआ कर रहे थे।

मिसेज पीचम ने ठण्डी आह भरते हुए कहा था, ‘भगवान ही जानता है कि कौन से रक्तपिपासु विचार उसके दिमाग में आ रहे थे जब वह वहाँ खड़ा था।’

असल में, वह कुछ भी नहीं सोच रहा था, सिवाय इस बात के कि उस कार्डबोर्ड की छत वाले छप्पर की क्या कीमत होगी, जो पानी को तो रोक सकता है मगर ठण्ड को नहीं और जिसमें उसे एक शरण स्थल नसीब हुआ था।

उसने जो वक्त वहाँ गुज़ारा वह छोटा था। वह एनसाइक्लोपीडिया का आधा खण्ड भी नहीं खत्म कर पाया था।

जब उसने ओल्ड ओक स्ट्रीट की वाद्य यंत्रों की दुकान छोड़ी, तो उसकी पीछे की जेब में एक चाकू था। मगर अभी तक उसने अपना मन नहीं बनाया था।

लगभग उसी समय, मिसेज पॉली मैकहीथ ओ'हारा से बातचीत कर रही थी। यह ओ'हारा के घर पर हो रही थी।

मिसेज मैकहीथ ने तेज़ी से असम्बद्धता के साथ बताया कि अभी-अभी उन्हें अपने कमरे में अपने पति का एक पत्र मिला है जिसमें उसने लिखा है कि अब उसे चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब तलाक कभी नहीं होगा ('कभी नहीं' को रेखांकित किया गया था); सही वक्त पर वह बस उस दलाल, कोक्स को अपनी पत्नी के साथ व्याभिचार का दोषी ठहरा देगा। उसके पास कोक्स के पास निर्णायक सबूत हैं जो दिखलाते हैं कि वह सबसे घटिया किस्म का लम्पट है। और अगर कोक्स इस मामले में निर्दोष भी है तो यह आरोप तलाक में उसकी सारी दिलचस्पी ख़त्म कर देगा।

उसने ओ'हारा को पत्र दिखाया। यह पेंसिल से बेहद जल्दबाज़ी में लिखा गया था।

ओ'हारा बहुत अचम्भित नहीं दिखा।

पॉली ने हताशा में दोहराया, 'कोक्स को गवाह के तौर पर बुलाया जाने वाला है।'

'अच्छा, तो क्या?' ओ'हारा ने पूछा, सोफा से उठे बिना ही, क्योंकि वह दोपहर का खाना खा चुका था और *दि टाइम्स* का खेल का पन्ना पढ़ रहा था।

'तो क्या! मैं ऐसा नहीं होने देना चाहती।'

'क्या तुम्हारा लफड़ा था उसके साथ?'

'नहीं, जाहिरा तौर पर नहीं था।'

'तब तुम उसे गवाह क्यों नहीं होने देना चाहती?'

'क्योंकि मैं नहीं चाहती। क्या इतना काफी नहीं है? मैं ऐसा नहीं चाहती। इसलिए केस के शुरू होने से पहले उससे छुटकारा पाना ही होगा।'

'अगर मैं तुमको सही समझ रहा हूँ, तो तुम उसे किनारे लगाना चाहती हो?'

'नहीं, जाहिरा तौर पर में ऐसा नहीं चाहती।'

थोड़ी देर तक शान्ति छायी रही। ओ'हारा ने फिर अखबार उठा लिया।

पॉली ने कहा, 'तो, फिर? अखबार रख दो! तुम मुझसे ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हो? मैंने तुमसे एक सवाल पूछा है!'

ओ'हारा ने कहा, 'क्या वाकई पूछा है? ठीक है। उससे पिण्ड छुड़ा लिया जाएगा। लेकिन क्या होगा अगर उसने पिण्ड छोड़ने इंकार कर दिया तो?'

'तब मैं एक गवाह पेश करूँगी जिसके साथ मैंने व्याभिचार *किया है।*' पॉली

ने धीरे-धीरे और थिरा कर कहा।

'आह! तो तुम एक गवाह पेश करोगी...'

'यूँ खींसें निपोरने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम समझते नहीं हो। मैं कोक्स जैसे हास्यास्पद व्यक्ति के साथ एक सार्वजनिक अदालत में पेश होने से इंकार करती हूँ। अगर मेरा किसी के साथ चक्कर है, तो वह एक अच्छा-खासा सुदर्शन आदमी होना चाहिए। क्या तुमने कभी इस कोक्स को देखा है? वह एक बूढ़ा बकरा है, मगर ऐसा आदमी नहीं है, जिसके साथ कोई व्याभिचार करता है! *तुम्हारी* भी स्थिति कोई ख़ास नहीं है, लेकिन तुम कम-से-कम देखने लायक हो। कुछ भी हो, तुम कोर्ट में यह काम करोगे।'

ओ'हारा को थोड़ी-बहुत चिन्ता नहीं हुई। औरतों के साथ उसके अच्छे-खासे तजुर्बे ने उसे बताया कि कोई-न-कोई वजह है जिसने पॉली को यह घोषित करने को मजबूर किया कि आपात स्थिति में (यानी लगातार उस दलाल के मामले में मौजूद होने की सूरत में) वह उसका, यानी ओ'हारा का, ज़िक्र सहप्रतिवादी के तौर पर करेगी, और वह वजह पॉली के लिए, एक बेहद प्रभावी वजह थी। लेकिन उसके लिए इसका मतलब अपने सरदार से समयपूर्व नाता तोड़ना, उसकी योजनाओं की बरबादी-और शायद उससे भी बदतर था। वह मैकहीथ को तब से जानता था जब वह बेकेट ही कहलाता था। वह हमेशा से मोटा और बेपरवाह नहीं था।

ओ'हारा ने सावधानीपूर्वक अखबार मोड़ा और खड़ा हुआ।

उसने क्रूरता के साथ कहा, 'चुप रहो! तुम काफी बात कर चुकी हो। अब तुम जा सकती हो।'

उसे अहसास हुआ कि अब उसने जो कुछ किया उसकी उसे कीमत चुकानी पड़ेगी। पॉली वहाँ से चली गयी ताकि वह नाराज़ न हो जाये। वह बैलगाड़ी के चक्के जितना बड़ा हैट पहने हुए थी क्योंकि वह फैशन में था, वह रंगे हुए पंखों और जालीदार घूँघट से सजा था। वह एक छतरी भी लिए हुए थी और एक चोली पहने हुए थी जिसने उसके नितम्ब को बाहर की और निकाल दिया था। उसने बहुत सावधानी के साथ शृंगार किया था, और चलते हुए वह हर दुकान के शीशे में खुद को देखती थी। इस तरह वह उन आदमियों को भी देख सकती थी जो उसे देखते थे या उसका पीछा करते थे। वह जेल में अपने पति से मिलने गयी।

मैक के लिए वह आकर्षक थी। वह नखरे करते हुए एक पैर को दूसरे पैर पर रखकर सोफे पर बैठ गयी, अपनी छतरी से हवा को बेधते हुए। और उसने

मैक की यह चाहने के लिए प्रशंसा की कि कोक्स को गवाही के लिए बुलाया जाय ताकि पूरा केस ही बिखर जाए। अदालत में वह दलाल की तरफ अपनी छतरी से इशारा करेगी और कहेगी : तो कहा जा रहा है कि मैं इन भद्रजन के साथ हमबिस्तर हुई हूँ? और हँसेगी। इस दृश्य का वर्णन करते हुए वह काफी ज्यादा हँसी।

मैक उदास ही रहा। नेशनल क्रेडिट बैंक का मिलर उसके साथ था और उसने उत्तेजित होकर पीचम के बैंक आने के बारे में बतालाया था। यह कोक्स पीचम और उसके पैसे के लिए एक गम्भीर ख़तरा था। वह पॉली का पीछा छोड़ने के लिए अनिच्छुक दिख रहा था। लेकिन अगर पीचम कोक्स के साथ कोई सहमति नहीं बना सके, तो वह बैंक जिसका निदेशक पद हासिल करने के लिए उसका काफी वक्त ख़र्च हुआ था और उसने काफी दिक्कतें उठायीं थी, बस भरभरा कर ढह जाएगा। उसे काफी क्लेश के साथ इस बात का अनुभव हुआ कि उसकी किस्मत अब उसके ससुर की किस्मत के साथ जुड़ी हुई थी, और उसे उनके साथ उसी तरह बात करने के काबिल होने की खास इच्छा हुई, जिस तरह अन्य दामाद अपने-अपने ससुरों से तब बात करते हैं जब परिवार का कल्याण ख़तरे में होता है।

वह पॉली के साथ बात करने में बहुत घबरा रहा था और उसने जल्दी ही उसे भेज दिया। लेकिन वह बिना चुम्बन के नहीं जाती।

उसके ठीक बाद उसकी अपने आदमी रेडी के साथ गम्भीर बातचीत हुई।रेडी उसका सबसे बेहतरीन हत्यारा था।

बीमार आदमी मरता है

इस बीच कोक्स वेस्ट इण्डिया घाट पर गया था। पीचम ने उसे बताया था कि उसके भिखमंगे हड़ताल के खिलाफ प्रदर्शन करने जा रहे हैं। उसने उन्हें सैनिक वर्दी पहनायी थी। वे गोदी मज़दूरों के लालच पर आक्रोश व्यक्त करने जा रहे थे जिसकी वजह से ब्रिटिश सैनिक लड़ाई के मैदान तक नहीं पहुँचाये जा पा रहे थे।

ओल्ड ओक स्ट्रीट पर तख्तियों पर यह पेण्ट किया गया था : 'तुम हमारे साथियों को उनका फर्ज़ निभाने से दूर कर रहे हो!' और 'देखो *हमने* क्या कुर्बानी दी!'

दलाल प्रदर्शन को देखना चाहता था। पीचम की राय थी कि यह कोई बड़ी चीज़ नहीं थी; लेकिन मुख्य बात अखबारों का यह वादा था कि वे इस तिल का ताड़ बनाएँगे।

लाइमहाउस घाट पर दलाल बियरी से मिला जो काफी नाराज़ दिखा और उसने कोक्स को सूचना दी कि पीचम ने सुबह प्रदर्शन को रद्द कर दिया था और फिर, दोपहर के खाने के बाद, इस रद्दीकरण को रद्द कर दिया था; फिर भी समय पर सारे भागीदारों तक नहीं पहुँचा जा सका था, इसलिए अब यहाँ एक मज़ाकिया मरगिल्ला प्रदर्शन होगा। बियरी काफी खिन्न मन से वहाँ से गया, इस संकल्प के साथ कि वह बचाया जाय जो अभी भी बचाया जा सकता है।

कोक्स ने सीटी बजायी। तो पीचम भी हड़ताल पर चला गया था, और अब फिर से काम कर रहा है।

वह गोदी के जितना करीब होता गया उसने उतने ही ज़्यादा लोगों को देखा। उनमे ंसे कई केवल गली के कोनों पर खड़े थे, मगर उसी की तरह, एक पूरी भीड़ गोदी की तरफ जा रही थी। ऐसा लगता था कि वे कुछ देखने की उम्मीद में जा रहे थे या उन्होंने कुछ देखा था। किसी से पूछने पर उसे मालूम हुआ कि अक्षम सैनिक गोदी पर प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रेस वालों की भीड़ होती गयी।

यह वह समय था जब पाली बदलती थी। वे मज़दूर जो अभी भी काम पर थे उन्हें गोदी छोड़नी पड़ी। चूँकि अभी तक हिंसा की कोई घटना नहीं हुई थी, हड़ताल तोड़ने वालों को नावों में उनके काम से ले जाने और ले आने का फैसला हुआ। तो अब उन्हें हड़तालियों की कतारों की आलोचना करनी थी।

घाटों से वाकई अच्छा-खासा शोर आ रहा था।

कुछ कोनों के बाद, दलाल बियरी से फिर मिला। वह लोगों की भीड़ के बीच धकेलते हुए अपना रास्ता बना रहा था जो कि घाटों की तरफ जा रही थी।

दोनों आदमी कुछ मिनट तक वहीं फँसे खड़े रहे।

बियरी ने उत्तेजित होकर कहा, *'यह काफी बड़ा प्रदर्शन है। हमारे तो केवल एक-तिहाई लोग यहाँ आए, लेकिन मानो या न मानो, काफी मात्रा में असली सैनिक सड़कों पर आ गये हैं। वहाँ तक सारी सड़कें असली घायल सैनिकों से भरी हुई हैं। जाहिरा तौर पर हम यह पहले नहीं जान सकते थे। हमारे लोगों को प्रदर्शन करने के लिए पैसा दिया गया है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे प्रदर्शन करेंगे। इसके अलावा उन्हें युद्ध का भी कुछ नहीं पता। लेकिन वे जो अभी आकर*

जुडत्रे हैं असली सैनिक हैं। वे वाकई गोदी मज़दूरों पर आरोप लगा रहे हैं क्योंकि वे राष्ट्र के लिए पर्याप्त त्याग नहीं कर रहे हैं! उनको चिल्लाते हुए ज़रा सुनो। ये हड़ताल तोड़ने वालों के ख़िलाफ़ मज़दूर नहीं; ये तो हड़तालियों के ख़िलाफ़ सैनिक हैं, और उनमें भी अपंग सैनिक! पहले हम असली अपाहिजों को इसमें लगाना चाहते थे, क्योंकि मि.पीचम सोचते थे कि उनके पास इतना कम पैसा है और वे इतने अभागे हैं कि वे कुछ टकों के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाएँगे, यहाँ तक कि युद्ध के लिए प्रदर्शन भी। लेकिन फिर हमने यह विचार त्याग दिया, क्योंकि हमारे लोग हमें ज़्यादा भरोसेमन्द लगे। अब तो दिख भी रहा है कि उन्हें पैसा देना कितना ग़लत होता। वे बिना कुछ लिए भी यह करते! आप हमेशा जनता की मूर्खता के लिए पर्याप्त गुंजाइश नहीं निकाल सकते! ये बिना बाँह और पैर और आँख के आदमी अभी भी युद्ध के पक्ष में हैं! यह युद्ध की बलि चढ़ा इंसान वाकई समझता है कि यह राष्ट्र के लिए है! अद्‌भुत है यह! आप उनके साथ बहुत कुछ कर सकते हैं, मेरा यकीन कीजिये! हमारे पास भी एक ऐसा आदमी है; फ्यूकूम्बी नाम का एक भूतपूर्व सैनिक, सिर्फ एक पैर वाला। लेकिन हमने कभी नहीं सोचा कि वह ऐसा कुछ करेगा। लेकिन निश्चित रूप से वह अब तक समझ चुका है कि शान्ति का क्या मतलब है, जबकि यहाँ मौजूद सैनिकों ने साफ़ तौर पर अभी तक नहीं समझा! यह आश्चर्यजनक है! लेकिन मैं हमेशा कहता हूँ : आपको सिर्फ एक युद्ध पैदा करना होता है और फिर पैसा बनाने के मौक़े बेशुमार हो जाते हैं; ऐसे आन्दोलन प्रकाश में आते हैं जिनकी आपने कभी उम्मीद नहीं की होती और आपको लखपति बनने के लिए बस उनका सही इस्तेमाल करना होता है; और आप अपनी पसन्द का कोई भी धन्धा बिना पूँजी के कर सकते हैं! यह ग़ज़ब का है!'

वे नोच-खसोट डाले गये थे।

आठ और दस की कतारों में, सँकरी गलियों को भरते हुए, जिसमें बाहरी कतारें घरों की दीवारों पर रगड़ खा रही थीं, प्रदर्शनकारी निर्दयता से आगे बढ़े, देशभक्तिपूर्ण गीत गाते हुए। वे सभी कमोबेश अपंग थे। कुछ अपनी बैसाखियों पर लंगड़ाते हुए चल रहे थे-अभी भी अनगढ़ ढंग से क्योंकि ज़्यादा समय नहीं बीता था जब वे भी अन्य आदमियों की तरह ही थे। एक पतलून का पांयचा खालीपन से फड़फड़ा रहा था। कुछ अपने कोट अपने कन्धों के आर-पार लटकाये अपनी बाँहें लटकन में डाले हुए थे; सिमटते धुँधलके में गन्दी सफेद पट्टियाँ झण्डों की तरह लहरा रही थीं। इस पागलपन भरे जुलूस में कुछ अन्धे

भी थे। वे ऐसे चले जा रहे थे मानो वे देख सकते हों। वे कब्ज़ा की गयी ट्रॉफियों के समान जनता को दिखलाए जा रहे थे। दूसरे पीड़ित छोटे-छोटे ट्रकों में बढ़ रहे थे क्योंकि वे अपनी टाँगें देशभक्ति की वेदी पर चढ़ा आये थे। फुटपाथ पर खड़े लोग उनको हाथ हिला रहे थे और उनके ज़ख्मों के बारे में मज़ाक कर रहे थे; वे भी जवाब में हँस रहे थे। ये घायल जितना अधिक क्षत-विक्षत थे, उनकी देशभक्ति देखने वालों को उतना ज़्यादा निहाल कर रही थी। मिसाल के तौर पर, वे अपने बीच यहाँ तक वाद-विवाद कर रहे थे कि एक हाथ वाले आदमी के मौक़े ज़्यादा हैं या उस आदमी के, जो अपनी दोनों टाँगें गवाँ चुका है!

पूरी भीड़ धक्का-मुक्की करते हुए पॉपलर के कचरे के बीच से होकर लाइमहाउस की कुख्यात पड़ोसदारी तक पहुँचने के लिए अपनी ऊर्जा की आखिरी बूँद तक निचोड़कर आगे बढ़ी। वे अभी भी युद्ध गीत गा रहे थे और उन्होंने पूरे वातावरण को कार्बोलिक और अपनी भूख से निःसक्त साँसों से दूषित कर दिया।

वर्दीधारी प्रदर्शनकारियों के बीच नागरिक भी चल रहे थे-जो ज़्यादातर नौजवान थे, साफ़-सुथरे ढंग से सजे, और जो इस प्रदर्शन से बाहर नहीं रहना चाहते थे।

लेकिन उन सबमें साझा यह था कि वे सभी चाहते थे कि जहाज़ की मरम्मत जल्दी से जल्दी ख़त्म हो ताकि वे नये मांस, स्वस्थ आदमियों से लदे लग सकें, जो अभी भी दो बाँहों और दो टाँगों और देख सकने वाली आँखों के स्वामी थे। घायल, बेकार, आवारा लोग, सर्वोपरि यह चाहते थे कि उनकी तादाद बढ़े। क्योंकि दरिद्रता में हमेशा से स्वयं को प्रसारित करने का एक दुर्निवार स्वभाव रहा है।

यह अफवाह थी कि प्रदर्शनकारी अब टाउनहॉल की तरफ बढ़ रहे थे जहाँ वे हड़तालकारियों के ख़िलाफ़ सक्रिय पुलिस हस्तक्षेप की माँग करने जा रहे थे।

कोक्स घर की तरफ मुड़ा। पहले ही काफी अन्धेरा हो चुका था। पतझड़ हवा में महसूस किया जा सकता था।

हर जगह उस दिन की घटनाओं पर चर्चा करते हुए लोगों के समूह खड़े थे। इस मोहल्ले के लोग निश्चित रूप से, अधिकांशतः मज़दूरों के साथ थे। और अपनी अटकलों में वे मामलों की असली स्थिति के काफी निकट आ गये थे। प्रत्यक्ष रूप से वे उस प्रजाति 'लंदनिया' के नहीं थे जिसके बारे में लिखने के अखबार वाले इतने शौकीन हैं।

दलाल तेज़ी से चल रहा था। वह कुछ बेचैन था, एक अनिश्चितता के अहसास के साथ, जो हमेशा उस पर छा जाता था, जब भी वह किसी गड़बड़ को देखता, या उसके बारे में सुनता था। वह एक छोटे और गन्दे शराबखाने में घुसा और उसने व्हिस्की मँगायी। उसका स्वाद भयंकर था और उसने सोचा : इन लोगों की पसन्द कितनी डरावनी होती है!

जब वह बाहर गली में आया तो एक व्यक्ति से टकरा गया जिसने फुसफुसाकर कुछ कहा और भाग गया। जब वह भागा तो उसके पास से किसी धातु के खनखनाने की आवाज़ हुई; उसकी एक टाँग काठ की थी।

इस मुठभेड़ ने कोक्स को भयभीत कर दिया। अब उसे ख़याल आया कि लोग उससे उसके अच्छे कपड़ों की वजह से धक्का-धक्की कर सकते हैं।

उसने सोचा, 'असल में, यह आश्चर्यजनक है कि वह हमें देखने पर हमें सीधे मारकर गिरा क्यों नहीं देते। आख़िर हमारे जैसे लोग बहुत से तो नहीं हैं। अगर मैं यह भी जानता होता कि पीचम मेरी देखभाल कर रहा है तो भी मुझपर कोई ज़्यादा प्रभाव नहीं पड़ता। तब भी मैं उसके लिए अपने जिगर का खून नहीं बहा देता। इन जगहों पर होने वाली धक्कम-पेल में सबसे बुरा यह है कि इन लोगों में मानव जीवन के प्रति रत्ती भर भी सम्मान नहीं है। वे सोचते हैं कि हर जीवन उनके जीवन की तरह सस्ता है। और वे हर उस व्यक्ति से नफरत करते हैं जिसकी स्थिति उससे बेहतर है; क्योंकि वे मानसिक रूप से उससे श्रेष्ठ होता है।'

गली के अगले छोर पर उसने पीछे से आते कदमों की आवाज़ सुनी। वह तेज़ी से मुड़ा, उसके सिर पर एक ज़ोरदार प्रहार हुआ, और वह बिना कोई आवाज़ किये ढह गया।

वह खड़ंजे पर गिर गया, एक घर की खाली दीवार की ओर घिसटने लगा, सिर पर दूसरा प्रहार हुआ, और वह वहीं पड़ा रहा, जब तक पुलिस के गश्ती दस्ते ने उसे ढूँढ नहीं लिया। पुलिस वालों ने उसे उठाया और थाने ले आये। फिर उसे लाशघर ले जाया गया जहाँ तीन दिन बाद उसकी बहन ने उसे पहचाना। उसने उसे बैटरसी के कब्रिस्तान में दफनाया जहाँ टूटे खम्भे के रूप में एक पत्थर पर खुदाई में लिखा था : 'विलियम कोक्स, 1850-1902'।

उस पूरी दोपहर फ्यूकूम्बी ने दलाल का पीछा किया था। उसने उसे दोपहर के भोजन के बाद घर से निकलते देखा था, जैसा कि मि.पीचम ने उसके बारे में बताया था। बहुत थोड़े समय के बाद ही उसने ग़ौर किया कि और भी कई लोग

दलाल का पीछा कर रहे थे।

उसका कोई तय इरादा नहीं था। काम उसे ज़रा भी नहीं जमा था। लेकिन उसने शुरू कर दिया था, और उसे यह करते ही जाना था।

ओल्ड ओक स्ट्रीट में अपेक्षाकृत शान्ति के कुछ महीनों ने और उससे भी ज़्यादा गोदी के किनारे के होटल में बिताए कुछ दिनों ने उसे भ्रष्ट कर डाला था। वह फिर से सड़कों की उन सर्द रातों में नहीं लौटना चाहता था जहाँ से वह उठा था-ख़ासकर जब सर्दी जल्द ही आने वाली थी।

कई बार भीड़ में वह दलाल के काफी करीब पहुँच गया था, मगर उसने उसे नुकसान पहुँचाने की कोई चाहत महसूस नहीं की।

जब दलाल शराबखाने में था तब तो उसने अपना छुरा तक खो दिया था। वह उस लकड़ी की रेलिंग को छील रहा था जिस पर वह झुका हुआ था और छुरा नाले में गिर गया था। वह उसे निकालने के लिए नीचे उतरना चाहता था, मगर उसने देखा कि दलाल अब शराबखाने में नहीं था तो उसने दौड़कर सड़क पार की। जब वह शराबखाने के बाहर दलाल से जा टकराया तो वह डर गया था, मानो दूसरे उस पर हमले की योजना बना रहे थे न कि दलाल पर।

पीछा करना फिर से शुरू हुआ।

अब जबकि फ्यूकूम्बी ने अपना चाकू खो दिया था, तो उसकी दलाल को मारने की कोई सम्भावना नहीं थी; दरअसल, उसने इस पर अब कोई विचार ही नहीं किया। चलते हुए उसने खुद से बात करनी शुरू कर दी :

'फ्यूकूम्बी, मुझे तुम्हें बर्खास्त करना ही होगा,' उसने खुद से ही कहा, *'अब मेरे पास तुम्हारा कोई इस्तेमाल नहीं है। तुम मुझसे पूछते हो : मैं क्या करने जा रहा हूँ? मुझे स्वीकार करना ही होगा : मैं नहीं जानता। तुम्हारी सम्भावनाएँ बहुत सीमित हैं। मेरे पास आने से पहले, तुमने एक भिखारी बनने की कोशिश की। तुमने अपने आप से कहा : मैंने अपना पैर खो दिया है। उस पैर के बिना मैं ऐसे किसी धन्धे में नहीं लग सकता जो मेरा पेट भरने लायक पैसा ला सके। लेकिन क्या तुम उम्मीद करते हो कि सभी राजगीर, पैकर, सन्देश पहुँचाने वाले लड़के, वैन चालक और यहाँ तक कि पास से गुज़रने वाले भी इस बात से चिन्तित होंगे कि अब तुम ईंट की चिनाई, फर्नीचर की पैकिंग, घुड़सवारी नहीं कर सकते, और तुम्हारी व्यथा से उन्हें इतना खेद होगा कि वे तुम्हारे साथ अपनी रोटी साझी करेंगे? कभी नहीं! तुम जानते हो कि लोग क्या कहेंगे अगर वह तुम्हारे मामले पर चर्चा की परेशानी या अप्रियता को इतना कीमती समझें भी कि उस पर बात*

करें? वे कहेंगे : एक आदमी मर रहा है? तो क्या फर्क पड़ता है अगर एक मरता है और हज़ार ज़िन्दा रहते हैं? यह हमारे लिए कोई ज़्यादा जगह नहीं बनाता। हाँ अगर हज़ार मरते तो वह एक अलग मामला होता। अगर हमारे मालिकों को चारों ओर देखना पड़ता और हर जगह ऐसे आदमी को ढूँढना पड़ता जो उनके लिए फर्नीचर पैक कर पाता....।-तुम वह सबकुछ जानते हो जो लोगों को रोज़गार से दूर रखने के लिए किया जा रहा है? बहुत कुछ, फ्यूकूम्बी, दरअसल लगभग सबकुछ जो किया जा रहा है, वह उसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जा रहा है! वह, निस्सन्देह, ज़्यादातर लोगों के जीवन भर का काम है-दूसरों को रोज़गार से दूर रखना। ऐसा इसलिए नहीं है कि एक आदमी फर्नीचर इसलिए बनाता है कि इससे उसकी जीविका चलती है, बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वह ऐसा नहीं करना चाहता और इसलिए उसे फुसलाना पड़ता है, उससे भीख माँगनी पड़ती है और यहाँ तक कि उसे पैसे देने पड़ते हैं। लेकिन, उसके लिए, हमारी तादाद बहुत कम होनी चाहिए-निश्चित रूप से। जब हमारी संख्या काफी ज्यादा होती है तब परेशानी और ख़राब काम शुरू होता है। और अब तुम इस गोरखधंधे में बेमेल हो गये हो मेरे दोस्त। जाहिरा तौर पर यह बिल्कुल ठीक है कि तुम फिर से सहानुभूति पैदा करना शुरू कर दो। लेकिन उतनी ज्यादा सहानुभूति नहीं!-इसलिए हम यह मान सकते हैं फ्यूकूम्बी कि तुम्हें आम हमदर्दी इस हद तक मिलती है कि जब तुम सड़क पर स्थिर खड़े रहो तो हर बार तुम्हें सचमुच सताया न जाए। और जैसे हालात हैं, उसमें शुक्रगुज़ार होने के लिए इतना काफी है। लेकिन तुम सोचत हो कि तुम्हारे ऊपर रहम किया जाना चाहिए? आदमी कितना सीधा होता है? तो बेटरसी पुल से गुज़रने वाले लोग तुम पर दया करें! वे बेरहम, मोटी चमड़ी के, अभागे (क्योंकि उन्हें हर अभागेपन को सहन करना होता है, तुम्हारे अभागेपन को भी) लोग! तुम्हें क्या लगता है कि पर्याप्त रूप से बेरहम बनने के लिए, ठीक-ठाक मोटी चमड़ी वाला भी बनने के लिए क्या कीमत चुकानी पड़ती है? यह स्थिति अपने आप नहीं आती, इसे हासिल करना पड़ता है! कोई आदमी पैदाइशी जल्लाद नहीं होता। उन सभी जबड़ों को देखो! चाहो तो आईने में अपने ही जबड़े को देख लो। मैं कहता हूँ कि भोजन को चबाने के लिए उसके चौथाई आकार के जबड़े भी पर्याप्त बड़े होंगे। लेकिन चबाने से पहले निवाले को काटना आता है, और तुम्हारे ख़याल से इन जबड़ों में से कितने उसे निर्णायक, सबसे अहम काट के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं जो शिकार को परास्त कर दे, उसे बचा लें, और मार दें? बहुत कम, मेरे भाई, बहुत कम। तुम्हारी एक टाँग ग़ायब है!

क्या तुम कुछ और पेश नहीं कर सकते हो? तुम भूखे हो? क्या यही सबकुछ है? क्या ढिठाई है! यह वैसा ही है कि कोई आदमी सड़क पर खड़ा होकर इसलिए लोगों का ध्यान खींचने की कोशिश कर रहा हो कि वह एक टाँग पर खड़ा रह सकता है। यहाँ हज़ारों लोग हैं जो ऐसा कर सकते हैं! इस तरह काम नहीं होता। तुम अभागे हो। वेल, तुम अधिकांश लोगों से ज़्यादा अभागे हो। यह बात तुम्हें प्रतियोगिता के लिए अनुपयुक्त बनाती है। प्रतियोगिता के लिए, दोस्त। जिस पर हमारी सभ्यता का पूरा ढाँचा टिका है, जान लो अगर तुम नहीं जानते! सबसे उपयुक्त का चुनाव! सबसे अच्छे को छाँटना! उनमें से जो आगे निकल जाते हैं! लेकिन वे आगे कैसे निकल सकते हैं अगर कोई हो ही न हो जिससे आगे निकला जाय? इसलिए भगवान को धन्यवाद तुम्हारे जैसे लोगों के लिए। तुमसे आगे निकला जा सकता है। इस ग्रह पर जीवन के पूरे विकास की व्यवस्था सिर्फ एक शब्द द्वारा की जा सकती है-प्रतियोगिता! नहीं तो कोई विकास क्यों होता? वनमानुष क्यों होते, अगर छिपकलियों ने अपने आपको प्रतियोगिता के लिए अनुपयुक्त न साबित कर दिया होता? तो देखा तुमने! तुम्हारे पास एक पैर की कमी है। अच्छा। अगर ज़रूरत पड़ी तो तुम इसे साबित कर सकते हो; (हालाँकि दूसरे व्यक्ति की भी ज़रूरत है जो तुम्हारा सबूत मानने को तैयार हो! अहा, तुमने इस बारे में नहीं सोचा!) लेकिन दूसरा पैर अभी भी है। वह तुम्हारे पास है! और तुम्हारे हाथ! और तुम्हारा सिर! लेकिन नहीं मेरे दोस्त, यह उतना अधिक आसान नहीं है; यह तुम्हें चुने जाने के लायक नहीं बनाएगा। वह कल्पना अकर्मण्यता, गँवारपन और ढिठाई से ज़्यादा कुछ नहीं है। असल में तुम नुकसान पहुँचा रहे हो। अपनी मदद किये बिना, तुम अपने से ज़्यादा अक्षम और अभागे लोगों समेत अन्य सभी को बस अपने अस्तित्व भर से नुकसान पहुँचा रहे हो। क्या? तुम कहते हो : क्या इस दुनिया में इतना दुख है? लेकिन कोई इसका क्या कर सकता है? किन तरीकों से कोई मदद कर सकता है? इतना तो साफ़ है : यहाँ जितना ज़्यादा दुख है, आपको इसका कुछ करने की उतनी ही कम ज़रूरत है। दुख व्यावहारिक रूप से सार्वभौमिक है! चीज़ों की स्वाभाविक स्थिति! दुनिया दुखी है ठीक उसी तरह जैसे पेड़ हरा है! तुम भाड़ में जाओ!'

अँधेरा हो गया था।

अपने आप से बातचीत के दौरान सैनिक गुस्से में आ गया था। गली के कोने पर पहुँचकर, उसने फिर सोचा कि वह दलाल को कैसे मार सकता है।उसी समय उसने अपने कोने से देखा कि किस तरह इनवर्नेस केप (बिना आस्तीन का

एकलबादा-अनु.) पहने एक पतले से आदमी ने दलाल के पीछे कुछ कदम बढ़ाए और उसके सिर पर बालू के बारे या वैसी ही किसी चीज़ से ज़ोरदार प्रहार किया। फ्यूकूम्बी डर गया था। लेकिन अब शिकार अचानक खड़ंजे से खड़ा होने लगा। बकइयाँ चलते हुए उसने सबसे पास वाले घर की दीवार की ओर रेंगने की कोशिश की, प्रत्यक्ष रूप से इसलिए कि वह उस पर झुक सके।

पल भर के लिए सैनिक अँधेरे से झाँकता रहा। फिर वह तेज़ी से सड़क के पार चल पड़ा और रेंगते हुए आदमी के पीछे जा खड़ा हुआ।

धीरे-धीरे उसने अपनी कोट की जेब को टटोला, फिर अपनी पतलून की पीछे वाली जेब को। लेकिन उसे कोई चाकू नहीं मिला, जैसी शायद उसने उम्मीद की थी। लगभग अचम्भे के भाव के साथ उसने अपने ख़ाली हाथों को देखा। फिर दीवार पर झुकते हुए, अपने पाँव के पास पड़े हुए छटपटाते व्यक्ति पर ठण्डेपन से निगाहें गड़ाए, जो अब मुड़ गया था और गटर की तरफ अपने उबकाई पैदा करने वाले रास्ते पर घिसट रहा था, उसने अपने काठ के पैर को खोलना शुरू किया। वह एक पट्टे से बँधा था। अन्ततः उसने उसे खोल लिया। जब उसने अपने दूसरे वाले पैर पर पीछे की ओर उचकते हुए, घिसटते आदमी के सिर और कन्धे पर बार-बार चोट की, वह फूट पड़ा, सम्भवतः अभी भी उसी परेशानी के बारे में सोचते हुए जो उसे टाँग को खोलने में हुई थीः 'स्साला मेरा पैर!'

14

मज़बूत आदमी लड़ता है

पॉली अपनी माँ के साथ अपने छोटे-से गुलाबी कमरे में बैठी, बच्चे के कपड़े सिल रही थी, जब बियरी आया और उसने कहा कि उसके पिता उससे बात करना चाहते हैं।

वह सुई अपनी उंगलियों में दबाए ही नीचे दौड़ी, जबकि धागा पीछे घिसटता आ रहा था।

मि.पीचम ने अपना रविवारी सूट पहन रखा था और उन्होंने पॉली को रुखाई से बताया कि वह उनके साथ बी.शॉप्स के दौरे पर जा रही है।

वे ओल्ड ओक स्ट्रीट पर चल रहे थे। यह एक धूपदार, पतझड़ की ढलान का दिन था। पेड़ की पत्तियाँ पीली थीं और नहर में चेस्टनट तैर रहे थे।

पीचम चुप थे क्योंकि अपनी बेटी से कहने को उनके पास कुछ नहीं था। लेकिन पॉली ने दोनों के साथ चलने का एक अच्छे निशान के तौर पर लिया; और ख़राब से ख़राब सड़कें भी पतझड़ की हल्की सुनहली रोशनी में नहाकर सौम्य हो गयी। इसलिए उसने इतनी खुशी महसूस की जितनी उसने पिछले लम्बे समय से नहीं की थी।

अभी तक उसे ओ'हारा से कोई ख़बर नहीं मिली थी। लेकिन मि.कोक्स फिर ओल्ड ओक स्ट्रीट में नहीं दिखायी पड़े थे। उसके पिता भी ज़्यादा शान्त लग रहे थे। ऐसा लगता था कि तनाव कम हो गया था।

एक छोटी-सी उदास गली में वे पहली दुकान में घुसे। एक मोटी औरत किचन क्रॉकरी और बढ़ईगिरी के औज़ार बेच रही थी। वह पॉली को जानती थी इसलिए उसने पीचम के प्रश्नों का उत्तर दिया, हालाँकि कुछ अक्खड़पन के साथ।

उसने कहा कि अब उसे सामानों की काफी छोटी आपूर्तियाँ मिल रही हैं। अगर उसका पति बर्तनों की मरम्मत का बेढंगा काम, बागवानी के औज़ारों और

लालटेन मरम्मत के काम आदि नहीं करता तो वे कब का भुखमरी का शिकार हो गये होते। लेकिन अब उनसे नियमित आपूर्ति का वादा किया गया था।

वे किराया देते थे, लेकिन यह बकाया भुगतान के रूप में था। वे दुकान का मालिकाना हासिल करने वाले पहले लोग नहीं थे; उनके पहले एक अन्य दम्पति वहाँ था। वे सभी फिटिंग छोड़ गये थे, जिसके बदले उनके अधिकारी बकाया भुगतान कर रहे थे।

चलते हुए पॉली ने अपने पिता को समझाया, 'ये सभी दुकानें बस अभी शुरू ही हुई हैं। ये मुश्किल से छह महीने पुरानी हैं और मैक की गिरफ्तारी मालिकों के लिए एक बड़ा झटका थी। लेकिन अब सबकुछ बेहतर जा रहा है। जो डटे रहेंगे वे अच्छा करेंगे।'

पीचम ने कुछ नहीं कहा।

वे कुछ देर चुपचाप चलते रहे।

जिस अगली दुकान में वे गये वह एक जूता बनाने वाले की थी। वहाँ आधा दर्जन बच्चे थे। बड़े वाले तीनों काम में मदद कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि उनके पास पर्याप्त चमड़ा है-अभी भी। और सबसे ख़राब समय में भी, जब कुछ हफ्तों के लिए दूसरी दुकानें कुछ भी नहीं कमा पा रही थीं, उन्हें चमड़ा मिल रहा था, हालाँकि कम मात्रा में। लेकिन इनमें से ज़्यादातर बेकार थे और उन्हें उनके आकार से नापा जाता था, ताकि उन्हें कबाड़ की भी कीमत देनी पड़े।

पति दुर्भाग्य से बीमार था। उनकी कार्यशाला में रोशनी भी काफी महँगी थी और उसे पूरे दिन जलाए रखना पड़ता था।

औरत ने कहा, 'वही बात है, यह कारखाने से बेहतर है। वहाँ आपके पास अपनी कमाई बढ़ाने का कोई मौक़ा नहीं होता। वहाँ आपके पास अपनी कमाई बढ़ाने का कोई मौक़ा नहीं होता।'

पीचम ने सिर हिलाया और पूछा कि क्या जूतों की कीमत चमड़े की आपूर्ति करने वाली संस्था द्वारा तय की जाती है।

जवाब था : हाँ-और यह बहुत नीचे होती है।

जब वे फिर से बाहर सड़क पर आये तो पीचम ने अपनी बेटी से पूछा :

'फिर क्या वे कभी अपना बकाया चुकता कर पाते हैं?'

पॉली ने कहा कि उसके विचार से इन लोगों को नयी आपूर्ति तभी मिलती है जब वे पुरानी आपूर्ति के लिए पैसे दे चुके होते हैं। उसे डर लग रहा था कि

उसके पिता दुकानों की स्थिति से नाखुश हैं क्योंकि उन्होंने कुछ नहीं कहा।

तीसरी दुकान में उन्होंने अपने सवाल पूछने शुरू ही किये थे कि मालिक ने गोदी पर फैली गड़बड़ के बारे में बोलना शुरू कर दिया।

उसने कहा, *'ये कम्युनिस्ट हर चीज़ के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। वे सभी खिड़कियों के शीशे फोड़ देते हैं जैसे हम उन्हें बनाने वालों से फोकट में ले आते हों! वे हमसे नफ़रत करते हैं क्योंकि उनके पास कुछ नहीं होता और हमारे पास कुछ होता है। बस इसलिए क्योंकि वे अपनी ज़िन्दगी को कभी सफल नहीं बना पाते, वे किसी को नहीं बनाने देना चाहते। काबिलियत का अब कोई महत्व नहीं, और बुद्धिमान अब मूर्ख से कोई बेहतर नहीं है। वे असली ईसाई-विरोधी हैं! उनमें से कुछ इस घर में भी हैं। वे पीते नहीं, मगर वे उससे भी बदतर कुछ करते हैं, एह? अगर उनकी चले तो वे आदमी से सबकुछ ले लें, उनके नीचे की कुर्सी भी। मानो हमारे पास पहले से ही परेशान होने के लिए बहुत कुछ नहीं हो! लेकिन एक चीज़ है जो मि.मैकहीथ को नहीं करनी चाहिए थी। उन्हें उस यहूदी आरों के साथ कभी नहीं जाना चाहिए था। उनको वहाँ परेशानी होगी!'*

इस स्वगत कथन के दौरान, पीचम दुकान पर निगाह दौड़ा रहे थे। एक खुरदरे शीशे की छत वाले केस में सस्ती घड़ियों की कतारें थीं। वे ज़्यादातर अलार्म घड़ियाँ थीं। लेकिन वहाँ कच्छे और तम्बाकू भी बिक रहे थे। दरवाज़े पर लिखा था : किराने की दुकान।

शादीशुदा जोड़ा जो दुकान के मालिक थे काफी अस्वस्थ दिख रहे थे। वह आदमी इस दुकान का तीसरा मालिक था, अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करने वाला तीसरा आदमी। उसकी और उसकी पत्नी की स्थिति पर गौर करके तया किया जाय, तो प्रयास बेकार था।

उस आदमी का व्यवहार कुछ चापलूसी भरा था, जो उसके भारी-भरकम आकार के हिसाब से उसे बीमार दिखलाता था। औरत ने कुछ नहीं कहा और उदास दिखाई पड़ी।

जब वे फिर सड़क पर आए तो पॉली ने दुख के साथ कहा, 'सभी दुकानें कुछ ऐसी ही हैं। क्या आप कुछ और देखना चाहते हैं?'

कुछ दूर तक वे एक ओमनी बस में चले और फिर कुछ और दुकानों का दौरा किया।

उनमें से एक के सामने पीचम रुके और चेहरे पर रहस्यमय भाव लिए खड़ंजे पर देखा। दुकानदार ने वहाँ चौक से एक चुस्त-दुरुस्त ढंग से सजे एक भद्रजन

की तस्वीर बना रखी थी जिसके सिर पर एक हैट भी था, और नीचे उसने कीमतों की सूची बना रखी थी। पीचम इस तकनीक को जानते थे।

सूटों के अम्बार से लदे काउण्टर के पीछे एक हल्के रंग के बालों वाला जवान खड़ा था। उनके सवालों के जवाब में उसने कहा :

'जानते हैं, आप यहाँ पैसे कमा *सकते* हैं। धन्धा किसी तरह धीमा नहीं है। जैसे ही हमें फिर से सस्ता माल मिलने लगेगा और हम अपनी कीमतें थोड़ा बढ़ा पाएँगे और बड़े दुकानदारों की प्रतियोगिता से मुक्त हो जाएँगे, इसमें भी जीना हो जाएगा। आखिर, हम पाँच बजे सुबह उठते हैं और कभी भी दस या ग्यारह बजे से पहले नहीं सो पाते। और लम्बे समय में इससे फर्क *ज़रूर* पड़ेगा। आपको नहीं लगता?'

एक दूसरी दुकान में, लोग बाहर निकलने की प्रक्रिया में थे, जब पीचम घुसे।

जो जा रहे थे, आखिरी क्षण तक उन्होंने सबकुछ छोड़ दिया था। वे अभी भी अपने बच्चों और फर्नीचर के साथ उस छोटे से सफेदी किये हुए कमरे में खड़े थे, जबकि नये किराएदार एक ठेले से अपने सामान और चल सम्पत्ति खड़ंजे पर उतार रहे थे।

बच्चे रो रहे थे और अपने निराश माता-पिता से गुस्से भरे तमाचे खा रहे थे। नये किराएदार आए; एक तमीज़दार बच्चे के साथ बड़े, आरामदायक लोग। औरत ने गैस की कीमत और कमरे के वाकई सूखे होने या न होने के बारे में ढेर सारे सवाल पूछे।

जाने वाली जोड़ी ने अपने दिल की बात कहनी शुरू कर दी, और यह साफ़ तौर पर देखा जा सकता था कि नवागंतुकों को काफी शर्मिंदगी हुई। उन सारे सवालों को पूछकर उन्होंने ग़लती की थी और अब वे और जवाब नहीं सुनना चाहते थे। लेकिन दूसरे वाले पूरे प्रवाह में थे और उन्होंने अपनी जीभों पर से लगाम बिल्कुल छोड़ दी थी।

नये मालिक ने, जिसका चेहरा कुछ-कुछ लाल हो गया था, पॉली और उसके पिता को समझाया, 'जो वे कहते हैं, उसे आप गम्भीरता से नहीं ले सकते हैं। वे भड़क गये हैं। उनकी बरबादी के लिए हर चीज़ को दोषी ठहराया जाना चाहिए-उनको छोड़कर।'

औरत ने तिरस्कारपूर्वक कहा :

'वे बस मज़दूर हैं। वे लंकाशायर वापस जा रहे हैं-मिलों में। ऐसे लोगों को कभी अपना धन्धा शुरू ही नहीं करना चाहिए। उनके लिए सही जगह कारखाना

ही है।'

लेकिन अभी भी उसने दीवार पर सीलन के विशालकाय धब्बों को देखा जिसकी तरफ दूसरी वाली औरत ने विजयपूर्वक इशारा किया था। जब मकान को लेने से पहले उन्होंने उसकी जाँच की थी, तो सामने की तरफ एक वार्डरोब खड़ा था...

इस भ्रम के ख़त्म होने से पहले पॉली और उसके पिता चले गये। वे घर चले गये।

पॉली ने कुछ और नहीं कहा, क्योंकि इस विषय को खींचने का उसने कोई तुक नहीं समझा। लेकिन इससे पहले कि वे घर पहुँचते, उसने इतना ज़रूर कहा कि जो भी हो लोगों को स्वतन्त्रता प्राप्त है और वे इसे पसन्द करते हैं। अपने ऊपर किसी के होने से वे नफरत करते थे। इसके बजाय वे आधी रात तक काम करना पसन्द करते।

वह नहीं जानती थी कि उसके पिता उसे सुन भी रहे थे या नहीं। लेकिन वे सुन रहे *थे*-बहुत गौर से।

अगले दिन, पीचम नेशनल क्रेडिट बैंक गये। मिलर से स्थिति पर बात करते हुए उन्होंने वहाँ कई घण्टे बिताए। मिलर आरों से मैकहीथ की साँठ-गाँठ के बारे में थोड़ा ही बता पाए। लेकिन पीचम को बहुत पहले ही इस बात का अहसास हो गया था कि केवल उनका दामाद ही बैंक को बचा सकता है। जिस तरह से उसने इसका नियन्त्रण हासिल किया था वह लगभग तारीफ के काबिल था।

सामान्य तौर पर, बी.शॉप्स का पीचम पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। उनका संगठन किसी भी तरह ख़राब नहीं था। इस रास्ते से लोगों से अच्छा-ख़ासा पैसा निकाला जा सकता था।

पॉली बेकार ही डर रही थी कि दुकानों की दरिद्रता ने उसके पिता को परेशान कर दिया होगा। लेकिन निश्चित रूप से वह जानते थे कि समृद्धि ग़रीबी का दूसरा पहलू ही तो होती है। एक आदमी की समृद्धि और दूसरे की ग़रीबी आख़िर क्या है?

वह अक्सर कहा करते थे, *'मुझसे सामाजिक सुधारकों के बारे में बात मत करो। मुझे याद है कि एक बार अखबारों में इस बात को लेकर बड़ा रोना-धोना मचा हुआ था कि कुछ झोंपड़ियाँ इंसानों की रिहायश के काबिल नहीं हैं; वे अस्वास्थ्यकर और रोगों का घर थीं। तो उन्होंने पूरी बस्ती को ढहा दिया और वहाँ के बाशिन्दों को स्टॉकटन-ऑन-ट्रीज़ में सुन्दर, मज़बूत और स्वास्थ्यकर बने*

घरों की एक कॉलोनी में स्थानान्तरित कर दिया। उन्होंने बहुत सावधानी के साथ आँकड़े रखे और पाँच साल बाद नतीज़ों की तुलना की। फिर यह साफ़ हो गया कि, हालाँकि झोपड़ियों में मृत्यु दर 2 प्रतिशत थी, नये घरों में यह बढ़कर 2.6 प्रतिशत हो गयी। वे बड़े अचम्भित हुए। तो, यह सीधे इस वजह से हुआ था कि नये घरों की कीमत प्रति सप्ताह चार से आठ शिलिंग ज़्यादा पड़ती थी और खाने में कटौती करके यह पैसा बचाना पड़ता था। हमारे सामाजिक सुधारवादियों और मानवतावादियों ने इस बारे में कभी नहीं सोचा था!'

दामाद की प्रतिभा ने पीचम पर अच्छा-ख़ासा प्रभाव डाला। अपने सामने फैले कागज़ात से निगाह ऊपर करके और मिलर के मरियल चेहरे को देखते हुए उन्होंने अपने आप से पूछा, कि उनकी शत्रुता क्या दो भिन्न पीढ़ियों की बीच होने वाली स्वाभाविक शत्रुता नहीं है। उन्होंने उसे कम करके आँका, उससे एक अपराधी की तरह बर्ताव किया। जबकि, असलियत यह थी कि वह एक मेहनती, और निस्सन्देह रूप से दूरदर्शी व्यापारी था।

उसी शाम पीचम अपने वकील, वैली, से उसके घर पर मिलने गये।

बातचीत दर्शनीय चौखटे वाली दीवारों और ढेर सारे विदेशी कालीनों वाले एक कमरे में हुई। एक कोने में विशालकाय लिखने वाली टेबल के पास भूरे तामचीनी के गमले में चौड़ी पत्तियों वाले कुछ पौधे लगे थे।

वैली ने कुछ ठण्डे अन्दाज़ में कहा, 'आप तलाक की बाबत मुझसे मिलने आये हैं? बिना झिझक आपको बता दूँ कि मैं इस मामले को लेकर खुश नहीं महसूस कर रहा। मि.मैकहीथ की बदचलनी साबित हो चुकी है और मान ली जाएगी। लेकिन अगर मुझे सही सूचना मिली है, तो आपके कारोबारी मित्र मि. कोक्स को आपकी बेटी के ख़िलाफ़ बदचलनी के प्रति आरोप में गवाह के तौर पर बुलाया जाना है। निश्चित रूप से यह एक गीदड़भभकी है, मगर मुझे डर है कि इसका मतलब घर की बात का बाहर जाना होगा।'

अचम्भित पीचम ने पूछा, 'किस कम्बख्त ने मि.कोक्स को गवाह के तौर पर बुलाने के बारे में सोचा?'

'मि.मैकहीथ ने। कुछ दिनों पहले।'

पीचम ने धीमे स्वर में कहा, 'समझा। वेल, मि.कोक्स दो दिनों से लापता हैं। परसों वह घर नहीं लौटे। उनकी बहन, जिनके साथ वे रहते थे, इसको लेकर काफी बेचैन लग रही थीं। बदकिस्मती से उनके कुछ ऐसे चस्के थे जो उन्हें मानवता की तलछट के सम्पर्क में लाते थे; इसलिए लगातार उनकी अनुपस्थिति

आप में सिर्फ सबसे बदतर घटना के घटने का डर पैदा करती है। दूसरे शब्दों में, मुझे डर है कि अब हमें कभी कोक्स के बारे में चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।'

'आह,' बस यही वैली ने कहा। उसने खोजती हुई सी निगाह अपने मेहमान पर डाली, मानो कोई चीज़ उसकी निगाह से बचकर निकल गयी हो।

पीचम ने बोलना जारी किया, 'मैंने मि.कोक्स से सारे व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ लिए हैं। उनके साथ साउथैम्प्टन में मुझे एक तजुर्बा हुआ था जिसने मेरी आँखें खोल दीं। मुझे उम्मीद है कि कभी मुझे उन घिनौने और जुगुप्सापूर्ण दृश्यों का वर्णन करने के लिए नहीं कहा जाएगा जिनकी मेरी आँखें गवाह रही थीं। उस दिन से मैंने इस आदमी से पीछा छुड़ा लिया।'

फिर उन्होंने कोक्स के विषय को छोड़ दिया और भावहीन चेहरे के साथ बताया कि उनकी बेटी ने अभी-अभी उन्हें बताया है कि उसके पेट में उसके पति का बच्चा है। इसने जाहिरा तौर पर सभी चीज़ों को पलट दिया। तलाक का तो अब सवाल ही नहीं था।

ऐसा लगा कि वकील को बड़ी राहत पहुँची। पीचम रूखे ढंग से बोलते रहे। उन्होंने अपने दामाद के ख़िलाफ़ केस की प्रगति और उसके सम्भावित नतीजे के बारे में पूछताछ की। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वह उपयुक्त फैसला चाहते थे।

उसने कहा, 'मि.पीचम, आपका दामाद उस कैदखाने से एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में निकलेगा। शक की एक छाया भी उस पर नहीं रहेगी, आप मुझ पर निर्भर रह सकते हैं। आख़िर उसके पास एक बहाना भी है।'

'बढ़िया है,' पीचम ने कहा, और वह उठने वाले थे।

वैली ने गुस्से में कहा, 'बढ़िया नहीं है। हत्यारा नहीं मिला तो रिहाई में वक्त लग सकता है। अपराध के वक्त कहीं और होने के बहाने की पहले जाँच-पड़ताल होगी। नहीं, पीचम, हमें उसे खुद ही मदद का हाथ बढ़ाना चाहिए।'

वह पीछे की ओर टेक लेकर बैठ गया और अपने हाथ पर पेट पर बाँध लिए।

उसने स्पष्टतः कहा, 'मेरे प्यारे पीचम, उन परिस्थितियों पर रोशनी डालने की ज़िम्मेदारी आप पर है, और होनी भी चाहिए, जो मैरी सॉयर की मौत में परिणत हुईं। मेरे ख़याल से यह विद था जिसने कार्यवाही के दौरान मजिस्ट्रेट के साकने यह कल्पना प्रस्तुत की थी कि मैरी सॉयर को, अपना जीवन लेने के लिए उनकी आर्थिक स्थितियों के अनुसार, किसी हत्यारे की ज़रूरत नहीं थी। वास्तव

में उसकी हालत बहुत ख़राब थी।'

उसके शब्द धीमे, और धीमे आ रहे थे, मानो वह जो कहना चाहता था, उसके लिए कोई समाधान ढूँढ रहा हो।वह मि.पीचम पर निगाह डालने से बच रहा था जो वहाँ चुपचाप अपने हड़ीले हाथों को घुटनों के बीच दबाए बैठे थे।

एक जाहिर से प्रयास के साथ वह आगे बढ़ा।

उसने ज़ोरदार ढंग से कहा, 'बदकिस्मती से यह कल्पना कुछ नये तथ्यों की रोशनी में अमान्य हो जाती है।'

वैली खड़ा हो गया था। लम्बे डग भरकर वह उस मोटे कालीन पर चलने लगा जिसे उसके लिए भाषण कला ने अर्जित किया था।

उसने सारगर्भित ढंग से, अभी भी टोह लेते हुए कहा, 'मि.पीचम, अपनी मौत से पहले कुछ समय के लिए, मैरी सॉयर को एक आदमी के साथ देखा गया था जो शायद उससे भी ख़राब हालत में था। यह फ्यूकूम्बी नाम का एक सैनिक था। मजिस्ट्रेट के सामने कार्यवाही के वक्त, वह कठघरे में दिखाई दिया था। उसने माना कि उस भयानक शाम वह मिसेज सॉयर के साथ था और यह कि वह उसके साथ गोदी तक भी गया था।'

वकील ने विराम दिया। वह अचानक पीचम के सामने रुका और उनको तीख़ेपन के साथ देखा, और शान्ति के साथ कहा :

'मैरी सॉयर को ज़िन्दा देखने वाला वह आखिरी व्यक्ति था। और कोर्ट में उसका सुनने वाला कोई भी व्यक्ति इस तथ्य के सम्भव मतलब नहीं समझ पाया। उन गवाहों की आँखें, जिनमें से अधिकांशतः निचले वर्गों से आते थे, उनसे सामाजिक रूप से कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ कैदी के लिए नफरत से इतनी अन्धी थीं कि वे सबसे सुगम समाधान को नहीं देख पाईं! *रिफ्लेक्टर* के लेखों तक ने इस बात का वर्णन किया था कि किस तरह से उस सैनिक ने अभागी मैरी सॉयर की आखिरी यात्रा में उसका साथ दिया था, जब, शायद वह पूरी तरह से उसके वश में थी। गवाह है, गवाह *ज़रूर* होगा-पड़ोसियों के बयान, कुछ भी-जो उस दुखियारी के ऊपर सैनिक के शैतानी नियन्त्रण की पुष्टि करे। उस सैनिक ने उस वक्त मैरी सॉयर के शान्तिपूर्ण घर में अपना रास्ता बनाया जब उसका पति, जो खुद सैनिक था, और फ्यूकूम्बी का दोस्त भी मोर्चे पर था। वह ऐसा आदमी था जो अपने दोस्त की बीवी का सतीत्वहरण करने में शैतानों की तरह आनन्द लेता था, और जो यह काम एक छोटे-से कमरे में बच्चों की आँखों के सामने करता था! जब उसे असाधारण मित्रतापूर्ण और संरक्षणपूर्ण चिन्ता के बारे में पता चला जिसके साथ मि.मैकहीथ

अपने कर्मचारियों में निम्नतम से भी पेश आते हैं, तो यह आदमी ज़रूर प्रस्तुत अवसर का लाभ उठाने के लिए उस औरत के पीछे पड़ गया होगा। बेहद शर्म की वजह से इस सम्मान्य और नेक दिमाग महिला ने मि.मैकहीथ को ब्लैकमेल करने से मना कर दिया होगा और उस रात कौन जानता है? गोदी पर झगड़ा हुआ होगा. ..हर मौक़े पर हमारे पास एक गोदी मज़दूर की गवाही होगी, जिसने कत्ल की शाम बाहर की ओर टहलते हुए, लगभग पौने नौ बजे गोदी की ओर से फ्यूकूम्बी को आते देखा होगा। मि.पीचम!' (वकील ने अपनी आवाज़ ऊँची की।) 'वही दलील जो हमें इस बात पर यकीन नहीं करने देती कि समृद्ध बैंकर मैकहीथ ने मैरी सॉयर का कत्ल नहीं किया होगा, बिल्कुल *वही* दलील हमें इस बात पर सहमत करती है, कि यह कंगाल, बर्बर बन चुका, भूतपूर्व सैनिक फ्यूकूम्बी ही होगा। आंशिक तौर पर यह शिक्षा के स्तर का सवाल है। युद्ध में लड़ना, जो एक शिक्षित, बुद्धिमान आदमी को ऊपर उठाता है और उसे वीरता के कृत्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है, वही नीच किस्म के लोगों में और कुछ नहीं बस बर्बर मानसिक प्रवृत्तियाँ पैदा करता है। यह फायदा है जो उन्हें लुभाता है। हर प्रकार का फायदा। बस हत्या करने की लालसा ही उन्हें हत्या करने का उकसाती है। उनके लिए शिखर पर पहुँचने की प्रतियोगिता की वीर भावना जैसी कोई चीज़ नहीं है, अपने आपको श्रेष्ठ बनाने की कोई टिकाऊ महत्वाकांक्षा नहीं होती, जो हमारे शिक्षित वर्गों की चारित्रिक विशेषता है। थोड़ी-सी जो स्कूली शिक्षा वह लेता है उसका उसके ऊपर कोई निर्णायक प्रभाव नहीं पड़ता; यह तो बस वह गर्माहट भरी आग होती है जो उसके स्कूल की इमारत की ओर आकर्षित करती है-अगर यह उसे घर पर मिलने वाले लात-घूँसे नहीं हैं। वह कभी भी ज़्यादा पैसे कमाने में कामयाब नहीं होता; वह बहुत बेवकूफ है। वह जो कुछ भी कमा पाता है, उसे फौरन उड़ा देता है। वह मुआवज़े की रकम जो उसे सरकार से प्राप्त होती है उसके हाथों से पानी की तरह गुज़र जाती है। जल्दी ही उसके पास कुछ भी नहीं बचा होता है। जैसा कि आप बेहद अच्छी तरह जानते हैं मि.पीचम, लंदन उन आदमियों के लिए बाल-विहार नहीं है जिनकी जेब में कुछ भी नहीं बचा होता। वह भीख माँगने का प्रयास करता है। वह नाकामयाब हो जाता है; शायद वह पर्याप्त रूप से विश्वस्नीय नहीं लगता। अब तक वह एक ऐसी मानसिक हालत में पहुँच चुका होता है कि पैसा कमाने का छोटे-से-छोटा मौक़ा भी उसके सारे संयम को उड़ा देता है। वह किसी को *ज़रूर* मार डालेगा, अगर, ऐसा करने से, वह कुछ शिलिंग पा सकता है! प्रकृति, जो अपनी नेमतें असमानतापूर्वक बाँटती है, उसकी शिक्षा, उसका माहौल, सभी उसके लिए आंशिक

रूप से उत्तरदायी हैं, जो हुआ; इससे हम इंकार नहीं कर सकते।'

वकील ने पल भर को झाड़-फानूस की ओर देखा।

उसने नरमी के साथ बोलना जारी किया, 'मैं आपको यह आपत्ति करते हुए सुन सकता हूँ कि मैरी सॉयर बिना किसी जरिये वाली ग़रीब औरत थी, जिसके पास मुश्किल से कुछ ताँबे के सिक्के पड़े होंगे। मैने आपको पहले ही समझाया है कि सम्भवतः कोई झगड़ा हुआ होगा, एक कोशिश जो कुछ ज़्यादा आगे बढ़ गयी। उस दुखिरयारी औरत को वह रास्ता पकड़ने के लिए मजबूर करने के लिए जिससे वह अब तक इंकार करती आ रही थी। लेकिन यह कुछ टकों के लिए भी किया जा सकता है।यहाँ तक कि *वह* भी सम्भव है, वह भी! एक मानव जीवन कुछ पेंस के लिए? क्या यह सम्भव है? भद्रजनो!' (अपने वाक्प्रवाह में बहकर वकील भूल गया था कि वह घर पर है।) 'अपने शहर पर एक निगाह भर भयंकर, अविश्वस्नीय को प्रकट कर देती है! यह *हो सकता* है! कुछ टके क्या हैं आपके लिए भद्रजनो? आपको कितनी रकम चाहिए होगी कि आप....लेकिन मैं इस विचार को और वर्णित नहीं करूँगा। क्या आप जानते हैं मेहराबों के नीचे बितायी जाने वाली रात कैसी होती है? मैं बताता हूँ!'

एक कुर्सी के सहारे पर टिककर बैठा वकील अपनी बाहर खुली बाँहों के साथ पीचम से दो कदम दूर खड़ा हो गया। अचानक वह पीचम की उपस्थिति पर ग़ौर करता मालूम पड़ा और कुछ अन्यमनस्क-सा होकर उसने अपनी बात ख़त्म की, मानो दिमाग में वह बचाव के लिए अपने शानदार आशु-भाषण के मुख्य बिन्दुओं को याद कर रहा हो :

'मैं समाहार करूँगा : वे स्थितियाँ जिन्होंने शायद मैरी सॉयर को आत्महत्या करने पर मजबूर किया होता, यानी उसकी दुर्भाग्यपूर्ण ग़रीबी, वही वह चीज़ थी जिसने सैनिक जॉर्ज फ्यूकूम्बी को, जो उससे भी ग़रीब था, उसकी हत्या करने को मजबूर किया। क्योंकि जब भी मुझे उस अपराधी को ढूँढना होता है, तो मैं अपने आपसे पूछता हूँ : यह अपराध किसे फायदा पहुँचा सकता है? वह व्यक्ति जिसके पास वजह थी, माई लॉर्ड और जूरी के भद्रजनो, वही वह व्यक्ति है जिसने अपराध किया!'

धरती पर दरिद्रता के विषय के पहले अधिकृत विद्वान ने वकील को पूरी सहमति के साथ चुना।

वेस्ट इण्डिया डॉक्स का युद्ध

रात तूफानी और सागर ऊँचा बलखाये
फिर भी वीर जहाज़ को लड़ना पड़ेगा।
क्यों घण्टा यूँ थर्राते हुए झनझनाए?
ठहरो! एक समुद्री चट्टान नज़र आए!
देखो हर सच्चा दिल अपनी जगह है खड़ा
अपने पितरों की भूमि के लिए सागर से लड़ा
इतने पास मौत के, इतने पास मौत के
मर्दाना और बहादुर, उनको लगा न कोई डर
बाहर डेक पर सुना ज़रा क्या बजता घण्टा कहता है
व्यर्थ है संघर्ष उनका : छेद जहाज़ में दिखता है।
जो होना है उसके लिए हो जाओ सब तैयार
अब तो बचाए भगवान!
अपनी चैन की नींद हम जाते सब पाताल
अब तो बचाए भगवान!

(जहाज़ियों की किस्मत)

कोक्स अपनी हत्या के तीन दिन बाद ही अपनी बहन द्वारा पॉपलर के शबगृह में पाया गया।

अखबारों ने विलियम कोक्स की मौत को गोदी मज़दूरों की हड़ताल से जोड़कर पेश किया जिसे अब ज़्यादा से ज़्यादा प्रसिद्धि मिल रही थी।

अखबारों ने लिखा, *'इस बात में कोई शक नहीं हो सकता कि विलियम कोक्स अपने देश की ख़ातिर मारे गये हैं। सारी पुलिस जाँच इस तथ्य की ओर इशारा कर रही है कि हड़तालकारी हत्या कर देने के चरम छोर तक जाने में भी नहीं हिचके हैं। यह अब सबको मालूम है कि कोक्स सरकार के साथ सहयोग में सैनिक टुकड़ियों के लिए परिवहन सुविधाओं का इंतज़ाम कर रहे थे। अगर सरकार ऐसे नागरिकों की रक्षा नहीं कर सकती या नहीं करेगी, तो जल्दी ही वह पाएगी कि उनका समर्थन करने के लिए कोई व्यवसायी नहीं रह गया है। यह एक त्रासद संयोग है कि कोक्स की मौत उसी समय हुई जब घायल सैनिकों का एक गरिमामय प्रदर्शन हो रहा था। क्योंकि आखिरी मंगलवार के दिन, युद्ध में*

विकलांग हुए सैकड़ों आदमी उन गोदी मज़दूरों की दुष्टतापूर्ण हड़ताल के ख़िलाफ़ प्रदर्शन कर रहे थे, जिनकी ग़लती के कारण वे बहादुर आदमी मैफेकिंग में फँस गये थे, राहत के आने का बेचैनी के साथ इंतज़ार करते हुए, और जिनके भाग्य में अब मरना दर्ज़ हो चुका है। जैसा कि हर कोई जानता है, यह मज़दूर कोई अतिरिक्त टकों के लिए यह हड़ताल कर रहे थे। उस तुच्छ रकम के लिए जिससे एक जोड़ी जूता भी नहीं ख़रीदा जा सकता! देश की मौजूदा ख़तरनाक हालत का इस तरीके से फ़ायदा कतई नहीं उठाया जाना चाहिए, जो ब्लैकमेलरों को भी शोभा नहीं देता। देश के सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क दिनों रात जीवन निर्वाह के ख़र्चे को कम-से-कम रखने के लिए मेहनत कर रहे हैं। आज ही इस बात की मिसाल देने वाली एक और ख़बर आयी कि किस तरह व्यवसाय जगत मालों की कीमत नीचे रखने के लिए, अपने मुनाफे को घटाने की हद तक, अनथक परिश्रम कर रहा है। आज दो विशाल संस्थाएँ क्रेस्टन चेन स्टोर्स और आरों स्टोर्स ने दर्जनों छोटे स्वतन्त्र दुकानदारों के साथ अपने प्रयासों को एकजुट किया और मशहूर बी.शॉप व्यवस्था में, व्यवस्था के मुताबिक अपनी कीमतें गिराते हुए, शामिल हो गये। लेकिन ऐसी देशभक्ति प्रभावशाली कैसे हो सकती है जब जनता का एक हिस्सा अपनी चमड़ी बचाने के लिए इतना स्वार्थपूर्ण रवैया अपनाएगा? कोई इस बात से इंकार नहीं करेगा कि मज़दूर भी अपनी मेहनत के मुताबिक ईनाम पाने के उतने ही हक दार हैं जितना कि समुदाय का कोई भी वर्ग। लेकिन जो तरीके इसके लिए अपनाए गए हैं उन्हें किसी भी हालत में सही नहीं ठहराया जा सकता, ख़ासकर उस समय तो बिल्कुल नहीं जब साम्राज्य अपने अस्तित्व के लिए ही लड़ रहा हो और जब हर आदमी को कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना चाहिए। हम उम्मीद कर सकते हैं कि अब, अन्त में, सरकार ऊर्जापूर्ण कार्रवाई करेगी। विलियम कोक्स की हत्या उस नीचता की निन्दनीय मिसाला है जहाँ तक इंगलैण्ड गिर चुका है।'

तथ्यतः, कई चीज़ें अभी और होनी थीं, इससे पहले कि सरकार समझ पाती कि उसके कर्तव्य क्या हैं।

एम.टी.सी. के अध्यक्ष पीचम ने कई साक्षात्कारों की एक शृंखला दी। उन्होंने एक अस्थानान्तरणीय व्यवसायिक सलाहकार की क्षति पर कम्पनी के शोक को अभिव्यक्त किया और मृत व्यक्ति के उच्च नैतिक और देशभक्तिपूर्ण दृष्टिकोण पर विस्तार से बोले। कोक्स का शव मिलने और अन्तिम संस्कार के बीच के समय में पीचम ने अपने आपको एम.टी.सी. के लेन-देन के पूर्णतः

व्यावसायिक पहलू को समर्पित कर दिया।

मिस कोक्स की तरफ से उन्होंने दलाल के कागज़ात का अध्ययन किया। सारे कागज़ात की बारीकी के साथ जाँच-पड़ताल के बाद उन्होंने मिस कोक्स को बताया कि उन्हें शायद लेन-देन में अपने भाई के हिस्से के 12,250 पाउण्ड अदायगी में मिलेंगे और वह दो अन्य सदस्यों के दस्तख़त वाले कम्पनी के गुप्त मामलों से जुड़े कुछ कागज़ात और साउथैम्प्टन के जहाज़ों पर एक ऑप्शन अपने साथ ले गये।

उन्होंने पुराने जहाज़ों की ख़रीद-फरोख्त से सम्बन्धित वे कागज़ात भी खोज निकाले जिनकी एम.टी.सी. के लिए उन्हें ज़रूरत थी।

फिर उन्होंने एक विस्मयकारी खोज की। उन्होंने सरकार के साथ एक *दूसरा* अनुबन्ध खोज निकाला। यह साउथैम्प्टन के जहाज़ों से जुड़ा था। एम.टी.सी. के जरिये तीन अच्छे जहाज़ इतनी कम कीमत पर ख़रीदने के बाद, स्वर्गीय दलाल उन्हें सरकार को पेश करने में नहीं हिचका था।

इस लेन-देन से लाभ 1,20,000 पाउण्ड से भी अधिक होता! पीचम को चक्कर आने जैसा महसूस हुआ।

पल भर को तो वह डरे कि उन्हें दौरा पड़ने जा रहा है।

अगले कमरे में, जिसका दरवाज़ा खुला था, पॉली और मिस कोक्स बैठे थे। दोनों महिलाएँ मातमी कपड़े सिल रही थीं। कई मिनट तक पीचम एक गिलास पानी माँगने की इच्छा से लड़ते रहे। लेकिन मिस कोक्स द्वारा कुछ समझ लिये जाने का ख़तरा बहुत बड़ा था। वे शायद उनके जीवन के सबसे त्रासद मिनट थे। उनसे वह एक विजेता की तरह उभरे। भारी साँसें लेते हुए, एक हाथ अपने ज़ोर से धड़कते दिल पर दबाए, किसी भी पल ढह जाने के ख़तरे के साथ, उन्होंने पानी का एक घूँट लिए बगैर ही जाने का फैसला किया।

जब उनके हाव-भाव सामान्य हो गये-उन्होंने किताबों के खाने के सामने लगे शीशे में उन्हें पुनर्व्यवस्थित किया था-तो उन्होंने मिस कोक्स से विदाई ली और नौकाधिकरण चले गये।

वहाँ दोनों करारों को अपने नाम पर स्थानान्तरित कराने के लिए उन्होंने हेल पर ज़ोर डाला। उसे सरकार को कोक्स द्वारा निकाले गये किसी एक हज़ार पाउण्ड की रसीद भेजने की धमकी देना काफी था। हेल अपने सबसे पुराने मित्र की मौत से बिल्कुल टूट गया था जिससे उसके मुताबिक वह कभी नहीं उबर पाएगा।

पहले करार पर पीचम के लिए मुनाफ़ा 29,000 पाउण्ड निकला।

एम.टी.सी. के साथ उनका आखिरी हिसाब कुछ यूँ रहा : सातों साझीदारों ने, जिसमें से एक पीचम को अपना हिस्सा देकर जा चुका था, तीन पुराने जहाज़ों, उनकी मरम्मत, घूसों की रकम, कोक्स की दलाली और तीन नये जहाज़ों की कीमत (जो 38,500 पाउण्ड पड़ी थी) के 77,450 पाउण्ड अदा कर चुके थे। उधार पक्ष में 49,000 पाउण्ड बनते थे जो सरकार पहले ही दे चुकी थी। पीचम ने उन पुराने जहाज़ों के लिए 2,100 पाउण्ड भी बट्टे खाते में डाल दिये जिन्हें उन्होंने कहने के लिए ब्रुकले एण्ड ब्रुकले के जरिये बेचा था। और *शाश्वत* शिकारगाह को रवाना होने से पहले क्रॉल ने उनके हिस्से का लगभग 4/5 हिस्सा अदा कर दिया था।

इसके अलावा, ऑप्शन में पीचम को पता लगा कि साउथैम्प्टन वाले जहाज़ों का ख़र्च वाकई सिर्फ 30,000 पाउण्ड पड़ेगा।

कोक्स के अन्तिम संस्कार से लौटते वक्त रास्ते में, जब पीचम झोपड़ियों के बीच से गुज़र रहे थे, तब उन्होंने इन भाग-दौड़ के दिनों के दौरान पहली बार अपने ही विचारों के सामने घुटने टेक दिये।

उन्होंने सोचा, *'कमाल है, किस तरह उलझा हुआ कारोबार अक्सर युगों पुराने साधारणतम तरीकों से रास्ते पर आ जाता है। वाकई, हमारी यह गर्वोन्मत्त सभ्यता उन दिनों से बहुत दूर नहीं है जब निअण्डरथल मानव को अपने शत्रु को मुग्दर से मार गिराना पड़ता था। ये पूरा धन्धा करारनामों और सरकारी सीलों के साथ शुरू हुआ, और अन्त में हमें कत्ल का सहारा लेना पड़ा! मैं कत्ल से किस कदर नफरत करता हूँ! बर्बरता की कितनी जुगुप्सापूर्ण निशानी है! लेकिन कारोबार इसे एक ज़रूरत बना देता है। इसके बग़ैर हमारा काम ही नहीं चल सकता। एक हत्यारे को सज़ा मिलती है; लेकिन हत्या न करने वाले को भी सज़ा भुगतनी पड़ती है-और कहीं ज़्यादा भयंकर ढंग से। मिसाल के तौर पर, क्रॉल को जहाज़ के कारोबार में अपने जानलेवा रुख के चलते मौत की सज़ा मिली। झुग्गियों में गुज़ारा जिसका मुझपर और मेरे परिवार पर ख़तरा आ गया था, कोई कैद से कम थोड़े ही है। वह एक उम्रकैद है! यहाँ जब देखो बेहतर शिक्षा और जनता की चेतना उन्नत करने की बात होती रहती है-निस्सन्देह इस कोक्स की तस्वीर अक्सर मुझे और उसके हत्यारे फ्यूकूम्बी को नींद में दिखलाई पड़ेगी-लेकिन चेतना, अच्छाई, मानवता, ये सब अकेले पर्याप्त मज़बूत नहीं है, एक लम्बे रास्ते में तो कतई पर्याप्त नहीं हैं, हत्या को पूरी तरह समाप्त करने के लिए; इसे*

अधिकृत करने का ईनाम बहुत बड़ा है और इसका अवहेलना करने की सज़ा बहुत भारी! दरअसल, यह कोक्स एक निहायत ही स्वाभाविक तरीके से मरा, या मारा गया था। उसके रहने पर सब गुड़-गोबर हो गया होता; उसके नहीं रहने पर सबकुछ, या लगभग सबकुछ ठीक है। मानता हूँ, कि हत्या अन्तिम उपाय है, बिल्कुल अन्तिम-लेकिन यह फिर भी उपयोगी है। और सोचने की बात है कि हम तो सिर्फ साथ में धन्धा कर रहे थे!'

अगली सुबह वह फिर गोदी पर गये। वहाँ स्थिति ख़राब थी। अभी तक काम पर मुश्किल से एक दर्जन आदमी बचे थे। गोदी के गेट पर यह देखने के लिए खड़े मज़दूरों के शत्रुतापूर्ण रवैये ने उन्हें डरा दिया, कि कोई काम न करे।

एक छप्पर की गन्दी खिड़की से झाँककर गोदी की ओर घूरते हुए उन्होंने वहाँ खड़े अपने कुछ कर्मचारियों से कड़वाहट भरे स्वर में कहा, 'हर जगह पाशविक बल! मैं जानता हूँ ये लोग उस मज़दूरी पर काम करना नहीं चाहते जो मैं इन्हें देता हूँ। लेकिन ये उन दूसरों को क्यों नहीं काम करने देते, जो करना चाहते हैं? यानी वे जिन्हें पैसों की ज़रूरत है, जिनके पास पैसे होने ही चाहिए, क्योंकि उनके परिवार भूख से मर रहे हैं? वे इन बेचारे प्राणियों के विरुद्ध बल-प्रयोग क्यों करें और उन्हें काम करने से क्यों रोकें? आख़िर, हर किसी को अपनी चाहत के मुताबिक काम करने की आज़ादी है।'

वह निराश थे।

फिर उनकी बेटी और दामाद की ओर से एक चमत्कार हुआ।

कोक्स की मौत की ख़बर ने पीचम परिवार में एक असाधारण माहौल बना दिया था।

पॉली बेहद बेचैन थी; मिस कोक्स से बात करने का अवसर पाकर और अन्तिम संस्कार की व्यवस्था में उसकी मदद करके वह खुश थी। इसका उसपर बहुत चैन देने वाला असर पड़ा।

गोदी हड़ताल की नाटकीय अखबारी ख़बरों ने उसकी आँखें खोल दी थीं और वह समझने लगी थी कि उसके बाप पर किस कदर मुसीबतें टूट पड़ी थीं। उसने उनसे यह पूछने के लिए अपनी माँ के जरिये सन्देश भिजवाया कि क्या वह चाहते हैं कि लोग हड़ताल तोड़ने वालों को बचाएँ; उसके पति को पीचम की इच्छा पर ऐसे लोगों को नियुक्त करने में खुशी होगी।

मिसेज पीचम ने अपने पति से कहा, 'जानते हैं, ऐसा लगता है कि उन सारी तकलीफों ने, जो उसे पिछले कुछ दिनों तक झेलनी पड़ीं, उसे औरों की दिक्कतों

को समझना सिखला दिया है। वह जानना चाहती है कि क्या वह आपकी मदद कर सकती है।'

पीचम कुछ गुर्राए : 'वह साला सबसे बड़ा जीवित उचक्का है!' लेकिन फिर उन्होंने मिसेज पीचम को पॉली से इस बाबत बियरी से बात करने के लिए कहा। उन्होंने ऐसा किया।

मैकहीथ ने पॉली के पूछने पर उसे बताया, 'आपको कभी भी नफरत की आवाज़ नहीं सुननी चाहिए जब पैसे दाँव पर लगे हों। मिजाज़ और उसूल में तुम्हारे पिता और मैं एक दूसरे के विरोधी हैं, मगर परिस्थितियाँ यह माँग कर रही हैं कि हम एकजुट हों और साथ काम करें।'

ओ'हारा ने अपने कुछ दर्जन आदमी गोदी पर भेज दिये। हड़ताल तोड़ने के लिए उन्होंने फौरन एक तरकीब लगायी। उन्होंने हड़तालियों से ऐसा बर्ताव किया कि पुलिस का भी दिल दहल गया। उन्होंने एक उग्र *व्यवस्था-बोध* का प्रदर्शन किया, हर वह हड्डी तोड़ डाली जिसे वे पकड़ पाए और उस चेहरे को चोट पहुँचायी जो भूखा दिखा। इंजीनियर ने पीचम से उनके बारे में बात करते हुए कहा कि इन रूखे नज़र आने वाले भाइयों में भी एक अच्छा दिल है; यह सब तो इस बात पर निर्भर करता है कि उनका इस्तेमाल *किस* काम में होता है।

हड़ताल तोड़ने वालों में एक नये साहस का संचार हो गया।

फिर ओ'हारा के आदमियों ने लोफरों का एक झुण्ड इकट्ठा किया और गोदी के पड़ोस में स्थित रसद की एक दुकान पर धावा बोल दिया।

यह हमला एक ज़बर्दस्त युद्ध में तब्दील हो गया जो सी.पी.बी. की वार्षिकी में 'वेस्ट इण्डिया डॉक के युद्ध' के रूप में प्रकाशित हुआ। इसने हड़तालियों की किस्मत को भी सील कर दिया।

शान्त मज़दूरों की मज़बूत दीवार सामने पाकर बुली और उसके साथियों ने सारी दुकानों के शीशे तोड़ डाले। जब वे दुकानों के अन्दर गये तो हड़तालियों ने उनका पीछा करने का कोई प्रयास नहीं किया, क्योंकि वे लूटपाट से कोई नाता नहीं रखना चाहते थे। सी.पी.बी. के लोगों ने तब रान और मांस के दूसरे टुकड़ों पर हाथ मारा और भूखे लोगों पर इन्हीं टुकड़ों से हमला कर दिया। भूख से अधमरा एक मज़दूर गाय की पूरी टाँग की चोट से घायल हो गया। कइयों के सूखे चेहरे पर मांस के अचार के डिब्बे आकर लगे, और देख न पाने के कारण वे पुलिस द्वारा धर लिए गए। यहाँ तक कि छोटे-छोटै रोलों को भी फेंका गया। कुछ कुपोषित बच्चे उससे घायल हो गये। पावरोटी के डलों ने शक्तिशाली

हथियारों का रूप ले लिया। खाली बाज़ारी बास्केट लेकर जा रही एक बुजुर्ग महिला का हाथ एक पाँच पाउण्ड के डले की चोट से टूट गया। टूटा हाथ अदालत में उसके ख़िलाफ़ सबूत था।

अखबारों ने इस लूट-पाट पर काफी नाराज़गी के साथ लिखा, ख़ासकर उस तरीके पर जिसे 'जनता-जनार्दन' ने खाने के सामानों के साथ बर्ताव किया था।

उन्होंने लिखा, 'अराजकता और पाशविक सहज वृत्ति के बेकाबू हो जाने की भयंकरता यह होती है। हमारे मित्र समाजवादियों को ऐसी घटनाओं को टालने के लिए ध्यान देना चाहिए, अगर वे चाहते हैं कि कोई भी व्यक्ति समाज की मौजूदा व्यवस्था पर उनके मक्कारी भरे हमलों पर यकीन करे!'

इसके बाद से सरकार ने हड़तालियों और उनकी माँगों के खिलाफ कड़े कदम उठाए।

दो दिन बाद सेना को बुला लिया गया। युवा सैनिकों ने, जिनकी किस्मत में दक्षिण अफ्रीका जाना बदा था, गोदी के चारों और घेरा डाल दिया और हड़ताल तोड़ने वालों का बचाव किया। अगले कुछ दिनों के दौरान गोली चलने के इक्का-दुक्का मामले हुए, लेकिन ट्रांसपोर्ट जहाज़ों की तैयारी पूरी होने को सुनिश्चित कर लिया गया था।

निर्णायक युद्ध छोटा और तीख़ा हुआ था।

जवान ज़्यादातर ताज़ा भर्तियाँ थे, जो पहली बार किसी जंग में जा रहे थे। वे मज़दूरों से ज़्यादा खाए-पिये थे, लेकिन अगर उन्होंने अगर कर्मचारियों वाले कपड़े पहने होते तो उनके और लड़ाकू मज़दूरों के बीच भेद कर पाना मुश्किल होता क्योंकि वे सब एक ही वर्ग से आते थे। वस्तुतः, अगर युवा सैनिक बन्दूकों और वर्दी के बिना होते तो वे आपस में ही झगड़ रहे होते।

लेकिन यह कभी नहीं भूला जाना चाहिए कि वे एक ही भाषा को एक ही लहज़े में बोलते थे। एक-दूसरे पर उछाले गये अपमान भी मिलते-जुलते थे। अगर कोई बन्दूक उसे घुमाने वाले सैनिक से छीनी गयी, तो मज़दूर ने भी उसे कम कुशलता से नहीं घुमाया, क्योंकि उसे भी लुहारों वाला हथौड़ा चलाने की आदत थी। लेकिन अगर मज़दूर इस तरह की लड़ाई में कम कुशल भी थे, तो यह ज्ञान तो उन्हें माँ के दूध के साथ मिला था कि अगर वे अपना ख़याल स्वयं नहीं रखेंगे तो वे रोटी के सूखे टुकड़े जितना भी हासिल नहीं कर पाएँगे। और उसी स्रोत से सैनिक यह जानते थे कि उन्हें मटरगश्ती करने के लिए पैसे नहीं मिलते। इसलिए, एक बार जब वे भिड़ गये, तो वे एक दूसरे से वैसे ही लड़े जैसे वे ग़रीबी,

भूख और बीमारी से लड़ते थे; हर उस चीज़ से लड़ते थे जो शहर उनके सामने रखता था, और जिसकी धमकी गाँव हमेशा उन्हें देता रहता था।

अखबारों ने इस लड़ाई का विस्तृत ब्यौरा दिया। उनके ब्यौरे जो कमोबेश एक जैसे थे, सभी कुछ इस प्रकार की सुर्खी के नीचे आए : 'युवा सैनिकों ने, जो मैफेकिंग में फँसे अपने साथियों की मदद को जाने के लिए बेताब थे, संगीन की नोक पर अपना ट्रांसपोर्ट हासिल किया!'

जहाज़ों की तैयारी होने में ज़्यादा वक्त नहीं लगा। अब मुख्य बाधा उन औपचारिकताओं के ढेर की थी जो राष्ट्र कोठगे जाने से बचाने के लिए बनाई गयी थीं।

एक शुक्रवार को जहाज़ आधिकारिक तौर पर सरकारी कमीशन द्वारा ले लिए गए और एक हफ्ते बाद उन्हें समुद्र में उतार दिया गया।

वह एक धुन्ध भरा दिन था। हालाँकि यह ट्रांसपोर्ट केवल छोटे वाले साप्ताहिक ट्रांसपोर्टों में से एक था, लेकिन पूरी गोदी सैनिकों, यात्रियों के सम्बन्धियों, सरकार के सदस्यों और प्रेस वालों से भरी हुई थी। ज़्यादातर कामों को देख पाना मुश्किल था क्योंकि कोहरे में अपने हाथ को भी पहचान पाना कठिन था।

विदेश मन्त्री ने अपने भाषण में कहा, 'मेरे दोस्तो, इंग्लैण्ड का भविष्य उसके नौजवानों की वीरता और आत्म-बलिदार पर टिका है। पूरा इंग्लैण्ड अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा है जब दो हज़ार युवा पुरुष, राष्ट्र के गौरव, महाराज्ञी के जहाज़ों पर सवार हो रहे हैं वीरता और देशभक्ति की एक मिसाल देने के लिए जो युगों-युगों तक कायम रहेगी। पाँचों तत्वों की अन्धी शक्ति उन्हें घेरे हुए है, उनपर निरंतर धूर्त और अधर्मी शत्रुओं का ख़तरा है; और उनके पीछे खड़ी है सिर्फ ब्रिटेन की महानता। वे ईश्वर के हाथों में हैं; और इसी बात से सबकुछ तय होता है।'

सेना के मार्च की खनकती अनुगूँजों और माँओं तथा पत्नियों की सिसकियों के बीच, तीनों जहाज़, जो भीमकाय, अव्यवस्थित दानव समान थे, कोहरे में तट से खिसकते हुए दूर निकल गये।

ग्यारह घण्टे बाद, *ऑप्टिमिस्ट,* चैनल के बीच ही धुन्ध के बीच उस पर सवार सभी व्यक्तियों को साथ लिए डूब गया।

एक राष्ट्रीय विपदा

तूफान और अन्धेरे के बाद
जहाज़ करता है विश्राम, आह, कितनी गहराई में।
केवल डॉल्फिन और खाई-अघाई शार्कें
मण्डराती हैं उस उजड़े पाल के इर्द-गिर्द।
उन सभी भड़कीली और साहसी आत्माओं में से
कोई भी मौत के बेरहम शिकंजे से नहीं करा सकीं खुद को आज़ाद।
सुदूर समुद्र की तह में
विवर्ण मुख लिए स्वरहीन वे रहे ऊँघ।
नरमी से गाता है समुद्र अपनी चिरस्थायी टेक,
चेतावनी, बिठा डालता है मस्तिष्क में:
नाविक सावधान, नाविक सावधान!
लहर और हवा की आवाज़ पर ध्यान दो।
सो रहो। सो रहो।
प्रवाल के नीचे एक शान्त स्थान
करता है तुम्हारा भी इंतज़ार।

(जहाज़ियों की किस्मत)

पीचम ने अखबार बेचने वाले लड़कों की तीखी आवाज़ सुनी जब वे गाड़ी से ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट से आ रहे थे। वह उतरे और उन्होंने अतिरिक्त संस्करण में पढ़ा कि *ऑप्टिमिस्ट* डूब गया है और शहर में परिवहन वाहन के ख़िलाफ़ षड़यन्त्र की अफवाह उड़ रही थी। कहा जा रहा था कि जहाज़ ऐसी हालत में गोदी से रवाना हुए थे जिसे समुद्र में तैरने लायक नहीं कहा जा सकता। इस बात की उम्मीद की गयी थी कि पुलिस उन *गैर-जिम्मेदार लोगों* को बुलाएगी और उनसे जवाबदेही माँगेगी जिनका इस त्रासदी में हाथ था और जिन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए ख़तरा पैदा कर दिया है।

वह सीधे घर गए।

अतिरिक्त संस्करण पहले ही ओल्ड ओक स्ट्रीट में बेचा जा चुका था। जब पीचम ने प्रवेश किया तो बियरी के हाथ में एक प्रति थी। वह मृतक की तरह पीला पड़ गया था और काँप रहा था।

पीचम उस पर एक डरा देने वाली तिरछी निगाह डालते हुए उसके बगल

से निकल गये, और बियरी ने उनको ऐसे देखा मानो वह कोई भूत हों।

मिसेज पीचम ने उसी सज्जनता से उनका स्वागत किया जो वह हमेशा दिखलाती थीं जब वह गोदाम में होती थीं। उन्होंन मानो अब तक कुछ नहीं सुना था।

पीचम उस कमरे में गये जहाँ सभी सन्दर्भ फाइलें रखी थीं और अपने आपको वहीं बन्द कर लिया। उनकी पत्नी ने बेचैनी के साथ घण्टे दर घण्टे उनको तेज़ी से इधर से उधर टहलते हुए सुना। जब वह रात के खाने के लिए उनको बुलाना चाहती थीं तो उन्होंने दरवाज़े पर दस्तक दी लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। दरवाज़े के बाहर रखे गये खाने को छुआ भी नहीं गया। वह गिरफ्तार होने का इन्तज़ार कर रहे थे।

रात में ग्यारह बजे के करीब, अतिरिक्त संस्करण छपने के लगभग चौदह घण्टे बाद वह नीचे दफ्तर में गये और बियरी को बुलाया। उन्होंने उसे सबसे पास वाले शराबखाने में अखबार लाने के लिए भेजा क्योंकि उसने बताया था कि वह कोई अखबार नहीं लाया था।

अखबार में बड़ी-बड़ी सुर्खियों में लिखा था : 'एक राष्ट्रीय विपदा' और '''ऑप्टिमिस्ट' के डूबने के लिए धुन्ध ज़िम्मेदार', साथ ही जो कुछ पता था उसके अनुसार विपदा का वर्णन भी था। विपदा के कारणों के सम्बन्ध में सुझाव, ख़ास तौर पर उस तरह के जो अतिरिक्त संस्करण में आए थे, अपनी अनुपस्थिति के कारण उल्लेखनीय थे। सूचना में सिर्फ इतना कहा गया था कि नौकाधिकरण मामले की जाँच कर रहा है।

पीचम ने उसे पढ़ा, हरेक लाइन समेत। फिर वह काम में लग गये।

बियरी के साथ मिलकर, उन्होंने वर्कशापों को पूरी तरह पुनर्व्यवस्थित करने की विस्तृत योजनाएँ बनाईं। आधे से अधिक कर्मचारियों को वर्दी पहनाई जानी थी और विभिन्न प्रकार के ज़ख्म दिये जाने थे। भीख माँगने के धन्धे के नज़रिये से, इस तरह की राष्ट्रीय विपदा विजय के समान थी। इस बात में कोई सन्देह नहीं था कि लन्दन दान करने को बिल्कुल तैयार होगा, जबकि विपदा का वर्णन स्मृतियों में अभी ताज़ा ही है। ज़रा-सा भी नज़र आने वाले घाव के साथ और वर्दी में कोई भी व्यक्ति अगले कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय नायक होगा।

पीचम ने कई घण्टों तक काम किया और फिर थोड़ी देर के लिए सोए। वर्दियाँ और अंग-भंग तैयार करने के लिए वर्कशॉपों ने-जीनसाज़ी, बढ़ईगिरी, सिलाई की-अगली सुबह छह बजे काम शुरू कर दिया।

दस बजे पीचम ने नौकाधिकरण का दौरा किया जहाँ उसने हेल से पाँच मिनट बात की। फिर वह स्कॉटलैण्ड यार्ड के लिए रवाना हो गये।

हेल के व्यवहार से उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ। हेल के सैनिक प्रशिक्षण ने उसे किस्मत की मार को शान्तचित्तता से झेलना सिखा दिया था। दफ्तर में भारी गहमा-गहमी का दृश्य था। हेल के आदेश त्वरित और दो टूक थे। आधिकारिक यादगार समारोह अगले के अगले दिन होना था। साउथैम्प्टन वाले जहाज़ों की ख़रीद की गारण्टी करने वाले दूसरे सरकारी ठेके को लेकर, हेल को घबराने वाली कोई बात नहीं नज़र आ रही थी, जब तक कि पहले ठेके को लेकर कोई घपला-घोटाला न मचे।

असिस्टेण्ट कमिश्नर प्रकट अविश्वास के साथ पीचम से मिला और यह तभी ख़त्म हुआ जब पीचम ने अपना परिचय मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के अध्यक्ष के रूप में दिया। और किसी बचे-खुचे सन्देह को मिटाने के लिए उन्होंने बताया कि वह मैकहीथ के केस के सिलसिले में आए थे जिसकी अगले कुछ दिनों में सुनवाई होने वाली थी।

फिर पीचम ने पूछा कि विपदा के सम्भावित कारणों के बारे में पूछे जाने पर वह अखबार वालों को क्या बताएँ। ब्राउन ने तत्परता के साथ उन्हें निर्देश दिये। दुर्घटना के कारण अभी पक्के तौर पर नहीं पता चले थे, लेकिन अब यह ज्ञात था कि *यंग सेलरबॉय* भी गम्भीर रूप से क्षतिग्रस्त था। शायद धुन्ध में दोनों जहाज़ टकरा गये थे।

पीचम वहाँ से जल्दी से निकले और ईस्टमैन के पास पहुँचे। बाकी सुबह उन्होंने उसके और मून के साथ गुज़ारी-फिनी नर्सिंग होम में था जहाँ उसका ऑपरेशन चल रहा था-आखिरी बही-खाते बनाते हुए। दोनों सज्जनों मे से कोई भी कारोबार की बारीकियों में जाने के मूड में नहीं था। उन्होंने साउथैम्प्टन वाले जहाज़ कभी नहीं देखे थे, जिन्होंने उनकी कल्पना में पुराने परित्यक्त जहाजों का नाम लिए समुद्र यात्रा की थी, और वे एक जाँच के भयंकर आतंक में थे।

घर के रास्ते पर पीचम ने जल्दी करने का कोई प्रयास नहीं किया। वह लोगों की बातचीत के छोटे-छोटे टुकड़ों को इकट्ठा करते हुए सड़कों पर यूँ ही भटकते रहे। हर कोई उस विपदा के बारे में बात कर रहा था।

एक छोटी-सी बी.शॉप के आगे उसका मालिक कुछ राहगीरों से बात कर रहा था।

उसने कहा, 'जब आपका वास्ता हवा और पानी से पड़ता है तो आप नहीं

जानते होते हैं कि आगे क्या होगा। धुन्ध के आगे आदमी लाचार है। ऐसी चीज़ें कुदरत की ताक तें होती हैं, विध्वंसक तत्व। सबकी अपनी समस्याएँ होती हैं, लेकिन चैनल के बीच बस इस तरह डूब जाना! यह एक भयंकर दुर्घटना है! लोग कह रहे हैं कि सेण्ट पॉल में अगले शुक्रवार स्मृति पूजा होगी। मैं तो शर्त लगा सकता हूँ कि कम्युनिस्टों का इसमें कुछ हाथ है!'

पूरी दोपहर पीचम बियरी के साथ काम कर रहे थे। याचना पत्रों के लेखन-कक्ष में नये मजमून भेजे गये। काँपते हाथों के साथ युद्ध-विधवाओं ने, जिनके पति 'अपनी पानी की कब्र में विश्राम' कर रहे थे, छोटा-मोटा कारोबार शुरू करने के लिए सहायता के लिए याचना की-जो इत्तेफाक से पहला मौक़ा था जब पीचम की फैक्ट्री के याचना पत्रों में बी.शॉप्स का ज़िक्र आया था।

पते सावधानी के साथ उन सन्दर्भ फाइलों से निकाले गये, जिनमें दानशील लोगों के नाम थे, उनकी तमाम कमज़ोरियों समेत।

पीचम फैक्ट्री ने दिखलाया कि वह एक राष्ट्रीय विपदा से निपटने में पर्याप्त सक्षम है।

शाम होने वाली थी जब पीचम को ब्राउन की और से पेश होने का हुकुमनामा मिला।

ब्राउन ने त्यौरियाँ चढ़ाए पीचम का इन्तज़ार किया। कमरे में दो अन्य उच्च पुलिस अधिकारी थे।

यह एक विशाल कमरा था। डेस्क पर, एक हरे रंग के सोख्ता कागज़ के टुकड़े पर, अपनी पीठ पर ज़ोर-ज़ोर से टिक-टिक करती घड़ी उठाए एटलस की काँसे की मूर्ति खड़ी थी। घड़ी के ऊपर लिखा था : *ultima multis*। ड्यूक ऑफ वेलिंगटन की तस्वीर दीवार पर टंगी थी।

चीफ इंस्पेक्टर ने बोलना शुरू किया, 'मि.पीचम, हमें मिली रिपोर्टों के अनुसार, ऐसा मालूम पड़ता है कि *ऑप्टिमिस्ट* जहाज़ गम्भीर अन्दरूनी टूट-फूट की वजह से डूबा है। कम-से-कम स्टियरिंग गियर का फेल होना मानना ही पड़ेगा। मुझे आपको यह सूचना ज़रूर दे देनी चाहिए कि नौकाधिकरण में विदेश मन्त्री मि.हेल को कहा गया है कि अगले निर्देश तक वे अपने निजी घर से न निकलें। मेरा समझना है कि आप इस मामले की बाबत अपना बयान देना चाहेंगे।'

मि.पीचम भावशून्य दीवार पर नज़र गड़ाए हुए थे।

उन्होंने कहा, 'मैं एक बयान देने की इच्छा *रखता* हूँ। मेरा मानना है कि एक

अपराध हुआ है।'

चीफ इंस्पेक्टर ने उत्सुकतापूर्वक पीचम को देखा। यह उन आधिकारिक दृष्टियों मे से एक थी जो निरीक्षण करने के लिए नहीं बल्कि निरीक्षित होने के लिए डाली जाती है।

एक छोटी, प्रभावशाली चुप्पी के बाद पीचम ने बोलना जारी किया :

'सज्जनो, स्टियरिंग-गियर ज़रूर टूट गया होगा; बिना किसी तूफान के, बिना कर्णधार की ग़लती के, शान्त वातावरण में, हालाँकि हल्के-से धुन्ध वाले मौसम में कुछ और हो भी नहीं सकता। *किसी जाँच की ज़रूरत नहीं, बस थोड़े-से पुनर्विचार की ज़रूरत है। सिर्फ हमारी सरकार और सभी सभ्य देशों की सरकारों के बारे में थोड़ी समझ की ज़रूरत है। बस उस तरीके पर थोड़ा विचार करें जिससे हम अपने अधिकारी चुनते हैं जिनका कर्तव्य राज्य के कल्याण की रक्षा करना है, हम कैसे उन्हें प्रशिक्षित करते हैं, और कैसे और क्यों वे अपने आपको राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित करते हैं। तब इस नतीजे पर पहुँचने के लिए कि ऐसे जहाज़ ज़रूर डूबेंगे, केवल उस उद्देश्य की समीक्षा करना ज़रूरी रह जाता है जिससे वे बनाए जाते हैं, जिस तरह से उन्हें बेचा जाता है, और जो मुनाफा उन्हें देना चाहिए। एक बार जब हम इन चीजों पर गौर कर लेंगे, तो हमें-चाहे हमें यह अच्छा लगे या न लगे-उसी विश्वास पर पहुँचना होगा जिसे मैंने पहले जाहिर किया था जब मैंने यह कहा : मेरा मानना है कि एक अपराध हुआ है।'*

कमरे में मौजूदा सज्जनों ने एक-दूसरे को देखा। पीचम बैठे हुए थे। वे अब खड़े थे क्योंकि अब वे उठ गये थे। पीचम बोलते गये :

'अन्य चीज़ों पर विचार करते हुए, मैं दूसरे नतीजों पर पहुँचा। अपनी सरकार की प्रतिष्ठा और हमारे व्यापारियों और कम्पनियों के लिए, हमारे युद्ध की न्यायपूर्णता और हमारे सभी खाते-पीते, ठीक से रहते, उचित वस्त्रों वाले बन्धु नागरिकों की निस्वार्थता के लिए आदर रखते हुए, और इस तथ्य के बरक्स कि हमारा एक जहाज़ शान्त समुद्र में डूब गया, मैं बिना किसी जाँच के और किसी भी जाँच के बावजूद इस नतीजे पर पहुँचने का बाध्य हो जाता हूँ कि किसी अपराध का तो प्रश्न ही नहीं उठता और यह कि सम्भावना एक दुर्घटना की है, नाह, निश्चित रूप से यह दुघटना ही है। तो इसलिए अब मैं कहता हूँ : मैं नहीं मानता कि कोई अपराध हुआ है; मेरा मानना है कि कोई दुर्घटना हुई है।'

मि.पीचम ने अपनी बात जारी करने से पहले अपने प्रत्येक श्रोता के चेहरे पर एक करीबी निगाह डाली।

'अब अगर आप मुझे यह कहने की आज्ञा दें कि इन दोनों में से कौन-सा नतीजा मुझे ज़्यादा आकर्षित करता है तो मैं दूसरे नतीजे को चुनूँगा। अभी तक तो यही ज़्यादा मान्य लग रहा है। मैंने सुना है कि दो दिनों में हर मेजेस्टी के उन सैनिकों के सम्मान में एक स्मृति पूजा होगी, जो इस अनर्थ में मारे गये हैं। क्या आप यह उपयुक्त समझेंगे कि वही घायल सैनिक जिन्होंने अभी कुछ ही दिनों पहले उन जहाज़ों की यात्रा के पक्ष में प्रदर्शन किया था, अब इस बात के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करें कि ऐसे जहाज़ कभी खरीदे ही क्यों गये? मुझे बताया गया है कि अखबारों में उनके गोदी के पास प्रदर्शन करने के इरादे की घोषणा करने वाली एक नोटिस आयी है।'

मि.पीचम बिना किसी बाधा के स्कॉटलैण्ड यार्ड से निकले।

हर जगह उन्होंने आधे झुके झण्डे देखे। दुनिया का सबसे बड़ा शहर अपने बेटों के लिए मातम मना रहा था।

सफाई

फादर एक विशालकाय हड़ीला आदमी था, उन तीन जीवित बचे लोगों में से एक जो मैकहीथ को बेकेट के रूप में जानते थे। वह राइड लेन में ओ'हारा के साथ काम करता था और उसके साथ उसका अच्छा याराना था।

मैकहीथ ने उसे पॉली और ओ'हारा पर नज़र रखने को कहा था, और उसने फौरन अपने दोस्त को इस बात की ख़बर दे दी थी।

साथ में उन्होंने लगभग उन सभी सामानों के गोदामों को साफ़ किया जिन्हें नष्ट करने का आदेश उन्हें मिला था, और उन्हें अपने फायदे के लिए बेच दिया। इस प्रक्रिया कि दौरान फादर ने ग्रूच को दूर रखा। (ग्रूच उस तिकड़ी का तीसरा आदमी था।)

इसके अलावा, फादर ओ'हारा के मिसेज मैकहीथ के साथ सम्बन्धों के बारे में करीब सबकुछ जानता था, क्योंकि उसने कहानी में अधिकतम सम्भव मौजूद रहना अच्छा समझा।

वह उस आदमी के पीछे भी रहा था जिसने कोक्स पर हमला किया था। लेकिन उसका दोस्त ओ'हारा नहीं जानता था कि वह उस बाबत कुछ भी जानता है।

एक सुबह पत्थर का कोयला राइड लेन में 28 शिलिंग का था, और तीन पुलिस वाले न. 28 के पीछे वाले गोदामों में जबरन घुस गये और फादर को उसके बिस्तर पर से खींचकर निकाल लिया। उन्होंने बेहद विनम्रता से उससे पूछा कि सामान कहाँ रखे गये हैं।

ज्यादा कुछ बचा नहीं था, मगर कुछ चीज़ें अभी भी वहाँ बिखरी पड़ी थीं। उन्होंने वे चीज़ें बटौरीं और बिना ज़्यादा शब्द ख़र्च किये वहाँ से चले गये।

फादर ने धीरे-धीरे कपड़े पहने और फिर मैकहीथ से मिलने जेल चला गया, क्योंकि ग्यारह बजे से पहले वह ओ'हारा के आने की उम्मीद नहीं कर रहा था।

मैकहीथ नाश्ता ही कर रहा था। उसने फादर की लम्बी-चौड़ी कहानी को काट-छाँटकर छोटा कर दिया।

उसने शान्त स्वर में कहा, '28 में कुछ नहीं बचा है, वे वहाँ जितनी तलाशी लेना चाहें ले सकते हैं।'

'तुम कैसे जानते हो?' फादर ने बुझे स्वर में पूछा और टेबल पर बैठने की कोशिश की।

डबलरोटी का एक टुकड़ा अपनी कॉफी में डुबोते हुए मैकहीथ ने जवाब दिया, 'क्योंकि मैंने उन्हें खाली करने का आदेश दे दिया था। इसलिए वे खाली कर दिये गये थे। लगभग पाँच हफ्ते पहले।'

'लेकिन वे उतने खाली नहीं थे। हम इस काम को कल ख़त्म करने जा रहे थे, लेकिन आज वहाँ कुछ चीज़ें छूटी ही हुई थीं।'

मैकहीथ खाता ही रहा फिर उसने कहा :

'ऐसा? फिर मैं जानना चाहूँगा कि तुम मेरे गोदाम में क्या करते रहे थे? मैं सचमुच उम्मीद करता हूँ कि कोई बेईमानी नहीं होगी और तुम्हारे पास हर चीज़ की रसीद मौजूद होगी।'

फादर ने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद वह भुनभुनायाः

'वे सीधे न. 28 पर आ गये।'

'यह तो बुरा हुआ,' मैकहीथ ने कहा, और अपनी पनीली आँखों से फादर को देखा।

फादर ने आखिरकार अपने आपको सम्भाला। अपने विशालकाय हाथों से उस कैलेण्डर को हटाकर जिसे मैकहीथ ने बड़ी सावधानी से बिछाया था, अचानक फैसला लेकर वह टेबल के कोने पर बैठ गया, और ज़ोर से बोला :

'अगर तुम वाकई यह सोच रहे हो कि हम बस तुम्हारी ख़ातिर ओल्ड बेली

चले जाएँगे तो तुम ग़लती कर रहे हो, बेकेट। हम ऐसा सोचेंगे भी नहीं! ओ'हारा मेरा दोस्त है और अगर दूसरे लोग अपने पुराने दोस्तों पर घटिया चालें *चलेंगे* तो भी हम साथ-साथ रहेंगे। समझे तुम?'

मैकहीथ विचलित हुए बगैर खाता रहा।

'फादर, तुम्हें जो कुछ कहना है कहो, लेकिन मेरी टेबल से उठ जाओ वरना तुम्हें बाहर फिंकवा दूँगा, हालाँकि तुम एक पुराने दोस्त हो।'

फादर अशिष्टता से उठा। वह गुस्से से काँप रहा था।

'तो यह बात है। तुम हमें साफ़ करवाना चाहते हो? तुमने तो शुरुआत से ही हम सबको अपनी व्यवस्था से ठगा है; पहले तुम फिक्स्ड मजदूरी देते थे क्योंकि तुम चाहते थे कि तुम्हारे गोदाम भरे रहें; फिर जब तुम्हें और माल नहीं चाहिए था तो तुमने पीस वर्क पर देना शुरू कर दिया। हमेशा बस वही जो तुम्हें जँचे। और अब तुम हमें पुलिस को सौंपने जा रहे हो! लेकिन तुम एक बैंकर हो, क्यों? और तुम्हें कुछ पता नहीं क्या हो रहा है, एह?'

मैकहीथ ध्यान से उसे देख रहा था। उसने दोस्ताना ढंग से कहा, 'मैं आसानी से आहत नहीं होता। तुम अपने दिल की बात मुझसे कह सकते हो। लेकिन तुम्हें याद रखना चाहिए कि मैंने तुम्हें एक आदेश दिया था जिसे तुमने पूरा नहीं किया। तुम ओ'हारा के दोस्त हो, मगर मैं यह कैसे जान सकता था। वह इतना बड़ा धोखेबाज़ सुअर है कि मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि उसके ऐसे दोस्त भी होंगे जो उसके लिए जेल जाने को तैयार होंगे।'

फादर गुस्से से हकलाया, 'क्यों....क्यों...बेहतर होगा कि तुम अपनी भली पत्नी पर नज़र रखने के लिए कोई दूसरा जासूस ढूँढ लो। वह तुमको ऐसा काफी कुछ बताने में सक्षम होगा जो तुम नहीं जानते! हर किसी को ओ'हारा इतना अप्रिय नहीं लगता है जितना कि तुम्हें लगता है। *यह* में तुम्हें बता सकता हूँ!'

वह गुस्से से पागल हो रहा था लेकिन उसने पूरे वक्त अपने आदमी को बोलते हुए देखा।

इसका कोई फ़ायदा न था। मैकहीथ ने अपनी एक मांसपेशी भी नहीं हिलायी।

उसने बस इतना कहा :

'मैं देख सकता हूँ फादर कि तुम इतने बुरे नहीं हो जितना कि तुम बनने की कोशिश कर रहे हो। तो तुमने अपनी आँखें खुली रखीं।'

फादर ने विद्वेष के साथ अपना सिर नीचे किया और कहा, 'हाँ मैंने खोली

रखीं, बेकेट-थोड़ी-सी। मैंने यह भी देखा कि तुमने कोक्स के साथ क्या किया था। वह सैण्डबैग आसमान से नहीं टपका था!'

मैकहीथ ने अचानक अपना चम्मच नीचे रख दिया। उसे यह मामला दिलचस्प लगता मालूम पड़ा।

उसने काफी अलग आवाज़ में कहा, 'फादर, इसके बारे में तुम्हें मुझे बताना ही होगा। मैं सचमुच इस बारे में कुछ नहीं जानता। मैं तो खुद सोच रहा था कि कोक्स एकदम अचानक मर गया।'

फादर अपने साथ एक हारी हुई लड़ाई लड़ा। वह मैकहीथ को जानता था, और उसकी मौजूदा आवाज़ में ईमानदारी थी। लेकिन अगर वह कोक्स की हत्या के बारे में कुछ नहीं जानता था तो यह उसके दोस्त ओ'हारा का निजी मामला था। और जिसके बारे में वह काफी कुछ बोल चुका था।

मैकहीथ उसे उम्मीद लगाए देख रहा था। उसने कहा, 'सुनो फादर, ऐसा करके तुम कुछ बचा नहीं सकते। अकेला आदमी जो सैण्डबैग के साथ काम करता है, वह जाइल्स है। मैं व्यक्तिगत रूप से उसे नहीं जानता-और तुम यह अच्छी तरह जानते हो। वह ओ'हारा का आदमी है-है न? अब जबकि हम इतना खुल चुके हैं फादर, तो बेहतर होगा कि तुम अपना दिल पूरी तरह हल्का कर लो। और मैं तुम्हें एक छोटी-सी सलाह दूँगा। राइड लेन को खाली करो और सफर के लिए अपने लिए एक पासपोर्ट और कुछ पैसों का इंतज़ाम करो! मैं अमानवीय नहीं हूँ। तुम मुझे बेकेट बोलते रहते हो जबकि मेरा नाम मैकहीथ है। मैं तुम्हें अपनी टेबल पर बैठने के लिए भी माफ कर दूँगा। मेरी बीवी के बारे में तुमने जो कुछ कहा वह गुस्से में कहा गया था। अपना बोरिया-बिस्तर बाँधने के लिए तुम्हारे पास ग्यारह बजे तक का समय है; फिर नाई के पास जाओ जहाँ तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत के सामान मिल जाएँगे। लेकिन अगर तुम ओ'हारा से एक शब्द भी कहोगे, यहाँ तक कि "राम-राम" या "अच्छा मौसम, मुझे तो नहीं लगता" भी, तो साढ़े ग्यारह बजे तक तुम जेल में होगे। तुम्हें यह समझना ही होगा।'

फादर इतना अचम्भित था कि एक शब्द भी न कह सका। और मैकहीथ भी कुछ और नहीं सुनना चाहता था। सबसे अहम बात यह कि वह पॉली और ओ'हारा के बारे में एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता था। वह इतने अप्रिय विषय पर अपना थोड़ा भी दिमाग और नहीं लगाना चाहता था। वह ऐसे किसी और व्यक्ति से कभी नहीं मिलना चाहता था जो उससे इस बाबत बात करे।

फादर वह नहीं जान पाया, मगर इसी ने उसे बचा लिया।

वह परेशान दिमाग के साथ राइड लेन वापस गया। वहाँ उसने अपना झोला बाँधा, अपना सबसे अच्छा सूट पहना और साढ़े दस बजे से पहले दरवाज़े से निकल गया। ओ'हारा अपने होंठों के बीच सिगरेट दबाए बाहर के दरवाज़े से बस घुस ही रहा था। उससे बात करने को लेकर फादर पसोपेश में था। आखिर वे पुराने दोस्त थे। और वह ओ'हारा की माँ को भी जानता था।

वह अनिश्चय की स्थिति में दरवाज़े के पीछे खड़ा रहा। ओ'हारा ने अभी तक उसे देखा नहीं था। फिर उसने अपना मन बना लिया।

वह अपने छिपने की जगह से निकला और अपने होंठ एक छुरी की धार की तरह भींचे, बिना एक भी शब्द कहे, ओ'हारा के सामने से बिल्कुल सीधा देखते हुए निकल गया। ओ'हारा अचम्भे में उसे देखता रहा।

जब फादर अगले कोने से मुड़ गया तब उसने राहत की साँस ली। ओ'हारा ने उसका झोला और खूबसूरत भूरा सूट ज़रूर देख लिया होगा।

लेकिन साढ़े ग्यारह बजे ओ'हारा को उसके निजी घर से गिरफ्तार कर लिया गया।

वह बहुत शान्त भाव के साथ स्कॉटलैण्ड यार्ड पहुँचा। जब उसने सुना कि उस पर सेंधमारी और चोर का सामान बेचने का आरोप है तो वह हँसा। उसने घोषणा की कि उसने वे सामान ख़रीदे थे जिनकी आपूर्ति सी.पी.बी. को हुई। रसीदें शहर में सी.पी.बी. के दफ्तर में मौजूद हैं।

फिर उसे बताया गया कि उस पर यह आरोप वहीं लगे हैं।

उसने तत्काल बैंकर से आमने-सामने बात करने की माँग की।

बैठक दोपहर में हुई। मैकहीथ की कोठरी में लॉर्ड ब्लूम्सबरी और स्कॉटलैण्ड यार्ड में मि.ब्राउन भी मौजूद थे।

इससे पहले कि ओ'हारा एक भी शब्द कह पाता, मैकहीथ उसकी तरफ बढ़ा और बोला : 'और वे सामान तुम्हें कहाँ से मिले, मेरे प्यारे, जिनकी आपूर्ति तुम मेरी दुकानों को पिछले छः महीनों से करते रहे हो?'

जब दोबारा ओ'हारा अपनी कोठरी में पहुँचकर बैठ गया, तभी उसने अपने अचम्भे से उबरना शुरू किया। तभी दरवाज़ा धड़ाम से खुला और सैण्डबैग वाले जाइल्स को उसका अकेलापन दूर करने के लिए अन्दर धकेल दिया गया।

फादर अपने सफर पर निकल चुका था जब उसका कहा एक वाक्य मैकहीथ के ज़ेहन में खटकना शुरू हुआ। वह वाक्य कुछ यूँ था : तुम अपनी भली बीवी का

ख़याल रखो!

बाहर बारिश हो रही थी। अपनी जेब में हाथ डालकर अपनी कोठरी को तेज़ कदमों से नापते हुए मैकहीथ ने बारिश की आवाज़ सुनी। बीच-बीच में वह अचानक रुकता और अपना मूली जैसा सिर झुकाकर और ध्यान से सुनने लगता। फिर उसने मोटी कालीन पर लात मारी और सोचने लगा :

'अच्छा है कि अब वह जेल में है। कम-से-कम मैं जानता हूँ कि वह कहाँ है। मुझे बताया जाता है कि मेरे लोग मेरी अनिर्णायकता को लेकर शिकायत करते हैं। लेकिन जब मौक़ा आता है, तो मैं हमेशा अपना मन बना पाने में सक्षम रहा हूँ। मैं किसी से भी अच्छी तरह से जानता हूँ कि आदमी को दृढ़ रहना चाहिए-आज भी और कल भी। आदमी को धन्धे मे चल रही हर चीज़ को जानना चाहिए, और हर बात को दिमाग में एक नासूर की तरह आने देना चाहिए। और एक दिन आदमी को कदम उठाना चाहिए, अचानक, जैसे आसमान से बिजली गिरती है-जैसा कि सरदार किया करते हैं। सारी मुसीबत को बेरहमी से बेनकाब कर दिया जाता है। हर किसी को डर के मारे लकवा-सा मार जाता है। सरदार ने काफी इंतज़ार किया, लेकिन आखिर उसने कदम उठा लिया है। जब उसे पता चल गया कि कुछ गड़बड़ है तो उसने अपने सबसे पुराने दोस्तों को भी नहीं बख्शा। ऐसा ही है वह; कोई उसे कभी धोखा नहीं दे सकता।'

वह कुछ कदम आगे गया, फिर रुक गया, और एक बार फिर सोच में डूब गया।

उसने सोचा, *'पत्नी रखना काफी मुश्किल मामला बन गया है। पहले के दिनों में, बस एक मर्द को अपेक्षित समय से दो घण्टे पहले शिकार से लौटना होता था और वह शायद अपनी पत्नी के बिस्तर से किसी मोटे-मुस्टण्डे को ख़ौफ दिलाकर खींच निकाल सकता था। क्या कह रहा हूँ मैं, उसके बिस्तर से? एक आदमी के साथ उसे कमरे में खड़ा पाना ही काफी था, और सबकुछ साफ़ होता था। आज के ज़माने में, धन्धे का आम तरीका ही उसे मिलने वाले हर आदमी को अपने बच्चे दिखाने को मजबूर कर देता है। और कुछ दफ्तरों में तो वे ऐसे हमबिस्तर होते हैं जैसे हाथ धुल रहे हों, और मुख्य रूप से इसलिए ताकि वे हम मालिकों से हमारे काम का समय लूट लें! जब बेवफाई इतनी आम हो तो खोज पाने का तो सवाल ही नहीं उठता और हाथ धोने की ही तरह इसकी भी कम ही अहमियत होती है।'*

अचम्भे में मैकहीथ ने अपना सिर हिलाया और भारी बारिश को दोबारा

सुना और फिर से तेज़ कदमों से चलने लगा। कुछ समय बाद वह अपने डेस्क पर बैठा और उसने अपने मुकदमे के दस्तावेज़ उठा लिए।

अगले कुछ ही दिनों में सुनवाई होने वाली थी।

बेचैनी भरे दिन

'काम करो शक नहीं।'
(कार्लाइल)

ओल्ड ओक स्ट्रीट का कारखाना ओवरटाइम और रात की शिफ्टों में काम कर रहा था।

लड़कियों के कमरे में ड्राइंग-पिन से दीवार पर दर्ज़ी मैरी ऐन वॉकली की वीरतापूर्ण मृत्यु की अखबारी कतरन लगी थी।

'बीस वर्षीय मैरी ऐन वॉकली एक कोर्ट के दर्जी की दुकान में काम करती थी और यात्रा पर आए राजसी व्यक्तियों के सम्मान में दी गयी बॉल पार्टियों में पहनने के लिए ऊँचे समाज की स्त्रियों के लिए पहनावे बनाया करती थी। वह मौसम का तेज़ वक्त था। सात अन्य लड़कियों के साथ वह साढ़े छब्बीस घण्टे से बिना रुके काम करती रही जिसमें से तीस एक ऐसे कमरे में थीं जहाँ इतने लोगों के लिए ज़रूरी हवा का एक-तिहाई भी नहीं रहता था। रात के वक्त वे एक बिस्तर में दो सिमटकर उन छोटी-छोटी कोठरियों में सोती थीं जिनमें सोने का कमरा बँटा हुआ था। शेरी (सफेद शराब), पोर्ट (पुर्तगाली शराब) और थोड़ी-सी कॉफी उनके फर्श पर जमकर खड़े रहने की क्षमता को पुनर्जीवित कर देती थी, जिसे वे मामूली-सी मज़दूरी पर निस्वार्थता के साथ महारानी की सेवा पर ख़र्च कर देती थीं। मिस वॉकली शुक्रवार को बीमार पड़ीं, मगर उन्होंने हार मानने से इंकार कर दिया और रविवार को वह भगवान को प्यारी हो गयीं-मैफेकिंग के आदमियों से कम वीर नहीं थी वह।'

लेकिन इस प्रोत्साहक सन्देश वाले पोस्टर से ज़्यादा प्रभावी काम तेज़ करवाने के बियरी के तरीके थे। उसने मन से काम न करने वाले और कमज़ोर मज़दूरों को सीधे सड़क पर धकेल डालने की धमकी दे रखी थी।

‘तुम लोग को दोषी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि तुम्हें कब्ज़ है, मगर मैं भी क्या करूँ!’ वह कहा करता था।

उसने एक रचनात्मक खोज की थी। उसने ग़ौर किया था कि कोठरी में यदा-कदा एक सिगरेट पी लेने की मज़दूरों की आदत थी। जब वे अपने काम से काफी देर तक के लिए दूर रहते तो अहाते में झाँक कर वह छोटे रोशनदानों से निकलते धुँए के महीन छल्ले देख सकता था। इसलिए उसने पीछे एक ढलवाँ दीवार बनाने की व्यवस्था की जो उन्हें दुहरा होकर बैठने के लिए बाध्य कर देती थी। जब पॉली अपने माता-पिता के पास वापस आयी और उसने इस छोटी-सी जगह को देखा जहाँ से अहाते का पुराना गाँठदार पेड़ दिखता था तो वह काफी प्रभावित हुई; यह घर था।

काम तेज़ी से प्रगति कर रहा था। लेकिन *ऑप्टिमिस्ट* हादसे के शिकार लोगों की याद में होने वाले समारोह के सिलसिले में, उसी दिन, जिस दिन बैंकर मैकहीथ के खिलाफ सुनवाई होने वाली थी, यानी गुरुवार को, अखबार में हादसे के कारणो के विषय में हो रही जाँच की प्रगति के बारे में हर तरह के बेहूदा सवाल छपे थे।

असिस्टेण्ट कमिश्नर ने अपशकुनी चुप्पी साध रखी थी। लेकिन पीचम जानते थे कि पुलिस गोदी के आस-पास पूछताछ कर रही थी। कई लोगों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था। उन्होंने बेचैनी के साथ सभी अखबारों को छाँट डाला, लेकिन हादसे के कारणों के बारे में कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली।

और कई पुलिस अधिकारियों को हमेशा ओल्ड ओक स्ट्रीट के घर के बाहर देखा जा सकता था।

पीचम को उन दिनों काफी तकलीफ सहनी पड़ी।

ख़ास तौर पर एक उजले कार्यकक्ष से दूसरे उजले कार्यकक्ष के बीच के अन्धेरे गलियारे से गुज़रते हुए और अन्धेरे में ही पल भर को रुककर वह खुद से कहा करते थे, *‘मैं देख सकता हूँ कि बद से बदतर होगा। ज़िन्दगी में आप इसी की उम्मीद रख सकते हैं: बदतर। और फिर भी यह* समझने लायक *बात है कि पुलिस शायद अचानक कदम नहीं उठाये!* ऑप्टिमिस्ट *बरबाद जहाज़ था, मैं कब मना करता हूँ। लेकिन क्या मुझे भी बरबाद होना ही होगा? निश्चित रूप से सम्बन्धियों के लिए यह एक दया की बात है, कोई शक नहीं। लेकिन अगर यह मेरे लिए भी दया की बात होती तो क्या इससे उन्हें कोई मदद मिलती?’*

फिर भी एक नयी व्यापारिक तरकीब के लिए वह इस आपदा के कर्ज़दार थे। इसलिए निम्न प्रकार के चिन्तन से वह स्वयं को राहत पहुँचाते थे :

'ऑप्टिमिस्ट *के डूबने जैसे हादसों को टाला नहीं जा सकता। युद्ध, तूफान, भूकम्प, व्यापारिक उद्यम, अकाल, इन्हें टाला नहीं जा सकता। जो भी मानव स्वभाव से परिचित है वह जानता है कि सभी मानवीय प्रयासों के नसीब में असफलता ही बदी है। यहाँ तक कि बाइबिल भी यह कहती है कि यह एक ऐसा विचार है जिसे हमेशा दिमाग में रखा जाना चाहिए। दरअसल, दस में नौ लोगों को भविष्य का जो भय होता है वह ठीक ही होता है। (ज्यादा से ज्यादा, हज़ार में से एक ही अपने भयों को लेकर ग़लत होता है।) और उसके लिए आपको गुंजाइश निकालनी ही चाहिए। इससे काफी पैसा बनाया जा सकता है। कुछ चीज़ें लें जिससे हर कोई डरता है : बीमारी, ग़रीबी, मौत। हम उन लोगों से कहते हैं जो डरते हैं* (क्योंकि वे जिन्दगी और अपने भाइयों के बारे में जानते हैं*) : बहुत अच्छे, हम अवश्यम्भावी भविष्य से आपकी रक्षा करेंगे। आप हमें पैसा दें, नियमित रूप से (ताकि आपका ध्यान इस पर मुश्किल से ही जाए), उस दौरान जब आपके साथ सबकुछ ठीक-ठाक चले तो अपनी आय का एक छोटा-सा हिस्सा आप हमें दें; और फिर जब अवश्यम्भावी हादसा हो तब हम आपको पैसे देंगे (या, आपके मरने की हालत में आपके उत्तराधिकारियों और सुपुर्ददारों को पैसे देंगे)। क्या यह अच्छा सुझाव है? मुझे पक्का पता है कि हर कोई इसका स्वागत करेगा। आपको अपने बन्धु मनुष्यों की सहायता अवश्य करनी चाहिए! और सहायता-अजी इसकी कुछ कीमत बैठती है! अगर मैं इस धन्धे से सही-सलामत निकल आता हूँ-अगर,* अभी के अभी, *पुलिस को कुछ न मिले-तो मैं इस तरकीब को हकीकत में बदल दूँगा, यह निश्चित है। ज़रा सोचिये उन सैनिकों के बारे में जो* ***ऑप्टिमिस्ट*** *के साथ डूब गये। अधिकांशतः वे जवान थे, लेकिन उनमें कुछ पिता भी थे। अगर उनके रिश्तेदारों ने इस जहाज़ के नष्ट होने के लिए अपना बीमा करा लिया होता तो आज वे कितनी अलग स्थिति में होते! जब उन्हें विदेश जाने का आदेश मिलता, तो उनके पास जल्दी-से-जल्दी बीमा करवाने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं होता। और फिर, जो लोग अखबारों में* ऑप्टिमिस्ट *जैसे हादसों के बारे में पढ़ते हैं, उन्हें भी ऐसी दुर्घटनाओं के लिए बीमा कराना होगा। और हादसों की तो कोई कमी नहीं है! मसलन, बुढ़ापा भी एक हादसा ही है। ख़ास तौर पर बड़े शहरों में बुढ़ापा। एक इंसान की ज़िन्दगी के आखिरी साल, जब वह दुनिया के किसी काम का नहीं रह जाता।*

वे अवश्यम्भावी और भयानक साल! बेरोज़गारी भी एक ऐसी ही आपदा है। मिसाल के तौर पर, मेरे ही कर्मचारियों को ले लें। मुझे इसी बात का फ़ायदा होता है कि वे नहीं जानते कि अगर मैं उन्हें सड़कों पर धकेल दूँ तो वे कहाँ जाएँगे। मैं उनसे कड़ी-से-कड़ी मेहनत कराता हूँ और उन्हीं से अपना मुनाफ़ा भी कमाता हूँ। उन्हें हर समय मदद की भारी ज़रूरत महसूस होती रहनी चाहिए। इसलिए शायद मैं उनकी मदद करके और ज़्यादा मुनाफ़ा कमा सकता हूँ? आपको सारा पैसा रखने के लिए विशाल इमारतें बनानी पड़ती हैं! जब तक बीमा की रकम पर कोई माँग नहीं की जाएगी, तब तक तो यह योजना फलेगी-फूलेगी; लेकिन अगर माँगें आई तो इस योजना का दीवाला भी पिट सकता है। जो भी हो, अगर आप इन लोगों और उनके मालिकों के बीच जगह बना लेते हैं, और उनसे कुछ अतिरिक्त माल ऐंठ सकते हैं, तो आप हमेशा ही यह कहकर भुगतान से इंकार सकते हैं कि उन लोगों को पहले ही दी जा चुकी सेवाओं के रूप में भुगतान किया जा चुका है। यह एक शानदार धन्धा होगा। इसमें पैसे देने वाले अधिकांश लोग नालों में मरते हैं, या वे अपनी चोटों को साबित नहीं कर पाते। लेकिन शायद मज़दूरों को ऐसी सहायता अपनी साथियों से, यानी भूतपूर्व मज़दूरों से मिल जाए. ..। दिखाने के लिए उनमें से कुछ को काम दिया जा सकता है। आप राज्य की भी इस योजना में दिलचस्पी पैदा कर सकते हैं। ऐसे कानून बनाए जा सकते हैं जो मज़दूरों को अपना अंशदान करने को बाध्य कर दें। स्वयं राज्य को ही आम लोगों की अदूरदर्शिता और उनके आपराधिक अव्यावहारिक आशावाद से संघर्ष करना पड़ेगा। वे सोचते हैं कि सबकुछ ठीक होगा, जबकि आपको हमेशा पता होता है कि उनकी किस्मत में क्या लिखा है। आप युद्धों से उतना ही बच सकते हैं जितना संकटों से। जब लोगों को नौकरी देना फायदेमन्द न रह जाय तो उन्हें सड़कों पर धकेल ही देना चाहिए। मकान की मरम्मत किराए की रकम से ज्यादा बढ़कर नहीं की जा सकती, आदि, आदि-इसलिए इन मज़दूरों के लिए पहले से कुछ इंतज़ाम किया जाना चाहिए। जब सैनिक और कारखाना-मज़दूर, आदि बनने वाले इन लापरवाह और बेवकूफ लोगों की असाधारण अदूरदर्शिता से पाला पड़े, तो संवैधानिक कदमों का सहारा लिया जाना चाहिए। उन्हें बीमा करवाने पर बाध्य कर दिया जाना चाहिए। वे और कुछ तो नहीं कर सकते मगर इतना तो उन्हें करना ही चाहिए। यह सार्वजनिक हित-और अच्छे व्यापार का भी-सवाल है! लेकिन ऐसी कोई बीमा योजना शुरू करने के लिए, आपको कुछ पूँजी की आवश्यकता पड़ेगी। अगर जहाज़ के इस धन्धे में मैं सफल रहता हूँ तो पूँजी का

इंतज़ाम हो जाएगा। इसके अलावा, नये जहाज़-साउथैम्प्टन वाले-वे बिल्कुल समुद्र में चलने लायक हैं! बस इस बार, सबकुछ ठीक हो जाना चाहिए!'

ऑप्टिमिस्ट के डूबने के नौ दिन बाद और उसकी याद में हुए आधिकारिक समारोह की पूर्व-सन्ध्या पर, बुधवार की शाम तक भी पुलिस ने कोई घोषणा नहीं की। अब पीचम इस तनाव को झेल पाने में असमर्थ थे।

घबराहट और भय के कारण उन्होंने पुलिस पर दबाव डालने का फैसला किया। उन्होंने बियरी और दो अन्य व्यक्तियों को कई पोस्टरों के साथ स्कॉटलैण्ड यार्ड भेज दिया। इन पोस्टरों पर कुछ इस तरह के मजमून थे : '"ऑप्टिमिस्ट" में क्या गड़बड़ी थी?', 'नौकाधिकरण को कितनी रिश्वत मिली? 200 घायल सैनिकों से पूछा', और '"ऑप्टिमिस्ट" क्यों डूबा?' इनमें से एक तख्ती पर यह भी लिखा था : 'मि.पीचम कौन हैं?'

बियरी ने स्कॉटलैण्ड यार्ड में बताया कि वह एम.टी.सी. के अध्यक्ष मि.पीचम के पास से आया है। ये पोस्टर उसके पास काफी घुमावदार रास्तों से होकर पहुँचे थे; उनकी दुकान से वाद्य-यंत्र खरीदने वाले भिखारियों में से कई उनके पास ये पोस्टर लाए थे। जाहिर है कि ऐसे प्रदर्शन की योजना अगली दोपहर की थी।

एक घण्टे बाद पीचम स्वयं पहुँच गये।

ब्राउन ने जल्दी ही उनको निपटा दिया। उन्होंने शिकायत की कि अगर ऐसा कोई प्रदर्शन हुआ तो वह बरबाद हो जाएँगे। और यह बात भी उन्हें बेचैन कर रही है कि कई बड़े अधिकारियों का नाम भी इस मामले में घसीटा जाएगा। लेकिन उनकी शिकायतों पर कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया गया।

बौखला कर वह वहाँ से चले गये।

फिर एक गाड़ी लेकर वह *रिफ्लेक्टर* के दफ्तरों में गये। उन्होंने प्रमुख सम्पादक से मिलने की माँग की और फिर उसके साथ उनकी लम्बी बातचीत हुई। इस बातचीत का नतीजा यह हुआ कि सम्पादक ने उनसे वादा किया कि अगली सुबह के आठ बजे तक दो कॉलम ख़ाली रखेगा, जिसमें मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के अध्यक्ष 'ऑप्टिमिस्ट' *के डूबने के कारणों* की एक सनसनीखेज़ व्याख्या देंगे।

इसके बाद पीचम पैदल घर गये, अगले दिन प्रस्तावित प्रदर्शन की विस्तृत जानकारियाँ तैयार कीं, और फिर अपने दफ्तर में बन्द हो गये, और पूरी रात लिखते रहे। हालाँकि ब्राउन ने पीचम को कोई भाव न देना ही सबसे अच्छा समझा था, लेकिन ऐसा भी नहीं था कि इस पूरे मामले को लेकर वह एकदम

बेफिक्र हो। उस शाम उसने गोदी पर एक और छापे (सातवें) का आदेश दिया और गिरफ्तार किये गये पहले बीस मज़दूरों की जाँच के बाद, वह भारी मन के साथ जेल में मैकहीथ से मिलने गया। मैकहीथ अकेला था और एक किताब पढ़ रहा था।

ब्राउन ने वॉर्डर को भेजा और कोठरी के कोने में बोतल से अपने लिए एक गिलास में बियर ढाली।

लेकिन इससे पहले कि वह अपने दोस्त के सामने अपना मन हल्का कर पाता, मैकहीथ ने बोलना शुरू कर दियाः

'ओ'हारा का क्या हुआ? उसको लेकर मैं बहुत बेचैन हूँ। क्या वह अभी तक तैयार नहीं हुआ?'

ब्राउन ने थके से स्वर में कहा, 'नहीं'।

'क्या तुमने उसे बताया कि अगर वह अपनी जुबान को लगाम नहीं देता तो हम उसके ख़िलाफ़ हत्या का मामला सिद्ध कर सकते हैं?'

'हाँ, मैंने उसे यह सब बताया। उसने कहा कि वह तुम्हें इस मुसीबत से निकालने की बजाय फाँसी चढ़ना पसन्द करेगा। मुझे लगता है कि ज़ाती तौर पर इस मामले को लेकर वह काफी जज़्बाती है।'

मैकहीथ बेचैनी के साथ अपनी कोठरी मे आगे-पीछे चल रहा था। अगले दिन उसके मामले की सुनवाई होनी थी। अगर उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर होना पड़ता है कि वह सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड का अध्यक्ष है तो किसी भी सूरत में किसी चोरी के मामले में फँसना उसे बहुत महँगा पड़ता।

अन्त में वह बैठ गया और थोड़ा शान्त हो गया।

अपना सिगार निकालते हुए उसने कहा, 'इस बन्दे के पास दिमाग़ है। वह अन्धी सहज वृत्ति से चलने की बजाय कॉमन सेंस से चलता है। मैं इसी पर निर्भर रहूँगा! अगर मैं इस पर और भरोसा नहीं कर सकता तो मैं खुद को फाँसी लग जाने दूँगा। जिन शहरों में हम जीते हैं, अपने तमाम आशीर्वादों समेत यह समूची सभ्यता, ये सब उसी कॉमन सेंस की शक्ति का प्रमाण है। और यह शख़्स भी अपने बदले की प्यास बुझाएगा और फाँसी चढ़कर मरने की जगह चार वर्षों की कैद चुनेगा-या हमें तीन वर्ष कहना चाहिए, क्योंकि कुछ पुराने हिसाब चुकता करने के मसलों को भूलना हमारे लिए ज़्यादा मुश्किल नहीं होगा।'

ब्राउन ने कहा कि उसने ओ'हारा को अपना मन बनाने के लिए अगली दोपहर दो बजे तक का समय दिया है।

मैकहीथ ने कहा, 'हाँ, ज़्यादा से ज़्यादा मुझे दो बजे तक उसकी स्वीकारोक्ति मिल जानी चाहिए। सुनवाई के ठीक बाद, नेशनल क्रेडिट बैंक में क्रेस्टन से मेरी मुलाकात होनी है, जिसमें शायद आरों और ऑपर बन्धु भी मौजूद हों। मैं चाहूँगा कि मैं उनके सामने दस्तख़त किया इकबालनामा रख सकूँ कि मेरा थोक सप्लायर चोरी का दोषी है।'

फिर अन्त में, ब्राउन अपनी समस्याओं के बारे में बता पाया।

ऑप्टिमिस्ट का मामला काफी गड़बड़ नज़र आ रहा था। इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं थी कि यह जहाज़-और उसके दो साथी जहाज़ सरकार को काफी असन्तोषजनक हालत में दिये गये थे। जिस कम्पनी ने ये जहाज़ बेचे थे उसे पिछले कुछ दिनों के अन्दर ही एक दुर्घटना का भी सामना करना पड़ा था। गोदी के इलाके में मारे गये दलाल विलियम कोक्स के इस कम्पनी से नज़दीकी सम्बन्ध थे। उसकी मौत का रहस्य किसी तरह सुलझता नज़र नहीं आ रहा था। पुलिस ने कुछ बेरोज़गार मज़दूरों को गिरफ्तार किया था। जिन्हें हड़ताल के कारण निकाल दिया गया था और जिन्होंने कुछ मूर्खतापूर्ण टिप्पणियाँ कर दी थीं। लेकिन उनके ख़िलाफ़ कोई ठोस सबूत नहीं था। *ऑप्टिमिस्ट* के डूबने के अप्रिय और दूरगामी नतीजे सामने आने का भय था। ब्राउन प्रदर्शन के तात्कालिक नतीजों की बाबत मि.पीचम की धमकियों को गम्भीरता से नहीं ले रहा था। समारोह में किसी भी प्रकार के व्यवधान से निपटने के लिए पर्याप्त पुलिस मौजूद होगी। नहीं। कोई और बात थी जो कहीं ज़्यादा गम्भीर थी।

इसके बारे मे बताते समय मुख्य इंस्पेक्टर ने अपना स्वर नीचे कर दिया।

नौकाधिकरण में संवाद टूटने के कारण उन दो जहाज़ों को, जिसमें से *ऑप्टिमिस्ट* से टकराने वाला जहाज़ निश्चित रूप से क्षतिग्रस्त हो गया था, बुलाने वाला आदेश कभी भेजा ही नहीं गया। नौकाधिकरण स्वयं इस मामले को लेकर स्पष्ट नहीं था। इसलिए ब्राउन इस उलझन में बुरी तरह फँसा था कि वह क्या करे। शायद प्रदर्शन को शुरू भी नहीं होने देना चाहिए? आखिर, पुलिस पर व्यवस्था कायम रखने की ज़िम्मेदारी है।

निश्चित रूप से पीचम ही एकमात्र मुसीबत नहीं थे, क्योंकि उन्हें आसानी से झाँसा दिया जा सकता था। लेकिन यादगारी समारोह के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने की योजना कम्युनिस्ट भी बना रहे थे। और इन प्रदर्शनों को रोका नहीं जा सकता था।

मैकहीथ ने सिगार जलाकर कहा, 'बिना पीचम के उनके पास कोई प्रमाण

नहीं है।'

ब्राउन ने धीरे-से सहमति जतायी, 'नहीं, नहीं है। वे अपने अनश्वर सन्देहों के साथ जिन्हें वे साबित नहीं कर सकते, हमेशा अपना मज़ाक बनाते रहते हैं।'

'वे नौकाधिकरण में भ्रष्टाचार की कोई कहानी गढ़ेंगे और शायद यहाँ तक कहेंगे कि रक्षा मन्त्री को स्वयं कुछ हज़ार मिले हैं! यह मज़ाकिया है!'

ब्राउन ने स्वयं सिगार निकालते हुए कहा, *'जानते हो, मुझे इन भाषणबाज़ों को देखकर बहुत गुस्सा आता है। वे हमेशा हमें कोसते रहते हैं कि हम कानूनों को पर्याप्त सख्ती के साथ लागू नहीं करते! मानो कानून उनके फ़ायदे के लिए बना हो! हर चीज़ के सही और कानूनी होने पर वे मज़ाकिया होने की हद तक ज़ोर देते हैं। अगर ऐसा कोई कानून होता जो जारी कारगुज़ारियों पर आँख मूँद लेने की ज़हमत उठाने पर कुछ हज़ार लेने के लिए हेल को छूट दे देता तो वे उस रकम के लिए हेल को नहीं झिड़कते। तब उन्हें ठगे जाने का अहसास नहीं होता। ये भी ग़ज़ब है! क्योंकि निश्चित रूप से राजनीति और व्यापार मे सबकुछ उतना सीधा नहीं होता; तमाम ऐसी चीज़ें हैं जो सामान्य करदाताओं के लिए-हम कह सकते हैं कि समझ से परे हैं। और फिर हमारे ये "स्वतन्त्रता के दूत" छोटी-छोटी चीज़ों पर विवाद करते, चीखते-चिल्लाते यह कहने लगते हैं कि स्थानीय परिषद भ्रष्ट है, पुलिस पूरी तरह निष्पक्ष नहीं है, या फिर रामजाने क्या-क्या कहने लगते हैं जो कभी साबित नहीं किया जा सकता और अधिकांशतः झूठ भी होता है! ये काले को सफेद और सफेद को काला करने का सारा काम, जो ये कीचड़ उछालने वाले करते हैं, अविश्वस्नीय है।'*

मैकहीथ ने सोचते हुए कहा, 'जो कुछ तुम कह रहे हो अगर कोई उसे लिखता तो यह भी काले को सफेद और सफेद को काला बनाना ही होगा।'

ब्राउन ने खींसें निपोर दीं, 'अविश्वस्नीय, एकदम अविश्वस्नीय!'

उन्होंने थोड़ी देर राजनीति पर बात की।

मैकहीथ ने स्वीकार किया, *'वाकई कोई ऐसी पार्टी नहीं है जो पूरी तरह मेरी हितों की नुमाइंदगी करे। मैं यह कहने की हद तक तो नहीं जाऊँगा कि संसद सिर्फ बात-बहादुरों का अखाड़ा है। वे सिर्फ कामों के बारे में बात ही नहीं करते बल्कि काम करते भी हैं। वहाँ हर तरह की चीज़ की जाती है, और जिसका नज़रिया असुधारणीय रूप से पक्षपातपूर्ण नहीं है, उसे यह मानना ही पड़ेगा। लेकिन सवाल यह है कि क्या आपातकालीन स्थितियों में संसद अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में सक्षम है। मेरी राय में जो एक मेहनती व्यापारी की राय है, हमारे देश*

की सत्ता में सही व्यक्ति नहीं हैं। वे इस या उस पार्टी के हैं और पार्टियाँ अनिवार्यतः स्वार्थी और आत्म-केन्द्रित होती हैं। उनका दृष्टिकोण एकतरफा होता है। हमें ऐसे व्यक्तियों की ज़रूरत है जो सभी पार्टियों से ऊपर, कुछ-कुछ हम व्यापारियों जैसे। हम अपने सामान अमीरों और ग़रीबों को समानता से बेचते हैं। बिना उसकी हैसियत की परवाह किये हम उसे सौ किलो आलू बेचने, उसके घर में बिजली लगवाने, या उसका घर रंगने का तैयार रहते हैं। राजसत्ता चलाना एक नैतिक दायित्व होता है। हर चीज़ इस तरह व्यवस्थित की जानी चाहिए कि एक उद्यमी एक अच्छा उद्यमी है, एक मज़दूर एक अच्छा मज़दूर है, संक्षेप में अमीर अच्छे अमीर हैं और ग़रीब अच्छे ग़रीब हैं। मेरा मानना है कि आज नहीं तो कल ऐसी सरकार आएगी। और मेरी गिनती उसके समर्थकों में होगी।'

ब्राउन ने आह भरी।

'दुर्भाग्य से अभी तक हमारे पास कोई ऐसी पार्टी नहीं है। तो अब मैं क्या करूँ?'

'क्या तुमने इस बात की जाँच की है कि हड़ताल के दौरान पुनरुद्धार के काम की बाबत क्या हो रहा था?'

'बिल्कुल। कई दिन पहले ही। पहला काम मैंने यही किया था। लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं हो रहा था।'

'ऐसा कैसे हो सकता है? निश्चित रूप से जहाज़ के कारीगरों के पास ऐसा कुछ करने की हर वजह थी, जिन्होंने कुछ ही समय पहले इतनी असफल हड़ताल की थी? मैं कभी नहीं समझ पाता कि ऐसी स्थितियों में लोग काम कैसे कर सकते हैं। वे निश्चित ही अमानवीय होंगे।'

'लेकिन अगर वे काम करते हैं, तो वे काम करते हैं।जिस जहाज़ की मरम्मत उन्होंने शुरू की हो उसे तोड़ने के बारे में वे नहीं सोचते। जानते हो, वे बिरले ही सोचते हैं। ऐसा कुछ वे कभी नहीं करेंगे।'

'लेकिन हड़ताल के ठीक बाद *मेरे* आदमी वहाँ थे। बल्कि पीचम उन्हें वहाँ ले गया।'

'तुम्हारा मतलब है कि उन्होंने...'

'बिल्कुल। वे ऐसा काम करने में नहीं हिचकिचाते। मैं बुली को यहाँ लाऊँगा।'

ब्राउन ने थोड़ी राहत के साथ पूछा, 'क्या तुम ऐसा कर सकते हो?'

मैकहीथ ने हार्दिकता के साथ जवाब दिया, 'निश्चित रूप से। तुम्हारे लिए

मैं यह काम करूँगा। और वह भी किसी रूप में तुम्हारे फैसलों को प्रभावित करने की इच्छा किये बिना। पीचम अभी भी मेरे ससुर हैं। नेशनल क्रेडिट बैंक में आखिर मेरी पत्नी का दहेज है। वहाँ मैं एक निदेशक हूँ। कीमतों में अपमानजनक कटौती के कारण उनमें जमा रकम बुरी तरह अव्यवस्थित हो गयी है। पीचम का पैसा भी गया; और पारिवारिक दृष्टि से मैं उसे अपना पैसा मान सकता हूँ। और फिर छोटे निवेशकों का पूरा समूह है, और *ऑप्टिमिस्ट* आपदा के बाद, जो खलबली वे शुरू करेंगे जब वे पाएँगे कि उनका पैसा डूब गया है, वह जहाज़ के डूबने से पैदा होने वाली देशभक्ति की लहर को बरबाद कर देगी। अपने ससुर से मुझे कोई लगाव नहीं है, लेकिन मुझे वाकई सबसे श्रेयस्कर यह लगता है कि तुम उन्हें इस कारोबार से निकल जाने दो।'

ब्राउन आधा सहमत होकर वहाँ से गया और उसने गिरफ्तार किये गये कुछ और जहाज़ कारीगरों से दोबारा पूछताछ की।

लेकिन उस रात उसकी नींद अच्छी नहीं रही और सुबह होने से पहले उसने एक सपना देखा। वह थेम्स के पुल से गुज़र रहा था। अचानक उसे कुछ सुनाई दिया-कोई गरगराहट। वह बाहर आया और दीवार पर झुका। लेकिन वह कुछ देख नहीं पाया। इसलिए वह भाग कर पीछे गया और पुश्ते से झाँक कर देखने की कोशिश की। और अब उसने पुल को भी देखा : नीचे से। किनारे से धरती का एक छोटा-सा हिस्सा उभरकर बाहर निकला हुआ था, जिसके चारों ओर कीचड़दार पानी घूम रहा था। पुल के नीचे ज़मीन के छोटे-से हिस्से पर कुछ आदमी-या काफी कुछ आदमियों जैसे लोग घूम रहे थे। उनकी संख्या आश्चर्यजनक तेज़ी से बढ़ रही थी, लेकिन यह बता पाना नामुमकिन था कि वे कहाँ से आ रहे थे; नदी उस जगह पर काफी गहरी लग रही थी। चाहे जो भी हो, उनका भारी हुजूम वहाँ मौजूद था, और अब उन्होंने झाड़ियों और ताज़ी रंगी दीवार से होकर ऊपर बढ़ना शुरू कर दिया और वे तब तक बढ़ते रहे जब तक कि वे झण्डों के ठीक नीचे पुल पर नहीं पहुँच गये। धरती का यह छोटा-सा टुकड़ा सैंकड़ों लोगों को उगले जा रहा था; एक अनगिनत धारा जो शुरू होने के बाद रुकने का नाम नहीं ले रही थी। निश्चित रूप से वहाँ पुलिस मौजूद थी; वे वहीं खड़े थे; उन्होंने पुल पर बैरीकेड लगा रखे थे; और वहाँ सैन्य टुकड़ियाँ खड़ी थीं जो गोली चलातीं; और वह रही घुड़सवार पुलिस जो....लेकिन *वहाँ* तो दरिद्रता की बाढ़-सी आ गयी थी, वह बढ़ती जा रही थी, उसकी कतारें एकदम ठोस थीं, सड़क जितनी ही चौड़ी जो पानी की तरह हर चीज़ को डुबोए जा रही थीं, बिना किसी आकार या सत्व

के, पानी की तरह हर चीज़ से होकर गुज़रे जा रही थीं। जाहिरा तौर पर, पुलिस ने उन पर हमला किया; जाहिरा तौर पर, उन्होंने अपने डण्डों के साथ हमला किया; लेकिन यह क्या? उनके वार आगे बढ़ रहे शरीरों के आर-पार होकर गुज़र गये। एक व्यापक लहर के रूप में दरिद्रता पुलिस वालों से गुज़रते हुए सोते शहर की ओर आगे बढ़ी। सैन्य टुकड़ियों पर से गुज़रते हुए कँटीले तारों और बैरिकेडों से गुज़रते हुए, पुलिस वालों की चिल्लाहट और मैक्सिम गनों की तड़-तड़ के बीच से वह शान्त और चुप गुज़रती रही। और वह कीचड़दार प्रबल धारा की तरह घरों में घुस गयी। दरिद्रता की वाहिनियाँ एक शान्त, पारदर्शी और निर्गुण मार्च करते हुए, दीवारों से गुज़रते हुए, बैरकों में घुसते हुए, रेस्तराँ में घुसते हुए, कला दीर्घाओं में से गुज़रते हुए, न्यायालयों से गुज़रते हुए.....

यह सपना ब्राउन को बाकी रात सताता रहा, इसलिए वह उठा और दफ्तर जल्दी चला गया। उसे वामपंथी अखबारों के सपने देखने से नफरत थी। लेकिन उसे यह समझ में आ गया था कि अगर वाकई सैंकड़ों घायल सैनिकों ने कोई फसाद शुरू कर दिया तो समारोह बेहतर नहीं बनाया जा सकेगा।

उसने नौकरानी को बाहर भेजा, बैठा, अपना हरे छाया वाला लैम्प व्यवस्थित किया, और सामान्य हस्तलिपि में अखबारों के लिए एक रिपोर्ट लिखी।

मि.पीचम भी अपनी डेस्क पर खड़े थे। वह अपने हाथ में कलम लिए हुए थे, दवात उनके सामने रखी थी, टोपी सिर पर पीछे की ओर सरकी हुई थी, और वह पूरी रात इसी तरह अपनी ऊँची डेस्क के सामने खड़े रहे थे। बस बीच-बीच में बेचैनी के साथ अपने छोटे-से गर्म हो चुके दफ्तर मे टहल रहे थे।

वह अखबार के लिए एक लेख लिख रहे थे जिसमें उन्होंने दलाल कोक्स के षड़यन्त्रों और नौकाधिकरण के कुछ उच्च अधिकारियों की भूमिका का खुलासा किया था।

निश्चित रूप से अगर, मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी के तौर-तरीकों पर से पर्दा उठ जाता तो पीचम को अनिवार्यतः उसके परिणामों का सामना करना पड़ता, लेकिन नौकाधिकरण के भ्रष्टाचार की ओर हल्का-सा इशारा उन परिणामों को न्यूनतम बना देने में सरकार की दिलचस्पी पैदा करने के लिए काफी था। लेकिन फिर नया व्यापार, असली व्यापार बेकार हो जाएगा!

समय-समय पर पीचम कमरे से दौड़कर जाते थे और कार्यशाला में काम की प्रगति देखकर आते थे। तख्तियों पर सावधानी से रंगाई हो रही थी, जिन

पर यह लिखा था : 'क्या हमें सिर्फ इसलिए दक्षिण अफ्रीका भेजा जाता है कि हम ट्रांसपोर्ट दानवों की जेबें भारी कर सकें?' या 'अगर तुम हमें नर्क भेज रहे हो, तो इतना तो देख लो कि हम वहाँ पहुँचते हैं या नहीं!' या '"ऑप्टिमिस्ट" के मृतक डूबकर नहीं मरे, उनकी हत्या की गई है!' और सुबह पाँच बजे वह गलियारे में घुटनों के बल बैठे रात भर काम करने वाले पेण्टरों के पास गये और उन्हें नया पोस्टर बनाने को दिया-'तूफान और कोहरे से भी बदतर है हमारे व्यापारियों का लालच'।

अब, सुबह के आठ बजे उनका 'इकबालनामा' एक लिफाफे में बियरी के घुन खाए डेस्क पर पड़ा था, और उनके आदमी ठेलों में तख्तियों को डालकर शहर के विभिन्न हिस्सों में जा चुके थे, जहाँ से वे अपना प्रदर्शन शुरू करने वाले थे।

एक घण्टे बाद उन्होंने एक अखबार में पढ़ा कि *ऑप्टिमिस्ट* में तोड़-फोड़ करने वाले कम्युनिस्टों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

उन्होंने तत्काल बियरी को और अन्य लोगों को शहर के अलग-अलग हिस्सों में प्रदर्शन को रद्द करवाने के लिए भेज दिया। फिर वह एक प्याली चाय पीने बैठे।

तो अन्ततः स्कॉटलैण्ड यार्ड के लोगों को होश आ ही गया था। वैसे भी, समाजवादी विचारों के मज़दूरों द्वारा जहाज़ में तोड़-फोड़ की घोषणा उस देशभक्ति के आन्दोलन के लिए ज़्यादा अनुकूल थी जो अब नौकाधिकरण में भ्रष्टाचार के खुलासे की जगह अखबारों में छा गया था।

अभी अन्धेरा ही था जब मिसेज़ पीचम पॉली के बिस्तर के पास आयीं। वह बिस्तर के कोने पर बैठीं और उन्होंने इस समाचार से अपनी बेटी को अचम्भित कर दिया कि उन्होंने पीचम को पॉली की अटपटी शादी पर राज़ी करने में सफलता प्राप्त कर ली है।

उन्होंने यह कैसे किया, इसका एक उद्वेलित कर देने वाला ब्यौरा दिया।

मैं उनसे कहती रही, *'इन दो युवा प्रेमियों को अलग मत कीजिये, "जिन्हें भगवान ने साथ किया है, किसी को भी उन्हें अलग मत करने दीजिये।" ज़रा सोचिये; हम भी कभी जवान और बेपरवाह थे, हालाँकि हम कुछ सीमाओं के भीतर रहे। क्या आप इस बात की ज़िम्मेदारी लेने की हिम्मत करेंगे कि आपकी बेटी प्यार के लिए तड़पते हुए अपनी जान दे दे, एक फलते-फूलते जीवन का ख़ात्मा तो बहुत दूर की बात है? एक-दूसरे से जुड़े रहने के सिवा उनकी और कोई*

इच्छा नहीं है। उन्होंने एक साथ बहुत मुश्किल दौरों का सामना किया है; लेकिन उनके प्यार की जीत हुई है और यही बात ग़ौर करने वाली है। ऐसे प्यार के बन्धन इतनी आसानी से तोड़े नहीं जा सकते। मैं जानती हूँ कि आप कोक्स को अपना दामाद बनाना चाहते थे। निश्चित रूप से, वह एक खूबसूरत आदमी था और उसके तौर-तरीके आकर्षक थे। अपनी व्यापारिक क्षमता के कारण आपकी नज़र में उसका एक स्थान था। लेकिन अब वह मर चुका है और आप उसे क़ब्र से नहीं निकाल सकते। मैकहीथ के ख़िलाफ़ अब भी आपके पास क्या बचा है? हर कोई कहता है कि वह भी उतना ही सक्षम है और काफी पैसा कमाता है। बी.शॉप के मालिकों के पास उस पर हँसने की कोई वजह नहीं है। उसके धन्धे में आलस्य का कोई स्थान नहीं हैं। वह पॉली को खुश रखेगा। मैंने उससे बात की है, वह एक शानदार पति साबित होगा। ऐसे लोग सबसे अच्छे पिता भी बनते हैं। आपने हमेशा अपनी बच्ची की खुशी के लिए सबकुछ किया है। आप जल्दी या देर में ऐसे दासों की तरह क्यों काम करते अगर यह आपकी बेटी की खातिर नहीं? आपने हमेशा यह कहा है। जब मैकहीथ ने आपको तनावपूर्ण सम्बन्धों के बावजूद वेस्ट इण्डिया डॉक्स के लिए अपने आदमियों की मदद का प्रस्ताव दिया तो उसने पारिवारिक सम्बन्धों की अपनी गहरी समझ का ही तो परिचय दिया। ऐसा करके उसने दिखलाया है कि कोई भी व्यक्तिगत मतभेद पारिवारिक कल्याण से अधिक पवित्र नहीं है। परिवार किसी भी प्रकार के नैतिक जीवन का एकमात्र आधार है, कोई भी आपको यह बता देगा। और परिवार का आधार प्यार है। अगर परिवार न हो तो लोग एक-दूसरे को ही खा जाएँगे, और मनुष्यों का व्यवहार एकदम बेतुका हो जाएगा। और सारी बात एक तरफ, यह याद रखना चाहिए कि जैसा इंसान करना और बनना चाहता है हमेशा वैसा कर और बन नहीं पाता-और धर्म के अनुसार परिवार को सवालों से परे रखा जाना चाहिए। इसी वजह से परिवार एक भरोसेमन्द आश्रय है-और कोई औरत उस पहले आदमी को नहीं भूल सकती जिसे उसने चाहा है। यह पहली नज़र का प्यार था, और यह एकदम सीधी-सी बात है। एक काम और करिये पीचम। हमारी पॉली उन लड़कियों में से नहीं है जो अपने माता-पिता की दुआओं के बिना कभी पूरी तरह खुश रह पाए!'

जो कुछ मिसेज पीचम ने कहा, उससे काफी उद्वेलित होकर उन्होंने वादा किया कि वह मामले की सुनवाई के दौरान कोर्ट में आएँगी।

दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने कहा 'तुम्हे फैसले के बारे में चिन्ता करने की

ज़रूरत नहीं है, तुम्हारे पापा उसको सम्भाल लेंगे।'

ठीक उसी समय पीचम नाश्ते की टेबल से उठे थे और खिड़की की तरफ बढ़ रहे थे।

अभी अन्धेरा ही था, लेकिन बाहर सड़क पर सफेद कोहरे की एक मोटी दीवार थी। उनको इस बात का अन्देशा था कि बियरी के लिए समय पर उन प्रदर्शनकारियों तक पहुँच पाना मुश्किल था जो भयानक पोस्टर अपने साथ लेकर गये थे।

15

और ऐसे आया सुखद अन्त,
झगड़े निपटे, ग़लतियों की हुई सुनवाई,
अगर आपकी पूँजी पर्याप्त है,
तो ज़्यादातर अन्त भला ही होता है।

कर्णधार ने जलते घरों पर थी आग तापी
फिर दूसरे ने दी थी कानून की धमकी।
अब देखो वे भाइयों की तरह जीते हैं
ग़रीबों की रोटी के अन्तिम टुकड़ों पर।

इसलिए, कुछ हैं अन्धेरे में;
कुछ हैं रोशनी में, और यह
आप देख सकते हैं, लेकिन वे सभी,
जो हैं अन्धेरे में, उन्हें कुछ नहीं दिखता।

(ड्राइग्रॉशेन फिल्म)

बहाना

उस सुबह आठ बजे पॉली अपनी माँ के साथ जेल गयी। सड़क पर घना कोहरा छाया हुआ था।

जब वह कोठरी में घुसे जहाँ गैस अभी भी जल रही थी, तब तक मैकहीथ ने अपना नाश्ता ख़त्म नहीं किया था, लेकिन कमरा व्यापारियों से भरा हुआ था। क्रेस्टन वहाँ था, और मिलर और ग्रूच भी थे। अपने मुँह के कोनों पर मोटी सिगार दबाए, वे कॉमर्शियल बैंक के ख़िलाफ़ युद्ध के अन्तिम ब्यौरों पर चर्चा कर रहे थे।

मामले को जल्दी से किसी नतीजे पर पहुँचाना था, क्योंकि नेशनल क्रेडिट बैंक में दो बजे एक बैठक की व्यवस्था पहले ही कर दी गयी थी। हॉथॉर्न ने मेसर्स आई.आरों और जैक्स ऑपर को इस बैठक में आमन्त्रित करते हुए एक पत्र लिखा था। पत्र कुछ इस प्रकार था, मि.मैकहीथ नेशनल क्रेडिट बैंक के निदेशक मण्डल में शामिल हो गये हैं। वह दोनों सज्जनों को कीमतों में कमी की उस महामारी ख़ात्मे पर कुछ सुझाव देना चाहते हें, जिसने हाल ही में खुदरा व्यापार को अपनी गिरफ्त में ले लिया है।

मैकहीथ को इस बात का भरोसा था कि वह दो बजे नेशनल क्रेडिट बैंक पहुँच जाएगा। वह ख़ामोशी से उम्मीद कर रहा था कि सुनवाई के बाद इतनी जल्दी यह ख़बर उसके विरोधियों तक नहीं पहुँचेगी कि वह सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड का अध्यक्ष है।

इन दोनों महिलाओं के आगमन ने बैठक का समापन कर दिया।

पॉली ने एक सामान्य काली पोशाक पहन रखी थी जो वह उस दलाल के अन्तिम संस्कार में पहन चुकी थी। सुनवाई के बाद वह और उसकी माँ *ऑप्टिमिस्ट* हादसे के शिकार लोगों की यादगारी सेवा में जाना चाहती थीं।

मैकहीथ अपनी सास को देखकर प्रत्यक्ष रूप से अचम्भित था। उसने सभी से उनका परिचय कराया और सभी लंदन के कोहरे के बारे में बात करने लगे।

इस बीच मैकहीथ अपनी पत्नी को कोठरी के कोने में ले गया जहाँ उसका नाश्ता अभी भी उसका इंतज़ार कर रहा था।

पॉली ने धीरे से उसे उसके पिता के उसके प्रति रुख में बदलाव की सूचना दे दी।

मैकहीथ ने सिर हिलाया। वह अभी भी इस बाबत पूरी तरह से साफ़ नहीं हो पाया था कि दलाल कोक्स के खून में पॉली की क्या भूमिका थी। तब से उसे रेडी से यह पता चल चुका था कि कोक्स को जाइल्स ने मार गिराया था और कोक्स का जाइल्स से क्या लेना-देना था जिसे सिर्फ ओ'हारा ही भेज सकता था? क्या पॉली को इस तलाक के मुकदमे में कोक्स के गवाह के रूप में पेश होने से कोई दिक्कत थी? और अगर ऐसा है, तो ओ'हारा पर उसका इतना अधिकार कैसे था?

असल में, पॉली के निजी मामलों की इतनी करीबी से जाँच करने का मैकहीथ का कोई इरादा नहीं था। न ही उसने गर्भपात के बारे में पूछा। यह स्वयं पॉली थी जिसने यह विषय छेड़ा।

अपने गुलाबी चेहरे पर प्रसन्नता के भाव के साथ, जो काली पोशाक से और भी खिल रहा था, उसने बताया कि किस तरह एक सिनेमा देखने के कारण उसने और उसकी माँ ने ऑपरेशन न कराने का निर्णय किया। उस पारिवारिक कहानी के गहरे प्रभाव के कारण ही वह *एक पनपते नये जीवन के विरुद्ध पाप* करने से बच गयी। परदे पर उस नन्हें से जीव का चित्र उसके दिलो-दिमाग पर छा गया था।

उसने कहा, 'कभी नहीं, उसके बाद भी अगर मैं डॉक्टर के पास जाती तो एक अपराधी के समान अनुभव करती। तुम्हें यह समझना ही होगा मैक, कि मुझसे यह नहीं होगा।'

पॉली के लिए यह निराशाजनक था कि वह मैकहीथ को सबकुछ नहीं बता सकती थी। उसने हमेशा ही उसे सच बता दिया होता लेकिन यह असम्भव था।

'मिसाल के तौर पर, ओ'हारा के साथ चक्कर की बात को ही लिया जाय। अगर उसे कभी इसके बारे में पता चला तो वह भयंकर होगा। वह सोचेगा कि मैंन उसे धोखा दिया है। वह कभी यकीन नहीं करेगा कि मैं उसकी ख़ातिर चुप रही। वाकई, अगर मैंने उसके सामने हर बात स्वीकार कर ली तो वह मेरे बारे में बिल्कुल ग़लत राय बना लेगा। उसे लगेगा कि उसकी पत्नी ऐसी है जिस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। जो काफी ग़लत होगा। वह मुझे लेकर इतना अविश्वासी है कि मैं उसे सच नहीं बता सकती। और औरतों के बारे में उसकी राय ख़राब है। यह बहुत मुश्किल है।'

मैकहीथ ने वादा किया कि वह मौक़ा मिलते ही वह फिल्म देखेगा, और फिर उसने नाश्ता खाना शुरू कर दिया। उसने उबले अण्डे से शुरुआत की। बीच-बीच में वह बता रहा था कि भविष्य में वह अपनी दुकानें किस तरह चलाने के बारे में सोचता है। उसने बहुत-सी समझ-बूझ वाली बातें कहीं लेकिन पॉली अधिकांश समय यह देख रही थी कि मैकहीथ अण्डा कैसे खा रहा है। उसे बहुत कुछ सीखने को मिला और बाद में एक व्यापारी महिला के रूप में जो भी जानती थी-और वह काफी कुछ जानती थी-वह उन कुछ मिनटों में ही सीखने को मिला था, जब वह अपने पति को एक अण्डा खाते हुए देख रही थी। वह शहर के छोटे धन्धों, और दुकानों के बारे में बोला, और अण्डा भी उसके मोटे-मोटे हाथों में छोटा ही था। लेकिन उसने उसे कितनी नरमी के साथ पकड़ा था! वह आधा उबला अण्डा था। साढ़े चार मिनट तक। अगर उसे थोड़े कम समय के लिए उबाला जाता तो वह एक बहने लगता और थोड़ी देर तक उबाला जाता तो ज़्यादा सख्त हो जाता।

छोटी दुकानों के मामले में भी आपको इंतज़ार करना आना चाहिए, लेकिन किसी भी कीमत पर सही पल गँवाया नहीं जाना चाहिए। पकाना भी एक ऐसी निष्क्रियता है जो अत्यधिक आत्मनियंत्रण की माँग करती है। लेकिन यह एक सक्रिय गतिविधि भी है। एक समझदार खानसामा उन साढ़े चार मिनटों में कुछ और पकाना भी शुरू कर सकता है; आखिर एक अण्डा कोई आहार थोड़े ही है! मैकहीथ ने अण्डे के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, उसने बस उसे खाया। जिस तरह उसने पहले चम्मच से अण्डे के खोल पर चोट की, फिर उसका छिलका उतारा और उसके बाद उसके सफेद हिस्से को गोलाई में काटा, सबकुछ एकदम तर्कपूर्ण लग रहा था। फिर बारी थी एक विचारपूर्ण लेकिन शक्तिशाली चोट की जिससे चम्मच भर गया : और अब अण्डे का अन्दरूनी हिस्सा आँखों के सामने खुला पड़ा था। इस बात की सावधानी बरतनी पड़ती है कि चम्मच बाहर निकालने के बाद ज़र्दी का जो हिस्सा उस पर न रुके, वह कम-से-कम खुल चुके अण्डे पर ही गिरे। चम्मच को झटके से घुमाया गया, और नमक का एक छोटा-सा पहाड़ उसके ढेर से उठा और उसे सावधानी से अन्दर छिड़क दिया गया! इस तरह अण्डे का मालमत्ता और भी स्वादिष्ट बना दिया गया। चम्मच के हर घुमाव से ज़र्दी के साथ सफेदी का भी एक हिस्सा साथ में उठता था। बाँया हाथ सहायता करता था : वह अण्डे को चम्मच की तरफ घुमाकर रखता था। ऐसे तरीके से सफलता की *ही* तरफ ले जाते हैं; कुछ भी छूटता नहीं! अण्डे को उठाया गया, पकड़ा गया, क्षैतिज दिशा में थोड़ा घुमाया गया, और फिर उसके अन्दर देखा गया। फिर भी शीर्ष अभी बाकी था। इस पूरे उद्यम की शुरुआत में वह सावधानी के साथ अण्डे के पीछे तश्तरी में रखा था; अब अचानक ग़ायब होकर वह चम्मच में भरा हुआ था।

पॉली अचम्भित होकर यह सब देख रही थी; ऐसे नज़ारे हर जगह देखने को नहीं मिलते। शुरुआत से ही मैकहीथ के चेहरे पर गहरे ध्यान केन्द्रण का एक हद तक चिन्ता का भाव था। ऐसा लग रहा था मानो कि उसे इस एक अण्डे से ही अपना भरण-पोषण करना है, मानो इसी अण्डे को उसकी सारी शारीरिक आवश्यकताएँ पूर्ण करनी हैं, जो निश्चित तौर पर कोई आसान काम नहीं! वह निरन्तर अण्डे को देखता, और फिर अपने बेढंगे बड़े हाथ को और फिर अण्डे को। और शायद अण्डा ख़त्म हो जाने के बाद खाली छिलकों पर सकी चिन्तामान निगाह का यही कारण था। उसने कोई शिकायत नहीं की; न ही कोई आह भरी; लेकिन फिर भी सब ख़त्म हो चुका था और अगर कुछ बचा था कि यह फिक्र

कि इस अण्डे का वांछित प्रभाव होगा या नहीं।...और दो सेकेण्ड बाद उसने अण्डे के छिलके को बेपरवाह तरीके से प्लेट पर फेंक दिया (लेकिन हमेशा काम आने वाले उपकरण चम्मच को उसने धीरे से और करीने से प्लेट पर उसकी जगह पर रख दिया!) और फिर बिना किसी प्रत्यक्ष अफसोस के साथ, वह तटस्थता के साथ टेबल से हट गया।

वह काफी शान्त था। आसन्न सुनवाई शुद्ध रूप से एक औपचारिकता मात्र थी। ओ'हारा को लेकर भी उसे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह आदमी के कॉमन सेंस में भरोसा कमरता था, जिसके कारण वह हत्या के लिए उकसाने के अपराध पर मुकदमे का सामना करने की बजाय चोरी के आरोप अपने सिर ले लेगा। जैसा कि एक सुरक्षित पूर्वानुमान कहता है, उसके निजी मामलों ने उसके व्यापारिक जीवन को ख़त्म कर दिया।

रिगर आया। अदालत जाने का समय आ गया था।

मैकहीथ तैयार हुआ। क्रेस्टन और मिलर चले गये। वे नेशनल क्रेडिट बैंक में दोपहर की बैठक की तैयारी करना चाहते थे।

मैकहीथ ने समय पर पहुँचने का वादा किया।

अदालत कि रास्ते पर रिगर ने लाफर्स के बारे मे ंकुछ कहानियाँ सुनाईं, जो मैंकहीथ के मुकदमे की सुनवाई कर रहा जज था।

वह मजिस्ट्रेट ब्रूयली की तरह नहीं था जो साल में ग्यारह महीने धुत रहता था, और एक महीने होश में रहता था, जब वह स्कॉटलैण्ड में छुट्टियों में मछली पकड़ रहा होता था। उन चार हफ्तों के दौरान वह एक बूँ भी नहीं छूता था, क्योंकि उसका कहना था : मछलियाँ आसानी से अपने आपको फँसने नहीं देतीं; वे भी एक-दो चीज़ें जानती हैं, न्याय में श्उनकी आस्था नहीं होती।

लाफर्स पीता नहीं था। वह अव्वल दर्जे का न्यायविद था और उसमें ध्यान-केन्द्रण की बेजोड़ शक्तियाँ थीं। परिणामतः अगर कोई उसके मन की बात भी बोल दे तो भी वह घबराता नहीं था; उसके मानसिक प्रशिक्षण ने उसे कुछ भी न सुनने की शक्तियों से लैस कर दिया था। जब वह अदालत में आया तो वह पूरी तरह तैयार था। वह मामले के कानूनी पहलू से अच्छी तरह वाकिफ़ था और स्वयं को भ्रमित होने नहीं देता था।

रिगर ने समझाया, 'जज को मामला हमेश उस रोशनी से बिल्कुल अलग रोशनी में दिखता है जिसमें इसे साधारण इंसान देखता है। साधारण आदमी वहाँ खड़ा होकर बेतुकी बातें करता है और कहता है कि वह बेकसूर है और कुछ इस

तरह सोचता हैः मैं इस गिरफ्तारी में डटा नहीं रह पाऊँगा; या : इस बीच भूख से मरता मेरा परिवार क्या कर रहा है? या : काश उस समय मेरी चाची के सामने मेरे साथ कोई गवाह होता! जज केवल मामले का फैसला करता है। उसके दिमाग़ में *इसके* सिवा और कुछ नहीं होता, और इसलिए वह हमेशा आरोपी साधारण आदमी से बेहतर स्थिति में होता है।'

अदालत अच्छी-खासी भरी हुई थी। अखबारी हमलों का प्रभाव ख़ासा कारगर था।

और एकदम पीछे, लेकिन इस तरह कि रिगर ने उसे फौरन देख लिया, आरों बैठा था। उसने बीच के गलियारे में बाहर की और की एक सीट हथिया ली थी। उसने अपना हैट अपने पीछे जमीन पर रखा था और घबराहट के साथ अपना नाक-पकड़ चश्मा साफ़ कर रहा था। उसके पीछे उसका गुप्त क्लर्क मि.पावर बैठा था।

अदालत के अधिकांश हिस्से में बी.शॉप मालिक बैठे हुए थे।

चूँकि उस आधिकारिक रूप से हत्या का मुकदमा चल रहा था, इसलिए मैकहीथ उनके बीच काफी अलोकप्रिय हो गया था। ग्रूच जो उनकी ऐसी सभा के साथ बैठा था जो उसे नहीं जानती थी, लगातार यही सुन रहा थाः

'मैंने सुना है कि वह काफी सादा जीवन जीता है, बहुत कम सिगरेट पीता है, और शराब तो बिल्कुल नहीं पीता। किसी ने तो मुझे यहाँ तक बताया है कि वह शाकाहारी है। यह कहा जाता है कि व्यक्तिगत रूप से वह एकदम निर्दोष है और पूरी तरह अपने आदर्शों पर जीता है। जाहिरा तौर पर, इसका मतलब है कारोबार में होने वाले अच्छे सौदों से मुँह फेर लेना। हमेशा यह कहा जाता था कि उसके आस-पास मौजूद लोग बुरा प्रभाव डालते थे। लेकिन अब, जबकि उस पर इन अपराधों का आरोप लगा है, तो मेरी आँखें खुल गयी हैं।'

अच्छे लोग काफी उत्साहित थे। यह बात बाहर निकल आयी थी कि अदालत ने सुनवाई से पहले कोई भी बहाना सुनने से इंकार कर दिया है। हर किसी का मोटे वैली में काफी भरोसा था जिसे वह इशारा कर-करके एक-दूसरे को दिखा रहे थे।

मैकहीथ काले सूट में आया।

वहाँ ऐसे लोग भी थे जो प्रत्यक्ष रूप से सुनवाई के बाद सीधे यादगारी सभा में जाने का इरादा रखते थे। इन लोगों के काले कपड़ों से ऐसा प्रभाव आ रहा था, जैसे कि वे बस रास्ते से, थोड़ी देर के लिए यहाँ आ गये हैं।

सुनवाई शुरू होने में थोड़ी देर हुई। लाफर्स को कई अन्य जगहों पर भी उपस्थित होना था। इस बीच, रक्षा पक्ष के एक वकील ने आरोपी को कागज़ों का एक बण्डल पकड़ा दिया जिसे वह फौरन तेज़ी से पढ़ने लगा। लोगों का लगा कि वे मामले से जुड़े कागज़ात हैं लेकिन दरअसल वे मिलर द्वारा भेजे गये कागज़ात थे जिनमें बैठक का नवीनतम एजेण्डा था।

वैली रिगर और विद के पास गया और उसने उन्हें एक ब्रीफकेस दिया, इस दौरान सारी निगाहें वैली का ही पीछा कर रही थीं। विद ने उसे दिलचस्पी के साथ लिया और उसके दस्तावेज़ों को देखने लगा। फिर वह और रिगर अपने मुवक्किल के पास उसे यह दस्तावेज़ दिखाने गये। लेकिन मैकहीथ अपने कागज़ात में डूबा हुआ था और उसने हाथ से इशारा कर उन्हें वापस भेज दिया। कागज़ात में यहाँ-वहाँ सुधार करते हुए एक कान से उसने अपने वकीलों की बात सुनी और जब वे चुप हो गये तो बस अचम्भे में सिर हिलाया।

आखिरकार, लाफर्स अपने विग, रोएँदार चौपाए और अपने सिन्दूरी रंग के लबादे में सजा-धजा अदालत में घुसा। जज की कुर्सी पर बैठने के साथ ही एक चुप्पी छा गयी।

वह स्पष्टतः पूरे मामले को महज़ औपचारिकता के साथ देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो कि वह सिर्फ इसलिए वहाँ बैठा था कि उसके पास कोई और चारा नहीं था।

वैली ने तत्काल आरोपी को गवाहों के कठघरे में बुलाया। मैकहीथ ने सवालों का जवाब संक्षेप में और बेपरवाही के साथ दिया। रक्षा पक्ष को कोई सवाल नहीं पूछना था।

अन्य गवाहों में, जब फ्यूकूम्बी को बुलाया गया तो पता चला कि वह अदालत में नहीं है। वैली इस बात से काफी नाराज़ दिखा। फ्यूकूम्बी ही वह व्यक्ति था जिसमें उसे दिलचस्पी थी और वह मौजूद नहीं था।

फिर विद उठा और उसने एक लम्बा-सा भाषण शुरू कर दिया।

उसने बोलना शुरू किया, 'माई लॉर्ड और जूरी के भद्रजनो, मि.मैकहीथ के खिलाफ अभियोजन पक्ष की पूरी दलील का आधार मि.मैकहीथ का यह बताने से इंकार करना है कि वह उस समय कहाँ थे जब बेचारी मैरी सॉयर की मौत हुई। अगर यह बात बता दी जाय-और मि.मैकहीथ ने यह सूचना न देने के लिए स्वयं को बाध्य पाया है-तो अभियोजन पक्ष के पास कोई दलील नहीं होगी। उस सूरत में, चाहे मैरी सॉयर ने आत्महत्या की हो या उनका खून हुआ हो, उनकी मौत में

मि.मैकहीथ का कोई हाथ नहीं होगा। अपने आप में, यह मामला अभियोजन पक्ष के लिए पूरी तरह विश्वस्नीय नहीं है। एक व्यापारी और बैंकर मि.मैकहीथ को अपनी ही एक कर्मचारी की मौत से क्या हासिल होगा? मजिस्ट्रेट के सामने पूछताछ के दौरान उन धमकियों का ज़िक्र किया गया था जो इस औरत ने कथित तौर पर मि.मैकहीथ को दी थीं। असल में, यह धमकियाँ उसने दी थीं-*रिफ्लेक्टर* के कार्यालय में। और सम्पादकों ने क्या किया? वे उस पर हँसे! और ऐसी धमकियों को शान्त करने के लिए मि.मैकहीथ भला अपनी उंगली भी क्यों उठाएँ, जो बस लोगों को हँसाती हैं? लेकिन मैं इस बात पर अटकूँगा नहीं। मि.मैकहीथ के पास इस सवाल का एक बिल्कुल निरुत्तर कर देने वाला और अखण्डनीय जवाब है कि वह 20 सितम्बर की शाम कहाँ थे, और इससे यह साबित होता है कि इस सम्भावित हत्या में उनका हाथ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। माई लॉर्डशिप, मैं यहाँ सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड की एक बैठक का कार्यवृत्त पेश करने की गुज़ारिश करता हूँ जिसमें मि.मैकहीथ ने भाग लिया था-अध्यक्ष के रूप में।'

विद ने जज को दस्तावेज़ दिये।

'इसके गवाहों के रूप में मैं सी.पी.बी. के यहाँ मौजूद उन सदस्यों को बुलाऊँगा जिन्होंने इस कार्यवृत्त पर दस्तख़त किये हैं। वे इस बात की पुष्टि करेंगे कि मि.मैकहीथ ही वह व्यक्ति हैं जिन्हें कुछ व्यापारिक वजहों से इस कार्यवृत्त में "मि. एक्स" कहा गया है।'

जिस दौरान जज दस्तख़त करने वाले लोगों के नाम दर्ज़ कर रहा था, और जब ब्लूम्सबरी, फैनी क्राइस्लर, विद और रिगर गवाहों के कठघरे में जा रहे थे, तो अदालत में थोड़ी हलचल होने लगी थी। दो सज्जन उठे और बाहर के रास्ते की और जाने लगे।

एक सज्जन ने दूसरे सज्जन से कुछ तेज़ ही आवाज़ में कहा, 'मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यही वह बैठक थी जब पत्र लिखा गया था, और जिसके बाद हमें रेज़र-ब्लेड मिलने बन्द हो गये थे। और मैकहीथ अध्यक्ष है।'

शेष उपस्थित लोगों की तरह ही मैकहीथ ने भी इस धमाके पर ग़ौर किया था। वह थोड़ा परेशान हुआ।

जज बुदबुदाया, 'यहाँ एक और नाम है जो "ओ'हारा" जैसा लग रहा है। क्या यह जनाब भी यहाँ मौजूद हैं?'

मैकहीथ थोड़ा घबराया-सा उठा और उसने तेज़ी से कहा :

'उसे सी.पी.बी. के अध्यक्ष के रूप में मेरे द्वारा दी गयी सूचना पर गिरफ्तार

कर लिया गया है। उसके ख़िलाफ़ सुनवाई मेरी हिरासत के दौरान ही हुई।'

फिर से बैठते हुए, उसने बेचैनी के साथ उस दरवाज़े की तरफ देखा जिससे महान आरों ग़ायब हो गया था।

फिर फैनी क्राइस्लर, ब्लूम्सबरी और दोनों वकीलों ने कसम खाकर गवाही दी कि कार्यवृत्त में जिस सज्जन का ज़िक्र किया गया है वह मि.मैकहीथ ही हैं।

इसके बाद विद फिर खड़ा हुआ। उसने हाथ में वह ब्रीफकेस पकड़ रखा था जो वैली ने उसे सुनवाई की शुरुआत में दिया था।

उसने बेपरवाह अन्दाज़ में कहा, 'असली हत्यारे को सामने लाना मेरे मुवक्किल की ज़िम्मेदारी नहीं है। लेकिन चूँकि मि.मैकहीथ इस बात के इच्छुक हैं कि उनकी कर्मचारी की मौत की गुत्थी अन्ततः सुलझनी चाहिए, इसलिए मैं अदालत के सामने कुछ दस्तावेज़ पेश करूँगा जिससे मैरी सॉयर के सम्भावित हत्यारे का पता चल सकता है।'

उसने कागज़ात का एक बण्डल बीच में रखी टेबल पर फेंका और स्पष्ट रूप से थक कर बैठ गया।

जनता शोर के साथ उठी और अपनी बातचीत फिर शुरू कर दी। इस बीच मैकहीथ बार-बार अपनी घड़ी देखता रहा। बेशक वह काफी घबराया हुआ था।

जूरी जैसे ही उसकी रिहाई पर फैसला करने के लिए उठी उसके तत्काल बाद वह उठा और बाहर चला गया, और उसके पीछे एक पुलिस अफसर भी गया। प्रत्यक्ष रूप से वह गलियारे में पत्रकारों से बात करना चाहता था। पॉली से कुछ शब्द फुसफुसाकर कहने के बाद वह अखबार के लोगों के एक झुण्ड को पास के एक ख़ाली कमरे में ले गया।

पुलिस वाले को कैदियों को पत्रकारों को बराबरी पर सम्बोधित करते देखने की आदत थी और उसने कोई ख़ास ध्यान नहीं दिया।जब सारे पत्रकार कमरे में चले गये तो उसने कमरा बन्द किया और गलियारे में चल पड़ा।

किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। बिना हैट के अपने माथे से पसीने की बूँदें पोछते हुए वह दौड़ते हुए सीढ़ी से नीचे उतर गया।

नीचे दरवाज़े के बाहर पॉली इंतज़ार कर रही थी।

पहले उसे स्कॉटलैण्ड यार्ड जाना था और फिर नेशनल क्रेडिट बैंक।

जैसे ही वह पॉली के साथ गाड़ी में चढ़ा वैसे ही ग्रूच उनके पीछे भागता हुआ आया। वे स्कॉटलैण्ड यार्ड की ओर चल पड़े। लेकिन उनकी रफ्तार धीमी ही थी क्योंकि कोहरा काफी घना था।

कॉमन सेंस की विजय

जब पीचम अपने छोटे-से दफ्तर में बैठकर *रिफ्लेक्टर* के लिए वह लेख लिख रहे थे जिसमें उन्होंने अपने इस सन्देह को स्वर दिया था कि *ऑप्टिमिस्ट* के डूबने में *विध्वंसक तत्वों* का हाथ है, उस समय वह शहर के विभिन्न हिस्सों में मौजूद अपने आदमियों से सम्पर्क करने का भी प्रयास कर रहे थे। उनके कुछ सन्देशवाहक वापस आ गये; मुलाकात वाली जगहों पर उन्हें कोई नहीं मिला। बाकी बिल्कुल ग़ायब थे।

दोपहर आते-आते पीचम का धैर्य जवाब दे गया और वह स्कॉटलैण्ड यार्ड की तरफ निकल पड़े। उन्होंने पाया कि चीफ इंस्पेक्टर पहले से ही यादगारी समारोह में जाने के लिए तैयार था। लेकिन उसे उस जाँच-पड़ताल से बुलाकर लाना पड़ा जिसे वह चला रहा था।

पीचम ने उसे बताया कि भयंकर तख़्तियों और बैनरों के साथ सैंकड़ों घायल सैनिकों का एक प्रदर्शन उनके नियंत्रण से निकल गया है। अतीत के अनुभव से यह नतीजा निकाला जा सकता है कि एक अच्छी-खासी भीड़ इन प्रदर्शनकारियों में शामिल हो जाएगी जो सेण्ट पॉल्स की तरफ बढ़ रही है।

पीचम आपा खोते हुए बोले, 'आपको उन्हें गोली से उड़ाना होगा! वे बस लुच्चे-लफंगे हैं, बेरोज़गारों का करकट! मैं आपको एक सूची दे सकता हूँ, उन लोगों में पुराने बदमाश शामिल हैं! अपनी तख़्तियों पर उन्होंने यह सवाल पूछा है कि *ऑप्टिमिस्ट* के उनके साथियों के साथ क्या हुआ और इस युद्ध का क्या लाभ है। आपको उन्हें गोली से उड़ाना *ही* होगा! उनके सवालों का कोई जवाब नहीं दे सकता, उन्हें उड़ा देना होगा।'

ब्राउन के हाथ-पाँव फूल गये।

उसने सभी मुलाकात की जगहों की जानकारी ली और निकल गया।

घबराहट में पीचम नेशनल क्रेडिट बैंक के लिए निकल पड़े।

ब्राउन के निकलने के ठीक बाद मैकहीथ उसके दफ्तर पहुँचा।

चीफ इंस्पेक्टर को एक सम्मेलन से ढूँढकर निकालना पड़ा। इस बीच बैंकर की ओ'हारा से कुछ बात हुई थी जो हथकड़ी लगे हाथों पर अपनी हैट रखे एक कोने में उकड़ू बैठा हुआ था। एक पुलिस वाला उसके इस या उस और खड़ा था। ब्राउन द्वारा उसकी पूछताछ में पीचम के आगमन से व्यवधान पड़ा था।

ओ'हारा बिल्कुल शान्त, लगभग खुश लग रहा था। वह प्रसन्नतापूर्वक ही बोला भी :

'अब मैं तुम्हारे अपराध स्वीकार कर लूँगा मैक। मैं तुम्हारे दिमाग़ से एक बोझ हटा दूँगा। जब मैं सबकुछ बता दूँगा तो तुम बेहतर महसूस करोगे।'

मैकहीथ से परिचित पुलिस वाला मैकहीथ के इशारे पर वहाँ से चला गया।

'तुम ज़्यादा समझदार नहीं हो ओ'हारा। तुम्हें फाँसी से बचाने के लिए हमारे पास कुछ मिनट बाकी हैं। और तुम्हें बस बेमतलब की बातें करनी हैं। मैंने अपने दोस्त ब्राउन से कह दिया है कि वह जाइल्स को जाने दे, ताकि वह यह न बता सके कि उसे कोक्स को मारने के लिए किसने पैसे दिये। तुम समझ रहे हो न?'

'एकदम अच्छी तरह से। और मैं जेल में सड़ूँ।'

'हम जितनी रसीदें खोज सकते हैं, खोज रहे हैं। *मेरी* तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है; बल्कि बात इसके उल्टी है। लेकिन बस बात इतनी सी है कि *किसी* को तो इल्ज़ाम अपने सिर लेना ही होगा। मेरे बिना तो काम नहीं चलेगा, मेरे बिना सब बिखर जाएगा। लेकिन मैं भी तो अन्दर रहा हूँ। *उसी चीज़* के लिए।'

'और उसके लिए छः साल की जेल? तुम्हारी ज़िन्दगी के लिए तो कभी नहीं! मैं भी अपना छोटा-सा खेल खेलूँगा। तुमको मरते देखने के लिए फाँसी चढ़ा जा सकता है।'

'मुझे "मरता" तो नहीं देख पाओगे, जैसा कि तुम्हें लगता है। मेरे ख़िलाफ़ कोई कुछ भी साबित नहीं कर सकता, तुम भी नहीं। अगर तुम अपराध स्वीकार नहीं करते तो बस धन्धे का ही नुकसान होगा। और तुम्हारी कैद छः साल नहीं होगी। ज़्यादा से ज़्यादा चार साल की हो सकती है। तुम्हें बस ज़्यादा नहीं, बस दस या बारह चोरियों का अपराध स्वीकार करना होगा। बाकी के लिए तुम्हें रसीदें दे दी जाएँगी। शहर का हमारा दफ्तर तुम्हारी मदद करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। तुम यह कह सकते हो कि बस पिछले कुछ महीनों से तुमने ग़लत रास्ता अख़्तियार कर लिया था।'

'जब तुम नहीं थे, हैं?'

'हाँ, जब मैं नहीं था। और यह सिर्फ तुमने दया के कारण किया। तुम्हें दुकानों को लेकर काफी अफसोस हो रहा था। तुमसे उनका दुख और नहीं देखा जा रहा था। कभी तुम भी उनमें से ही एक हुआ करते थे। कुछ मामलों में तो यह ज़िन्दगी और मौत का सवाल था। और सस्ते सामानों को पहुँचाना तुम्हारे लिए एक सम्मान की बात थी। बी.शॉप्स लन्दन में सबसे सस्ते सामान बेचती है।'

'तो मुझे ये सब कहना है?'

'इससे तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा। तुम्हें समझदारी से काम लेना चाहिए और हर चीज़ को व्यापार की रोशनी में देखना चाहिए। लेकिन अब तुम जल्दी अपना मन बना लो, मुझे जाना है।'

ब्राउन अन्दर आया।

बातचीत नये सिरे से शुरू हुई। वह एक घण्टे से अधिक समय तक चलती रही। ओ'हारा ने फिर से चिल्लाना शुरू कर दिया। उसने कहा कि मैकहीथ ने लन्दन के-यहाँ तक कि दुनिया के सबसे बेहतरीन गिरोहों में से एक को तबाह कर दिया। अब वह एकदम बिखर गया है। और वह, यानी ओ'हारा, उसके चेहरे से नकाब को उतार फेंकेगा।

लेकिन फिर ओ'हारा थोड़ा समझदार बन गया। अन्ततः बातचीत ज़मीन पर आ गयी। ओ'हारा दो या तीन से ज़्यादा चोरियाँ स्वीकार नहीं करना चाहता था। पाँच पर उनका समझौता हुआ। मैकहीथ ने बाकी के लिए रसीदें देने का वादा किया।

अन्त में उन्होंने हाथ मिलाया।

मैकहीथ ने कहा, 'तुम्हे जो भी लगे ओ'हारा, यह कॉमन सेंस की विजय है। तुम और कोई फैसला ले ही नहीं सकते थे। लेकिन इस समाधान से मुझे अप्रसन्नता हो रही है। आज रात तुम्हें मुझसे अधिक चैन भरी नींद आएगी।'

मैकहीथ कुछ और देर ब्राउन के साथ रहा। उसने उसे एक छोटा, बन्द लिफाफा थमाया।

'मैं अपना कर्ज़ चुकाता हूँ,' उसने हार्दिकता से कहा और फिर खुशी के साथ जोड़ा : 'मेरे प्यारे फ्रेडी, मुझे इजाज़त दो कि आज के जश्न में मैं तुम्हारी दयालुता के बदले तुम्हें ये छोटा-सा नज़राना दूँ।'

ब्राउन ने लिफाफा खोला और अपने पुराने दोस्त और हमराही को भावनाओं के उद्वेग में गले से लगा लिया।

उसने अपने साफ़, ईमानदार निगाह से मैकहीथ को देखते हुए कहा, 'मैं इसे स्वीकार करता हूँ और मैं इसे रखूँगा, क्योंकि हम दोस्त हैं। कोई और बात या वजह नहीं, मुझे उम्मीद है तुम समझ रहे हो, मैक!'

ग्रूच और पॉली के साथ सड़क पर आने पर मैकहीथ को लगा कि कोहरा और घना हो गया है।

कोहरा

नेशनल क्रेडिट बैंक के सम्मेलन कक्ष में आठ सज्जन इंतज़ार कर रहे थे।

एक कोने में एक समूह खड़ा था जिसमें मि.पीचम, हॉथॉर्न, मिलर, और क्रेस्टन थे। उसके सामने वाले कोने में प्लास्टर से बने राजकुमार कांसॉर्ट की अर्धप्रतिमा के नीचे कॉमर्शियल बैंक के दो अग्रणी व्यक्ति, आरों और उसका सचिव खड़े थे।

दोनों समूह एक-दूसरे को देखने से बच रहे थे और आपस में धीमे स्वर में बात कर रहे थे।

आरों दोनों ऑपर बन्धुओं को मुकदमे के बारे में बता रहा था।

जब उन्हें हॉथॉर्न का न्यौता मिला तो मैकहीथ के दोहरे खेल पर सबसे कम ताज्जुब आरों को ही हुआ था। जिस तरीके से उसने इस खुलासे को स्वीकार किया कि उसका दोस्त मैकहीथ दुश्मनी निभा रहे सी.पी.बी. का अध्यक्ष है और पिछले कुछ समय से विरोधियों के साथ मिलकर साज़िश कर रहा है, उससे इस बात पर मुहर लग गयी कि वह एक उत्कृष्ट कोटि का व्यवसायी है। वह सभी व्यक्तिगत भावनाओं का दमन करने और नयी स्थिति को एक निर्विवाद तथ्य के रूप में स्वीकार करने का हामी था। कॉमर्शियल बैंक के भद्रजन उसके जैसा वस्तुपरक दृष्टिकोण नहीं रखते और उसके इस रुख पर अचम्भित थे।

फिर भी, आरों ने माना कि यह देखने में उनकी दिलचस्पी है कि आज मैकहीथ उनकी आँखों में आखें डालकर देख सकता है या नहीं ।

मैकहीथ और ग्रूच ने प्रवेश किया।

वे दरवाज़े पर रुके और झुककर अभिवादन किया। दोनों कोनों में खड़े सज्जनों ने झुककर ही इस अभिवादन का उत्तर दिया।

एक समूह से नीचता का भाव चेहरे पर लिए एक छोटा-सा आदमी बाहर आया और दोनों नवागन्तुकों की तरफ बढ़ा।

उसने पूछा, 'कृपया मुझे बताएँ कि आप दोनों सज्जनों में से मि.मैकहीथ कौन हैं?'

मैकहीथ फिर झुका।

पीचम ने एक ठिगने मगर हट्टा-कट्टा आदमी देखा जो अपने जीवन के पाँचवे दशक में रहा होगा और उसका सिर मूली के आकार का था। वे दोनों

लगभग साथ में ही बोल पड़े :

'आप कैसे हैं? आपसे मिलकर खुशी हुई।'

फिर पीचम खिड़की के पास खड़े अपने समूह में चले गये। उनका दामाद और ग्रूच अभी दरवाज़े पर ही खड़े थे। मैकहीथ ने आरों और पत्थर जैसा चेहरा बनाए ऑपर बन्धुओं से बातचीत में उलझना श्रेयस्कर नहीं समझा।

इसलिए अब वह अप्रसन्नता के साथ ग्रूच के पीछे खड़ा हो गया। उस कमरे में मौजूद लगभग सभी लोगों की तरह वे भी काले सूट में थे और दोनों पीछे मौजूद गैस-लाइट की रोशनी में बिल्कुल साफ़ दिख रहे थे।

मैकहीथ ने घृणा के साथ सोचा, *'वे बस सौदा करने की स्थिति में आने का इंतज़ार कर रहे हैं। इस पूरे मोल-भाव से मेरा दिमाग़ ख़राब हो जाता है! मैं यहाँ बैठता हूँ और हिस्सों के बारे में टाल-मटोल करता हूँ। मैं जो चाहता हूँ अगर ये लोग मुझे वह नहीं देते तो क्यों न बस मैं अपना छुरा निकालूँ और इनमें घुसेड़ दूँ? धन्धा करने का यह भी क्या तरीका है-सिगरेट पीना और करारनामों पर दस्तख़त करना! इसलिए मुझे छोटे-छोटे वाक्य घुसाने होंगे और सुझावपरक इशारे करने होंगे! मैं सीधे यह क्यों नहीं कह सकता-तुम्हारा पैसा था तुम्हारी जान! सौदा क्यों किया जाय जब वही काम उनका टेंटुआ चाँपकर किया जा सकता है? जजों और बैलिफों के सामने कायरता से अपना बचाव क्यों किया जाय? ये सब एक आदमी को नीचे गिरा देता है। निश्चित रूप से, आज सड़कछाप डकैती के पुराने सीधे-सादे और स्वाभाविक तरीके आपको कहीं नहीं ले जाएँगे। उनका मौजूदा धन्धे के तरीकों से वही रिश्ता है जो चप्पूदार जहाज़ों का भाप से चलने वाले जहाज़ों से है। लेकिन पुराने दिन सबसे अच्छे थे। भूसम्पत्ति वाले पुराने ईमानदार दिन। वह सब कैसे ख़त्म हो गया! पहले, बड़ा भूस्वामी अपने काश्तकार के जबड़े पर एक घूँसा देता था और उसे कर्ज़दारों की जेल में डाल देता था। आज, उसी भूस्वामी को अदालत जाकर, वहाँ एक हाथ में कानून की किताब पकड़कर मुकदमा लड़ रहे काश्तकार के बेटे को इस बात पर बाध्य करना पड़ता है कि वह काग़ज़ के उस टुकड़े पर दस्तख़त करे, जो उसे उस काश्तकार को बेदख़ल करने की इजाज़त देगा। पहले, अगर कर्मचारियों की मज़दूरी पर्याप्त अधिक नहीं है या उनसे ज़्यादा मुनाफा नहीं मिल रहा होता था, तो उनका मालिक बस लात मारकर उन्हें बाहर निकाल सकता था। वह आज भी उन्हें बाहर निकालता है, निश्चित तौर पर, वह आज भी मुनाफा कमाता है और शायद पहले से ज़्यादा मुनाफ़ा कमाता है*

लेकिन कितनी अपमानजनक स्थितियों में! पहले उसे अपने मैनेजर के घृणास्पद मुँह में सिगार घुसेड़नी होगी और फिर उनके भेजे में वह सब भरना पड़ेगा जो उन्हें उन सर्वशक्तिशाली कर्मचरियो ंको बोलना है ताकि वे अपने मालिक के ज़्यादा यश और मुनाफे के लिए काम करने की दया करने का राज़ी हों। क्या जुगुप्सित स्थिति है। ऐसी स्थितियों में, कोई भी इज्जतदार इंसान, चाहे वह कितना भी सफल हो, अपने मुनाफे में आनन्द नहीं ले सकता! आत्म-सम्मान की कुर्बानी कहीं ज़्यादा बड़ी होती है! उससे सरकार पर भी असर पड़ता है। निश्चित रूप से आज भी जनता के मेहनत और आत्म-त्याग के जीवन की शिक्षा दी जाती है, लेकिन कितनी बड़ी कीमत पर! सरकार को शर्म भी नहीं आती कि वह इन्हीं लोगों से कहती है कि अपने हाथ में बैलट फॉर्म लें और उसी पुलिस के लिए वोट दें जो उन्हें नीचे रखने के लिए है। इस कमरे में भी आत्म-सम्मान की यह सार्वभौमिक उपेक्षा ग़ौर करने योग्य है। इन लोगों को मेरे द्वारा-हाँ मेरे द्वारा, यानी एक साधारण से सड़कछाप लुटेरे द्वारा, यह बताया जाना चाहिए, कि उन दिनों में जब मैं अपने आपको अभी सड़कछाप लुटेरा ही कहता था, मैं अपने आपको इस कदर अपमानित नहीं करता जैसा कि वे अपने आपको कर रहे हैं!'

वे सी.पी.बी. ब्लूम्सबरी का इंतज़ार कर रहे थे। वह मैकहीथ के आने के आधे घण्टे बाद आया और दोनों हाथों से मैकहीथ से हाथ मिलाया।

उसने हार्दिकता के साथ बताया, 'तुम्हें दोषमुक्त कर दिया गया है। लेकिन चूँकि तुम भाग आए इसलिए अदालत की अवमानना के जुर्म में तुम्हें छोटी-सी सज़ा दी गयी है।'

उसके साथ फैनी क्राइस्लर आयी। अब वह पॉली के साथ अगले कमरे में बैठी थी। अपने ससुर की ख़ातिर मैकहीथ नहीं चाहता था कि पॉली सम्मेलन कक्ष में रहे।

सभी सज्जन एक बड़ी गोल मेज़ के किनारे अपनी जगहों पर बैठ गये। इस मेज़ पर पानी वाली शीशे की एक सुराही, छह गिलास, एक और एक सिगार का डिब्बा रखा हुआ था। नोटरी और मेज़बान की हैसियत से, हॉथॉर्न ने कार्यवाही की शुरुआत की।

उसने मौजूद लोगों का स्वागत किया और इन शब्दों के साथ फौरन मैकहीथ का रास्ता साफ़ कर दिया :

'अगर मैंने उनके पत्र को सही समझा है, तो मि.मैकहीथ जिन्हें आप बी.

शॉप्स के स्थापक के रूप में जानते हैं, आपके सामने कुछ प्रस्ताव रखना चाहते हैं।'

आरों ने अपना थुलथुल हाथ उठाया।

'मुझे एक बात कहने की आज्ञा दें जो हमें अत्यधिक आवश्यक लगती है और जिसकी सन्तोषजनक व्याख्या के बिना हमें वह चैन नहीं मिल सकता जो मि.मैकहीथ के सुझावों को समझने के लिए ज़रूरी है। मैं सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड में हो रही कुछ अनियमितताओं के बारे में फैली अफवाहों की ओर आपका ध्यान खींचना चाहूँगा।'

मैकहीथ खड़ा हुआ।

उसने धीरे से कहा, 'मुझे उस बाबत सारी जानकारियाँ हैं। ये अफवाहें किसी मि.ओ'हारा की गिरफ्तारी के साथ शुरू हुई थीं जो मेरी दुकानों में सप्लाई करता था। कुछ सामान कहाँ से आए थे, वह काफी अस्पष्ट था। मेरी जाँच से पता चला कि वह चोरी से आए थे। उसके बाद, ओ'हारा ने पुलिस के सामने अपने जुर्म का इकबाल कर लिया है। अब वह चोरी का सामान लेने के आरोप में मुकदमे का सामना करने का इंतज़ार कर रहा है।'

आरों को कोई विशेष अचम्भा नहीं हुआ। उसने जितना सम्भव था, उतने संक्षेप में अपनी बात कही।

खुदरा व्यापार एक संकट का सामना कर रहा था। हाल ही में हो रही गलाकाटू प्रतियोगिता ने कीमतों को इस हद तक गिरा दिया है कि कोई ठीक-ठाक मुनाफ़ा कमा पाना असम्भव हो गया है। इकाई मूल्य वाली दुकानों का मार्गदर्शक सिद्धान्त *'ग्राहक की सेवा'* था। लेकिन लम्बे दौर में सफल होने के लिए इन दुकानों का *स्वस्थ* रहना और रिज़र्व बनाना ज़रूरी था। अब तक मौजूद कमोबेश अन्धी प्रतियोगिता ने बैंकों पर बोझ बहुत बढ़ा दिया था। उसने ए.बी.सी. नामक सिण्डिकेट बनाने का प्रस्ताव रखा जिसमें आरों, क्रेस्टन और बी.शॉप्स संगठन होंगे, जो ख़रीदार जनता की ज़रूरतों का अध्ययन करेगा, दुकानों की एक क्षेत्रीय व्यवस्था स्थापित करेगा, स्थिर बिक्री योजना बनाएगा, और इस प्रकार कीमतों का एक ऐसे स्तर का लक्ष्य रखेगा जो बहुत नीचे या ऊपर न हो।

असमंजस में पड़े बूढ़े आरों ने कॉमर्शियल बैंक के सज्जनों की तरफ देखा और फिर धीमे स्वर में कहा कि प्रतियोगिता की मौजूदा व्यवस्था में बदलाव उन्हें भी अत्यन्त वांछित लगता है।

चुप्पी छा गयी, और कॉमर्शियल बैंक के अध्यक्ष ने अपना गला साफ़ किया।

उसने सख़्ती से कहा, 'मैं यह सवाल करना चाहता हूँ कि मि.मैकहीथ द्वारा रखे गये प्रस्ताव के सम्बन्ध में पहले ही कोई चर्चा हुई है या नहीं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, मि.मैकहीथ की बी.शॉप्स की व्यवस्था हमारे समूह से जुड़ी हुई है और इसलिए वह हमारे साझे हित पर प्रभाव डालने वाले किसी भी फैसले पर हमसे बात करने के लिए बाध्य हैं।'

मैकहीथ एक-एक शब्द का चुनाव अत्यधिक सावधानी से कर रहा था।

उसने सामने बैठे मि.पीचम की ओर हाथ से इशारा करते हुए बताया कि कुछ पारिवारिक सम्बन्धों के कारण वह नेशनल क्रेडिट बैंक के मामलों में हाथ डालने को बाध्य हो गया था, जो क्रेस्टन के चेन स्टोर्स के साथ काम कर रहा है। इस बीच पीचम एकदम निश्चल बैठे रहे। इसलिए कहा जा सकता है कि इस व्यवसाय के भविष्य का निर्णय उसके परिवार के हाथ में है। नतीजतन, व्यक्तिगत तौर पर उसके और मि.क्रेस्टन के बीच कुछ अनौपचारिक किस्म की चर्चाएँ हईं थीं।

आरों ने बिना अपने बैंकरों की ओर देखे पूछा, 'और इन चर्चाओं का क्या नतीजा निकला?'

क्रेस्टन ने मैकहीथ की ओर से जवाब दिया, 'पूर्ण एकमत।' आरों हँसा।

कॉमर्शियल बैंक के अध्यक्ष ने ठण्डेपन के साथ कहा, 'इन चर्चाओं में, परिवार के हाथ में चलीं इन अनौपचारिक चर्चाओं में सेण्ट्रल परचेज़िंग बोर्ड को दी गई भूमिका का कोई ज़िक्र हुआ?'

इसके बाद उसने ब्लूम्सबरी की ओर देखा, जो अप्रसन्नता के साथ हिल-डुल रहा था, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है।

एकदम शान्ति के साथ मैकहीथ ने उसकी तरफ से जवाब दिया।

उसने कहा, 'यह सवाल आप मुझसे पूछ सकते हैं।'

जैक्स ऑपर ने कहा, 'मैं सी.पी.बी. से पूछ रहा हूँ।'

मैकहीथ ने आराम से स्वीकार कर लिया, 'यानी मुझसे। मैं अब यह बात छिपा नहीं सकता कि मैं कुछ समय से सी.पी.बी. के साथ करीबी सम्बन्ध बनाए हुए हूँ।'

छोटे ऑपर ने एकदम ठण्डी विडम्बना के साथ पूछा, 'पारिवारिक सम्बन्ध?'

मैकहीथ ने मित्रतापूर्ण लहज़े में कहा, 'नहीं, एक दोस्ताना रिश्ता। मैं और ब्लूम्सबरी दोस्त हैं।'

'बहुत खूब,' हेनरी ऑपर ने कहा और आरों की तरफ देखा।

एक कष्टप्रद चुप्पी छा गयी। हॉथॉर्न ने अपने लिए एक गिलास पानी निकाला और मौजूद लोगों से प्रार्थना की कि बातचीत मे किसी भी प्रकार की कड़वाहट से बचें।

आरों ने एक अशत्रुतापूर्ण स्वर में और कुछ मज़ाकिया स्वर में बोलना शुरू किया, 'तो मैकहीथ, जैसा मुझे समझ में आ रहा है, बात यह है कि तुम सी.पी.बी. के अध्यक्ष और नेशनल क्रेडिट बैंक के निदेशक हो। ठीक है न?'

मैकहीथ ने गम्भीरता से सिर हिलाकर हामी भरी।

आरों ने अपने पक्ष को सम्बोधित करते हुए कहा, 'फिर तो स्थिति एकदम बदल जाती है, ऑपर। अगर मैं ग़लत नहीं समझ रहा-और कोई वजह नहीं है कि मैं ग़लत समझूँ-तो मैं कह सकता हूँ कि क्रेस्टन बिना किसी कड़वाहट के सी.पी.बी. से जल्दी ही ताज़ा आपूर्तियाँ प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं, कि दोस्ताना रिश्तों के अलावा पारिवारिक और व्यापारिक रिश्तों ने हमारे विरोधी पक्ष में एक बेहद सामंजस्यपूर्ण माहौल बना दिया है। और ऑपर, यहाँ सवाल यह उठता है कि क्या विरोधी पक्ष बनाने की वाकई कोई ज़रूरत है भी या नहीं। कल हम किसी आपसी समझदारी पर पहुँच सकते हैं, लेकिन हम आज भी आपसी समझदारी पर पहुंच सकते हैं। और सज्जनो, यही सबसे सही समय है! आपकी क्या राय है?'

मैकहीथ ने हस्तक्षेप किया, 'जब तक सी.पी.बी. को मिलने वाली कीमतें बेहद नीचे न हों-जैसा कि दुर्भाग्य से पिछले कुछ दिनों हुआ है-तब तक सी.पी.बी. एक अत्यन्त शक्तिशाली संगठन है। कीमतों के नीचे आने से हमारी व्यवस्था से बाहर की दुकानों पर जो दबाव पड़ा है उसका बड़ा बुरा असर पड़ा है। नतीजा है कि दीवालियेपन की घटनाओं की एक शृंखला; मानवीय दृष्टिकोण से एक निराशाजनक स्थिति, लेकिन जो फुटकर व्यापार को तेज़ी से स्वस्थ बनाएगी। इन दीवालिया दुकानों में बेहद कम दामों पर ख़रीदे जाने के लिए विशाल मात्रा में वस्तुएँ पड़ी हुई हैं। सज्जनो, बीमार आदमी मरता है और मज़बूत आदमी लड़ता है!'

आरों ने अपने नाखूनों को देखा। लग रहा था कि कोई कुछ कहना नहीं चाहता। इसलिए मैकहीथ ने ही बोलना जारी रखा।

'माई डियर आरों, हमारे बिक्री सप्ताह के न लगने की घोषणा की अभी कोई ज़रूरत नहीं है। ज़रा सोचिये, कैसे पूरा ख़रीदार लन्दन हमारे प्रतिस्पर्द्धात्मक युद्ध को देखता रहा है! लेकिन, यहाँ प्रस्तुत कई कम्पनियों का एक मण्डल चाहे

तो इस बिक्री सप्ताह को खारिज भी कर सकता है और चाहे तो चलने भी दे सकता है।'

आरों ने कहा, 'अच्छा.. ।अगर मैं किसी सहमति तक न पहुँचा, तो भी तुम अपना बिक्री सप्ताह चलाओगे? लेकिन मुझे लग रहा था कि सी.पी.बी. के गोदाम फिलहाल ख़ाली हो चुके हैं?'

मैकहीथ ने इच्छापूर्वक समझाया, 'हाँ, वे खाली तो थे, लेकिन मैंने अभी-अभी कई खेपें ख़रीदी हैं-क्रेस्टन से। वे सी.पी.बी. की आपूर्तियों से कुछ महँगी थीं, लेकिन साधारण बाज़ार से महँगी नहीं।'

आरों ने कहा, 'जैसे मण्डल का तुम सुझाव दे रहे हो, उसमें तो सी.पी.बी. के अध्यक्ष के रूप में तुम्हारी स्थिति असाधारण होगी?'

मैकहीथ ने सहमति में कहा, 'असाधारण ज़िम्मेदारियाँ कहें!'

आरों ने कॉमर्शियल बैंक के सज्जनों की ओर मुख़ातिब होते हुए कहा, 'तो, आपका क्या विचार है?'

हेनरी ऑपर ने अपने भाई को देखा और तीखे स्वर में कहा :

'मैं बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ। अपनी ओर से, मैं यह प्रस्ताव रखता हूँ कि हमें मि.मैकहीथ के साथ कोई लेना-देना नहीं है। और अब मैं आपसे कहूँगा कि आप हमारे साथ इस कमरे से चलें।'

वह खड़ा हो गया।

आरों ने अप्रसन्नता से उसे देखा।

उसने बैठे रहते हुए ही शिकायती स्वर में उससे कहा, 'लेकिन क्यों? सुन तो लीजिये कि उन्हें क्या कहना है।'

हेनरी ऑपर ने ठण्डी घृणा से पल भर उसे देखा। फिर बिना कुछ कहे उसने हल्के से सिर हिलाया और कमरे से चला गया, उसका क्लासिकीय दिमाग वाला भाई उसके पीछे हो लिया।

आरों ने वहाँ मौजूद सभी लोगों को काफी तेज़ घूरा।

'मेरे दोस्त के पास कोई हास्य-बोध नहीं है। इस बात में कोई सन्देह नहीं है। मैं यहाँ रुका हुआ हूँ क्योंकि मुझमें हास्य-बोध है, और व्यापारिक मित्रों का एक-दूसरे के हास्य-बोध को जानना सही दिशा में एक कदम है। अगर मेरे व्यवसाय पर बरबादी की तलवार लटकी हो, तो मैं भाग नहीं सकता,' उसने गुस्से में अपनी बात ख़त्म की।

चूँकि किसी ने कुछ नहीं कहा, इसलिए उसने बोलना जारी रखा :

'एक प्रश्न जो गम्भीर बन सकता है, वह यह है : क्या हम कॉमर्शियल बैंक की वित्तीय सहायता के बिना काम चला सकते हैं?'

उस दोपहर पहली बार पीचम ने चर्चा में भाग लिया :

उन्होंने शुष्क स्वर में कहा, 'मेरे ख़्याल से मेरे दामाद आपको उस मुद्दे पर भरोसा दिला सकते हैं। मैरीन ट्रांसपोर्ट कम्पनी, जिसकी मैं नुमाइंदगी कर रहा हूँ को भाग्य से उस भयंकर तबाही से कोई वित्तीय हानि नहीं हुई, जो उसके एक जहाज़ ने झेली। इस तरह जीवन की हानि से हुई तबाही में आर्थिक नुकसान नहीं जुड़ा। मैं आपको विश्वास के साथ बता सकता हूँ कि हम सरकार से और ठेकों की उम्मीद कर सकते हैं। इसलिए-कम-से-कम अस्थायी रूप से, जब तक मैं उन विशद योजनाओं पर काम नहीं शुरू करता जो मेरे दिमाग में हैं तब तक-मैं ए.बी.सी. शॉप सिण्डिकेट जैसे उज्ज्वल भविष्य वाले युवा व्यवसाय को समर्थन देने की स्थिति में हूँ।'

आरों अपनी कुर्सी में झुका। फिर उसने मैकहीथ की और विचारमग्नता से देखा। फिर उसने नर्म स्वर में कहा :

'मेरे ख़्याल से, मैं समझता हूँ मैकहीथ। सी.पी.बी. के अपने आश्चर्यजनक रूप से सस्ते सामानों के साथ तुम मेरे और कॉमर्शियल बैंक के साथ क्रेस्टन के ख़िलाफ़ कीमत गिराने की प्रतियोगिता में लग गये, और जिससे तुमने क्रेस्टन को घुटना टिकवा दिया। जब उसके संसाधन समाप्ति की कगार पर थे और उसने कीमतें हमारे जितनी नीची रखने के लिए नेशनल क्रेडिट बैंक से पैसे ले लिये तो तुमने नेशनल को मजबूर कर दिया कि वह अपना उधार वापस ले ले। लेकिन तुमने हमारी और अपनी दुकानों को भी उस समय सी.पी.बी. की आपूर्ति रोक दी जब संघर्ष अपने चरम पर था, और अब तुम मुझे कॉमर्शियल से उसी तरह काट रहे हो जैसे तुमने क्रेस्टन को नेशनल से काटा था। ग़ज़ब! हम इन सारी चीज़ों पर '48 की एक बोतल के साथ बात करेंगे, हैं? लेकिन अब काफी धन्धा हो गया! मेरे ख़्याल से हममें से ज़्यादातर लोग आज दोपहर यादगारी समारोह में जाने की उम्मीद रखते हैं। उस सूरत में, अब हमें चलना चाहिए। वैसे भी, हम आज और बातों पर चर्चा नहीं कर सकते।'

बाकी लोग पूर्णतः सहमत थे। मि.मैकहीथ के प्रबन्धन के तहत ए.बी.सी. सिण्डिकेट अब एक हकीकत था।

अगले कमरे में इंतज़ार कर रही पॉली और फैनी के बीच मज़ेदार बातचीत हुई।

फैनी ने काफी हँसते हुए पॉली को मुकदमे की मज़ेदार घटना के बारे में बताया था।

बरी किये जाने के बाद कई बी.शॉप मालिकों और उनकी पत्नियों ने मैकहीथ की खोज में भाग लिया। फैनी उनके पीछे गयी थी और सुन रही थी कि वे क्या बात कर रहे थे। वे सभी उससे हाथ मिलाना चाहते थे।

वे सभी वैली को गाली दे रहे थे, क्योंकि उसके कारण वे खीझ गये थे।

वे गुस्से में कह रहे थे, 'निश्चित है कि ऐसा करने के लिए इस वैली के पास कोई गन्दी वजह होगी।'

फैनी ने पॉली को बताया कि जिस बहाने से वह इतने खुश हुए थे क्योंकि इससे मैकहीथ आज़ाद हो गया था, वह दरअसल सी.पी.बी. की वही बैठक थी, जिसमें उन्होंने आपूर्ति रोकने का फैसला किया था, यानी उनकी तबाही का फैसला लिया गया था।

पॉली खूब हँसी और वे आने वाले पतझड़ के फैशन पर बात करने लगीं। जब तक मुलाकात ख़त्म हुई उन्होंने एक दूसरे को अपने घर आने का न्यौता दे दिया था। पॉली थोड़ा घबरायी हुई थी क्योंकि उसके पिता आज मैक को पहली बार देख रहे थे।

उसने अपने पति को अपने पिता के साथ सम्मेलन कक्ष से बाहर आते देखा। वे चुपचाप अगल-बगल चल रहे थे। दोनों किसी गहरी सोच में डूबे हुए थे।

वे चार गाड़ियों में चर्च की ओर बढ़े। एक में पॉली अपने पति के साथ अकेली थी। उसने मैक का हाथ थाम रखा था। क्योंकि उनके प्यार ने सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त कर ली थी।

नेशनल क्रेडिट बैंक में हुई इस मुलाकात के दौरान कोहरा और गहरा गया था। गाड़ियाँ काफी धीमी रफ्तार से बढ़ रही थीं। कई चौराहों पर इस बात पर विचार-विमर्श हुआ कि आगे किस दिशा में जाना है।

दूसरी गाड़ी में पीचम, फैनी और ब्लूम्सबरी बैठे थे। ब्लूम्सबरी ने काफी उत्साह के साथ अपने दोस्त मैकहीथ की प्रतिभाओं के बारे में बात की।

उसने सम्मान के साथ कहा, 'वह ग़ज़ब का मेहनती है। हर वक्त काम करता रहता है। अपने बारे में तो वह कभी सोचता ही नहीं, बस अपने कारोबार के बारे में सोचता रहता है। वह बिरले ही आराम करता है; बस दोपहर में वह भोजन के कुछ निवाले अपने हलक के नीचे उतारने के लिए रुकता है। वाकई, उसे

शान्ति मिली, तो बस जेल में।'

फिर फैनी ने मि.पीचम से हैम्स्टेड की दुकानों की कीमतों के बारे में बात की।

जल्दी ही वे झगड़ने लगे, और फैनी ने हँसते हुए और कनखी से पीचम को देखते हुए कहा, कि वह जानते हैं कि वह हमेशा सच बोलती है।

पीचम बड़ी मेहनत करके मुस्कराए।

उनके चेहरे का रंग फीका पड़ गया था और वे बूढ़े दिख रहे थे। वह डरे हुए थे। कोहरे में से झाँकते हुए उन्होंने धुँधली आकृतियाँ देखीं, जिसमें उन्होंने भयानक नारों के बोर्ड लिए आदमियों के समूह देखे, वही नारे जो उन्होंने खुद बनाए थे।

पीछे झुकते हुए उन्होंने सोचा, 'यह कोहरा थोड़ी किस्मत की निशानी है। लेकिन यह किसी भी मिनट साफ़ हो सकता है। और तब क्या होगा? निश्चित रूप से, मैं ख़तरों पर ही जीता हूँ। लेकिन इस बार मैंने कुछ ज़्यादा ही ख़तरा पैदा कर लिया है। यह मेरी जान भी ले सकता है। पुलिस मेरी एकमात्र आशा है; लेकिन क्या वे सफल होंगे? उन्हें भी तो कोहरे में ही चलना है। उन्हें पता नहीं है कि उन्हें किस चीज़ का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने वे तख़्तियाँ कभी नहीं देखी हैं जो उनकी तरफ बढ़ रही हैं। हे भगवान!'

ग्रूच और क्रेस्टन और आरों के साथ जा रहा था। आरों का सचिव अब भी उसके साथ था।

आरों ने मैकहीथ के बारे में काफी ऊँची राय बना ली थी। अब मन ही मन उसने यह स्वीकार लिया था कि जब उसने अदालत मे ंसुना कि सी.पी.बी. के पीछे मैकहीथ है, तभी उसने मन बना लिया था कि नये सिण्डिकेट में वह मैकहीथ को एक केन्द्रीय स्थिति देगा।

कोचवान अब इस बात को लेकर एकदम सुनिश्चित नहीं थे कि वे सही रास्ते पर थे या नहीं। कई बार वे रफ्तार कम करके अपने कोचबक्स में से एक-दूसरे की और चिल्लाए। और एक बार वे एकदम उल्टी दिशा में घूम गये। फिर उन्होंने कुछ मुसाफिरों को रोका जो अपने गन्तव्यों के बारे में उतने ही भ्रमित लग रहे थे।

एक पुलिसवाले ने उन्हें रास्ता बताया, और अपने घोड़ों को उन्होंने दुलकी चाल में ऐसे दौड़ाया मानो अब रास्ते को लेकर उनमें कोई सन्देह न हो।

मैकहीथ अन्दर से कई बार चिल्लाया :

'सेण्ट पॉल के चर्च चलो!'

लेकिन फिर ग्रूच और आरों उतरकर सड़क के उस पार गये और ख़बर दी कि उन्हें खुले खेत दिखायी पड़ रहे थे, कम-से-कम एक ओर।

कोचवानों ने सुलह-वार्ता की। उन्होंने वे जगहें गिनायीं जहाँ सड़क के एक ओर खुले खेत हैं। चूँकि वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाए, इसलिए बढ़ते रहे। हॉथॉर्न ने उदासी के साथ मिलर (आखिरी कोच में डेढ़ सदियाँ सफर कर रही थीं) से कहा :

'किसी को नहीं पता कि अभी हम कहाँ हैं!'

आधा घण्टा और चलने के बाद मैकहीथ ने रुखाई के साथ पॉली से कहा :

'अगले कोने पर हम उतरेंगे और सबसे करीब वाले घर में जाएँगे। हम इस तरह चलते नहीं रह सकते।'

और वाकई अगले कोने पर वह उतरा और उसके साथ सभी उतरे।

जो पहली इमारत उनके सामने आयी उसकी काफी ऊँची दीवार थी और वह काफी बड़ी लग रही थी, हालाँकि धुन्ध में कुछ भी पहचान पाना असम्भव था। दीवार काफी दूर तक चलती रही और वह दरवाज़ा नहीं खोज पाए।

जब उन्हें दरवाज़ा मिला तो उन्हें पता चला कि वे ओल्ड बेली के सामने खड़े हैं।

वे हँसते हुए मुड़े और फिर से कोच में चढ़ गये। यह बात अब एकदम साफ़ थी कि वे बिल्कुल ग़लत रास्ते पर आ गये थे।

एकदम संयोग की बात थी कि उन्हें एक दूसरा पुलिस वाला मिल गया, जो, यह जानकर कि उनके पास सेण्ट पॉल्स के टिकट हैं, कोचवानों को उस मोड़ पर ले गया जहाँ से गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए बस सीधे चले जाना था। वे एक घण्टे से भी ज़्यादा देरी से पहुँचे।

चर्च के बाहर कोई नज़र नहीं आ रहा था-सिवाय भीख माँगते सैनिकों के।

पीचम ने अपने कोच से झाँककर दरवाज़ों की ओर अविश्वास के साथ देखा।

पूरी तरह भीगे हुए और दयनीय हालत में उनके दर्ज़नों आदमी खड़े थे।

वह उनमें से को किनारे ले गये जिससे उन्हें पता चला कि बियरी मुलाकात की जगह समय पर नहीं पहुँच पाया था। लेकिन प्रदर्शन नहीं हुआ। भोर में आदमियों के बीच एक सामान्य बगावत फूट पड़ी थी। उन्होंने अपने पोस्टर फेंक

दिये और धन्धे के लिए इतने शुभ दिन पर तख्तियाँ ढोने के लिए काम से दूर रहने से इंकार कर दिया।

उनमें से एक ने कहा, 'खून-पानी से गाढ़ा होता है।'

'पुलिस का ध्यान आकृष्ट न करना कहीं बेहतर है। आज जनता दयालु होने को तैयार है ताकि ग़रीब सैनिक इंग्लैण्ड की महानता और गौरव के लिए अपने पाँव और हाथ देने में हतोत्साहित न हों। और हमसे सरकार में मौजूद बिल्कुल अनजान लोगों पर यह आरोप लगाने की उम्मीद की जाती है कि वह हमसे धोखा करने की कोशिश कर रहे हैं! हमारे कारोबार का क्या होगा? कल घायल सैनिक पुलिस के हवाले कर दिये जाएँगे; आज उनका सम्मान किया जा रहा है। जहाज़ कोई हर दिन थोड़े ही डूबते हैं। मन्दी के समय में हम भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ भी उतना ही अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।'

इस तरह, प्रदर्शन शुरू होने से पहले ही टूट गया।

भिखारी आस-पास की सड़कों पर अच्छी तरह बिखरे हुए थे। लेकिन धुन्ध उनके काम में एक बड़ी बाधा थी। बार-बार, शिकार हुए लोगों के सम्बन्धियों तक पहुँच पाने की बजाय वे अपने आपको सरकार के तमाम नुमाइंदों से मिन्नतें करते पा रहे थे।

काफी राहत मिलने पर पीचम चर्च के अन्दर गये।

वह जगह अभी भी आधी खाली थी। विशालकाय ऊँचे खम्भे काले कपड़ों में लिपटे थे। व्याख्यान मंच के नीचे विशाल मालाएँ पड़ी हुईं थीं।

पूजा अभी शुरू नहीं हुई थी।

सैनिक दल भी अभी नहीं पहुँचा था। धुन्ध में आधा अन्धा हो चुका सैनिक दल राह टटोलते हुए चेल्सिया होते हुए अन्ततः थेम्स पहुँच गया। वहाँ वह गिरते-गिरते बचा।

गालियाँ बकते हुए वह वापस चल पड़ा। उन्हें अपने डूबे हुए साथियों की अत्यधिक भीड़ से रक्षा करनी थी।

जब अन्ततः वे पहुँचे तो पादरी अभी ग़ायब ही थे। कोहरे में वे रास्ता भटक गये थे और स्मिथ फील्ड बाज़ार में घूम रहे थे। जेब में अपना भाषण रखे बिशप किसी पल्लेदार की खोज में भ्रमित हो गये थे और निराशा में वे उन सँकरे गलियारों में से एक में चले गये जिनमें पशुओं को कटाई के लिए ले जाया जाता है। जब कुछ पल्लेदारों ने उन्हें ढूँढकर निकाला तो वह एक भेड़ के बाड़े में बैठे थे।

पादरियों के आगमन के बाद *ऑप्टिमिस्ट* हादसे के शिकार लोगों के मरणोपरान्त सम्मान में पूजा शुरू हुई।

सरकार के सभी प्रतिनिधि वहाँ मौजूद थे। मैकहीथ ने ब्राउन को एक ऊँचे अधिकारी के पीछे बैठे देखा जिसकी तस्वीर उसने अक्सर साप्ताहिक अखबारों में देखी थी। वह खुश था कि ब्राउन सड़क के सामान्य आदमी की पहुँच से इतना दूर लगता था, और उसे उस पर गर्व था।

ब्राउन के पीछे बैठा आदमी हेल था। पीचम ने तत्काल ही उसे ढूँढ लिया। कोहरे में ब्राउन का कोच हेल के कोच से जा भिड़ा था।इसलिए यह उम्मीद करते हुए कि साथ में वह सही रास्ता ढूँढ सकते हैं, वे बाकी रास्ते साथ ही आए।

आम जनता के बैठने की जगहें अभी भी आधी ही भरी थीं। मृतकों के सम्बन्धियों के बहुत संख्या में आने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन सैंकड़ों लोग जिनके पति और बेटे मैदाने-जंग में थे, वे समय पर पहुँचने में अक्षम थे।

हर सड़क के छोर पर, और यहाँ तक कि घरों और दुकानों में वे यह पूछते हुए सड़कों पर भटक रहे थे कि यादगारी पूजा कहाँ हो रही है।

एक स्वयंसेवक के बाजा बजाने के बाद, जिसने कार्यवाही का मिजाज़ तय कर दिया, बिशप ने बूचड़खाने के अपने रोमांचकारी कारनामे से सिहरते हुए अपना प्रवचन दिया। अपने मजमून के रूप में उदात्त पुरुष और पाउण्ड की नीति कथा को लिया था।

पहले उन्होंने सेण्ट लूक के अनुसार गॉस्पेल से नीति-कथा का पाठ किया, जो इस प्रकार शुरू होता थाः

एक उदात्त पुरुष किसी दूरस्थ देश में अपने लिए एक राज्य जीतकर लौटने के लिए गया।

उस आदमी ने अपने हरेक नौकर को एक पाउण्ड दिया और यह निर्देश दिया कि उसके लौटने तक उन्हें इससे काम चलाना है। जब वह वापस आया तो एक नौकर ने दस पाउण्ड अर्जित कर लिये थे। उस उदात्त पुरुष ने उसे दस शहरों पर शासन का अधिकार दे दिया। दूसरे नौकर ने पाँच पाउण्ड कमाए थे और उसे पाँच शहरों पर अधिकार दे दिया गया। लेकिन तीसरे ने कुछ भी नहीं कमाया था। इसलिए उदात्त पुरुष ने उससे उसका पाउण्ड लिया और उसे उस नौकर को दे दिया जिसने दस पाउण्ड कमाए थे। उसने कहा कि कमाई करने वाले को कमाई न करने वाले से वह भी छीनकर दे दिया जाएगा जो उसके पास था।

यही वह नीति-कथा थी जिस पर बिशप का प्रवचन आधारित था।

उसने बोलना शुरू किया, *'मेरे मित्रो, चैनल में जहाज़* ऑप्टिमिस्ट *पर जो आपदा टूट पड़ी, उसने हमारे देश में* देशभक्ति *की एक लहर को पैदा कर दिया है। मानो इस विपत्ति ने, जो हमारे देश पर आ गिरी है, इंग्लैण्ड के मिशन के प्रति लोगों की आँखें खोल दी हैं-एक मिशन जिसे राष्ट्र तब बिल्कुल नहीं भूला, जब आखिरी गुरूवार की सुबह अखबार के पाठकों ने अपने नाश्ते की तश्तरी के बगल में इस भयानक विपदा की ख़बर पढ़ी, जो इंग्लैण्ड पर आ गिरी थी।*

'अब इस बात का क्या मतलब है, जब मैं कहता हूँ : उनकी आँखें खुल गयीं? मित्रो, जीवन में हर घटना-और जीवन घटनाओं से ही बनता है-का एक अग्रभाग *और एक* पश्चभाग *होता है। हर घटना, यहाँ तक कि* ऑप्टिमिस्ट *जैसी दुर्घटना की भी एक अग्रभूमि होती है; और एक पृष्ठभूमि होती है। ऐसे लोग भी होते हैं जो अग्रभाग तो देखते हैं लेकिन पृष्ठभाग नहीं। हालाँकि असलियत में, पृष्ठभूमि अधिक महत्वपूर्ण होती है। जो इसे देख पाता है, वही जीवन को देख पाता है।*

'और मित्रो, अब जो मैं आपसे पूछता हूँ, वह है इस दुर्घटना की पृष्ठभूमि, *जिसने हमें इतना आघात पहुँचाया है?'*

अब तक वह सीधा खड़ा था और अब वह पीछे की और झुका। उसने एक ठण्डी, स्पष्ट निगाह से अपने नीचे मौजूद हुजूम को देखा; सरकार के प्रतिनिधि, नौकाधिकरण के अधिकारी जिनका प्रमुख हेल था और व्यापारी और मोर्चे पर मौजूद लोगों के सम्बन्धी।

इस जाँच-पड़ताल के बाद, बिशप ने फिर से बोलना शुरू किया, *'मित्रो, हमारी नीति कथा का स्वामी एक कठोर स्वामी है। वह ब्याज़ और* चक्रवृद्धि *ब्याज़ समेत अपना पैसा वापस चाहता है। जो नौकर उसे सिर्फ एक पाउण्ड वापस करता है उसे बाह्य अन्धकार में फेंक दिया जाता है, जहाँ दाँतों का क्रन्दन और किटकिटाहट है। हाँ मित्रो, भगवान, जो उस नीति कथा में स्वामी है, वही हमारा स्वामी है, और वह एक कठोर स्वामी है और अपना ब्याज़ चाहता है। लेकिन, मित्रो, वह एक न्यायनिष्ठ स्वामी भी है। वह अपने हर नौकर से समान ब्याज़ नहीं माँगता। वह एक से दस पाउण्ड लेता है तो दूसरे से पाँच। उसे जो मिलता है वह ले लेता है। केवल उस तीसरे नौकर, उस आलसी, अहसानफरामोश, और निष्ठाहीन नॉकर के एक पाउण्ड को लेने से वह इंकार करता है। वह आदमी असफल हुआ है। और उससे वह भी ले लिया जाना चाहिए जो उसके पास है,*

यानी वह पाउण्ड, वह मूलधन जो उसे दिया गया था। इस नीतिकथा के गहरे अर्थ इस आश्चर्यजनक वाक्य में अभिव्यक्त होते हैं : "हर आदमी को उसके साधनों के अनुसार।"

'मैं यहाँ थोड़ा विषयान्तर करते हुए "पाउण्ड" शब्द के अर्थों पर चर्चा करना चाहूँगा। हम जिस नीतिकथा की बात कर रहे हैं, पवित्र धर्म ग्रंथों में उसके दो संस्करण हैं। एक में पाउण्ड का ज़िक्र किया गया है और दूसरे में टैलेण्ट्स का। टैलेण्ट्स-इसके दो अर्थ हैं : पहला, प्राचीन यूनान का एक विशाल चाँदी का सिक्का, और दूसरा, एक मानसिक योग्यता। यह मुझे एक सुन्दर तुलना प्रतीत होती है। योग्यताएँ धन हैं, उपलब्धियाँ समृद्धि हैं-लेकिन यह बातें बस प्रसंगवश ही आ गयीं।

'मित्रो, हम इस धरती पर कहीं भी जाएँ, हमारा सामना असमानता *से होता है। हर आदमी एक छोटे-से बण्डल के रूप में इस दुनिया में आता है, नंगा और बेशरम। ऐसी स्थिति में वह किसी भी अन्य दुधमुँहे जीव से भिन्न नहीं होता। लेकिन कुछ समय बाद, भिन्नताएँ प्रकट होने लगती हैं। एक आदमी निचले पायदान पर ही रह जाता है, दूसरा सफलता की और ऊपर चढ़ जाता है। वह अपने साथी पुरुषों से समझदार है, वह ज़्यादा मेहनती, किफ़ायती, ज़्यादा ऊर्जावान है। वह जो भी करता है उसमें औरों से आगे निकल जाता है। और वह दूसरों से ज़्यादा समृद्ध, ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा इज्जतदार बन जाएगा। असमानता स्वयं प्रकट हो जाती है। फिर भगवान इसे कैसे देखता है?*

'क्या वह भी मनुष्यों के अलग-अलग स्तरों के अनुसार उनसे व्यवहार करता है। क्या वह श्रेष्ठ गुणों वाले आदमी को सामान्य गुण प्राप्त आदमी से ज़्यादा चाहता है? नहीं मित्रो, भगावान ऐसा नहीं करता। वह अपने सेवकों के बीच उनकी उपलब्धियों के अनुसार ईनाम बाँट देता है, एक को दस शहर, एक को पाँच शहर। उससे आगे वह कोई अन्तर नहीं करता। उससे आगे वह अपने सभी सेवकों को एक समान प्रेम करता है। और यही, मेरे मित्रो, भगवान के समक्ष समानता *का अर्थ होता है!*

'मित्रो, पाउण्ड्स की यह नीतिकथा हमें बताती है कि ऑप्टिमिस्ट में हुई हमारे सैनिकों की हानि का हमें किस प्रकार सम्मान करना चाहिए।

'हमारी भूमि में महान पुरुष हैं जिनकी उपलब्धियाँ सचमुच आश्चर्यजनक हैं। हमारे राजनीतिज्ञ दिनों-रात सरकार के जहाज़ के ब्रिज पर खड़े रहते हैं। हमारे सेनापति नक्शों पर झुके योजनाएँ और रणनीतियाँ बनाते हैं। हम भगवान

के चुने हुए सेवक यहाँ व्याख्यान मंच से हमारे बन्धु मनुष्यों के दिलों को शक्ति देते हुए अपनी भूमिका निभाते हैं। और हमारे सैनिक जहाज़ पर चढ़ते हैं। और अगर ईश्वर की अज्ञेय इच्छा यही होती है-तो उसके साथ डूब जाते हैं। हम अपना पाउण्ड ब्याज़ समेत वापस करते हैं। वही वे भी करते हैं। लेकिन कुल मिलाकर हम उस पाउण्ड में वृद्धि करने में देश की मदद कर रहे हैं जो भगवान ने उसे दिया है, ताकि जब अन्त में हमें स्वर्गीय सत्ता के सामने बुलाया जाय, तो हम अपने देश की ओर इशारा करके कह सकें : तूने हमें राजनीतिज्ञ, सेनापति, व्यापारी, सैनिक दिये थे, और देख, भगवान, हमने उनको यह बनाया है!

'इस तरह अगर हम अच्छा-बुरा, जो कुछ भी होता है, उस पर विचार करने लगें, तो हम ऑप्टिमिस्ट के डूबने जैसी राष्ट्रीय आपदा की अग्रभूमि नहीं देख पाएँगे, जैसा कि वे लोग करते हैं जिनकी इन्द्रियाँ पूरी तरह इहलौकिक होती हैं। फिर हमारी आँखों से परदा गिरता है और हम पृष्ठभूमि देखते हैं-और जब हम उसे देखते हैं, तो हमें अहसास होता है कि हमारे सैनिक और जहाज़ी हालाँकि अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाए लेकिन उनकी मौत बेकार नहीं थी। फिर हमें अहसास होता है कि जो जहाज़ गहरी धुन्ध में डूब गया उसका यह गर्वीला नाम ऑप्टिमिस्ट *बिल्कुल नाजायज़ नहीं था। क्योंकि मित्रों उसका आशावाद इस बात में निहित है कि इसकी नियति की व्याख्या राष्ट्र सही तरीके से करेगा। तब, इस जहाज़ से भी जिसकी नियति डूबना था, हमें कुछ हासिल होता है। ओह, भगवान इसने ब्याज़ और चक्रवृद्धि ब्याज़ अदा किया है!'*

पूजा के बाद, मि.पीचम और मि. और मिसेज मैकहीथ नेशनल क्रेडिट बैंक और ए.बी.सी. सिण्डिकेट के सज्जनों के साथ व्यापारिक मन्थन से छुटकारा पाने के बाद व्यक्तिगत विचारों को कुछ समय देने के लिए पास के एक रेस्तराँ में चले गये। मि. और मिसेज मैकहीथ सम्मान भाषणों और बधाइयों की झड़ी के बीच खड़े थे।

आरों सबसे पहले बोला :

उसने बोलना शुरू किया, *'देवियो और सज्जनो, आज का दिन इंग्लैण्ड के खुदरा व्यापार के इतिहास में एक मील का पत्थर है। आज एक विशाल खुदरा व्यापार सिण्डिकेट का नेतृत्व उस आदमी ने सम्भाल लिया है जिसे पिछले कुछ महीनों के दौरान हम सबने अपने पेशे के नेतृत्वकारी व्यक्ति के रूप में पहचान लिया है। कल से वह हमारे साझा हित के लिए अपना अविभाजित ध्यान, अपनी विलक्षण व्यापारिक प्रतिभा, अपनी न चुकने वाली ऊर्जा, और सबसे महत्वपूर्ण*

रूप से मनुष्यों को सम्भालने का अपना कौशल लगा देगा, जिसे हम सभी जानने और मानने लगे हैं। जनता जल्दी ही मंच के पीछे की उसकी शक्ति को मान जाएगी। अब हम व्यापारी बेकार की प्रतियोगिता में अपनी ताक त नहीं गवाँएँगे। अब से हम एक साथ मिलकर एक साझा लड़ाई लड़ेंगे। जब बिशप ने अपनी पाउण्ड की नीति कथा सुनाई तो हम सबने उनके सुन्दर शब्द सुने। हम इस बात को लेकर सुनिश्चित हो सकते हैं कि मि.मैकहीथ की अगुवाई में हमारा नया निदेशक मण्डल उस पाउण्ड से मानवीय तौर निकाला जा सकने वाला एक-एक टका निकालेगा, जिसका हमारा अन्तरराष्ट्रीय संगठन प्रतिनिधित्व करता है।'

मि.जे.जे.पीचम ने अपने भाषण में एक महत्वपूर्ण सुझाव दिया।

उन्होंने कहा, *'मैं यह नहीं दिखलाऊँगा कि मैं मि.मैकहीथ से अपनी बेटी की शादी के पक्ष में हमेशा से था। दरअसल, तब तक मुझे यकीन नहीं हुआ था कि मेरी बेटी ने सही चुनाव किया है जब तक मैंने अपने दामाद की व्यापारिक गतिविधियों पर एक निगाह नहीं डाल ली। तब मैंने देखा कि निम्न वर्गों की सेवा करना उनका एक सिद्धान्त है। यह बात तत्काल ही मेरी प्रवृत्ति से मेल खा गयी। अधिकांश लोग निम्न वर्गों के बारे में अपेक्षाकृत कम सोचते हैं; यह एकदम ग़लत है। वे हमसे कम सुसंस्कृत हो सकते हैं, अपने तौर-तरीकों में कम परिष्कृत, यहाँ तक कि रूखे हो सकते हैं; हो सकता है कि उन्हें इस ज़रूरत का बस रत्ती भर गुमान हो कि अगर पूरी दनिया को उन बर्बर हालात में पहुँचने से रोकना है जिसमें अक्सर केवल वे लोग ही रहते हैं, तो सभी मनुष्यों को, चाहे वे ऊँचे हों या नीचे, सामंजस्य में रहना होगा : लेकिन इन सबके बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि उन्हें मान्यता का अधिकार है। अब मैं एक व्यापारिक सुझाव देना चाहूँगा : आप सज्जन और आप मेरे दामाद, रेज़र-ब्लेड और घड़ियाँ, घरेलू बर्तन और भगवान जाने क्या-क्या बेचते हैं। लेकिन कोई इंसान केवल इन चीज़ों पर नहीं जी सकता। अगर उसकी हजामत बनी हुई है और वह समय जानता है तो केवल इतने से ही वह सन्तुष्ट नहीं हो जाता। आपको इससे आगे जाना होगा। आपको उसे संस्कृति बेचनी होगी। मेरा मतलब है, किताबें, सस्ते उपन्यास, वे चीज़ें जो जीवन को बदरंग रूप में चित्रित नहीं करतीं बल्कि उन्हें चटख रंगों में दिखाती है; वे चीज़ें जो साधारण आदमी को एक श्रेष्ठतर दुनिया दिखाएँगी, जो समाज के उच्चतर स्तरों के बेहतर रिवाज़ों और सामाजिक रूप से निर्वाचित लोगों की प्रशंसनीय जीवन शैली से उसका परिचय कराएँगी। मैं अभी मुनाफे के बारे में नहीं सोच रहा हूँ-वह भी शायद अच्छा-खासा हो जाए-मैं मानवता के बारे*

में सोच रहा हूँ जिसकी इस तरह से एक महान सेवा की जा सकती है। संक्षेप में, उन्हें थोड़ा रोमांच दें।'

ए.बी.सी. शॉप सिण्डिकेट की ओर से मि.पीचम को उनके सुझाव के लिए मि.आरों ने धन्यवाद दिया। फिर बूढ़ा हॉथॉर्न उठा और उसने मज़ाकिया अन्दाज़ में एक वाकया सुनाया जो कुछ महीने पहले हुआ था।

प्रसन्नता के साथ उसने कहा, *'इस मौक़े पर मैं इस बात से इंकार नहीं करूँगा कि एक निश्चित रूप से, शुद्धतः व्यक्तिगत अनुभव ने नेशनल क्रेडिट बैंक के लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि हम विशाल चेन शॉप्स के बीच की आत्मघाती प्रतियोगिता को ख़त्म करने के लिए अपनी शक्ति में सबकुछ करें। यह अनुभव था बैंक में मिसेज़ मैकहीथ का आना जो इस समय हमारे बीच बैठीं हैं। उन्होंने व्यापार के बारे में कुछ नहीं कहा। लेकिन उनके शब्दों ने हमें इतना भावुक कर दिया-क्योंकि बुजुर्गों के पास भी दिल होता है-कि हम उनके उस पति के पास जाने के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे जिनके साथ काफी बुरा व्यवहार हुआ था और जो निर्दोष जेल की कोठरी में पड़े हुए थे। और उन्हीं के साथ एकीकरण पर आगे की सभी चर्चाएँ हुईं। और ऐसा नहीं था-मैं यह ज़रूर कहूँगा भले ही यह कितने भी पुराने फैशन का लगे-ऐसा नहीं था कि व्यापारिक विलक्षणता ने इस मुश्किल स्थिति से बाहर का रास्ता दिखाया हो। यह था-प्यार।'*

जब पॉली खड़ी हुई तो वह पहले से भी ज़्यादा पके हुए आड़ू के समान सुन्दर दिखी। उसने निम्नलिखित छोटा-सा भाषण दियाः

'हालाँकि हम स्त्रियों का भाषण देना लोकप्रिय नहीं है, क्योंकि पुरुषों को उनके विशेषाधिकार में अतिक्रमण पसन्द नहीं है, लेकिन मैं इतना कहना चाहूँगी कि मैं इस बात पर कितनी अधिक खुश हूँ कि मैं हमेशा अपनी भावनाओं पर चली और अपने पति के लिए अपने प्यार में कभी डगमगाई नहीं। निश्तिच रूप से, हम स्त्रियाँ कभी जगत के रचयिताओं *जैसी स्पष्टता के साथ नहीं सोच सकतीं, लेकिन मेरे मामले से आप देख सकते हैं कि सच्चा प्यार काफी सफल भी हो सकता है। लेकिन उसे पर्याप्त शक्तिवान होना चाहिए और अगर लोग उसे कुटिल दृष्टि से देखें तो भी उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए। हमारे पुरुष जो युक्तिपूर्ण योजनाएँ बनाते हैं वे अक्सर काफी उपयोगी हो सकती हैं; लेकिन हम औरतें कभी-कभी ज़्यादा सफल होती हैं-सिर्फ प्यार के कारण, भले ही वह किसी मौक़े पर बेहद मूर्खतापूर्ण दिखे। क्योंकि मुझे वह तमाम वाकये याद हैं जब मैक, यह ठण्डे दिमाग से काम करने वाला व्यवसायी, ने सबकुछ छोड़ दिया, अपना पूरा*

कैरियर दाँव पर लगा दिया, बस इसलिए कि वह मुझे न खो बैठें, जिसे उसने अपना दिल दिया था। है न, मैक?'

अन्त में मैक बोला :

'मेरी प्यारी पत्नी, मेरे प्यारे ससुर और मेरे दोस्तो! कुल मिलाकर उस नतीजे से सन्तुष्ट हूँ जिस पर आज हम तमाम ग़लतफ़हमियों के बाद पहुँचे हैं। मैं यह बात बिल्कुल नही छिपाता : मैं निम्न वर्ग से आता हूँ। मैं हमेशा इस तरह टेबल पर नहीं बैठा हूँ, और आप जैसे सम्मानित लोगों के साथ तो शायद ही कभी बैठा हूँ। मैंने अपनी गतिविधियाँ छोटे पैमाने पर दूसरे तरह के माहौल में शुरू की थीं। लेकिन, कमोबेश, मेरी दिलचस्पियाँ वहीं रही हैं। किसी इंसान की सफलता या तो उसकी महत्वाकांक्षाओं में देखी जाती हैं या फिर उसकी जटिल योजनाओं में। मैं बस कंगाली से दूर रहना चाहता था। मेरा सूत्रवाक्य हमेशा से यह रहा है : बीमार आदमी मरता है, मज़बूत आदमी लड़ता है। और आख़िरकार ये मेरे जैसे लोग ही होते हैं जो शिखर तक पहुँचते हैं। अब अगर शिखर का कोई व्यक्ति इस सूत्रवाक्य पर न चले तो जल्दी ही वह अपने आपको फर्श पर पाएगा। मैं अपने मित्र आरों की इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि व्यापार जगत को हमेशा मेरे जैसे चरित्र वालों की ज़रूरत होती है। बाकी लोग उस पाउण्ड से छोटे-से-छोटा मुनाफ़ा नहीं कमा सकते जो ईश्वर ने उनके हाथ में रखा है। मैं कोई भविष्यवाणी *नहीं करूँगा, लेकिन मेरा मानना है कि हमारा सिण्डिकेट अपना काम करेगा। एक बात तो साफ़ है : फिलहाल कीमतें चाहें जितनी भी नीची हों, वे हमेशा ऐसी ही नहीं बनी रहेंगी। इस सूत्रवाक्य के साथ मैं अपनी बात ख़त्म करता हूँ: हमेशा ऊपर की और!* हर सिक्के के साथ आकाश की ओर (per aspera, ad astra)! *और : कभी पीछे मत देखो!'*

मि.मैकहीथ के इन आखिरी वाक्यों के दौरान, वहाँ मौजूद लोग अचानक गम्भीर हो गये। सभी को लगा कि यहाँ उसने एक बुनियादी समस्या को छुआ है।

चिन्तन में मग्न उन्होंने अपने गिलास खाली किये।

ग़रीब आदमी का सिक्का

लेकिन जिनके पास कोई टका नहीं
हे ईश्वर, वे क्या करें?
गिरते हैं वे और हो जाते हैं दफ़्न
जबकि दुनिया चलती है अपने रास्ते?

ओह नहीं, हमारे पास नहीं होगा फिर कोई पाउण्ड,
अगर उन्हें करने दिया गया ऐसा!
क्योंकि उनके खटे और पिसे बिना
हममें से कोई भी मोटा नहीं होगा।

(नर्सरी की कविता)

सैनिक फ्यूकूम्बी का सपना

फ्यूकूम्बी भी सेण्ट पॉल्स में ही था। दलाल पर अपने हमले के बाद, ओल्ड ओक स्ट्रीट में घर पर वह सिर्फ एक बार गया था। और बियरी ने उसे तत्काल बाहर फिंकवा दिया था।

वह सेण्ट पॉल्स इसलिए गया था क्योंकि उसे उम्मीद थी कि वहाँ वह मि. पीचम से बात कर पाएगा। उसे पता था कि पीचम का *ऑप्टिमिस्ट* से कुछ लेना-देना है। लेकिन जाहिर है कि वह कभी उनके करीब नहीं पहुँच पाया। इसलिए वह चर्च में बैठ गया, जो कम-से-कम गर्म था और उसने पाउण्ड्स के बारे में प्रवचन सुना।

इसके बाद वह गोदी पर टहलता रहा; बिना घर के, बिना दोस्तों के, और पुलिस से बचते हुए। उसकी हालत बद से बदतर होती जा रही थी। वह मैरी सॉयर के मामले के नतीजे के बारे में कुछ नहीं जानता था, क्योंकि वह अखबार नहीं पढ़ता था।

नवम्बर की सर्द सुबह वेस्ट इण्डिया रोड पर एक बेकरी की दुकान के बाहर कुछ चहल-पहल थी।

एक छोटे-से लड़के ने काउण्टर से रोटी का टुकड़ा खींचा और दरवाज़े से बाहर भाग गया। दुकान में मौजूद लोगों ने शोर मचाया, जिस पर बाहर गुज़र रहे लोगों ने चोर का पीछा करना शुरू कर दिया। वह काफी तेज़ दौड़ा, जितनी तेज़ उसके छोटे-छोटे पैर भाग सकते थे, मगर वह ज़्यादा दूर नहीं जा सका। सड़क के छोर पर एक आदमी ने उसे टंगड़ी मार दी। वह फुटपाथ पर गिरा, पकड़ा गया, दुकान में वापस ले जाया गया, और कुछ देर बाद उसे पुलिस ले गयी।

लोग आपस में भुनभुनाते हुए बिखर गये।

जिन लोगों ने उस लड़के का पीछा किया था उनमें अनिश्चित आयु का एक फटेहाल आदमी था। जब उस बच्चे को पुलिस के हवाले किया गया, तो वह गोदी की तरफ चला गया। वह एक ऐसी जगह जानता था जहाँ वह रात काट

सकता था।

ठीक-ठीक कहा जाय, तो यह वही आदमी था जिसके पैर से लड़कर वह लड़का गिरा था। यह कार्यवाही शुद्ध रूप से यांत्रिक रूप से की गयी थी।

जब वह ब्रिज के नीचे पहुँचा तो उसने अपनी जेब से एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच चुका एक टुकड़ा निकाला, उसके ऊपर का कागज़ हटाया और उसे धीरे-धीरे खाया। फिर उसने उस जूते के अवशेष उतारे जिसे वह अब भी एक पैर में घसीट रहा था, एक पत्थर उठाया, उसके नीचे से दो अखबार खींचकर निकाले, बैठा, अखबार को अपने पैरों पर फैलाया, अपना सिर दोनों हाथों और कोट पर टिकाया, जिसे उसने उतारा था, और जितना कसकर मोड़ सकता, उतना मोड़ा था। फिर वह सो गया। और उसने सपना देखा :

बदहाली के कई वर्षों के बाद विजय का दिन आया।

जनता जागी; अन्ततः उसने उसे सताने वालों को झकझोर दिया; सिर्फ एक धुलाई में ही उसने अपने आश्वासन-दाताओं से छुटकारा पा लिए; जो उसके सबसे भयानक शत्रु थे; अन्ततः उसने सारी उम्मीदें छोड़ीं और जीत हासिल कर ली। हर चीज़ बदल गयी। भोड़ेंपन का सारा गौरव खो गया, उपयोगिता ने यश हासिल किया, मूर्खता ने अपने विशेषाधिकार खो दिये, बर्बरता अब सफलता की कुंजी नहीं रही। इसमें से पहला या दूसरा नहीं, बल्कि तीसरा या चौथा इस महान *फैसले* के दिन में देरी कर रहे थे।

हर व्यक्ति जानता है कि यह क्या है। इस फैसले के दिन पर अक्सर चर्चाएँ हुईं हैं; न जाने कब से दुनिया इसके बारे में बात करती रही है। हर राष्ट्र और नस्ल ने बेहद विस्तृत रूप में इसकी कल्पना की है। कुछ लोगों ने इसे समय के अन्त तक टालने की कोशिश की लेकिन टाल-मटोल का यह प्रयास संदिग्ध हो गया; जो भी हो राष्ट्र इतना इंतज़ार नहीं कर सकते। समस्त जीवन के अन्त पर फैसले का दिन आने का कोई सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि, आखिरकार, उसे तो जीवन की भूमिका के समान होना था। इस महान इंसाफ़ के पहले असली जीवन की बात करना भी स्वाभाविक रूप से बेकार है।

वह अब हुआ।

सपना देखने वाला ही न्यायाधीश था। निश्चित रूप से उसने यह स्थान कठोर संघर्ष के बाद हासिल किया था, क्योंकि, उम्मीदवारों की चीखती हुई और इस विशेषाधिकार के लिए लड़ती हुई एक भयावह भीड़ मौजूद थी। लेकिन चूँकि एक स्वप्नदर्शी व्यक्ति को कोई भी उसकी इच्छित वस्तु पाने से नहीं रोक सकता,

इसलिए हमारा यह मित्र इतिहास के सबसे बड़े दोषारोपण का, इतिहास के एकमात्र वास्तविक मूल, बोधगम्य और न्यायसंगत न्यायाधिकरण का न्यायाधीश बन गया।

उसे न सिर्फ जीवित लोगों का बल्कि मृत लोगों का भी इंसाफ़ करना था; वे सभी लोग जिन्होंने किसी न किसी तरीके से, शब्दों से या कार्य से ग़रीब और निरीह लोगों का बुरा किया था।

सैनिक फ्यूकूम्बी, जो अब सवोच्च न्यायाधीश था, की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी थी। उसने इस पूरी कार्यवाही में लगने वाले समय का आकलन कई सौ वर्षों में किया। उन सभी लोगों को अभी शिकायतें करने की इजाज़त थी जो कभी भी पृथ्वी पर जिये थे।

काफी चिन्तन के बाद, जो स्वयं कई महीनों तक चला था, न्यायाधीश ने उस व्यक्ति के साथ आरम्भ करने का निर्णय लिया जिसने डूबने वाले सैनिकों की यादगारी पूजा वाले बिशप के प्रवचन के अनुसार, उस नीतिकथा का आविष्कार किया था जो पिछले दो हज़ार वर्षों से व्याख्यान मंच पर इस्तेमाल की जा रही है। सर्वोच्च न्यायाधीश की दृष्टि में यह एक विशेष अपराध था।

मुकदमा एक अहाते में चला। ताज्जुब की बात यह थी कि वहाँ धुले हुए कपड़े सूख रहे थे, और बाड़े में चौदह कुत्ते थे जो हर बात को ग़ौर से सुन रहे थे। उन्हें भोजन नहीं दिया गया था और न्याय होने तक उन्हें भोजन मिलना भी नहीं था।

आरोपी को दो भिखारी लेकर आए।

वह कोई दुकानदार या कारीगर था, जैसा कि उसके सस्ते लेकिन साफ़ कपड़ों और सेल्यूलाइड कॉलर से दिख रहा था।

न्यायाधीश के टेबल पर एक चाकू और स्याही से लिखा गया एक पत्र था जो एक मुद्रित दस्तावेज़ के साथ नत्थी था।

न्यायाधीश द्वारा आरोपी से यह पूछने के साथ कार्यवाही शुरू हुई कि क्या उसे मालूम था कि उसकी बात का, दरअसल उसकी सभी बातों का कितना दूरगामी प्रभाव पड़ने वाला था।

आरोपी ने जवाब दिया : हाँ, उसे हर जगह एक धार्मिक शिक्षक के रूप में जाना जाता था।

उसका जवाब, और जो कुछ भी कहा जा रहा था, एक विशालकाय भिखारी, कोई मि.स्मिथी, द्वारा दर्ज़ किया जा रहा था, जिन्हें न्यायाधीश सटीक

तरीके से ब्यौरे दर्ज़ करने की उनकी क्षमता के कारण जानते थे। एक बार उन्होंने अपने कर्मचारी फ्यूकूम्बी की कमाई के ब्यौरे दर्ज़ करने में असाधारण सटीकता दिखाई थी जब फ्यूकूम्बी ने भीख माँगना शुरू किया था।

सर्वोच्च न्यायाधीश का दूसरा प्रश्न था : क्या वह अपनी नीति कथा में तथ्यों को ग़लत तरीके से पेश करने और फिर उसे फैलाने का दोषी है।

आरोपी ने ज़ोर देकर इन आरोपों का खण्डन किया।

उसने कहा कि उद्यमी प्रवृत्ति और अच्छे प्रबन्धन से एक पाउण्ड से पाँच या दस पाउण्ड हासिल करना सम्भव है।

जब पूछा गया कि *किस प्रकार का* प्रबन्धन तो वह बस यही दोहरा सका : बस साधारण उपयुक्त प्रबन्धन।

जब न्यायाधीश ने और खोद कर पूछा, तो उसने स्वीकार किया कि वह व्यावहारिक मामलों और ब्यौरों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता। इसलिए ऐसी चीज़ों के बारे में वह बहुत थोड़ा जानता है।

न्यायाधीश ने यह जानने के लिए उसे एकटक घूरा कि यह सच है या नहीं। फिर उसने टेबल पर इतनी ज़ोर से मुक्का मारा कि वह ज़ंग लगा चाकू और पत्र हवा में उछल गये। लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। उसने फिर बोलना शुरू किया और पूछा :

'ऐसा माना जाता है कि तुमने कहा था कि कुछ लोगों को नहीं बल्कि *हर किसी* को उसका पाउण्ड मिलता है। मैं तुम्हें बताना चाहूँगा कि अभियोजन पक्ष का मुख्य मुद्‌दा यही है।'

आरोपी ने ऐसी बातें कहने की बात स्वीकार की। बस वह इस बात पर काफी अचम्भित लगा कि मुख्य मुद्‌दा यह है।

न्यायाधीश ने शान्त स्वर में कहना शुरू किया, 'फिर बताओ कि ऐसा तुम्हें किसने कह दिया कि धरती के हर इंसान को ऐसा पाउण्ड मिलता है, जो फिर बढ़कर पाँच या दस पाउण्ड में तब्दील हो जाता है?'

'हर कोई ऐसा कहता है,' आरोपी ने हल्के स्वर में जवाब दिया क्योंकि उसे अभी भी ताज्जुब हो रहा था कि यह मुख्य मुद्‌दा क्यों है।

न्यायाधीश ने कठोर स्वर में घोषणा की, 'फिर हम उन लोगों को बुलाएँगे जिन्होंने तुम्हें ऐसा बताया, और उनसे पूछेंगे।'

उसने मध्याह्न-भोजन वाली घण्टी बजायी और सूख रहे कपड़ों के पीछे से कई लोग आए, जिन्होंने आरोपी की तरह के कपड़े पहन रखे थे और उनके भी

सेल्यूलाइड कॉलर थे। दरअसल, वे सभी आरोपी के परिचित थे, उसके जवानी के दोस्त, पड़ोसी, अध्यापक और मालिकान और यहाँ तक कि सम्बन्धी।

वे न्यायाधीश की टेबल के सामने खड़े थे और उनसे वही सवाल पूछा गया।

उन सभी ने बताया कि उन सभी को एक पाउण्ड मिला। यह पाउण्ड था उनकी समझ, नेक व्यवसाय करने का उनका ज्ञान और उनकी उद्यमशीलता।

'और तुम्हारे पास कुछ और भी था?' न्यायाधीश ने पूछा।

फिर एक ने स्वीकार किया कि उसके पास बढ़ई की कार्यशाला थी। यह आरोपी का पिता था।

एक दूसरे को अपने माता-पिता से धन मिला था जिसके कारण वह स्कूल जा सका। यह आरोपी का अध्यापक था।

न्यायाधीश ने इन सभी कथनों पर ऐसे सिर हिलाया, जैसे कि उसने इसी की अपेक्षा की हो, और किसी चीज़ की नहीं। उसने कुत्तों की और देखा जो अपने बाड़े के लोहे की छड़ों से धक्कम-पेल कर रहे थे। और उन पर बिना कोई आवाज़ किये हँसा।

और उसने बस इतना कहा, 'तो इस पाउण्ड के साथ और भी बहुत कुछ मिलता है?' और गवाहों से उसने कहा :

'क्या तुम सबने अपने पाउण्ड के साथ कर्तव्यपरायणता के साथ व्यापार किया है?'

सभी ने ऊँचे स्वर में सहमति देते हुए कहा कि उन्होंने अपने पाउण्ड के साथ अपनी समस्त क्षमता के साथ व्यापार किया; कि जो उन्हें मिला उसे उन्होंने बचाकर रखा, उसे बढ़ाया, और बच्चे तक पाले और उनमें से प्रत्येक को एक पाउण्ड दिया।

न्यायाधीश फिर से कुत्तों पर हँसा।

इसके बाद वह फिर से आरोपी की और मुख़ातिब हुआ। उसने उससे पूछा कि क्या वह दूसरे लोगों से नहीं किला है, ऐसे लोगों से जिनके पास वह पाउण्ड नहीं था जो इन गवाहों के पास था।

आरोपी ने अपना सिर झटका।

तब सर्वोच्च न्यायाधीश ने एक बार फिर मध्याह्न भोजन की घण्टी बजायी, और सूखते कपड़ों के पीछे से कुछ दूसरे लोग प्रकट हुए। वे पहले के लोगों से ख़राब पोशाकें पहने थे, और वे ज़्यादा थकी-सी चाल से चल रहे थे।

न्यायाधीश ने पूछा, 'तुम लोग कौन हो? और तुम यहाँ पर पहले से मौजूद

गवाहों से अलग क्यों खड़े थे?'

ऐसा लग रहा था कि वे दूसरों के नौकर और कर्मचारी थे। वे अपने मालिकों के साथ खड़े होने की धृष्टता नहीं करते।

न्यायाधीश ने उनसे पूछा, 'क्या तुम आरोपी को जानते हो?'

वे उसे जानते थे। यही वह आदमी था जो अक्सर उनसे बात करता था। तमाम बातों के अलावा उसने उन लोगों को बताया था कि हर आदमी अपनी आत्मिक और शारीरिक शक्ति के रूप में भगवान से एक पाउण्ड प्राप्त करता है जिसे उसे बढ़ाना चाहिए और उसका अच्छा उपयोग करना चाहिए। यह बातें उन्होंने खुद उसके मुँह से सुनी थीं।

न्यायाधीश ने पूछा, 'तो, वह भी तुम्हें जानता है?'

'बिल्कुल, जानता है,' उन्होंने जवाब दिया और आरोपी को मानना पड़ा कि वह उन्हें जानता था।

न्यायाधीश ने कठोर स्वर में पूछा, 'क्या तुमने अपना पाउण्ड बढ़ाया?'

वे डर से सिमटे और बोले, 'नहीं।'

'क्या उसने देखा कि तुम लोगों का पाउण्ड नहीं बढ़ा?'

इस सवाल पर पहले वे समझ नहीं पाए कि क्या जवाब देना चाहिए। लेकिन कुछ समय बाद एक छोटा-सा लड़का उनके बीच से निकल कर आगे आया, जो बिल्कुल उस लड़के की जीवित प्रतिमूर्ति था जिसे सैनिक फ्यूकूम्बी ने एक बेकरी के सामने अपनी उस टाँग से टँगड़ी मार दी थी जो काठ की बनी थी। वह बहादुरी से न्यायाधीश के सामने खड़ा हुआ और तेज़ स्वर में बोलाः

'उसने ज़रूर देखा होगा; क्योंकि सर्दियों में हम जमते थे, और खाने के बाद भी और खाने के पहले भी हम भूख से मरते थे। खुद ही देख लीजिये और समझ लीजिये कि हमसे ऐसा दिखता है या नहीं।'

उसने दो उंगलियाँ अपने मुँह में फँसायी और सीटी मारी; एक गीले कपड़े के पीछे से, जो सूखे रहे गीले कपड़ों से कहीं अधिक गीला था, एक औरत बाहर आई। और वह औरत एकदम मैरी सॉयर जैसी थी।

न्यायाधीश अपनी कुर्सी में ही आगे की ओर झुका ताकि उसे ठीक ढंग से देख सके।

उसने तेज़ आवाज़ में कहा, 'मैरी, मैं तुमसे पूछना चाहता था कि जहाँ से तुम आ रही हो, वह जगह ठण्डी है, लेकिन यह सवाल गैर-ज़रूरी है। मैं *देख* रहा हूँ कि जिस जगह से तुम आ रही हो, वह ठण्डी है।'

फिर उसने देखा कि वह थकी हुई है, इसलिए उसने कहा :

'बैठ जाओ मैरी। तुम काफी चल चुकी है।'

मैरी ने चारों और कुर्सी के लिए नज़र दौड़ाई, लेकिन वहाँ कुर्सी नहीं थी।

न्यायाधीश ने फिर घण्टी बजायी और हवा से एक पतले से स्तम्भ के आकार में, जो किसी मँझोले आकार के पेड़ से मोटा न होगा, बर्फ गिरने लगी और तब तक गिरती रही जब तक बर्फ का एक छोटा-सा ढेर नहीं बन गया जिस पर वह बैठ सकती थी। न्यायाधीश ने बर्फ गिरने तक इंतज़ार किया और फिर कहा :

'वहाँ थोड़ी ठण्ड लगेगी; और जब वह गर्म हो जाएगा तो पिघल जाएगा, और तुम्हें फिर खड़े होना पड़ेगा। लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता।'

फिर गवाहों से उसने कहा :

'बात साबित हो गयी है। तो तुम्हें ऐसी जगह धकेल दिया गया जहाँ दाँतों की किटकिटाहट और क्रन्दन था?'

एक ने बेलाग-लपेट होते हुए कहा, 'नहीं, हमें कभी अन्दर नहीं जाने दिया गया।'

न्यायाधीश ने तनाव के साथ उन्हें देखा। इसके बाद वह फिर आरोपी की और मुड़ा।

'तुम्हारे ख़िलाफ़ यह मुकदमा काफी बुरा दिख रहा है, बरखुरदार। तुम्हारा बचाव करने के लिए तुम्हारे पास कोई होना चाहिए। लेकिन वह तुम्हारे लिए उपयुक्त होना चाहिए।'

उसने घण्टी बजायी और घर के अन्दर से दुष्टता का भाव लिए एक छोटा-सा आदमी आया।

न्यायाधीश बुदबुदाया, 'क्या तुम बचाव पक्ष के वकील हो? तो फिर आरोपी के पीछे खड़े हो जाओ।'

जब वह छोटा आदमी आरोपी के पीछे अपनी जगह पर खड़ा हुआ तो आरोपी का रंग पीला पड़ गया। उसे अहसास हुआ कि अहसास हुआ कि बचाव के लिए यह वकील देने के पीछे न्यायाधीश के इरादे बुरे थे।

अब सर्वोच्च न्यायाधीश ने स्थिति को समझाया। अदालत ने आरोपी के दो कथनों को सत्य सिद्ध मान लिया था। पहला, कि पाउण्ड का उपयोग किया जा सकता है और उसे बढ़ाया जा सकता है, और दूसरा, जो इस पाउण्ड का इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं, उन्हें बाह्य अन्धकार में फेंक दिया जाता है, जहाँ दाँतों की

किटकिटाहट और क्रन्दन है। लेकिन इस कथन को कि *सभी* मनुष्यों को एक पाउण्ड मिला है, अदालत ने सत्य सिद्ध नहीं माना था।

न्यायाधीश ने फिर से बोलना शुरू किया, 'मैरी सॉयर, आपने मि.मैकहीथ के साथ एक करार किया। क्या उस करारनामे में ऐसा कोई नियम था कि आपकी दुकान के पास कोई और दुकान नहीं शुरू की जाएगी?'

'नहीं।'

'तुमने ध्यान क्यों नहीं दिया कि ऐसा कोई प्रावधान नहीं है?'

'मैं नहीं जानती, फ्यू।'

सर्वोच्च न्यायाधीश ने घण्टी बजायी। सूखते कपड़ों के बीच में से क्रेन लिए एक लम्बा-सा आदमी आया। यह आत्महत्या करने वाली औरत का भूतपूर्व अध्यापक था।

न्यायाधीश ने आरोप लगाया, 'तुमने अपने विद्यार्थियों को पढ़ना नहीं सिखाया। ऐसा क्यों?'

लम्बे आदमी ने तीखी निगाह से औरत को देखा और फिर कहा :

'वह पढ़ सकती है।'

'लेकिन करारनामे नहीं, करारनामे नहीं!' न्यायाधीश चीखा और काफी नाराज़ हो गया।

अध्यापक के चेहरे पर आहत होने का भाव नज़र आने लगा।

वह बड़बड़ाया, 'व्हाइट चैपल में मेरे विद्यार्थियों को करारनामे पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती। उन्हें काम करना सीखना चाहिए, और फिर उन्हें करारनामों की कोई ज़रूरत नहीं होती।'

न्यायाधीश ने तत्काल पूछा, 'कन्फेडरेसी का क्या अर्थ होता है?'

अध्यापक ने अचम्भित होते हुए जवाब दिया, 'गठजोड़। लेकिन इसका इस मामले से क्या लेना?'

न्यायाधीश ने सन्तोष के साथ कहा, 'ठीक। गठजोड़। और एटिका का क्या अर्थ है?'

अध्यापक ने एक ठोर चुप्पी बनाए रखी।

सर्वोच्च न्यायाधीश थोड़ा निराश दिखा लेकिन उसने बोलना जारी रखा।

उसने आरोपी से कहा, जो अपना सिर छाती में गड़ाए दीनता से वहाँ खड़ा था, 'क्या तुमने अपनी स्कूली शिक्षा का आनन्द लिया था?'

जब सेल्यूलॉइड कॉलर वाले इस व्यक्ति ने हामी भरी तो न्यायाधीश ने

पूछा :

'तो एटिका क्या है?'

लेकिन वह नहीं जानता था। अध्यापक ने उसे बताने की कोशिश की, क्योंकि उसे यह ग़लत लगा कि आरोपी इतना कम जानता है।

न्यायाधीश ने कहा, 'हाँ। तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं पता।'

लेकिन इस पर उसका बचाव कर रहा छोटा-सा आदमी फूट पड़ा और चीखा :

'वह पर्याप्त जानता था। हमारे लिए वह पर्याप्त जानता था।'

'जाहिर है,' न्यायाधीश ने बिना विरोध किये कहा। यह शुद्ध रूप से यांत्रिक ढंग से हुआ।

जब उसने फिर घण्टी बजायी तो बैरे का एप्रन पहने एक आदमी चलकर न्यायाधीश की टेबल के पास आ गया। यह वही शख़्स था जो फ्यूकूम्बी के पहले शराबघर का मालिक था।

'क्या यह आदमी लिख सकता है?'

सवाल अध्यापक से पूछा गया था। उसने गवाह की ओर देखा और पहचाना कि वह भी उसका विद्यार्थी था और फिर अपना बड़ा-सा सिर हिलाकर हामी भरी।

न्यायाधीश ने गुस्से के साथ उस गवाह से कहा, 'लेकिन तुमने मेरे लिए यह कभी नहीं लिखा कि तुम्हारे ग्राहक तभी तक रहते हैं जब तक वे नये मकान बना रहे होते हैं।'

बैरे ने जवाब दिया, 'मैं ऐसा नही लिख सकता था। जब मैंने वह जगह ख़रीदी तो मेरे पास पर्याप्त धन नहीं था और अपने कर्ज़ चुकाने में सक्षम होने और फिर से बैरा बन जाने की मुझे खुशी थी।'

फिश्र से नाराज़ होते हुए न्यायाधीश चीखा, 'तो वह *ऐसा* नहीं लिख सकता था।'

लेकिन फिर उसने अपने आप पर काबू किया और थोड़ी देर के लिए कुछ नहीं बोला।

जब अगले सवाल का इंतज़ार करते हुए सभी घेरा बनाए खड़े थे तो न्यायाधीश उठा और चलकर अध्यापक के पास गया, और उसने उससे दोस्ताना अन्दाज़ में, बल्कि करीब-करीब खुशामद करते हुए पूछा, कि एटिका का क्या अर्थ है। वह अपनी किताब में इतनी आगे तक नहीं पढ़ पाया था क्योंकि वह किताब

उससे ले ली गयी थी। लेकिन अध्यापक ने बस उसे देखा और कोई जवाब नहीं दिया।

सर्वोच्च न्यायाधीश ने आह भरी और कार्यवाही को जारी किया।

लेकिन वह ठीक से समझ नहीं पा रहा था कि आगे कैसे बढ़ें।

उसने मुख्य गवाह की ओर फिर से देखा और देखा कि वह एक बार फिर से सिलाई कर रही है। वह सियन-दर-सियन अपनी युई घुमा रही थी, लेकिन उसके पास सिलाई की सामग्री नहीं थी क्योंकि आपूर्तियाँ बन्द हो गयीं थीं इसलिए वह हवा में सिलाई कर रही थी जिससे कोई कमीज़ नहीं बन रही थी।

न्यायाधीशन सहृदयता और नरमी केसाथ कहा, 'अगर समानों की आपूर्ति न रुकती और अगर नयी दुकानें न खुली होतीं तो शायद तुम अपने धन्धे को सफल बना लेती?'

उसने थके स्वर में जवाब दिया, 'क्यों नहीं? मेरे पास सिलाई करने वाली लड़कियाँ थीं।'

न्यायाधीश ने फौरन कहा, 'यह महत्वपूर्ण बात है। लेकिन हम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि बातों को स्पष्ट कर पाना इतना मुश्किल होगा।'

वह खड़ा हुआ और बाड़े के पास गया। कुत्ते खुशी में पिंपियाए क्योंकि उन्हें लगा कि उन्हें खाना मिलने जा रहा है। लेकिन अभी समस्या का समाधान नहीं हुआ था।

सर्वोच्च न्यायाधीश ने अहाते में नज़र दौड़ाई। वहाँ बचाव पक्ष के गवाह खड़े थे, जो आरोपी का समर्थन करते थे, सबके सब खाए-पिये, अच्छे कपड़े पहने, भविष्य और सफलताओं के साथ; और उनके विरोध में खड़े थे, कुपोषित, अकालप्रौढ़, अभी भी बर्फ़ के ढेर पर बैठकर सिलाई करती औरत, अपनी बाँह मोड़े खड़ा लड़का, मानो वह रोटी का बड़ा-सा टुकड़ा पकड़े हो, जबकि उसके हाथ में ऐसा कोई रोटी का टुकड़ा नहीं था।

जब अपने काठ के पैर पर लंगड़ाते हुए न्यायाधीश अपनी कुर्सी पर पहुँचा तो वह आरोपी के पास से गुज़रा। उसने पल भर को सोचा और फिर धीमे स्वर में कहा :

'तो क्या *तुम्हारे* समझ में नहीं आता?'

लेकिन सेल्यूलाइड कॉलर वाला वह इंसान बस अपना कन्धा उचका सका और उसने कुछ नहीं कहा।

न्यायाधीश ने आह भरी, 'ये सारा मतभेद, बेवजह! और फिर भी किसी चीज़ पर तो ठीकरा फोड़ना ही होगा। लेकिन किस चीज़ पर?'

वह अनिर्णय में यह सोचते हुए पल भर के लिए खड़ा रहा कि क्या फिर से न्यायाधीश की कुर्सी में उसके बैठने का कोई मतलब है।

उसने सोचा, 'यह बस मेरी अज्ञानता है। मैं कुछ भी खोजकर निकाल पाने के लिए बहुत अशिक्षित हूँ, बहुत ज़्यादा अशिक्षित।'

अचानक उसने काम शुरू कर दिया। उसे वह शक्ति याद आ गयी थी जो उसे कुछ ही समय पहले मिली थी। वह फौरन टेबल के पास गया। तेज़ी से हाथ घुमाकर उसने घण्टी बजायी।

सूखते कपड़ों के पीछे से एक लम्बी कतार में *एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका* के खण्ड आए जो संख्या में चौबीस थे। वे मोटे थे और बड़े आडम्बरपूर्ण तरीके से चल रहे थे।

वे चार की कतार में सैनिकों के समान न्यायाधीश के सामने खड़े हो गये।

न्यायाधीश ने सम्मानपूर्ण स्वर में बोलना शुरू किया, 'मेरे दोस्तो, क्या आप मुझे इस बात की वजह के बारे में कुछ बता सकते हैं कि क्यों हममें से कुछ लोग, अल्पसंख्यक, अपनी सम्पत्ति बढ़ा लेते हैं और एक पाउण्ड से पाँच या दस पाउण्ड बना लेते हैं, जैसा कि बाइबिल आदेश देती है; जबकि दूसरे लोग भारी बहुसंख्या, अपने लम्बे और कठिन मेहनतकश जीवन के बाद, अगर कुछ बढ़ा पाते हैं, तो वह है अपनी दरिद्रता? मेरे दोस्तो, भाग्यशाली लोगों का यह पाउण्ड आखिर है क्या जो इतना मुनाफ़ा पैदा करता है, और मैंने सुना है कि जिसको लेकर एक भयंकर युद्ध लड़ा जाता है? इसमें आखिर होता क्या है?'

चौबीसों खण्डों ने एक घेरा बना लिया और आपस में विचार-विमर्श किया। फिर उनमें से एक आगे आया।

उसने तेज़, कर्कश और आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा, 'मैं आपको *पूँजी* के बरी में कुछ जानकारी दे सकता हूँ। पैसा वह चीज़ है जो ठीक उसी तरह ब्याज़ पैदा करता है जैसे गाय बछड़े पैदा करती है। चाहे पैसा विरासत में मिला हो या हासिल किया गया हो, जिसका भी इस पर नियंत्रण होगा, उसे इससे ब्याज़ प्राप्त होगा। शायद वह आपकी सहायता करेगा।'

न्यायाधीश मैरी सॉयर की तरफ मुड़ा :

'अगर मुझे सही याद आ रहा है तो तुम्हारे पास भी पैसा था। मुझे समझो, मैं यह नहीं पूछ रहा कि वह तुम्हारे पास कहाँ से आया, लेकिन तुम्हारे पास कुछ

पैसा था। वह पैसा नहीं बढ़ा।'

उसने तटस्थता के साथ जवाब दिया, 'हाँ। मेरे पास थोड़ा पैसा था। और जल्दी ही वह ख़त्म हो गया।'

न्यायाधीश ने कठोर स्वर में कहा :

'उसने बछड़े नहीं पैदा किये-है न!'

फिर एक दूसरा खण्ड आगे आया। उसने तेज़ आवाज़ में कहा, 'मैं *कार्यशक्ति* के बारे में कुछ जानता हूँ। अगर कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर अपनी थोड़ी कार्यशक्ति ख़र्च करता है तो वह और मूल्यवान बन जाती है। पत्थर को मोल ज़्यादा नही होता लेकिन घर का होता है, अगर आप मुझे समझ पा रहे हैं।'

न्यायाधीश ने थके स्वर में कहा, 'ओह, ऐसा नहीं हो सकता। हम सबमें कार्य करने की शक्ति है। लेकिन जिस चीज़ पर हम उसे ख़र्च करते हैं वह या तो हमारी नहीं होती या फिर बेकार होती है। हैं, मैरी?'

कई दूसरे खण्ड आगे आए और *आविष्कारों* या *संगठनकारी क्षमता* या *किफायतसारी* के बारे में बोले। लेकिन कोई भी साफ़ तौर पर नहीं बता सका कि भाग्यशाली लोगों के पाउण्ड में होता क्या है।

अन्त में, वे कतार में लगे और गिने गये ताकि न्यायाधीश देख सके कि उनमें से कोई ग़ायब नहीं है। और कोई ग़ायब नहीं था।

फिर न्यायाधीश ने उनसे जाने को कहा, और अब वे पहले से भी ज़्यादा चिन्तित था।

उसने फिर से मुख्य गवाह दर्ज़िन मैरी सॉयर को देखा। वह बुदबुदाया, 'सीरियस।'

वह बैठा और मध्याह्न भोजन वाली घण्टी बजायी।

सूखते कपड़े के पीछे से सीरियस प्रकट हुआ। उसकी पाँच बड़ी नोकें और दो छोटे पाँव थे।

सर्वोच्च न्यायाधीश ने पूछा, 'क्या हाल ही में तुमने तुला राशि में प्रवेश किया था?'

सीरियस ने थोड़ी देर सोचा और फिर नकारात्मक जवाब दिया।

'अगर तुमने तुला या किसी और राशि में प्रवेश किया था तो क्या तुम्हारी राय में इससे मिसेज सॉयर की दुकान को कोई ख़तरा होगा?'

सीरियस ने बिना किसी झिझक इस बात से इंकार किया। वह काफी आहत मालूम पड़ा।

'तो तुम ज़िम्मेदार नहीं हो? तुम्हारा इससे कोई लेना-देना नहीं? तो यह भाग्य का मामला नहीं है?'

सीरियस ने कहा, 'किस मूर्ख ने कहा कि यह भाग्य का मामला है?'

न्यायाधीश ने उसे मुक्त कर दिया। अपनी ठोड़ी छाती पर गड़ाए वह वहाँ बैठा रहा और उदासी के साथ सामने घूरता रहा।

अचानक गवाहों में अभियोजन को लेकर अशान्ति फैल गयी।

उन्होंने कहा, 'अब हमें चलना चाहिए। तुम्हें जवाब कभी नहीं मिलेगा। यह तो बस विशाल असमानता है, और दूसरे लोग हमसे ज़्यादा चालाक हैं।'

बचाव पक्ष के वकील ने अब दख़ल देते हुए और अपनी टोपी को धकेलकर अपनी गर्दन पर करते हुए कहा, 'असमानता बहुत ज़्यादा है। काठ के पाँव वाले आदमी और बिना पैर वाले अन्धे में एक भारी अन्तर है-जो आर्थिक रूप से भी प्रत्यक्ष बन जाता है, मेरे प्यारे फ्यूकूम्बी।'

न्यायाधीश बेहद ध्यान से सुन रहा था। हर शब्द उसमें दिलचस्पी पैदा कर रहा था। यह बात स्पष्ट दिख रही थी। और न्यायाधीश जानता था कि यह स्पष्ट है।

बचाव पक्ष केवकील ने घृणा के साथ माँग की, 'मेरे कारोबार प्रबन्धक बियरी को बुलाइये। वह एक कोयला खदान मज़दूर का बेटा है।'

न्यायाधीश ने पल भर को विचार किया। फिश्र उसन घण्टी बजायी और बियरी प्रकट हुआ।

बिना पूछे, उसने स्वीकार किया कि बैंक में उसके पास कुछ शेष धन है।

उसने शेखी बघारी, 'लेकिन मैंने किसी और चीज़ के बारे में सोचा है। पीछे की झुकती दीवारों वाले कमरे का विचार मेरा था।'

बचाव पक्ष के वकील ने उसका समर्थन किया :

'वह समझता है कि लोगों से कुछ निकलवाया कैसे जाय। बस।'

अभियोजन पक्ष के गवाह बड़बड़ाने लगे।

न्यायाधीश ने उन्हें झिड़की दी, 'शान्ति!'

फिर सर्वोच्च न्यायाधीश की नज़रें टेबल पर पड़ी वस्तुओं पर पड़ी-चाकू और पत्र। वह उठा और घूमकर टेबल की दूसरी और चला गया। वहाँ एक गवाह की तरह खड़ा हो गया और बोला :

'मुझे मेरे पाउण्ड के रूप में यह चाकू मिला।'

वह तेज़ी से लंगड़ाते हुए अपनी कुर्सी पर गया और कठोर स्वर में बोला

:

'यह एक दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है। मैरी, *तुम्हे* क्या मिला?'

और उसने मैरी के उत्तर को प्रभावित करने के लिए उसे पत्र दिखाया।

मैरी ने उसे समझते हुए कहा, 'मझे अपने पाउण्ड के रूप में यह पत्र मिला।' और इस तरह उसने न्यायाधीश को थोड़ा आगे बढ़ने में मदद की।

'यह पत्र बताता है कि तुम अपने मालिक के बारे में कुछ ऐसा जानती हो जो उसे जेल भिजवा सकता है। यह तो ब्लैकमेल है, है कि नहीं?'

उसने कहा, 'हाँ।'

न्यायाधीश ने अन्यमनस्कता के साथ कहा, 'हाँ, यह हमारा पाउण्ड है, ऐसा है हमारा पाउण्ड। लेकिन उनका पाउण्ड क्या है?'

वह हाथों में अपना सिर पकड़े वहाँ बैठा रहा और काफी निराश लगा।

उसने शिकायत की, 'यह बिल्कुल साफ़ नहीं हो रहा। ये बी.शॉप्स, ये ट्रांसपोर्ट! मुनाफे पर मुनाफा!ये सब वाकई में आता कहाँ से है? इतने शानदार मौक़े, ऐसे युद्ध, ऐसी असमानता! वे ये सब कैसे करते हैं?'

लेकिन फिर उसने अपने सामने बियरी को खड़ा देखा और उसके दिमाग में कोई विचार आया। वह अपने ब्यौरे दर्ज़ करने वाले की ओर मुड़ा जो कभी उसका मालिक रहा था।

उसने उससे पूछा, 'स्मिथी, अगर उस समय तुमकों मुझे रखने दिया गया होता तो क्या तुम दुनिया में आगे बढ़ गये होते?'

'क्यों नहीं?' स्मिथी ने उत्तर दिया।

'फिर सबकुछ साफ़ है,' न्यायाधीश ने कहा और उसकी आवाज़ उत्तेजना से काँपी। '*अब* इससे साबित हो गया है कि तुम्हारा पाउण्ड है क्या! खड़ी हो जाओ मैरी! आगे आओ! स्मिथी, उनके पास जाओ!'

और वह विजयी मुद्रा में आरोपियों की सम्बन्धियों की ओर मुड़ा;

'*यह* है तुम्हारा पाउण्ड! *हम* हैं तुम्हारे पाउण्ड! आदमी ही आदमी का पाउण्ड है! जिसके पास शोषण करने के लिए कोई नहीं होता, वह अपना शोषण करता है! भेद खुल गया! तुम मुझे इससे छिपा रहे थे! *यह* है घर-*कहाँ* है मिस्त्री? क्या उसे कभी काम का मोल मिलता है? और यह कागज़? किसी ने इसे बनाया होगा? क्या उसे इसके बदले पर्याप्त मिला? और यह टेबल! क्या उस व्यक्ति का कोई कर्ज़ नहीं है जिसने लकड़ी को समतल किया? अलंगनी पर सूखते कपड़े! अलंगनी! और यहाँ तक कि पेड़ जिसने स्वयं ही अपने आपको नहीं बोया। ये

चाकू! क्या हर चीज़ की कीमत अदा की गयी है? पूरी तरह? जाहिरा तौर पर, नहीं! हमें एक परिपत्र भेजना चाहिए : जिन लोगों को पूरा मेहनताना नहीं मिला है, वे कृपया अपना नाम और पता भेज दें! इतिहास की किताबें और जीवनियाँ काफी नहीं हैं! मज़दूरी सूची कहाँ है?'

और आरोपी की ओर मुड़ते हुए पूरी ज़ोर से चीखा :

'तुम्हें दोषी करार दिया जाता है! और कुछ नहीं बल्कि ग़लतबयानी! तुमने झूठ फैलाए हैं! इसलिए मैं तुम्हें अपराधी ठहराता हूँ! अपराध में हिस्सेदार के रूप में! क्योंकि तुमने लोगों को यह नीतिकथा दी, जो स्वयं भी एक पाउण्ड है! जिससे मुनाफा कमाया जा सकता है! और उन सभी को, जो इस नीति कथा को आगे बढ़ाते हैं, जो ऐसी चीज़ें कहने का दुस्साहस करते हैं, उन सबको मैं अपराधी ठहराता हूँ! मौत की सज़ा देता हूँ! और मैं इससे भी आगे जाऊँगा : जो भी इसे सुनता है और तत्काल इसके ख़िलाफ़ कदम उठाने से बचता है, उसे भी मैं सज़ा सुनाता हूँ! और चूँकि मैंने भी इस नीतिकथा को सुना और कुछ नहीं कहा,इसलिए मैं अपने आपको मौत की सज़ा देता हूँ!'

और पसीने में नहाया हुआ वह बैठ गया।

कुछ दिनों बाद, फ्यूकूम्बी को गिरफ्तार कर लिया गया। उसे यह जानकर भारी ताज्जुब हुआ कि उस पर मैरी सॉयर की हत्या का आरोप लगाया गया था। उसे मौत की सज़ा दी गयी और-दुकानदारों, सिलाई करने वाली लड़कियों, घायल सैनिकों और भिखारियों के भारी हुजूम की मंजूरी के बीच-उसे फाँसी दे दी गयी।

• • •

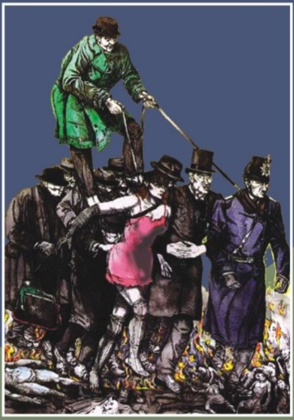

'तीन टके का उपन्यास' दरअसल बेर्टोल्ट ब्रेष्ट के प्रसिद्ध नाटक 'थ्री पेनी ऑपेरा' का ही एक विस्तृत और व्यापक संस्करण है। 'थ्री पेनी आपेरा' ब्रिटिश नाटककार जॉन गे द्वारा लिखित 'बेगर्स ऑपेरा' पर आधारित था। 1728 में लिखे गये 'बेगर्स ऑपेरा' के सभी केन्द्रीय चरित्र जैसे मैकहीथ, पीचम, जेनी, पॉली, आदि ब्रेष्ट के 'थ्री पेनी ऑपेरा' में थे। 1928 में ब्रेष्ट ने यह उपन्यास पूरा किया। 1934 में उन्होंने इन्हीं चरित्रों और उसी कहानी को लेकर 'थ्री पेनी नॉवेल' यानी 'तीन टके का उपन्यास' लिखा। जहाँ नाटक में ब्रेष्ट के पास एक-एक चरित्र को विकसित करने का मौक़ा नहीं था, वहीं उपन्यास में उन्होंने हर चरित्र को पूरी तरह विकसित किया और बोलचाल की भाषा में होने के बावजूद इसे 'एपिकल' बना दिया।

परिकल्पना प्रकाशन

ISBN 978-81-89760-33-5
मूल्य : रु. 125.00

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना

सम्पूर्ण सूचीपत्र
2018

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिनगारी।
घर–घर तक चिनगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन–जन तक पहुँचाना होगा।

दो दशक पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी–सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी–सी दुकान और फ़ुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी–छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर–घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। एक बड़े और एक छोटे प्रदर्शनी वाहन के माध्यम से जनचेतना हिन्दी और पंजाबी क्षेत्र के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला–सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन–संघर्ष–सृजन–प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

हिन्दी क्षेत्र में यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइये, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिये।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

1.	**तरुणाई का तराना**/याङ मो		...
2.	**तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट		...
3.	**माँ**/मक्सिम गोर्की		...
4.	**वे तीन**/मक्सिम गोर्की		75.00
5.	**मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की		...
6.	**जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की		...
7.	**मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की		...
8.	**फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की		55.00
9.	**अभागा**/मक्सिम गोर्की		40.00
10.	**बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की		25.00
11.	**असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई		...
12.	**तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव	(दो खण्डों में)	160.00
13.	**गोदान**/प्रेमचन्द		...
14.	**निर्मला**/प्रेमचन्द		...
15.	**पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र		...
16.	**चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र		...
17.	**गृहदाह**/शरत्चन्द्र		70.00
18.	**शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र		...
19.	**इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का		65.00
20.	**इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव		20.00
21.	**दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव		70.00

22.	**वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव	60.00
23.	**मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ग्रीगोरी बकलानोव	40.00
24.	**बख़्तरबन्द रेल 14-69**/व्सेवोलोद इवानोव	30.00
25.	**अश्वसेना**/इसाक बाबेल	40.00
26.	**लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श	50.00
27.	**रिक्शावाला**/लाओ श	65.00
28.	**चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन	55.00
29.	**एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय	30.00
30.	**Mother**/*Maxim Gorky*	250.00
31.	**The Song of Youth**/*Yang Mo*	...

कहानियाँ

1.	**श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट)	450.00
2.	**वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ)	60.00

मक्सिम गोर्की

3.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1)	...
4.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2)	...
5.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3)	...
6.	**हिम्मत न हारना मेरे बच्चो**	10.00
7.	**कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी**	...

अन्तोन चेख़व

8.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1)	...
9.	**चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2)	...
10.	**दो अमर कहानियाँ**/लू शुन	...
11.	**श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द	80.00
12.	**पाँच कहानियाँ**/पुश्किन	...
13.	**तीन कहानियाँ**/गोगोल	30.00
14.	**तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच	60.00
15.	**वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव	60.00
16.	**वसन्तागम**/रओ शि	50.00

17. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
18. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
19. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
20. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
21. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
22. **समय के पंख**/कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
23. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
24. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
25. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
26. **दोन की कहानियाँ**/मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
27. **अब इन्साफ़ होने वाला है** ...
(भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन)
(ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/स. **शकील सिद्दीक़ी**
28. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
29. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/मदन मोहन 35.00

कविताएँ

1. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/पाब्लो नेरूदा 60.00
2. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/लैंग्स्टन ह्यूज 60.00
3. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) 160.00
4. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ – बेर्टोल्ट ब्रेष्ट**
(मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल)
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित) 150.00
6. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
7. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
8. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
9. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/होसे मारिया सिसों 25.00

10. **इन्तिफ़ादा :** फ़लस्तीनी कविताएँ/स. रामकृष्ण पाण्डेय ...

11. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश ...

12. **लोहू और इस्पात से फूटता ग़ुलाब :** फ़लस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन)
A Rose Breaking Out of Steel and Blood (Palestinian Poems) 60.00

13. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00

14. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/विष्णु खरे 60.00

15. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00

16. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00

17. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00

18. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/शशिप्रकाश 50.00

19. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00

20. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/कात्यायनी (पेपरबैक) ...
(हार्डबाउंड) 125.00

21. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 60.00

22. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी (पेपरबैक) ...
(हार्डबाउंड) 200.00

23. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00

24. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00

25. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00

26. **यह जो वक्त है**/कपिलेश भोज 60.00

27. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...

28. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर 60.00

29. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00

30. **देखते न देखते**/मलय 65.00

31. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00

32. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00

33. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00

34. **तो**/शैलेय 75.00

नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00

2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00

3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी (पेपरबैक) 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यन्त्ररत मृतात्माओं के बीच**
   (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य-विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/
   गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/
   बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00

5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुखो़म्लीन्स्की ...

आह्वान पुस्तिका श्रृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका श्रृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**/कात्यायनी, सत्यम 25.00

दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ

दिशा सन्धान

मार्क्सवादी सैद्धान्तिक शोध और विमर्श का मंच

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 100 रुपये, आजीवन: 5000 रुपये
वार्षिक (4 अंक) : 400 रुपये (100 रु. रजि. बुकपोस्ट व्यय अतिरिक्त)

नान्दीपाठ

मीडिया, संस्कृति और समाज पर केन्द्रित

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 40 रुपये आजीवन: 3000 रुपये
वार्षिक (4 अंक) : 160 रुपये (100 रु. रजि. बुक पोस्ट व्यय अतिरिक्त)

सम्पादकीय कार्यालय :

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006
फोन: 9936650658, 8853093555
वेबसाइट : http://dishasandhaan.in ईमेल: dishasandhaan@gmail.com
वेबसाइट : http://naandipath.in ईमेल: naandipath@gmail.com

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1.	**नौजवानों से दो बातें**/पीटर क्रोपोटकिन	15.00
2.	**क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/भगतसिंह	15.00
3.	**मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह	15.00
4.	**बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह	15.00
5.	**जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह	15.00
6.	**भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह	15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1.	**भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़**/स. सत्यम	350.00
2.	**शहीदेआज़म की जेल नोटबुक**/भगतसिंह	100.00
3.	**विचारों की सान पर**/भगतसिंह	50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1.	**बहरों को सुनाने के लिए**/एस. इरफ़ान हबीब (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)	...
2.	**क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा	15.00
3.	**भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र	20.00
4.	**यश की धरोहर**/ भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर	50.00
5.	**संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा	80.00
6.	**शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/स. डॉ. हरदीप सिंह	40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है**
   ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 60.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 60.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 10.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 15.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 15.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 15.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 15.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 10.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00

3.	**ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की	5.00
4.	**मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग	10.00
5.	**पेरिस कम्यून की अमर कहानी**	20.00
6.	**अक्टूबर क्रान्ति की मशाल**	15.00
7.	**जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी	5.00
8.	**लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस**	30.00
9.	**संशोधनवाद के बारे में**	10.00
10.	**शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट	10.00
11.	**मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए**	20.00
12.	**मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा**	15.00
13.	**चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही**	...
14.	**बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ**	...
15.	**राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव	30.00
16.	**फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव	75.00
17.	**नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/आलोक रंजन	55.00
18.	**कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह	100.00

मार्क्सवाद

1.	**धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स	100.00
2.	**कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/मार्क्स-एंगेल्स	25.00
3.	**साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स	150.00
4.	**फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स	40.00
5.	**फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स	20.00
6.	**लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स	35.00
7.	**उजरती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स	15.00
8.	**मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/कार्ल मार्क्स	20.00
9.	**गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/कार्ल मार्क्स	40.00
10.	**लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स	20.00

11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन 60.00
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन 40.00
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन 15.00
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन ...
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन 20.00
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन 20.00
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ**/जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00
34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...
35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...
36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/माओ त्से-तुङ 35.00
37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/माओ त्से-तुङ 70.00
38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़** / माओ त्से-तुङ 15.00
39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

1.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** नयी	300.00
2.	**ख्रुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र	300.00
3.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी)	160.00
4.	**पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग	10.00
5.	**कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/डी. रियाज़ानोव (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)	100.00
6.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/डेविड गेस्ट	...
7.	**महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति : चुने हुए दस्तावेज़ और लेख** (खण्ड 1)	35.00
8.	**इतिहास ने जब करवट बदली**/विलियम हिण्टन	25.00
9.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/वी. अदोरात्स्की	50.00
10.	**अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन**/अल्बर्ट रीस विलियम्स (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)	90.00
11.	**सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस	50.00

राहुल साहित्य

1.	**तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन	40.00
2.	**दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन	...
3.	**वैज्ञानिक भौतिकवाद**/राहुल सांकृत्यायन	65.00
4.	**राहुल निबन्धावली**/राहुल सांकृत्यायन	50.00
5.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

परम्परा का स्मरण

1.	**चुनी हुई रचनाएँ**/गणेशशंकर विद्यार्थी	100.00
2.	**सलाखों के पीछे से**/गणेशशंकर विद्यार्थी	30.00
3.	**ईश्वर का बहिष्कार**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
4.	**लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी	20.00
5.	**धर्म का ढकोसला**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
6.	**स्त्रियों की स्वाधीनता**/राधामोहन गोकुलजी	30.00

जीवनी और संस्मरण

1.	**कार्ल मार्क्स जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	25.00
2.	**फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	...
3.	**कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख**	...
4.	**अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/एल. काताशेवा	30.00
5.	**लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा	70.00
6.	**लेनिन विषयक कहानियाँ**	75.00
7.	**लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/लीदिया फ़ोतियेवा	...
8.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

विविध

1.	**फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक	30.00
2.	**पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर	100.00
3.	**सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर	....

मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का

आह्वान

सम्पादकीय कार्यालय

बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर,
दिल्ली-110094

एक प्रति : 20 रुपये • वार्षिक : 160 रुपये (डाकव्यय सहित)

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1.	**A Contribution to the Critique of Political Economy**	100.00
2.	**The Civil War in France**	80.00
3.	**The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte**	40.00
4.	**Critique of the Gotha Programme**	25.00
5.	**Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy**	25.00
6.	**The Poverty of Philosophy**	80.00
7.	**Wages, Price and Profit**	35.00
8.	**Class Struggles in France**	50.00

FREDERICK ENGELS

9.	**The Peasant War in Germany**	70.00
10.	**Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy**	65.00
11.	**On Capital**	55.00
12.	**The Origin of the Family, Private Property and the State**	100.00
13.	**Socialism: Utopian and Scientific**	60.00
14.	**On Marx**	20.00
15.	**Principles of Communism**	5.00

MARX and ENGELS

16.	**Historical Writings** (Set of 2 Vols.)	700.00
17.	**Manifesto of the Communist Party**	50.00
18.	**Selected Letters**	40.00

V. I. LENIN

19.	**Theory of Agrarian Question**	160.00
20.	**The Collapse of the Second International**	25.00
21.	**Imperialism, the Highest Stage of Capitalism**	80.00
22.	**Materialism and Empirio-Criticism**	150.00

23.	**Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution**	55.00
24.	**Capitalism and Agriculture**	30.00
25.	**A Characterisation of Economic Romanticism**	50.00
26.	**On Marx and Engels**	35.00
27.	**“Left-Wing” Communism, An Infantile Disorder**	40.00
28.	**Party Work in the Masses**	55.00
29.	**The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky**	40.00
30.	**One Step Forward, Two Steps Back**	…
31.	**The State and Revolution**	…

MARX, ENGELS and LENIN

32.	**On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers***	50.00
33.	**On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions***	10.00

PLEKHANOV

34.	**Fundamental Problems of Marxism**	35.00

J. STALIN

35.	**Marxism and Problems of Linguistics**	25.00
36.	**Anarchism or Socialism?**	25.00
37.	**Economic Problems of Socialism in the USSR**	30.00
38.	**On Organisation**	15.00
39.	**The Foundations of Leninism**	40.00
40.	**The Essential Stalin** *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)	175.00

LENIN and STALIN

41.	**On the Party**	…

MAO TSE-TUNG

42.	**Five Essays on Philosophy**	50.00
43.	**A Critique of Soviet Economics**	70.00
44.	**On Literature and Art**	80.00

45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** ...

46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** ...

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 275.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 160.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* ...
4. **Socialism and Ethics**/*Howard Selsam* ...
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)**/** *Howard Selsam* 75.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00
7. **From Marx to Mao Tse-tung /**George Thomson ...
8. **Capitalism and After/**George Thomson ...
9. **The Human Essence/**George Thomson 65.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* 125.00
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00
12. **The Lessons of the Paris Commune/** *Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) ...
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov ...
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* ...

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle (Red Papers 7)** 175.00

2. **Preface of Class Struggles in the USSR** / *Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University / *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University** / *Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** / *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** / *William Hinton* ...
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** / *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* ...

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 / *Joshua S. Horn* ...
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China /*Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* ...
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) 35.00

CONTEMPORARY ISSUES

1. **Caste and Class: A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 15.00

2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism?** / *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?**
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan* 15.00

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 20.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* ...
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** /*Mary Lou Greenberg*...

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* ...
2. **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* 15.00

मज़दूरों का इन्क़लाबी मासिक अख़बार

मजदूर बिगुल

एक प्रति : 5 रुपये
वार्षिक : 70 रुपये
(डाक व्यय सहित)

सम्पादकीय कार्यालय
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड,
निशातगंज, लखनऊ-226006
फ़ोन : 0522-4108495
ईमेल : bigulakhbar@gmail.com
वेबसाइट : mazdoorbigul.net

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलन: निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलन: दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद**
   (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना

एक वैचारिक मुहिम है
भविष्य-निर्माण का एक प्रोजेक्ट है
वैकल्पिक मीडिया की एक सशक्त धारा है।

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फ़ाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास, शहीद भगतसिंह यादगारी प्रकाशन, दस्तक प्रकाशन और प्रांजल आर्ट पब्लिशर्स की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्रोतों – सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अनुराग ट्रस्ट

1.	**बच्चों के लेनिन**	35.00
2	**Stories About Lenin**	35.00
3.	**सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
4.	**औज़ारों की कहानियाँ**	20.00
5.	**गुड़ की डली**/कात्यायनी	20.00
6.	**फूल कुंडलाकार क्यों होते हैं**/सनी	20.00
7.	**धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव	120.00
8.	**कजाकी**/प्रेमचन्द	35.00
9.	**नीला प्याला**/अरकादी गैदार	40.00
10.	**गड़रिये की कहानियाँ**/क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
11.	**चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/अ. मित्यायेव	35.00
12.	**अन्धविश्वासी शेकी टेल**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
13.	**चलता-फिरता हैट**/एन. नोसोव, होल्कर पुक्क	20.00
14.	**चालाक लोमड़ी** (लोककथा)	20.00
15.	**दियांका-टॉमचिक**	20.00
16.	**गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
17.	**गुफा मानवों की कहानियाँ**/मैरी मार्स	...
18.	**हम सूरज को देख सकते हैं**/मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
19.	**मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
20.	**नन्हे आर्थर का सूरज**/हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा	20.00
22.	**आकाश में मौज-मस्ती**/चिनुआ अचेबे	20.00
23.	**ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन	40.00
24.	**एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की	20.00
25.	**बहादुर**/अमरकान्त	15.00
26.	**बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/शस्या हर्ष	...

27.	**दान्को का जलता हुआ हृदय**/मक्सिम गोर्की	15.00
28.	**नन्हा राजकुमार**/आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी	40.00
29.	**दादा आर्खिप और ल्योंका**/मक्सिम गोर्की	30.00
30.	**सेमागा कैसे पकड़ा गया**/मक्सिम गोर्की	15.00
31.	**बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की	15.00
32.	**वांका**/अन्तोन चेख़व	15.00
33.	**तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
34.	**पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	...
35.	**काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
36.	**अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र	15.00
37.	**दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर	25.00
38.	**रामलीला**/प्रेमचन्द	15.00
39.	**दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द	25.00
40.	**ईदगाह**/प्रेमचन्द	...
41.	**लॉटरी**/प्रेमचन्द	20.00
42.	**गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द	...
43.	**बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द	20.00
44.	**मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द	...
45.	**हार की जीत**/सुदर्शन	...
46.	**इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव	40.00
47.	**चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन	55.00
48.	**उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर	35.00
49.	**हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव	25.00
50.	**दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	...
51.	**आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	30.00
52.	**झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी)	35.00
53.	**नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन	...
54.	**लाखी**/अन्तोन चेख़व	25.00
55.	**बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव	12.00

56.	**हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक	25.00
57.	**घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव	10.00
58.	**बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव	20.00
59.	**मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन	35.00
60.	**पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की	20.00
61.	**कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय	30.00
62.	**मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव	30.00
63.	**सदानन्द की छोटी दुनिया**/सत्यजीत राय	15.00
64.	**छत पर फँस गया बिल्ला**/विताउते जिलिन्सकाइते	35.00
65.	**गोलू के कारनामे**/रामबाबू	25.00
66.	**दो साहसिक कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	15.00
67.	**आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
68.	**कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क	20.00
69.	**रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
70.	**अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क	...
71.	**नये ज़माने की परीकथाएँ**/होल्गर पुक्क	25.00
72.	**किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन	15.00
73.	**पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन)/ कमला पाण्डेय	30.00
74.	**यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण)/ कमला पाण्डेय	100.00
75.	**हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ)/ कमला पाण्डेय	60.00
76.	**कालमन्थन** (उपन्यास)/ कमला पाण्डेय	60.00

कोंपल

बच्चों के समग्र वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास के लिए समर्पित अनुराग ट्रस्ट की त्रैमासिक पत्रिका

डी-68, निराला नगर, लखनऊ-226020

एक प्रति : 20 रुपये,
वार्षिक : 100 रुपये (डाकव्यय सहित)

ਪੰਜਾਬੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਦਸਤਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ ਦਾ ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ ਨਾਵਲ (ਤਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ)

1. ਮੇਰਾ ਬਚਪਨ	130.00
2. ਮੇਰੇ ਵਿਸ਼ਵ-ਵਿਦਿਆਲੇ	100.00
3. ਮੇਰੇ ਸ਼ਗਿਰਦੀ ਦੇ ਦਿਨ	200.00

4. ਪ੍ਰੇਮ, ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ / ਕਾਤਿਆਈਨੀ	20.00
5. ਥੀਏਟਰ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਤਰਕਸ਼ਾਸਤਰ / ਬ੍ਰੈਖ਼ਤ	15.00
6. ਆਈਜੇਂਸਤਾਈਨ ਦਾ ਫਿਲਮ ਸਿਧਾਂਤ	15.00
7. ਮਜ਼ਦੂਰ ਜਮਾਤੀ ਸੰਗੀਤ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ	10.00
8. ਪਹਿਲਾ ਅਧਿਆਪਕ / ਚੰਗੇਜ਼ ਆਇਤਮਾਤੋਵ (ਨਾਵਲ)	25.00
9. ਸ਼ਾਂਤ ਸਰਘੀ ਵੇਲਾ / ਬੋਰਿਸ ਵਾਸੀਲਿਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
10. ਭਾਂਜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਫ਼ਦੇਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	100.00
11. ਫੌਲਾਦੀ ਹੜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਸਰਾਫ਼ੀਮੋਵਿਚ (ਨਾਵਲ)	100.00
12. ਇਕਤਾਲ਼ੀਵਾਂ / ਬੋਰਿਸ ਲਵਰੇਨਿਓਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
13. ਮਾਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ (ਨਾਵਲ)	180.00
14. ਪੀਲ਼ੇ ਦੈਂਤ ਦਾ ਸ਼ਹਿਰ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	80.00
15. ਸਾਹਿਤ ਬਾਰੇ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	200.00
16. ਅਸਲੀ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਹਾਣੀ / ਬੋਰਿਸ ਪੋਲੇਵਾਈ (ਨਾਵਲ)	200.00
17. ਅੱਠੇ ਪਹਿਰ (ਕਹਾਣੀਆਂ)	125.00
18. ਬਘਿਆੜਾਂ ਦੇ ਵੱਸ / ਬਰੂਨੋ ਅਪਿਤਜ (ਨਾਵਲ)	100.00
19. ਮੀਤ੍ਰਿਆ ਕੋਕੋਰ / ਮੀਹਾਇਲ ਸਾਦੋਵਿਆਨੋ (ਨਾਵਲ)	100.00
20. ਇਨਕਲਾਬ ਲਈ ਜੂਝੀ ਜਵਾਨੀ	150.00
21. ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਦਿਲ ਆਪਣਾ ਮੈਂ / ਵ. ਸੁਖੋਮਲਿੰਸਕੀ	150.00
22. ਫਾਸੀ ਦੇ ਤਖ਼ਤੇ ਤੋਂ / ਜੂਲੀਅਸ ਫੂਚਿਕ (ਨਾਵਲ)	50.00
23. ਭੁੱਬਲ / ਫ਼ਰੰਜ਼ਦ ਅਲੀ (ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਨਾਵਲ)	200.00
24. ਸਭ ਤੋਂ ਖਤਰਨਾਕ... (ਪਾਸ਼ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਉਪਲੱਬਧ ਸ਼ਾਇਰੀ)	200.00
25. ਧਰਤੀ ਧਨ ਨਾ ਆਪਣਾ / ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦਰ	250.00

ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਯਾਦਗਾਰੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

1.	ਉਜਰਤ, ਕੀਮਤ ਅਤੇ ਮੁਨਾਫਾ / ਮਾਰਕਸ	30.00
2.	ਉਜਰਤੀ ਕਿਰਤ ਅਤੇ ਸਰਮਾਇਆ / ਮਾਰਕਸ	20.00
3.	ਸਿਆਸੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ ਵਿੱਚ ਯੋਗਦਾਨ / ਮਾਰਕਸ	125.00
4.	ਲੂਈ ਬੋਨਾਪਾਰਟ ਦੀ ਅਠਾਰਵੀਂ ਬਰੂਮੇਰ / ਮਾਰਕਸ	50.00
5.	ਪੂੰਜੀ ਦੀ ਉਤਪਤੀ / ਮਾਰਕਸ	45.00
6.	ਰਿਹਾਇਸ਼ੀ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
7.	ਫਿਊਰਬਾਖ : ਪਾਦਰਥਵਾਦੀ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ / ਮਾਰਕਸ-ਏਂਗਲਜ਼	60.00
8.	ਜਰਮਨੀ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ / ਏਂਗਲਜ਼	50.00
9.	ਮਾਰਕਸ ਦੇ "ਸਰਮਾਇਆ" ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	60.00
10.	ਫਰਾਂਸ ਅਤੇ ਜਰਮਨੀ 'ਚ ਕਿਸਾਨੀ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	20.00
11.	ਸੋਸ਼ਲਿਜ਼ਮ : ਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਯੂਟੋਪੀਆਈ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
12.	ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	10.00
13.	ਲੁਡਵਿਗ ਫਿਉਰਬਾਖ ਅਤੇ ਕਲਾਸੀਕੀ ਜਰਮਨ ਦਰਸ਼ਨ ਦਾ ਅੰਤ / ਏਂਗਲਜ਼	30.00
14.	ਟੱਬਰ, ਨਿੱਜੀ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਰਾਜ ਦੀ ਉੱਤਪਤੀ / ਏਂਗਲਜ਼	65.00
15.	ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ / ਲੈਨਿਨ	35.00
16.	ਰਾਜ ਅਤੇ ਇਨਕਲਾਬ / ਲੈਨਿਨ	50.00
17.	ਦੂਜੀ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਦਾ ਪਤਣ / ਲੈਨਿਨ	45.00
18.	ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦ / ਲੈਨਿਨ	15.00
19.	ਰਾਜ / ਲੈਨਿਨ	10.00
20.	ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ, ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਪੜਾਅ / ਲੈਨਿਨ	70.00
21.	ਇੱਕ ਕਦਮ ਅੱਗੇ ਦੋ ਕਦਮ ਪਿੱਛੇ / ਲੈਨਿਨ	125.00
22.	ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰੀਏ / ਲੈਨਿਨ	65.00
23.	ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਕਲਾ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ	150.00
24.	ਸਮਾਜਵਾਦ ਅਤੇ ਜੰਗ / ਲੈਨਿਨ	45.00
25.	ਖੱਬੇ ਪੱਖੀ ਕਮਿਊਨਿਜ਼ਮ ਇੱਕ ਬਚਗਾਨਾ ਰੋਗ / ਲੈਨਿਨ	65.00
26.	ਅਸੀਂ ਜਿਹੜਾ ਵਿਰਸਾ ਤਿਆਗਦੇ ਹਾਂ / ਲੈਨਿਨ	25.00
27.	ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਭਗੌੜਾ ਕਾਊਤਸਕੀ / ਲੈਨਿਨ	70.00
28.	ਆਰਥਕ ਰੋਮਾਂਚਵਾਦ ਦਾ ਚਰਿੱਤਰ ਚਿੱਤਰਣ / ਲੈਨਿਨ	50.00

29.	ਸੁਤੰਤਰ ਵਪਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਮਾਰਕਸ, ਏਂਗਲਜ਼, ਲੈਨਿਨ	10.00
30.	ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਦੀਆਂ ਨੀਹਾਂ / ਸਟਾਲਿਨ	20.00
31.	ਫ਼ਲਸਫਾਨਾ ਲਿਖਤਾਂ / ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ	25.00
32.	ਸੋਵੀਅਤ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ / ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ	60.00
33.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਮਸਲੇ / ਪਲੈਖਾਨੋਵ	40.00
34.	ਰਾਜਨੀਤਕ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਮੂਲ ਸਿਧਾਂਤ	60.00
35.	ਫਿਲਾਸਫੀ ਕੋਈ ਗੋਰਖਧੰਦਾ ਨਹੀਂ	10.00
36.	ਦਵੰਦਵਾਦ ਜ਼ਰੀਏ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ	10.00
37.	ਇਤਿਹਾਸ ਨੇ ਜਦ ਕਰਵਟ ਬਦਲੀ	40.00
38.	ਇਨਕਲਾਬ ਅੰਦਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
39.	ਮਾਓ-ਜ਼ੇ-ਤੁੰਗ ਦੀ ਅਮਿੱਟ ਦੇਣ	125.00
40.	ਚੀਨ ਵਿੱਚ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਮਾਓ ਦਾ ਇਨਕਲਾਬੀ ਵਿਰਸਾ	60.00
41.	ਮਾਓਵਾਦੀ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਵਾਦ ਦਾ ਭਵਿੱਖ	60.00
42.	ਲੈਨਿਨ ਦੀ ਜੀਵਨ ਕਹਾਣੀ	100.00
43.	ਅਡੋਲ ਬਾਲਸ਼ਵਿਕ ਨਤਾਸ਼ਾ	30.00
44.	ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਏਂਗਲਜ਼ ਆਪਣੇ ਸਮਕਾਲੀਆਂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਵਿੱਚ	75.00
45.	ਪੈਰਿਸ ਕਮਿਊਨ ਦੀ ਅਮਰ ਕਹਾਣੀ	10.00
46.	ਬੁਝ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਅਕਤੂਬਰ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਮਸ਼ਾਲ	10.00
47.	ਦਹਿਸ਼ਤਗਰਦੀ ਬਾਰੇ ਭਰਮ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥ	10.00
48.	ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਅਤੇ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ	10.00
49.	ਜੰਗਲਨਾਮਾ : ਇੱਕ ਰਾਜਨੀਤਕ ਪੜਚੋਲ	10.00
50.	ਭਾਰਤੀ ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਵਿਕਾਸ	20.00
51.	ਅਮਿੱਟ ਹਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਸੰਗਰਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਚਿਣਗਾਂ	10.00
52.	ਸਮਾਜਵਾਦ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ, ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਦੀ ਮੁੜ ਬਹਾਲੀ ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
53.	ਕਿਉਂ ਮਾਓਵਾਦ ?	10.00
54.	ਸੋਵੀਅਤ ਯੂਨੀਅਨ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਝੂਠ	10.00
55.	ਰਿਜ਼ਰਵੇਸ਼ਨ : ਪੱਖ, ਵਿਪੱਖ ਅਤੇ ਤੀਸਰਾ ਪੱਖ	5.00
56.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਅਤੇ ਜਾਤ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ	20.00

57. ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਬਾਰੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
58. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸੰਵਿਧਾਨ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
59. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ : ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 10.00
60. ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ / ਪ੍ਰੋ. ਇਰਫ਼ਾਨ ਹਬੀਬ 10.00
61. ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਨੀਤੀਆਂ ਦੇ 18 ਸਾਲ 5.00
62. ਚੋਰ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਅਤੇ ਅਯਾਸ਼ ਨੇਤਾਸ਼ਾਹੀ 5.00
63. ਪਾਪ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨ / ਡਾਈਸਨ ਕਾਰਟਰ 60.00
64. ਫਾਸੀਵਾਦ ਕੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ਼ ਕਿਵੇਂ ਲੜੀਏ ? 15.00
65. ਆਈਨਸਟੀਨ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਰੋਕਾਰ 10.00
66. ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨਾਲ਼ ਦੋ ਗੱਲਾਂ / ਪੀਟਰ ਕ੍ਰੋਪੋਟਕਿਨ 10.00
67. ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ
(ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ) 30.00
68. ਅਜਿਹਾ ਸੀ ਸਾਡਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
69. ਮੈਂ ਨਾਸਤਿਕ ਕਿਉਂ ਹਾਂ ? / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 10.00
70. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਿਹਾ... / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 5.00
71. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਉਸਦੇ ਸਾਥੀਆਂ
ਦਾ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਵਿਕਾਸ / ਪ੍ਰੋ. ਬਿਪਨ ਚੰਦਰਾ 10.00
72. ਇਨਕਲਾਬੀ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤਕ ਵਿਕਾਸ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
73. ਸ਼ਹੀਦ ਚੰਦਰ ਸ਼ੇਖਰ ਆਜ਼ਾਦ / ਭਗਵਾਨ ਦਾਸ ਮਹੌਰ 10.00
74. ਗਦਰੀ ਸੂਰਬੀਰ / ਪ੍ਰੋ. ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ 10.00
75. ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ 20.00
76. ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ 5.00
77. ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੌਜਵਾਨ ਨਵੀਂ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕਿੱਥੋਂ ਕਰਨ ? 10.00
78. ਸੋਧਵਾਦ ਬਾਰੇ 5.00
79. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਸਾਰ ਦੀ ਲੋੜ ਕਿਉਂ ? / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 15.00
80. ਵਧਦੀ ਅਬਾਦੀ 15.00
81. ਯੁੱਗ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੇ ਹਨ ? / ਡਾ. ਅੰਮ੍ਰਿਤ 10.00
82. ਧਰਮ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ 30.00
83. ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਮਹੱਤਵ 20.00
84. ਇੱਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਦਾ ਜਨਮ / ਗੈਨਰਿਖ ਵੋਲਕੋਵ 100.00
85. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਨਵਉਦਾਰਵਾਦ ਦੇ ਦੋ ਦਹਾਕੇ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 20.00

86. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਦਾ ਕਲਾ ਦਰਸ਼ਨ 200.00
87. ਸਤਾਲਿਨ - ਇੱਕ ਜੀਵਨੀ / ਰਾਹੁਲ ਸਾਂਕਰਤਾਇਨ 150.00
88. ਪੋਰਨੋਗ੍ਰਾਫੀ : ਇਕ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾ ਕੋਹੜ / ਅਜੇ ਪਾਲ 10.00
89. ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਅਧਾਰ / ਸੀਤਾ 10.00

ਅਨੁਰਾਗ ਟਰੱਸਟ (ਬੱਚਿਆਂ ਲਈ)

1. ਇਵਾਨ / ਵਲਾਦੀਮੀ ਬਗਾਮਲੋਵ 35.00
2. ਵਾਂਕਾ / ਅਨਤੋਨ ਚੈਖੋਵ 10.00
3. ਕਿਸਮਤ ਆਪੋ-ਆਪਣੀ / ਜੈਨੇਂਦਰ 20.00
4. ਕੋਹੇਕਾਫ਼ ਦਾ ਕੈਦੀ / ਤਾਲਸਤਾਏ 30.00
5. ਛੱਤ 'ਤੇ ਫਸ ਗਿਆ ਬਿੱਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਹਾਣੀਆਂ 20.00
6. ਅਜੀਬੋ-ਗਰੀਬ ਕਿੱਸੇ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
7. ਦੋ ਹਿੰਮਤੀ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 15.00
8. ਨਵੇਂ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੀਆਂ ਪਰੀ-ਕਥਾਵਾਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
9. ਅਸੀਂ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ / ਮਿਕੋਲ ਗਿੱਲ 10.00
10. ਗੁਫਾ ਮਾਨਵਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਮੈਰੀ ਮਾਰਸ 20.00
11. ਕਿੱਸਾ ਇਹ ਕਿ ਇੱਕ ਪੇਂਡੂ ਨੇ ਦੋ ਅਫ਼ਸਰ ਸ਼ਹਿਰੀ ਅਫਸਰਾਂ ਦਾ ਢਿੱਡ ਕਿਵੇਂ ਭਰਿਆ / ਮਿਖਾਈਲ ਸ਼ਚੇਦ੍ਰਿਨ 15.00
12. ਸਦਾਨੰਦ ਦੀ ਛੋਟੀ ਦੁਨੀਆਂ / ਸੱਤਿਆਜੀਤ ਰਾਏ 10.00
13. ਬਾਜ਼ ਦਾ ਗੀਤ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
14. ਬੱਸ ਇੱਕ ਯਾਦ / ਲਿਓਨਿਦ ਆਂਦਰੇਯੇਵ 10.00
15. ਦਾਦਾ ਅਰਖ਼ੀਪ ਅਤੇ ਲਿਓਨਕਾ / ਗੋਰਕੀ 20.00
16. ਦਾਨਕੋ ਦਾ ਬਲ਼ਦਾ ਹੋਇਆ ਦਿਲ / ਗੋਰਕੀ 10.00
17. ਘਰ ਦੀ ਲਲਕ / ਨਿਕੋਲਾਈ ਤੇਲੇਸ਼ੋਵ 20.00
18. ਗੁੱਲੀ-ਡੰਡਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
19. ਹਾਰ ਦੀ ਜਿੱਤ / ਸ਼ੁਦਰਸ਼ਨ 10.00
20. ਹਰਾਮੀ / ਮਿਖ਼ਾਇਲ ਸ਼ੋਲੋਖ਼ੋਵ 20.00
21. ਕਾਬੁਲੀਵਾਲ਼ਾ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00
22. ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਸਾਥੀ / ਸੇਰੇਗਈ ਮਿਖਾਲਕੋਵ 10.00
23. ਪੋਸਟਮਾਸਟਰ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00

24. ਰਾਮਲੀਲਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
25. ਸੇਮਾਗਾ ਕਿਵੇਂ ਫੜਿਆ ਗਿਆ / ਗੋਰਕੀ 10.00
26. ਤੁਰਦਾ–ਫਿਰਦਾ ਟੋਪ / ਐੱਨ. ਨੋਸੋਵ 10.00
27. ਬੇਜਿਨ ਚਰਾਗਾਹ / ਇਵਾਨ ਤੁਰਗੇਨੇਵ 20.00
28. ਉਲਟਾ ਰੁੱਖ / ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਚੰਦਰ 35.00
29. ਵੱਡੇ ਭਾਈ ਸਾਹਬ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
30. ਇੱਕ ਛੋਟੇ ਮੁੰਡੇ ਅਤੇ ਕੁੜੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਜਿਹੜੇ ਬਰਫ਼ੀਲੀ ਠੰਡ 'ਚ ਕਾਂਬੇ ਨਾਲ਼ ਮਰੇ ਨਹੀਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
31. ਬਹਾਦਰ / ਅਮਰਕਾਂਤ 10.00
32. ਹਿਰਨੋਟਾ / ਦਮਿਤਰੀ ਮਾਮਿਨ ਸਿਬਿਰੇਆਕ 10.00

——::——

नवें समाजवादी इन्क़लाब दा बुलारा

प्रतिबद्ध (तिमाही पंजाबी पत्रिका)

सम्पादकीय कार्यालय : शहीद भगतसिंह भवन
सीलोआनी रोड, रायकोट, लुधियाना– 141109 (पंजाब)
फोन : 09815587807 **ईमेल :** pratibadh08@rediffmail.com
ब्लॉग : http://pratibaddh.wordpress.com

एक अंक : 50 रुपये *वार्षिक सदस्यता :*
डाकसहित : 170 रुपये, दस्ती : 150 रुपये विदेश : 50 अमेरिकी डॉलर या 35 पौण्ड

तब्दीली पसन्द विद्यार्थियाँ–नौजवानाँ दी

ललकार (पाक्षिक पंजाबी अखबार)

सम्पादकीय कार्यालय : *लखविन्दर* सुपुत्र मनजीत सिंह
मुहल्ला – जस्सडाँ, शहर और पोस्ट ऑफ़िस – सरहिन्द शहर,
जिला – फ़तेहगढ़ साहिब–140406 (पंजाब) फोन : 096461 50249
ईमेल : lalkaar08@rediffmail.com **ब्लॉग :** http://lalkaar.wordpress.com

एक अंक : 5 रुपये *वार्षिक सदस्यता :* डाकसहित : 170 रुपये, दस्ती : 120 रुपये

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि ...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह

जनचेतना

मुख्य केन्द्र : डी–68, निरालानगर, लखनऊ–226020

फ़ोन : 0522–4108495

अन्य केन्द्र :

- 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड,
  गोरखपुर–273001, फ़ोन : 7398783835
- दिल्ली : 9999750940
- नियमित स्टॉल : कॉफ़ी हाउस के पास, हज़रतगंज, लखनऊ
  शाम 5 से 8 बजे तक

सहयोगी केन्द्र

- जनचेतना पुस्तक विक्रय केन्द्र, दुकान नं. 8, पंजाबी भवन,
  लुधियाना (पंजाब) फ़ोन : 09815587807

ईमेल : info@janchetnabooks.org

वेबसाइट : www.janchetnabooks.org

हमारी बुकशॉप और प्रदर्शनियों से पुस्तकें लेने के अलावा आप हमसे डाक से भी किताबें मँगा सकते हैं। हमारी वेबसाइट पर जाकर पुस्तक सूची से पुस्तकें चुनें और ईमेल या फोन से हमें ऑर्डर भेज दें। आप मनीऑर्डर या चेक से या सीधे हमारे बैंक खाते में भुगतान कर सकते हैं। आप वेबसाइट पर दिये **Instamojo** के लिंक से भी भुगतान कर सकते हैं। हमारी किताबें आप **Amazon** और **Flipkart** से भी ऑनलाइन मँगा सकते हैं।

बैंक खाते का विवरण:

ACC. NAME: JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI

Acc. No. 0762002109003796

Bank: Punjab National Bank

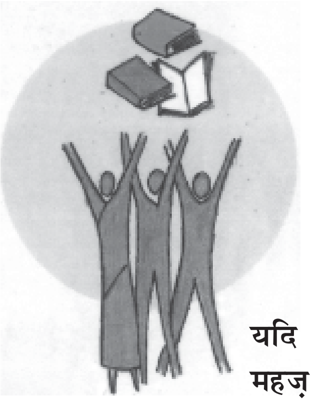

यदि आपको महज़ मनोरंजन चाहिए,
महज़ नशे की एक ख़ुराक,
दिल को बहलाने के लिए एक ख़याल
तो नहीं हैं ऐसी किताबें हमारे पास।
हम ऐसी किताबें लेकर आये हैं
जो आपकी मोहनिद्रा झकझोरकर तोड़ दें,
जो आज के हालात पर
आपको सोचने के लिए मजबूर कर दें।
हम किताबें नहीं
लड़ने की ज़िद
और हालात की बेहतरी की उम्मीदें
लेकर आये हैं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं।
हम लेकर आये हैं
एक सार्थक, स्वाभिमानी, मुक्त जीवन की तड़प।
किताबें नहीं
हम असली इंसान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं।

जनचेतना

एक सांस्कृतिक मुहिम
एक वैचारिक प्रोजेक्ट
वैकल्पिक मीडिया का एक मॉडल